प्रस्तावना

हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने के लिए यह आवश्यक है कि इनमें उच्चकोटि के प्रामाणिक ग्रन्थ अधिक से अधिक संख्या में तैयार किए जाएँ। भारत सरकार ने यह कार्य वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के हाथ में सौंपा है और उसने इसे बड़े पैमाने पर करने की योजना बनाई है। इस योजना के अन्तर्गत अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के प्रामाणिक ग्रन्थों का अनुवाद किया जा रहा है तथा मौलिक ग्रन्थ भी लिखाए जा रहे हैं। यह काम अधिकतर राज्य-सरकारों, विश्वविद्यालयों तथा प्रकाशकों की सहायता से प्रारम्भ किया गया है। कुछ अनुवाद और प्रकाशन कार्य आयोग स्वयं अपने अधीन भी करवा रहा है। प्रसिद्ध विद्वान और अध्यापक हमें इस योजना में सहयोग दे रहे हैं। अनूदित और नए साहित्य में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत शब्दावली का ही प्रयोग किया जा रहा है ताकि भारत की सभी शिक्षा संस्थाओं में एक ही पारिभाषिक शब्दावली के आधार पर शिक्षा का आयोजन किया जा सके।

सत्रहवीं शताब्दी का यूरोप नामक पुस्तक राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा प्रस्तुत की जा रही है। इसके मूल लेखक श्री डेविड ऑग हैं और अनुवादक श्री नाथूराम खड़गावत, चिरंजीलाल भारद्वाज एवं कृष्णस्वरुप सक्सेना हैं। आशा है कि भारत सरकार द्वारा मानक ग्रन्थों के प्रकाशन सम्बन्धी इस प्रयास का सभी क्षेत्रों में स्वागत किया जायगा।

विश्वनाथ प्रसाद

अध्यक्ष

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

आमुख

हिन्दी प्रकाशन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय अपने चतुर्थ प्रकाशन के रूप में प्रसिद्ध इतिहासकार डेविड ऑग कृत Europe In The Seventeenth Century का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने में प्रसन्नता तथा गौरव का अनुभव करता है। सत्रहवीं शताब्दी का यूरोप के इतिहास में विशेष महत्व है। यह वह शताब्दी है जिसमें यूरोप का पुनर्जागरण, अपनी समस्त चेतना के प्रवाह को लेकर, धार्मिक सुधार के क्षेत्र में आमूल क्रान्तियों को जन्म देता है और वैचारिक क्रान्ति का झंझावात समाज की आर्थिक और राजनीतिक भित्तियों को झकझोरता हुआ एक नये समाज के निर्माण के लिये उपयुक्त वातावरण की सृष्टि करता है। इस शताब्दी के इतिहास का, उसकी समस्त महत्ता तथा गहराई के साथ, डेविड ऑग की लेखनी ने एक बड़ा ही सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। पुस्तक की सरलता उसकी सजीवता तथा उपयोगिता दोनों की ही वृद्धि में विशेष रूप से सहायक होगी। अनेक वर्षों से स्नातकोत्तर तथा स्नातक दोनों ही कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये यह एक सर्वमान्य पाठ्य पुस्तक के रूप में स्वीकृत की जाती रही है। हमें विश्वास है कि हिन्दी के माध्यम से उसे प्राप्त करने में इतिहास के उन सभी विद्यार्थियों को जिनकी मातृ-भाषा हिन्दी है विशेष लाभ होगा।

राजस्थान विश्वविद्यालय भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग एवं शिक्षा मंत्रालय के प्रति आभारी है कि उन्होंने ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी संस्करण प्रकाशित करने का उसे अवसर दिया। मुझे विश्वास है कि देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा आयोग के संयुक्त प्रयत्नों से प्रस्तुत यह अनुवाद योजना विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिये पर्याप्त पाठय सामग्री उपलब्ध कर सकेगी।

मैं डा० शान्तिप्रसाद वर्मा, निदेशक हिन्दी प्रकाशन विभाग तथा उन विद्वानों का जिन्होंने इसके अनुवाद में योग दिया आभारी हूँ। इस पुस्तक का प्रकाशन उनके संयुक्त प्रयत्नों का ही फल है।

जयपुर,
12 जून, 1967

मुकुट बिहारी माथुर,
उपकुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय

छठे संस्करण की भूमिका

17वीं शताब्दी के यूरोपीय महाद्वीप के एक सर्वेक्षण की दृष्टि से लिखी गई इस पुस्तक का प्रथम संस्करण आज से लगभग 25 वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था। उस काल में सभ्यता के विकास को सरल एवं वैज्ञानिक माने जाने वाले सिद्धान्तों के रूप में अंकित करने के अनेकों लोकप्रिय प्रयत्न हुए, जिनका उद्देश्य घटनाओं की सुस्पष्ट व्याख्या करना था, परन्तु अभी से इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिलने लगे हैं कि इनमें से बहुत से सिद्धान्तों को अनादर की दृष्टि से देखा जाने लगा है। प्रस्तुत लेखक उस विचार क्रम का समर्थक है जो एतिहासिक विकास का उद्गम परिस्थितियों के साथ व्यक्ति के संयोगात्मक संस्पर्श को मानता है। यह एक ऐसी विचारधारा है जिसका आग्रह इस मान्यता पर है कि इतिहास का लेखन इतिहासकार के अनुभव, स्वभाव व वातावरण के आलोक में किए गए अतीत के वैयक्तिक निर्वचन से अधिक कुछ नहीं हो सकता। इस विचारधारा से 'वैज्ञानिक' यथार्थता तिथियों की सूची में ही प्राप्त की जा सकती है। इससे अधिक यदि यथार्थ अंकन का प्रयास किया जाता है तो निश्चय ही उसमें लेखक का व्यक्तित्व उभर आयेगा।

इस संशोधित संस्करण में अनेक पृष्ठों को फिर से लिखा गया है, तथा पुस्तक सूची को सामयिक बनाने का प्रयास किया गया है।

लेखक

विषय-सूची

अध्याय 1

सत्रहवीं शताब्दी--समाज एवं संस्थाएं

सत्रहवीं शताब्दी की मुख्य विशेषतायें

प्रस्तुत ग्रंथ में जिस युग का विवेचन किया गया है यद्यपि वह सन् 1715 की समाप्ति तक ही सीमित है तथापि व्यावहारिक दृष्टि से उसे सत्रहवीं शताब्दी का युग ही स्वीकार किया जाना चाहिए। ऐतिहासिक कालों का शताब्दियों में विभाजन बहुधा स्वेच्छापूर्ण होता है। इस प्रकार के विभाजन से विवेचन में भले ही सुगमता हो जाती हो परन्तु इससे इतिहास के संबद्ध स्वरूप के विकृत होने की आशंका रहती है। अपितु इतिहासकार सामान्यतया यह स्वीकार करते हैं कि अपनी विशिष्ट समस्याओं एवं संस्थाओं के कारण सत्रहवीं शताब्दी का एक विशिष्ट युग के रूप में अध्ययन किया जा सकता है। निश्चय ही इस शताब्दी में साम्राज्य तथा पोप दोनों ही संस्थाओं का महत्व शैक्षणिक मात्र रह गया था, आर्थिक लक्ष्यों के समक्ष धार्मिक लक्ष्य गौण हो गये थे, धार्मिक सहिष्णुता और अन्तर्राष्ट्रीय मध्यस्थता के संबंध में व्यावहारिक सुझाव प्रथम बार प्रस्तावित किए जा रहे थे तथा उस व्यवस्था की, जिसे प्राचीन व्यवस्था (ancian regiem) का नाम दिया गया है, मूल धारणाओं की व्याख्या की जाने लगी थी, और उन्हें मूर्तरूप दिया जाने लगा था। इस युग में शासन--सम्बन्धी सिद्धान्त और व्यवहार में निरंकुशता की अभिवृद्धि हुई तथा दार्शनिक एवं वैज्ञानिक विचार-धारा में क्रान्तिकारी प्रगति हुई। इस काल में काल्पनिक आदर्शवाद (Speculative Idealism) और राजनीतिक भौतिकवाद में भिन्नता के अनेक उदाहरण मिलते हैं जो अठारहवीं शताब्दी तक उत्तरोत्तर बढ़ती गई। अन्ततोगत्वा इस भिन्नता ने उस भयंकर सैद्धान्तिक शत्रुता का रूप धारण किया जिसने क्रांति युग के संघर्ष में भाग लिया। सत्रहवीं शताब्दी के यूरोपीय इतिहास का मुख्य आकर्षण यह है कि ज्यों-ज्यों राजनीतिक विचारधारा में अमूर्त स्थायित्व (Abstract thought) आने लगा उसी के अनुसार मौलिक विचार समाविष्ट होने लगे। तात्कालीन स्थायित्व अक्षुण्ण बना रहा, क्योंकि विचारकों ने उन सरकारों के निदेशनों को, जिनके अधीनस्थ वे थे, चुनौती नहीं दी, यद्यपि उन्होंने अन्य सभी मान्यताओं को चुनौती दी। इसका कारण यह था कि डेकार्ट लीब्निज का युग उन परम्पराओं और विश्वासों को पवित्र समझता था जिनके विरुद्ध वाल्टेयर और रूसो ने अविश्वास का नारा बुलन्द किया था। सत्रहवीं शताब्दी

विश्वास और आस्था की शताब्दी थी जिसने रूढ़ीवादी और भ्रान्त धारणाओं से अठारहवीं शताब्दी को एक बड़ी सीमा तक मुक्ति प्रदान की ।

प्रथम एवं अन्तिम अध्याय का उद्देश्य

प्रथम अध्याय का उद्देश्य उस युग की कुछ मूल विशेषताओं का संक्षिप्त विवेचन करना है । वे विशेषतायें थीं, प्रादेशिक परिवर्तन, शासक–परिवार, प्रशासनिक सिद्धान्त और जनसाधारण के विचारों को अभिव्यक्त करने वाली संस्थायें। अन्तिम अध्याय में इस शताब्दी की उपलब्धियों एवं उनकी यूरोपीय सभ्यता को देन का मूल्यांकन करने का प्रयास किया जायेगा ।

फ्रांस एवं आस्ट्रिया–साम्राज्य के प्रदेशों में परिवर्तन

आधुनिक युग के विपरीत सत्रहवीं शताब्दी के यूरोप में जनसंख्या जैसी कोई समस्या नहीं थी ।[1] अतः यह युग औपनिवेशिक प्रसार और मशीनीकरण सम्बन्धी आविष्कारों का युग नहीं था । राज्य सीमाओं के विभाजन में सामान्य जनता का महत्व चल–सम्पत्ति से अधिक नहीं था, यहां तक कि मानवतावादी ग्रोशस भी शासित प्रजा को इसी दृष्टि से देखता था । सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रादेशिक परिवर्तन वेस्टफेलिया (1648) और यूट्रेक्ट (1713) की सन्धियों के

---

1 इस युग की जनसंख्या के विषय में विश्वसनीय अनुमान दुर्लभ हैं। सामान्यतः ये अनुमान परस्पर-विरोधी हैं । सन् 1100 तक फ्रांस की जनसंख्या 18 मिलियन से अधिक थी, इटली में 5 या 6 मिलियन, साम्राज्य में 16 और 25 मिलियन के मध्य और संयुक्त प्रान्तों में लगभग दो मिलियन । 1609 में 400,000 मोरिस्कों तथा अनेको स्पेनिश लोगो के दक्षिण अमरीकी उपनिवेशों में चले जाने से स्पेन की जनसंख्या 8 मिलियन से घटकर शताब्दी के अन्त तक लगभग 5 मिलियन रह गई थी । तीसवर्षीय युद्ध में लगभग 350,000 व्यक्ति हताहत हुए। परन्तु इस युद्ध द्वारा प्रत्यक्षरूप से नागरिक जनसंख्या को जो क्षति पहुची वह कहीं अधिक थी। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि लगभग आधे मिलियन ह्यूजनो लुई चौदहवें की असहिष्णुता के कारण फ्रांस के हाथ से जाते रहे। **दी इकोनोमिक राइटिंग्स आव सर विलियम पेटी** (हूल द्वारा सम्पादित) नामक ग्रन्थ में जनसंख्या के सम्बन्ध में कुछ समकालीन अनुमान उपलब्ध हैं। ऐसा कहा जाता है कि 1688 में इग्लैंड और वेल्स की जनसंख्या $5\frac{1}{2}$ मिलियन थी । 15वीं शताब्दी के दौरान लड़े गये युद्धों में हताहतों की संख्या के लिए देखिए, जी० बोदार्ट कृत **लोसेज आफ लाइफ इन मोडर्न वार्स** ।

परिणामस्वरूप हुए। नेवरे (पिरेनीज़ के उत्तर में) 1598 में, अल्सेस 1648 और 1681 में, रूसेली और आर्टाय 1690 में और फ्रेंच कोम्टे 1678 में फ्रांसीसी प्रदेश में मिला लिये गये। इन प्रदेशों के मिल जाने से कुछ स्पष्ट रूप से खटकने वाली भौगोलिक विषमतायें समाप्त हो गयीं। दक्षिण पश्चिम में पिरेनीज़ की पर्वतमालायें फ्रांस की प्राकृतिक सीमा बन गई तथा स्पेन और आस्ट्रिया–साम्राज्य के कुछ प्रदेशों के मिल जाने से पूर्व में यह सीमा वौजे और ज़ुरा की पर्वतमालाओं से जा मिली। यूट्रेक्ट की संधि ने फ्रांस की उत्तर–पूर्वी सीमा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया। वह प्रायः वर्तमान जैसी ही रही। वेस्टफैलिया की संधि के परिणामस्वरूप व्यावहारिक रूप में आस्ट्रिया-साम्राज्य को जर्मनी से हाथ धोना पड़ा। परन्तु आने वाले समय में हैप्स-बर्ग सम्राटों ने बोहेमिया, हंगेरी और ट्रांन्सिल्वेनिया को अपने प्रदेश में मिला लिया और इस प्रकार यूरोपीय साम्राज्य के स्थान पर यह आस्ट्रियायी-साम्राज्य बन गया।

स्वीडेन एवं पौलेंड के भू–प्रदेशों में परिवर्तन

जिन राज्यों में सर्वाधिक प्रादेशिक परिवर्तन हुए उनमें मुख्यतः स्वीडेन, पोलेंड, रूस, तुर्की और ब्रैन्डेनवर्ग हैं। 1648 से पूर्व स्वीडेन के आधिपत्य में इंग्रिया, एस्थोनिया और केरेलिया थे तथा वह लिवोनिया पर भी अपने आधिपत्य का दावा करता था। वेस्टफेलिया संधि के परिणामस्वरूप उसे पश्चिमी पोमेरेनिया, ब्रेमन एवं वर्डेन के प्रदेश प्राप्त हुए और इस प्रकार वह एक महत्वपूर्ण जर्मन तथा बाल्टिक शक्ति बन गया। चार्ल्स दशम के युद्धों ने हालेंड, ब्लेकिंग एवं शोनेन प्रदेशों को डेन्मार्क से हथिया लिया। ओलिवा की संधि (1660) ने व्यावहारिक दृष्टि से बाल्टिक समुद्र के समूचे किनारे पर नियंत्रण रखने के स्वीडेन के दावे की पुष्टि कर दी। परन्तु चार्ल्स बारहवें के युद्धों के परिणामस्वरूप गुस्टवस अडोल्फस एवं चार्ल्स दशम द्वारा अर्जित लाभ समाप्त हो गये, न्यास्ते की संधि (1721) के परिणामस्वरूप स्वीडेन ने बाल्टिक समुद्र के पूर्वी किनारे पर अपने अधिकार का त्याग कर दिया। लगभग सभी जर्मन क्षेत्र उसके आधिपत्य से निकल गये। इस प्रकार नाटकीय आकस्मिकता के साथ एक लघु बाल्टिक साम्राज्य का उदय और अन्त हुआ। इसी प्रकार 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पोलिश प्रदेश का ह्रास एक प्रमुख घटना थी। इस काल के आरम्भ में पौलेण्ड ने एक ऐसे प्रादेशिक संघ का निर्माण किया जिसकी सीमायें अस्पष्ट थीं और जो प्रत्येक दिशा में अपने महत्वाकांक्षी पड़ौसी देशों की दया पर निर्भर था। पौलेण्ड के मुख्यतः तीन भाग थे; ग्रेट-

पौलैंड जिसमें पोमेरेलिया, कुल्म और मेंरिएनवर्ग सम्मिलित[1] थे, लिटिल पौलैण्ड जिसमें गैलिशिया, लालरूस, पोडोलिया, बुलोविना, वोल्हिनिया और पश्चिमी यूक्रेन सम्मिलित थे तथा लिथुआनियन–पोलैंड जिसमें लिटेवानिया, कोरलैंड तथा सफेद और काला रूस सम्मिलित थे। मानचित्र पर एकमात्र दृष्टिपात करने से ही इन प्रदेशों के विस्तार का ज्ञान हो सकता है। स्वीडेन और रूस के साथ युद्धों में पौलैंड ने निरन्तर अपने भू प्रदेश खोये। 1657 में पूर्वी अथवा ड्कल प्रशा ब्रैण्डेनबर्ग को दे दिया गया तथा 1660 में लिवोनिया निश्चित रूप से स्वीडन को सौंप दिया गया। अन्ड्रस्सोवो (1667) की संधि के अनुसार नीपर नदी के पूर्व का यूक्रेन रूस को दे दिया गया। साथ ही रूस को कुछ और भी रियायतें प्रदान की गईं जिनके अन्तर्गत 1667 में स्मोलेन्स्क ओर 1686 में कीब और पोडोलिया प्रदेश रूस को दे दिये गये। नोर्थ के महान् युद्ध (1700–21) ने अवशिष्ट प्रदेशों को भी पूर्णतया विघटित कर दिया तथा पौलैंड के विभाजन के द्वार खोल दिये।

रूस और ब्रैन्डेनबर्ग का विस्तार

इन परिवर्तनों से प्रमुखतया रूस और ब्रैन्डेनवर्ग को लाभ पहुँचा। पौलैंड के प्रदेशों के हाथ से निकल जाने के पश्चात् रूस की पश्चिमी सीमा डेनिएपर एवं पश्चिमी ड्विना से जा मिली जबकि पूर्वी बाल्टिक से स्वीडन के हटने का परिणाम यह हुआ कि रूसी जारों को इग्रिया से रीगा तक का सम्पूर्ण समुद्री तट प्राप्त हो गया। आगे चलकर इन्ही विजित प्रदेशों में एक पर सेन्टपीटर्स-बर्ग नामक नगर का निर्माण हुआ। रूस के समान ही ब्रैन्ड्नवर्ग ने द्रुत गति से प्रगति की। सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में होयेन्ज़ोलर प्रदेश उत्तरी जर्मनी में असंगठित प्रदेश था। 1614 में क्लीव और मार्क इस प्रदेश में मिला लिये गये, 1657 में पूर्वी प्रशा सम्मिलित कर लिया गया तथा 1648 में अनेक धर्मनिर्पेक्षीकृत विशप–प्रदेशों (Secularised bishoprics) के साथ पूर्वी पोमेरेनिया मिला लिया गया। पौलैंड में फैली हुई अराजकता एवं स्वीडेन के युद्धों से लाभ उठाकर ब्रैन्डेनबर्ग के निर्वाचकों (Electors) ने लगभग समूचे पोमेरेनिया

---

1 इनसे पश्चिमी प्रशा बनता था जो पूर्वी अथवा डूकल प्रशा से भिन्न था। 1651 में ब्रैण्डेनवर्ग ने पूर्वी प्रशा पर अपनी पूर्ण सत्ता स्थापित की और 1112 में पौलैंड के प्रथम विभाजन में पश्चिमी प्रशा प्रशा राज्य में मिला दिया गया। 1193 में डैगिग और थार्म की प्राप्ति से प्रशा पौलैंड से पूर्णतया पृथक् कर दिया गया।

और प्रशा पर अपना अधिकार स्थापित किया। इस प्रकार कुछ डचियों (duchies) से एक राज्य का निर्माण हुआ। सन् 1700 में फ्रेडरिक तृतीय फ्रेडरिक प्रथम के नाम से प्रशा का राजा घोषित कर दिया गया।

तुर्की की अवनति

यूरोप में तुर्कों की सैनिक शक्ति का पतन लैपैन्टो (1571) के युद्ध से आरम्भ होता है। परन्तु फिर भी तुर्की वासवर की अल्पकालीन संधि (1664) तक हैप्सबर्गों के विरूद्ध विजय प्राप्त करता रहा। यहां तक कि 1669 में आटोमनों ने वैनिस से कैण्डिया छीन लिया।

17वी शताब्दी में अधिकांश समय तक ट्रान्सिल्वेनिया और हंगरी का एक भाग तुर्की सत्ता के अधीन था। यूक्रेन पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिए तुर्कों ने रूस से संघर्ष किया, 1683 में यूरोप पर किया गया महान् आक्रमण विफल हुआ और वियना से तुर्कों को निष्कासित कर दिया गया। आस्ट्रिया-साम्राज्य, रूस, पौलेंड और वैनिस के विरूद्ध होने वाले युद्ध में तुर्की का यह सबसे बड़ा विनाश था। इस युद्ध की समाप्ति कार्लोविट्ज (1699) की सन्धि के परिणामस्वरूप हुई जबकि पोर्ट ने ट्रान्सल्वेनिया, हगरी, क्रोशिया, मोरिया और अजोव का समर्पण कर दिया। तभी से तुर्कों के पास बाल्कन प्रायद्वीप के बाहर केवल मोल्डाविया, वेलेशिया तथा डेन्यूब के उत्तरी प्रदेश की एक पट्टी के प्रदेश रह गए। यह पट्टी कार्लोविट्ज पर डेन्यूब नदी द्वारा काटी गई थी और क्रोशिया की सीमा तक पश्चिम में फैली हुई थी।

राजधानियां

इन प्रादेशिक परिवर्तनों का सम्बन्ध यूरोप के कुछ नगरों की वस्तुस्थिति के हेर फेर से था। प्राग, प्रेसबर्ग, स्ट्रासबर्ग और कीव प्रान्तीय नगर बन गए। इनमें से प्रथम दो हैप्सबर्ग के प्रभुत्व के विस्तार के कारण, तृतीय 1681 में लुई चौदहवें द्वारा अधिकार कर लेने के कारण तथा चौथा रूस द्वारा विलीन कर लिए जाने से प्रान्तीय नगरों में परिवर्तित हो गए। सैंट पीटर्सबर्ग, ट्यूरिन, हेग और बर्लिन, ये चार नयी राजधानियां बनी। एन्टवर्प की वही दुर्दशा रही जो स्पेनिश शासन के दौरान उसकी 16वीं शताब्दी में रही थी। 1648 के पश्चात् एम्स्टर्डम विश्व धन की सबसे बड़ी मण्डी बन गया।

बूर्बान और हैप्सबर्गः व्यक्तिगत विशेषतायें

ये प्रादेशिक परिवर्तन उन राजवंशीय संघर्षो का परिणाम है जिनका 17वीं शताब्दी के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसी काल में यूरोप के बड़े

राज-परिवार इतने पवित्र माने जाने लगे कि उनके व्यक्तिगत संघर्ष राष्ट्रीय युद्धों के पूर्णतया न्याय संगत कारण स्वीकार किए जाने लगे, यहां तक कि इन परिवारों का अस्तित्व न केवल आवश्यक ही माना जाने लगा, अपितु वह दैवी व्यवस्था का एक अंग समझा जाने लगा। इस स्थान पर राज-परिवारों की कुछ व्यक्तिगत विशेषताओं पर विचार करना उचित होगा जिनके झगड़ों ने जातीय घृणा और प्रतिशोध को विरासत में प्रदान किया। इनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण परिवार बूर्बा, हैप्सबर्ग, वास और रोमनेफ थे। हैप्सवर्ग परिवार में कुछ योग्य व्यक्ति थे, बहुत से गुणवान् व्यक्ति थे और बिना किसी अपवाद के सभी धर्मालु व्यक्ति थे। किन्तु मैक्सीमिलियन, **पोचोदानारी**[1] और **जुवाना द मैड**[2] के समय से ही मानसिक सनक उनकी परम्परागत विशेषता रही है। वे बूर्बा वंश से, जिनके शासन का आरंभ 1593 से माना जाता है, युद्ध और विवाहों द्वारा सम्बद्ध थे। लुई तेरहवें और उसकी बहिन ऐलिजावेथ के विवाह क्रमशः फिलीप तृतीय की पुत्री (एेन आफ आस्ट्रिया) तथा पुत्र (फिलिप चतुर्थ) के साथ सम्पन्न हुए। प्रथम विवाह से उत्पन्न पुत्र (लुई चौदहवें) ने दूसरे विवाह से उत्पन्न सबसे बड़ी पुत्री (मैरिया थेरिसा) से विवाह किया। सम्राट फर्डीनेड ने फिलिप तृतीय की एक अन्य पुत्री से विवाह किया और इस प्रकार तीनो राजवंशो के प्रधान (लुई चौदहवां, लियापोल्ड प्रथम और स्पेन का चार्ल्स द्वितीय) आपस के चचेरे-ममेरे भाई थे, जिनके आपसी झगडों के कारण यूरोपीय सभ्यता के पूर्णतः नष्ट होने की आशंका उत्पन्न हो गयी थी। फिलिप चतुर्थ का दूसरा विवाह उसकी अपनी भतीजी के साथ हुआ था, जिससे चार्ल्स द्वितीय उत्पन्न हुआ। समकालीन व्यक्तियों ने चार्ल्स द्वितीय को एक वैद्यक कौतुहल (Medical Curiosity) माना है। क्योंकि वह आजीवन कम से कम आधे दर्जन गम्भीर विकारों से पीड़ित रहा। उसकी माता (जो इस प्रकार उसकी चचेरी बहिन भी होती थी) की इच्छा यह थी कि चार्ल्स द्वितीय का विवाह अपनी किसी आस्ट्रियन चचेरी बहिन से किया जाय। परन्तु चार्ल्स द्वितीय ने किसी दूर के रिश्ते में अपना विवाह किया। सन्तानोत्पति के लिये सभी प्रकार के प्रयत्न किए गए जिनमें प्रार्थनायें, जादू-टोने और विभिन्न प्रकार की औषधियां भी सम्मिलित थीं परन्तु जब ये सभी प्रयत्न निष्फल हो गए तो अन्त में विष-प्रयोग द्वारा रानी की जीवन लीला समाप्त कर दी गई। इस अन्तर्वैवाहिक नीति ने स्पेन के

---

1 1459–1519

2 यह फर्डीनेंड एवं आइजाबेला की पुत्री थी। इसने बर्गण्डी के फिलिप के साथ विवाह किया। यह सम्राट चार्ल्स पंचम (1500–1558) की माता थी। स्पेन के शासक फर्डीनेंड और आइजाबेला आपस में निकट के सम्बन्धी थे।

हैप्सवर्ग वंश को 1700 ईसवी में समाप्त करके और बूर्बान तथा शाही हैप्सबर्ग परिवारों के कतिपय सदस्यों में शारीरिक ह्रास उत्पन्न करके दैहिक प्रतिकार लिया। डोफिन (जिसकी 1711 में मृत्यु हुई) कुंठित बुद्धि वाला था, यद्यपि उसकी शिक्षा के लिए यथासम्भव प्रयत्न किए गए थे। लुई चौदहवें की लगभग दो पीढियों के वंशज उससे पूर्व ही समाप्त हो गए[1]। कैम्पनेला[2] ने इन मामलों में विवेक से काम लेने की अपील की। यदि सहज स्नेह कूटनीतिक उद्देश्यों को नियन्त्रित न रखता तो सम्भवत: कुछ पश्चिमी यूरोपीय राजवंश भौतिक कारणों से समाप्त हो गए होते।

वासा और रोमेनोफ

इसी प्रकार की विशेषतायें 17वीं शताब्दी के अन्य राज-परिवारों में दृष्टिगत होती हैं। तुर्क-साम्राज्य का शासन दासी पुत्रों की ऐसी जाति से होता रहा जिनका पालन पोषण स्त्री सुलभ एवं निस्तेज वातावरण में हुआ और अन्तःपुर की विषाक्त छाया में रखकर जिनकी दशा एक ऐसे विक्षिप्त मनुष्य की भांति हो रही थी जो पूर्ण पक्षाघात से पीड़ित हो। स्वीडिश वासावंश ने जिसमें सोलहवीं शताब्दी में एक हत्यारा राजा (इरिक चौदह) उत्पन्न हुआ जिसने एक महान् पुरूष और महान् राजा गस्टवस-अडोल्फस को जन्म दिया। परन्तु उसकी पुत्री क्रिस्टीना अस्थिर और व्यग्र स्वभाव वाली थी। उसके नर वंशजों में कम से कम एक के लिए युद्ध शारीरिक आवश्यकता बन गया था जो मानव-जीवन के निरन्तर बलिदान से ही तृप्त होता था। स्वीडेन के चार्ल्स बारहवें का यदि चमत्कारपूर्ण जीवन न होता तो सम्भवत: उसे पागल समझा जाता। अपने तथा दूसरों के कष्टों की पूर्ण अज्ञानता एक विदेशी के लिए चाहे एक विशेष महत्व का लक्षण क्यों न हो तथा यद्यपि उसे एक महान वीर राजा मानना उपयुक्त हो सकता हो, तथापि उसकी मृत्यु उसके देश के लिए मुक्तिकारक थी। उस काल के एक अत्यन्त असाधारण राजा ने रूस में जन्म लिया। रोमोनोलो ने, जो राजाओं में माइकेल और अलेक्सिस के समान पवित्र और ज्ञानी नरेश थे, पीटर महान् को जन्म दिया। पीटर महान् में शीघ्र कार्य करने की क्षमता के साथ साथ बौद्धिक जिज्ञासा भी थी। उसमें अठारहवीं शताब्दी के दार्शनिकों के प्राकृतिक मानव की निष्कलुषता और आदिम दृढ़ता विद्यमान थी। वह अपने व्यक्तित्व की छाप अपने देश पर छोड़ गया जो यूरोप में सर्वाधिक विस्तृत और दुर्वह राज्य था। औरेंज और होहनजोलर्न परिवार इनसे अधिक कौतुक

---

1 इस विषय का रोचक वर्णन ए० कोरलियू कृत **ला मोर्त द रवा द फ्रांस,** पृ० 109–122 में उपलब्ध है।

2 **दी मोनारकिया हिसपेनिका,** अध्याय 9।

पूर्ण न थे। प्रथम राज–परिवार औरेंज की रूक्ष दृढ़ता विलियम तृतीय के चरित्र में प्रतिबिम्बित होती है जिसने लुई चौदहवें के विरुद्ध यूरोपीय देशों का नेतृत्व किया था। द्वितीय परिवार होहेनजोलर्न की परम्परागत धार्मिक निष्ठा और प्रवञ्चना प्रशा के संस्थापक ग्रेट इलेक्टर के जीवन में दृष्टिगत होती है।

17वीं शताब्दी में लेक्सरीजिया

लेकिन जहां यह प्रतीत होता है कि नरेशों में साधारण मानव की अपूर्णतायें विद्यमान थीं, (यह मत आजकल भी सदैव स्वीकार नहीं किया जाता है) वहां हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कभी कभी स्वयं राजा लोग भी तात्कालीन व्यवस्था के उतने ही शिकार थे जितनी कि उनकी प्रजा। राजतन्त्र का केवल एक ही विकल्प था कुलीन वर्ग का शासन। यदि दुष्ट और दुराचारी राजा को कुकर्मों के असीम अवसर प्राप्त थे तो बुद्धिमान राजा के लिए भी ऐसे अगणित मार्ग थे जिनसे वह अपने देश-हित के लिये कार्य कर सकता था। सोलहवीं शताब्दी में राजसत्ता की आधारभूत धर्म निरपेक्षता पर सबसे अधिक ध्यान दिया जा रहा था। रोमन विधि का पुनरूद्धार किया गया जिसने लेक्सरीजिया[1] की परम्परा के अनुकूल निरकुंशता के इस सिद्धान्त को दृढ़ किया कि राजतन्त्रीय सिद्धान्त तबसे अस्तित्व में आया जबसे लोगों ने अपने अधिकारों का सदा के लिए समपर्ण कर दिया, ठीक उसी प्रकार जैसे कि आगस्टससीजर द्वारा साम्राज्य के प्रतिष्ठापन के समय हुआ माना जाता था। सत्रहवीं शताब्दी में ऐसे दो अवसर आये जबकि लेक्सरीजिया अधिनियमित किया गया, प्रथमतः डेन्मार्क (1661) और द्वितीयतः स्वीडेन (1682) में। कुछ सीमा तक ये दोनों अवसर क्रान्तिकारी थे। फिर भी उन्हें बिना रक्तपात के प्रबन्ध चातुर्य से लागू किया गया तथा मध्यवर्ग के सहयोग से इन्हें संभव बनाया गया। डेन्मार्क में लोअर स्टेट्स ने राजा फिलिप तृतीय और उसके बंशजों का राज्य देते हुए एक 'संलेख' (Instrument) तैयार किया। इस कार्य में सामन्तों और सीनेट को शक्ति का भय दिखाकर सहमत होने पर बाध्य किया गया। स्वीडन में स्टेट्स और सीनेट को

---

1 अंग्रेजी के पाठकों को इसके प्रारम्भिक शब्दों से ही सामान्यतया इसका ज्ञान होता है। परन्तु इसके आशय को समझने के लिये अल्पिअन द्वारा प्रतिपादित सम्पूर्ण सूत्र को उद्धत करना समीचीन होगा—

'Quod Principi placuit legis habet Vigorem: utpote cum lege Regia, quae de imperio eins lata est, populus ei et in ecm omne suvm imperium et potestatem conferat.'

चार्ल्स ग्यारहवें के पक्ष में अपने विशेषाधिकार इस शर्त पर समर्पण करने के लिये, बहकाकर सहमत कर लिया गया कि महत्वपूर्ण विषयों में उनसे मन्त्रणा की जायेगी। इन दोनों संलेखों में डेनिस सलेख (Instrument) विशेष ध्यान देने योग्य है क्योंकि यह उन अधिकारों का जिन्हें प्रतिनिधि–धारासभायें प्रयोग में लाती थीं, वास्तविक समपर्ण था। वह लेख-पत्र जिसमें समपर्ण की शर्तें लगाई गयी थीं, कांङ्गेलोव (Kongelov) अथवा शाही कानून कहलाता था। दोनों देशों में कुलीनवर्ग पर नियंत्रण रखने के लिये ये मूक क्रान्तियां आवश्यक थीं। ये मध्यवर्ग और किसानो के लिये, जो सदैव निरंकुश राज्य की अपेक्षा अराजकता में अधिक कष्ट पाते हैं, अत्यन्त उपयोगी थीं। जनता के सविहित प्रतिनिधियों द्वारा स्वेच्छा से अधिकार त्याग तथा उससे उदभूत राज-सता का विचार अंग्रेजी राजनीतिक विचारधारा के लिये बिल्कुल नवीन वस्तु थी। परन्तु यूरोप महाद्वीप में यह विचित्र बात न थी, क्योंकि वहां बहुत से देशों ने पहले से ही रोमन विधि को स्वीकार कर लिया था तथा वहां विधिशास्त्र की यह पद्धति केवल शैक्षणिक अध्ययन के लिये ही नहीं अपितु मूल सिद्धान्तों का संग्रह थी जिनमें से कुछ कानूनी और संवैधानिक व्यावहार में आ चुके थे।

दैवीअधिकार

शासन के सिद्धान्तों पर रोमन विधि का अत्याधिक प्रभाव पुर्नजागरण काल में पड़ा। सत्रहवीं शताब्दी में राज-सत्ता का आधार इतना अधिक विस्तृत हो गया था कि उसमें धर्म-निरपेक्ष विधि शास्त्र द्वारा निर्दिष्ट अनुज्ञाओं का भी समावेश कर लिया गया था। अधिकार के लौकिक आधार का स्थान पूर्णतया आध्यात्मिक अनुज्ञा द्वारा ले लिया गया। इसने लगभग प्रत्येक यूरोपीय सरकार की भांति इग्लैण्ड की सरकार को भी दैवी बंशानुगत अधिकार के सिद्धान्त के क्षेत्र में प्रभावित किया। फ्रांस में इस सिद्धान्त का चरम प्रतिपादन लुई चौदहवें के शासन काल में हुआ। इसके पक्ष में मुख्य बात यह है कि इसने न तो संविदा का प्रतिपादन किया जिस पर अतीत काल में हस्ताक्षर किये जाने की कल्पना की जाती थी और न अधिकार समपर्ण का जिसे अनुमानतः प्राचीन रोम की सीनेट ने किया था वरन् इसने उस भावना की अपील की जो सब जातियों और कालों में विद्यमान रहती है अर्थात् केवल एक ओर परम्परागत व्यक्ति तथा केवल एक ग्रन्थ बाइबिल के प्रति श्रद्धा। बाइबिल एक ऐसा ग्रन्थ था, जिसे समस्त ईसाई समाज मानवी जीवन के समस्त कार्य कलापों के लिए दैवी आदेशों के पवित्र भण्डार के रूप में आदर करता था। दैवी अधिकार के सिद्धान्त पर अधिक जोर देने के कारण राजतन्त्र एक संस्था न रहकर धर्म बन गया। इसके मन्त्री धर्माचार्य और आलोचक ईश्वर-निन्दक माने

जाने लगे। यह सिद्ध करना हाब्स [1] और स्पिनोजा [2] के लिये शेष रहा, कि राजा अपनी असीमित शक्ति पुराने टेस्टामेण्ट से नहीं अपितु उसकी उपयोगिता से प्राप्त करता है। इस प्रकार इन दोनों लेखकों ने राजतन्त्र को समस्त सम्भव आक्रमणों से सुरक्षित अतिश्रेष्ठ, और अभेध स्थिति पर पहुंचा दिया। पादरियों, वकीलों, और विचारकों, सभी ने राजतन्त्र को ऐसे उच्च पद पर आसीन करने में सहयोग किया।

कुलीनवर्ग के विशेषाधिकार

राजतन्त्र के पश्चात कुलीनवर्ग आया। यह वर्ग भी दैवी विधान के आधार पर अपने अस्तित्व का दावा कर सकता था, क्योंकि दैवी सिद्धान्त के अनुसार केवल ईश्वर ही उत्तराधिकारी मनोनीत करने का अधिकारी है। यूरोप के अधिकतम देशों में कुलीनवर्ग को ऐसा पदाधिकारी समझा जाता था जिसके विशेषाधिकार तो थे, परन्तु कर्तव्य नहीं, और विशेषतया फ्रांस में ऐसी धारणा थी कि कुलीन जाति के सबसे अधिक उपद्रवी सदस्यों के उत्पातों को भी धैर्यपूर्वक सहन करना चाहिए, क्योंकि उनका अस्तित्व उतना ही अनिवार्य है जितना कि बाढ़ और भूकम्पों का। इनके विषय में ला फोन्टेन ने लिखा है, "विश्व उन कुकर्मों के लिये उनका आभारी है जो वे करना भूल जाते हैं।" फ्रांसीसी कुलीनवर्ग विशेषत: महत्वपूर्ण अधिकारों पर अपना दावा रखता था। इनमें समस्त अवशिष्ट अधिकार सम्मिलित थे, यथा स्थानीय न्याय से सम्बन्धित अधिकार। पादरी वर्ग के पश्चात् राज्य में इस वर्ग की दूसरी स्टैट (संसद सभा) थी। उन्होंने राज सभा के अवैतनिक पदों पर और अधिकतम सैनिक समादेशों (ओहदों) पर एकाधिकार कर रखा था। सैनिक अकादमी में केवल स्वीकृत वंशों के प्रार्थियों को ही लिया जाता था, चर्च के उच्चतर पदों पर भी उन्हीं में से नियुक्तियां की जाती थीं। विश्वविद्यालयों में वे उन अधिक कष्टप्रद कर्तव्यों से मुक्ति प्राप्त कर सकते थे जो सर्वसाधारण विद्यार्थियों के लिये आवश्यक थे और यदि किसी कुलीन को बाध्य होकर इस संसार से जाना पड़े तो वह समाज के हीन व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक सम्मानपूर्ण ढंग से जा सकता था, क्योंकि उसे कत्ल किया जाता था, जबकि दूसरों को फांसी दी जाती थी। उस समय के लेखक इस विचार से सहमत थे कि कुलीन जाति को प्रत्येक मूल्य पर बनाये रखा जाना चाहिये, और राज्य में उच्च पद प्राप्त करने के लिये अच्छे परिवार में जन्म लेना आवश्यक था। रिशेल्यू जो स्वयं उच्चवंशीय था, के विचार में, "नीच कुल के मनुष्यों में मैजिस्ट्रेट होने के लिये आवश्यक गुण बहुत कम पाये जाते

---

1 **लेवियाथान,** भाग दो, 18

2 **ट्रैक्टेटस थियोलोजिको-पोलिटिक्स,** अध्याय 16।

हैं और उच्च जन्म के मनुष्यों में पाये जाने वाले गुण निम्न जाति के लोगों से उच्च-कोटि के होते हैं।"[1] इस मत का विवेचन 1913 में प्रकाशित **गाइड फार कोर्टियंस**[2] में किया गया उनको, जिनके पूर्वजों ने स्मरणीय वीरता के कार्य करके ख्याति पाई, एक प्रकार से उनका अनुकरण करने के लिये विवश होना पड़ता है: "वे जो साधारण लोगों में जन्में हैं, अपने निम्नस्तरीय जन्म से ऊंचा उठना आवश्यक नहीं समझते।" अभिजात लोगों को शिक्षा की कठोर साधना भी नहीं करनी पड़ती[3] इसी प्रकार साहस कुलीन पुरुषों का एकाधिकार माना जाता था। सर विलियम टेम्पल का विश्वास था कि साहस और अच्छा भोजन सहचर हैं। किसी भी व्यक्ति को छः सप्ताह के उपवास से भीरू बनाया जा सकता है। इसलिए यह तर्क दिया जाता था कि अच्छा भोजन पाने वाले, ऊंचे कुल वाले, अर्ध क्षुधार्त किसानों से अधिक वीर होते हैं।[4]

कुलीनवर्ग और राज्य–पद

एक समय था जब कुलीनों और जमीदारों की गणना समाज के सर्वाधिक धनाढ्य व्यक्तियों में होती थी उस समय ऐसा माना जाता था, चाहे औचित्य कुछ भी हो, कि सामान्य अभिजातवर्ग में प्राप्त निजी सम्पत्ति और स्वतन्त्रता, ऊंचे पदाधिकारियों और मन्त्रियों में कदाचार के विरुद्ध दो सर्वोत्तम गारण्टियों के समान है। इस मत के अनुसार निर्धन मनुष्य अथवा उच्च–कुल–सुलभ सद्गुणों से हीन मनुष्य जनता के व्यक्तिगत लाभ के लिये निर्लज्जतापूर्वक लोक–हित के विरुद्ध कार्य कर सकते थे। सत्य सम्भवतः यह था कि एक कुलीन के विषय में जिसे उसके पद से अविछिन्न रूप से सम्बन्धित केवल आय मात्र समझा जाता था, यदि वही आय एक साधारण व्यक्ति करता तो उसे लूट समझा जाता था। किन्तु कम से कम फ्रांस में तो कुलीनों को केवल अवैतनिक कार्यों तक ही सीमित रखा गया था। रिशेल्यू ने एक नई प्रथा चला कर जिससे कुलीन समस्त महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों से बहिष्कृत हो गये अपने ही सिद्धान्त को खण्डित कर दिया, यद्यपि फ्रांसीसी राजतन्त्र के सर्वोत्तम दिनों को

---

1 **टेस्टामेण्ट पोलितक** (संस्करण 1764), 205

2 ली सोयर फोंटेट, **ल होनेसटे होम, ओ ल आर्ट द प्लेयर ए ला कोर्ट।**

3 मोलिरे, लेस **प्रिसोशियस रिडिक्यूल्स** एक्ट एक, दृश्य 10

'Las gens be qualite Savent toul sans avoir Jamais rien appris'

4 सर विलियम टेम्पिल, **ओबजरवेशन्स अपान दि यूनाइटेड प्रोविन्सेस आफ दि नीदरलेंडस** (संस्करण 1673), 156।

इस तथ्य से क्षति पहुंची कि प्रान्तीय राज्यपालों के पद कुलीनवर्ग (अरिसट्रोक्रेसी) के हाथ में रहे, जिनमें से अधिकांश लुई चौदहवें के आने से पूर्व, रिश्वत के बदले में देश से विश्वासघात तक करने के लिये तैयार थे।

नये कुलीन

यह जाति प्रथा सम्भवतः हानिप्रद न होती यदि इसके साथ सब प्रकार के शारीरिक श्रम को अपमानजनक मानने की भावना का आरम्भ न हुआ होता। यह प्रथा सुसंगत और कुछ सीमा तक न्यायसंगत भी होती यदि जन्म-जात कुलीनों के पद क्रीत उपाधियों से बने कुलीन न हड़प लेते। सत्रहवीं शती में पश्चिमी यूरोप में धन की अत्याधिक वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त भाग्य परिवर्तन के साथ धन शीघ्रता से दूसरों के हाथ में जाने लगा। फलतः सामान्य लोगों में, जो अब धनी हो गये थे और कुलीनों में जो निर्धन हो गये थे, सन्धियां हुई और राज्य सरकारों ने अनुभव किया कि उन लोगों से समुचित राजस्व प्राप्त किया जा सकता था जिनकी आकस्मिक धन वृद्धि ने छोटे ठिकानेदारों के ध्यान, तथा जन्मजात कुलीनों की सम्पत्ति पर जादू सा कर दिया था। यह बात दृढ़तापूर्वक कही जाती[1] है कि लुई तेरहवें के राज्य और क्रांति के बीच की अवधि में, वास्तव में, फ्रांस का प्रत्येक धनी मनुष्य कुलीन हो गया था। परिणामतः प्राचीन परिवारों के बहुत से लोग भूतपूर्व दासों (Ex-Serfs) के नाम मात्र अथवा वास्तविक अधिकार में हो गये। लुई चौदहवें ने एक ही वर्ष में 6000 लिव्र प्रति व्यक्ति से लेकर 500 व्यक्तियों को कुलीन बनाया[2]। उसे स्पेन के उत्तराधिकार युद्ध की आवश्यकताओं के कारण विवश होकर इस प्रकार की क्रिया को राजस्व प्राप्ति का सामान्य साधन बनाना पड़ा। स्पेन में जन्मजात कुलीनों को आयरलेंड के अतिरिक्त यूरोप के किसी भी अन्य देश से अधिक सम्मान प्राप्त था। वहां भी स्पेन के राजा ने बाध्य होकर धन एकत्र करने के लिये इस प्रणाली को अपनाया। यह अभिलिखित है कि एक पुर्तगाली यहूदी ने राजा के सम्मुख टोप धारण करने का अधिकार ख़रीदा था[3]। मूलतः यह विशेष परमाधिकार पच्चीस ग्रांद द ऐस्पाना का था किन्तु इस समय उनकी संख्या काफी बढ़ गयी थी। स्पेन की

---

1 द एवेनल, रिशेलू ला मोनार्क एब्सोल्यू (सं० 1895) दो, 110

2 1689 में लिव्र का मूल्य लगभग 1 फ्रांक 89 सेंतींमीज थे (1914 से पूर्व) 1706 में यह गिरकर 1.24 फ्रांक रह गया। देखिए, मेरिओं कृत **डिक्शनेर द इन्सतीत्यूशिआँ द ला फ्रांस** में उल्लिखित लेख। 'मोनइ'।

3 लेग्रले, ल डिप्लोमेटिक फ्रेंका इसे एत ला सक्सेशन द एस्पेग्ने, 2,42

भद्र ज्ञाति[1] (Hidal goclass) के पास बहुत धन (Nouveauxriches) था और प्रायद्वीप पर हर जगह कुलीनता और उच्च वंश प्राप्त करने की धुन सवार थी। गुइपुज्कोआ का सम्पूर्ण प्रान्त भद्र होने का दावा करता था, और सैंशोपांजा को यह शिकायत थी कि उसके बैरेतारिया द्वीप में डॉन (dons) पत्थरों की संख्या से भी अधिक थे। अधिकृत इटली में स्पेन का राज्य केवल दिखावटी उपाधियों के समय-समय पर वितरण से सम्भव रह सका और सत्रहवीं शताब्दी के दौरान अधिकारियों और धनिकों की एक नई कुलीनता ने, तलवार की धनी कुलीनता का स्थान ले लिया[2]।

कुलीनता के खतरे

स्केन्डीनेवियन देशों ने अति शक्तिशाली भद्रजनों की विद्यमानता से अविभेद्य खतरों के उदाहरण प्रस्तुत किये। स्वीडन में शाही जागीर का बड़ा भाग उद्दण्ड राज दरबारियों के हवाले कर दिया गया जिससे चार्ल्स ग्यारहवें को शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 'अधीनीकरण' (Reduction) की नीति अपनानी पड़ी। इस मामले में स्वीडन की क्रिस्टीना सबसे अधिक सक्रिय रही, क्योंकि उसने अपने अल्प शासनकाल में कम से कम 17 काउन्ट, 46 बैरन और 428 छोटे सरदार बनाये।[3] इतना ही नहीं, चूंकि ये लोग अधिकतर निकम्मे थे, इसलिये पद की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये इन्हें भूमि और राजस्व भी देने पड़े। इस प्रकार राजा की सम्पत्ति अन्धाधुन्ध तरीके से व्यय की जाती और बन्धक रख दी जाती थी। मामला इस सीमा तक बढ़ गया कि शाही भूमि का दान इस शर्त पर दिया जाता था कि वह इससे पूर्व किसी अन्य व्यक्ति को न दी गई हो। इसलिए स्वीडिश लोग भी ऐसा विचार करने लगे कि क्रिस्टीना का प्रस्तावित राजत्याग ऐसा बडा राष्ट्रीय संकट नहीं होगा जैसा पहले यह प्रतीत होता था। स्वीडन के भाग्य से उसके कुलीन वर्ग को देश के बाहर, युद्ध में बराबर नौकरी मिल जाती थी, अन्यथा वे आपस में, अपने देश का विनाश कर देते, सन् 1661 तक डेन्मार्क को भी इसी संकट का भय था और वहां यह खतरा और भी अधिक गम्भीर था, क्योंकि किसान दास (Serf) थे और प्राप्त सम्पत्ति कुलीनों की थी। डेनिश सरदार, कोर्फिट्स उहलफेल्ट का

---

1 एल्टामिरा य क्रेविया, हिस्तोरिया द एस्पेता य द ला सिविलीजेशन एस्पेनोला (स० 1913) 3,192–194.

2 बर्क ने 1791 में स्पेन के विषय में लिखा था, "यह उपयोग के उपयुक्त नहीं है, यह कुलीनता के दुर्गुणों से पीड़ित है।"

निस्बेतबेन, स्केन्डिनेविया, 225।

जीवन-चरित्र इसका एक उदाहरण माना जा सकता है। सन् 1638 में इस व्यक्ति ने क्रिस्टीना चतुर्थ की लड़की से विवाह करके सीनेट में एक स्थान प्राप्त कर लिया और कई वर्षों तक लार्ड हाई एड्मिरल और मेयर आफ द पैलेस दोनों पदों को सम्मिलित रूप से अपने अधीन रखने में सफल रहा। 1648 मे, छोटे फ्रेडरिक तृतीय को अपनी शक्ति सैनेटरों में बांटने के लिये बाध्य करने के लिये, वह तीन अन्य सरदारों के साथ रीजेन्सी की कौंसिल में बैठा। जब 1651 में संयुक्त प्रान्तों (United-Provinces) से अपने ही अधिकार से लाभ रहित सन्धि करने के कारण उसकी आलोचना की गयी तो उसने कैथोलिक धर्म को पुनः स्थापित करने और राजा को उखाड़ फेंकने के लिये वैटिकन से बातचीत आरम्भ कर दी।[1] इस योजना के लिये धन प्राप्त करने में असफल रहने पर वह स्वीडन की सेवा में चला गया और वहां से उसने अपनी मातृभूमि के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। सन् 1659 में उसने अपने स्वीडिश नियोजक चार्ल्स दशम को धोखा दिया और उसे मृत्यु-दण्ड की आज्ञा हुई। लेकिन एक नई सूझ के परिणामस्वरूप उसका दण्ड कुछ समय के लिये रोक दिया गया और उसे वापिस डेन्मार्क भेज दिया गया जहां वह फौरन कैद कर लिया गया। रिहा होने पर 1661 में वह ब्रूजज चला गया और डेनिश राजा से प्रतिकार लेने के लिये गद्दी से उतारने के षडयन्त्र में ब्रैन्डनवर्ग के ऐलक्टर को उत्प्रेरित करने का प्रयत्न करने लगा। फ्रैडरिक ब्रैन्डनवर्ग ने षडयन्त्र की सूचना डेनिश सरकार को भेज दी, इसपर उहलफल्ट को उसकी अनुपस्थिति में ही मृत्यु दण्ड की आज्ञा हुई। कुछ वर्षों तक डेनिश दरबार इससे भयभीत रहा, तथा 1664 में उसकी मृत्यु के समय राष्ट्रीय समारोह जैसा हर्ष मनाया गया। फ्रांस को दूसरे फ्रान्डे ने बड़े सरदारों के नेतृत्व में लगभग नष्ट प्रायः कर दिया। यह कहा जा सकता है कि सत्रहवीं सदी की राज-सत्ता यद्यपि बहुधा अनुत्तरदायी एवं स्वेच्छाचारी थी तथापि इसने यूरोप को और अधिक बुरी दशा में पड़ने से बचाया।

सेना

उस युग में राजतन्त्र और कुलीन वर्ग के बाद सबसे अधिक महत्वपूर्ण धर्म-निरपेक्ष संस्था सेना थी। सैनिक सेवा एक नागरिक कर्तव्य है, इस प्रकार की आधुनिक विचारधारा का सत्रहवीं शताब्दी में आविर्भाव नहीं हुआ था, यद्यपि सर्वेन्ट (Cervantes), डेकार्टे (Descartes) और काल्डरों (Calderon)

1 इस षडयन्त्र के विस्तृत वितरण के लिए इग्नेजिओ केम्पी कृत **इन्नौसेन्जों एक्स पेमफिलियो ए ला सुआ कोर्ते** से संलग्न परिशिष्ट में उद्घृत प्रमाण देखिये।

जैसे व्यक्तियों ने स्वेच्छा से (व्यक्तिगत रूप में) सैनिक सेवा की, किन्तु सेना में (सैनिक) पेशे वाले और निर्जातीय लोग (भर्ती) होते थे। सैनिक की परिभाषा में ऐसा व्यक्ति, जो अपने देश और घर के रक्षार्थ हथियार उठाने वाला हो, नहीं आता था, अपितु ऐसा "व्यक्ति जो जरायम पेशा या दार्शनिक न होते हुए, वध करता है और अपने आप को स्वेच्छा से मृत्यु के अभिमुख कर देता है" भर्ती किया जाता था।[1] भूस्वामित्व का सैनिक सेवा से अभी सम्बन्ध विच्छेद नहीं हुआ था, परिणामतः कुलीनवर्ग जब भी युद्ध क्षेत्र में नेतृत्व को अपना अविच्छेदाअधिकार मानकर ग्रहण करता था, यद्यपि इस शताब्दी के अन्त तक (अन्तिम वर्षों में) वांबां (Vauban) और कातीना (Catinat) यह सिद्धकर रहे थे कि सैनिक प्रतिभा किसी एक वर्ग के एकाधिपत्य की चीज़ नहीं है। लुई चौदहवें के राज्य-काल में दो बार (सन् 1674 और 1689 में) सामन्तीय एरिएर बैन (Arriere ban) बुलाया गया। इन अवसरों पर जागीर प्राप्त लोगों को स्वयं सेवा करने के लिये बुलाया गया, जबकि स्त्रियां, धर्मोपदेशकों और अवस्यकों को अपने प्रतिनिधि (Substitute) भेजने का निर्देशन दिया गया। अनिवार्य सैनिक सेवा के लिये विधान नहीं था, यद्यपि व्यावसायिक (Professional) एजेन्ट गन्दी बस्तियों और कभी कभी जेलों में जाकर बहुधा धोखा देकर और बल-प्रयोग करके सैनिक भर्ती किया करते थे। कप्तान लोग, जिन्हें सैन्यदल (Company) बनाने की राजाज्ञा प्राप्त होती थी, साधारणतया रंगरूटों के साथ अपना ही सौदा करते थे। इस प्रकार सैन्य सेवा सैनिक और अफसर के बीच निजी व्यापार (कार्य) था। इसलिये यह आशा नहीं की जा सकती थी कि राज्य सैनिक के भाग्य में किसी प्रकार की रूचि रखे। तात्कालिक समय में सैनिक वृति एक अलग व्यावसाय समझा जाता था। अतः पादरियों, विधि वेत्ताओं या दूसरे व्यावसायी व्यक्तियों द्वारा सैनिक पद ग्रहण करना 17वीं शताब्दी की विचारधारा के विरुद्ध था इसके साथ ही राष्ट्रीयता के प्रति उस समय पूर्ण उदासीनता थी। तीसवर्षीय युद्ध में कांदोतिएर मैंसफील्ड (Mansfeld) की सेना में अंगरेज, जर्मन और फ्रांसीसी थे। स्वीडन ने स्कॉटलैण्ड और इंगलैण्ड में भर्ती कर सेना संगठित की। पार्मा के ड्यूक को डाफिन में से सैनिक भर्ती करने का अधिकार था। हालैण्ड ने नार्मण्डी से भर्ती की। अपने उच्च भाड़े के सैनिकों के सम्मुख वेनिस का भी साहस टूट गया।[2] मज़दूरों की भांति सैनिक दल एक वर्ष या एक महीने के लिये भी भाड़े

---

1 द एवनेल द्वारा उदधृत। उपर्युक्त पुस्तक, 3,6
'Catechisme des Constisans'

2 द एवनेल, रिशेलू ए ला मोनार्की एब्सोल्यू, 3,20।

पर रखे जाते थे और व्यावहारिक दृष्टिकोण से सेना ही बेरोजगारी के प्रश्न का एक मात्र हल थी। लूट-खसोट प्राय: प्रधान प्रलोभन था, क्योंकि जब किसी शहर पर अधिकार कर लिया जाता था तो सैनिक हथियार और गिरजाघरों की घंटियों के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु पर अधिकार कर सकते थे, परन्तु गिरजाघरों को भी छोड़ा नहीं जाता था, पीसे की शव–पेटियों को जमीन से खोदकर निकाल लिया जाता था, यहां तक कि कभी–कभी पादरियों की पोशाकों का चुराये हुए पशुओं के लबादे बनाने में प्रयोग किया जाता था। एक जिले में ठहरी हुई मित्र सेना विपक्षी सेना की अपेक्षा आंशिक रूप में ही अधिक अच्छी होती थी। तीसवर्षीय युद्ध के अन्तिम चरणों में सैनिकों के साथ उनकी पत्नियां और परिवार भी युद्धस्थल पर जाने लगे, जिनका निर्वाह भिक्षा अथवा लूटमार द्वारा किया जाता था। इस प्रकार की उपद्रवात्मक गतिविधियों का परिणाम यह निकला कि कुछ ही समय में हैजा और ब्युबोनिक प्लेग की बीमारियां मध्य यूरोप में घर कर गईं।[1] स्पेनिश सैनिकों में कहावत प्रचलित थी कि "वर्ष में सासेज (Sausages) की अपेक्षा दिन अधिक होते हैं।" **डानक्विजोट** में व्यवसाय का सुन्दर वर्णन, जो एक व्यक्ति ने व्यावहारिक अनुभव के आधार पर दिया है, पाठकों को स्मरण होगा[2]। डेकार्ट को अपने सेवा सम्बन्धी अनुभव याद आने पर घृणा होती थी। उसने लिखा था[3] यह ध्यान में रखते हुए कि "आलस्य और दुराचरण, मनुष्यों के सैनिक बनने में प्रधान प्रेरक हैं, मैं, अस्त्र–शस्त्रों को सम्मान्य व्यावसायों की श्रेणी में रखने में कठिनाई अनुभव करता हूँ।"

एक स्पेनिश सैनिक के संस्मरण

इस मत की पुष्टि के लिये एक स्पेनिश सैनिक अलोंसो दे कोंट्रेराज (Alonso de contreras) द्वारा सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में लिखी गयी प्रसिद्ध पुस्तक **'मैमोयर्स'** (Memors) में पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं[4]। यहां यह पुस्तक केवल साहित्यिक उत्कण्ठा के लिए नहीं अपितु उन असंख्य सम्भावनाओं का सच्चा प्रमाण देने के लिए, जो उस समय एक सौभाग्यशाली सैनिक के

1 इसके लिए देखिए, एपीडेमिक्स रिज़लटिंग फ्राम वार्स, 77 एफ० एफ०।

2 डानक्विज़ोट, खंड 1, भाग 39। माइग्वेल द कास्ट्रो कृत **विदादेल सोलडेडो एसपेनोल** (1593–1611) भी देखिये।

3 शर्वेरिआ कृत **हिस्तोरे द ला ग्योर द ट्रेन्ट आं** 1,205।

4 **विदा देल केपीटन अलोसो द कोनट्रीरास,** स० सारानो य साज़ (1900) लेमेट एवं रोनट (1911) द्वारा किया फ्रेन्च अनुवाद भी उपलब्ध है।

सम्मुख होती थीं, और रोचकता के कारण जो आजकल के सैनिक की सीमित वृत्ति और अधिक अनुशासन–जनित अन्तर को प्रस्तुत करती हैं उद्धृत की गई हैं। कांट्रेराज के **मेमॉयर्स** का सत्रहवीं शताब्दी के पूर्व वर्षों के लिये वही महत्व है जो बेनवैनुटोसेलिनी (Benvenu to cellini) के **मेमॉयर्स** का पूर्व सोलहवीं शताब्दी के लिये था। सेलिनी की भांति कोंट्रेराज भी एक कलाकार था, किन्तु एक भिन्न प्रकार का। उसकी पुस्तक प्रायः अज्ञात सी है। इस तथ्य के कारण उसके विषय का यहां विशेष उल्लेख करना क्षम्य होगा। कथा के अनुसार अपने स्कूल के एक साथी का आकस्मिक वध करने के कारण काण्ट्रेराज को छोटी आयु में स्कूल छोड़ना पडा। तत्पश्चात् एक सुनार के पास अल्पकाल तक असन्तोषजनक प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद वह एक सैनिक बन गया। उसने कुछ समय भूमध्यसागर में स्पेनिश नावों पर काम किया। यह ऐसा जीवन था जिसमें उसे परिवर्तन और साहसिक कार्य करने की रूचि को पूरा करने का अवसर मिला। जब वह उन नावों में जिन्हें वह धर्म की नावें कहता था, नौकर था, तो लूट, अपहरण और सामुद्रिक डकैती उसके दैनिक कार्य प्रतीत होते थे। उसने बहुत सी अद्भुत घटनायें, जो उसने देखी उल्लिखित की हैं, जैसे तुर्कों के शव अवनत मुख तैरते हैं और इसाइयों के उर्ध्वमुख। लैम्पेडूसा (Lampedusa) में उसे एक जादुई गुफा मिली जिसमें नाविकों द्वारा बचाये गये दासों की जीवन रक्षा के लिये, चाहे वे तुर्क हो या ईसाई, खाद्य पदार्थों की भेंट एकत्र की हुई थीं।[1] यदि कोई व्यक्ति बिना आवश्यकता के इस भोजन को छू लेता तो जहाज पर वापिस जाने पर उसे पता लगता कि वह लंगर नहीं खोल सकता था, इस नौकरी में अपने कुकृत्यों से कौंट्रेराज ने इतनी कुख्याति अर्जित कर ली थी कि एक अधिकारी ने, जो उसकी लूटमार से हानि उठा चुका था, उसकी गिरफ्तारी के लिये पुरुस्कार घोषित किये तथा साथ ही यह निर्दिष्ट कर दिया कि मृत्यु दण्ड से पूर्व वह उसे किस प्रकार की यातनायें देने का विचार रखता है। सैनिक जीवनी लेखक ने क्षम्य गर्व से लिखा है कि उसके चित्र लगभग हर एक भूमध्यसागरीय बन्दरगाह पर प्रदर्शित किये गये थे।

इस जीवन से तंग आकर अन्त में उसने तट पर बदली करा ली और अपने कप्तान का वध करने की कोशिश करने के कारण गम्भीर विपत्ति में फंस गया। वह लिखता है कि यह अपराध, स्पेनिश सैनिक शिष्टाचार के अनुसार वैसा ही माना जाता था जैसा कि अपने बड़े अधिकारी के प्रति किया गया

---

1 वही, अध्याय तीन।

2 अध्याय पांच।

अनादर।[1] इस अफवाह के फैलने पर भी कि वह छद्म वेष में मोरिस्कोंस (Moriscos) का राजा था उसके भाग्य में कोई सुधार न हुआ।[2] उसके लिये जीवन अब झगड़ों, लड़ाइयों, पलायनों, षड़यन्त्रों और वधों का एक लगातार तांता बन गया था, जिसमें उसने हमेशा अपने जीवन को खतरों में डाला किन्तु स्पेनिश सेना में अपनी उन्नति के लक्ष्य को नहीं छोड़ा। उसके जीवन का कोई भी क्षण, उसका अन्तिम क्षण हो सकता था। अतएव सदैव वह उत्साह व आनन्द अनुभव करता था। लेकिन सेलिनी की भांति, उसके जीवन में भी पश्चात्ताप के क्षण होते थे। ऐसी चित्तवृति की अवस्था में एक बार उसने सन्यासी बनने का निश्चय कर लिया।[3] संन्यासी के लिये आवश्यक सामग्री जैसे बालदार कमीज और एक खोपड़ी और दो एक दूसरे को काटती हुई हड्डियां, एक थैले में भर कर, वह एक एकांत पहाड़ी स्थान में चला गया, किन्तु उसे स्थानीय चुंगी अफसरों के सम्मुख भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि उनको उसके थैले की वस्तुऐं एवं उसकी गतिविधियां सन्देहास्पद प्रतीत होती थीं। उसने एक बार एकान्तवास में केवल तेल और जड़ी–बूटियों पर रह कर ही कठोर तपस्या की। सात मास के शाकाहारी जीवन की उस समय समाप्ति हो गयी जब उसे 'पवित्र-बरादरी' (Holy Brotherhood) के दूतों अथवा पुलिस दल द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। उस पर मौरिस्कों के हथियार छिपाने का दोष लगाया गया और जेल भेज दिया गया। वहां उसे इतना अच्छा भोजन मिला कि वह बीमार हो गया और उसका इलाज कराना पड़ा, स्वस्थ होने पर उस पर अनेक अत्याचार किये गये किन्तु उसने अपराध स्वीकार नहीं किया[4]। अन्त में वह अपने आप को निर्दोष सिद्ध करने में सफल हुआ। मुक्त होकर उसने पुनः सैनिक जीवन अपना लिया।

स्पेनिश सैनिक के अन्य साहसिक कार्य

उसके साहसिक कार्यो ने अब और भी अधिक भयंकर रूप धारण कर लिया। वह साधारण उत्तेजना पर वध कर देता था। अपने आपको 'पवित्र-बरादरी' के पंजों से बचाये रखने में दिवगंत परिचितों के सम्बन्धियों से और परित्यक्ता पत्नियों से दूर रहने में वह पूर्णतया उत्तेजनापूर्ण आनन्द का अनुभव करता था। अपनी नौकरी के दौरान उसने फ्लेंडर्स और इटली में बहुत कुछ

---

1 अध्याय 7।

2 अध्याय 9।

3 अध्याय 9।

4 अध्याय 10।

देखा। इटली में उसने इस तथ्य पर विशेष ध्यान दिया कि वहां विष प्रयोग वही कार्य करता था जो स्पेन में कटार करती थी। निस्सन्देह विष प्रयोग द्वारा उसे मारने के इतने प्रयास किये गये कि वह विष प्रभाव से–संखिया से भी—कुछ सीमा तक मुक्त हो गया[1] वेसुवियस ज्वालामुखी के विस्फोट से एक बार तो वह मर ही जाता, उसे जाति बहिष्कृत भी किया गया, परन्तु वह एक्विल प्रदेश का राज्यपाल बन गया। माल्टा लौटने पर फिर उसे एक जहाज दे दिया गया। पश्चिमी द्वीप समूह की यात्रा करते समय उसकी सर वाल्टर रेले[2] से भयंकर झड़प हो गई, तथा भूमध्यसागर में वापिस लौटने पर वह पेन्टेलेरिया के राज्यपाल के पद पर नियुक्त कर दिया गया[3]। इससे पहले वह माल्टा के आर्डर आफ सेन्ट जॉन का 'ब्रदर सर्वेन्ट आफ आर्म्स' (Brother Servant of Arms) निर्वाचित किया जा चुका था। चेप्टर जनरल (Chapter General) ने जो सौ से अधिक व्यक्तियों द्वारा निर्वाचित थी, उसे सर्वसम्मति से निर्वाचित किया।[4] कौंट्रेराज ने तब तक कई बार विवाह किये, किन्तु अर्धधार्मिक सम्मान को प्राप्त करने के बाद वह ब्रह्मचारी बन गया। अपने संस्मरणों में वह सर्वत्र गर्व से उल्लेख करता है कि धर्म के सम्बन्ध में उस पर या उसके पूर्वजों पर कभी किसी ने पाखण्डी होने का तनिक भी सन्देह नही किया। पैन्टेलेरिया में वह अपनी आत्मा की शांति के लिये 'मास' पढ़े जाने का व्यय चुकाने के लिये अत्यधिक सम्पत्ति वसीयत में छोड़ गया। उसके संस्मरण जीवन के मध्य में ही समाप्त हो गये और यह उचित ही है। निस्सन्देह उसका अन्त उसके जीवन–चरित्र के अनुरूप था।

क्रूरता के लिये राष्ट्रीय ख्याति

अभी कुछ वर्षों से यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि कतिपय राष्ट्र भूतकाल में युद्ध के दौरान क्रूरता के लिये विशेष रूप से कुख्यात थे। ऐसे सिद्धान्त सत्रहवी शताब्दी के इस अनुभव को ध्यान में नहीं रखते कि उस समय सेनायें राष्ट्रीय पद्धति के आधार पर संगठित नहीं की जा सकती थीं और प्रत्येक सैनिक–जाति ऐसी क्रूरताओं की अपराधी थी, जिनकी भयंकरता वर्णनातीत है। सत्य तो यह है कि जब तक युद्ध और मानव, स्वभाव से ऐसे ही रहेंगे तब तक अच्छी से अच्छी लड़ाइयाँ अमानुषिक आचरण से दूषित हो सकती है, क्योंकि

---

1 अध्याय 11।
2 अध्याय 13।
3 अध्याय 13।
4 अध्याय 11।

भीड़ (Mob) की मानसिक क्रिया व्यक्ति के मनोविज्ञान से सर्वत्र भिन्न होती है। इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि 1688 में पेलैटीनेट[1] (Palatinate) के दूसरे आक्रमण के बाद जर्मन लोग फ्रांसीसियों के प्रति हूण शब्द का प्रचुरता से प्रयोग करते थे। समूची शताब्दी में शत्रुओं अथवा आक्रमकों द्वारा किये गये अत्याचारों के विवरण का आंशिक उपयोग, प्रचार कार्य के लिये किया गया था, फिर चाहे वे फ्रांस, स्वीडन, स्पेन, जर्मन, या लॉरेन निवासी ही क्यों न हों। किन्तु जहां तक निश्चित और नियमित क्रूरताओं का संबंध है इसके लिये तुर्क ही निर्विवाद रूप से प्रख्यात थे। यद्यपि सेनायें मिली-जुली होती थीं और युद्ध में किसी विशेष अनैतिक आचरण के लिये किसी एक राष्ट्र को कलंकित करना असम्भव था तथापि तात्कालीन लोग प्रत्येक देश के सैनिक पराक्रम के सम्बन्ध में निश्चित पारस्परिक धारणायें बनाये रखते थे। इस तरह, आक्रमण करने के लिये इटैलियनों को अच्छा समझा जाता था और दीर्घ कालीन घेरे के लिये स्पेनवालों को। स्पेनवालों ने इस काल में अपनी सैनिक प्रतिष्ठा नष्ट कर ली। वैनिस के एक राजदूत ने लिखा है कि "बहुत ही कम नागरिक ऐसे थे जो सेना में जनरल के पद पर कार्य करने के अतिरिक्त किसी और पद पर कार्य करने के लिये तैयार होते थे। स्पेनिश अश्वारोही सेना की निर्बलता रोक्रोई (Rocroi) की पराजय से सिद्ध हो गई, लेकिन फिर भी उनका तोपखाना अच्छा था। यही कारण है कि नार्डलिन्जन (Nordlingen) का यह युद्ध स्पेन की पदाति सेना ने जीता। निस्संदेह 17वीं सदी में सबसे अधिक सैनिक फ्रांसीसी जाति के थे। ऐसा कहा जाता था कि फ्रांसीसी राजा के अधीन सबसे अधिक सेना है इसका एक कारण यह भी था कि उसके सभी प्रजाजन सैनिक होते थे[4]। स्पेनिश सेनायें सामान्यतः उत्तम प्रशिक्षण और अनुशासन के लिये प्रसिद्ध थीं[5]।

---

1 देखिये अध्याय 6

2 **रिला जोनी देगली एम्बेसियोटरी वेनिटी**, स० बारोज़ी ए बेरचेट, प्रथम शृंखला (स्पेन) 1,231।

3 **वही**, 127 इस युग में स्पेन की सैनिक शक्ति के ह्रास के लिये देखिये केनोवास देल केस्टिलो कृत **एस्टयूदोस दे ल रेनेडो द फिलिप चतुर्थ**, 2, 375 एफ० एफ०

4 रिलाजोनी दे गली एम्बेसियोटरी वेनिटी, द्वितीय शृंखला, (फ्रांस) 3,45।

5 लिपजिग युद्ध के समय स्वीडिश सेनाओं के विषय में एक तात्कालिक लेखक लिखता है (1631), "मैं नहीं सोचता कि कोई भी सैनिक भागना चाहता है या भाग सकता है, सेनायें लूटने की अपेक्षा लड़ने को अधिक उत्सुक हैं जैसा कि

सैनिक अस्त्र-शस्त्र और संगठन

संगीनों के आम प्रयोग से पूर्व पदाति सेना की रचना बराबर संख्या के नेजावाजों और बन्दूकचियों से भी की जाती थी[1]। बन्दूकचियों द्वारा नली से भरी जाने वाली बन्दूकें सहारे के बिना आसानी से नहीं चलाई जा सकती थीं। अतः बन्दूकची के एक कन्धे पर पांच फुटी बन्दूक और दूसरे पर लकड़ी का कांटा रहता था, बन्दूक खड़ी करने का एक ढांचा रखकर कूच किया जाता था। इस जटिल तरीके से बन्दूक भरने के बाद उसमें एक जलती हुई बत्ती से आग लगाई जाती थी, किन्तु जमीन पर जमी हुई होने के कारण जैसी कि व्हाइट हाल (1620) की लड़ाई में थी, बन्दूक को आधार देने वाले ढांचे को भूमि में नहीं गाड़ा जा सकता था, अतः व्यावहारिक दृष्टि से इन बन्दूकों का उपयोग व्यर्थ था। स्विस लोग मक्दूनिया वालों की व्यूह रचना के समान पदाति सेना की वर्गाकार रचना करते थे यद्यपि वह व्यूह रचना समस्त यूरोप में प्रचलित हो गई थी तथापि तोपखाने के विकास ने इसे खतरनाक बना दिया। बन्दूकची प्रायः बर्छीधारियों के सामने पीछे हट जाते थे। पदाति पल्टन नाममात्र के लिए 3000 आदमियों की बनती थी, किन्तु वास्तव में उसमें लगभग 1500 सैनिक होते थे, तीसवर्षीय युद्ध के दौरान भारी अश्वारोही सेना में पिस्तौल का प्रयोग करने वाले बोझल कवचधारी घुड़सवार भी होते थे, जिनके धाराशायी हो जाने पर, या तो उन्हें उठा लिया जाता था, या वे पीछे छोड़ दिये जाते थे। छोटे बन्दूकचियों के पास एक तीन फुटी हल्की बन्दूक और दो पिस्तौल होते थे। ये लोग जब तक बर्छीधारियों और खड्गधारियों से सम्पर्क स्थापित न करलें तब तक अश्वारोही दुहरी पंक्तियों में आगे बढ़ते रहते थे तथा जब एक पंक्ति गोली चलाती थी तो दूसरी अपनी बन्दूकों को भरती थी। प्रायः अश्वारोही पल्टन में करीब 600 आदमी होते थे। इस शताब्दी के दौरान सेनाओं का आकार बढ़ गया, जिसके कारण कप्तान और रंगरूट के बीच निजी समझौतेवाली प्रथा के स्थान पर किसी अन्य प्रकार की सरकारी प्रणाली अपनाना आवश्यक हो गया, किन्तु ऐसा लूव्वा (Louvois) के समय में न हो सका। उसके समय में वास्तविक

हमने और साम्राजीय सेना ने सदैव किया है। (कौक 1,441, कमीशन रिपोर्टस) 1654 के पोलिश अभियान के दौरान एक स्वीडिश जनरल ने अपने 470 सैनिकों को फांसी पर लटका दिया था, क्योंकि इन सैनिकों ने लूटने का प्रयास किया था। (तागे बुच देस जनरल्स पी० गोरडन (स० 1849), 1, 18)

1 इसके लिये देखिये चेरेविएट, **हिस्तोरे द ला आरे द फ्रेंसे अन्स, 1,** अध्याय, 8

राष्ट्रीय सेनायें मैदान में आईं। वाबान (Vauban) किलेबन्दी के विज्ञान में पूर्णता लाया। सत्रहवीं शताब्दी में जिन अन्य क्षेत्रों में उन्नति हुई वे हैं, संगीन जैसे हथियारों में प्रवीणता लाना, अश्वारोही सेना की जगह पदाति सेना को अधिक महत्व देना और तोपखाने के साथ नये प्रकार के सहयोग स्थापित करना। अभी तक तोपखाना बिल्कुल स्वतंत्र समझा जाता था और प्रायः असैनिक नियंत्रण में रहता था।

किसान

इन सैनिक गतिविधियों से सबसे अधिक क्षति कृषक–वर्ग को पहुंचती थी[1]। यूरोप अभी तक कृषि प्रधान महाद्वीप था, किन्तु जब तक सैन्यदलों द्वारा की जाने वाली तबाही को न रोका जाय तब तक कृषि–दशा अत्यन्त दयनीय हो जाती थी। चाहे उसके पड़ोस में मित्र सेना हो या शत्रु दल। उसका और उसके गांववालों का अधिकांश समय उसके स्वामी द्वारा मांगी गई अनेक बेगारों को पूर्ण करने में ही व्यतीत हो जाता था। इन बेगारों में सड़क निर्माण जैसे कठिन कार्य होते थे। इस तरह किसान अपने व्यावसाय में बिल्कुल अनिश्चित और अस्थिर समय दे पाता था। 'पुरातन व्यवस्था' पर आधारित औसत फ्रांसीसी गांव में जागीर स्वामियों को निम्नांकित अधिकारों में से अधिकांश अधिकार प्राप्त थे; उसे गांव में से गुजरने वाले माल पर 'टॉल' कर लगाने का अधिकार था, वह अपने अधिकार क्षेत्र के अन्दर शराब पर बिक्रीकर लगा सकता था, उसे भोजनार्थ मारे गये पशुओं की जीभों का लाभ मिलता था, वह गांव वालों को अपना अनाज केवल उसी की चक्की पर पिसवाने के लिये बाध्य कर सकता था और कुछ गांवों से आग्रह कर सकता था कि स्वामी की बेकरी के अतिरिक्त और कहीं भोजन न पकाया जाय; आपस में भूमि की बदली करने पर वह जुर्माने लेता था, तथा वह गांव वालों से अपनी एवज हल जुतवा सकता था। अगर गांववाले पशु–पालक होते, तो वह चबाई के अधिकार के अन्तर्गत उनके पशु वृद्धि के कुछ भाग पर दावा करता था, इसके अतिरिक्त वह नियमित रूप से रुपया या वस्तु के रूप में लगान लेता था तथा सर्वमान्य पट्टे द्वारा दी गई अपनी भूमि से जागीरी सहायता का दावा भी रखता था। जागीर स्वामियों को किसान की भूमि पर शिकार करने का अधिकार भी प्राप्त था। ऐसी अवस्था में किसान कभी आश्वस्त नहीं रह सकते थे कि उनकी भूमि निरंतर नहीं रोंदी जायेगी। प्रायः जागीरस्वामी कबूतरों के दर्बे और खरहों के बाड़े रखता था जिनका निर्वाह किसानों की खेती पर होता था। इस सिद्धान्त के आधार पर

---

1 देखिये बेबियू कृत **ला विलेज सोस ल एनसिएल रिजीम।**

कि स्वामी उसकी रक्षा के लिये लड़ते थे और पुजारी उसके लिये पूजा करते थे, किसान को सब प्रत्यक्ष करों का बोझ सहना पड़ता था और 'टैली' (Taille) अदा करना उनका कर्तव्य था। इस प्रकार युग–युग से चला आ रहा यह प्रचीनतम एवं सम्मानीय व्यावसाय अपमान एवं अपकर्ष से ग्रस्त होकर 17वीं व 18वी शताब्दियों के सामाजिक जीवन का कठोरतम रूप बन गया था जो उनकी दास स्थिति से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ था।

स्थानीय शासन एवं न्याय–विभाग के कर्मचारी

ऐसे व्यक्ति के लिये, जो कृषक नहीं होता था और पादरी या सैनिक बनना चाहता था, बहुत से स्थानीय शासन सम्बन्धी तथा सरकारी पद उपलब्ध थे, जिनके लिए वह योग्यता प्राप्त कर सकता था। ये पद केवल सामाजिक लाभ के कारण ही आकर्षक न थे बल्कि उन्हें प्राप्त करने पर प्रत्यक्ष करों से सम्मानजनक रूप में मुक्ति मिल जाती थी। इन पदों को प्राप्त करने का मार्ग था, लैटिन का ज्ञान। परन्तु पश्चिमी यूरोप के राजनीतिज्ञ इस विचार से सहमत थे कि निर्धन बालकों को बिना चुनाव किये लैटिन की शिक्षा देने से राज्य की असीमित हानि हुई है। "जो मनुष्य एक बार पाठ्य–पुस्तकों में पेठ जाता है वह फिर अन्य किसी ईमानदार धन्धे के योग्य नहीं रहता। जब एक ग्रामीण लैटिन के तीन शब्द सीख लेता है तो तुरन्त 'टैली' देना बन्द कर देता है। वह एक वकील, न्यायिक या सार्जेन्ट हो जाता है और अपने पड़ोसियों को क्षति पहुंचाने लगता है।" रिशेल्यू और कोल्वर्ट ने ऐसी शिकायतें कीं। स्पेन में अनेकों जेसुइट स्कूलों पर ऐसे लड़के तैयार करने का आरोप लगाया जाता था जिन्होंने लैटिन का ज्ञान प्राप्त करने के बाद भौतिक अथवा शारीरिक परिश्रम करना छोड़ दिया। **ल पेसां फ्रँके** (Le Paysan Francais) के अज्ञात रचयिता ने यह आशंका प्रकट की कि "लाभदायक पदों की प्राप्ति के लिए मक्कारी की कुछ मात्रा का होना लैटिन के ज्ञान का विशेष गुण था। अपने पड़ोसियों से अधिक धूर्त और सिद्धान्त विहीन जब कोई किसान श्रम से थक जाता है और गांव की चौपाल पर आराम करना चाहता है तो वह वकील या सार्जेन्ट बनने की इच्छा करता है, और यदि वह और अधिक अनैतिक हो तो वह न्यायिक पद तक उन्नति कर सकता है। हमारा जीवन और सम्पत्ति ऐसे व्यक्तियों के हाथों में है[2]।" गणना द्वारा पता चलता है कि सत्रहवीं शताब्दी में, जनसंख्या के अनुपात से वर्तमान की अपेक्षा तिगुने लड़कों को लैटिन

1 **एविस डोने अ एम एम द ल एसेम्बले द यू कर्लज,** 1627, हेनोटोक्स में उदधृत, हिस्तोरे द यु कार्डिनल द रिशेलू, 1,460।

2 ल पेयसन फ्रांकेस (1609), 28।

भाषा की शिक्षा दी जाती थी[1]। किन्तु यह मुंहफट मन्तव्य किसान पर विशेष आरोप लगाकर गलती करते हे, क्योंकि पद (सरकारी नौकरी में अस्थायी कमीशन से भिन्न) प्राप्त करने के लिए कुछ धन तथा लैटिन के सामान्य ज्ञान की आवश्यकता होती थी। उस समय जबकि नियमित सिविल सर्विस का संगठन नहीं हुआ था, तो पद को, अभ्यर्थी के दृष्टिकोण से, नियमित आय देने वाली लागत, ऊपरी आमदनी का निश्चित साधन, समाज में गौरवपूर्ण स्थान तथा वैयक्तिक कर से मुक्ति दिलाने वाला और अपने वंशजों के लिए बपौती समझा जाता था, जबकि, सरकारी दृष्टिकोण के अनुसार, इसे धन इकट्ठा करने का साधन (क्रय-मूल्य) माना जाता था और सरकारी वर्ग के सदाचरण की जमानत का प्रयोजन सिद्ध होता था। यह प्रथा फ्रांस में विशेष रूप से सत्य थी ऐसी धारणा प्राय: समस्त पश्चिमी यूरोप में प्रचलित थी। राज्य के बड़े पद राजकीय मनोनयन द्वारा भरे जाते थे। किन्तु अनेक प्रशासकीय और न्यायिक पद उसी प्रकार बेचे जाते थे जैसे अट्ठारहवीं शताब्दी के इंगलैण्ड में मत और सीटें बेची जातीं थीं। फ्रांस में निम्न मध्यमवर्गीय श्रेणी के लोगों को, जिनकी सम्पत्ति में सतत वृद्धि हो रही थी, इस प्रकार धन लगाना सबसे अधिक आकर्षक लगा[2]। वास्तव में यह अक्षरश: सत्य है कि ज्यों-ज्यों सरकार दिवालिया होती जाती थी, त्यों-त्यों वह नये-नये पद गढती जाती थी।

पदों की बीमारी

फ्रांस के विधिवेत्ता होटमेन[3] (Hotman) ने सोलहवीं शताब्दी में सुझाव दिया था कि पदों की संख्या में वृद्धि करने की बीमारी उन देशों में फैली हुई थी जिनमें जस्टीनियन का रोमन ला स्वीकार कर लिया गया था। उसने इसे बाइजेन्टाइन (Byzantine) प्रशासकीय प्रणाली के, जिसमें अफसरों की असंख्य क्रमानुगत शृंखलायें थीं, प्रभाव का परिणाम बताया। सोलहवीं व सत्रहवीं शताब्दियों के फ्रांस व इंगलैंड की तुलना से यह तथ्य प्रमाणित हो जाता है। सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में क्लाड सीसेल (Claude seyssel) ने फ्रांस में कर्मचारियों की संख्या में अत्याधिक विषमता की शिकायत की। लगभग तीन हजार जनसंख्या के औसत

1 हेनोटाक्स, **पूर्व उदधृत** 462। जैमुइट स्कूलों के अतिरिक्त स्पेन (1619) में 4000 से भी ऐसे अधिक स्कूल थे जहां लैटिन पढाई जाती थी। (**अल्टामैरिया य क्रीविया, हिस्तोरे द स्पेन,** 3, 544)

2 इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण सी० नोरमंड कृत **ला बूर्जुआ फ्रंकाइस अ** 17 सीकिल में उपलब्ध है।

3 **एन्टी-ट्रीबोनियस** (सं 1681) 128–9।

फ्रांसीसी गांव में एक-एक मजिस्ट्रेट, प्रेवो (Prevot), लेफ्टीनेन्ट, राजकर एकत्र करने वाला, 6 लेख-प्रमाणक, 12 शासकीय अभियोक्ता (Public Prosecutor) 4 रजिस्ट्रार और अनेक लिपिक नियुक्त होते थे। साधारण लोगों (Routurier) की श्रेणी में रहना अज्ञानता या बुद्धिहीनता का द्योतक माना जाता था। हेनरी तृतीय के राज्य से प्रारम्भ होकर म्युनिसिपल, न्यायिक और वित्त सम्बन्धी पद दुगुने व चौगुने हो गये। हेनरी चतुर्थ के राज्यकाल में ये पद 'पालेट' (Paulette) अदा करने पर वंशानुगत हो गये, और थोड़े ही समय में कोई अदालत ऐसी नही रही जिसके साथ उनके पिट्टुओं के झुंड न हों। कोई कारपोरेशन ऐसा नहीं था जिसमें अनेकों प्रभावशाली कर्मचारी न हों, कोई व्यापार ऐसा नहीं रहा जिस पर सरकारी निरीक्षकों और नियंत्रकों की एक सेना का नियन्त्रण न हो। लोयसी (Loyseaw) के अनुमानुसार 17 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लगभग 50,000 ऐसे पदों का निर्माण किया गया। "आज गांवों में निवासियों की आधी संख्या राजकीय कर्मचारियों की है। जबसे हमारे पूर्वजों ने आलसी मनुष्यों की मूर्खता और महत्वाकांक्षा से लाभ उठाकर पैसा एकत्रित करने का यह तरीका ढूंढ निकाला है तब से यह कभी निष्फल न होने वाली औषधि है।" नये पदों का निर्माण तो किया ही जाता था, इसके साथ सरकार कभी–कभी पहले से बने हुए सब-डिविजनों के अन्तर्गत और सब-डिवीजन बना देती थी जिससे छोटे पहरेदार हर दूसरे, तीसरे अथवा चौथे वर्ष अपने अधिकारों का प्रयोग करते रहते थे। सन् 1689 और 1715 के मध्य पेरिस के बन्दरगाह और बाजारों में 2000 से भी अधिक अधिकारी नियुक्त किये गये थे, ये नियुक्तियां किसी आवश्यकता के कारण नहीं, बल्कि इसलिए की गई थीं कि लुई चौदहवें द्वारा छेड़े गये युद्धों के कारण नकद रुपये की आवश्यकता पहले से भी अधिक बढ़ गई थी। गोवेंदार टोपियों के नियन्त्रकों की प्रथम नियुक्ति 1706 में हुई थी। जब तक सरकारी पदाधिकारियों के वार्षिक वेतन अदा होते रहे तब तक कोई आपत्ति न थी, लेकिन जिस समय ब्रिटिश संसद कुछ मूल संवैधानिक सिद्धान्त स्थिर रखने के लिए संघर्ष कर रही थी, उसी समय पेरिस की संसद ने विद्रोह खड़ा किया। मेजारिन (Mazarin) अन्य कार्यों के साथ साथ सरकारी लगान और कर्मचारियों के वेतन की अदायगी में हस्तक्षेप करता था। इस प्रकार सत्रहवीं शताब्दी के फ्रांस और इंगलैण्ड में यही एक मूल अन्तर था।

कर लगाना फ्रांस का 'टेली'

सत्रहवीं शताब्दी की कुछ प्रमुख कर-व्यवस्थाओं के अध्ययन से तत्कालीन सार्वजनिक जीवन को प्रबलता से प्रभावित करने वाली कुछ धारणाओं का विशेष परिचय मिलता है। इसके लिए फ्रांस और स्पेन को चुना जा सकता है, फ्रांस को

इसलिए कि वहां की सभ्यता किसी भी अन्य महाद्वीपीय देश से अधिक जटिल और अधिक विकसित थी, और स्पेन को इसलिये क्योंकि यूरोप में उसके अधिकृत प्रदेश बहुत दूर तक फैले हुए थे। यद्यपि फ्रांस का प्रत्यक्ष कर 'टेली' (Taille) मुख्य था, जिसका स्थान सत्रहवीं शताब्दी के बजटों में वही था जो आज कल आयकर का है, तथापि 'टेली' निश्चित करने में न तो न्याय और न ही राजनैतिक मितव्ययता का ध्यान रखा जाता था।

फ्रांस द्वारा मिलाये हुए नये प्रान्तों (Pays d' Etates)[1] में, जो फ्रांस के क्षेत्रफल के लगभग एक तिहाई भाग थे 'टेली' अचल सम्पत्ति पर लगाया जाता था। यह कठोर कर नहीं था, क्योंकि भूमिहीन व्यक्ति इससे मुक्त थे। प्रत्येक प्रान्त (Pays d' Estates) के स्थानीय स्टेट्स (Estates) ने सरकार को इकट्ठी रक़म देना स्वीकार किया हुआ था जिसको उस प्रान्त में रहने वाले समस्त अचल सम्पत्ति के मालिकों में बांट दिया जाता था। इसके विपरीत मध्यवर्ती प्रान्तों में (Pays d' Elections) 'टेली' बहुत अन्यायपूर्ण कर था, क्योंकि वह प्रत्येक व्यक्ति पर होंने के कारण लगभग समूचे रूप से किसानों पर ही पड़ता था, क्योंकि जहां तक कुलीन, पादरी तथा म्युनिसिपल और सरकारी कर्मचारियों का सम्बन्ध है वे अपने कर मुक्ति के अधिकार की तत्परता से रक्षा कर लिया करते थे। मध्यवर्ती प्रान्तों में कर दाता और राज्यकोष (Treasury) के बीच कोई स्थानीय स्टेट्स नहीं थे। उनके स्थान पर वहां क्रमबद्ध जिला न्यायालय थे और प्रत्येक न्यायालय के साथ ऐसे अफसरों की, जिन्होंने अपने पद खरीदे थे, एक शृंखला थी, जो केवल राजा के प्रति ही उत्तरदायी थे। करदाता में सीधा सम्पर्क एल्यू (E'lus) के माध्यम से था। यह घृणित वर्ग था। इस नाम से प्रायः भ्रम पैदा हो जाता[2]

---

1 **पे दे तो** (Pays d' Etats) वे प्रान्त थे जो कुछ समय पूर्व फ्रांस के राज्य में मिला लिये गये थे, परन्तु फिर भी जो अपनी स्टेट्स अक्षुण्ण रखते थे। उनमें ब्रिटैनी, बर्गण्डी, डाफिन, प्रावेस और लांग्वेडाक सम्मिलित थे। अधिकांश मध्यवर्ती प्रान्त **पे दे' लेक्शिआं** (Pay d' Elections) थे। 11 वीं शताब्दी की फ्रांसीसी अर्थ-व्यवस्था के लिये देखिये द' एवेनेल, **वही**, 2, 139–371।

2 'एल्यू' से अस्सिऊर (Asse'eurs) न समझना चाहिये। अस्सिऊर ग्रामीण प्रदेशों में 'टेली' एकत्र करने के लिये निर्वाचित होते थे। इस कार्य के लिये उन्हें कोई आर्थिक लाभ नहीं मिलता था। परन्तु यदि वे निश्चित धन-राशि एकत्र करने में असफल रहते थे तो उन्हें क्षति पूर्ति करनी पड़ती थी अथवा जेल जाना पड़ता था। फलतः अस्सिऊर के निर्वाचित और अवैतनिक पद के लिये कोई प्रतियोगिता न थी। कुछ ग्रामों में कृषकों की एक बड़ी संख्या 'टेली' एकत्र न कर सकने के कारण जेल में थी (द' एवेनेल, 2, 193)।

है क्योंकि इससे ऐसा प्रतीत होता है कि ये लोग निर्वाचित कार्यकर्त्ता थे। यह नाम 'पुरातन-व्यवस्था' की नामावली के एसे मृदु शब्दों में से एक है जो निन्द्य और आलोच्य विषयों के लिये प्रयुक्त किया जाता है। यह अलंकृत नामों में से एक हैं। सोलहवीं शताब्दी से एल्यू (Elus) विशेषतया महत्वाकांक्षी और लाभ–हानि पर सदैव दृष्टि रखने वाले व्यक्ति होते थे जिन्होने अपने पद धन से खरीदे थे और लगाई गई पूंजी से घाटे में न रहने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थे। कालबर्ट के समय में प्रबन्धकों (Intendants) ने उनका स्थान ले लिया जो उनकी अपेक्षा काफी ऊंची श्रेणी के लोगों के प्रतिनिधि थे। किन्तु फिर भी फ्रांस के अधिकांश भाग में 'टैली' अत्यन्त अन्यायपूर्ण कर के रूप में चलता रहा और अप्रत्यक्ष रूप से हेनरी-चतुर्थ द्वारा फ्रांस में नये उद्योगों का सूत्रपात करने वाली योजनाओं को विनष्ट करने में सहायक हुआ। इसने फ्रांस के कृषक वर्ग की दशा को निर्धन तथा हीन बनाए रखा।

गैबल (Gabelle) **या नमक–कर**

'गैबेल' अथवा नमक-कर के प्रबन्ध से 17 वीं शताब्दी के अधिकारी वर्ग की अपरिमित गहराई का आभास होता है। 'टैली' की भांति यह भी समान रूप से नहीं आंका जाता था, क्योंकि कुछ प्रान्त[1] इससे सर्वथा मुक्त थे। अन्य प्रान्तों में से कुछ **पे द पेतीत गैबेल**[2] (Pays de Petite Gabelle) और कुछ **पे द ग्रांद गैबेल** (Pays de Grande Gabelle) में[3] थे। उन दिनों में जब सर्दियों में पशु पालन कम होता था तो आज की अपेक्षा नमकीन भोजन का बहुत अधिक प्रयोग होता था। कैथोलिक देशों में शुक्रवार और व्रतो के दिनों में नमकीन सिरके में रखी मछली लोगों का मुख्य भोजन थी। इसके अतिरिक्त नमक का प्रयोग प्रायः खाद के रूप में तथा चमड़े की सफाई करने में किया जाता था।

16 वीं शताब्दी का कम से कम एक युद्ध नमक के गढों के विवादग्रस्त अधिकारों के कारण हुआ[4] तथा अगली शताब्दी में भी नमक का आर्थिक महत्व

---

1 गैबेल-मुक्त प्रान्तों में आर्त्वा, हैनाल, बिअर्न, नेवारे और ब्रिटेनी थे, परन्तु इनमें से कोई भी पूर्णतः फ्रांसीसी न था।

2 लिआनेज, व्यूजोलेज, मैकौनेज, ब्रेस, लांग्वेदाक, प्रावेंस, रूसिलां वेलेज, और फोरेज।

3 इल-द-फ्रांस, आर्लिआंनेज, बेरी, बूर्बानिज, मेन, अंजू और तूरेन।

4 फेरारा के विवाद-ग्रस्त नमक-गढों के कारण 1511 में पोप जूलियस द्वितीय ने फेरारा के विरुद्ध युद्ध किया।

बहुत अधिक रहा। आधुनिक फ्रांस में तम्बाकू की तरह, उन दिनों नमक भी केवल लाइसेन्स प्राप्त परचून के व्यापारियों अथवा विशिष्ट व्यापारियों (Regratteurs) द्वारा ही बेचा जा सकता था और ग्राहक को निश्चित न्यूनतम मात्रा अनिवार्य रूप में खरीदनी पड़ती थी। व्यापारी (Regratteurs) टूर (Tours) के सिक्कों से माल खरीदते थे, किन्तु बेचते थे पेरिस के सिक्कों में और इस प्रकार केवल मुद्रा विनिमय से ही २५ प्रतिशत लाभ उठा लेते थे। एक बार में थोड़ी मात्रा बेचने के कारण दूर के ज़िलों से आने वालों को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता था। क्योंकि वे अपना कोटा पूरा करने के लिए दूर दूर से बार-बार यात्रा करने के लिए बाध्य होते थे। समुद्र तट पर खारे पानी से नमक तैयार करने का बहुत बड़ा प्रलोभन था, क्योंकि वह राज्य द्वारा बेचे जाने वाले नमक से श्रेष्ठ होता था। परन्तु सरकार का एकाधिकार कायम रखने के लिए बहुत कठोर नियम लागू किये गये थे। सरकार कई प्रकार का नमक बेचती थी, घरेलू कार्यों में घटिया नमक प्रयोग में लाकर बचत की कोशिश करने वालों के विरुद्ध कठोर आदेश जारी किये गये थे। यह देखने के लिए कि आवश्यक वस्तुओं की खरीद कर ली गई है और उनका निश्चित कार्यों में प्रयोग होता है विस्तृत विवरण वाले रजिस्टर रखे गये थे। कर्मचारियों के दल के दल इस दृष्टि से नियुक्त किये गये थे कि वे यह देखें कि ऐसा नमक जो सरकारी कर्मचारियों से नहीं खरीदा गया है उपयोग में तो नहीं आता। रसोई घर में घटिया नमक का, जिसे चमड़ा साफ करने के काम में लाना चाहिए, प्रयोग रोकने के लिए उसमें जहर मिलाने का तरीका निकाला गया था। लेकिन लापरवाह अफसरों द्वारा कभी कभी असावधानी के कारण ऐसी किस्में मिला दी जाती थीं, जिससे बहुत से लोग मर जाते थे। जिस जिले के लोगों पर अपना नमक बनाने का संदेह होता था वहां यदि विषाक्त नमक से मृत्यु हो जाये तो ऐसी मृत्यु को इस बात का प्रमाण माना जाता था कि उस जिले में सरकारी नमक का प्रयोग हो रहा है। पशुओं को दिये जाने वाले नमक में कंकड़ मिला दिये जाते थे जिससे बहुत से किसानों का समूचा पशुधन, इस मिलावट से उत्पन्न रोग के कारण, नष्ट हो जाता था। विभिन्न प्रान्तों में नमक के भावों में अत्याधिक अन्तर होने के कारण तस्कर व्यापार होने लगा, फाक्स (Faux) में काफी व्यापार होता था जो न्यूनतम (Sel de devoir) की न्यूनता को पूरी करने में सस्ता पड़ता था। कुत्तों को तस्कर व्यापार करने का प्रशिक्षण दिया जाता था जब वे चुंगी अधि-कारियों द्वारा पकड़े जाते तो सरकारी वर्ग की क्रूर कार्य प्रणाली के अनुकूल उन्हें अवश्य ही मृत्यु-दण्ड दिया जाता था। कभी कभी गांव के गांव जिनमें नमक-कर कम कठोर होता था ऐसे प्रान्त के अधीन चले जाते थे जहां नमक-कर अधिक कठोर होता था। नमक-कर (Gabelle) के नियम भंग करने वाले व्यक्तियों से जेलें और

नावें भरी रहती थी। बार-बार इस नियम का उल्लंघन करने वालों के शरीर फांसी के डण्डों पर, जो सत्रहवीं शताब्दी के फ्रांस की भूमि पर सर्वथा परिचित वस्तु थे, झूलते रहते थे।

स्पेन में कर व्यवस्था

स्पेन के कर अधिक मानवीय थे[1] और उपभोक्ताओं के हित को ध्यान में रखते हुए बनाए गये थे। परन्तु वे देश को विनाश की ओर धकेल रहे थे। सोने, चांदी का आयात करने वाले यूरोप के इस प्रमुख देश में धन इकट्ठा करने के तरीकों में निम्नलिखित साधनों का उपयोग किया जाता था:—शाही अधिकारों और लगामों को दूसरों के हाथ सौंप देना, कुलीन वर्ग की उपाधियां बेचना, वास्तविक पुत्रों और पादरियों के पुत्रों को कानूनी स्वीकृति देना, सरदारों और धर्मोपदेशकों से बलपूर्वक कर्ज लेना, दान के रूप में भेंट लेना। फिलिप्स तृतीय के बड़े पुजारी और पुरोहित घर-घर धन मांगने जाते थे और अन्तिम तरीका था सिक्कों में मिलावट करना। जब ये विचित्र तरीके असफल हो जायें तो कर लगने वाली वस्तुओं की संख्या बढ़ा दी जाती थी। नमक, मुहरवाले कागज़, ताश, तम्बाकू, यहां तक कि पाकशाला में प्रयोग में लाई जाने वाली बर्फ पर भी कर लगा दिए जाते थे। देश में कमी न रहे इसके लिए निर्यात निषिद्ध कर दिया जाता और उस पर रोक लगा दी जाती थी। फलस्वरूप व्यापारिक संतुलन स्थायी रूप से स्पेन के विरुद्ध हो जाता और जितना भी सोना-चांदी देश में आता उसका जल्दी ही निर्यात कर दिया जाता। डाक-खर्च अत्याधिक बढ़ जाने के कारण साहित्यिक आदान प्रदान न्यूनतम हो गया। उन पर बहुत अधिक कर था, इसलिए इसका तस्कर व्यापार सार्वजनिक स्थिति तक पहुंच गया। पदोन्नत सरकारी कर्मचारियों के 6 महीने के वेतन पर टैक्स लगा कर भी औद्योगिक प्रगति अथवा कार्यकुशलता में कुछ उन्नति न हो सकी। रिहायशी मकानों की ऊपरी मंजिल पर लगाये गये टैक्स ने आय की वृद्धि करने की अपेक्षा स्पेन की घरेलू वस्तुकला स्थापत्य को ही कुंठित कर दिया।

उपचार के प्रयास

स्पेन में—अल्काबेला (Alcabula) और मिलान्स (Millones)—ये दो अप्रत्यक्ष कर लागू थे। पहला समस्त बिक्रीकर जिसमें आवश्यक वस्तुएं भी सम्मिलित थीं, 10 प्रतिशत था और दूसरा तेल, शराब और सिक्के पर था।

---

1. इसके लिये देखिये देसडिवाइसेस दयू देऊर्ट, ल एस्पेगने द ला एन्सियन रीजिम, 2,365–380, अल्टामिरा य क्रेवा, हिस्तोरे द एसपेगने 3,280, एफ एफ।

'बुल्स आफ क्रूसेड़' (Bulls of Crusade) से भी रुपया इकट्ठा किया जाता था। यह कर 16 वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में चालू हुआ था, जबकि पोप जुलियस द्वितीय ने स्पेन के राजा को ऐसे कार्यों जैसे उपवास के दिनों दूध पीने और लेण्ट के दिनों मांस खाने आदि के लिये 'बुल्स आफ इल्डीजेंस' बेचने का अधिकार दे दिया था। उनकी कीमत प्रान्त के अनुसार तथा लेने वाले की सामाजिक स्थिति के अनुसार बदलती रहती थी। इन सब उपायों के होते हुए भी 17 वीं शताब्दीं का स्पेन दिवालिएपन की ओर बढ़ता जा रहा था। फिलिप चतुर्थ और चार्ल्स द्वितीय के राज्यकाल में धन की वृद्धि के क्रियात्मक सुझाव देने के लिए 'मध्य वर्ग की सभा' (Juntas de medios) की बैठक बहुधा बुलाई जाती थी। नैपल्स में[1] इस बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया कि प्रतिमास एक उपवास करने से धन बचाया जा सकता है। सन् 1693 में एक शाही कमीशन मैड्रिड अधिवेशन में बहुत विचार विनियम के पश्चात् भी राजकोष की पूर्ति के लिए इससे अधिक उत्तम योजना नहीं रख सका कि राजकीय तश्तरी के सिक्के बना लिये जायं और रानी के जवाहरातों को बन्धक रखकर ऋण ले लिया जाय।[2]

धार्मिक नीति और प्राथमिकता

17 वीं शताब्दी के सार्वजनिक जीवन को प्रभावित करने वाली सबसे अधिक विशिष्ट धारणाओं में धार्मिक रीति रिवाज और प्राथमिकता (Precedence) के प्रश्नों को जो महान् महत्व दिया जाता था उसका उल्लेख करना शेष है। यह एक ऐसी भावना थी जिसका सम्बन्ध उस विशेष सम्मान से था जो धन और शक्ति वाले लोगों के बाह्य दिखावे के प्रति सदा प्रदर्शित किया जाता था। कोई भी फ्रेंच भद्र पुरुष जिसकी समाज में कुछ प्रतिष्ठा हो, **होटल के भोजन** (Maitred'-Hotel) से अलग नहीं रह सकता था, चाहे उसे भोजन कम हीं क्यों न करना पड़े। रिशेल्यू ने, जब वह केवल लूकां का बिशप था और बहुत गरीब था, इस आवश्यकता को छोड़ने का साहस नहीं किया।[3] यह भी अनजानी बात नहीं थी कि दो निर्धन भद्र पुरुष क्रमशः एक दूसरे के लिए परोसनेवाले का काम करते थे। पोलेण्ड में सम्माननीय व्यक्ति होने के लिये कम से कम 25 घोड़ों का लवाजमा प्रयोग में लाना पड़ता था। जब लुई चौदहवां अपनी दुलहन से मिलने गया तो

---

1 केलेगेरी, **प्रोपोंडरेन्स स्ट्रेनरे** (इन बलारडी, **स्टोरिया पोलितिका द इतालिया**), 148।

2 अल्तामोरिया य क्रीविया, **पूर्व उदधृत**, 3,289।

3 द एवेनेल, **पूर्व उदधृत** 2,16।

उसका लवाजमा कई मील लम्बा था । पुरातन-राज्य व्यवस्था के सेन्योर (Seigneur) की सरदारों, भोजनालयों के चाकरों, उसके पुरोहित, उसकी संगीत-मंडली, उसके डाक्टर या नाई, उसके दोषों का स्वीकृतिकर्त्ता, उसके सर्जन या सचिव और समारोह अधिकारी के बिना अपूर्ण रहती थी। अस्तबल के चाकरों की एक छोटी सी सेना तो आवश्यक थी ही। स्पेन में इन बातों की इतनी अति हो गई थी जो कभी सुनी नहीं गई। नितान्त दरिद्रता की अवस्था में भी इस तरह का लवाजमा रखने के कारण उसकी दशा हास्यास्पद बन गई थी। भौतिक सम्पत्ति के ह्रास ने भद्रजनों की इस विशेषता को और बढ़ावा दिया। इसकी अत्युत्तम मिसाल एक स्पेन निवासी की है जो दरिद्र अवस्था में भी ऊपरी दिखावा रखने पर दृढ़ रहा। अपने दस्ताने की केवल एक ही ऊंगली साबुत होने के कारण वह अपने आपको चोंगे से ढक कर केवल वही ऊंगली जिसपर दस्ताना होता था, बाहर रखता था।

कूटनीतिज्ञों की पारस्परिक ईर्ष्या

सत्रहवीं शताब्दी का सम्यक् ज्ञान होना तब तक कठिन है जब तक यह स्पष्ट न हो जाय कि इस प्रकार की परम्पराओं को कितना महत्व दिया जाता था। मुन्स्टर (Munster) और ओस्नाब्रुक (Osnabruck) में यूरोप की प्रथम शांति–कांग्रेस के संचालन में लगातार विलम्ब होता रहा, क्योंकि उसमें विधि और प्राथमिकता के छोटे–छोटे प्रश्नों को लेकर बाधा पड़ती रही।[1] फ्रांस और स्पेन के मध्य संयुक्त वार्ता 1659 में इस कारण सम्भव हो सकी, क्योंकि दोनो देशों को विभाजित करने वाली नदी (The Bidassoa) के बीच में एक छोटा-सा द्वीप था जहां फ्रांस और स्पेन के प्रतिनिधि अपनी प्राचीन प्राथमिकता का दावा किये बिना मिल सकते थे।[2] अनेक अवसरों पर कार्लोविज (Karlowitz) सन्धि वार्ता (1699) में प्राथमिकता एवं शिष्टाचार सम्बन्धी नितान्त निरर्थक और तुच्छ बातों के आधार पर विघ्न डाले गये। यूरोप में कूटनीतिक कर्मचारियों की अधिक वृद्धि होने के कारण इन मामलों की ओर भी अधिक महत्ता दी जाती थी। शताब्दी के आरम्भ में तुर्की के अतिरिक्त प्रत्येक[3] स्वतंत्र यूरोपीय राज्य एक कूटनीतिक दल रखता था और इस अपेक्षाकृत नये व्यवसाय के

---

1 देखिये अध्याय 4। इस विषय के लिए देखिये एच० ब्रोचर कृत ल रेंगे **एत ल एटिक्वूटी सोस ल एनसियन रीजीम**। (1934)।

2 देखें अध्याय 5

3 परन्तु सिट्वा-टौरक (Sitva-Torok) 1606 की सन्धि के अन्तर्गत पोर्टे बियाना में अपना एजेन्ट रखता था। राजा के प्रतिनिधि के रूप में एक राजदूत कोन्सटेन्टीनोपल में नियुक्त था (ड्यूमट कृत **कॉर्प्स डिप्लोमेटिक** 5, खंड 2,78)।

सदस्यों का यह कर्तव्य होता था कि वे अन्तर्राष्ट्रीय शिष्टाचार का सूक्ष्मता से विधिवत पालन करने पर जोर दें और अपना निजी स्तर भी वही रखें जो वे अपने देश के लिए, जिसका वे प्रतिनिधित्व करते थे, चाहते थे। वेस्टफेलिया की सन्धि ने जर्मनी के पृथक राज्यों को प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व का अधिकार देकर यूरोप के कूटनीतिक कर्मचारियों की संख्या बहुत अधिक कर दी और शीघ्र ही कूटनीति एक अलग व्यवसाय बन गया जिसमें उस वर्ग के समूचे लोग लिये जाते थे जो अपने असामान्य अधिकारों के कारण विशिष्ट होते थे और जिनके आचरण और शिष्टाचार की एक विस्तृत संहिता होती थी। 17 वीं शताब्दी के ऐतिहासिक साहित्य में ऐसा कोई विवरण नहीं मिलता कि ये कूटनीतिक प्रतिनिधि यूरोप में शांति स्थापित करने में सहायता देने के लिये नियुक्त किये जाते थे, इस बात का प्रमाण अवश्य मिलता है कि इन राजदूतों को प्रायः जासूस समझा जाता था[1] और वूटन की परिभाषा में "वे झूठे भी होते हैं।" यह भी कहा जा सकता है कि ये लोग बाह्य शिष्टाचार के प्रति इतने अधिक सचेत थे और अपने तथा अपने प्रधानों के अनुरूप मान-मर्यादा प्राप्त करने पर इस सीमा तक जोर देते थे कि इससे बड़े-बड़े राज्यों में तनावपूर्ण भावना उत्पन्न होने में सहायता मिलती थी। यह एक ऐसा वातावरण था जिसमें सदैव दुर्घटनायें उत्पन्न होती रहती थीं और कभी-कभी तो युद्ध तक की नौबत आ जाती थी। सम्भवतः यह कहना अतिशयोक्ति-पूर्ण नहीं है कि शांति का प्रश्न इस बात पर निर्भर करता था कि सार्वजनिक जलूस का संगठन किस ढंग का है। सन् 1661 में, लन्दन में, फ्रांस और स्पेन के राजदूतों के नौकरों में झगड़ा होने के परिणामस्वरूप कई व्यक्तियों की मृत्यु हो गई और युद्ध भी केवल इस कारण टल गया कि निर्बल होने के कारण स्पेन ने क्षमा मांग ली। सन् 1679 में जब आर्लियां (Orle'ans) की मेरी लुई (Marie Louise) को चार्ल्स द्वितीय की वधू के रूप में स्पेन भेजा गया, तो बिदासोआ (Bidassoa) नदी पर एक ऐसा नौका-सेतु निर्मित किया गया जो स्पेन और फ्रांस के तटों से समान दूरी पर था, जिससे कि फ्रांसीसी रक्षक दल और स्पेनवासियों में, मेरी लुई को पहुँचाते समय, कोई सीमा संबंधी झगड़ा न हो जाय।[2]

---

1. "लेस एगनेस, नोंसेस, एम्बसर्डस एत लिगेटस सोंट एन्वोयज एत पोर एपीयर लेस एक्शंस देस प्रिंसेज़ एस्ट्रेंजुंस एत पोयर, डिसीम्यूलर, कोनग्यिर एत डिग्यूसर सेलेस द ल्योर्स मेटर्स" (गेबरियल नोदे कृत **कसीडिरेशंस पोलितिक्स सुर लेस कूप द इतांत**, सं 1667,55)।

2. इंसट्रक्शंस डोनीस अक्स एम्बेडर्स द फ्रांस डेपुस ल त्रैते द वेस्टफेलिक (स्पेन), 1,297।

उनके परिणाम

औपचारिकताओं पर होने वाले ये संघर्ष केवल हास्यास्पद ही रहते, यदि इनके परिणाम ऐतिहासिक न होते। इस तरह बहुधा दो राजकुमार या कूटनीतिज्ञ जिनमें से प्रत्येक एक दूसरे से प्राथमिकता का दावा करता था, और जिनको एक दूसरे से वार्ता तय करने का कर्तव्य सौंपा जाता था, तब तक बातचीत करने में असमर्थ रहते थे जब तक कि उनमें से एक दूसरे के आगे झुक नहीं जाता। विकल्पस्वरूप उनमें से एक व्यक्ति बीमार पड़ जाता जिससे दूसरे के लिए अपना स्तर नीचे किये बिना बीमार को देखने के बहाने मिलना सम्भव हो जाता। एक बार तुर्की के नव-नियुक्त बड़े वजीर ने, जिसके विषय में यह कहा जाता था कि वह विदेशियों से घृणा करता है, फ्रांसीसी प्रतिनिधि के साथ कुस्तुन्तुनिया में अपमानजनक व्यवहार किया और उसे 'सोफा' पर बैठने का मान देने से इन्कार कर दिया। अंग्रेजी लीवेन्ट कम्पनी का प्रतिनिधि जो यह जानता था कि अब उसकी बारी आएगी, तुरन्त बीमार पड गया और इस प्रकार कुछ ही क्षणों के अन्तर से उसने अपने राष्ट्र को अपमानित होने से बचा लिया[1]। असार्वजनिक व्यक्ति भी अपनी मान-मर्यादा के पालन पर इसी प्रकार बल देते थे। लुई चौदहवें के दरबार में दर्जे की प्राथमिकता पर कभी-कभी ऐसे हास्यस्पद झगड़े हो जाते थे जिन पर विश्वास नहीं होता था और जो सेन्ट साइमन के से अपरिमित परिश्रम वाले लेखकों के अतिरिक्त किसी रिकार्ड में लाने के योग्य नहीं थे। तत्कालिन साहित्य में इस विषय को जितनी प्रधानता दी गई है उससे मन में कभी कभी यह विचार होने लगता है कि कहीं व्यावहारिक ज्ञान का गुण आधुनिक तो नहीं है। स्पेन और उनके अधिनस्थ प्रदेशों में प्राथमिकता का प्रश्न धर्म के बाद दूसरे नम्बर पर था। नेपल्स में एक बार वायसराय गिरजाघर छोड़ कर इसलिए चला गया क्योंकि बड़े पादरी को दो गद्दे दिये गये, जबकि वह केवल एक का अधिकारी था। उसी नगर में एक राजकुमारी के शव को दफनाने में कई सप्ताहों की देरी हो गई, क्योंकि ऐसा माना गया कि उसके शव के प्रति वह सम्मान दिया गया, जिसका उसे अपने जीवन-काल में भी अधिकार नहीं था। क्रिमोना (Cremona) और पादुआ (Padua) के नगरों में प्राथमिकता के लिए 80 वर्षो से भी अधिक समय तक विवाद चलता रहा। अन्त में मिलान (Milan) की सीनेट ने यह निर्णय दिया कि

---

1. इस घटना का सुन्दर शब्दों में वर्णन जी०एफ० अबोत कृत अंडर दि तुर्क इन कोंस्टेंटीनोपिल, अध्याय 13 में मिलता है। बड़ा वज़ीर कारा मुस्तफा था, तथा सर जॉन फ़िन्च ब्रिटिश प्रतिनिधि था।

इस समस्या का हल सम्भव नहीं है[1]। स्पेनिश दरबार के दृढ शिष्टाचार और रीतिरिवाजों ने ऐसा वातावरण निर्मित कर दिया जिसे विदेशी प्रेक्षकों ने दम-घोटने वाला कहा है[2]।

शताब्दी के दो बड़े अन्तराष्ट्रीय संघर्ष

सत्रहवीं शताब्दी के राजनैतिक इतिहास में सबसे अधिक दो महत्वपूर्ण विषय-बूर्बा और हैब्सवर्ग का राजवंशीय, और आटोमन और स्लाव का जातीय संघर्ष हैं। इनमें से पहला संघर्ष बूर्बावंश के राज्यारोहण के समय से आरम्भ होता है जिसकी हैब्सबर्ग-विरोधी महत्वाकांक्षाएं तीस वर्षीय युद्ध में रिशेलू द्वारा विलीन कर दी गई। यह वास्तव मे लुई चौदहवें की विदेशी नीति की प्रेरणा थी, स्पेन का उत्तराधिकार युद्ध इसीलिए लड़ा गया और इसका अन्त यूट्रेक्ट की संधि द्वारा तभी हुआ जबकि बूर्बा वंश का व्यक्ति स्पेन की राजगद्दी पर बैठ गया। इस संघर्ष में व्यावहारतः समस्त पश्चिमी और मध्यवर्ती यूरोप उलझ गया क्यों कि आस्ट्रिया के हैप्सवर्गो का अधिकार उनके साम्राज्य पर था। उनके चचेरे भाई स्पेन में राज्य करते थे जिसमें उनके अधीन यूरोपीय प्रदेश इटली और फ्लैण्डर्स सम्मिलित थे और फ्रांस पर बूर्बा का अधिकार था ही। प्रत्येक अन्य यूरोपीय देश के इतिहास में इसके परिणाम स्पष्टतः दिखाई देते हैं। उत्तर के युद्ध (Wars of North) के दौरान स्वीडन और ब्रेन्डैनबर्ग के भाग्यों पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। इसने डचों के लिए राजतंत्रीय शासन 1672 के संकट में आवश्यक बना दिया तथा तुर्की को यूरोप-विजय की महान् योजना कार्यान्वित करने के लिए प्रोत्साहित किया। सन् 1683 में वियाना का घेरा इसी उद्देश्य की पूर्ति का आरम्भ-बिन्दु था। पूर्वी यूरोप में पोलेण्ड लगातार ऑटोमन और स्लाव के चिरस्थायी झगड़ों की रणस्थली बना रहा और इसी कलह से रूस का एक महान् शक्ति के रूप में जन्म हुआ। इन राजनीतिक और जातीय संघर्षो को भलीभांति समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि प्रतिद्वन्द्वियों के भौतिक साधन क्या थे और इन राज्यों के पास लोकमत को अभिव्यक्त करने वाली कौन-कौन सी संस्थाएं थीं। संबंधित राज्य थे—आस्ट्रिया-साम्राज्य (हैप्सबर्ग), फ्रांस, स्पेन, इटली, पौलैण्ड, रूस और तुर्की।

सम्राट् की स्थितिः आस्ट्रिया-साम्राज्य

मध्यकालीन पवित्र रोमन साम्राज्य नाममात्र के लिए ईसाई राज्यों का

---

1. नेनसिओनी, 'बेरोचिस्मो' इन ला विता इतालिआना नेल सीसेंटो, 282।

2. इंसट्रक्शसं डोनीस अक्स एम्बेसडर्स द फ्रांस (स्पेन), 1,424 में एम० डी० रेबनेक की रिपोर्ट देखिए। एम० द मारकिन (1701–2) की रिपोर्ट भी देखिए। वही, 2,12।

एक महान् संघ था, जो निर्वाचित अध्यक्ष के अधीन था। किन्तु 17 वीं शताब्दी के पहले इस संस्था का स्थान राष्ट्रीय विचारधारा ने ले लिया था। महाद्वीपपर इसका सबसे प्रबल मूर्तीमान रूप फ्रांस था। आस्ट्रिया की भूमि पर हैप्सबर्गो का पारिवारिक अधिकार हो गया था और अब वस्तुतः प्राचीन साम्राज्य के अन्तर्गत राज्यों में जर्मनी ही शेष रह गया था। जब सन् 1648 में जर्मन सामन्तों को संधि और मित्रता करने का अधिकार इस शर्त पर दे दिया गया कि वे साम्राज्य के विरूद्ध न हों, तो इसका अर्थ यह निकाला गया कि साम्राज्य की शेष भूमि पर से हैप्सबर्गो का नियंत्रण अंतिम रूप से हटा लिया गया है। तो भी सम्राट को अन्य किसी भी ईसाई राजा की अपेक्षा प्राथमिकता दी जाती रही। वह सामन्ती उपाधियां प्रदान कर सकता था और कुछ विशेष कर जिसमें 'रोमनमास' (Roman Months) भी सम्मिलत था, लगाने का अधिकारी था। इसको 'रोमनमास' कर इसलिए कहा जाता था क्योंकि इसकी स्वीकृति आरम्भ में कुछ महीनों के लिए दी जाती थी, ताकि रोम में हुई शाही राज्याभिषेक पर हुए व्यय की पूर्ति की जा सके। सन् 1356 के गोल्डेन बुल (Golden Bull) द्वारा निर्वाचकों की रहस्यमय संख्या, 7 निश्चित की गई। इनमें से तीन धार्मिक पुरोहित अर्थात् मेंज़ (Mainz), कोलोन (Cologne), और टाएर (Trier) के बड़े पादरी और 4 जनसाधारण अर्थात् सेक्सनी और ब्रन्डेनबर्ग को मारग्रेव्ज राइन का पैलेटाइन एलेक्टर और बोहीमिया का राजा होते थे।

डायट या विधान सभा

वहां की विचार–विमर्श करने वाली सभा का नाम डायट (रीखस्टाग) था जिसकी बैठक सामान्यतः रेटिस्वान (Ratisbon) में होती थी। इसमें मतदाताओं, राजाओं और नगरों के प्रतिनिधि होते थे जो प्रायः विधिवेत्ता या जैम्सटांगेटा (Gems Togata) होते थे। आर्थिक स्वार्थों के कारण इनकी इच्छा कार्यवाही को लम्बे समय तक चलाने की होती थी। तीनों राज्य पृथक्-पृथक् विचार विमर्श करते थे और केवल वे ही निर्णय साम्राज्य के सामान्य कानून बनते थे जिनका प्रत्येक राज्य अनुमोदन कर देता था। यद्यपि राज्यों के बीच में बहुत ही कम अवसरों पर विरोध होता था तब भी वहां विलम्ब और अनिर्णय की कोई सीमा न थी। एक तत्कालीन लेखक ने लिखा था, "आजकल जर्मनी की स्टेट बहुत दूषित हो गई है, यही कारण है कि जब सम्राट डायट या पार्लियामेन्ट का अधिवेशन बुलाता है तो राजा स्वयं नहीं जाते अपितु अपने प्रतिनिधि भेज देते हैं जिनको वे किसी निश्चय पर पहुंचने या निर्णय लेने का अधिकार भी नहीं देते और इस

कारण वे प्रतिनिधि कोई काम निपटा नहीं पाते हैं।"[1] वेस्टफेलिया की संधि ने डायट को कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेन्ट धर्म विषयक धार्मिक प्रश्नों पर बहस करते समय दो दलों में विभाजित होने का अधिकार दे दिया और वह विरोधी भावना को जिसके कारण जर्मनी को क्षति पहुंची, उग्र बनाने के अतिरिक्त विलम्ब का एक और कारण बन गई।[2] समकालीन व्यक्तियों ने डायट पर वाक्चातुर्य और शिष्टाचार में समय नष्ट करने का आरोप लगाया। "उनकी रस्मों का ब्यौरा देना मानों समुद्र पीना है।" "वे प्रातः स्पेनिश मदिरा पीते और रात को रेनिश (Rhenish) मदिरा का सेवन करते।" लीबनिज (Leibnitz) ने उनके अन्य कार्यों की व्याख्या 'कटंराडाईसिरेन, लिटीगिरन् शुलमिस्टेरीन'(Contardiciren litigiren'Schulmeisteriren) कह कर की थी।[3] छल, कपट और कार्य में विलम्ब करना इसकी मुख्य विशेषताएं समझी जाती थीं फिर भी यह 17 वीं शताब्दी के यूरोप की बची हुई तथा कुछ कार्य करने वाली इनीगिनी प्रतिनिधि संस्थाओं में से एक होने का दावा कर सकती थी।

साम्राज्य और जर्मन लोकमत

तीस वर्षीय युद्ध ने सम्राट को अध्यक्ष के स्थान से कैथोलिक दल का धर्म निरपेक्ष अध्यक्ष बना दिया। 17 वीं शताब्दी के बिरले लेखक ही यह दावा करते थे कि उसकी शक्ति निरंकुश है। 16 वी शताब्दी में लिखित 'स्लीडेन की पुस्तक' नामक ग्रन्थ में साम्राज्यीय संविधान की प्रथम गंभीर आलोचना मिलती है।[4] सन् 1640 में एक जर्मन लेखक फिलिप शैम्निज (Philip chemmitz) ने अपने उपनाम हिपोलिथस ए० लैपाइड (Hippolithus) से, यह प्रकट[5] किया कि शाही शक्तियां केवल सम्मानार्थ थीं, और वास्तविक सत्ता जर्मनी के विभिन्न राज्यों में थी। इस पुस्तक ने लोगों का विशेष ध्यान आकर्षित किया, क्योंकि इसमें हेप्सबर्ग कुल की कटु आलोचना की गई थी। इसी को जर्मनी के दुर्भाग्य का कारण बनाया।

---

1. ई० ग्रिम्सटन, **दि एस्टेटस, एम्पायर्स एण्ड प्रिंसपेलीटीज आफ दी वर्ल्ड** (फ्रेंच अनुवाद), 1615,546।
2. 17 वीं शताब्दी के जर्मनी के संविधान का अच्छा विवरण **इसट्रक्शंस डोनीस अवस एम्बासर्डस द फ्रांस,** 5, एफ एफ में उपलब्ध है, सी० वी० वेगवुड लिखित **दि थर्टीइयर्स वार,** 32–41 भी देखिये।
3. ओरबेच लिखित ला फ्रांस एत ले सेंट एम्पायर **रोमैन डेप्यूस ल गेते द वेस्टफेलिया,** अध्याय 1 से उद्धृत।
4. **कोमेंट द स्टेटूय रिलीजियंस एत रिपब्लिके** (1572)।
5. **डिसरेटेटियो द राशोने स्टेटस इन इम्पेरियो नोस्ट्रो जर्मनिको।**

गया। शैम्निज़ ने यह सुझाव रखा कि सम्राट किसी अन्य परिवार में मे चुना जाना चाहिए जिसके पास वेनिस के डोजे (Doge of venice) के नमूने की शक्तियां होनी चाहिए। इस पुस्तक का विशेष महत्व इस कारण भी हो गया कि इसे वियना में जलाया गया। इसी शताब्दी में, बाद में सैकन्डोर्फ (Seckendorf) [1] और कौनरिंग [2] ने इन तर्कों को विकसित किया और सम्राट के नाम मात्र के एवं विलुप्त अधिकारों तथा नरेशों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली व्यावहारिक और प्रादेशिक सत्ता में अन्तर स्पष्ट किया। फिर भी लीबनीज (Leibnitz) [3] का विश्वास था कि आस्ट्रिया के राजवंश को, तुर्कों के प्रतिकार–स्वरूप तथा फ्रांस व स्वीडन का मुकाबला करने के लिए अवश्य बनाये रखना चाहिए। यद्यपि हैप्सवर्गो के परमाधिकार घटते जाते थे और उन्हे बहुत से सिद्धान्तियों के विरोध का कोप-भाजन वनना पड़ता था, फिर भी उन्होंने साम्राज्य पर अपना आधिपत्य जमाये रखा, और एक के अतिरिक्त सभी[4] मतदाता राजवश के सदस्यों को, इन संस्था के 1807 में समाप्त होने तक, निर्वाचित करते रहे। वेनिस के एक राजदूत ने [5] इस परस्परा के बने रहने का एक मनोरंजक, यद्यपि सनकी, कारण दिया है। सम्राट रूडोल्फ (1576–1611) को, जिसे रासायनिक और ज्योतिष के अनुसंधानों मे बहुत क्षति उठानी पड़ी थी, जर्मनी की बहुमूल्य नदियो से प्राप्त आय को मतदाताओं के पास अपनी वास्तविक वार्षिक आय से कुछ अधिक मूल्य पर बन्धक रखने के लिए मजबूर होना पड़ा और मतदाता यह जानते थे कि अगर कोई धनवान् राजा (जैसे बैवेरिया का ड्यूक) निर्वाचित कर लिया गया तो वह इन सब बंधक रखे हुए राजस्वों को छुड़ा लेगा और इस तरह मतदाता अपनी आय का साधन खो देंगे। कारण कुछ भी रहा हो, परन्तु साम्राज्य अधिकाधिक नाम मात्र का ही होता गया। इस नवीन स्थिति ने साम्राज्य की संस्थाओं और सम्राट के बीच की पृथकता को और भी अधिक बढा दिया। नाइमेजेन (Nymegen) की संधि पर डायट की अनुमति लिए बिना सम्राट ने हस्ताक्षर कर दिये, सन् 1727 में साम्राज्य[6]

---

1. **तोतइयर फर्स्टीन सतात** (1656)।
2. **द फिनिबस इम्पेरी** (1654).।
3. **ववती सित मोमेंती इम्पेरियम एसे पुद वोमन आस्ट्रियाकम इन चेवेरूज द लीबनीज,** स० के० लोप, 1,170।
4. चार्ल्स सप्तम (विटलबेच) 1744–45।

    गुसटियानी (1654) **इन फोंटस वेरम आस्ट्रियाकम** (स० फिडलर) द्वितीय खंड, 26,403।
6. ओरबेच, **पूर्व उदधृत,** 15, अध्याय चतुर्थ।

की तटस्थता पर जोर देते हुए फ्रांस ने सम्राट के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया, परन्तु फिर भी 1806 तक साम्राज्य एक महान् जर्मन संघ बना रहा जिसने 17वीं शताब्दी में एक रोचक किन्तु अल्पकालिक शान्ति प्रयोग किया जो राइन लीग (League of the Rhine) के नाम से प्रसिद्ध है।[1] इस लीग ने 18 वीं शताब्दी में मध्ययूरोप को स्थिर बनाये रखने के लिए ऐसा कार्य किया जो, अनेक लेखकों के मतानुसार, महाद्वीप में सन्तुलन को बनाये रखने के लिए आवश्यक था।

साम्राज्य के मण्डल

16 वीं शताब्दी में प्रशासनकि दृष्टि से समूचा साम्राज्य निम्नलिखित मण्डलों में विभक्त था :—

(1) बवेरिया
(2) स्वेबिया, जिसमें बर्टम्बर्ग, बेडन, आग्जबर्ग के पादरी का अधिकृत प्रदेश और साम्राज्य के बहुत से शहर सम्मिलित थे।
(3) फ्रैंकोनिया, बट्जबर्ग, बैम्बर्ग, आंसबैख और बैरूठ।
(4) ऊपरी राइन—ज्वीब्रूकैन, लोरेन और अल्सेस का भाग।
(5) वेस्टफेलिया—जूलिख, क्लीव, वर्ग और मार्क।
(6) सैक्सनी का निचला भाग—ब्रस्विक, मेक्लेनवर्ग, होल्स्टीन, ब्रेमन और मैग्डेबर्ग।
(7) निचली राइन—राइन के चार इलैक्टोरेट—कोलोन, मेंज, ट्रायर और पेलेटीनेट।
(8) सेक्सनी का ऊपरी भाग—सैक्सनी और ब्रेन्डेनवर्ग के इलैक्टरों के प्रदेश तथा पोमरेनिया।
(9) बरगण्डी—नीदरलैण्ड, लग्जेम्बर्ग, फ्रैंचेकामटे।
(10) आस्ट्रिया—वंशानुगत प्रदेश जैसे आस्ट्रिया, स्टाइरिया, कैरिन्थिया और कारनियोल, ट्रेन्ट और ब्रिक्सेन के पादरियों की अधिकृत भूमि।

बोहीमिया, हंगरी संयुक्त प्रान्त, स्विट्जरलैंड, प्रशा

बर्गण्डी—मंडल इस सूची में इसलिए सम्मिलित किया गया है, क्योंकि यद्यपि 17 वीं शताब्दी में यह लगभग पूर्णतया स्पेनिश प्रदेश में निर्मित था, किन्तु वे

---

1. देखिये अध्याय 5।
2. देखिये मान्टेस्क्यू कृत **द स्पिरिट देस लॉज**, 9। रूसो कृत **प्रोजेक्ट द पेक्स परपिचयूले** और बोलने कृत **कन्सीडरेशंस सुरला ग्योरे एक्च्यूले देस तुर्क्स**।

वेस्टफेलिया की शान्ति-सधि के अनुसार इसे निश्चित रूप से साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया था। बोहीमिया और हंगेरी इस संगठन क्षेत्र से बाहर थे। प्रथम सन् 1617 तक यह नाम मात्र का निर्वाचित राजतन्त्र था, परन्तु 1627 के संविधान द्वारा हैप्सबर्ग के वंशानुगत देश में मिला लिया गया, हंगेरी भी नाम मात्र के लिए निर्वाचित राजतंत्र के अधीन था, किन्तु कुछ समय के बाद सन् 1687 मे इसका मुकुट हैप्सवर्ग के वंश के लिए वंशानुगत घोषित कर दिया गया, यद्यपि सन् 1711 तक वह देश पूर्णतया वश में नहीं किया जा सका। दोनों देश 1848 तक हैप्सबर्गो के प्रति स्वामिभक्त रहे। वे प्रदेश जो पहले साम्राज्य के अंग थे, जैसे संयुक्त प्रान्त और स्विट्जरलैण्ड, 1648 में स्वतंत्र स्वीकार कर लिये गये। सन् 1700 में ब्रैंण्डेनबर्ग प्रशा–साम्रराज्य का अंग बन गया।

धार्मिक विभाजन

अत्याधिक प्रान्तीयता, जिसे शाही प्रशासन ने, जर्मनी में प्रोत्साहित किया, 'जिसका राज्य उसी का धर्म' (Cujus regio, ejus religio) नामक सिद्धान्त के लागू होने तथा धार्मिक विभिन्नता के कारण और भी प्रचण्ड हो गई। सन् 1610 में रोमन बवेरिया, बर्ग, जूलिख, हैस–डम्सटार्ड और मेंज, ट्राएर, कालोन, बूर्जबर्ग, बैम्बर्ग, मूनस्टर, औस्नाब्रूक, पैडरबार्न, ब्रेमन, वर्डन, मिन्डेन, हिल्डशीम, पासो, रेटिस्वान, साल्जवर्ग, स्पीयर, स्ट्रासबर्ग और कौस्टेन्स मुख्यतः कैथालिक धार्मिक राज्य थे। मुख्य लूथरानुयायी राज्य थे– सैक्सनी, ब्रन्जविक, लूनबर्ग, बुल्फन बूटेल। ईस्ट फ्रीजलैड, हौल्स्टीन, मैक्लन्बर्ग, ब्रर्टेम्वर्ग, न्यूबर्ग, बेडन और सैक्स-लाएनबर्ग। ब्रैन्डन्बर्ग, बैरूठ, आंस्बैख, पेलेटीनेट, ज्वीब्रूकेन, हैस-कैसेल, नसौ, अनहाल्ट और पौमरेनिया, काल्विनानुयायी राज्य थे। क्लीव और मार्क काल्विनानुयायी स्वामी के पास चले जाने पर काल्विनानुयायी बन गये तथा अन्य राज्यों के सरकारी धर्म में लगातार परिवर्तन होता रहा जब तक कि जर्मनी का अधिकांश उत्तरी भाग धीरे–धीरे समान रूप से प्रोटेस्टेन्ट हो गया और दक्षिणी भाग कैथोलिक रहा। जर्मनी के धर्म निरपेक्ष राज्यों में सबसे प्रमुख सेक्सनी के लूथरानुयायी इलेक्टर थे, जिनका भाग्योदय म्यूलबर्ग (1543) की लड़ाई के पश्चात् सम्राट् द्वारा बड़ी अथवा अर्नेस्टाइन शाखा को अधिकार–विहीन करने के कारण हुआ, और इसलिए धर्म के बावजूद उनका झुकाव सम्राट् के पक्ष में ही रहा। ब्रैडन्वर्ग के काल्वानुयायी इलेक्टर, जिन्होंने स्वीडन और पोलैंड़ के पारस्परिक झगडों के कारण उनके प्रदेश को हड़प कर लाभ उठाया, डचों से अपने सम्बन्धों के अतिरिक्त अपनी संधियों में किसी अन्य सिद्धान्त को नहीं मानते थे। बवेरिया के कैथोलिक ड्यूक जर्मन नरेशों में सर्वप्रथम थे, जिनके पास एक स्थायी सेना और समुद्रकोष था जो उन्होने जर्मनी में कैथोलिक धर्म के हित में

लगाया। तीस वर्षीय युद्ध में पैलेटिन के इलेक्टर, फ्रैडरिक पंचम और अन्हाल्ट के क्रिश्चियन ने लड़ाकू काल्विन मत के नेता होने के कारण विशेष महत्व पाया। 1648 में अधिकार च्युत इलेक्टर पेलेटिन के परिवार के लिए आठवां प्रदेश बनाया गया, क्योंकि पेलेटिन का प्रदेश 1623 में बवेरिया को दे दिया गया और 1692 में अर्नेस्ट आगस्टस आफ ब्रन्जविक लूनेबर्ग को इलेक्टर आफ हैनोवर के पद तक उन्नत करके नवां प्रदेश (Brunswick Luneburg) और दे दिया गया।

विभक्त और आश्रित जर्मनी

17 वीं शताब्दी में जर्मनी को एक राष्ट्र नहीं कहा जा सकता था। यद्यपि उसकी लोक-भाषा एक थी तथापि उसकी कोई साहित्यिक भाषा नहीं थी। लुई चौदहवें के राज्य में कई जर्मन नरेश फ्रांस से पेंशन पाने वाले थे। जब तक उनकी भूमि को फ्रेंच सैनिक ने तबाह नहीं किया तब तक जर्मन लोगों में राष्ट्रीय भावना के विचार जागृत ही नहीं हुए, जिन्हें महान् देशभक्त तथा दार्शनिक लीबनिज[1] ने बिल्कुल स्पष्टतया व्यक्त किया। इस प्रकार जर्मनी तथा इटली के लिए 17वीं शताब्दी का समय फूट और पतन का था।

फ्रांस की विशेषताएं

फ्रांस—जर्मनी के विपरीत फ्रांस के इतिहास में दीर्घकालीन राष्ट्रीयता थी तथा 17वी शताब्दी में उसकी सभ्यता, अन्य देशों की अपेक्षा सबसे अधिक विकसित थी। डैविटी (Davity) के अंग्रेज अनुवादक का कहना है कि "फ्रांसीसियों को बहुत अच्छी सलाह मिलती है, फिर भी वे बहुधा सोडेन होते हैं और किसी व्यापार में स्पेन तथा इटली के लोगों की भांति गहराई तक नहीं जाते............वे कुलीनवर्ग से बहुत डरते हैं। यह राष्ट्र युद्ध के लिए बना है। वे विश्व के किसी भी राष्ट्र की अपेक्षा अपने राजाओं को अधिक सहन करते है। तुमको उनमें से बहुत कम लोग पागल दिखाई देगें, किन्तु बहुत से हलके मस्तिष्क वाले तथा कम गम्भीर मिलेंगे।" वेनिस के राजदूत बैडौर (Badoer) ने लिखा है कि जैसे फ्रासिसी लोग कमाना जानते थे यदि उसी प्रकार उसकी सम्भाल भी कर सकते तो वे आधी दुनियां के अधिपति होते, और यह एक परम्परा थी कि साहसिक कार्यों के आरम्भ

---

1 **मार्स क्रिश्चियनिसीमस** (1685) **मेकीफेस्ते कन्सरनेंट लेस ड्रोटिस द चार्ल्स थर्ड** (1702) **एण्ड जस्टिस एनकरेजे कोर्ट्स लेस चिकेस एत लेस मीनेस द उन पार्टीजन** (1702) इनका पुर्नमुद्रण फोचर डी केरिल एवं ओ० कलोप द्वारा **चेवेरूज द लीबनीज**, 4 में हुआ है। देखिए ओरबेच, **पूर्व उदधृत**, अध्याय 3। लीबनीज के लिये देखिए अध्याय 13।

करने में फ्रांसीसी अन्य लोगों से बढचढ कर थे, किन्तु उनकी पूर्ति के समय वे स्त्रियो से भी गये बीते होते थे। इस विचार से सामान्य सहमति थी कि 1685 से पूर्व फ्रांस की मुख्य निर्बलतायें धर्म की विविधता, कुलीनवर्ग के लोगों को जीवन भर के लिए प्रान्तीय राज्यपाल बनाना और सरकारी पदाधिकारियों की अत्याधिक लोभ-वृत्ति थी।

पेरिस की पार्लियामेन्ट

यह कहना कुछ सीमा तक सत्य है कि क्रान्ति से पूर्व फ्रांस में कोई संविधान नहीं था, दूसरी ओर इस मत में कुछ अत्युक्ति है कि 17 वीं शताब्दी के फ्रांस को एक संविधान विरासत में मिला था और रिशेलू और लुई चौदहवें ने इस विरासत को नष्ट कर दिया। फ्रांस में इंग्लैड के लौकिक कानून की तरह महान प्रथाओं जैसी भी प्रथा नहीं थी। इंग्लैड और फ्रांस में एक और अन्तर था, इंग्लैण्ड में स्टैट प्रणाली कभी दृढ़ नहीं हो सकी जबकि फ्रांस में कुलीन और पादरी वर्ग का अधिकार था जिन्होने नेतृत्व करने की अपेक्षा पृथक और ईर्ष्यालू जातियां बनाली थीं। जहां तक तत्कालीन फ्रांसीसी संविधान का सम्बन्ध है उसके लिए यह कहा जा सकता है कि अंग्रेज पारस्परिक सिद्धान्तों से बिल्कुल भिन्न थे, और इसलिए दोनों की तुलना से कोई लाभ नहीं निकलता। कभी कभी पेरिस की पार्लियामेन्ट के शब्दों को प्रयोग में लाने की लालसा अवश्य होती है जिनसे उसके प्रतिनिधि संस्था होने का आभास मिलता है, और इसलिए अंग्रेजी पार्लियामेन्ट से तुलना के योग्य भी लगती है, किन्तु सत्य यह है कि पेरिस की पार्लियामेण्ट अनेक संसदों में से एक थी। यह अंशतः विधि न्यायालय थी तथा अंशतः इंग्लैण्ड की 'इन आफ कोर्ट' (Inn of Court) की भांति वैधिक कारपोरेशन थी; इसके सभापति तथा सभासद, जो अपने पद मोल लेते थे, विधि व्यावसाय के अतिरिक्त और किसी का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे और यद्यपि इसने 16 वीं शताब्दी में, ऐसी राजाज्ञाओं की रजिस्टरी करने से, जिनका वह अनुमोदन नहीं करती थी, इन्कार करके विधि निर्माण पर प्रभाव जमा रखा था, तो भी अपनी आज्ञाओं के पालन कराने के इसके पास वैधानिक साधन थे। इसके अतिरिक्त लुई चौदहवें के राज्य में, प्रारम्भ से ही, इसने विरोध करो के अधिकार को खो दिया और फिर तो इसे न्याय सम्बन्धी कार्यों तक सीमित रहने का आदेश दे दिया गया। फिर भी ऐसे लोगों की संस्था का, जो कानून के पेशे वालों में सबसे जबर्दस्त तत्वों का प्रतिनिधित्व करने वाली थी, कुछ राजनैतिक प्रभाव तो अवश्य ही था। पार्लियामेंट का वास्तविक प्रभाव तो गैलीशियनिज्म के इतिहास से ज्ञात होता है जो राष्ट्रीय आन्दोलन था, जिसके जबरदस्त प्रतिपादकों में कतिपय वकील थे और जिसने सन् 1762 में जैसुइटों को फ्रांस से बहिष्कृत करने

में सबसे अधिक सफलता प्राप्त की। पेरिस की पार्लियामेन्ट एक राजकोष या प्रिवीकौन्सिल भी थी जहां राजा अपने अनुज्ञापत्रों को रजिस्टर करवाता था।

कौंसिल (Conseil d' Etat)

स्टेट्स जनरल का अधिवेशन क्रान्ति से पूर्व अन्तिम बार 1614 में हुआ। इसके निष्क्रियता काल में समय समय पर अर्धसामन्तीय 'नोटेबल्स' (Notables) की सभा की बैठकें बुलाई जाती थीं परन्तु ये सदैव किसी विशेष प्रयोजन के लिये ही बुलाई जाती थीं और इसलिए यह कहना प्रायः सत्य होगा कि 17वीं शताब्दी के फ्रांस में राजा और प्रजा के बीच में कोई नियमित रूप से संगठित संस्था न थी। फ्रांस के राजाओं का राज्य निरकुंश था और हेनरी चतुर्थ अपने विवेक और स्वभाव की मधुरता से निरकुंशता को कम करने में सफल हुआ। परन्तु इस शताब्दी के विचार कौन्सिलों की ओट में निरंकुशता के पक्ष में थे। लुई चौदहवें जैसे राजाओं को अपने समय के राजनीतिक दर्शन से काफी प्रोत्साहन मिला। इसी शताब्दी के उत्तरार्ध में जब यह प्रणाली पूर्ण रूप से विकसित हो गई तो फ्रांस का राजा चार कौसिलों-कान्सील दे' ता (Conseil d' Etate), कान्सील दे देपीशे (Conseil des De'peches), कान्सील दे फिनांसे (Conseil des Finances) और कान्सील प्रिवे (Conseil Prive) की सहायता से स्वेच्छाचारी शासन करने लगा[1]। इन कौंसिलों में से पहली परिषद विदेशी नीति, शान्ति और युद्ध के प्रश्न तथा राज्य के अन्य सर्वोच्च मामलों पर विचार विमर्श करती थी। इसकी बैठक सप्ताह में दो या तीन बार होती थी इसमें बहुत कम व्यक्ति होते थे, कदाचित चार से अधिक नहीं और इसे मिनिस्टे दे इता (ministres d' Etat') के रूप में अवश्य ही बुलाया जाता था। यह उपाधि सरकारी थी, जिसका तात्पर्य कान्सील दे' ता की केवल सदस्यता से था। इस कान्सिल में कोई पदेन सदस्य न था। इसके अतिरिक्त राज्य के चार सचिवों में से किसी को भी बुलाना आवश्यक न था। लुई पहले अपने पुत्र को उस में सम्मिलित करने से हिचकिचाया और अपने भाई को उसमें लेने से इन्कार कर दिया। यद्यपि यह थी तो विचार-विमर्श करने वाली सर्वोच्च कौंसिल किन्तु कभी-कभी यह प्रशासन व न्याय के मामलों में भी हस्तक्षेप कर देती थी और इस प्रकार शक्ति के स्पष्ट विभाजन के अभाव का उदाहरण प्रस्तुत करती थी — जिससे फ्रांस

1 देखिए लेविसी कृत **हिस्तोरे द फ्रांस**, 7, 1, खण्ड 2 व 4, शेम्एल ला' द मिनिस्त्रेशिआं मोनार्कीक आं फ्रांस, 2 अध्याय 4 व 5; और मारिआं, **डिक्शनेर दे इस्तीतूशिआं द ला फ्रांस**, अंडर 'कांसेल'। फ्रांस, 2 अध्याय 4 व 5 और मारिआं **डिक्शनेर दे इंस्तीतू शिआं में द ला फ्रांस**, अंडर 'कौंसिल'।

के राजाओं का व्यक्तिगत शासन बिल्कुल स्वाभाविक और न्यायसंगत प्रतीत होता था।

कान्सील द देपीशे (Conseil des Depeches)

कान्सील द देपीशे आन्तरिक प्रशासन की देखरेख के लिए सन् 1630 में स्थापित हुई थी तथा सामान्यतः इसमें एक गृह सचिव होता था। यदि इसका सादृश्य इंग्लैंड से किया जाय तो यह कहना चाहिए कि इस कांसिल के पास गृह कार्यालय (Home office) के कार्य, कार्यों का दफ्तर (office of works) तथा पुराने स्थानीय शासन बोर्ड (Local Government Board) के कार्य सम्मिलित थे। इनके साथ ही यह न्यायिक कार्य भी करती थी और इस कारण इसका बहुधा पार्लियामेन्ट से संघर्ष भी हो जाता था। इस कांसिल की घोषणाओं पर, चाहे वे बिल्कुल ही महत्वहीन मामले क्यों न हों, सदैव राजा के हस्ताक्षर होते थे और निश्चय ही ऐसे अनेकों लेखों पर हस्ताक्षर करने में राजा का बहुत समय नष्ट होता होगा।

वित्तीय सभा (Conseil des Finances)

फूक्वे (Fouquet) के अपमान और वित्तीय अधीक्षक कार्यालय के शमन के पश्चात् वित्तीय कांसिल का पुर्ननिर्माण 1661 में किया गया। इसमें सामान्यतः महान् राज्याध्यक्ष (Chancellor) और तीन वित्तीय प्रबन्धक (Intendants of Finance) होते थे। कान्सील द देपीशे की अनुज्ञप्तियों से इसे विलग करना सरल नहीं था, दोनों की बैठक प्रायः एक ही दिन और सम्भवतः एक ही कमरे में होती थी। यह कौंसिल ऐसे साधन उपलब्ध करती थी जिनके द्वारा वित्त का मुख्य प्रबन्धक (Controller General) राजा की सम्मति से 'टैली' कर लगाने तथा राष्ट्रीय राजस्व के नियमन पर अपनी अनुज्ञप्तियां घोषित करता था। वित्त के मुख्य प्रबन्धक को उतने विस्तृत परमाधिकार प्राप्त नही थे जितने कि पुराने वित्तीय अधीक्षक को थे, इसलिए राज्य के पदाधिकारियों ने नहीं, बल्कि उन करदाता किसानों ने, जिनको 18 वीं शताब्दी में अज्ञातवास में रहकर अपनी रक्षा करनी पड़ी थी, राजस्व से अपने भाग्य चमका लिए[1]।

प्रिवी कौंसिल

कोंसिल प्रिवी या दे पार्ती एक अन्तःपरिषद् थी जो कान्सीलेर दे' ता और मेत्रे दे रेक्वेते (Consillers d' e'tat and Maitres des requetes) से संगठित होती थी जहां पार्लियामेण्ट सार्वजनिक न्याय करती थी वहां प्रिवी कौंसिल राजा

---

1 देखिये द जेन्जे कृत लेस फाइनेनसिअर्स द ओल्डफोइस, फरमियर्स जेनेरोक्स।

की ओर से न्याय करती थी। यह एक महत्वपूर्ण अन्तर था। यह कांसिल अपीलों का उच्च न्यायलय और इक्विटी न्यायलय (Court of equity) का कार्य करती थी तथा न्यायिक बेंच (Judicial Bench) के कार्यों का पर्यवेक्षण भी करती थी। इसे अधिकार क्षेत्र सम्बन्धी विवादग्रस्त प्रश्नों तथा विभिन्न राजकीय विवादों के पारस्परिक झगड़ों के निर्णय करने का अधिकार प्राप्त था। यह कौंसिल ड्रोइट एडमिन्सट्रेटिक (droit administratif) का प्रयोग करती थी जो ड्रोटसिविल (droit civil) से भिन्न थी। जो मुकदमें कचहरी में चल रहे हों उन्हें रोक सकती थी या किसी भी मामले को पार्लियामेन्ट के अधिकार क्षेत्र से वापिस ले सकती थी, मुकदमों को सुनवाई के लिए दूसरी जगह भेज सकती थी, यहां तक कि उसकी सुनवाई बिल्कुल समाप्त भी कर सकती थी। इस प्रकार कार्यकारिणी के कर्मचारियों की विशेष रक्षा का आयोजन हो गया जिससे सरकारी कार्यों के परिणामों के उत्तरदायित्व से उनको रक्षित कर लिया गया। यह कानून के समक्ष समानता के अंग्रेजी सिद्धान्त की विपरीत स्थिति का स्पष्ट उदाहरण है। कान्सिलेर दे' ता (Conseiller d' e'tat) का कमीशन या पद प्राप्त करने का बहुत प्रयत्न किया जाता था क्योंकि उच्च नियुक्तियां प्राप्त करने का यह निश्चत द्वार था। प्रिवी-कौंसिल का सभापतित्व चांसलर करता था।

राज्य के अधिकारी

राज्य के उच्च अधिकारियों में राज्य के चार सचिव, एक वित्त के कन्ट्रोलर जनरल और एक चांसलर थे। चांसलर मुद्राधिकारी (Keeper of the seals) तथा समस्त न्याय-विभाग का प्रधान होता था और उसे समाचार पत्रों पर नियंत्रण रखने का कार्य सौंपा गया था। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय और विद्यापीठ (academies) भी उसके क्षेत्राधिकार में थे और मानो न्याय की नित्यता का बोध कराने के लिए ही उसे राजा के अन्त्येष्टि संस्कार पर भी शोक चिन्ह धारण न करने की सुविधा प्राप्त थी। 1665ई० के पश्चात् वित्त के कन्ट्रोलर जनरल के अधीन वित्त सम्बन्धी कार्यों के अतिरिक्त यातायात व्यावसाय तथा कृषि व्यवस्था सम्बन्धित कार्य भी दे दिये गये। कोल्बर्ट ने इस पद को इसका बृहत् क्षेत्र होने के कारण, लगभग वर्तमान प्रधानमंत्री के पद की स्थिति तक पहुंचा दिया। अन्तर केवल इतना था कि वह राजा के प्रति उत्तरदायी होता था, राष्ट्र के प्रति नहीं। कन्ट्रोलर जनरल प्रायः हमेशा राज्यमंत्री होता था तथा वह गृहसचिव भी हो सकता था जैसे कि कोल्बर्ट था। ऐसी स्थिति में उसका कार्य क्षेत्र निस्सन्देह बहुत विस्तृत हो जाता था। राज्य के सचिव पदों का विभाजन युद्ध, परराष्ट्र विभाग, सामुद्रिक तथा राजकीय संस्थापन-विभागों (maison du Roi) में कर दिया जाता

था। मूलतः अधीन क्लर्क और लेख्य-प्रमाणक से शुरू होकर 17 वीं शताब्दी के के आरम्भ तक ये सचिव महत्वपूर्ण अधिकारी बन गये थे। इनमें से प्रत्येक को फ्रांस के विभिन्न प्रान्त निर्दिष्ट कर देने से उनका कार्य जटिल हो गया। इस तरह 1626 मे **मैसां दु रवा** (Maison du Roi) सचिव के लिए जो राज्य सचिव था, तथा जिस पर **इल द फ्रांस** (Ile de France), बेरी (Berry), तथा ओलिआँने का भी कुछ उत्तरदायित्व था, विदेशी मामलों के सचिव को लेंग्वेदाक (Languedoc) और गिने (Guienne) प्रांत सौंपे गये बूरवोने, (Bourbownais), शैम्पेन (Champagne), बरगण्डी और नारमण्डी सामुद्रिक सचिव को सौंप दिये गये, जब कि युद्ध और पूर्व के जहाजी बेड़े का उत्तरदायित्व इस असाधारण तरीके से पोइट् (Poiton), लिमोसिन (Limonsin), आंगम्वा (Angoumois), डाफिन (Danphine) और प्रोवन्स से जोड़ दिया गया। चारों सचिवों ने केवल देश को ही आपस में नहीं बाँटा था अपितु वर्ष को भी विभाजित कर लिया था और प्रत्येक सचिव को वर्ष के तीन मास मिले थे जिसमें वह साधारण पत्र व्यावहार करते थे। इस गड़बड़ी में एक घोटाला और होता था। विदेशी मामलों के साथ-साथ पेंशनें और युद्ध विभाग में सीमान्त प्रान्तों के नियन्त्रण का कार्य सम्मिलित था, सामुद्रिक सचिव के कार्यों में उपनिवेश, व्यापार और दूतावासों का कार्य सम्मिलित था, जब कि **मैसां दू र्वा** (Maison du Roi) के साथ राजकीय इमारतें और कर्मचारियों के नियन्त्रण तथा पादरी-सम्बन्धी कार्य ह्यूजनों के मामले और पेरिस के प्रशासन का निरीक्षण भी जुड़े हुए थे। 1659 और 1691 के बीच में कोल्वर्ट वित्त का कन्ट्रोलर जनरल और सामुद्रिक तथा **मैसां दु र्वा** (Masion dw Roi) का राज्य सचिव था। अतः उसके कार्यों की गणनामात्र उकता देती है।

फ्रांसीसी संविधान की प्रवृत्तियां

यह स्पष्ट है कि एक शक्तिशाली व्यक्ति ही, चाहे वह राजा हो अथवा प्रधानमंत्री राज्य की इतनी भारी मशीन पर नियंत्रण रख सकता था। इस शासन पद्धति की असंगति में और अस्पष्टताओं के कारण अराजकता और केवल मात्र विकल्प वैयक्तिक तथा उत्तरदायित्वहीन शासन ही रह गया किन्तु राज्य की मशीन व्यक्ति से प्रबल थी। इसके फलस्वरूप अन्ततः फ्रांस का राजतन्त्र एक विस्तृत और जटिल मशीन के समान हो गया जो अनेक अधिकारियों द्वारा संचालित था तथा जिसने बहुत से ऐसे कार्य हस्तगत कर लिए जो आजकल निजी क्षेत्र के लिए छोड़ दिये जाते हैं और जो आधुनिक समाजवादी विचारधारा वाले देशों में राज्य-नियंत्रण में दिये जाते हैं। यह ऐसा आंखमिचौनी का खेल था जिसमें उत्तरदायित्व को छिपा लिया गया था तथा करदाता की आंखों पर पट्टी बांध कर अधिकारियों

के आगे पर्दा डाल दिया गया था। यह राज्य की मशीन तथाकथित मूलभूत कानूनों[1] द्वारा नियमित थी जो वास्तव में राजकीय परमाधिकारों में और वृद्धि करते थे क्योंकि उन सब का योग केवल इस स्वत: सिद्ध प्रमाण की पुष्टि करता था कि प्रभुसत्ता अलग नहीं की जा सकती, राज्य के उत्तराधिकारी को[2] राजसिंहासन पर परम्परागत और अखण्डनीय अधिकार है और सैलिक विधि (Salic Law) के अनुसार स्त्रियां उत्तराधिकार से वंचित हैं। बात केवल इतनी ही नहीं थी कि फ्रांस के राजा निरंकुश थे, बल्कि उनके अधीन अधिकारी भी ऐसे थे जिन्होंने सरकार को एक व्यापारिक संस्था बना रखा था, जो असीमित अधिविकर्षों (ओवरड्राफ्टों) पर अवलम्बित थी, जिन्होंने आय-व्यय के संतुलनपत्र तैयार करने से मुक्ति प्राप्त कर ली थी तथा जिन्होंने अपने कार्यों को कर्मचारियों और कोंसिलों के जाल के पीछे छिपा रखा था, जिनका लक्ष्य (Motto) था विशेषाधिकार और इसके विज्ञापन के लिए था 'ताज' (Crown)। फिर भी राजतंत्र (घराने) का पुराना नाम तब तक चलता रहा जब तक कि भ्रम मुक्त हुए साहूकारों ने बलपूर्वक महलों में घुस कर सम्पत्ति पर आधिपत्य नहीं जमा लिया।

स्पेन की विशेषताएं

17 वीं शताब्दी का स्पेन दो विशेषताएं प्रदर्शित करता है परम्परागत प्रथाओं की प्रबलता और प्राचीन साम्राज्यों और राष्ट्रीय हितों के प्रति निरन्तर विरोधी भावना। पुनर्जागरण और सुधार अन्दोलन इस प्रायद्वीप पर कोई स्थायी प्रभाव नहीं जमा सके। ईसाई धर्म का अक्षरश: पालन, नवीनता व प्रयोगों के प्रति अरूचि और निर्धनता को स्वेच्छा से सहने की शक्ति सहित मध्यकालीन प्रथाएं जो किसी देश में नहीं रही थीं, यहां अब तक शेष थीं। स्पेन में दो मुख्य उद्योग थे– भेड़ पालन और कृषि। राज्य में मेस्ता या भेड़ पालने वालों का राष्ट्रीय गिल्ड था[3] जो अब भी प्राचीन खानाबदोशों और गड़रियों वाली आर्थिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व एवं शोषण करता था, किन्तु जिन लोगों ने उपजाऊ भूमि के या लकड़ी के जंगलों के अहाते बना लिए थे उनकी कोई सहायता नहीं की जाती थी। इस प्रकार दोनों उद्योगों को एक दूसरे के विरूद्ध रखा जाता था। परन्तु मेस्ता जो अब भी

---

1 इसके लिए देखिये जे० हिटलर कृत ला डॉकट्रिने द ला एब्सल्यूतेजिम पृ 110–123।

2 17वीं शताब्दी में 'उत्तराधिकार' शब्द का उपयोग वंशानुगत से अधिक के अर्थ में किया जाता था। 'उत्तराधिकार' का इस अर्थ में उपयोग किया जाता था कि उत्तराधिकारी को उसकी इच्छा के विपरीत भी पदग्रहण करना पड़ता था।

3 इसके लिए देखिये जे० क्लीन कृत **दी मेस्ता** (1920)।

धनवान् थे अपनी सम्पत्ति का अधिकांश, भेड़ पालने के अतिरिक्त अन्य साधनों द्वारा कमाते थे। अहाते, चाहे वे पशुपालन या कृषि के लिए हों, लोगों के वार्षिक स्थानान्तरों के बाधक थे। इस प्रकार शताब्दी के अन्त तक भेड़ पालन का अधिकांश भाग मेस्ता के हाथों से निकल कर स्थिर चरवाहों के पास चला गया था, तो भी स्पेनिश हेप्सबर्गों के राज्य काल में कृषि की उन्नति नहीं हो सकी क्योंकि सफल कृषि के लिए जिस व्यक्तिगत व्यवस्था तथा दैनिक परिश्रम की आवश्यकता थी उसके लिए राष्ट्रीय रूचि का अभाव था। दूसरा आर्थिक कारण–नई दुनियां (अमरीका) से सोने-चांदी के आयात में गिरावट होना था[1]। बहुत सी खानें अब प्रयोग में लाई जा चुकी थीं, धन कमाने वाले समुद्री बेड़े को अंग्रेज और डच लुटेरों का सामना करना पड़ता था। स्पेन के उपनिवेश अपनी मातृभूमि से अधिकाधिक स्वतंत्र होते जाते थे क्योंकि उन्होंने एशिया से सीधा व्यापार आरम्भ कर दिया था। इसका तात्कालिक प्रभाव यह हुआ कि फिलिप द्वितीय को सिक्कों में मिलावट करने के लिए बाध्य होना पड़ा तथा उसके अधिकारियों ने मिलावट को यहां तक बढा दिया कि देश में सोने–चांदी का परिभ्रमण समाप्त सा हो गया। इससे भी बढ़ कर प्रजाऋण स्वीकार न कर के राष्ट्रीय साख को और भी कमजोर कर दिया गया। इन कारणों से 17 वीं शताब्दी के स्पेनिश राजाओं के पास संसार के विभिन्न देशों से किए गए वायदों की पूर्ति के लिए, जो उन्होने अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार में प्राप्त किए थे, बहुत ही अपर्याप्त साधन थे।

कोर्टेज (Cortis)

स्पेन एक सजातीय राष्ट्र न था और 17 वीं शताब्दी में भी इसके लिए विभिन्न प्रान्तों में पृथकत्व की भावना व्याप्त थी। स्पेन की छः प्रान्तीय राज–धानियां–कैस्टील (Castille), अरागोन (Aragon), केटालोनिया (Catalonia), वेलेंशिया (Valencia), मेजोर्का (Majorca), और निवारे (Navarre) अब अपनी प्रतिनिधि संस्था (Cortis) रखती थीं। ये धारा सभाएं जो पादरियों, कुलीनों और कस्बों के प्रतिनिधियों द्वारा संयोजित की जाती थीं सिंहासन के उत्तराधिकारी के लिए स्वीकृति देती थीं, राजा की राज्याभिषेक शपथ को दर्ज करती थीं, और आवश्यकता पड़ने पर आर्थिक सहायता के लिए मतदान भी करती थीं। किन्तु उन्हें किसी भी बात को आरम्भ (Initiative) करने का अधिकार नहीं था। न तो नियमित रूप से उनकी बैठकें बुलाई जाती थीं और न ही उनको जनता का अनुमोदन प्राप्त था क्योंकि कस्बे तो प्रतिनिधियों को भारस्वरूप मानते थे। धीरे–धीरे उन्होंने कर लगाने के कार्यों में भी रूचि लेना छोड़ दिया और 1624 में

---

1 ई० जे० हेमिल्टन कृत **अमरीकन ट्रेजर एंड दी प्राइस रिवोलूशन इन स्पेन।**

फिलिप उनके अनुमोदन के बिना ही कर लगाने का दावा करने लगा। 1665 में एक राजाज्ञा[1] द्वारा कर लगाने का अधिकार नगरपालिका को सौंप दिया गया। कैस्टील की प्रतिनिधि सभा को 1665 और 1700 के बीच में एक बार भी नहीं बुलाया गया यद्यपि अरागोन, केटालानिया, बेलेन्शिया, मेजोर्का और नेवारे की सभाओं की बैठकें होती रहीं। इनकी बैठकें भी अधिक नहीं होती थीं क्योंकि वे राजा की उपस्थिति के लिए हठ करते थे। 17 वीं शताब्दी के दौरान स्पेन में भी फ्रांस की भांति प्रतिनिधि संस्थाएं समाप्त हो गईं।

स्पेन की परिषदें (कौंसिलें)

वेनिस के एक राजदूत[2] ने 1605 में घोषित किया कि स्पेन का झुकाव राजतंत्र की अपेक्षा प्रजातन्त्र की ओर अधिक है। इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि स्पेनिश राजा परिषदों के उन नाममात्र के अध्यक्षों से जिन्हें प्रशासन कार्य सौंपा गया था, किसी प्रकार भी अधिक शक्तिशाली नहीं था। ये कांसिलें थी राज्यसभा (**काउन्सिल आफ स्टेट्स**), **जाँच समिति (काउन्सिल आफ इन्क्यूजिटीवस)**, वित्तसभा, धर्म सभा तथा युद्ध समिति। दो महासभाएं (सिनेट्स) भी थीं जिनमें से एक की बैठक बुगोस या बालाडूलिड़ (Valladolid) और दूसरी ग्रेनेडा (Grenada) में होती थीं। राज्यसभा, युद्ध समिति, और जांच समिति तीनों पूर्णसत्तावारी थीं। राज्यसभा राजदूतों का स्वागत करती थी और विदेशनीति का निर्णय करती थी। जांच समिति धार्मिक कार्यों पर नियंत्रण रखने के अतिरिक्त जब्त जायदादों तथा अधिक ब्याज सम्बन्धी प्रश्नों का नियमन करती थी। वह स्पेन के चर्च और पोप के मध्य विवादों में हस्तक्षेप कर सकती थी। युद्ध-समिति देश के समस्त सैनिक साधनों पर अधिकार रखती थी। ऐसा कहा गया था कि यदि इंग्लैण्ड के हेनरी अष्टम की ऐसी सहायक परिषदें (कौंसिलें) होतीं तो वह पोप से सम्बन्ध तोड़े बिना ही विवाह विच्छेद की स्वीकृति प्राप्त कर सकता था।[3] मैजोरका, माइनोर्का और सार्डिनिया के द्वीपों के साथ वेलेशिया, केटेलोनिया और अरागोन को, अरागोन के ताज के अन्तर्गत स्पेन से जोड़ दिया गया था यद्यपि प्रत्येक प्रान्त का अलग वायसराय होता था तथा उनके पुराने कानून ही अभी तक प्रचलित थे।

---

1. अल्तामिरा य क्रीविया, हिस्तोरे व एस्पेना, 3, पृ० 258।

2. सिमन कोंटेरेनी इन रिलेजियोनी डेगली एम्बेसिएटोरी वेनिटी (स्पेन) 1, 293।

3. सिमन कोंटेरेनी इन रिलेजियोनी डेगली एम्बेसिएटोरी वेनिटी (स्पेन) 2, 278।

17 वीं शताब्दी में इन कौंसिलों की शक्ति को, तीन सचिवों के, जो केबिनेट, नार्थ और केस्टाइल तथा इटली का प्रतिनिधित्व करते थे, के स्वाधिकार बढ़ा कर शनैः शनैः कम कर दिया गया। ये स्थायी अधिकारी प्रथम मन्त्री तथा गुप्त समिति बनाते थे। इस प्रकार स्पेन के राजा आसानी से इन लालची चापलूसों के शिकार बन जाते थे। यही कारण है कि 17 वीं शताब्दी के स्पेन की सरकार निरकुंश और अस्थिर रही। यह सरकार भ्रष्टाचारिणी थी क्योंकि कोई भी अन्य देश मुफ्त मे वेतन पाने वाले जहां काम कुछ नहीं होता था, इतने अधिक पद नहीं दे सकता था।[1] स्पेन की जनसंख्या का लगभग पांचवा भाग सरकारी कर्मचारियों का था तथा शेष में अधिकांश पादरी थे इसलिए यह कहा जा सकता है कि इस काल में स्पेन निवासी प्रायः प्रार्थना या पेन्शनों पर पलते थे। सन् 1627 में यह घोषित किया गया कि मठ ही केवल ऐसे स्थान थे जहां लोग भूखे नहीं मरते थे।[2]

स्पेन एक विरोधाभासी देश

कभी कभी इस बात पर बड़ा आश्चर्य होता था कि स्पेन संसार के विभिन्न भागों में अपनी सेना कैसे नियुक्त करता था, वास्तव में ऐसी स्थिति में सेना का वेतन स्थायी रूप से बकाया रहता था।[3] आगामी कई वर्षों में होने वाली राष्ट्रीय आय को पहले से ही जिनोआ के साहूकारों को देने का वचन दे दिया जाता था जो उस पर बहुत अधिक ब्याज लेते थे। स्पेन तब तक इनसे उऋण नहीं हो सका जब तक कि उसके अधिनस्थ यूरोपीय प्रदेश उससे छिन नहीं गए। यह इस बात का प्रमाण है कि प्रादेशिक विस्तार से ही धन वृद्धि नहीं होती। इस देश में जहां विशाल प्राकृतिक साधन थे वहीं दूसरी ओर सबसे अधिक दरिद्रता थी। छोटी-छोटी बातों तक के लिए कानून एवं अयोग्य कर्मचारी थे। अनेक स्कूल और विश्वविद्यालय थे[4] परन्तु राष्ट्रीय निरक्षरता का औसत बहुत ऊंचा था, शक्तिशाली मध्यम वर्ग के अभाव में एक ओर अमीरों में, चाहे सामान्य जन हो या धार्मिक वर्ग और दूसरी ओर गडरियों, अंगूर उगाने वालों और ऊन मजदूरों की[5] जनसंख्या में तीव्र अन्तर था। समस्त यूरोप में सम्भवतः स्पेन ही एक ऐसा देश था जहां वंश गौरव को धन से अधिक महत्व दिया जाता था तथा जिसे देखने की कुछ लोग इसलिए रूचि

1. एल्तामिरा य क्रेविया, पूर्व उदधृत 3, 336 एफ एफ।
2. पिकातोस्ते, ला ग्रांडेजा य दिकाडेनेशिया द एस्पेना, 3,36।
3. रिलाजियोनी देगली एम्बसिएशन वेनिटी (स्पेन), 1,333।
4. एल्तामिरा, 3,540 एफ एफ।
5. "रेस्तानो कौन ला लोर गोनफ़िजा मिएगीडिक्रेसा इगनोरेंजा" (सोरेंजो, 1602 इन रिलेजिओनी........स्पेन, 1,127)।

रखते थे क्योंकि 17 वीं शताब्दी की यह विशेषता लोप होती जा रही थी। ऐसे प्रमाण भी मिलते थे कि विदेशी लोग कभी कभी वहां के स्पष्ट विरोधाभासों के सुन्दर सामंजस्य पर मोहित हो जाते थे।[1] यूरोप के सबसे कम व्यावसायिक और सबसे अधिक दुर्बोध इस देश में ये विरोधाभास सबसे पहले यात्रियों को प्रभावित करते थे। वंश गौरव की विशिष्ट अभिव्यक्ति, जिसका 17 वीं शताब्दी के दौरान सर्व साधारण में प्रचलन था, यह थी कि जायदाद का ऐसा प्रबन्ध किया जाता था कि उत्तराधिकारी उसे बेच न सके। गरीब लोग जो थोड़ा बहुत धन संचित करते थे, उसे भूमि लेने में लगा देते थे और अपनी जायदादों का इस प्रकार नियोजन करते थे कि वह सब प्रकार से इतनी सुरक्षित रहे कि कम से कम परिवार का एक व्यक्ति हमेशा उदासीन बना रहे। ये जायदादें मेओराजो (Mayorazogos)[2] के नाम से पुकारी जाती थीं। इससे जनसंख्या को सीमित रखने में उत्प्रेरणा मिलती थी। यदि कहीं छोटे पुत्र हों तो उनके लिए निराश्रय होने से बचने का एक मात्र विकल्प केवल देशत्याग था। कम से कम एक समकालीन लेखक ने तो इसे स्पेन के पतन का एक कारण माना है।

इटेलियनों की विशेषताएं

दि करेक्टर आफ इटली या इटेलियन एनोटामाइज नामक पुस्तक में इटली को 'आल्पस पर्वत का एक मिट्टी का ढेला और संसार के बड़े दैत्य की गठिया ग्रसित टांगें' कहा गया है। वहां के निवासियों को 'दिवालियों का निष्प्रयोजन पदार्थ' बताया है। तीन बातें जो लोगों को इटली जाने से रोकती थीं वे 'जांच-पड़ताल, लुटेरे और खटमल तथा पिस्सुओं का गढ थीं।' बहुत से अंग्रेज जो कभी इटली नहीं गये थे सम्भवतः इस मत से सहमत थे। इस काल में इटली केटिओ-केम्ब्रिसिस (Catiau Cambresis) की संधि (1559) के आधार पर इस प्रकार बटा हुआ था – मिलान (Milan) का सारा प्रदेश (पेविय और क्रिमोना सहित) जिसमें नेपल्स (Naples), सिसली (Cicily), सार्डिनिया (Sardinia) और टस्कनी के प्रतिरक्षित बन्दरगाह सम्मिलित थे,[3] ये तमाम स्पेनिश प्रदेश हो गये थे जिन पर वायसराय का शासन था सेवाय (जिसमें उस समय पीडमोण्ट, सेवाय के अधिकांश वर्तमान फ्रेंच विभाग और हाटैस-आल्पस का बड़ा क्षेत्र सम्मिलित थे) वेनिस का प्रजातन्त्र (जो एड्रीयाटिक से एड्रा तक विस्तृत था तथा उसमें डालमेशिया का

---

1 देखिये **इसंट्रक्शंस डोनीस** आक्स एम्बसडर्स द **फ्रांस** (स्पेन) 424 एफ एफ।

2 एल्तामिरा, **पूर्व उदधृत**, 3,423 एफ एफ।

3 पोर्तो एरकोले, पोर्तो सेन स्टीफेनो, ओर्बिटेलो, पिओम्बिना, तेलामोने एण्ड पोर्तो लोंगों ने इन एल्बा।

रङ्गसा तक का भाग सम्मिलित था), जिनोआ प्रजातत्र (कार्सिका सहित, लुक्का प्रजातंत्र मोटफ्रेट का मार्क्विस और मन्टुआ का डची (दोनों गोजांका के अधीन थे), पार्मा और पिएसेन्जा की डचिया फार्निसे के अधीन, मोडेन्त और फैराग,[1] एस्टे के अधीन, टस्कर्ना मेडिसी के अधीन, डैला रोवेरे के अधीन, डरविनो और रोम पोप के अधीन थे। आन्तरिक सीमाओं में नगण्य परिवर्तन हुए किन्तु मन्तुआ और मोन्टफैरट के अधिकार पर फ्रांस और स्पेन में बहुत कटु वादविवाद चला और रिशेलू द्वारा पिनेरोलो पर किया अधिकार निरन्तर अशान्ति का कारण बना रहा। फ्रांस द्वारा पहिले पिनेरोलो (1631) फिर मन्तुआ (1631) और अन्त में केसले (1681) पर अधिकार कर लिये जाने के कारण स्पेन को उत्तरी इटली पर एकाधिकार रखने में रूकावट आ गई, विशेषतया जबकि वेनिस की नीति हमेशा फ्रांस पक्षपाती और हैप्सबर्ग विरोधी रही, जबकि सेवाय की नीति अस्थिर होते हुए भी प्रधानतया स्पेन विरोधी थी। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए की मंतुआ और कैसेले यूरोप के सबसे महत्वपूर्ण गढ़ थे। सेवाय पर जो इटली के स्वतन्त्र राज्यों में बहुत शक्तिशाली था, योग्य और महत्वाकांक्षी राजवंश शासन करता था। सत्रहवी शताब्दी में यह राज्य स्पष्टतया इटैलियन और पीडमोण्टी हो गया और इसकी राजधानी चैम्बेर्री के बदले त्यूरिन बनाली गई।

मिलान, नेपल्स, और सिसली

राजनैतिक दृष्टि से स्वतन्त्र राज्यों में मिलान और नेपल्स सबसे महत्वपूर्ण थे। मिलान में कुलीन वर्ग और पादरियों के पास जायदादें होने के कारण गर्वनर की शक्ति में कुछ हद तक कमी आ गई थी। सोलहवीं शताब्दी के पूर्व काल में लुई बारहवें ने पेरिस की पार्लियामेन्ट के आधार पर एक सीनेट स्थापित की। सीनेट तीन बार वीटो द्वारा विघ्न डाल सकती थी, तत्पश्चात उसे झुकना पड़ता था। वित्र का अधिकार यूफिशियो, केमेराले, गाडजियारियो – फिनांजियारियो (Ufficis, Camerale, Guidiziario–fimanziario) के हाथ में होता था। सामान्यतः सीनेट से भिन्न मत होता था। कौंसिग्लियो सेग्रटो (Consiglio Segrats) में जिसमें लगभग आधे स्पेनिश लोग होते थे, तमाम गोपनीय मामलों का और संदेशों का काम होता था। फिलिप द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् महत्ता में इस कौंसिल ने सीनेट का स्थान ले लिया। वायसराय राज्य के तमाम अधिकारियों को मनोनीत करता था[2]। सिसली की दशा इससे भी बुरी थी, क्योंकि वहां पर एक स्पेनिश स्थायी सेना नियुक्त की हुई थी। इसके न्यायिक प्रशासन का प्रबन्ध स्पेन में

1 फेराग पोपशाही द्वारा 1597 में अपने अधीन कर लिया गया था।

2 केलेगेरी, ट्रीपोडरेने स्ट्रे निएरे, 136 एफ एफ।

होता था और वह जांच–पड़ताल विभाग के अधीन था। एसिमली की तीन एस्टेटों धार्मिक, ताल्लुकेदारी या सेना सम्बन्धी, और सार्वजनिक या जमींदारी सम्बन्धी बैठकें अभी तक होती थीं और वे लोग आर्थिक सहायता पर मतदान करते थे, परन्तु वे अधीनस्थ होते थे और उन्हें बिना बहस के मतदान करना पड़ता था। नेपल्स का शासन वायसराय करता था और 1642 तक वहां ऐसी एस्टेटें थीं जिनकी शक्ति नाममात्र की थी। इस प्रकार यह कहना सत्य है कि अधिकृत इटली के राज्यों पर स्पेनिश राज्य का निरंकुश शासन था और वह इन प्रतिनिधि संस्थाओं के साथ, जो शेष रह गई थीं, मन चाहा व्यवहार करता था।

इटली में स्पेनिश शासन

परन्तु स्पेन ने कई विलक्षण तरीकों से इटेलियनों के चरित्र और स्वतन्त्रता का हनन किया। इससे पूर्व शताब्दी में सिसली सबसे अधिक अन्न निर्यात करने वाला प्रान्त था। स्पेन ने बचे हुए अन्न को सरकारी धान्यागारों में भर कर और निर्यात पर भारी कर लगाकर, अन्न पर एकाधिकार कर लिया[2]। इस प्रकार वेनिस और लुक्का (Lucca) के व्यापारियों को मजबूर होकर मिश्र से अन्न मंगवाना पड़ता था। लोगों की पद प्राप्त करने और शस्त्रास्त्रों से सजने की व्यापक सनक का बड़ी चतुराई से चापलूस अनुचर तैयार करने में प्रयोग किया गया जबकि जन समूह को अनेकों दृश्य और समारोह दिखाकर शान्त रखा गया[3]। चूंकि लगभग तमाम प्रत्यक्ष कर गरीबों पर लगते थे और लगभग तमाम अप्रत्यक्ष कर आवश्यक वस्तुओं पर लगाये जाते थे इसलिए पराधीन जनता को इतने स्तर पर ही रखा जाता था जिससे वे अपना निर्वाह मात्र कर सकें क्योंकि फल और रोटी के भावों में एकाएक वृद्धि होने पर बहुधा विद्रोह हो जाया करते थे। एक स्पेनिश अधिकारी यह सुनकर कि नये करों से निर्धन लोगों को बहुत कष्टों का सामना करना पड़ेगा, कहने लगा, "यदि उन्हें अपनी लड़कियों और पत्नियों की इज्जत भी बेचनी पड़े तब भी उन्हें कर देने पड़ें।"

इनके अतिरिक्त इटली पर भूमिकर इकट्ठा करने का शुल्क व मिलावटी सिक्के थोपे गये थे। सरकारी वायदे तोड़कर और खुले आम न्याय बेच कर धन इकट्ठा किया जाता था। राजतिलक, विवाह और युद्धों का बहाना बनाया जाता था और ईमानदार स्पेनिश शासकों को प्रायः वापिस बुला लिया जाता था क्योंकि मेड्रिड में ऐसा विश्वास किया जाता था कि व्यक्तिगत हित राज्य के हितों के साथ

---

1 वही, पृ० 142।

2 तत्रैव, पृ० 155 तथा ला विता इतालियाना नेल सिसेंतो, 80।

ही अच्छी तरह समन्वित किये जा सकते हैं[1] । 1670 में लिखी गई एक हस्तलिखित डायरी के टुकड़े में सत्रहवीं शताब्दी के निआपोलिटन जीवन का इस प्रकार वर्णन किया गया है। धार्मिक वर्गों में इस बात पर झगडा होता कि अपने अपने संरक्षकों की सबसे अधिक प्रशंसा कौन करे, कुलीनवर्गों में इसलिए कि कौन ठाट–बाट से और जोश से अपने मान की रक्षा में एक दूसरे से आगे बढ़ता है, छोटी जातियों में इसलिए कि कौन धोखा देने में सबसे अधिक चतुराई करता है या बहुत आसानी से किसी का बध करने के लिए उत्तेजित होता है. और यह सब कुछ होता था संतों के दिवस समारोह, नृत्य कोलाहल, ललकार और द्वन्द्वों के अवसर पर[2] । सेवाय का चार्ल्स इमेन्युल अपने संस्मरण में, जो उसने अपने उत्तराधिकारी के लिए लिखे थे, यह कह सकता था कि "तमाम दासताओं में स्पेन की दासता सबसे कठोर तथा असहनीय है[3] ।" यह उल्लेखनीय है कि टस्सौनी द्वारा लिखे गये फिलिपिक्स (Philippics)[4] सेवाय के ड्यूक द्वारा प्रेरित किये गये थे जो सारे इटैलियन राजकुमारों में अकेला स्पेन के दुस्सह जुए को बहुत बुरा मानता था, बाद में इटली ने एक दिन उसी के उत्तराधिकारियों को अपना राजा बनाया ।

पोलेण्ड का विधान

सत्रहवीं शताब्दी में राजनैतिक विकास के सामान्य नियम का अपवाद पौलैण्ड में पाया जाता है[5] । यह अपवाद इतना महत्वपूर्ण है कि उसने राजनीतिज्ञों और सैद्धान्तिकों के लिए वस्तुपाठ का कार्य अवश्य किया होगा । जबकि अन्य देशों के राजा लौकिक नियन्त्रण की अन्तिम अवशिष्ट बेड़ियों को तोड़ रहे थे और निरंकुश तथा सैनिक राज्यों का निर्माण कर रहे थे उस समय पोलेण्ड का प्रजातन्त्र[6] अपने राजाओं की शक्ति को अधिकाधिक संकुचित कर रहा था और इस बात का स्पष्ट प्रमाण दे रहा था कि फूट कितनी हद तक बढ़ सकती है । पौलेण्ड प्रधानतया स्लाव जाति के राज्यों के ढीले-ढाले जोड़ से बना एक राजसंघ था जिसे जागेलन राजाओं (Jagellon kings) ने लिथुआनिया से मिला दिया था । यह योग्य राजाओं का देश था जिन्होंने अपने प्रतिद्वन्द्वी ट्यूटोनिक सरदारों के विरुद्ध सफल युद्ध

---

1 केलेगेरी, पूर्व उदघृत, 147 ।

2 वही, 155

3 वही 157

4 देखिए वी० बेगी कृत ल फिलिपके इन मिसैलेनी टैसोमिआना ।

5 1664 में पौलेंड के विषय का रोचक विवरण इस्ट्रक्शंस डोनीस में प्राप्य है। (पोलेंड) 52 एफ० एफ० ।

6 रेसपब्लिका इन दि रोमन सेंस ।

किया और 15 वीं और 16 वीं शताब्दियों में प्रजातन्त्र को एक महान् शक्ति बना दिया। 1587 में वासा राजाओं के राज्यारोहण के समय मे (राजा निर्वाचित होते थे) विकेन्द्रीकरण शक्तियों ने फिर जोर पकड़ना शुरू कर दिया और इस प्रकार इनका पतन आरम्भ हो गया। दूसरी जगहों में सामन्ती सस्थाओं ने शक्तिशाली नागरिक सम्प्रदाय (burgher Communities) और एक बड़ा मध्यवर्ग बनाने में सहायता दी जिन्होंने शक्तिशाली कुलीनवर्ग के विरुद्ध राजाओं का पक्ष लिया जब कि इसके विपरीत समस्त पश्चिमी यूरोप में चर्च, संस्कृति का एकमात्र भण्डार (Repository) होने के नाते और सब श्रेणी के लोगों की भर्ती करने के कारण, राज्य के लिए लाभदायक कर्मचारी देता था और राष्ट्रीय आकांक्षाओं से अपनी एकरूपता प्रकट करता था।[1] किन्तु पेलैण्ड में मध्यमवर्ग था ही नही और सत्रहवीं शताब्दी में चर्च पर अन्तर्राष्ट्रीय वर्ग जैसुइटों का नियंत्रण था। बड़े-बड़े जमींदारों ने अपनी सत्ता को कठपुतली राजा (जिसके हाथ उसके परमाधिकारों में **धार्मिक समझौते** (Pacta conventa) द्वारा सीमित कर बांध रखे थे) के पीछे छिपाकर और अपने विस्तृत प्रदेशों का यहूदी प्रबन्धकों की सहायता से, जिन्होने वहां अपना एकाधिकार स्थापित कर रखा था जिसमें धर्म की मूलरीतियां भी सम्मिलित थीं, शासन करके भूसम्पत्ति और राजनैतिक शक्ति दोनों पर अपना एकाधिकार जमा रखा था[2]। केवल जैसुइट लोग ही शिक्षाप्रद राजनीतिक शक्ति सिद्ध हुए, और विदेशी शक्ति के राजभक्त होते हुए भी, उन्होंने इस देश को, जिसमें देशभक्ति को अव्यवस्था फैलाने का बहाना मात्र माना जाता था, एक ऐसी संस्था दी जो राष्ट्रीय भावना को जागृत करने की सामर्थ्य ना रखती थी। पोलिश विभाजन का काल आरम्भ होने के बहुत पहले से पौलेण्ड में परस्पर विरोधी और असंगत बातों का समूह दिखाई देता है—एक बहुत विस्तृत देश किन्तु कोई सीमान्त प्रदेश नहीं, जिसमें प्रचण्ड राष्ट्रीय चेतना थी फिर भी जो लगातार खण्डित होता रहा, जिसका निरन्तर युद्ध चलता रहा किन्तु कोई विजय प्राप्त नहीं हुई, जो समानता का दम भरता था किन्तु सबसे अधिक अन्यायपूर्ण उत्पीड़न के सन्मुख हर जगह नतमस्तक होता रहा, जो स्वतन्त्रता की पुष्टि के लिए तत्पर था किन्तु निकृष्टतम दासवृत्ति को स्वीकार कर लेता था, जिसके विधान में दोषों की रोकथाम के असंख्य

---

1 देखिये एन० ए० सालवेंडी कृत **हिस्तोरे ड्यू रोए जीन सोबेस का एत ड्यू रोयेम द पोलग्ने** (स० 1876), 1,24 एफ एफ।

2 पोलिश कुलीनवर्ग ने स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करके अथवा राजकीय अपराधों को करके अपनी प्रतिष्ठा को अपने आप ही क्षति पहुंचाई थी। **इंस्ट्रक्शंस डोनीज**······पोलेण्ड, इन्ट्रोडक्शन।

तरीके थे किन्तु प्रभावशाली सरकार नहीं थी, जहां आज्ञापालन मुख्य राजकीय गुण था परन्तु अराजकता स्थाई राष्ट्रीय विशेषता थी। कोई भी राज्य अपना कार्य अल्पसख्यकों की अवहेलना करके या उन्हें कुचल कर नहीं चला सकता। ब्रिटिश लार्डसभा की यह विचित्रता (Unique) है कि उसने अल्पसंख्यकों को अपना विपरीत मन रिकार्ड करने का विशेषाधिकार दे रखा है। पौलेण्ड की डायट (Diet) **'लिबरम् वीटो'** (Liberum Veto) के अनुसार, पूर्ण मतैक्य पर बल देती थी क्योंकि मतैक्य के विरूद्ध एक सदस्य भी समूची कार्यवाही को विफल बनाने के लिए पर्याप्त था, अत : यह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं थी कि जब डायट की बैठकें होतीं तो कभी कभी मौतें भी हो जाती थीं और जब 'लिबरम् वीटो' का प्रयोग करने वाला व्यक्ति भाग कर बच जाता तो वह समान्यत : शस्त्रधारियों का नेता बनकर जनता के सम्मुख आता था। पोलैंड का इतिहास यह सिद्ध करता है कि आर्दशवाद और व्यावहारिक राजनीति हमेशा साथ–साथ नही चल सकती और ऐसे लोग जो शासन करने में आदर्शवादी बनते हैं अन्त में दूसरों द्वारा शासित होते हैं।

बाह्य प्रभाव

रूसः—रूस दो कारणों से यूरोपीय विकास की मुख्य धारा से अलग हो गया था। एक कारण था रूस का 10वीं शताब्दी के अन्त में कट्टर ग्रीक चर्च (Orthodox Greek church) का अनुयायी होना, और दूसरा 13वीं शताब्दी में तातारियों का रूस पर आक्रमण, जिसके फलस्वरूप दो से अधिक शताब्दियों तक तातारी उन पर शासन करते रहे। पौलैण्ड की भांति, मास्कोवाइट राज्य भी उन मध्यकालीन धारणाओं और संस्थाओं से मुक्त था, जिन्होने पश्चिमी यूरोप में वह पद्धति स्थापित कर दी जिसे साधारणतया सामन्तवाद कहा जाता है क्योंकि मास्को की ग्रांड डची में नगर प्रतिनिधयों और सरदारों के वर्ग नही थे और चर्च को, जो मठाधीश, पादरियों, और गांव के पुरोहितों में विभक्त था, कोई अवसर नहीं मिला कि वह ऐसे राजनीति और प्रशासक तैयार कर सके, जिन्होनें पश्चिमी यूरोप में कोई निर्णायक भूमिका अदा की हो। इसके अतिरिक्त रूस पर पुनर्जागरण (Renaissance) या धर्म सुधार (Reformation) आन्दोलन का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। रूस की अन्य विशेषताओं पर, उसके अनिश्चित सीमा प्रदेश और उसकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर विचार किया जा सकता है। आर्कटिक (Arctic) प्रदेशों तथा कैस्पियन (Caspian) क्षेत्र के अतिरिक्त वहां उत्तर के बन प्रदेशों और दक्षिण के घास के मैदानों में सदैव महत्वपूर्ण पृथकत्व रहा है, जिसमें से पहला मास्को की अर्थ प्राचीन निरंकुशता के प्रशासन में रहा और दूसरा कीव[1] के अधिक नमनीय

1 पी० मिलिनकोव, **हिस्तोरे द रेशिया**, 1, 58–59।

शासन में। पश्चिम की ओर से रूस पर स्वीडन, लिथुआनिया और पौलेण्ड वालों का, दक्षिण तथा पूर्व की ओर से तातारियों का, लगातार दबाव रहा। केन्द्रीय स्थिति होने के कारण मास्को इन आक्रमणकारियों से पददलित न हो सका और इसीलिए ग्रांड डची 17वीं शताब्दी तक चलती रही तथा आगे चलकर रोमनोफों ने इसे प्रभावपूर्ण आधिपत्य में परिवर्द्धित भी कर दिया, यद्यपि इसमें आंशिक रूप से एकता हो गई थी किन्तु यह एकता सशस्त्र सैनिक दल की एकता के समान थी।[1]

इन प्रभावों का मूल्यांकन

17 वीं शताब्दी के रूप का विशेष आकर्षण यह है कि घटनाओं ने रूसी शासकों (Tsars) को राज्य का इस प्रकार विकास करने पर बाध्य कर दिया, जिससे कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था खतरे में पड़ गई।[2] इस प्रक्रिया में रूस पर विदेशी प्रभाव होना अवश्यम्भावी था। उसके निकटस्थ थी ग्रीक या विजेन्टाइन की सूक्ष्मतया व्यवस्थित नौकरशाही तथा इसके विस्तृत समारोहों और सुधार विरोधी भावनाओं का नमूना; इसके विकल्प में पश्चिम या जर्मनी का नमूना था जो पुरानी परम्पराओं से अधिक स्वतन्त्र था, जिसके अधीन शहरों और कस्बों में सहयोग था और जीवन की सुविधाओं के प्रति अधिक चेतना थी। अन्त में पीटरमहान् के राज्यकाल में दूसरे नमूने के प्रभाव का प्रचलन हुआ और चिरकाल तक रूसी लोग ग्रीक ढांचे को प्रतिक्रियावादी और जर्मनी को प्रगति का चिन्ह मानते रहे। 19 वीं शताब्दी में कुछ सिद्धान्तवादियों ने यह सिद्धान्त निकाला कि रूसी समाज में प्रतिक्रियावादी शक्तियों का प्रादुर्भाव ग्रीक के बजाय तातारियों से हुआ है। किन्तु आधुनिक विचारधारा ने बाहरी शक्तियों के इस प्रकार के प्रभाव को सर्वथा अमान्य ठहराया है[3] तथा इस बात का दावा किया है कि रूसी चरित्र में जो दृढता है और उसमें जो जातिभ्रष्ट होने के चिन्हों का अभाव है, जो कि स्पेंग्लर जैसे लेखकों के अनुसार पश्चिम वालों में पाये जाते हैं, तातारी या मंगोली तत्वों की देन हैं। इन सिद्धान्तों से केवल इतना ज्ञात होता है कि आधुनिक रूस के निर्माण में कौन-कौन सी विभिन्न शक्तियों ने योगदान दिया है।

---

1 पी० मेलनकोव, पूर्व उदधृत, 178।

2 ए० मिलर, हिस्तोरे देश इंसटीट्यूशंस एग्रेरस द ला रशिये सेंट्रल डयू 16 आ 18 सिकले, 34–44।

3 वही, 30–31 यह विचारधारा मुख्यतः नवयुवक शरणार्थियों द्वारा प्रतिपादित की गई है, जोकि यूरेशियन नाम से पुकारे जाते हैं तथा अपनी वंशावली चंगेज खां के शासनकाल से आरम्भ करते हैं। देखिए जी० वरनाडस्कज हिस्ट्री आफ एशिया, 1929।

जमींदारी तथा सैनिक सेवा

आक्रान्ताओं से देश की रक्षा करना 17 वीं शताब्दी के ज़ार शासकों का प्रथम कर्तव्य था। राज्य प्रशासन का विकास कुछ ऐसे द्रुतगति के कार्यों के रूप में हुआ कि उनमें से कुछ के परिणामस्वरूप देश में अव्यवस्था फैल गई, जो पीटर महान् के अन्तिम काल में उस समय समाप्त हुई जबकि कुछ अंशों में स्थिरता प्राप्त की जा सकी। यह विकास ज़मीदारी प्रथा में हुए परिवर्तनों में झलकता है। पिछली शताब्दी में पोमेस्टिया एक ईकाई थी जिसका उपयोग चाहे जीवन पर्यन्त ही हो, पोमेस्टिक को प्रदान किया जाता था जो प्राय: सैनिक कर्मचारी होता था,[1] जो राज्य के लिए निश्चित सेवा कार्य करता था और कभी कभी अर्धदासों की मदद से भी, जो संख्या में बहुत होते थे, इस प्रकार का कार्य करता था। किन्तु सामान्यत: वह स्वतन्त्र किसानों की सहायता से ही खेती करता था। किन्तु सत्रहवीं शताब्दी के दौरान विदेशी व्यापार आरम्भ होने पर एक नई आर्थिक पद्धति चालू की गई और कृषि से सम्बन्धित आर्थिक व्यवस्था का महत्व कम होने लगा। युद्धों ने रूसी प्रादेशिक अश्वारोही सेवा के यश को कलंकित कर दिया और परिणामस्वरूप पदाति और अश्वारोही सेवा की नियमित बटालियनों में भाड़े के सैनिक भर्ती करके भी वृद्धि करनी पड़ी।[2] इस प्रकार पामेसिया का सरकारी नौकरी से सम्बन्ध टूट गया और पामेस्टिक पैतृक भू स्वामी बन गया। उसकी मिलकियत में चूंकि खेतीहर किसान वास करते थे, जिनमें से कुछ उसके ऋणि थे इसलिए वह हर जगह अपने दास बनाने लगा। यह सत्य है कि पीटर महान ने राज्य सेवा और भूमि के पुराने सम्बन्ध पुन: स्थापित कर दिये किन्तु इस दौरान रूस में अर्ध-दासप्रथा स्थायी संस्था बन चुकी थी। यह सैनिक व्यवस्था में किए गए परिवर्तनो का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक परिणाम था जिसने राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति को सम्भव बना दिया। यह कहा जा सकता है कि इस काल के अधिकांश रूसी इतिहास को आन्तरिक विकास के फलस्वरूप नहीं बल्कि बाहरी दबाव के परिणामस्वरूप स्पष्ट किया जा सकता है।

तुर्की का संविधान

यूरोप में तुर्की के संविधान की घोषणा पन्द्रहवीं शताब्दी में की गई थी। मोहम्मद द्वितीय द्वारा इसकी व्याख्या, 'कानूननामे' या मौलिक कानून में की गई. और मुख्यतः इसी आधार पर सत्रहवीं शताब्दी में तुर्की की व्यवस्था चलती रही।[3]

---

1 निलर, पूर्व उदघृत 47–8।

2 वही, 72–3।

3 ल जोंकरे, हिस्तोरे द ल एम्पायर आ-टोमन, अध्याय 9 एण्ड जिकासन, गेसचीचेट देस ओसमेनीशन रीय्स, 3, अध्याय 9,।

संविधान के अन्तर्गत चार गुह्य संख्या थी और वहां के मुख्य पदाधिकारी ग्रांड-बजीर, काजी अस्कर या न्यायाधीश, दफ्तरदार या वित्तमंत्री, और निचन्दजी या राजसचिव (Secretary of state) थे। ग्रांड वजीर मुहरों का अविरक्षक था और पश्चिमी देशों के चांसलर के समकक्ष व्यावहार करता था। सत्रहवीं शताब्दी में क्यू-प्रिली वंश ने योग्य और औजस्वी वजीर प्रदान किए। प्राच्य देशों में प्रचलित प्रथा के अनुसार धर्म और विधिवेत्ता का मिश्रित अर्ध–धार्मिक पद ग्रांड मुफ्ती उलमाओं के समूह के पास था। ग्रांड मुफ्ती केवल प्रधान धार्मिक उच्चधिकारी ही नहीं[1] वरन् 'विधि सम्बन्धी तमाम संदिग्ध प्रश्नों का प्रवक्ता' भी था। उलेमाओं में से ही सरकारी कर्मचारी, मजिस्ट्रेट, और अध्यापक नियुक्त किये जाते थे जिन्होंने व्यावसायिक वर्गों में धर्म प्रचारकों का प्रभुत्व बनाये रखा। उनकी पदोन्नति अध्ययन और परीक्षा के आधार पर संगठित थी। तुर्की की न्याय पद्धति में अपील करने की व्यवस्था नहीं थी क्योंकि उनकी धारणा के अनुसार जब मुकदमें का एक बार फैसला हो जाता तो उस पर दूसरी बार विचार नहीं किया जा सकता था।

राइकाट[2] ने लिखा है, "यदि कोई व्यक्ति गम्भीरता से तुर्की दरबार की रचना पर ध्यान दे तो उसे वह एक कारावास और दासों का मजमा दिखाई देगा। ये नाविक-दासों से इस बात में भिन्न थे कि आभूषणों को अधिक पसन्द करते थे और ऊपरी तौर पर तड़क भड़क रखते थे। यदि कोई व्यक्ति समूचे तुर्की सरकार के ताने-बाने पर ध्यान दे तो उसे वह दासता का ऐसा जाल प्रतीत होगा कि यदि उनमें से कोई स्वतंत्र प्रतिभाशाली व्यक्ति की संतति दिखाई दे तो यह आश्चर्य की ही बात होगी।" ग्रांड सेगयनोर (Grand Seignior) दास से उत्पन्न व्यक्ति है। यही लेखक अफसरों के जल्दी जल्दी तबादलों को तुर्की राज्य के लिए हितकारी तरीका मानता है इसीलिए तुर्की के संवैधानिक इतिहास में जल्लाद का महत्व है। कहा जाता है कि तुर्की में 72 धार्मिक मत थे,[3] किन्तु सर्वसाधारण भाग्य में विश्वास करता था, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति का भाग्य उसके माथे पर लिखा रहता है। जीवन की अनिश्चितता होने के कारण कलाओं का अभ्यास नहीं किया जाता था। इसलिए तुर्क लोग भविष्य के लिए दस वर्ष से अधिक की योजनाएं नहीं बनाते थे।

---

1 राइकार, **दि मेकजिम्स आफ टर्किश पोलिसी** (चतुर्थ संस्करण, 1675), 190।

2 **वही**, पृ० 16।

3 **वही**, पृ० 210।

सुल्तान के परमाधिकार

'कानूननामा' सुल्तान के भाईयों का वध करने की अनुमति देता था किन्तु 16 वीं शताब्दी के दौरान इस प्रथा में संशोधन कर दिया गया, इसके अनुसार 17 वीं शताब्दी में प्रत्येक सुल्तान इस कानून को अपनी इच्छानुसार काम में ला सकता था। सुल्तान से यह आशा की जाती थी कि वह उलेमाओं से परामर्श करेगा जिन्हें कानून और धर्म के आगार होने के कारण किसी भी प्रस्ताव के बारे में सलाह देने का परमाधिकार था, इसके अतिरिक्त सुल्तान के पास सम्पूर्ण शक्तियां थीं। मुराद चतुर्थ जैसे महान् व्यक्ति वाले सुल्तान स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करते थे। किन्तु सत्रहवीं शताब्दी के कुछ सुल्तान शारीरिक अयोग्यता के कारण स्वतः विचार करने में असमर्थ थे और इसलिए वे उलेमाओं की राय पर ही चलते थे या जैसा कि प्रायः होता था वे अपनी समस्त शक्तियां ग्रॉड वजीर को हस्तान्तरित कर देते थे।

सामाजिक वैमनस्य

विजेताओं ने विजित बलकान जातियों में कभी भी मिलने का प्रयत्न नहीं किया व उन्हें विजेन्टाइन प्रशासन की निकृष्ठतम विशेषताओं को कायम रखने दिया और स्वयं अपनी धार्मिक और सामाजिक विशेषता पर बल देते रहे। उदाहरणार्थ, सूफिया में यहूदी और ईसाई दोनों को अपने-अपने दरवाजे भूमि से तीन फुट ऊंचे बनाने के लिए बाध्य होना पड़ा ताकि तुर्की अश्वारोही [1] आसानी से उनके घरों को अस्तबल न बना सकें। तुर्की और यूरोपियनों में यदि कोई सामंजस्यता थी तो वह केवल दुष्टता के रूप में देखी जा सकती है। फिर भी आटोमनो ने ईसाई बन्दियों के पुत्रों को जैनीसरी की प्रसिद्ध पल्टन बनाने की ट्रेनिंग दी जो तुर्की सेना की स्तम्भ थी। अनेक ईसाइयों के वंशजो ने तुर्की सिविल सर्विस में उच्च पद प्राप्त किये।

तुर्की की अवनति का खूदजी बेग द्वारा विश्लेषण

यह याद रखना चाहिये कि यूरोपीय तुर्की के साधन फारसी सीमा क्षेत्र की रक्षा करने में नष्ठ हो गए थे। इन सीमा क्षेत्रों ने तुर्की का भाग्य निर्णित करने में वही कार्य किया जो स्पेन में फ्लेमिश सीमा क्षेत्रों ने किया था। धार्मिक और सैनिक राज्य होने कारण जैसे ही दोनों तत्वों में से एक तत्व कमजोर होने लगा, तुर्की का पतन आरम्भ हो गया, वास्तव में यह तो ग्रांड वजीरों की शक्ति और सैनिक योग्तया के कारण ही एक सूत्र में रखा जा सका था। लैपेन्टों की पराजय और

---

1 **ट्रेवल्स आफ पीटर मुंडी** (स० टेम्पिल डेक्लूट सोसायटी) 1,152।

तेजस्वी सुलेमान की मृत्यु के पश्चात् तुर्की की प्रतिष्ठा गिरती ही गई। इस अवनति की समीक्षा रिसाला[1] या रिपोर्ट में दी गई है जिसे तुर्की के तथाकथित मोंटेस्क्यू, खूदजी बेग ने सुल्तान मुराद चतुर्थ को भेंट की थी। इस विचारशील और विवेकी तुर्क ने पतन के जो कारण दिये हैं उनमें से पहला कारण वह परम्परा है जिसके कारण सुल्तान ने जनता को दर्शन देना बन्द कर दिया और अपने आप को विलासिता में लिप्त कर लिया। दूसरा कारण साम्राज्य में सर्वोच्च पदों पर अपने पिट्ठुओं की नियुक्ति करना बताया है, तीसरा, सार्वजनिक कार्यों पर अन्तःपुर का बढ़ता हुआ प्रभाव, चौथा, अल्पवयस्कों और स्त्रियों द्वारा जो सैनिक सेवा नहीं कर सकते थे, सैनिक जागीरें प्राप्त करना, और पांचवां, तुर्कों और यहूदियों को जैनीसरियों की पल्टन में भर्ती करना, ताकि उन्हें उसके सदस्य होने के कारण सामाजिक सुविधाएं प्राप्त हो जाएं। अन्तिम कारण जिससे खूदजीबेग के परिवर्तन विरोधी मन को बहुत धक्का लगा, यह था कि चिरपरीक्षित तुर्की प्रथा, जिसके अनुसार सुल्तान के छोटे भाइयों को जल्दी से जल्दी मार दिया जाता था, त्याग दी गयी। अब इसके विपरीत उन्हें बहुधा जीवित रहने दिया जाता था, जो परिणामस्वरूप षड़यंत्रों के केन्द्र बन जाते थे।

पतनोन्मुख तुर्की

किन्तु इतना होने पर भी आटोमन साम्राज्य के सैनिक साधन हेय नहीं थे और इस पतनोन्मुख समय में भी तुर्की पश्चिमी कूटनीतिज्ञों के अनुमानों के विपरीत बहुत समय तक जीवित रहा।

---

1 खूदजी बेग का रिसाला तुर्की के पतन के कारणों की व्याख्या करने के स्थान पर विभिन्न उदाहरणों का वर्णन करता है।

अध्याय 2

फ्रांसीसी राजतंत्र की पुर्नस्थापना
(1598–1610)

हेनरी चतुर्थ

17 सितम्बर, 1595 को हेनरी आफ नेवारे के दो दूतों-दयूपेरां और दोसाने पोप क्लीमेन्ट अष्टम से अपने स्वामी के दोषों के लिए क्षमा याचाना की। पादरियों के न्यायालय में प्रधान पादरी के सम्मुख झुक कर दोनों प्रार्थियों ने, मिजरेर (Miserere) स्तोत्र का उच्चारण किया तथा पोप ने अपनी छड़ी से उनके शरीर को स्पर्श कर क्षमा प्रदान की। हेनरी वहां उपस्थित नहीं था अन्यथा लीग के युद्ध एक नये कैनोसा के रूप मे समाप्त होते हुए प्रतीत होते। पोप के छड़ी स्पर्श पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राजकीय प्रतिनिधियों में से एक ने कहा, "ऐसा लगा जैसे एक चूहा मेरे कन्धों पर से जा रहा हो।" [1] यद्यपि बूशे (Boucher) जैसे धर्म प्रचारकों ने यह घोषित कर दिया कि ईश्वर भी स्वधर्म-त्यागी हेनरी को उसके पापों से मुक्ति नहीं दे सकता, तो भी पोप के पापमुक्ति समारोह ने बहुत से ऐसे लोगों की आत्मा को शान्ति दी जो यह जानते थे कि बूर्बा नरेश का धर्म परिवर्तन निष्कपट नहीं है। इस प्रकार आड्वरी और आवबे द्वारा आरम्भ किया गया कार्य पूर्ण हुआ। शेष लीगियों को कटु उक्तियों (Satire Me'nippe'e) की सहायता से उपहास द्वारा–जो फ्रांस के सार्वजनिक जीवन में सबसे प्रभाव शाली अस्त्र था—पूर्णतया बदनाम कर दिया गया। अभी ऐसी आशंकाएं थीं कि एक ह्यूजनो जो राज्य के लिए कैथोलिक बन गया था, शायद हृदय से अब भी ह्यूजनो हो, जैसा कि किसी ने बड़े ही अर्थ पूर्ण ढंग से कहा था–'जेब में अब भी मछली की गन्द है।' किन्तु फ्रांसीसी लोग उस समय अपने धार्मिक विभेदों को मिटाने के लिए और ऐसे शासक का जिसने पहले ही अपने वीरता और साधनों के असाधारण प्रमाण दे दिये हों, स्वागत करने के लिए तैयार थे।

चरित्र

उन संकटपूर्ण वर्षों में हेनरी ने जो राजकीय बूर्बा परिवार का पहला व्यक्ति था और जो सिंहासन के लिए युद्ध कर रहा था, यह सिद्ध कर दिया कि वह असाधारण प्रतिभावन है। हेनरी 43 वर्ष का मझले कद का व्यक्ति था। दीर्घकालीन युद्धों ने उसके शरीर को अनुशासित कर दिया था। उसका मस्तिष्क उन व्यक्तियों के सम्पर्क

---

1 इन्स्ट्रक्शन्स डोनेस अक्स एम्बासेडर्स द फ्रांस (रोम) से उदघृत।

से विशाल हो गया था जो उसके दरबारी होने के पूर्व उसके साथी रह चुके थे। हेनरी अब अपने नौकरों मे दृढता पूर्वक आज्ञा पालन करवाता था और अपनी आकर्षक सरलता से अपने शत्रुओं को भी निरस्त्र कर देता था। स्पष्ट रूप से विषयासक्त होने पर भी उसने अपनी असफलताओं को, पाखण्ड द्वारा, अधिक विषाक्त नहीं बनाया। विचारों की एकाग्रता के कारण वह अपने भाषण में खरी और स्पष्ट बात करता था। निःसन्देह उसके पत्र आज भी अपनी निष्कपटता और स्वाभाविक सरलता के कारण हृदयगाही हैं।[1] रोचकता, कल्पनाशक्ति, बुद्धिमता, और व्यावहारिक ज्ञान उसके ऐसे गुण थे जिन्होंने उसे अपने समय का सर्वोत्तम शासक और फ्रांस के राजाओं में सबसे अधिक लोकप्रिय बना दिया। उसका विचित्र जीवन वृत रोमाण्टिक था और उसकी मृत्यु दुःखद थी। उसकी रुचियां बोर्जुआ थीं। यूरोप में वह श्रेष्ठ था। यद्यपि वह एक आदर्शहीन पति था तथापि पिता के रूप में उसमें अनेक सद्गुण थे। उसके सम्मुख अत्यन्त गम्भीर कार्य थे। वह विनोदी स्वभाव का था। अपने इन गुणों के कारण हेनरी चतुर्थ महान् राजा होते हुए भी मानव था। 'गे सिन्स ग्रिस एन डेहोर्स, मैस टाउट डोर एन डेडान्स'[2] यह घोषित करने का उसका विशिष्ट ढंग था कि यद्यपि व्यावसाय से वह राजा था तथापि उसमें व्यक्ति को समझने की योग्यता व सहानुभूति थी।

नेण्ट्स राजघोषणा (Edict of Nates)

हेनरी चतुर्थ के शासन में स्थिरता तब से समझनी चाहिए जब फ्रांस और स्पेन के मध्य वरविन्स (Vervins) की संधि हुई (2 मई, 1598) और जिसके फलस्वरूप पिकार्डी (Picardy) से स्पेन की सेना पीछे हटा ली गई। इससे कुछ दिन पूर्व नेण्ट्स की राजघोषणा पर (13 अप्रेल) हस्ताक्षर हुए जिसके अन्तर्गत ह्यूजनो को अधिकतम सुविधायें दी गईं। 16 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में फ्रांसीसी प्रोटेस्टेन्टों ने धीरे-धीरे राज्य के अन्दर अपना एक राज्य बना लिया था। उनकी अपनी सेना थी, अपना संगठन था, और अपनी विधान सभायें थीं। उन्हें अपने शहरों की चहारदीवारी के अन्दर, अल्पसंख्यकों को निकालकर एक रूपता लाने की सुविधा प्राप्त थी। गृह युद्ध ने इस शक्तिशाली संस्था को और दृढ़ बनाया। इसलिए हेनरी का प्रथम कार्य इस सैनिक संस्था के साथ, जिसका वह स्वयं भी कभी नेता रह चुका था, समझौता करना था। नेण्ट्स की राजघोषणा ने ह्यूजनों को राज्य के प्रत्येक भाग में धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान कर दी और उन्हें फ्रांस के

1 न्यूलेक नोइलाक में इनका अच्छा संग्रह है, **हेनरी चतुर्थ, रेकान्ते पार लुई मेम**।

2 पीयरे स्टोइल कृत **मेमोयर्स जोरनेक्स**, 7,138।

इर्द–गिर्द, पन्द्रह मील का क्षेत्र छोड़ कर, उन समस्त स्थानों में जहां उनका मत पिछले दो वर्षों में स्थापित हो चुका था, अपने धार्मिक विश्वास का उपभोग करने के अनुमति दे दी। राज्य के मंत्री और अधिकारी दरबार में उपस्थिति के दिनों में भी संशोधित धर्म का अपने घरों मे इस शर्त पर पालन कर सकते थे कि वे अपने द्वार बन्द रखें और स्तोत्रों का उच्चरण इतने जोर से न करें जिससे कि दूसरो का ध्यान आकर्षित हो। प्रोटेस्टेन्टों को भी वे नागरिक अधिकार प्रदान कर दिये गये जो कैथोलिकों द्वारा उपयोग में लाये जा रहे थे। ऐसे मुकद्दमों का निर्णय करने के लिये जिनमें ह्यूजनों लोग सम्मिलित थे, मिश्रित कमेटियां (Chambres– mi–Parties) बनाई गई, जिनका संयोजन पेरिस, बोर्डियो, और ग्रेनोबल की संसदों की महायता के लिये किया गया। भविष्य में सभी प्रशासकीय और अधिकारी पदों के द्वार प्रोटेस्टेंटों के लिये खोल दिये गये। पादरियों की और प्रतिनिधियों की सभाओं सहित उनकी पृथक संस्था को वैध रूप में स्वीकार कर लिया गया। इसके साथ-साथ उन्हें पांच वर्ष के लिए लगभग 100 चहारदीवारी वाले कस्बों पर अपना प्रभुत्व रखने की अनुमति दे दी गई, साथ ही इन कस्बों की सुरक्षा का प्रबन्ध भी उन्हीं को दे दिया गया। इनमें ला रोशेल(La Rochelle), मोंटाबां (Montauban) और मौंटपैलियर (Montpellier) [1] के महत्वपूर्ण गढ़ भी सम्मिलित थे। इन कस्बों में सेना का खर्च राज्य द्वार वहन किया जाता था। अन्त में इस राजघोषणा को सतत और अटल घोषित किया गया। 1629 तक ह्यूजनों लोग सशस्त्र व स्वतन्त्र अल्पसंख्यक एवं 1685 तक एक शांतिप्रिय तथा परिश्रमी धार्मिक जाति बने रहे।

राजघोषणा का उद्देश्य

जिस समय सहिष्णुता प्रायः अज्ञात थी उस समय धार्मिक स्वतन्त्रता देने वाले एक व्यापक कानून के रूप में नेण्ट्स की राजघोषणा सम्भवतः इतिहास में अद्वितीय है। इस घोषणा के अन्तर्गत ह्यूजनों को धार्मिक और राजनैतिक दोनों प्रकार की स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गई थी जो यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि यह घोषणा उदार भावनाओं से परिलिप्त थी। किन्तु यह याद रखना चाहिये कि इसके पीछे एक उद्देश्य छिपा हुआ था। यह विचार कि राज्य में पूर्णतया धार्मिक एकरूपता होनी चाहिए राजनीतिज्ञों और राजनीतिक सिद्धान्तियों द्वारा इतने व्यापक रूप से स्वीकार किया जा चुका था कि इसका विवरण देना अनावश्यक है। बल प्रयोग ह्यूयजनो में परिवर्तन लाने में असफल रहा था, तब क्या क्षमाशीलता सफल नहीं हो सकती थी? यह आशा सदैव बनी रहती थी कि 'कृत्रिम

1 लेविसे कृत **हिस्ट्री द फ्रांस**, 6,1, अध्याय 9।

धर्म सुधार' (Religion Pretendue Reformee) की व्यवस्था करने वाले अपने साधनों के दोषों को समझ लेगें और कृतज्ञतापूर्वक सबके साथ मिल जायेंगे। जब यह आशा निरर्थक सिद्ध हुई और ह्यूजनों अपने विश्वास में पहले से भी अधिक दृढ़ होते दिखाई दिये तो कानूनी छल-कपटपूर्ण व्यवस्थायें की गई, परिणामस्वरूप राजघोषणा के भ्रमोत्पादक विश्लेषण किये गये जिन्होंने उसकी समाप्ति के पूर्व ही उसके महत्व को नष्ट कर दिया। किन्तु कुछ समय के लिए फ्रांस के प्रोटेस्टेन्ट सुरक्षित हो गये, गृहयुद्ध बन्द हो गये और तीस वर्ष से अधिक के संघर्ष और अराजकता के पश्चात् हेनरी चतुर्थ ने शान्त किन्तु श्रान्त फ्रांस पर शासन करना आरम्भ किया।

हैनरी की शासन-विधियां

फ्रांस में पूर्व स्थिति स्थापित करने तथा मंत्रियों की नियुक्ति द्वारा हेनरी ने यह दर्शा दिया कि जहां वह अपने पुराने मित्रों को पुरस्कृत करने के लिये तैयार रहता था वहीं वह पुरानी शत्रुतायें भुलाने को भी तैयार है। उसके मन्त्रियों में विलेराय (Villeroy), जीनिन (Jeannin), और वलर्स (Villars) पुराने लीगी थे। वे ह्यूजनो, सल्ली (Sully), लेस्डीगिवयर्स (Lesdiguieres) और आलीविए द सेरे (Olivier de Serres) के सहयोगी थे, हठी स्वभाव वाला डुप्लेसिस मोर्ने (Duplessis Mornay) भी, जिसने हेनरी के सशपथ त्याग का विरोध किया था, सामूर (Saumur) के राज्यपाल के पद का कार्य करता रहा। कार्यकारिणी की कौंसिल में राजा भी होता था। यह कौंसिल स्पष्टतया पृथक न थी तथापि यह तीन रूपों में विभाजित थी—प्रीवी कौंसिल, कौंसिल देताए दे फिनांस, (Gonseil Prive, Conseil d' etat et des Finances) और कौंसिल पूर ला दिरेक्शिओं द फिनांस (Conseil Pour la direction des Finances) जिसमें से अंतिम दूसरी परिषद पथ प्रदर्शन के लिए आंकड़े तैयार करती थी। यद्यपि नाम मात्र के लिए परिषद में सभी बड़े बड़े सरदार और उच्च पादरी सम्मिलित हो सकते थे, तथापि व्यावहारिक रूप में हेनरी ने प्रभावशाली सभासदों की सख्या घटाकर लगभग एक दर्जन कर दी थी जिसमें बिलीवरे (Bellievre), सिलरी (Sillery) (जो 1607 में चांसलर हो गया), महान् वित्तमन्त्री सली (Sully), शैटूनोफ (Chateauneuf) और प्रेजीडेन्ट जीनिन (Jeannin) सम्मिलित थे। एक अनौपचारिक कारोबार की कार्यकारिणी (Executive Council of affairs) राजा को सामान्य नीति के मामलों में सलाह देने के लिए चारों राज्य सचिवों की रिपोर्टों पर विचार करती थी। यद्यपि हेनरी का शासन निरंकुश था, किन्तु यह निरंकुशता बुद्धिमतापूर्ण और आडम्बर रहित थी [1] और इसके विस्तृत ब्यौरे का प्रतिपादन करने वाले ऐसे

---

1 बर्क कृत रिफ्लेक्शन्स आन द रिवोल्यूशन इन फ्रांस।

व्यक्ति थे जो केवल उसके निजी स्नेहभाजन मात्र ही नहीं थे। वहां लिट्स द जस्टिस (lits de Justice) नहीं थे किन्तु फिर भी पार्लियामेन्ट को उसकी राजघोषणाओं को पंजीकृत करना पड़ता था और यद्यपि बड़े कुलीनों को अवैतनिक कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यों से परे रखा जाता था तो भी राजा का संरक्षित अधिकार था कि वह कुलीन वंश के उन सदस्यों को जिनसे वह परामर्श करना चाहता हो, बुला ले। उसके राज्यकाल में स्टैट्स जनरल (States General) की एक भी बैठक नहीं हुई और असेम्बली आफ नोटेबल्स (Assembly of Notables) भी [1] केवल एक बार ही बुलाई गयी परन्तु दूसरी और प्रान्तीय एस्टेट का अधिवेशन कई बार बुलाया जाता था। भविष्य के लिए शंकाकुल बात यह थी कि **पे दे ता** और **पे दे' लेक्शिआं** (Pays d' Etats and Pays d' elections) के अन्तर का सर्वदा पालन नहीं होता था। हेनरी द्वारा नगरपालिका सम्बन्धी विशेषाधिकारों को कम करने और कस्बों के विधानों को एमियस के विधान (जहां का मेयर राज्य द्वारा मनोनीत होता था) के नमूने पर लाने की चेष्टा, उसके स्वेच्छाचारी कार्यों में सम्मिलित की जा सकती है।

हेनरी के विरुद्ध षड्यन्त्र

हेनरी ने रानी मारग्रेट आफ वेल्वाय (Marguerite of valois) के साथ रहना छोड़ दिया था तथा **गेब्रील दे स्त्री** के प्रभाव में था जिसके दो पुत्रों को वह औरस बनाना चाहता था जिससे कि वह उनमें से एक को राज्य का उत्तराधिकारी बना सके। ग्रेब्रील की 10 अप्रेल 1599 को अचानक [2] मृत्यु हो गई, समकालीन लोगों ने इस घटना को उन व्यक्तियों की कार्यवाहियों से सम्बन्धित बताया जो राजतन्त्र के हित में हेनरी को स्वयं से बचाने के इच्छुक थे। अगले वर्ष के अन्त में उसने मेरी द मेडिसी (Marie de Medici) से विवाह किया जिसने सितम्बर, 1601 में, डोफिन नामक पुत्र को जन्म दिया। तब भी अभाग्यवश उसने अपनी पुरानी स्नेहपात्र हेनरीटे द एन्ट्रेग्स (Henriette d' Entragues) और उसके कलहकारी सम्बन्धियों से भुक्ति प्राप्त न की क्योंकि अब हैनरीटे ने एक पुत्र को जन्म दे दिया था। यह सुना जाता था कि हेनरी ने उसे वचन दिया था कि यदि वह उसे एक उत्तराधिकारी पुत्र देगी तो वह उससे विवाह कर लेगा। अवैध पुत्र द्वारा असली (वैध) पुत्र को परे हटा देने की आशंका से एक वृहद् षडयन्त्र की रचना

---

1 1596 में रोएन में। इसके लिए देखिए सली, **मेमोयर्स एतसेजेस इकोनोमीज् द एस्टेट** (स० 1664) 1,17।

2 विस्तृत विवरण के लिए देखिये 'पीयरे एल' इस्टोइले कृत **मेमोयर्स जनक्सि,** 7,352,। उसका एक पुत्र व ड्यूक द वेंडोम था।

की गई, जिसमें कांस्टेबल मोटमोरेन्सी सम्मिलित था। बाद में बरगण्डी के गवर्नर बाइरन (Biron) और ड्यूक द बूइलां (Duc de Bouillon) जो फ्रांस में सबसे शक्तिशाली और असन्तुष्ट ह्यूजनो था, के नेतृत्व में इस षड़यंत्र ने भयंकर रूप धारण कर लिया। इस षड़यंत्र में सेवाय का चार्ल्स इमेन्यूअल भी सम्मिलित था। इस का दृढ़ उद्देश्य था हैनरी के शासन का सर्वनाश और प्रान्तीय गवर्नरों को पूर्ण स्वतंत्रता। ह्यूजनो के सामने यद्यपि डोफिन और दक्षिण-पश्चिम का अधिकार लेने का प्रस्ताव रखा गया, किन्तु उन्होने सामूहिक रूप से भाग लेने से इन्कार करके प्रशंसनीय काम किया, क्योंकि वे इसे फ्रांस में सामन्ती अराजकता की पुनः स्थापना का असन्दिग्ध प्रयास समझते थे। मार्च सन् 1602 तक हेनरी के पास सब तथ्य पहुंच गये थे।[1] बाइरन, जो उसी वर्ष गिरफ्तार किया गया था, जांच के लिए पार्लियामेन्ट के सुपुर्द कर दिया गया और जुलाई में उसका वध करवा दिया गया। कान्ट आव आवर्गने को, जो कि चार्ल्स नवम का अवैध पुत्र था और जो हेनरीटे की मां से उत्पन्न हुआ था, बचा लिया गया जिससे सर्वसाधारण लोगों में असन्तोष फैल गया। सामान्य जन उसके साथ की गई दयालुता की तुलना बाइरन को दिये गये सद्यः दण्ड से करते थे।[2] बोइलां भाग गया और बाद में जर्मन प्रोटेस्टेंटों के बीच में अपने आपको धार्मिक शहीद के रूप में प्रदर्शित करने लगा।

सली (Sully)

इस शासन में फ्रांस का मुख्यतया आर्थिक रूप में पुनर्जीवन हुआ। 16 वीं शताब्दी के पिछले बीस वर्षों की घटनाओं का संक्षिप्त सर्वेक्षण यह प्रकट करेगा कि यदि फ्रांस को यूरोप की राजनीति में पुनः प्रमुख भाग लेना था तो उसका पुनः निर्माण कितना आवश्यक था। कोई भी महान् अर्थशास्त्री और प्रशासक पुरातन राज्य की दूषित आर्थिक प्रणाली को सुधारने की चेष्टा करता परन्तु ऐसे प्रयास का अन्त निश्चित रूप से विद्रोह अथवा असफलता में होता। मौलिकता अथवा तेजस्विता दोनों ही समान रूप से घातक सिद्ध होते। भाग्यवश मेक्सीमिलियन द बेयून में जो मार्क्विस आव रोजनी (Marquis Rosny) था तथा जिसको आगामी पीढ़ियां ड्यूक आव सली के नाम से जानती हैं और जिस पर अपने देश के दिवालिया होने से बचाने का उत्तरदायित्व भी था, इन गुणों का अभाव था। वह आत्मसंयमी प्रोटेस्टेंट अपनी युवावस्था में सावधानी और मितव्ययता के गुणों के लिये प्रसिद्ध था। हेनरी जो अपने महान् नामराशि ट्यूडर की तरह दूसरों के

---

1 लेविसी कृत **हिस्ट्री द फ्रांस**, 6 भाग 2, अध्याय 2।

2 ल एस्तोले, 8, 41।

उन गुणों की प्रशंसा करता था जो उसमें स्वयं में नहीं होते थे, सली की कद्र करता था। सली की अपनी सम्पत्ति में, लीग के उपद्रवपूर्ण काल में ऊपरी आय के कारण, काफी वृद्धि हो गई थी। किन्तु वित्त अधीक्षक के नाते वह फ्रांस के इतिहास में शायद पहली बार यह दावा कर सकता था कि उसके बजट संतुलित थे। उसे जब कभी यह सन्देह हो जाता था कि हेनरी अपने व्यक्तिगत विलास के लिये धन की मांग कर रहा है तो वह उससे आयु में 6 वर्ष छोटा होने पर भी कभी-कभी उसके संरक्षक, यहां तक कि उसके शिक्षक, की भांति बड़ी कठोरता से उसे धन देने से इन्कार कर देता था।[1] सली वित्त अधीक्षक होने के साथ-साथ तोपखाने का ग्रांड मास्टर, भवन-निर्माण का मन्त्री और संदेशवाहक अध्यक्ष के पद भी संभालता था। इन विभिन्न कर्तव्यों में सामान्य बात यह थी कि प्रत्येक विभाग देश की सैनिक सुरक्षा को दृढ़ करने के लिये वाणिज्य, उद्योग और धन के कार्य में योग देता था। इस बहुमुखी प्रशासन में पुरानी सड़कें बनवाई गईं जिनके दोनों और पेड़ लगाये गये। जो पेड़ काट दिये गये उनके नाम किसानों ने बायरन रक्खे और जो खड़े रहने दिये गये उनके नाम रोजनी रक्खे। यातायात में सुधार होने से आन्तरिक वाणिज्य को प्रोत्साहन मिला और डाक-सेवा का कार्य और भी अच्छा होना सम्भव हो गया। सेना पहले से अधिक राष्ट्रीय हो गई। यद्यपि उसे शक्तिशाली बनाने के लिये स्विस और जर्मन भाड़े के सैनिक रक्खे गये। प्रभावपूर्ण कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ाकर लगभग एक लाख कर दी गई, कुलीनवर्ग में से ही अफसरों की नियुक्ति करने की प्रथा का अन्त कर दिया गया, एक पेंशन प्रणाली चालू की गई और पैरिस में एक सैनिक अस्पताल स्थापित किया गया। सीन और लोयर नदियों को ब्रियर नहर द्वारा जोड़ दिया गया, सेओन को लोयर नदी से मिलाने के कार्य का समारम्भ एक नहर द्वारा किया गया, इस नहर को भूमध्यसागर से मिलाने का उद्देश्य था। दूसरी ओर वोर्दियो नारब्रोन नहर द्वारा अटलान्टिक तक का मार्ग प्राप्त करने की योजना बनाई गई। यद्यपि ये विभिन्न योजनायें इस शासन में पूरी नहीं हो पायी तथापि सली द्वारा चलाये गए नये प्रशासन का ये एक भाग थीं।

उसकी अर्थ-व्यवस्था

वर्तमान प्रशासन पर दो रूपों में विचार किया जा सकता है: एक, उसके काल में विद्यमान धन के साधनों को बनाये रखने के उद्देश्य से और दूसरे धन के

---

1 उदाहरणतः देखिये सली कृत **मेमॅयर्स** (1664, संस्करण) 572, और **वही**, 3, पृ० 276 जहां सली को हेनरी यह वचन देता है कि वह जुए की प्रवृत्तियों को नियंत्रित करेगा।

नये साधन जुटाने के विचार से। इस बात को देखते हुए कि सली को कुछ सीमाओं में रहकर काम करना था, प्रथम कोटि अधिक महत्वपूर्ण है। उसने राजा और उसके ऐसे लालची तथा प्रभावशाली स्त्रीमुख गिद्धों के बृहत्दल, के बीच हस्तक्षेप करके राष्ट्रीय सम्पत्ति और साधनों की रक्षा की। यदि वह ऐसा न करता तो यह गिद्ध-दल हेनरी की उदारता और निर्बलताओं से लाभ उठाकर उसे विलासिता के गर्त में ढकेल देता। ऐसे लोगों के निवेदनों के उत्तर सामान्यतया वह अपनी अपेक्षा-पूर्ण दृष्टि और तात्कालिक व्यंग से देता। इस ढंग से उसने कितनी सम्पदा बचाई इसका अनुमान जेम्स प्रथम और फिलिप तृतीय द्वारा अपने दरबारी स्नेहपात्रों पर लुटाई गई प्रभूत धनराशि के स्मरण से लगाया जा सकता है। सली को घरेलू बजटों में शाही रनवास के लिए धन का प्रबन्ध करना पड़ता था, किन्तु उनके सम्बन्धियों के इस प्रकार के व्यय की वह अनुमति नहीं देता था। इसके अतिरिक्त उसने आय के उन बहुत से मूल्यवान साधनों को पुनः खरीद लिया जो कि गृह युद्धों के समय उनकी वार्षिक आय से कुछ अधिक मूल्य में और कभी-कभी कम मूल्य में भी बंधक रख दिये गये थे। इन साहूकारों में महारानी एलिजाबेथ, पैलेटाइन का इलेक्टर, टस्कनी का ग्रांड ड्यूक और गणतंत्रात्मक वेनिस और स्विट्जरलैंड जैसे शक्तिशाली, सामर्थ्यवान व खतरनाक विदेशी भी थे। यही नीति सामन्तों तथा राजा के अविच्छेद्य अधिकारों के लिए जो बहुत सस्ते में ही दे दिये गये थे, अपनाई गई, और इस प्रकार कारागारों के गवर्नरों और रजिस्ट्रारों आदि बहुसंख्यक स्थानीय पदाधिकारियों को अपने पद अधिक मूल्यों पर पुनः खरीदने पड़े। राजा के शाही एवं जमींदारी सम्बन्धी उन तमाम अधिकारों को जो दूसरों के अधीन कर दिये गये थे, पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न भी किया गया, किन्तु यह प्रयास असफल रहा क्योंकि अधीनस्थ अधिकारियों की बहुत बड़ी सख्या से इन्हें खरीदना पड़ता।

वित्तीय व्यवस्था का सरलीकरण

सली उस प्रथा को बन्द न कर सका जिसके अनुसार भूमि किसान को देने के बदले में उपज का कुछ भाग कर के रूप में लिया जाता था।[1] किन्तु उसने बीच वाले लोगों की सख्या घटाकर इसे सरल बनाने की चेष्टा अवश्य की। 1604 में उसने तमाम राजस्व को जो सामन्ती सहायता से मद में आता था, जागीर के रूप में परिवर्तित कर नीलाम करवा दिया और दस वर्ष की अवधि के लिए एक ही व्यक्ति को दे दिया। सली ने उन जागीरदार—कृषकों के उन्मूलन की चेष्टा की जो शोषण

---

1 मुख्य अपवाद 'टेली' था।

और बेइमानी के लिये सबसे अधिक कुख्यात थे।[1] 1597 में कुख्यात व्यक्तियों के कुकर्मों की जांच करने के लिये एक न्यायिक आयोग स्थापित किया गया, परन्तु उन्होंने हेनरी को फुसलाकर उनसे एक बड़ी धनराशि उधार में लेने के लिये राजी करके विपत्ति को फौरन ही टाल दिया। इस कर के बदले में हेनरी ने आयोग तोड़ दिया। अब उन्होंने अपने अधीनस्थों से मुक्तिधन (ranson) वसूल किया और वह भी इतनी सफलता से कि उन्हें इस सारे सौदे में लाभ रहा। किन्तु सली ने ऐसे परान्नजीवी लोगों पर, जो देश का रक्त चूस रहे थे, अपने आघात जारी रखे जिसके परिणामस्वरूप हेनरी के शासन के अन्त तक उनकी सख्या बहुत कम रह गई। इसी प्रकार उसे राष्ट्रीय जीवन-वृत्तियां[2] (Rentes) की संख्या में भी सुधार करने के प्रयत्नों में सीमित सफलता प्राप्त हुई। इसकी भी कोई नियमित प्रणाली न थी, ब्याज की दर समान न थी। जहां होतेल-द-विले (Hotel de ville) जो इस धनराशि का कुछ भाग देता था, सस्ती दरों पर व्यापार करता था, वहीं दूसरी ओर साहूकार अधिक कमीशन लेने का आग्रह करते थे। संदिग्ध भूस्वामियों की समाप्ति और ब्याज में सामान्य कमी की योजना ने पेरिस के अधिकारियों में ऐसी हलचल पैदा कर दी कि इस प्रस्ताव को छोड़ना पड़ा। तथापि सली ने भंडार के बड़े भाग को कम से कम धन द्वारा छुड़ा कर कुछ मितव्ययता लाने में सफलता अवश्य प्राप्त की। इस राष्ट्रीय उपनिधि से प्राप्त लाभ सदैव स्थायी उधार खाते में रहा।

उसके बजट

सली के सुधारों की इस प्रथम कोटि में वह व्यवस्था और दैनिक कार्यक्रम भी आता है जो उसने अपने निजी दफ्तर के कार्य संचालन में लागू किया। वह स्वयं आदेशों से बाहर (Wielding the quill) नहीं जाता था और उसके क्लर्क उसका आतंक मानते थे। उसने ध्यान से सारी उस वित्तीय प्रणाली का सविस्तार अध्ययन किया, जिसके लिये जटिल शब्द का प्रयोग बहुत उदारतासूचक है। नियमित रूप से कर्मचारियों को वेतन देने की प्रथा का आरम्भ होने से पहले ही उसने परिश्रम के साथ साथ प्रचुर मात्रा में निजी सम्पत्ति भी संग्रह कर ली थी। किन्तु वह स्वयं इस संग्रह का साधन राजकीय पुरस्कार बताता था, और तत्कालीन मापदन्डों को देखते हुए वह बहुत ईमानदार था। कार्यकाल में प्रवेश करने पर उसे बोध हुआ कि व्यय आय के 50 प्रतिशत से भी अधिक होता है और राष्ट्रीय ऋण तीन करोड़ लिवर से भी अधिक है। निःसन्देह 20वीं शताब्दी के बजटों की तुलना

---

1 सली, 3, 94।

2 सली, 2, 37 तथा 3, 24।

में ये आंकड़े बहुत तुच्छ प्रतीत होते हैं, किन्तु वे उस समय भयङ्कर लगते होंगे जबकि फ्रांसीसी राष्ट्रीय साधन अविकसित थे और वित्तीय रहस्य (High Finance) समझ में नहीं आते थे। इसका श्रेय सली को है कि यद्यपि उसने ऋण कम करने की कोई नियमित योजना का आरम्भ नहीं किया तो भी उसने पूंजी को यथार्थ से अधिक नहीं आंका, तथा प्रत्येक वार्षिक व्यय के साथ आय का सन्तुलन करने का उद्देश्य सामने रखा। उसने पहले 1598 में और फिर 1600 और 1602 में **'टेलो'** को कम करने में भी सफलता प्राप्त की। यद्यपि ये सुविधायें कायम नहीं रखी जा सकीं,[1] फिर भी ये विशेष उल्लेखनीय हैं, क्योंकि सली को अनेक सुधार-योजनाओं में धन व्यय करना पड़ता था जिससे आय के मुख्य साधन फिर वापिस ले लिये जाएं और अन्ततोगत्वा राष्ट्रीयकोष को लाभ पहुंचे। नाममात्र के पद प्राप्त करके **'टेली'** देने से बचने वाले लोगों पर **'टेली'** लगाने के प्रयास में केवल अस्थाई सफलता मिली। सबसे बडी बात सली ने यह की कि उसने अनिश्चित सिद्धान्तों के स्थान पर, जिनकी आड़ में धोखा देना बड़ा सरल था, निश्चित बही-खाता प्रणाली चालू करके अपने अधीनस्थ कर्मचारियों द्वारा छल-कपट से रुपया उड़ाया जाना बन्द कर दिया। इस प्रकार उसने देश को दिवालिया होने से बचा लिया। इस प्रकार सन् 1609 में जब हेनरी यूरोपीय युद्ध छेड़ने वाला था तो बेस्टाइल में लगभग एक करोड़ बीस लाख लिवर की संचित धन राशि थी।

आय के नये साधन : 'पौलेट'

सुधारों की दूसरी कोटि में नये साधन निकाल कर राष्ट्रीय आय की वृद्धि करने की सली की युक्तियां[2] निराशापूर्ण ही रहीं मालूम होती हैं और यह धारणा निश्चित हो जाती है कि कोल्बर्ट की तुलना में सली एक परिश्रमी क्लर्क से कुछ ही अधिक अच्छा था। उसने **डोन ग्रेटुइट** (Don Gratuit) या पादरियों के प्रणय (Benevolences) को, जो 1585 से प्रयोग में नहीं लाए गये थे फिर से लागू कर दिये और इस प्रकार वृत्तियों (Rentes) को चुकाने का एक नया साधन ढूंढा। उसने **पे-द ग्रांद** (Pays de Grande) में सरकारी नमक के मूल्य में 30 प्रतिशत वृद्धि करके **'गैबल'** (Gabelle) नामक अन्यायपूर्ण कर बढ़ा दिया। और चूंकि इस कर से कुल वार्षिक आय का पांचवां भाग प्राप्त होता था, इसलिए इस युक्ति से राजकोष में काफी धन आने लगा। इसके अतिरिक्त ज्यों-ज्यों व्यापार बढ़ता गया त्यों-त्यों चुंगी की आय भी बढ़ती गई। पदों को उपविभाजित भी किया गया ताकि कई व्यक्ति उसमें सम्मिलित हो सकें, साथ ही पदों का मूल्य भी बढा दिया गया।

---

1 **वही**, 3, 26।

2 लेविसी कृत **हिस्ट्री द फ्रांस**, 6, 2, अध्याय 3।

इसके अतिरिक्त जब उन्हें स्थानान्तरित किया जाता था तो उनके वास्तविक मूल्य का साठवां भाग वार्षिक कर के रूप में उन पर लगाया जाता था। इस नये कर का नाम जो सन् 1604 में लागू किया गया, 'पोलेट' (Paulette) रखा गया, क्योंकि इस कर की वसूली 6 वर्ष तक चार्ल्स पाले (Charles Paulet) द्वारा की गई थी। इसकी अदायगी से न्यायिक और प्रशासकीय पद करीब करीब वंशानुगत बन गये। बूर्जवां के पास धीरे-धीरे धन की वृद्धि होने लगी और परिणामतः इन पदों के लिये आपस में अधिक प्रतियोगिता होने लगी। बढ़ते हुए मूल्यों से लाभ उठाकर भी राज्य अयोग्य उत्तराधिकारियों को उत्तराधिकार से वंचित करने का इच्छुक न था क्योंकि ऐसा करने से उसे क्रय मूल्य वापिस करना पड़ता था।[1]

हेनरी और कृषि

इसके अतिरिक्त जब हम यह देखते है कि सली ने अपने समय की अनेक सुसाध्य एवं साहसिक योजनाओं को उनके प्रति अपनी अरुचि अथवा अपर्याप्त सहायता से या तो अवरुद्ध कर दिया या नष्ट कर दिया तो उसके कार्य के निर्माणात्मक पक्ष की अल्पता और अधिक बढ़ जाती है। इस विषय में हेनरी अपने मंत्री मे अधिक प्रबुद्ध था। ले पेसा फ्रांके (Le Pasan Francais)[2] के मुखचित्र में एक किसान, जिसके पास उसका हेंगा और कुदाल पड़े हैं, हेनरी और उसके शाही शिकारी दल के सामने झुका हुआ चित्रित किया गया है, और पुस्तक[3] में प्रार्थी यह घोषित करता है कि, "हमने अब शान्ति के कुछ मीठे फल और अनेक वस्तुओं की पुनः प्रतिष्ठा जिन्हें सशस्त्र दलों ने नष्ट भ्रष्ट कर दिया था, चखना आरम्भ किया है।" उसने सरदारों को, पकते हुए अन्न के या अंगूरों के खेतों में से सवारी ले जाना मना कर दिया, उसने निर्यात अधिनियमों में एक लचीली नीति का प्रयोग किया और गेहूं के निर्यात का केवल कमी के दिनों में ही निषेध किया, उसने निर्यात अधिनियमों में एक लचीली नीति का प्रयोग किया। उसने अनियमित सेना का, जो तबाही ढहाती थीं; दमन किया, अशासकीय व्यक्तियों द्वारा हथियार ले जाना मना कर दिया, कुलीनों पर आश्रित लोगों द्वारा जोती जाने वाली भूमि 'कर'

---

1 'पोलेट' के प्रभावस्वरूप पद भी इस अर्थ में वंशानुगत हो गये, कि यदि न्यूनतम योग्यताएं पूरी करते हों, तो उत्तराधिकारी उसी वंश का व्यक्ति होगा। यदि उत्तराधिकारी न्यूनतम योग्यता पूरी न करता हो, तो राज्य द्वारा उस पद को, उसका मौलिक मूल्य चुका कर खरीद लिया जायेगा। व्यवहार में यह पद उस व्यक्ति को बेच दिया जाएगा जो न्यूनतम योग्यताएं पूरी करता हो।

2 1609।

3 पृष्ठ 11।

(Taile reelle) से मुक्त रखी गई, इस प्रकार उसे आशा थी कि कृषकवर्ग को अधिक सुरक्षा प्राप्त होगी और कुलीनवर्ग अपनी भूमि की काश्त में अधिक रुचि लेंगे। इससे भी अधिक हेनरी की रुचि फ्रांस के रेशम व्यावसाय को पुनर्जीवित करने की योजनाओं में थी जो दो ह्यूजनों–आलिवर डेसिरिस (Olivier de serres) और बार्थेलमी लेफमास (Barthelemy Laffamos) से सम्बन्धित थीं। कुछ मध्यवर्ती और दक्षिणी प्रान्तों में मल्बरी पेड़ों की खेती और रेशम के कीड़ों को पालने के प्रयोग किये गये, इनके लिए सामान (जिसमें एक सरकारी पाठ्य पुस्तक भी थी) सरकार द्वारा दिया जाता था। अनुभवी रेशम उत्पादकों का एक दल गांवों में जाकर प्रयोगात्मक शिक्षा भी देता था। दुर्भाग्यवश इस योजना का खर्च बढे हुए 'कर' (Taille) के रूप में किसानों को ही देना पड़ा। इस कर ने उस वर्ग को, इस योजना से विरक्त कर दिया जो भुखमरी की सीमा पर रहता था और लगातार सरलता से किसी भी नये कार्य के प्रति जो उनके लाभ के लिए आयोजित किया जाता हो, भाग्यवादिता का दृष्टिकोण अपना लेता था। सली यदि चाहता तो सुगमता से किसान को इस अतिरिक्त कर से मुक्त कर सकता था, किन्तु वह तो इस व्यवस्था के ही विरुद्ध था, वह रेशम व्यावसाय को वैभव विलासता का प्रतीक मानता था, तथापि इस शासन में इसका तात्कालिक लाभ नहीं के बराबर था, किन्तु इसका श्रीगणेश हो गया था। इस समय में उगाये हुए मल्बरी के पेड़ों से ही इस महत्वपूर्ण व्यावसाय का विकास आगे चलकर कोल्बर्ट द्वारा किया गया।

कुलीन और कृषि

17वीं शताब्दी में वैज्ञानिक कृषि की बात करना समय से बहुत पहले की बात थी। उन दिनों कृषि के उपकरण प्राचीन काल के थे और प्रायः लकड़ी से बनते थे, भूमि के गुणों का ज्ञान न था, भूमि के नीचे होने वाली शलजम जैसी मूल वनस्पति, का सभी जगह अभाव होने के कारण पशुओं को पतझड़काल में मारा जाता था और शिशिर ऋतु में भोजन करने के लिए उन्हें नमक लगाकर रखा जाता था। जब तक शल्ज़म की[1] खेती आरम्भ नहीं हुई, जैसी कि 18 वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में होती थी, तब तक शिशिर में पशुओं को आसानी से जीवित नहीं रखा जा सकता था, शलजम की खेती के पश्चात ही पशुधन में उन्नति सम्भव हो सकी, किंतु कृषि में राष्ट्रीय स्तर पर वैधानिक सुधार के लिये एक प्रज्ञात और देशभक्त जमींदार वर्ग का होना प्रथम आवश्यकता थी, परन्तु फ्रांस में उसका अभाव था। जब तक खेत सशस्त्र दलों और लुटेरे सरदारों की दया पर आश्रित थे तब तक

---

1 17वीं शताब्दी में शलज़म के उपयोग के सम्बन्ध में देखिये, प्रोथेरो कृत **इंग्लिश फार्मिंग पास्ट एण्ड प्रजेन्ट, पृ० 107।**

कोई सुधार सम्भव न था। आर्थरयंग [1] ने 1787 में लिखा था, "कोई भी विद्वान कुलीन (Grand Seigneur) किसी भी समय और किसी भी देश में सुधार योग्य भूमि के निरर्थक पड़ी रहने का कारण बता देंगे।" आलीवर डे सिरिस द्वारा लिखित **थिआत्र दा एग्रीकल्चूर ए मेसनेज दे शाम्प** पहली ऐसी पुस्तक थी जिसने ग्रामीण जीवन के शान्तिपूर्ण कार्यों में फ्रांसीसी कुलीनवर्ग की रूचि आकर्षित करने का प्रयास किया, यह पुस्तक हेनरी के हार्दिक अनुमोदन से प्रसारित की गई थी। किन्तु जनता ने इस पर बहुत कम ध्यान दिया। यदि ईश्वर ने सत्रहवी शताब्दी के फ्रांस को कुछ उत्सुक और वैभवशाली कृषक दिये होते, जैसे इंग्लैंड को 18 वीं शताब्दी में मिले थे, तो उसका इतिहास बहुत भिन्न होता, कुलीनवर्ग सुस्त और खतरनाक होने की अपेक्षा ऐसे व्यवसायों की ओर मुड़ जाता जो उनके और उनके आश्रितों के लिए लाभप्रद होते और जो प्रकृति की महान व स्थाई शक्तियों के[2] अधिक निकट होने के कारण रागद्वेषों का शमन करने में सफल होते। फ्रांसीसी भूमिदारों को अपने खेतों में केवल इतनी रूचि होती थी कि वे उनकी शिकारगाहें थीं जिनमें दुर्भाग्य से कभी कभी किसान भी उतना ही न्याय-संगत शिकार होता था जितना कि खरगोश। कोल्बर्ट की बाद की योजनाओं में भी कुलीनवर्ग से कोई सहायता नहीं मिली, अपितु उपाधिधारी भूमिधरों ने, जो वासार्य में रहने के लिए बहुत गरीब थे, अपनी जागीरों में रहकर उनसे बदला लिया। प्रख्यात जांच ने जो **ले ग्रांद जूर दा वेंन** (Les grands jour d Auvergne) के[3] नाम से प्रसिद्ध है (1664) यह रहस्योद्‌घाटन किया कि 'देहातों पर हुए अत्याचार' इतने भयंकर थे कि अंग्रेजी इतिहास की गाथाओं में भी उनकी समता नहीं मिलती।

निर्माता (Manufactures)

हेनरी को नये उद्योगों को चलाने में पूर्ण सफलता न मिलने का एक और कारण है। इसमें किसी सामुदायिक वर्ग का दोष न होकर प्रचलित आर्थिक सिद्धान्तों का त्रुटिपूर्ण होना था। यह बात यूरोपीय सामान्य विचारधारा का

---

1 **ट्रेवल्स इन फ्रांस** (सं० बैथाम–एडवर्ड्स), पृ० 64।

2 बल्कि ऐसे भी सुझाव थे, कि इस समय फ्रांस में चावल उगाया जाय। देखें, लेफीनाज कृत **रिकूसिल द से क्वी से पासा इन लासेम्बली द कोमर्स द पेन्स,** 1604। **इन आर्काइव्स कुरीकुसेस द ल हिस्तोरे द फ्रांस,** 14,242।

3 देखें अध्याय 7, फिलेट कृत **ला मिसरे एनटेम्प्स द ला फ्रांडे** में **ग्रांड्स** जोरस द्वारा इन गाथाओं का रोचक वर्णन किया गया है। सबसे अच्छा समकालीन विवेचन फिलेशर कृत **मैमोयर्स** में मिलता है (1665)।

अंग थी कि आर्थिक शक्तियों को आयोगों के आवेदन-पत्रों और राजघोषणाओं द्वारा नियंत्रित किया जा सकता था, तथा वे तमाम उद्योग जो प्रत्यक्ष रूप से देश की सैनिक शक्ति के प्रबन्ध में योग नहीं देते थे अरक्षणीय थे। 1601 में एक व्यापारमंडल की स्थापना की गई, जिसका नेता लाफमास (Loffemas) था। मण्डल ने मजदूरों के काम करने के घण्टे, शिक्षता (apprenticiship) की शर्तें, काम की उत्तमता और कारीगरी के पर्यवेक्षण के नियमन के लिए, कुछ प्रस्ताव तैयार किए और नये माल, जैसे शीशा, सोने का धागा, इस्पात, सन का कपड़ा (Linen) और दरियां आदि बनाने के लिए कुछ योजनायें बनाई जिन पर परिषद ने विचार किया। इन के लिये कानून तो बना दिये गये किन्तु वास्तविक प्रोत्साहन नहीं के बराबर था। फलस्वरूप सभी योजनायें धीमी पड़ गईं। इसके अतिरिक्त सली नये कामों को प्रारम्भ करने की भावना को निरूत्साहित करता था क्योंकि उसका मत था कि व्यापारिक उन्नति कृषि को हानि पहुंचा कर ही होती है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरनाक है। वह यह नहीं समझ सका कि चाहे माल का निर्यात हो या न हो, विलासी वस्तुओं के व्यापार को भी आर्थिक दृष्टिकोण से लाभप्रद सिद्ध किया जा सकता है। इस प्रकार उसने इस विषय में अपने समय की सामान्य विचारधारा को ही प्रकट किया। इस दृष्टि से सली कोल्बर्ट की अपेक्षा अधिक संकुचित प्रकृति का परिचय देता है। हेनरी के राज्य का आर्थिक इतिहास पूर्णफलों की प्राप्ति की अपेक्षा प्रायोगिक समारम्भों का इतिहास है।

हेनरी की धार्मिक नीति

अन्य क्षेत्रों में हेनरी चतुर्थ की नीति अनुसीमन और दूरदर्शिता के लिए प्रसिद्ध है। इस प्रकार यद्यपि उसके राज्य ने प्रति-धर्मसुधार आन्दोलन (Counter Reformation) में भाग लिया तो भी वहां कैथोलिक धर्म प्रतिक्रियावादी न होते हुए भी प्रबल बना रहा। हेनरी ने ट्रेण्ट कौंसिल (Council of trent) की अनुशासनात्मक आज्ञाओं को कभी स्वीकार नहीं किया, जो यद्यपि फ्रांस के पादरी-वर्ग द्वारा 1615 में विधिवत् स्वीकार कर ली गई थी। इसके विपरीत उसने 1603 में जैसुइटों को बुलाया और पार्लियामेण्ट और विश्वविद्यालय के विरोध के बावजूद उनका ला फ्लेश (La Fleche) में कॉलेज स्थापित किया। फ्रांस में जैसुइटों के सुपीरियर (Superior) काटन (Coton) के साथ हेनरी द्वारा पक्षपात करने पर किसी ने ताना दिया, "उसके कानों में रुई (Cotton) थी।" चूंकि तात्कालिक कैथोलिक इस विषय पर एक मत नहीं थे अतः काटन और उसकी सोसाइटी अपनी चतुराई और किसी सीमा तक आज्ञाकारिता के कारण संघर्ष से बच गये। हेनरी को कुछ स्पेनिश जैसुइटों द्वारा सिखाये गये इस सिद्धान्त का कि अत्याचारियों की हत्या कर देनी चाहिये, पूरा ज्ञान था। किन्तु उसका तर्क यह था

कि यदि स्पेन का राजा जैसुइटों की सेवाओं का प्रयोग कर सकता था तो वह क्यों नहीं कर सकता ।[1] सक्षेप में यह सोसाइटी राजनैतिक उलझनों से दूर रही तथा रावलेक (Ravaillac) के सर्वप्रचलित अभियोगों से बचते हुए, सन् 1762 में अपने निर्वासन तक सुव्यवस्थित रूप में काम करती रही, उस समय की उसकी गतिविधियों का इतिहास अभी तक अलिखित है ।[2] अपनी विशाल सहृदयता के अनुरूप हेनरी ने मालहब (Malherbe) को आश्रय देकर साहित्य का सरक्षण किया और पास्क्वे (Pasquier), लोयसू (Loyseau)[3] नथा देथू (De Thou) को आश्रय देकर विद्वता का । उसने प्रोटेस्टैण्ट विद्वान केसोबां (Casaubon) को फ्रांस में स्थायी रूप से रहने के लिए आमन्त्रित किया । पिएर पिथाउ (Pierre Pithou) का **कोड आव गैलिकन लिबर्टीज**[4] (Code of Gallicen Liberties) नामक ग्रन्थ उसके शासनकाल में प्रकाशित हुआ । उस शताब्दी का कोई भी अन्य नरेश तात्कालीन बहुमुखी एवं अनायास बौद्धिक क्रियाओं से इतना अधिक सम्बद्ध नहीं रह सकता था ।

लाइसो (Layseau)

इतिहास के विद्यार्थी के लिये, इन लेखकों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेखक, विधिवेत्ता चार्ल्स लाइसो (1566-1627) है जो अपनी **देस सीगन्योरीज** (Des Seigneuries 1608) और **दू डायट देस आफिसेज** (Du Dsiot des Offices, 1610) के लिये बहुत प्रसिद्ध है । **देस सीगन्योरीज** में सार्वजनिक और निजी प्रभुत्व में अन्तर बताया गया है, पिछला केवल निजी सम्पत्ति से सम्बन्ध रखता है, जबकि पहिला सार्वजनिक प्रभुत्व अर्थात् राज्य द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली सार्वजनिक प्रभुसत्ता से, जो केवल न्याय सिद्धान्तों के अनुरूप प्रयोग में लायी जा सकती है और इसीलिए वैयक्तिक मनोविचार के क्षेत्र से बाहर है । लाइसो प्रभुसत्ता को सम्पत्ति के अधिकारों से सम्बन्धित करते हुए बोदां के पद चिन्हों पर चल रहा था । किन्तु यह भयङ्कर मार्ग था, क्योंकि उन आरक्षणों से छुटकारा लेना जो बसालों ने लगाये थे सबसे आसान था । लाइसो के अनुसार इन आरक्षणों में कतिपय निम्न कानून समाहित होते हैं–ईश्वरीय कानून, न्याय के प्राकृतिक और स्थिर नियम, और राज्य के मौलिक कानून । लुई चौदहवें के राज्य में भी यह माना गया था कि कुछ मौलिक कानून होते हैं, किन्तु इनकी कभी भी स्पष्ट रूप से व्याख्या नहीं की गई थी और

---

1 देखिये अध्याय 1 ।

2 पी०एच० फास्वेरे द्वारा (1645) यह वर्णित किया गया है ।

3 देखिये अध्याय 1 ।

4 देखिये अध्याय 7 ।

व्यावहार में ये कभी-कभी तोड़ भी दिये जाते थे।[1] इन मर्यादाओं के अन्तर्गत लाइसो का राजा विधि निर्मित करने, मंत्री नियुक्त करने, संधि अथवा युद्ध घोषित करने तथा सिक्के ढालने का अधिकार रखता है। उसने यह भी प्रतिपादित किया कि शाही अधिकार के प्रतिनिधि मंत्री और मजिस्ट्रेट विशेष सम्मान के योग्य हैं, चाहे वे कितने भी नीच क्यों न हों, क्योंकि उनका अपमान राज्य का अपमान है। लाइसो पदों को परम्परागत करने और उनको धन के बदले में देने का काफी विरोध करता है। वह **पोलेट** (Paulette) की निन्दा करता है क्योंकि इसके लागू करने के परिणामस्वरूप कर्मचारियों पर से राजकीय नियन्त्रण समाप्त हो जाता है। वह फ्रांसीसियों की पदलालसा की भी कड़ी निन्दा करता है।

लाइसो के सिद्धान्त के खतरे

लाइसो के सिद्धान्त जो उदार तत्वों से हीन न थे, कुछ सीमा तक अनिश्चितता प्रकट करते हैं, क्योंकि वे राजशक्ति की निश्चित सीमाएं स्पष्ट नहीं करते, उनकी प्रवृति शाही अधिकारियों को अत्याधिक पवित्रता की ओर निर्दिष्ट करती है और वे प्रभुसत्ता को सम्पत्ति के अधिकारों के समकक्ष बनाकर लुई चौदहवें की पूर्ण अनुत्तरदायी निरंकुशता के लिये सुगम मार्ग तैयार करते हैं। प्रभुसत्ता में जागीरदारों द्वारा भाग लेने के अधिकार को वह स्वीकार नहीं करता। उसके मतानुसार शाही राजघोषणाएं पार्लियामेंट में पंजीकृत की जानी चाहिये तथापि वह यह स्वीकार करता है कि पार्लियामेंट उन घोषणाओं को रद्द करने या उनमें संशोधन करने की अधिकारिणी नहीं है। इस प्रकार लाइसो हेनरी चतुर्थ द्वारा व्यवहार में लाये जाने वाले सिद्धान्तों का अच्छा व्याख्याता कहा जा सकता है, लेकिन समकालीन विचारकों का सहयोगी होते हुए भी वह यह नहीं समझ सका कि यह सिद्धान्त, एक ऐसे राजा के हाथों में पड़कर, जो हेनरी के समान विनोदी एवं विवेकशील नहीं है उसे किस स्थिति तक ले जा सकता है। लाइसो इस युग के इतिहास में एक और बात देखने का दावा करता है। यह एक तथ्य है कि वह पुरातन राज्य के युग में उन इने गिने व्यक्तियों में से एक है, जिन्होंने कृषि सम्बन्धी श्रमिकों के पेशे को अपमानपूर्ण और लज्जास्पद दृष्टि से देखने का घोर विरोध किया। वह इस विचार का समर्थक था कि ऐसा श्रम स्वत: ही सम्माननीय है तथा श्रमिकों को समाज में अच्छा स्थान मिलना चाहिये। किन्तु दूसरी ओर उसका यह भी विश्वास था कि कारीगर (Artisans) लोग सामाजिक क्रम से सबसे अधम हैं और स्वस्थ शरीर वाले भिक्षुओं से केवल कुछ ही अच्छे हैं।

---

1 देखें अध्याय 1 व 7। इस मौलिक कानून के सम्बन्ध में कोई सरकारी वक्तव्य नहीं दिया गया था।

विदेशी भय

यद्यपि हेनरी का राज्य तुलनात्मक दृष्टि से अल्पकालिक रहा तथापि इस काल में महान् आर्थिक, सैनिक और बौद्धिक ढांचे की ऐसी नींव डाल दी गई जो 17वीं शताब्दी में समूचे यूरोप पर छा गई। यद्यपि यह एक शान्तिपूर्ण काल था, तथापि बुद्धिमान् प्रेक्षकों के मन में इस विषय में कोई सन्देह नही था कि समस्त यूरोप पर सङ्कट के बादल फिर मण्डरा रहे है और फ्रांस और आस्ट्रिया-साम्राज्य की पुरानी प्रतिद्वन्द्विता, जो बूर्बाँ और हेप्सबर्गों के झगड़े में परिणित हो गई थी धूमिल किन्तु अन्धकारमय पृष्ठभूमि के समान दिखाई देती थी यद्यपि हेनरी की मृत्यु से कुछ मास पूर्व यह अधिक स्पष्टता से प्रकट होने लगी थी।

हेनरी और सेवाय

वर्विन्स[1] (Vervins) की सधि (मई, 1598) ने चार्ल्स इमेन्युअल आफ सेवाय के मर्क्विस आफ सालुजो बनने के दावे को अनिर्णित छोड़ दिया था, जिसे या उसके बराबर किसी अन्य प्रदेश को वापिस देने का वचन उसने पेरिस की सधि (फरवरी, 1600) में दिया था। बाइरन के षड्यन्त्र से लाभ उठाकर सेवाय के ड्यूक ने जब अपने वचन को पूरा करने में विलम्ब किया तो हेनरी ने इसका उत्तर उसी वर्ष[2] अगस्त मास में फ्रांसीसी सेना द्वारा चैम्बरी पर अधिकार करके दिया। परन्तु इस भय से कि शत्रुतापूर्ण कार्य के बाद फ्रांस कहीं पीडमोंट पर आक्रमण न कर दे, पोप क्लीमेंट अष्टम ने, जो स्पेन के विरोधों से प्रभावित था, मध्यस्थ बनने का प्रस्ताव रखा फलस्वरूप 1601 में लियोंस की सन्धि पर हस्ताक्षर हो गये। फ्रांस को ब्रेसे, बुगे और जैक्स के छोटे प्रदेश, सालुजो के बदले में बराबर मान कर दे दिये गये और सेवाय के पास रोन नदी के पूर्व का एक छोटा सा भूभाग, जिससे स्पेनिश सेना सेवाययाई प्रदेश में से होती हुई फ्रेंच कोम्टे (Frencha Comte) में पहुंच सके, छोड़ दिया गया। इस प्रकार फ्रांस ने अपनी दक्षिण-पूर्वी सीमा पर एक मूल्यवान प्रदेश प्राप्त कर लिया, अब वे रुकावटें दूर हो गईं जिनके कारण उसे आल्प्स के दूसरी ओर मार्क्विजेटों पर अधिकार करने में कठिनाई हो सकती थी। इटली के लिए यह संधि स्पेन की अधीनता स्वीकार करने की पुष्टि थी।

---

1 हेनरी चतुर्थ एवं स्पेन के फिलिप द्वितीय के मध्य मई, 1598 में हस्ताक्षर हुए। स्पेन को चिकारड़ी में जीते हुए स्थान मिले जबकि फ्रांस ने केम्बराय को छोड़ दिया।

2 ई० रोट कृत हेनरी चतुर्थ, लेस स्यूसेस एत ला हाते इतेली, 78 एफ एफ।

हैनरी और स्विसः वेलेन्टाइन

शासन के शेष वर्षों में हेनरी तथा ड्यूक आव सेवाय के मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रहे। अब उसे इस बात का भय नही था कि ड्यूक स्पेनिश सेना को अपने प्रदेश में से गुजरने की अनुमति दे देगा। यदि हेनरी को स्विस केन्टनों की सहायता प्राप्त हो जाती तो वह मिलेनीज (Milanese) से आल्प्स के दर्रों में होकर फ्रेंच कोम्टे (जो तब स्पेनिश अधिकार में था) को जाने वाले मार्ग पर अधिकार करने की आशा कर सकता था और इस प्रकार वह स्पेन के अधीनस्थ उत्तरी इटली में अधिकृत प्रदेशों में निचले प्रदेशों (Low Countries) की शृखंला की महत्वपूर्ण कडी तोड़ सकता था। दिसम्बर 1601 में केन्टनों ने सोलियुर (Soleure) की डायट में फ्रांस के साथ अपनी पिछली सन्धि को दोहराते हुए हेनरी और उसके मित्रों की सेना को अपने देश में से मुक्त मार्ग देना स्वीकार कर लिया। ग्रिजनों ने 1603 में अपने प्रदेशों में सम्बन्धित वही रियायतें वेनिस को दे दीं। परिणामतः वेल्टेलाइन दर्रे [1] (Valleltine pass) पर अधिकार बनाये रखने और इटली को पूर्णतया स्पेन के लिये सुरक्षित रखने की दृष्टि से मिलान और फुअन्टेज (Fuentes) के गवर्नर ने लेक कोमों (Lake Como) के निकट एक किला बनवा लिया। अब आवागमन सेंट गोथर्ड के दर्रे की ओर से शुरू हो गया और ग्रिजन लोग अपने मित्र फ्रांस और वेनिस से सक्रिय सहायता प्राप्त करने में असफल होकर स्पेन की लगातार बढ़ती हुई धमकी के सामने अरक्षित रह गये। परन्तु वेल्टेलाइन का प्रश्न रिशेलू के समय तक गम्भीर नहीं बना। स्थूल रूप में, हेनरी की नीति इटली के प्रति घटित घटनाओं की प्रतीक्षा करने की थी, क्योंकि वह अभी निर्णायक कदम उठाने के लिये तैयार नहीं था। वेनिस और फ्लोरेन्स ने उसका संरक्षण स्वीकार किया, रोम के बड़े पादरी ने वेनिस [2] के साथ अपने झगड़े में उसकी मध्यस्थता स्वीकार की और एस्टे का वंश समाप्त हो जाने पर हेनरी की सहायता से फरैरा (Ferara) हथिया लिया। वैवाहिक संबन्धों के कारण सेवाय के साथ उसके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध और भी दृढ़ हो गये। परन्तु अपने पूर्वज चार्ल्स अष्ठम और लुई बारहवें की इटली की अल्पकालिक विजयों को ध्यान में रखते हुए और यह जानते हुए कि इटली की राजनीति में राष्ट्रीय आकांक्षाओं की अपेक्षा व्यक्तिगत अभिलाषा अधिक महत्वपूर्ण थी, हेनरी ने आल्प्स के दक्षिण में विशेष हस्तक्षेप न करके विवेक का परिचय दिया।

हैनरी एवं जर्मनी

16 वीं शताब्दी के फ्रांस की, कूटनीति ने जर्मनी के बहुत से राजाओं को

---

1 वेल्टेलाइन प्रश्न के हल के लिए देखिए अध्याय 4।

2 देखिये अध्याय 9।

अपना मित्र बना लिया, इस का श्रेय हेनरी की नीति को था। । अपने काल्बिनिस्ट एजेन्ट बोंगर्स (Bongars) के द्वारा उसने मोरिस आफ हैसे (Maurice of Hesse), इलेक्टर पेलेटाइन, और ब्रैन्डनवर्ग के इलैक्टर के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखे। हेनरी को राइन [1] के उस पार से भी काफी समर्थन मिल जाता यदि विद्रोह और निर्वासित वोइलिन के षड्यंत्र बाधक न होते। जर्मन स्वतंत्रता की रक्षा का वही सामान्य बहाना बनाकर उसने बबेरिया के मेक्सीमिलियन को साम्राज्य की उम्मीदवारी के लिए खड़ा होने के लिए फुसलाने का व्यर्थ प्रयत्न किया, दूसरी और **इवेन्जलीकल यूनियन** [2] जो जर्मन राजाओं द्वारा 1608 मे बनाई गई थी, जिसमें काउन्ट पेलेटाइन आफ न्यूवर्ग तथा ड्यूक आफ रूटेनबर्ग भी सम्मिलित थे, हेनरी को अपना संरक्षक समझती थी जिससे वह किसी दिन सहायता लेने की आशा कर सकती थी। जहां तक हेनरी का सम्बन्ध था वह इस आशा में था कि क्लीव–जूलिच प्रश्न [3] और गम्भीर रूप धारण करे। मार्च 1609 में इन प्रदेशों के स्वामी की मृत्यु हो गई। उत्तराधिकार के बहुत से दावेदारों में ब्रैन्डनबर्ग का इलेक्टर और काउंटपेलेटाइन आफ न्युबर्ग तथा बुल्फगेंग विलियम सबसे महत्वपूर्ण दावेदार थे। ये दोनों दिवगंत ड्यूक की बहनों के संबंधी थे। ये प्रदेश छोटे होने पर भी वैभवशाली थे तथा इनमें अधिकांश निवासी प्रोटेस्टेन्ट थे, इसके साथ-साथ सामरिक दृष्टि से भी यह प्रदेश अत्यन्त महत्वपूर्ण थे। क्योंकि बर्ग और जूलिच के दोनों दुर्ग राइन के निचले प्रदेशों पर नियन्त्रण रखते थे। जब मुख्य दावेदारों ने आपस में अस्थाई बंटवारा कर लिया तो हैप्सबर्ग ने हस्तक्षेप किया, रूडोल्फ ने दोनों डचियों को अलग होने का आदेश दिया और दोनों दलों को अपनी मध्यस्थता में अपने दावे पेश करने के लिये कहा, साथ ही उसने ल्योपोर्ड के नेतृत्व में जो स्टिरिया के फर्डोनेंड का भाई था, एक सैनिक अभियान भेज दिया। युद्ध आरम्भ हुआ, और हेनरी ने 11 फरवरी सन् 1610 को स्वाविश. हाल (Schwabisch Hall) में इवेन्जलीकल यूनियन के साथ संधि कर ली। हेनरी की अनेक प्रणय-गाथाओं के कारण ये घटनायें और भी जटिल हो गई। चारलट द मौंटमोरसी (Charlotte de Montmorncy) ने, जिसका सुविधा की दृष्टि से फोंडे से विवाह कर दिया गया था, अपने शाही प्रशंसक के प्रणय का विरोध किया, नवम्बर 1609 में युवक दम्पत्ति अपने सम्बन्धो को स्थाई बनाये रखने की इच्छा से ब्रूसेल्स भाग गये जहां उन्होंने अपने आपको आर्क ड्यूक एल्बर्ट की रक्षा में अर्पित कर दिया। कोन्डे (राजकीय)

---

1 एन्कुज़ कृत **हेनरी चतुर्थ एट ले आलमेग्ने,** 177 एफ एफ।

2 देखिए अध्याय 3।

3 देखिये अध्याय 3।

परिवार का प्रथम राजकुमार था इसलिये यह सम्भव था कि स्पेन की उकसाहट में आकर वह सिंहासन के लिये भी खतरा बन जाये। कुछ इतिहासकारों के मतानुसार हेनरी द्वारा युद्ध में भाग लेने का मुख्य कारण यह प्रणय गाथा ही थी। यद्यपि फ्रांस का राजा भागी हुई दुलिहन पर बहुत मोहित था तथापि संघर्ष के कुछ अन्य कारण भी थे,[1] क्लीव-जूलिच प्रश्न तो वास्तव में नाम मात्र का कारण था।

क्लीव-जूलिच प्रश्न

प्रोटेस्टेंट सन्धियों से सतर्क होकर और इस भय से कि कहीं क्लीव-जूलिच प्रदेश प्रोटेस्टेंटों के हाथ में न पड़ जाये, जर्मनी के कैथोलिक राजाओं ने पहले ही अपने आपको 'होली–लीग'[2] में बांध लिया। इवेंजलिकल यूनियन में जल्दी ही फूट पड़ गई। ब्रेंडनबर्ग भी इसमें सम्मिलित हो गया था। किन्तु दूसरी और इलैक्टर आफ सेक्सनी अपनी परम्परागत नीति के अनुसार सम्राट का पक्ष ले रहा था। इंग्लैण्ड ने कोई निश्चित सहायता देने से इन्कार कर दिया। परन्तु डचों ने 1,000 सैनिकों की एक टुकड़ी देने का वचन दिया, तथा वैनिस तटस्थ रहा। इस प्रकार हेनरी केवल इवेन्जेलिकल यूनियन की संदिग्ध सहायता, ड्यूक आफ सेवाय, ड्यूक आफ मंटुआ, और डचों की सहायता पर निर्भर रह सकता था, ये शक्तियां सम्राट और स्पेन की संयुक्त शक्ति के मुकाबले में कमजोर पडती थीं। इस पर भी हेनरी खूब तैयारी करता गया और तेजी से एक बड़ी सेना सुसज्जित कर ली गई।

हेनरी का वध

सशस्त्र तैयारियों का औचित्य इस तथ्य में समाविष्ट है कि हेनरी एक देशभक्त फ्रांसीसी था, वह जीवनपर्यन्त फ्रांसीसी कुलीनों को भ्रष्ट करने वाले स्पेन के कष्टपूर्ण षडयत्रों के विरुद्ध लड़ता रहा। स्पेन द्वारा घोर विरोध करने पर भी उसने राजमुकुट विजय कर लिया। उसका निश्चित विश्वास था कि यूरोप की शांति को हेप्सबर्गों की महत्वाकांक्षाओं से खतरा है। उसने इस विधि को मानने से इन्कार कर दिया कि विवाह के द्वारा दो परिवारों में मेल रक्खा जा सकता है। दोनों घरानों के लक्ष्य और नीतियों में आपस में इतना मौलिक विरोध था कि उसके अपने शब्दों में **ला ग्रंजर द ल अन स्टेट ला रूपिन द ल आटर**[3] (La grandeur de l un etait la ruine de l' antre) था, किन्तु 1610 में हेनरी

---

1 यह इस तथ्य से सिद्ध हो जाता है, कि हेनरी द्वारा युद्ध की तैयारियां युवराज एवं युवरानी के भागने से चार माह पूर्व ही आरम्भ कर दी गई थीं। देखें, एंकुज कृत **वही**, पृष्ठ 187।

2 देखिये अध्याय 3।

3 हेनोटेक्स में **उद्घृत**, रिशेलू, 1,260।

57 वर्ष का हो गया था और अब वह एक ऐसे संघर्ष की दहलीज पर था जो सम्भवतः निर्णायिक मालुम होता था। उसने अनुभव किया कि अब उसमें यौवन की स्फूर्ति और विश्वास नहीं था। सन् 1610 की ग्रीष्म ऋतु के पूर्व भाग में हेनरी को मलिन मुख और पहले से अधिक व्यस्त देखा गया। उसका भय था कि कहीं उसके मित्र उसे धोखा न दे जायें, निद्रा अवस्था में भी वह चिंतित रहने लगा, वह प्रार्थना में बल ढूंढने लगा, यहां तक कि अब उसकी पत्नी भी अपने पति के असाधारण प्रेम के कारण आश्चर्यचकित थी। पंचांग देखने वाले एक स्पेनवासी ने कहा था कि हेनरी की इस वर्ष में मृत्यु हो जायेगी। हेनरी ने स्वय कम से कम एक अवसर पर रीजेंसी के विषय में बातचीत की। 14 मई, 1610 को अपराह्न में वह लाउवर (Loure) से चलकर आरसेवल में सली से मिलकर सैनिक तैयारियों के विषय में, बातचीत करने गया। यह बात रिकार्ड की हुई है कि उसने उस दिन अपनी रानी से तीन बार विदाई मांगी और रानी ने, कदाचित् किसी विपत्ति की पूर्व आशंका से प्रेरित होकर, उसे जाने से रोका।[1] **संकडी रियु द लाफिरोंनियर** (Rue de la Ferronniere) की भीड़ में रेवेलैक (Ravaillac) ने, जो एंगोलीन (Angouleme) का पागल अध्यापक था, हेनरी के घातक छुरा भोंक दिया, उसने बचकर भागने का कोई प्रयत्न नहीं किया और बाद में तंग किये जाने पर उसने स्वीकार किया कि इस कार्य में उसका कोई साथी नहीं था, उसने कहा कि वह एक कैथोलिक राजा के विरूद्ध, जो पाखण्डियों का पक्ष लेकर लड़ाई[2] की तैयारी कर रहा था, दैवी-वैर शोधन का एक साधन था। जैसुइटों का इस पाप में कोइ हाथ नहीं था फिर भी सोसाइटी की पवित्रता की रक्षा के लिये कोटन ने इसका प्रकाशन करना उचित समझा।[3] स्पेनिश जैसुइटों[4] ने पहले से ही यह शिक्षा दी थी कि जो कैथोलिक राजा अपने धर्म के साथ विश्वासघात करता है, धर्मसंगत राजा नहीं रहता और यह सर्वशक्तिमान की आज्ञा है कि ऐसे विधर्मियों का वध कर दिया जाय। रेवेलैक के मन में केवल एक ही धारणा थी और भाग्य की यह एक कटु विड़म्बना है कि 17 वीं शताब्दी के नरेशों में सबसे सहिष्णु और प्रबुद्ध राजा की मृत्यु एक धार्मिक उन्मत्त व्यक्ति के हाथों हुई।

---

1 रिशेलू कृत, **ममोयर्स**—स्पेन की घोषणा का कोई संकेत नहीं मिलता।

2 देखें लोसीलोयर कृत **रेविलक एत सेस कमप्लाईसेस**। माइक्लेट का यह कथन कि हेनरी स्पेनिश के जैसुइटों के षडयन्त्र का शिकार बन गया था, ठीक नहीं है। इस सम्बन्ध में रेबिलेक ने **मेमोयर्स द कोदों, 6,** में स्वीकार किया है। ल एस्तोले कृत **मेमोयर्स जोरनेक्स,** 2,315–23 भी देखिए।

3 **लेत्रे डिक्लेरेटोरे द ल डोक्ट्रिन देस पी० पी० जेसुइटस** (1610)।

4 देखिये अध्याय 3।

महान् योजना (The Grand Design)

हेनरी के राज्य का एक परिशिष्ट (epilogue) तैयार किया जा सकता है। उसके मंत्री सली ने अपने राजा के कार्यों की कीर्ति बढाते हुए और अपने से सम्बन्धित महान् घटनाओं का चिन्तन करते हुए ही जीवन के शेष 28 वर्ष बिताये। उसने अपनी पुनस्मृतियों को लिखा और धीरे-धीरे महत्वपूर्ण संशोधनों के पश्चात प्रसिद्ध पुस्तक **मेमोयर्स एत सेजस एकानोमीज** (Memoiros et sags economies) के रूप में प्रस्तुत किया जिसका प्रथम भाग 1639 और दूसरा 1662 में प्रकाशित हुआ। 1598 से पूर्व काल के लिए इन मेमोयर्स का भारी ऐतिहासिक मूल्य है, इसमें कोई संदेह नहीं कि आर्थिक प्रशासन सम्बन्धी कुछ आंकड़ों का कुछ अतिश्योक्तिपूर्ण चित्रण किया जाता है। अपनी समस्त पुस्तक में स्थान–स्थान पर वह एक महान योजना का प्रसंग लाया है जिसके अनुसार वह हैप्सबर्ग कुल को नीचा दिखाना चाहता था, साम्राज्य को समाप्त कर, यूरोप का पुर्न-विभाजन कर, शान्तिकाल का श्रीगणेश करना चाहता था। हस्तलिखित पुस्तक का संशोधन करते समय इस योजना को विशेष महत्व दिया गया, लेखक ने इस योजना के अनुमानित प्रर्वतक के काल्पनिक और आदर्शवादी चरित्र की उसके निरूत्साही कोषाध्यक्ष द्वारा उसकी संसयात्मक आलोचना, और अस्वीकृति तक की विरोधात्मक तुलना पर कुछ जोर दिया है, जब वह लिखा रहा था उस समय वह हेनरी के प्रस्तावों का समर्थक बन चुका था। इस साहित्यिक युक्ति ने जो डिफो (Defoe) के अनुरूप थी मूल संस्करणों के प्रायः प्रत्येक पाठक को धोखा दिया और यह सब 19 वीं शताब्दी में उस समय तक चलता रहा जब तक कि आलोचकों ने यह नहीं खोज लिया कि सली ने किस प्रकार जानबूझकर धोखे और असत्यों से इस योजना को महान् सत्याभास[1] दिया। संभव है कि संस्मरण के के अध्ययन मे तथाकथित महान् लक्ष्य (Grand Design) की उत्पत्ति और विकास के संबंध में आगे चलकर कुछ और तथ्यों का पता चल सके। मामूली असगतियों को छोडकर इसका वर्णन निम्न प्रकार[2] किया जा सकता है।

---

1 देखें अध्याय 17, 18, व 20 जिल्द 2, (संस्करण, 1664) जहां वह इंगलिश कोर्ट में जाने का विवरण प्रस्तुत करता है। सली के विवेचन को **कलेंडर आफ स्टेट पेपर्स (डोमेस्टिक)** के सन्दर्भ में आसानी से समझा जा सकता है।

2 देखें फिस्टर कृत **लेस इकोनोमीज रोयेलेस द सली इन रेव्यू हिस्तोरिक**, 1894, और ऑग कृत **दी ग्राण्ड डिजाइन आफ हेनरी फोर्थ**, (प्रेशियस सोसाइटी प्रकाशन)।

महान् योजना का क्षेत्र (Scope of Grand Design)

यूरोप से हैप्सबर्ग शक्ति को नष्ट करने के उद्देश्य मे, बहुत–सी वैदेशिक संधियां करने की योजना का विचार हेनरी के मस्तिष्क में सन् 1598 के आरम्भ में उत्पन्न हुआ। उसकी योजनानुसार स्पेनवालों को फ्लेडर्स और इटली से खदेडना होगा, हंगरी और बोहेमियां को चुनाव की स्वतन्त्रता फिर वापिस करनी होगी, साम्राज्य हैप्सबर्गों से छीन लिया जाय और उनके प्रदेशों को पड़ौसी राज्यों में बांट दिया जाय। फ्रांस के परम्परागत शत्रुओं को एक बार पिरेनीज पर्वत के उस पार उनके अन्तिम अवशिष्ट राज्य में भेजकर यूरोप को 6 वंशानुगत राज्यों में विभक्त किया जाय, फ्रांस, स्पेन, इंगलैण्ड, स्वीडन, डेन्मार्क और लोम्बार्डी 6 निर्वाचित राज्य–रोम (नेपल्स सहित), वेनिस, आस्ट्रिया–साम्राज्य पौलेंड, हगरी और बोहेमियां और तीन संघीय प्रजातन्त्र–हैल्वेटिक जिसमें स्विट्जरलैण्ड, टाइरोल, फ्रैंचे-काम्टे और एल्सेस सम्मिलित हों हालैण्ड और फ्लैंडर्स को मिलाकर बेल्जिक और इटेलिक जिनमें जिनोवा, लुक्का, फ्लोरेन्स, मोडेना, पार्मा और पात्रसेंजा हों। तीन धर्म–कैथोलिसिज्म, लूथरनिज्म और काल्विनिज्म माने जायें और राजा को विरोधियों को बहिष्कृत करने का अधिकार हो। मस्कोवी (Muscovy) को एशियाटिक और खतरनाक कहकर इस योजना से बिल्कुल बाहर रखा गया था। युद्ध केवल तुर्की के विरुद्ध लड़ाइयों तक सीमित रखा गया। यूरोप के मामले 7 सामान्य कौसिलों द्वारा व्यवस्थित किये जाने थे, जिनमें से 6 स्थानीय और 7 वीं मध्य यूरोप के किसी शहर में बैठकें आयोजित कर सामान्य हितों के प्रश्नों पर अपना निर्णय दें। यह 7 वीं या जनरल कौंसिल प्राचीन ग्रीस की ऐम्फीसाई-योनिक कौंसिल (Amphictyonic Council) के अनुरूप हो और इस योजना में भाग लेने के लिए सभी राज्यों के प्रतिनिधि सम्मिलित हों, इसका अधिवेशन स्थाई हो जिसमें 77 व्यक्ति हों जो प्रति 3 वर्ष में एक बार पुनर्निर्वाचित हों या पदमुक्त हो जायें। आम नियंत्रण सुप्रीम कौंसिल के हाथों में हो। इस प्रकार इसके आदेशों की प्रभावक स्वीकृति होगी। इस योजना में भाग लेने के लिए तात्कालिक प्रेरणा खण्डित हैप्सबर्ग के प्रदेशों में हिस्सा लेने पर मिलेगी। किन्तु आशा यह थी कि जब इस योजना का शैक्षणिक मूल्य समझ में आजायेगा तो प्रादेशिक लाभों की अभिलाषा हट जायेगी। **मैमोयर्स** के एक भाग में हेनरी को अपने लिए किसी भी प्रादेशिक लाभ की इच्छा न रखने वाला उद्धृत किया गया है, किन्तु दूसरे स्थान पर उसके लिए प्रादेशिक लाभ रखे गये हैं। प्रत्येक देश का संविधान उस देश की परम्पराओं के आधार पर ही निर्मित किया जायेगा।

योजना के गुण

इस प्रकार प्रमाणिकता के प्रश्न[1] को पृथक करने पर भी महान् लक्ष्य, शांति स्थापित करने के सिद्धान्तों को एक महत्वपूर्ण देन है तथा चिरस्थायी शांति की क्रियात्मक योजनाओं का यथार्थ (आरम्भिक) बिन्दु होने के कारण, स्वतन्त्र रूप से विचारने योग्य है। इसके स्थायी और अस्थायी महत्ववाले तत्वों में भेद करना कठिन नहीं है। एक ओर तो जो कुछ रिशेलू ने लगभग प्राप्त कर लिया था, उसके और जो कुछ हेनरी चतुर्थ प्राप्त करने का स्वप्न ले रहा था, जिसमें राष्ट्रसंघ की योजना का सा आकर्षण भी था, उसके आदर्श ढांचे के रूप में विचार किया जा सकता है। दूसरी ओर यह याद रखना चाहिए कि सली ने एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त की व्याख्या की थी जिस पर 20 वीं शताब्दी के आरम्भ तक किसी ने भी यह अन्वेषण नहीं किया, कि आधुनिक युद्धों की उलझनों में विजेता की दशा कम से कम आर्थिक दृष्टिकोण से उतनी ही बुरी होती है जितनी हारे हुए की।[2] विस्तार में, महान लक्ष्य कुछ ऐतिहासिक ज्ञान का परिचय देता है। इसमें सम्मिलित होने वाले राज्यों को विभिन्न प्रकार के संविधानों में श्रेणीबद्ध करने से, जिसमें वे सबसे अधिक ढल चुके हैं, उनके प्रति प्रचुर परिज्ञान प्रदर्शित किया गया है। पोप और साम्राज्य की प्राचीन अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के लिए विधान रखा गया है और यद्यपि भूतकाल से कोई विशेष अलगाव (अवरोध) नहीं है तथापि नये प्रजातंत्रवाद के महत्व को समझ लिया गया है। सली का सहिष्णुता के प्रति दृष्टिकोण अपने समकालीन दृष्टिकोण से अधिक बुरा नहीं था, राजनैतिक परिज्ञान में तो वह उन लोगों से अत्यन्त आगे बढा हुआ था। इस योजना ने यूरोपीय विचारधाराओं पर जो अत्यधिक प्रभाव डाला, इसे ध्यान में रखते हुए सली को सत्य के साथ खिलवाड़ करने के लिए सम्भवतः क्षमा किया जा सकता है।

योजना किस प्रकार लोकप्रिय हुई

यदि 18वीं शताब्दी के दो मठाधीशों ने अपने सभी प्रयत्नों को इस ओर न लगाया होता तो 'महान् लक्ष्य उन लोगों के मन के मन में हल्की सी रुचि लगातार उकसाये रखता, जिन्होंने **मेमोयर्स** के पहले संस्करणों में बिखरे सन्दर्भों को विस्तार सहित मिलाने का कष्ट किया है। सन् 1719 में चार्ल्स इरेनी केसल (Charles Irenee Castle), सेंट पीयर के मठाधीश, ने अपनी पुस्तक **प्रोजेक्ट व**

---

1 रिशेलू कृत **मेमोयर्स** देखें। ल कारनेवेली कृत ला मोरते द एन रीको एत ला **पोलितिका इतलियाना दकण्डो ए डोक्यमेंती मेटोंवेनी इन आर्च० स्टोर० लोम्बार्ड,** अध्याय 12, खण्ड 2, पृ० 449।

2 **मेमोयर्स**, 3, 436 (संस्करण, 1664)।

पेक्स परपेच्युअल (Project–de Paix Perpetual) प्रकाशित की जिसमें उसने 'महान्-लक्ष्य' को जिस पर सबसे अधिक सावधानी से विचार किया गया था और जो 18वी शताब्दी में सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में प्रचारित हो चुका था, निरन्तर शान्ति के सिद्धान्त का आधार माना। एबे द सेंट पीयर की विश्वज्ञान सम्बन्धी रुचि और क्रियाओं ने इतिहास के विद्यार्थियों[1] की रुचि को इस ओर आकर्षित किया है, अभी तक उसकी ख्याति मुख्यतः रूसों द्वारा **प्रोजेक्ट द पेक्स परपेच्युअल** पर लिखे गये निबन्ध द्वारा हुई है। परन्तु 'महान् लक्ष्य' का आश्चर्यजनक भवन 1745 तक पूरा नहीं हुआ था जबकि **एबी द एल एक्लूस देस लोजज** ने **मैमोयर्स** का नया संस्करण प्रकाशित किया, जिसमें उसने योजना सम्बन्धी तमाम बिखरे सन्दर्भों को सावधानी से एकत्रित किया और उनको पुस्तक के अन्त में मिश्रित अध्याय के रूप में छपवाया। यह उस काल के तर्कहीन स्तरों के बिल्कुल अनुकूल था। इसने 'महान्-लक्ष्य' के जीवन में नया प्राण डालने का कार्य किया क्योंकि **मैमोयर्स** का यह वर्णन बहुत से संस्करणों में छापा गया था, इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और इसने अपने अनेक पाठकों पर यह प्रभाव डाला कि न केवल हेनरी चतुर्थ ही इस योजना का सृजनकर्ता था, अपितु सली ने भी इसकी व्याख्या का एक विशेष अध्याय तैयार किया था। सली के **मैमोयर्स**[2] का अंग्रेजी अनुवाद 18वीं शताब्दी के वर्णन का केवल शाब्दिक पुनर्मुद्रण हैं, उपरोक्त दोनों व्याख्याओं में से एक या दोनों के चिन्ह इस विषय से सम्बन्धित प्रायः तमाम पुरानी पुस्तकों में पाये जाते हैं। दूसरा अनुमान, कि सली ने स्वयं इस अध्याय को, जिसमें यह योजना वर्णित है लिखा है हमारे ऐतिहासिक साहित्य में अब भी महत्वपूर्ण नहीं माना जाता। ऐसे विषयों में केवल उनके पाण्डित्य के कारण ही अभिरुचि नहीं है, वरन् 18वीं शताब्दी की ऐसी ही आकस्मिक परिस्थितियों के कारण 'महान् लक्ष्य' न केवल एक महान् राजा द्वारा दी गई ठोस योजना के रूप में बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में युद्ध का बहिष्कार करने के समूचे आदर्शवादी प्रयासों का दार्शनिक आधार समझा जाने लगा।

---

1 देखिए जे० डूएत कृत **ला एबे द सेण्ट पीयरे** (1912)। ब्रिटिश संग्रहालय के अतिरिक्त सेण्ट पीयरे के लेख दुर्लभ रूप में ही किसी ब्रिटिश पुस्तकालय में पाये जाते हैं। यह एबी द सेण्ट पीयर, बरनारडिन द सेण्ट पीयर (1737–1814) से भिन्न है।

2 बोहन श्रृंखलामाला में।

अध्याय 3

प्रति धर्म सुधार और साम्राज्य

इस अध्याय का उद्देश्य मुख्यतया उन प्रयत्नों का वर्णन करना है जो साम्राज्य के अन्तर्गत 16 वीं शताब्दी के धर्मसुधार के परिणामों को नष्ट करने के लिये किये गयें। इस विवरण के पूर्व धर्मसुधार के सामान्य परिणामों का संक्षिप्त विवरण दिया जाना आवश्यक है।

धर्मसुधार आन्दोलन की आर्थिक व्याख्या

ऐतिहासिक विश्लेषण के परिणामस्वरूप 16 वीं शताब्दी के धर्मसुधार आन्दोलन को दो रूपों में देखा जा सकता है। 19 वीं शताब्दी में जब मानव प्रगति-का सिद्धान्त यथार्थतः स्वीकार कर लिया गया तो बहुत से इतिहासज्ञ लूथरवाद को इस सीमा तक पुनर्जागरण का पूरक मानने लगे कि इसने मानव अन्तःकरण और बाइबिल को साक्ष्य मानकर मध्यकालीन चर्च की बेड़ियों से लोगोंको मुक्ति दिलाई। इस मत के अनुसार लूथर को नैतिक सुधारक तथा मुक्तिदाता कहा जा सकता है और अपने अधिकांश जर्मनसाथियों की भांति जिसके भावुक स्वभाव को अन्याय के प्रति सहज घृणा थी। परन्तु कुछ समय बाद यूरोप में घटित कुछ घटनाओं के अनुभव के आधार पर, इस विश्लेषण में कुछ संशोधन किया जाना आवश्यक समझा गया। इससे अधिक मान्य आर्थिक व्याख्या है जिसकी पुष्टि जर्मन इतिहास-सज्ञों [1] के उपकथनों द्वारा होती है और जिन्हें इंग्लैण्ड भी अधिकृत रूप से स्वीकृत करता है। इस मत के अनुसार धर्म-सुधार धार्मिकता के आवरण में एक नई पूंजीवादी प्रवृत्ति, प्राचीन व्याजनिषेध प्रथा के विरुद्ध विद्रोह, नई मंडियों की लिप्सा, तथा उदीयमान मध्यम वर्ग की व्यापारिक आकांक्षाओं का उद्गार था। संक्षेप में वह लोलुप एवं नैतिकता-निरपेक्ष औद्योगिकवाद की अभिव्यक्ति था जिसे 20 वीं शताब्दी में अत्यन्त कुख्यात माना गया है। इस अनुमान पर 16 वीं तथा 17 वीं शताब्दियों की बहुत सी बातों का संतोषजनक रूप में समाधान किया जा सकता है। इसके अनुसार धार्मिक विभेदों को आधुनिक वर्ग-संघर्ष के रूप में स्वीकार किया जा सकता है और ईश्वर द्वारा चिरअभिशप्त समझे जाने वाले जन-समुदाय को शोषित श्रमजीवी दास-समुदाय के रूप में। ऐसा माना जाता है कि काल्विन

---

1 मैक्स वेबर (पार्सन्स का अंग्रेजी अनुवाद,) **दि प्रोटेस्टेंट एथिक एंड स्प्रिट आव केपीटेलिज्म** (1930)।

ने 'शीघ्र धनी बनो' नामक आन्दोलन चलाया जिसका एक परिणाम यह भी हुआ कि चार्ल्स प्रथम को मृत्यु दण्ड मिला क्योंकि निर्धनों के प्रति उसकी संवेदना प्यूरिटन मुनाफाखोरों को बहुत अखरती थी । स्वभावतः वैज्ञानिक युग इस प्रकार की विस्तृत व्याख्या करने वाले सिद्धान्त का स्वागत करता है ।

आर्थिक व्याख्या की आलोचना

शब्दों को खैंचतान कर, उनका आधुनिक अर्थ लगाकर, तथा चतुराई से एक मात्र उन्हीं एतिहासिक तथ्यों को सकलित करके जो आधुनिक काल में प्रचलित आर्थिक सिद्धान्तों के ढांचे में बैठ जांय इस प्रकार की व्यवस्था को प्रमाणित करना सरल है । यह सत्य जानबूझ कर भुला दिया जाता है कि ब्याज और पूंजीवाद अनेक कैथोलिक समुदायों में भी सुदृढ़ रूप से प्रतिष्ठित थे और यह कहा जाता है कि काल्विनवाद ने ही ब्याज लेने के विरूद्ध प्रचलित धार्मिक निषेध को हठाकर अपने अनुयायी धनिकवर्ग को धन संग्रह करने के लिये प्रमुख प्रोत्साहन दिया । कभी-कभी यह भी भुला दिया जाता है कि लालच की भावना उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानवता और यह कि विभिन्न सभ्यताएें मानव की संग्रह करने की सहज प्रवृत्ति को रोकने के लिये या तो बन्धन लगाती हैं या उसे प्रोत्साहित करने के लिये विशिष्ट श्रोत देती हैं तथा यह अधिक सम्भव है कि धन लिप्सा में सफलता अथवा विफलता अवसर, जाति और व्यक्ति के निजी स्वभाव पर निर्भर करती है । यह प्रवृत्ति, मध्य तथा वर्तमान सब युगों में मानवता की मानी हुई विशेषता है । धर्मसुधार की आर्थिक व्याख्या करने वाले तो यहां तक कहते हैं कि समय की समानता कारण और परिणाम व्यक्त करती है । निःसन्देह 16 वीं-शताब्दी का उत्तरकाल तथा 17 वीं शताब्दी आर्थिक प्रसार के युग थे जिसमें हॉलैण्ड जैसे देशों ने जो पुराने धर्म को त्याग चुके थे, विशेष भाग लिया, किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि धर्म सुधार आन्दोलन पूर्णतया अथवा मुख्यतया आर्थिक प्रेरणा या प्रोत्साहन द्वारा ही अनुप्रेरित हुआ, क्योंकि आर्थिक शोषण की नई भावना का संयोजन 15 वीं शताब्दी के कैथोलिकों द्वारा की गई भौगोलिक खोजों के साथ भी तो अच्छी तरह से किया जा सकता है , यदि इतिहास के अधिक प्रचलित आर्थिक व्याख्याताओं के निष्कर्षों की ध्यानपूर्वक विवेचना की जाय तो पता चलता है कि वे राज्य के अन्तर्गत सामाजिक वर्गों के परस्पर विरोधी आर्थिक हितों से सम्बन्धित धारणाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं । किन्तु सामान्य बात को गम्भीरता का आवरण देकर प्रस्तुत करना सदा ही सबसे अधिक प्रभावोत्पादक साहित्यक विधि है ।

धर्म सुधार और व्यवसायवाद

सुधारकों के पास न तो कोई प्रगति विषयक सिद्धांत था और न ही आर्थिक-स्वार्थ का सिद्धान्त । लूथर की मनोवृत्ति अवश्य ही विद्याभ्यास की ओर थी और

उसने विद्वता या पाण्डित्य प्रदर्शन से अप्रत्याशित ख्याति भी अर्जित कर ली थी। उसने प्रत्येक आगन्तुक को चुनौती दी कि वह यह सिद्ध कर सकता है कि चर्च के सिद्धान्त और आचरणों में असंगति है। उसका कथन सत्य था। परन्तु वह यह नहीं समझ सका कि एक महान् चर्च को बहुत सी असगत बातों में मेल भी कराना पड़ सकता है। पादरियो की अनैतिकता का विरोध तो उतना ही पुराना था जितना कि ईसाई धर्म, किन्तु अब इसमें कुछ नवीनता थी और वह थी, पादरी व्यवसाय की आवश्यकता को चुनौती। यह पादरियों की नैतिकता सम्बन्धी बातों की अपेक्षा कहीं अधिक मृदु मर्म-स्थल था। धार्मिक आस्था के समर्थन से उस चनौती को और बल मिला क्योंकि यह सिद्धान्त व्यक्ति और भगवान के बीच में से पुरोहित को निकाल देता था और साधारण मनुष्य को बिना धर्माध्यक्षों की सहायता से मुक्ति प्राप्त करने का अपना निजी मार्ग ढूंढने की आवश्यकता पर बल देता था। इसमे एक राष्ट्रीय तत्व और मिला दिया गया कि धन रोम को क्यों भेजा जाय जबकि इसके व्यय का अधिक सदुपयोग जर्मनी में किया जा सकता है? इस प्रकार जर्मन-प्रोटेस्टैन्ट आन्दोलन आरम्भ में पुरोहित के व्यावसायिक एकाधिकार और पोप के वित्तीय एकाधिकार के विरूद्ध था। इसके बदले में लूथरवाद ने पृथकत्व की अपनी नई पद्धति का विकास किया। केवल आवश्यकता थी काल्विन जैसे शिक्षित व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षेप की जो किसी राजा की अधीनता या स्थानीय रागद्वेषों में बंधा हो और तब यह आन्दोलन अखिल यूरोपीय हो गया। इस आन्दोलन में उच्चतर नैतिक आदर्शों या प्रगति या आर्थिक लाभ के विषय में कुछ भी नहीं था, परन्तु उन धर्मग्रंथों और पूर्वपादरियों (Early Fathers) के सम्बन्ध में बहुत कुछ था जिनकी सत्ता उतनी ही निर्विवाद थी जितनी उनके कथनों की व्याख्या में विभिन्नता। सुधारकों ने जब यह जान लिया कि मध्यकालीन चर्च एक धोखा था तो वे अपनी पद्धतियां निकालने लगे जिससे कि वे साधारण मनुष्य का व्यावसायिक पथप्रदर्शन कर सकें और (यदि आवश्यकता पड़े तो) उसे स्वीकार करने के लिए बाध्य कर सकें। इस तरह नये धर्माध्यापकों का युग आरम्भ हुआ और एकाधिकार विरोधी दावेदारों के बीच बंट गया।

प्रोटेस्टेण्ट व सुधार के अर्थ

इतिहासज्ञों को स्वीकृत पारिभाषिक शब्दावली पर निर्भर रहना पड़ता है और उसमें हेर-फेर करना पाण्डित्य दिखाना समझा जाता है। इस प्रकार सामान्य शब्द 'प्रोटेस्टेण्ट' 16वीं शताब्दी के उन महान् धार्मिक आन्दोलनों के सम्बन्ध में प्रयोग में लाया जाता है, और निस्संदेह लाना पड़ता है, जो रोम के विरुद्ध हुए। परन्तु जब 'प्रोटेस्टैण्ट' और 'रिफार्म्ड' शब्दों को पर्यायवाची शब्द समझा जाने लगता है तो सुविधा का सत्य पर बलिदान कर दिया जाता है। तात्कालीन लोगों

ने सर्वदा उनमें अन्तर माना, यद्यपि ये दोनों शब्द कैथोलिकवाद के विरुद्ध थे तथापि उनमें गम्भीर अन्तर था। प्रोटेस्टेण्ट शब्द जर्मन राजाओं और कस्बों द्वारा डायट के अधिनियम का विरोध[1] (Protest) करने के परिणामस्वरूप प्रयोग में आया। इस अधिनियम द्वारा अन्य बातों के साथ चर्च की भूमि को धर्म-निरपेक्ष कार्यों में प्रयोग करने और पुरोहितों की आय को जब्त करने का निषेध किया गया था। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मूल प्रोटेस्टेण्ट केवल पोपधर्म का ही विरोध नहीं करते थे अपितु उन प्रयत्नों के भी विरोधी थे जो उन्हें उस भूमि और सम्पत्ति का उपयोग करने की मनाही करता था जो उनकी (धर्माध्यक्षों) नही थी। सामान्यतः इस नाम का प्रयोग स्वीडन और उत्तरी जर्मनी के इवेंजलिकल (Evangelical) चर्चों के प्रति किया गया। ये चर्च धर्म तथा सगठन के बीच समझौते के लिए अपने नेताओं के प्राकृत गुणों, और अवसरवादिता के लिए अपने गृहस्थ मतानुयायियों में राज्य के प्रति पूर्ण समर्पण-भावना के लिए प्रसिद्ध थे। कुछ समय तक यह सम्भावना थी कि ये चर्च मूल संघ में सम्मिलित हो जाय। दूसरी ओर काल्विन तथा ज्विगली (Ziuingle) द्वारा सुधारे गये चर्चों के मिलने की कुछ भी सम्भावना नहीं थी, क्योंकि ये दोनों व्यक्ति विद्वान थे जो, मध्यकालीन चर्च का आध्यात्मिक प्रभाव न समझने पर भी उसकी बौद्धिक दुर्बलताओं को अच्छी तरह जानते थे। मध्ययुग की एकत्र तमाम सामग्री को त्याग कर काल्विन और ज्विगली ने अपने चर्च का उन सिद्धान्तों पर पुनर्निर्माण किया जिन्हें वे आदि ईसाई धर्म के आचरण और सिद्धान्त कहते हैं, उनमें उद्देश्य, अनुशासन, और प्रचार की भावना थी जो इवेंजेलीकलों या सच्चे प्रोटेस्टेण्टों में कभी नहीं थी।

कृपा दृष्टि का सिद्धान्त (Doctrine of Grace)

यद्यपि लूथर और काल्विन दोनों ने सन्त आगस्टाइन से ही आरम्भ किया था, तथापि काल्विन बहुत आगे तक बढ़ गया। सन्त ने (कुछ ऐसे कारणों से जो अकुशल व्यक्ति को स्पष्ट नहीं होते) इलैक्ट (Elect) की सख्या पतित देवदूतों की संख्या तक सीमित कर दी थी। इलैक्ट वे लोग कहे जाते थे जिन पर भगवान की कृपादृष्टि होती थी। इस प्रकार स्वतन्त्र विचार का पूर्ण रूप से बहिष्कार कर दिया गया। अब काल्विन के लिए शेष यह रहा कि वह तर्क द्वारा पूर्वभाग्यवाद का सिद्धान्त निकाले (और लागू करे) जिसका जटिल परिणाम यह निकला कि काल्विनवाद चर्च के बाहर, और बाद में जानसेनवाद चर्च के अन्दर, अपने एक आधारभूत विश्वासों के लिए एक महानतम पूर्वगामी कैथोलिक धर्माचार्य के ऋणी हो गये, और इसलिए उनका यह दावा कुछ न्यायसंगत हो सकता था कि इस

---

1 स्पेयर की डायट, 1529।

महत्वपूर्ण बात पर वे कट्टर परम्परावादियों से कम से कम उतने ही सहमत है जितने उनके विरोधी। इसीलिए काल्विनवाद के सैद्धान्तिक पक्ष का विरोध करना अपेक्षाकृत सरल लूथरवाद से अधिक कठिन था, जिसके लिए बहुत से स्पष्टवादी लेखकों ने कहा था, कि 'यह अज्ञ और नीच कुलोत्पन्न भिक्षु के विकृत मस्तिष्क की सूझ है।'

जॉन काल्विन

कैथोलिक दृष्टिकोण के अनुसार काल्विनवाद विशेष रूप से खतरनाक विधर्म था, क्योंकि यह क्रान्तिकारी और रचनात्मक दोनों था। इसका संस्थापक कई बातों में लूथर के विपरीत था। जॉन काल्विन सुवंशजात और शिक्षित फ्रांसीसी था जिसमें महान् चारित्रिक तल्लीनता थी तथा इसके साथ ही उसमें उस सकीर्ण एवं तीक्ष्ण तर्कशीलता और बुद्धि की अभेद्यता का भी मेल था जो सच्चे क्रांतिकारी की विशेषताएं होती हैं। उसने शास्त्रीय अध्ययन से मानवीय संस्कृति ग्रहण नहीं की, अपितु उसने जीनो (Zeno) का निःस्पृह दर्शन और भाषा-विज्ञान का पाण्डित्य प्राप्त किया जिसे जेनेवा के युवकों पर जबरदस्ती थोपा गया। चरित्रवान् और संयमी होते हुए भी उसने कुछ त्यागी लोगों के एक जत्थे की स्वामीभक्ति प्राप्त की, और एक भारी प्रतिरोध के बाद वह जेनेवा मे आध्यात्मिक पद्धति स्थापित करने में सफल हुआ जिसकी रूपरेखा उसकी इन्स्टीट्यूट (Institute) में प्राप्य है। धार्मिक केन्द्र होने के कारण जेनेवा एक आदर्श स्थिति में था। 1570 ई० तक हॉलैण्ड, स्कॉटलैंड, स्विट्जरलेण्ड, पैलेटाइन–इलेक्टोरेट (Palatine-Electorate) और फ्रांस का एक बड़ा भाग उसके विचारों का अनुयायी हो गया। शहर के प्राचीन म्युनिसिपल कानूनों और उसके सभी प्रकार से धार्मिक या प्रादेशिक बन्धनों से स्वतन्त्र होने का लाभ उठाकर काल्विन ने कठोर निरंकुश पद्धति लागू कर दी। जिसके परिणामस्वरूप लोग या तो हठधर्मी (कट्टर पंथी) हो गये या विद्रोही। बाहरी लोगों को भी इस नये धार्मिक शासन की कठोरता अनुभव होने लगी। स्पेनवासी माइकेल सरवेंट्स (Michael Servetus) को शहर की चहारदीवारी के बाहर जला दिया गया। यह असहिष्णुता का एक ऐसा उदाहरण था जिसके कारण आधुनिक काल्विनवादियों ने अपने आपको स्पष्ट रूप से अलग कर लिया और प्रायश्चित रूप में उस स्थान पर एक स्मारक बनाया जहां उस विधर्मी की हत्या[2] की गई थी।

---

1 देखिये अध्याय 8।

2 उसकी पुस्तक **द त्रिनितात** त्रिनिटी के सिद्धान्त को चुनौती देती है।

काल्विनवाद और सन्त आगस्टाइन

अध्यात्म क्षेत्र में काल्विनवाद लूथरवाद की अपेक्षा अधिक रूढिवादी और अधिक क्रान्तिकारी था। इसने आगस्टाइन के ईश्वरीय कृपा के (Theory of Grace) सिद्धान्त पर इतना बल दिया कि इसके सबसे अधिक घृणित परिणाम निकले। इसने धार्मिक संस्कारों (Sacraments) के सिद्धान्तों में संशोधन कर उनके लाक्षणिक तत्व पर अधिक बल दिया तथा वास्तविक विद्यमानता (Real Presence) को स्वीकार किया, जिसे लूथर चाय के प्याले में भी विद्यमान मानता था 'चूंकि उष्ण पानी में उष्णता विद्यमान है इसलिए चाय के प्याले में भी उष्णता है।' काल्विनवाद ने पुराने पुरोहितों के अत्याचार के स्थान पर बड़ों और प्रधान पादरियों (Elders & Presbyters) का शासन स्थापित किया, सामान्य जनों की कमेटियां बनाई जिनको प्रत्येक धार्मिक परिषद् के प्रशासनिक अधिकार दिये गये, जबकि धर्माध्यक्ष या पादरी–नियन्त्रण के स्थान पर स्थानीय और प्रतिनिधि धर्मसभाएं बनाई गईं और इन सब के ऊपर पादरी वर्ग और जनसाधारण की सभा निर्मित की गई। इस प्रकार आकृति में काल्विनवादी चर्च प्रजातान्त्रिक था, सामान्यजन अपना मंत्री नियुक्त करते थे और उसके आध्यात्मवाद तथा व्यक्तिगत जीवन की आलोचना कर सकते थे। दीनातिदीन व्यक्ति केन्द्रीय या राष्ट्रीय सभा का सदस्य बनने के योग्य था। यदि धार्मिक प्रजातन्त्र का यह मतलब है कि नितान्त अशिक्षित व्यक्ति अपने पादरी और अपने चर्च की सरकार के चुनाव में प्रत्यक्ष योग दे सकते हैं तब तो कल्विनवाद निश्चय ही प्रजातान्त्रिक था। वे राष्ट्र जिन्होंने इसे सबसे अधिक स्वीकार किया–(डच और स्कॉटिश)–सामान्यतः गणतन्त्रवादी माने जाते थे। सदा से यह एक सुविधाजनक वर्गीकरण रहा है कि जहां लूथरवाद राजनैतिक रूप से निरंकुश और राज्य की अधीनता स्वीकार करने वाला था वहीं काल्विनवाद गणतांत्रिक और प्रजातांत्रिक था।

काल्विनवाद किस सीमा तक प्रजातांत्रिक था ?

अनेक वर्गीकरणों के समान यह वर्गीकरण भी सर्वदा तथ्यों पर आधारित नहीं है। यद्यपि 16वीं शताब्दी में स्पेनिश शासन के प्रति डचों की विरोध भावना से गणतांत्रिक था तथापि 17वीं शताब्दी में संयुक्त प्रान्तों के राज्य प्रजातांत्रिक न होकर शहरी अल्पजनों[1] द्वारा शासित राज्य (Burgher Oligarchy) थे। तथा जार्ज बुचानन (George Buchanan) की गणतंत्री घोषणाओं के होते हुए भी 17वीं शताब्दी के स्कॉटलैण्ड के लौकिक जीवन में राजकीय नगर निवासियों और कुलीनों का प्रभाव छाया हुआ था। ब्रितानी स्वतन्त्रावादियों (English

---

1 देखें अध्याय 10।

independents) की तुलना में स्कॉटिश काल्विनवादियों में राजनैतिक परम्परा की दृढ़ भावना थी तथा कामनवेल्थ के प्यूरिटनों द्वारा किये गये अव्यवस्थित प्रयोगों के पश्चात् वे चार्ल्स द्वितीय को गद्दी पर पुनःस्थापित करने के लिए अंग्रेजी राजतन्त्रवादियों से मिल गये थे। फ्रांसीसी काल्विनवादी फ्रांस[1] से बहिष्कृत किये जाने के बाद ही गणतण्त्रवादी बने। काल्विन स्वयं भी राज्य में सत्ता के सिद्धान्त का सबसे अधिक सम्मान करता था, यही कारण है कि जेनेवा में उसका शासन केवल विशेष अर्थ में ही प्रजातांत्रिक कहा जा सकता था। समितियों द्वारा शासन जो कि काल्विनवादी सरकार की विशेषता थी, कभी-कभी इतना अनुतरदायी भी हो सकता था जितना कि निरंकुश शासन, क्योंकि कार्यकारिणी बहुमत के आधार पर निश्चय करती थी। इसलिए अज्ञात मत की आड़ में मतदाता ऐसे कार्य के नैतिक उत्तरदायित्व से बच सकता था जिसको वह एक उत्तरदायी व्यक्ति होने के नाते करने में झिझकता था। यह तर्क दिया जा सकता है कि ऐसा सभी प्रजातांत्रिक संस्थाओं में होता है, किन्तु व्यवहार में यह कम से कम उतनी ही असहिष्णुता और निरंकुश थी जितनी कि कोई दूसरी धार्मिक सस्था। लूथर के अनुयायियों ने निरंकुश राजाओं के पास आश्रय पाया। काल्विनवादी अधिक आश्वस्त थे। उन्होंने धार्मिक राज्य के रूप में राज्य की कल्पना की और जैसुइटों की तरह सामान्यजन को पादरी सत्ता के अधीन माना। काल्विनवादी और जैसुइट स्वीकार करते थे कि "Princeps in religione nihil statuat...............non est enim arbiter religionis sed discipulus.[2] यद्यपि यह कभी भी नहीं कहा गया कि जैसुइट एक गणतन्त्रात्मक या प्रजातांत्रिक संस्था थी लेकिन कैथोलिक, लूथरानुयायी,[3] व कल्विनवादी[4] प्रायः सोसायटी आव जीसस से मिलते थे। यह इसलिए नहीं कि उनके आध्यात्मिक विचारों में कोई समानता थी बल्कि इसलिए कि दोनों समान रूप

---

1 मिल्टन ने अपनी पुस्तक **डिफेंसिओ प्रो पोपूलों एंगलीकेनो** में फ्रांसीसी काल्विनवादी बोकहिट को बोसूट व हॉब्स जैसे विचारकों की श्रेणी में रक्खा है। 17वीं शताब्दी के अनेक ह्यूगेनेट्स के समान (1685 से पूर्व), बोकहिट भी दैवीय अधिकारों का समर्थक था। देखिये गॉलेंड कृत, **कविड एस० बोचरटस द जुरे रिगम दिससेरूएरित।**

2 ए० जे० कॉन्टजन द्वारा रचित पोलिटी कोरन **लिब्रीडोसम** (1620) खंड 2, अध्याय 16।

3 देखिये अध्याय 4।

4 देखिये क्रेब लिखित, **दाई पोलितिशे पब्लिसटिक दर जेसुइटस अंड इहरर गेगनर**...., 210।

मे इस बात पर सहमत थे कि सभी धर्म-निरपेक्ष कार्य-कलाप पूर्णरूप से निरंकुश धर्माध्यक्षों के शासन के अधीन कर दियें जांय।

काल्विनवाद प्रजातांत्रिक नहीं

वास्तविकता यह है कि 'प्रजातन्त्र' जैसा अस्पष्ट शब्द 17वीं शताब्दी के संगठनों के सम्बन्ध में बडी सावधानी से ही प्रयोग में लाया जा सकता है। राज्य की निरंकुशता पुर्नजागरण की राजनैतिक विरासत थी और काल्विनवादी अपने विरोधियों के समान ही प्रभावित थे। इस अवधि में राजनीतिशास्त्र बहुत से सुविधा-जनक आकर्षक शब्द प्रदान करने के लिये पर्याप्त रूप से विकसित हो चुका था तथा जैसुइटों ने अपनी धार्मिक निरंकुशता के लिये रास्ता साफ करने की दृष्टि से प्रजा-तान्त्रिक धारणाओं का अपने ही ढंग से प्रयोग किया। ये दो महान् विद्रोही चर्च सम्भवत: स्वभावत: भी उतने ही एक दूसरे से दूर थे जितने कि सगठन या सिद्धान्त की दृष्टि से। लूथरानुयायी जहां अपने निकृष्टतम रूप में पाखण्डी व अवसरवादी हो सकता था, वहीं अपने से सर्वोतम रूप में पवित्र आज्ञाकारी नागरिक भी होता था। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि कालविनवादियों ने प्रवल उत्साह की भावना या तो धर्म से प्राप्त की थी या सम्भवत: उसमें भरी हुई थी जो रोक या नियंत्रण से व्यग्र हो जाती थी, और आलोचना या विरोध को सहन नहीं कर सकती थी, तथा लक्ष्य के प्रति दृढसंकल्प थी और मानव जीवन में दैवी इच्छा की भावना में विश्वास करती थी। कठोर आत्संसयम व्यक्तिगत उतरदायित्व में विश्वास और दूसरों पर प्रभुत्व जमाने की अभिलाषा, असहिष्णुता का उपदेश और पृथक तथा संयमी रहने का स्वभाव, ये सच्चे काल्विनवादी के लक्षण हैं, क्योंकि वे तमाम 'चुने हुए लोगों' में होते हैं। इस मनोवृत्ति की तह में एक विरोधाभास था – गहन तथा अनवरत प्रयास का भाग्यवाद के साथ सम्मिश्रण। काल्विनवादी के गणतन्त्र-वादी या प्रजातन्त्रवादी होने का लेबिल लगाना उसके स्वभाव की जटिलताओं पर बिल्कुल ध्यान न देना होगा और इस प्रकार उसके चरित्र और योग्यताओं के प्रति 17 वीं शताब्दी की सामान्य धारणा को भुला देना होगा।

इग्नेशिअस लोयला

प्रति धर्म सुधार (Counter Reformation) के संघर्ष में काल्विनवादी और जैसुइट दो प्रमुख पात्र हैं, और, जैसा कि प्रत्येक पूर्ण प्रतिक्रिया (anti-thesis) में पाया जाता है, अत्याधिक रूप से विरोधी वस्तुओं में भी कुछ महत्वपूर्ण समान-ताएं होती हैं। जैसुइट संघ का संस्थापक स्पेन का एक सिपाही इग्नेशिअस लोयला[1] था जिसकी मनोवृत्ति पर एक घाव ने जो कभी ठीक नहीं हुआ, काफी असर डाला

---

[1] 1491–1556।

था। सैनिक वृति छोड़ने के बाद उसने अपना सामान खच्चर पर बांधा और अधेड़ आयु का तथा अशिक्षित होते हुए भी वह विद्याध्ययन के लिये पेरिस के लिए चल पड़ा जहां काल्विन पहले से ही विद्यार्थी था। वह व्यावहारिक विधियों से उन महान् कल्पनाओं को बारम्बार प्रोत्साहन देता था, जिनसे वह स्वयं प्रेरित होता था। इन विधियों को उसने **एक्सरसाइटिया स्पिरियुआलिया** (Exercitia-Spiritualia) में चित्रित किया है। उसने अपने जीवन का उद्देश्य जीसस की सोसाइटी (Society of Jesus) की स्थापना कर पूरा किया, जो पोप के नियन्त्रण में कैथोलिकवाद के पुनरूत्थान और विधर्मियों के धर्म परिवर्तन के काम में तत्पर थी। संस्थापक के अनुरूप सोसाइटी का संगठन सैनिक पद्धति पर किया गया। इसका प्रधान, जनरल कहलाता था और इसमें बिना शर्त आज्ञापालन करने का सैनिक गुण सर्वोपरि था। जैसुइट को अपने समय और सम्पत्ति की अपेक्षा अपने व्यक्तित्व और बुद्धि का समर्पण अधिक करना पड़ता था। यह विशेषता किसी भी अन्य धार्मिक संघ में न थी। उसे अपने अधिकारी (Perinde ac Cadaver) की आज्ञा के आगे सिर झुकाना पड़ता था और इस प्रकार संगठन की एकता[1] और लक्ष्य की दृढ़ता के कारण यह सोसाइटी काल्विनवादियों से लोहा लेने में पूर्णरूप से उपयुक्त थी।

जैसुइट सोसाइटी का संविधान

जैसुइट लोगों को कुछ विशेषाधिकार मिले हुए थे जिनके कारण वे चर्च के अग्रिम रक्षक बन गये। परिस्थितियों के अनुसार कार्य करने के लिए वे अपने प्रारम्भिक कानूनों मे परिवर्तन कर सकते थे, वे जनता को सम्बोधित कर सकते थे, वे संघ सम्बन्धी शपथें पूर्ण रूप से ग्रहण करने के लिए बाध्य नहीं थे, तथा उन्हें मुक्ति प्रदान करने के विशेष अधिकार प्राप्त थे। वे उन चर्चों के प्रधानों के, जो उनके मत के नहीं थे, क्षेत्राधिकार से बाहर थे, वे करों से मुक्त थे, और वे कैथोलिक विश्वविद्यालयों में पढ़ा सकते थे तथा नरेशों की प्रजा के समान उसके अधीन नहीं थे। इनके अन्तरंग दल में वे व्यक्ति थे जो चार शपथों को स्वीकार करते थे। इस दल के अगल-बगल नवागन्तुक और सहायक होते थे जो संघ के धर्मतर कार्य कर सकते थे। जनरल की शक्तियां लगभग अपरिमित थीं किन्तु उसके पास अनुमति देने वाला एक उपगुरू होता था और चार सहायकों की एक समिति होती थी। जनरल की मृत्यु पर या उसे पदच्युत करने के लिए धार्मिक सभा का अधिवेशन बुलाया जाता था। धर्माध्यक्षों के क्रम के दूसरी ओर (किनारे) नवागन्तुक होते थे जिनके

---

1 जैसुइट लोगों के इतिहास एवं उनके संगठन का बहुत ही रोचक वर्णन जे० बूकर द्वारा दिया गया है। देखें, नामावली।

लिये प्रवेश परीक्षा कठिन होती थी, इस परीक्षा में साधारण स्वास्थ्य और आकृति आदि बातों पर भी ध्यान दिया जाता था। अल्पबुद्धि वालों को चाहे वे कितने ही गुणी क्यों न हों त्याग दिया जाता था। यहूदी और मुसलमानों के वंशजों का प्रवेश निषिद्ध था। नवागन्तुक परीक्ष्यमाणकाल की (Probationary tests) परीक्षाएं पूरी करने के बाद, आज्ञापालन, निर्धनता तथा ब्रह्मचर्य की शपथें ग्रहण करते थे, परन्तु पूरी सदस्यता के लिए एक चौथी शपथ लेनी पड़ती थी। संघ के अनुसार इसमें निवास करना और विधर्मियों के विरुद्ध धर्म प्रचार में भाग लेना था। इस प्रकार सोसाइटी घेरे के ढग से निर्मित थी जिसके पहले घेरे में नवागन्तुक थे, जिनके बाहर जनसाधारण और धार्मिक सहकारी होते थे, फिर तीन शपथें ग्रहण करने वाले होते थे, तीसरे घेरे में चार शपथें लेने वाले तथा चौथे में उपगुरू सहित चार की अन्तरंग समिति और अन्त में केन्द्र में जनरल होता था।

जैसुइट अनुशासन

17वीं शताब्दी में सोसाइटी का जो राजनैतिक और धार्मिक प्रभाव था वह उसके बाहरी जगत के इस प्रकार के सम्पर्क के कारण था, यद्यपि नागरिकता के कर्तव्यों की अवहेलना की जाती थी। संसार से विमुख रहना मध्यकालीन मठों का आदर्श रहा था तथा आध्यात्मिक अभिप्राय से सांसारिक धन्धों में हस्तक्षेप करना जैसुइटों का प्रत्यक्ष लक्ष्य था। ऐसा करने के दो तरीके थे–युवकों को शिक्षा देना और पाप स्वीकार करने के स्थान पर अपना एकाधिकार जमाना। जैसुइट स्कूलों में प्रायः सम्पन्न शिक्षा दी जाती थी और उनके शिष्यों की सूची, शिक्षकों के रूप में उनकी सफलता का प्रमाण है। पाप स्वीकार करने पर मुक्तिदान के रूप में वे प्रौढ़ों की आत्मा को प्रभावित कर सकते थे। इस पद पर उन्होंने आध्यात्मिक सलाहकारों के रूप में काफी तत्परता से कार्य किया और वह भी ऐसे समय में जबकि उच्च सामाजिक स्थिति के प्रत्येक कैथोलिक का अपना (निजी पाप स्वीकारोक्ति पर) मुक्तिदाता पुरोहित होता था। अपने सदस्यों को इन उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर काम करने की योग्यता प्रदान करने के लिए सोसाइटी ने इतने व्यापक एवं कठोर नियम बना रखे थे कि उनकी तुलना सम्भवतः आधुनिक सेनाओं और नौसेनाओं के नियमों से भी नहीं की जा सकती। इस प्रकार 1607 में प्रकाशित **रेगुले सोसाइटेटिस जैसू** (Regulae Soicetates Jesus) में अन्य बातों के अतिरिक्त यह भी कहा गया, कि पत्रों का सेंसर होगा,[1] सबको आज्ञाकारी होना होगा,[2] तथा अपने अधीनस्थ अस्थायी अधिकार वालों को भी वर्ष में दो बार[3]

1 अध्याय 1।

2 अध्याय 1।

3 अध्याय 1।

शपथें दोहरानी पड़ेंगी। सदस्यों को केवल दो दो की पंक्ति में ही जनता के सम्मुख जाना पड़ेगा, महीने में एक बार नियमों का पाठ करना होगा व उनकी प्रतिलिपि तैयार करनी होगी। धार्मिक स्थान में प्रवेश करते समय द्वार की घण्टी 'टिन टिना बुलुम' (Tin Tinna bulum) न जोर से और न बार बार बजानी होगी अपितु सामान्य रूप से (ut par est) बजायी जानी चाहिये, बोली दबी आवाज में होनी चाहिये (ut religiosodecet) और किसी के सोने के कमरे की खिड़की रात्रि में खुली नहीं रहेगी।[1] प्रत्येक श्रेणी में पादरी (Rector) के पास एक **सेंसोरस-सेक्रती** (Censores Secreti) होगा जो उसके पास न पहुंचने वाले विषयों के सम्बन्ध में सूचना देगा।[2]

अन्यायियों की हत्या का सिद्धान्त (Tyrannicedc)

17वीं शताब्दी के जैसुइटों पर दो गम्भीर अभियोग लगाये जाते थे। एक यह कि उन्होंने अन्यायियों की हत्या करने का सिद्धान्त[3] सिखाया और दूसरे पाप स्वीकार करने की प्रक्रिया में आध्यात्मिक बातों का समावेश किया। अध्यात्म सम्बन्धी विषय पर उपयुक्त स्थान पर विचार किया जायेगा।[4] यहां पर यह ध्यान रखना चाहिये कि अन्यायियों की हत्या के सिद्धान्त का विशद स्पष्टीकरण दो स्पेनी जैसुइटों सुआरेज (Suarez) और मेरियाना (Mariana) के लेखो[5] में पाया जाता है। ये लेखक समझौता सिद्धान्त का स्वतन्त्र रूप में प्रयोग करते हैं जिन्हें ह्यूजनों लेखों (Writings) में, जैसे **विण्डीसियै कोंट्रा टिरेनोस** (Vindiciae Coutra Tyrannos) में प्रमुखता दी गई है, देखने में जैसुइट राजनैतिक सिद्धान्त प्रजातान्त्रिक थे, क्योंकि वे ऐहिक सर्वप्रभुता का आधार जनसाधारण की सहमति मानते थे तथा इसके विपरीत आध्यात्मिक सत्ता का आधार दैवी अनुमोदन मानते थे। ह्यूजनो लेखकों ने अन्यायियों की हत्या करने के सम्बन्ध में कभी नहीं लिखा। तथा कम से कम एक जैसुइट आध्यात्मवादी (मेरियाना) के मन में ऐसी कोई व्यथा

---

1 रेग्यूले कम्यून्स में स्मेटियम दे स्टटीट्यूम के सम्बन्ध में ऐसे नियम हैं।

2 पी० नाटालिस, दि स्ट्डीज, जेसु, इन मोन्युमेटा पेडागोगीसा एस० जे० (रोडेन्स एवं लोसीना द्वारा सम्पादित, मेड्रिड 1901)।

3 इस सम्बन्ध में काफी साहित्य उपलब्ध है। जैसुइटों के दृष्टिकोण को उचित रूप में समझने के लिए देखें ब्राउ रचित **लेस जैसुइटस दी लीजेन्ड**, जिल्द, 1 अध्याय 6। फिग्स रचित **फ्रान ग्रेसन टू अरोटियस**, भाषण 6, भी देखें।

4 देखें अध्याय 8

5 विशेषत: मेरियाना द्वारा रचित **दी रेगे एन्ड रेजिस इन्सटीट्यूशन**, तथा अध्याय 5 व 6 भी देखें।

नहीं थी। यह सामान्य स्वीकृत नियम था कि बलपूर्वक राज्य हस्तगत करने वाला (Usurfers) प्रथम आगन्तुक (first comer) द्वारा मारा जा सकता था। यदि एक न्यायोचित राजा विधर्मी हो गया हो या अपने धर्म के हितों का पालन न करता हो[1] तो उसे भी तलवार के घाट उतारा जा सकता था। यही कारण है कि तात्कालीन लोग विलियम दी साइलेण्ट (William the Silent) और फ्रांस के हेनरी तृतीय की मृत्यु और हेनरी चतुर्थ की हत्या का कारण जैसुइट लोगों का प्रत्यक्ष प्रोत्साहन बताते हैं[2] यद्यपि यह निराधार है। ऐसे लेखकों का वास्तविक उद्देश्य कैथोलिक राज्यों को पोप की शक्ति की अधीनता में लाना था और उसके समर्थन में प्रजातान्त्रिक समझौते से दलील देना असंगत था। कम से कम एक मामले में वे अपने द्वारा खोदे गये कुए में स्वयं गिर गये। चूंकि महारानी एलिजाबेथ ऐनी वोलीन (Anne Boleyn) की लड़की थी, अतः जैसुइट पारसंस द्वारा लिखित एक पुस्तक में उस पर राज्य हड़पने का आरोप लगाया गया तथा राष्ट्रों के अधिकारों की व्याख्या करते हुए बलपूर्वक कहा गया कि ऐसे राज्य हड़पने वाले व्यक्तियों को जो राज्य के धर्म को खतरे में डाले, निकाल दिया जाना चाहिए। इन विचारों को इतने जोरदार शब्दों में व्यक्त किया गया कि ह्विग (whigs) लोगों ने एक्सक्ल्यूजन-बिल (Exclusion Bill) पर बहस के दौरान कैथोलिक जैम्स (ड्यूक आफ यार्क) पर प्रहार करने के रूप में इस पुस्तक को पुनः छपवाया।[3]

जैसुइट्स द्वारा धर्म प्रचार (Ramification of the Jesuits)

पोलेन्ड पहला देश था जिसे जैसुइटों ने पूर्ण रूप में कैथोलिक बना लिया और यद्यपि प्रोटेस्टेन्टवाद वहां कभी भी पूर्णतया स्थापित नहीं हो सका तथापि इसके पूर्व कि यूरोप के दो सर्वाधिक शक्तिशाली कैथोलिक राज्यों में से एक में कैथोलिक राज्य स्थापित हो जावे, उन्हें रूढ़िवादी ग्रीक चर्च को हटाना पड़ा। वे

---

1 इस बात पर ध्यान रखा जाना चाहिए कि सूचे समाज द्वारा मेरियाना के विचारों का अनुमोदन नहीं किया गया था तथा मेरियाना एवं समाज के विचारों में गम्भीर अन्तर था, देखें **मरगज जैसुइट** (1630)।

2 देखें अध्याय 2। जैसुइट कीलर "अन्यायियों की हत्या" संबंधी सिद्धान्त की विवेचना करते हुए तर्क देता है कि जैसुइट सिद्धान्त केवल बलपूर्वक राज्य हस्तगत करने वालों के विरुद्ध ही लागू होता था, तथा न्यायकारी राजाओं के प्रति नहीं।

3 सोमर वोगल द्वारा रचित, **ए कान्फ्रेंस अबाउट दी नेक्सट सक्सेशन टू दी क्राउन आव इंग्लैंड** (1594)। 1681 में पुनः मुद्रित देखिये सोमर वोगल लिखित **बिबलियोथिक द ला क्ंम्पन द ज्यूस**, 6, 303।

हेनरी चतुर्थ के शासन में फ्रांस वापिस चले गये। स्पेन में वे शक्तिशाली थे किन्तु सर्वोपरी नहीं, क्यों कि वहाँ धर्म विरोधी व्यक्तियों की जांच कर उन्हें दण्डित किया जाता था। उस प्रकार का प्रबन्ध उनके प्रतिद्वन्द्वी डोमिनीकन्स (Dominicans) के हाथों में था। यद्यपि वेनिस से उन्हें निकाल दिया गया था वे बोहेमिया, बेवरिया और साइलेशिया में बस गये जहां उन्हें विटल्सवेच (Wittelbach) और हैप्सबर्गो का पूर्ण विश्वास और सहयोग प्राप्त था। प्रोटैस्टैन्ट इंग्लैण्ड में भी उनकी दण्ड विधान स्थिति गम्भीर थी, उनके विरुद्ध दडनीय कानून अत्यन्त कठोर थे इसलिए उन्हें वहां छद्मवेश में रहना पड़ता था परन्तु उनका कार्य केवल यूरोप तक ही सीमित न था, वे बहुत उत्साही धर्म प्रचारक और मार्ग प्रदर्शक थे, अतः वे विश्व के विभिन्न भागों की यात्रा करते, भारत, अफ्रीका और तिब्बत में अन्वेषण और धर्म परिवर्तन करवाते, जापान में अंग्रेजों से वादविवाद करते तथा प्रशान्तसागर के द्वीपों में उपदेश देते थे। इस महान् तथा धर्मरत अन्तर्राष्ट्रीय मठ के प्रतिनिधि धार्मिक एकता स्थापित करने के सतत प्रयास में, जिसे आत्मा की मुक्ति और राज्य की रक्षा के लिए सम्पूर्ण संसार आवश्यक मानता था, पीरू की खानों से लेकर चीन की वैधशालाओं तक उत्साहपूर्वक जुटे हुये मिलते थे।

पौराणिक गाथाएं और वास्तविक उद्देश्य (Legendary)

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इस सोसाइटी के सम्बन्ध में एक छोटे से तथ्य का आधार एक महान् कथा बन गई। हसनमुलर (HasenMuller) लिखित **हिस्टरी आफ दी जैसुइट्स** [1] नामक पुस्तक पहला निष्पक्ष इतिहास है। यह ऐसे अपवादों का एक संग्रह है जो केवल उन्हीं पाठकों के लिये था जो मठ की किसी भी बात पर विश्वास करने के लिये तैयार थे। 1612 ई० में **मौनिटा सीक्रेटा सोसाइटे टिस जैसू** (Manita Secreta societa tis Jesus) नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तक ने व्यापक रूप में लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया, इस पुस्तक में मठ के गुप्त आदेशों को प्रकट करने का दावा किया गया था, यद्यपि सम्भवतः यह पुस्तक या तो व्यंगात्मक थी या किसी निष्कासित सदस्य द्वारा प्रतिशोध की भावना से लिखी गई थी। इसका आशय यह सिद्ध करना था कि निर्धनता का आडम्बर दिखाकर किस प्रकार सोसाइटी धनवानों को विशेष कर स्त्रियों को, अपनी पैतृक सम्पति को त्यागने के लिए मुग्ध कर लेती थी। 17वीं शताब्दी में जैसुइटों के प्रति किये गये आक्रामक साहित्य से एक अच्छा खासा पुस्तकालय भर सकता है, यद्यपि यह सब प्रोटैस्टैन्टों द्वारा नहीं लिखा गया था। उनकी तुलना जैनिसरीज (Jannissaries), टैम्पलर्स (Templars), असेंसिस (Assassins), फैरिसीज

---

1 1593।

(Pharisees), छद्मवेश में फ्रायर्स (Friars), मैंलोच (Moloch), प्लेग आफ इजिप्ट (Palgue of Egypt), फ्लड (Flood) ओर बालाम के गधे तक से की गई है ।[1] जो अन्दोलन उनके विरुद्ध चला तथा जिसमें बहुत से उत्साही कैथोलिक भी सम्मिलित थे, उसकी तुलना सेमाइट (Semite) (मध्यपूर्व की भाषा बोलने वाली जाति) विरोधी भावना की उस महान् धाराओं से की जा सकती है जो समय समय पर यूरोप को प्रभावित करती रही है । कल्पित कथाओं के ढेर को, जिससे जैसुइटों को इतिहास भ्रष्ट हो गया है, अलग कर देने के बाद यह कहा जा सकता है कि प्रति धर्म सुधार काल में उन्होंने कैथोलिक देशों के आपसी बन्धनों को खूब जकड़ दिया और धर्म विरोधियों के विरुद्ध ऐसी निर्दयतापूर्ण कार्यवाही की जिससे वे लोग भी जो धार्मिक उन्माद के निकृष्टतम प्रदर्शन के अभ्यस्त थे, भयभीत हो उठे । यद्यपि वे सभी उच्च शिक्षा प्राप्त थे व उनमें ख्याति प्राप्त महान् विद्वान और वैज्ञानिक भी सम्मिलित थे तथापि वे ऐसे किसी भी आन्दोलन को जिससे धार्मिक हितों की किंचित मात्र भी रक्षा हो सके, कुचलने में नहीं हिचकिचाते थे वे गेलिलियों और इटली के नये वैज्ञानिक आन्दोलन के कट्टर शत्रु थे, और यदि फ्रांस में उनकी शक्ति दृढ़ होती तो वे पास्कल (Pascal) को कुचल कर रख देते । यह जानते हुए भी कि किसी समय बोहेमिया एक महान् देश रहा है, उन्होंने बोहेमियन संस्कृति को नृशंसतापूर्वक नष्ट कर दिया । उनकी शिक्षा का आरम्भ ही इस बिन्दु से होता था कि विचार स्वातन्त्रय की भावना राज्य को खतरे में डाल देती है । शताब्दी के आरम्भ में वैलामिर्न (Bellarimirn) ने यही घोषित किया था, **'लिबर्टास क्रेडेण्डी पीर्नसियोसा एस्ट''''''नमे निहिल एलियुड एस्ट क्लेम लिबर्टासहरेन्डी ।'**[2] (Libertas credendi Perniciosa est......nam nihil aliud est quam Libertaserrandi) जैसुइट बैकानुस[3] (Jesuit Becanus) का विश्वास था कि धर्म विरोधी लोग हत्यारों के समान खतरनाक हैं, आगे चल कर लेखक ने पोप की समानता **इजराइल के उच्च पुरोहित** (High Priest of Israel) से की जिसे राजाओं को नियुक्त और पदच्युत करने का अधिकार प्राप्त था । ऐसा कहा जाता है कि धर्म विरोधियों में विश्वास न रखने का सिद्धान्त सबसे पहले जैसुइटों ने प्रतिपादित किया था, किन्तु यह भी संभव है कि संभवतः उन्होंने यह नियम

---

1 क्रेव्स रचित **हाई पोलीटिके पब्लिसटिक एंड इहर गैगनर इन डेन लेटसटेन जंस्हेटन वोर असब्रच देस द्रसिगजरीगेन क्राइग्स** (इन हेलेशे अबडल्युगेन जुर न्यूरेन गेस्वीचेट) 70 ।

2 क्रेव्स द्वारा उदधृत, **पूर्व उदधृत** पृ० 3 ।

3 **वही,** पृ० 81 ।

लिबर सैक्ट (Liber Sext) में प्रतिपादित 'इन मैलिस प्रोमिसिस फिडेम नान एक्सपेडिट आब्जर्वरी' (In malis promissis fidem non expedit observari) केनन लाँ (Cannon Law) से निकाला हो।

कैम्पानैला

वास्तव में जैसुइटों की अपेक्षा एक डोमिनिकन ने इस पुनरूज्जीवित कैथोलिकवाद के आदर्शों को स्पष्ट रूप में अभिव्यक्ति दी। सन् 1599 में टामस कैम्पानैला (Thomas campanella) की **द मोनर्किया हिस्पानिका** (De Monarchia Hispanica) पुस्तक का प्रथम सस्करण प्रकाशित हुआ तथा सन् 1620 तक जर्मनी में कम से कम इसका एक अनुवाद तो पर्याप्त प्रसिद्ध प्राप्त कर चुका था। इस अद्‌भुत स्वप्नद्रष्टा की कल्पनाओं और अस्पष्ट बातों को आधुनिक पाठक पसन्द नहीं करते, यद्यपि फ्रांस और इटली में उसके लेखों के प्रति फिर से रुचि उत्पन्न होने लगी है। उसकी कुछ कवितायें चिरस्थाई हैं। तत्सामयिक लोगों ने **द मोनार्किया हिस्पानिका** (De Monarchia Hispanica) पर गम्भीरता से विचार किया और इसका प्रत्युतर भी दिया। इतिहासयज्ञों के अनुसार यह पुस्तक अपने समय के राजनीतिक सिद्धान्तों की व्यावहारिक दृष्टि से व्याख्या करती है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार की इस पुस्तक के पश्चात प्रकाशित होने वाली पुस्तक **दि सिटी आफ दी सन** (The city of the son) में इन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया। कैम्पेनेला अपनी पुस्तक **द मोनार्किया** का आरम्भ यह कह कर करता है कि संसार का अन्त दूर नही है, स्पेन के राजा जल्दी ही पवित्र रोमन साम्राज्य के उत्तराधिकारी होंगे, जो फारस, बेबीलोन और मेसीडोनिया के साम्राज्य के समकक्ष हैं, उसके पश्चात अराजक स्थिति उत्पन्न होगी जो ईसाई साम्राज्य के सम्मुख झुक जायेगी। धनु राशि (Sagittarius) में नक्षत्रों का महान् योग इस विश्व विकास के अधिक विस्तार पर प्रकाश डालेगा।[1] इसी बीच स्पेन के राजा को आस्ट्रिया प्राप्त करने के प्रयत्न अवश्य शुरू कर देने चाहिए। पोप को चाहिए कि वह तीनों प्रोटेस्टेन्ट इलेक्टरों को शाप दे दे और जब तक वे उसकी अधीनता स्वीकार न कर लें तब तक उन्हें उनके सम्मान (dignities) से वंचित रखा जाय। इस उद्देश्य की प्राप्ति और विधर्मियों को झुकने के लिए मजबूर करने के लिए फ्रांस, इटली और स्पेन को अपनी धर्मेतर शक्तियां संगठित कर लेनी चाहिए। जर्मन चरित्र में विचार तथा उसे कार्य रूप में परिणित करने में जो ढील-ढाल की जाती है, वह यह स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है कि योजना तैयार करने की क्षमता एवं उसे लागू करने की तत्परता ही सफलता दिलाती है।[2] जर्मन युवकों को धर्म-

---

1 द मोनार्किया हिस्पानिका, (सं० 1640), पृ० 51।

2 द मोनार्किया हिस्पानिका, (सं० 1640), पृ० 52।

विरोधी प्रवृतियों से हटाने के लिए, यह आवश्यक है कि उन्हें दर्शन तथा गणित-शास्त्र के अध्ययन, शास्त्रास्त्र तथा जहाज बनाने के कार्यों में लगाया जाय। साथ ही उन्हें ज्योतिष विद्या संबंधी कार्यों में भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस प्रकार के कार्यों के लिए अमरीका (नई दुनियां) सर्वाधिक उपयुक्त स्थल माना जा सकता है। प्रमुख ट्यूटनों को, जो असंतोष के केन्द्र बन गये हैं निर्वासित कर देना चाहिए, या उन्हें अलग कर देना चाहिए[1] तथा जर्मन कॉलेजों, कौंसिलों और मजिस्ट्रेटों के पीछे गुप्तचर लगा देने चाहिए। कैथोलिक जगत स्पेन और स्पेन के राजा से नेतृत्व की आशा करता है। इसलिए यह आवश्यक है कि स्पेन का राजा सदाचारी एव विवेकशील हो। सामान्यत: ऐसा स्वीकार किया जाता है, कि वंश पर जलवायु और नक्षत्रों का प्रभाव पड़ता है और चूंकि स्पेनिश राज्य वंशानुगत है अत: यह आवश्यक है कि उसका वैवाहिक संबंध निश्चित रूप से श्रेष्ठ कुल में हो, क्योंकि 'राजाओं की संतति समस्त संसार का विषय है।[2] स्पेन को एक उज्जवल भविष्य वाला देश माना गया है, और यद्यपि इसके साधनों को अच्छी तरह से काम में नहीं लाया गया है तथापि पड़ौसी देशों से भिन्न यह घरेलू और धार्मिक कलहों से पूर्ण मुक्त है। निःसन्देह इसका एक कारण यह भी है कि इसकी उपद्रवी प्रवृतियां विदेशों में और विशेष रूप से फ्लैन्डर्स (Flanders) व दक्षिण अमरीका में पाखण्डियों का दमन करने में लगी हुई हैं। इस पुस्तक के अनुसार स्पेन के राजकुमार को पादरियों और कप्तानों से शिक्षा प्राप्त करनी होगी, उसे कामक्रीड़ा न सीख कर गणितशास्त्र व शस्त्रविद्या सीखनी होगी तथा व्याकरण की अपेक्षा विधि का अध्ययन करना होगा। कैम्पेनोला के अनुसार यदि जर्मन और फ्रैंच राजाओं ने मानसिक व शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया होता तो सम्भवत: वे आज ह्यूगेनाट और लूथरनुयायियों के दास न होते।

इस उत्कृष्ट पुस्तक के लेखन ने दक्षिण इटली में स्पेनिश राज्य के विरुद्ध षडयंत्र में भाग लेकर एक हजार वर्ष बाद के युग को जिसका वह स्वप्न देख रहा था, जल्दी से लाने का प्रयत्न किया। षड़यन्त्र में भाग लेने के फलस्वरूप उसे कारावास का दंड दिया गया यद्यपि यह कारावास भी उसके विचारों में कोई उदार परिवर्तन न ला सका।

जर्मनी में जनमत

इसका उत्तर गास्परसिकोपियर्स[3] (Gaspar Sciopphius) ने दिया।

---

1 वही, पृ० 282।

2 वही, पृ० 67–68।

3 फ्रेंक्स, पूर्व उद्धृत पृ० 6।

स्पेनिश कोलोसस (Spenish Colossus) ने समूचे संसार पर छा जाने की धमकी दी थी, इस धमकी के प्रत्युनर में सिकोपियस ने जर्मन देशभक्ति की एक धाराप्रवाह अपील तैयार की। उसका मत था कि साम्राज्यों के भी अपने दिन होते हैं तथा केवल किसी न किसी प्रकार के शक्ति सतुलन से ही राजाओं को उनकी महत्वाकांक्षाओं के प्रति उदासीन रखा जा सकता है। जर्मनी संयुक्त प्रयत्नों से ही भावी खतरों एवं शत्रुओं से अपनी राष्ट्रीयता की रक्षा कर सकता था। सिकोपियस की यह घोषणा उन बहुत सी उक्तियों मे मे एक है जो गोल्डेस्ट (Goldast) के ग्रंथों में विस्मृत रूप में पडी हुई हैं। सत्रहवी शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षो में देशभक्तिपूर्ण जर्मन साहित्य उमड़ पड़ा, इस साहित्य के द्वारा स्पेन और जैसुइटों के विरुद्ध एक-जूट होकर प्रयत्न करने की प्रबल अपील की गई, यह साहित्य इसी शताब्दी में तथा बाद में, बोयनबर्ग (Boyneburg) और लीवनिज (Leibnitz) द्वारा फ्रांस के विरुद्व चलाये गये आन्दोलन का सहायक अंग था। इस प्रकार सन् 1602 में प्रकाशित एक पुस्तक[1] में जो प्रोटेस्टेन्ट इलेक्टरों को समर्पित की गई, जैसुइटों पर जर्मन लोगो में राजद्रोह की भावना के बीज बोने का आरोप लगाया गया और यह भी कहा गया कि यदि वे एक हो गये तो वे अजेय हो जायेंगे। बर्जर (Berger) ने[2] अपनी पुस्तक ट्रिन्टुबिग्रम **यूरोपियन** (Trinubium Europeaeum) (1612) में घोषणा की, कि जर्मनों की हगेरियनों और बोहेमियनों से गहरी एकता में ही आशापूर्ण भविष्य की सम्भावना है। यह पुस्तक सातों इलेक्टरों को समर्पित की गई थी। इससे अधिक बढ़िया पुस्तक जो 1608[3] में प्रकाशित हुई बेलग्रेड के स्टीफन पैनोनियस (Stephen Pannoneus) ने लिखी। यह प्रकट करते हुए कि हंगरी और निचले देशों (Low Countries) में कष्टों का कारण पोप और जैसुइटों के षडयन्त्र हैं उसने जैसा कि फ्रांस में होता था, सम्राट को प्रोटेस्टेण्ट मंत्री नियुक्त करने की सलाह दी। पैनोनियस के मतानुसार चर्च से शान्ति सम्भव है किंतु जैसुइटों से नहीं तथा कैथोलिक लूथरानुयायी और काल्विनिस्टों को पूजा की पूर्ण स्वतन्त्रता देनी चाहिए व मंत्रियों का चुनाव उनके धर्म के आधार पर नहीं, अपितु उनकी योग्यता के आधार पर होना चाहिये तथा त्रिमूर्ति (Trinity) के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाले सब लोगों को शान्ति से रहने देना चाहिये। उसने आगे कहा मनुष्य नहीं, उनके कारनामें खतरनाक होते हैं। **पेपिस्मम नान पेपिस्टास, डोक्ट्रिनम नोन होमाइन्स फुगिमर्स** (Papismum, non-Papistas, doctrinam non-homines fugimus)। दांते (Dante) के समान मैनोनियस का भी यह विचार था

---

1 गोलडास्ट कृत इम्पेरीएला (1614), 682।

2 वही, पृ० 422।

3 वही, पृ० 742।

कि यूरोप की शान्ति के लिए एक महान् और संगठित साम्राज्य की मौलिक आवश्यकता है। उसके अनुसार इस साम्राज्य के पूर्व में जेडया (Judaea), यूनान (Greece), हंगरी (Hungary), बोहेमिया (Bohemia), और पोलैण्ड (Poland) तथा पश्चिम में इंगलैंड, स्पेन, निचले देश, फ्रांस और इटली होंगे, जबकि मध्य में जर्मनी, सहिष्णुता और प्रबोधन (enlightenment) पर आधारित इस नई सभ्यता का भीतरी भाग होगा जो भाषा, कानून और राष्ट्रीयता के अन्तर को मान्यता देगा और उस सरकार के आज्ञापालन से संगठित रहेगा जो सीजर वंश से अब भी सीधे सम्बन्धित होने का दावा करती है। इस प्रकार यह पुस्तक इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि काफी समय पहले से ही मध्यकालीन साम्राज्य (mediaeval-empire) आदर्श बनता जा रहा था, निस्सन्देह यह आदर्श काफी दूर था और वह भी ऐसे संसार में जो मूलार्थक निष्ठा खोकर धर्म परिवर्तन कराने वाले लोगों के झगड़ों में बंटा हुआ था।

जर्मन जीवन का ह्रास (Degeneration in German life)

लेकिन जर्मनी ऐसी अपीलों को बहुत सुन चुका था तथा अब जर्मन देशभक्ति को सच्ची राजनीतिक शक्ति बनाने के लिये फ्रांसीसी-क्रांति जैसे युद्धों की आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त जर्मनी का धर्मसुधार के बाद का साहित्य अधिकांश रूप में उदासीनतापूर्ण है जो भावी घटनाओं के लिए व्यक्ति को तैयार होने में सहायता देता है। जहां तक राष्ट्रीय जीवन को प्रतिबिम्बित करने का प्रश्न है फिस्चर्ट (Fischart) से लेकर ग्रिमेल्शासन (Grimelshanon) तक का जर्मनभाषी साहित्य पाठक के मन में निराशा की भावना पैदा कर सकता है। यह एक ऐसे समाज का चित्रण करता है जो बहुत से अच्छे गुणों से सम्पन्न होते हुए भी अवरुद्ध और विकृत विकास की स्थिति में प्रवेश करता हुआ दिखाई देता है। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत से राज्यों का एक मिश्रित समुदाय बन गया, जिनमें से किसी की भी कोई विशेष संस्कृति नहीं है और जिसके अधिकांश राज्य एक शताब्दी पुराने धार्मिक विरोधों को कायम रखे हुए थे। हो सकता है कि उस समय के लोकप्रिय लेखकों ने चित्रकार ब्रियुगेल (Breughal) की तरह केवल उन्हीं बातों का वर्णन करना श्रेयस्कर समझा हो जिन्हें सामान्यतः जीवन में देखने की कोई परवाह नहीं करता। किन्तु यदि किसी राष्ट्र का साहित्य उसके सामाजिक गुणों का दिग्दर्शन है तो 17वीं-शताब्दी के प्रारम्भिक काल में जर्मनी में अश्लीलता यूरोप के अन्य किसी भी भाग से अधिक दुखदायी और स्थाई थी। ऐसे देशों में जहां प्रत्येक लोकप्रिय लेखक रोबेलेस[1] (Robelais) था वहां कुछ न कुछ कमियां अवश्य थीं। धार्मिक सुधारों

---

1 देखें जेनसेन कृत **हिस्ट्री आफ जर्मन प्यूपिल,** अध्याय 11, पृ० 376 एफ० एफ तथा जिल्द 16, **पेसिम**।

की आध्यात्मिक शक्तियां ख़त्म हो चुकी थीं, पुनर्जागरण ने जर्मनी में ऐसी कोई महान् परम्परा नहीं छोड़ी थी जो दूसरे देशों में पाई जाती हो, तथा धार्मिक हठ-धर्मी की शक्तियां समान रूप में विभाजित होने के कारण बहुत भयङ्कर थीं। वास्तव में फिस्वर्ट[1] की कृतियों के वातावरण और उसके समकालीन सरवेंट्स (Cervantes)[2] की चमकीली चमकदमक और अशमनीय परिहास की तुलना, साहित्यिक महत्व से अधिक है।

प्रति धर्म सुधारकालीन सम्राट (The Emperors of Counter Reformation)

चार्ल्स पंचम (1555) के द्वारा राज्य त्याग करने पर शाही प्रदेश दो भागों में विभाजित कर दिया गया—प्रथमतः आस्ट्रिया साम्राज्य, जिसका उत्तराधिकारी चार्ल्स का भाई फर्डीनेन्ड प्रथम हुआ, और दूसरा नई दुनियां तथा यूरोप के अधीन प्रदेशों सहित स्पेन, जो चार्ल्स के पुत्र फिलिप द्वितीय के वंश का परम्परागत राज्य बना। आग्सबर्ग (Augsburg) समझौते में धार्मिक प्रश्न का समाधान इस प्रकार किया गया, कि कैथोलिक और लूथर मतों को प्रमाणित मत मान लिया गया और **कुजुस रिजियो** (Cujus Regio) के अनुसार राजा लोग किसी भी एक या दूसरी धार्मिक पद्धति की भिन्नता रखने वाले व्यक्तियों का बहिष्कार कर सकते थे। आशा यह थी कि महान हैप्सबर्ग साम्राज्य का दो रूपों में विभाजन करने और लूथरन तथा कैथोलिक मतों में आपसी समझौते के परिणामस्वरूप आन्तरिक और धार्मिक संघर्ष कम हो जावेगा, किन्तु यह आशा फलीभूत नहीं हुई क्योंकि स्पेन और शाहीवर्ग में सहयोग के कारण हैप्सबर्ग की धमकी बनी रही तथा दूसरी ओर कुछ ही वर्षों में दो महान् धार्मिक सम्प्रदायों—जैसुइट और काल्विनिस्ट—की और वृद्धि हो गई जिसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में आग्सबर्ग समझौते वालों ने पहले कभी विचारा भी नहीं था। परिणामतः फ्रांस धार्मिक युद्धों के संघर्ष में फस गया, जिनका अन्तिम निर्णय **नान्ते की घोषणा** (Edict of Nantes) से हुआ परन्तु इसके बावजूद शाही प्रदेशों में जो शक्तियां काम कर रही थीं वे और भी अधिक जटिल एवं तात्विक थीं। ये शक्तियां 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जोर पकड़ती जा रही थीं। इस महान् संघर्ष के जल्दी आरम्भ न होने का एक आंशिक कारण यह भी था कि चार्ल्स पंचम के उत्तराधिकारी सम्राट फरडिनेन्ड प्रथम (1558–1564), मेक्सिमिलियन द्वितीय (1564–1576), रूडोल्फ द्वितीय (1576–1611), मेथियास (1611–1619) और फर्डिनेन्ड द्वितीय (1619-1637) में से केवल अन्तिम ने ही इसका सूत्रपात

1 जे फिस्चर्ट या मेन्ट्जर (1550–1614)।
2 1547-1616।

किया। फर्डिनेन्ड प्रथम समझौते के विरुद्ध नहीं था किन्तु वह निर्णय दे सकने की स्थिति में नहीं था तथा मेक्सिमिलियन द्वितीय धार्मिक विरोधों की पराकाष्टाओं के प्रति बिल्कुल उदासीन था। रूडोल्फ द्वितीय यद्यपि धर्मोन्मत लोगों से घिरा रहता था, तथापि उसने अपना धन, अपनी प्रतिष्ठा और पैतृक बौद्धिक सूक्ष्मता सभी कुछ खराब धातुओं को स्वर्ण में परिवर्तित करने के शोध कार्य में ही नष्ट कर दी।[1] फिर भी वह एकरूपता लाने का इच्छुक था किन्तु वह लोगों को कष्ट देने के विरुद्ध था। मेथियास राज्याभिषेक के समय अधेड़ अवस्था पार कर चुका था और उन परिस्थितियों को, जिनमें उसके परिवर्तित भाग्य ने उसे अचानक अवस्थित कर दिया, बदल नहीं सकता था इसलिए सामान्य सम्राटों के अर्ध-शताब्दी काल में, जो युवक और प्रचण्ड फर्डिनेन्ड द्वितीय के राज्यारोहण के साथ समाप्त हुआ, समझौते का समय टलता गया तथा साथ ही साथ इस सम्बन्ध में पहल (Initiative) करना भी आस्ट्रिया के आर्क ड्यूकों एव वृहतर जर्मनी के राजकुमारों के लिए ही सम्भव रह गया।

नवकैथोलिक आन्दोलन

सिक्सटस पंचम (1585-1590) पुनर्सुधार आन्दोलन का एक योग्य और उत्साही नेता था जिसने क्यूरिया (Curia) की अनेक अनियमितताओं को दूर किया और चर्च के प्रशासन में, जो अब सैनिक प्रवृत्ति का हो गया था, व्यवहारिक एवं कुशल नियंत्रण आरम्भ किया। सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ तक जर्मनी भाषी प्रदेशों में प्रोटेस्टेन्टवाद या तो जहां का तहां रहा या रक्षात्मक नीति अपना रहा था। जबकि दूसरी ओर कैथोलिक लोगों ने अपनी खोई हुई स्थिति को पुनः प्राप्त करना आरम्भ कर दिया था। सन् 1577 में कोलोन के आर्कबिशप गैवर्ड ट्रुचेस (Gebhard Truchsesess) के हगामें का यह परिणाम निकला कि धार्मिक नियोजकगण निश्चित रूप से प्रोटेस्टेंट प्रभाव में से निकल गये, और यद्यपि काल्विनवाद इस समय जर्मनी में स्थापित हो चुका था और धर्म सुधार आन्दोलन में नवीन स्फूर्ति भर रहा था, तथापि इसने प्रोटेस्टेंट दल में घातक फूट पैदा कर दी जिसका कैथोलिकों ने खूब लाभ उठाया। नवकथोलिक आन्दोलन ने एकता, संगठित नियंत्रण, प्रचार और शिक्षा का मूल्य अपने विरोधियों से अधिक समझा। ट्रेन्ट की कौंसिल[2] ने कैथोलिक सिद्धान्त और अनुशासन की स्पष्ट व्याख्या की थी तथा नए नए धार्मिक समप्रदायों की सहायता से पेपेसी ने अब यूरोप के नए प्रतिबन्धित

---

1 **डेनिस, फिनडे, इन्डिपेण्डेन्स बोहेमे,** वाकर कृत हाउस आव आस्ट्रिया, का इन सम्राटों के सम्बन्ध में अध्ययन अभी भी लाभप्रद है।

2 1545–1553।

क्षेत्रो से जो इसकी अधीनता स्वीकार करते थे, अधिक घनिष्ट सम्पर्क बनाये रखने के प्रयत्न किये । कैथोलिकवाद का धार्मिक जीवन स्पेन में संत थेरेसा (Saint Theresa), इटली में संत चार्ल्स बोरोमियों (St. Charles Barromeo) और कैथोलिक धर्म को मानने वाले प्रत्येक देश में संत इग्नेटियस लायोला (St. Ignatiusloyola) जैसे व्यक्तियों द्वारा पुन स्थापित किया गया जबकि दूसरी ओर प्राचीन धर्मावलम्बियों ने अपने पुर्नगठित स्कूलों और विश्वविद्यालयों द्वारा जनसामान्य को प्रशिक्षित किया तथा एतिहासिक परम्पराओं पर आधारित सैद्धान्तिक नियमों द्वारा पादरियों को शिक्षित किया तथा आध्यात्मिक साहित्य की व्याख्या करना अपना लक्ष्य बनाया । इसके विपरीत प्रोटेस्टेन्ट में अनेकता और अव्यवस्था फैलती जा रही थी, वे अपने अनुयायियों को एक सूत्र में नहीं बांध पा रहे थे । इस प्रकार 16 वी शताब्दी में विटेनवर्ग (Wittenburg) के प्रोटेस्टेन्ट विश्वविद्यालय की सतत अवनति और दूसरी ओर इगोल्डस्टेडट (Ingoldstadt) के कैथोलिक विश्वविद्यालय की सतत उन्नति दो प्रतिस्पर्धि दलों के पारस्परिक संघर्ष के आरम्भ का संकेत था ।

मैक्सिमिलियन आफ बेरिया

जर्मनी में पुर्नसुधार–आन्दोलन के दोनों धर्म निरपेक्ष नेता भावी सम्राट फरडिनेंड आफ स्टिरिया और मेक्सिमिलियन आफ विट्टलसवेच[1] अर्थात ड्यूक[2] आफ बेवेरिया इगोल्ड़ स्टैड्ट में प्रशिक्षित किये गये थे । वे दोनों लगभग समकालीन थे और दोनों ही 16वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में अपने वंशानुगत राज्यों के अधिपति बने थे । मेक्सिमिलियन ने अपनी डची पर 54 वर्ष तक राज्य किया और इस प्रकार फरडिनेन्ड़ से सत्रह वर्ष बाद तक भी शासन करता रहा । मेक्सिमिलियन पूरे उत्साह के साथ अपनी डची की अर्थव्यवस्था ठीक करने, टिली (Tilly) की सहायता से स्थाई सेना बनाने और (अगर सम्भव हो तो) अपने आस पास के राज्यों में रहने वाले धर्मविरोधियों की गतिविधियों को समाप्त करने के कार्य में जुट गया, यद्यपि उसमें फरडिनेन्ड के जैसे आदर्शवाद और जोश का अभाव था तथापि वह व्यवहारिक और राजनैतिक गुणों से युक्त था जिन्होंने उसे एक अज्ञात स्थिति से उठाकर जर्मनी और आस्ट्रिया–साम्राज्य दोनों की राजनीति में निरंकुश शासक (डिक्टेटर) के पद तक उठा दिया । बेवेरिया में प्रोटेस्टेन्टों की इतनी संख्या न थी कि वे प्रबल अल्पमत भी बना सकें । मेक्सिमिलियन के पितामह अल्बर्ट पंचम

1 फर्डीनेन्ड के सम्बन्ध में सबसे अच्छा विवरण लेमोरमेन द्वारा दिया गया है, परन्तु दुर्भाग्य से यह ब्रिटिश संग्रहालय या बोडलिन में उपलब्ध नहीं है ।

2 1581–1651 फार मेक्समिलियन्स रिआर्गेनाइजेशन आफ हिज डची देखिये, सेकरीबर कृत, मेक्सिमिलियन प्रथम, 57 एफ. एफ. ।

पहले ही इस बात को जानते थे इसलिए नये राजा ने राज्यारोहण करते ही प्रोटेस्टेन्ट पड़ौसी काउन्ट पैलेटाइन फिलिप (Count Palatine Philip) के साथ पत्र व्यवहार करके उसे धर्म परिवर्तित करने के लिए रेटिस्बान (1602) में एक सम्मेलन आयोजित किया गया, किन्तु ज्यों ज्यों उसकी बैठकें होती गईं त्यों त्यों वादविवाद कटु होता गया और व्यक्तिगत आक्षेप किये जाने लगे। इस असफलता के बाद मेक्सिमिलियन ने अपने आपको विचारों का प्रचार करने के अधिक प्रभावशाली तरीकों तक ही सीमित रखा।[1]

डोनावर्थ का मामला

उसका पहला सार्वजनिक कार्य डोनावर्थ के मामले में पड़ता था।[2] यद्यपि इस कस्बे में प्रोटेस्टेन्टों का बहुमत था, तथापि 11 अप्रैल सन् 1606 को ऐबट के नेतृत्व में टाउन कौंसिल के विरोध के बावजूद भी उसके बाजारो मे से एक जुलूस निकाला गया। प्रोटेस्टेन्टों द्वारा जुलूस भंग कर दिया गया। दोनों ही ओर हिंसात्मक घटनायें घटित हुई और शीघ्रता में की गई जांच के बाद रूडोल्फ ने 'साम्राज्य निषेध' (Ban of Empire) के अन्तर्गत डोनावर्थ कस्बे को कुचलने का कार्य मेक्सिमिलियन को सौंप दिया। डोनावर्थ की जनता में इसके विरुद्ध सर्व सम्मत रूप में उग्र भावनायें थीं। कस्बे ने अपने से विशिष्ट शक्तियों का वीरतापूर्ण प्रतिरोध किया किन्तु दिसम्बर, 1607 में उसे झुकना पड़ा। आत्मसमर्पण की शर्तें कठोरता की चरम सीमा की अभिव्यक्ति करती थीं। इन शर्तों के अनुसार डोनावार्थ को शाही शहर (Imperial city) मानना समाप्त कर दिया गया, इसके अतिरिक्त यद्यपि वहा के निवासी प्रोटेस्टेन्ट थे तथापि कस्बे की परिषद में कैथोलिक बहुमत होना आवश्यक कर दिया गया तथा साथ ही उसे बेवेरियन शासन के नियंत्रण में सौंप दिया। स्वभावतः प्रोटेस्टेन्ट निवासियों के लिए यह व्यक्तिगत दंड के समान था, इसलिए उनमें सम्राट द्वारा बिना डायट (Diet) की स्वीकृति के लिए निषेध (Ban) लगाने पर विशेष रोष था। साथ ही उन्हें इस बात का भी खेद था कि उसे लागू करने का काम स्वेबियन क्षेत्र के अध्यक्ष ड्यूक आफ बुर्टेम्बर्ग के स्थान पर वेवेरियन क्षेत्र के अध्यक्ष को सौंपा गया। यद्यपि यह घटना अधिक

---

1 देखें, ह्यूबर कृत गेसचीचेट ओस्टेराइक्स, जिल्द 9, अध्याय 1।

2 इस मामले का रोचक वर्णन ड्रोयसन कृत जितालटर देस ड्रेसिगजेरीगेन क्रीग्ज, 442 एफ.एफ. में उपलब्ध है। दाई पोलितिक मेक्समीलियन वोन बरेन (डब्लू० गोटस द्वारा सम्पादित) तथा दाइ पोलितिक बेयरंस (इन ब्रीफे एण्ड एक्टन जुद ग्रेस्चीचेट देस ड्रेसिगजेरीगेन क्रीजेस इन जितेन डी० वोरवालटेनडेन इनफ्लस देर विटेलवेच)।

महत्वपूर्ण नहीं थी तथापि इसने यह सिद्ध कर दिया कि आग्सबर्ग की धार्मिक शांति न्यायपूर्ण नहीं है और जर्मन प्रोटेस्टेन्टवाद को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।[1]

प्रोटेस्टेन्ट अथवा इवेन्जेलिकल यूनियन

इस घटना ने भारी क्षोभ को जन्म दिया, सन् 1608 में तो यह और भी बढ़ गया जब रूडोल्फ ने रैटिस्बोन की डायट में अपने क्रान्तिकारी भाई मैथियास को अपना प्रतिनिधि न बनाकर अपने चचेरे भाई हठधर्मी (Bigoted) फरडिनेन्ड को भेजा। डायट में प्रोटेस्टेन्ट तत्वों ने तुर्की के विरुद्ध युद्ध के लिए धन की स्वीकृति देने से तब तक के लिए इन्कार कर दिया जब तक कि आग्सबर्ग समझौते को पुन-स्थापित कर उसे लागू न किया जाय। इस पर कैथोलिकों ने इस बात पर बल दिया कि ट्रेन्ट की कौंसिल द्वारा आग्सबर्ग की सधि को रद्द किया जा चुका है अतः उसे लागू करने का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। इस प्रकार प्रोटेस्टेन्टों के पास आत्मरक्षा के लिए संगठित होने के अतिरिक्त और कोई विकल्प न था। काल्विनिस्ट पहले से ही इलैक्टर पैलेटाइन फ्रेडरिक के इर्द गिर्द दल बना रहे थे। मई 1608 में अहासन (Ahausen) में एक महत्वपूर्ण गुप्त सभा हुई जिसमें काउन्ट वुल्फगेग, विलियम आफ न्यूबर्ग, मारग्रेव फ्रेडरिक आफ बेडन डरलेच, ड्यूक आफ बुरोडबर्ग, ब्रेन्डनबर्ग का मारग्रेव, जोचिम इरनेस्ट और क्रिश्चियन आफ अनहाल्ट (Christian of Anhalt) उपस्थित थे। इस संधि का मुख्य उद्देश्य यह था कि धार्मिक शांति में काल्विनिस्टों को साथ मिला लिया जाय, यत्किंचित धार्मिक सम्पति को बनाये रखा जाये, प्रोटेस्टेन्ट हितों की रक्षा के लिए संगठन किया जाये, डायट में एक दल बनाकर काम किया जाये, और क्लीव–जूलिच (Cleve–Julich) में प्रोटेस्टेन्ट उत्तराधिकार के लिए बल दिया जाये। इस इवें-जेलिकल सघ (Evangelical Union) का संरक्षक फ्रांस का हेनरी चतुर्थ बना और इलेक्टर पेलेटाइन नेता नियुक्त हुआ। यद्यपि उसे ब्रेन्डनबर्ग के इलेक्टर की सहानुभूति प्राप्त थी तथापि वह किसी व्यवहारिक सहायता की आशा नहीं रख सकता था। इलेक्टर आव सैक्सनी की ओर से इसे कोई आश्वासन नहीं मिला था। इसका

---

1 इस घटना ने साम्राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में मेक्समिलियन के दावे को भी प्रभावित किया क्योंकि इस घटना के परिणामस्वरूप सभी प्रोटेस्टेन्ट उनके विरोध में एक हो गये थे। देखिये वोडगीटार्ट कृत **ल पोलितिक द हेनरी फोर्थ एज एलमेग्ने** (रिव्यू देग क्वेशन्स हिस्तोरिक्स, 37, 418) आग्सबर्ग समझौते के विरोध में कैथोलिक साहित्य के लिए देखिये क्रेम्स कृत **दाई पोलितिको पब्लिसटिक देर जेसुइटन एंड इहर गेगनर....** (**हेलेशे अवहेनडलंगन** 250, 207 एफ.एफ.)।

महत्व तो केवल इसलिए है कि इस संदर्भ में लूथर और काल्विनवादियों ने मिलकर काम किया। वैधिक दृष्टि से यह संधियां वैध नहीं थीं क्योंकि साम्राज्य अपनी प्रजा में इस प्रकार की संधियों की इजाजत नहीं देता था। इन संधियों को राजा के प्रति विश्वासघात भी कहा जा सकता था, क्योंकि यह फ्रांस से सहायता की अपेक्षा करती थी। किन्तु यह आरोप इसी मान्यता पर लगाये जा सकते थे कि 17वीं शताब्दी का जर्मनी एक राष्ट्र था। इसी प्रकार कैथोलिक संधियां भी अवैधानिक थीं तथा वे विदेशी सहायता पर और भी अधिक आश्रित थीं।

गिरजा सम्बन्धी आरक्षण (Ecclesiatical Reservation)

इवैंजेलीकल संघ का उद्देश्य इस तथ्य की याद दिलाता है कि उस समय धार्मिक प्रादेशिक प्रश्न इतने घुले हुए थे कि उन्हें पृथक नहीं किया जा सकता था। आग्सबर्ग की धार्मिक संधि (Religious peace of Augsburg) ने यद्यपि उन भूमियों को नहीं छोड़ा था जो सन् 1552 से पहले लूथरों द्वारा लौकिक मानी गई थीं किन्तु उन भूमियों के संबंध में कुछ भी नहीं कहा था जो धार्मिक संधि की तारीख (1555) के बाद लौकिक बना दी गईं थीं। जहां प्रोटेस्टेन्ट बहुमत में थे वहां भूमि का लौकिकीकरण जारी रहा, यद्यपि जेबहर्ड ट्रूचेस (Gebherd Truchess) की घटना से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि जब एक बिशप जिसका चुनाव कैथोलिक पादरी संघ ने किया हो, प्रोटेस्टेन्ट हो जाता था तो उसके अधिकार की भूमि चर्च को वापिस मिल जाती थी। गिरजा सम्बन्धी आरक्षण सम्राट के समादेश का नाम था जिसके अन्तर्गत ऐसे धार्मिक राजा के लिये जो कैथोलिक धर्म का त्याग करे, यह आवश्यक था कि अपनी गिरजा सम्बन्धी भूमियों का समर्पण कर दे, यद्यपि यह नियम प्रयोग में भी लाया गया किन्तु प्रोटेस्टेन्टों ने इसे हृदय से कभी स्वीकार नहीं किया। वे सफलता के साथ अपने इन तर्कों पर डटे रहे कि यह नियम ऐसे मामलों पर लागू नहीं होता जहां प्रोटेस्टेन्ट पादरी संघ ने प्रोटेस्टेन्ट बिशप चुना हो। दोनों ओर से रियायतें देने के फलस्वरूप व्यावहारिक समझौता संभव हुआ किन्तु किसी भी दल ने अपने सिद्धान्त नहीं छोड़े। समझौते के अनुसार सम्राट फरडीनेन्ड ने एक ओर तो यह मान लिया कि लूथरनों द्वारा गिरजा सम्बन्धी आरक्षण स्वीकार करने के बदले में प्रोस्टेस्टेन्ट नगर निवासियों और कुलीन वर्गों को कैथोलिक राज्य छोड़ने के लिये विवश नहीं किया जाय, दूसरी ओर जहां प्रोटेस्टेन्ट पादरी संघ द्वारा एक विशप या उनके धर्म के पादरी को चुनकर भूमियां को लौकिक किया जाता था, प्रोटेस्टेंट स्वीकार करते थे कि ऐसे मामलों में पोप द्वारा प्रमाणीकरण करना आवश्यक था, लेकिन वे इस कठिनाई को सम्राट से इस बहाने से छूट प्राप्त करके टाल देते थे कि पोप की स्वीकृत बहुत खर्चीली होगी। इस तरह से सम्राट इस

प्रबन्ध में साझीदार हो गया जिससे उत्तर जर्मन के अधिकतम पादरियों के दफ्तर लौकिक हो गये। इस प्रक्रिया का प्रत्यक्ष परिणाम यह निकला कि कई कैथोलिक राज्य जहां चुनाव होता था, शीघ्रता से वंशानुगत प्रोटेस्टेन्ट प्रदेश बनते जा रहे थे, क्योंकि वहां प्रेटेस्टेन्ट पादरी विवाह भी कर सकता था। सम्राटों ने जर्मनी के कुछ भागों में प्रोटेस्टेन्ट पादरी या प्रशासकों के स्थायित्व को अप्रकट रूप से स्वीकार कर लिया किन्तु उनसे यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वे वंशानुगत सिद्धान्त को लागू करना भी स्वीकार कर लें। इस प्रकार जब मेजबर्ग (Magdeburg), ब्रेमेन (Bremen), लुबेक (Lubeck), वरडन (Verden), मिन्डन (Minden), और हेलवर स्टेड्ट (Halber stadt) के पादरीगृह प्रोटेस्टेन्ट अधिकार में आ गये तो जर्मनी में सम्राट और कैथोलिक दल ने अनुभव किया कि मामला बहुत बढ़ चुका है और इस खतरनाक प्रक्रिया को शक्ति से रोकना चाहिये। इसी प्रकार प्रोटेस्टेन्ट राजकुमार अपनी इन अधिकृत सम्पतियों को अपने कब्जे में रखना चाहते थे, क्योंकि **कुजुसरेजियो** (Cujus regio) के नियमानुसार प्रदेश के साथ धार्मिक प्रभुत्व का अधिकार उसी प्रकार सम्मिलित था जिस प्रकार मध्ययुग के दौरान इसमें क्षेत्राधिकार का अधिकार मिला हुआ था। समूची स्थिति अनियमित और अस्पष्ट थी, कोई भी संतुष्ट नहीं था और जब कभी कुछ कार्यवाही की भी गई तो वह साधारणतया अवज्ञा या झुंझलाहट की भावना से प्रेरित होती थी।

कैथौलिक लीग

सन् 1608 के इवेन्जेलिकल संघ को जल्दी ही एक प्रबल कैथोलिक संघि का सामना करना पड़ा। कुछ कैथोलिक राजाओं ने, जिनके तीन प्रमुख पादरियों द्वारा शासित इलेक्टर भी थे, बेवेरिया के मक्समिलियन के नेतृत्व में 10 जुलाई, 1609 को एक रक्षात्मक लीग[1] पर हस्ताक्षर किये। इसका उद्देश्य पादरियों द्वारा शासित भूमियों पर अधिक अतिक्रमण का सामना करना और कैथोलिक धर्म की रक्षा करना था। मेक्सिमिलियन को लीग का कर्नल नियुक्त किया गया, और स्पेन ने इस शर्त पर आर्थिक सहायता का वचन दिया कि लीग के उद्देश्यों को सम्राट का समर्थन प्राप्त हो। इसी बीच में क्लीव-जूलिख प्रदेशों के उत्तराधिकार के प्रश्न से प्रादेशिक कठिनाई का संकट खड़ा हो गया। ब्रेडनबर्ग के इलेक्टर और न्यूबर्ग के काउन्ट फिलिप लुई, दोनों प्रोटेस्टेन्ट दावेदारों ने विवादग्रस्त इलाकों पर

---

1 सर्वप्रथम इस प्रकार का विचार 1607 में उत्पन्न हुआ था। जुनिगा (स्पेनिश राजदूत) तथा मेक्सिमिलियन द्वारा इस प्रकार का प्रस्ताव उपस्थित किया गया था। व्यावहारिकतः जुनिगा ने स्पेनिश सहायता का वचन दिया था। (सी.ए. कार्नेलाइन्स, डी गुन्डुंगड़र डेन्टस्कनेनींग, 29–30)।

अपना आधिपत्य जमा लिया। समकालीन व्यक्तियों ने अनुभव किया कि प्रोटेस्टैन्टों के निचली राईन की घाटी में इस अवैध प्रदेश में चर्च के निर्वाचक मण्डल को प्रत्यक्ष ख़तरा है, क्योंकि इससे वह क्रम पूरा हो गया जिससे लगभग सम्पूर्ण उत्तर जर्मनी प्रोटैस्टेन्ट हो गया, तथा इससे स्पेनिश नीदरलैंड की एकता के लिए गम्भीर खतरा पैदा हो गया। इस झगड़े को धार्मिक राजनीति की कसौटी समझा जाने लगा। यह संकट इसलिए टल गया कि दोनों में से एक प्रोटेस्टेन्ट कैथोलिक बन गया। यदि यह अप्रत्याशित अवस्था उत्पन्न हुई होती तो क्लीव–जूलिख का प्रश्न युद्ध छेड़ने के लिए पर्याप्त था, क्योंकि कोई भी दल अपनी विरासत को दूसरे के पास न जाने देना चाहता था।

यूनियन तथा लीग की कठिनाइयां

इस तरह सन् 1609 तक साम्राज्य के अन्दर दो विरोधी और सशस्त्र दल बन गये। दोनों अवैध थे, दोनों को विदेशी सहायता की आशा थी, परन्तु दोनों को अपने धर्मावलम्बियों का पूरा-पूरा समर्थन प्राप्त नहीं था। दोनों को आन्तरिक कठिनाइयां थीं, क्योंकि काल्विनवादी इलेक्टर पेलेटाइन को अपने लूथरवादी मित्र कठिनाइयां उत्पन्न करने वाले प्रतीत हुए। मेक्सिमिलियन भी दो विभिन्न दिशाओं से की जाने वाली प्रार्थना के कारण भ्रम में पड़ गया। हेनरी चतुर्थ ने विनय की कि उसे साम्राज्य के लिए सरकारी उम्मीदवार होना चाहिये और चर्च के निर्वाचकों ने कहा कि वह लीग की शक्तियों को क्लीव-जूलिख भूमि से प्रोटेस्टैन्टों को निकालने के लिए लीग की शक्ति का उपयोग करे। सम्राट रूडोल्फ द्वारा क्लीव–जूलिख प्रदेशों पर अधिकार कर लेने के कारण इवेंजेलिकल संघ ने फरवरी 1610 में हेनरी चतुर्थ को अपना मित्र बना लिया, उसी महीने में कुछ पादरी और स्टिरिया का फरडिनेन्ड कैथोलिक लीग में सम्मिलित हो गये। किन्तु लीग रूडोल्फ से इसका समर्थन प्राप्त करने में असफल रही। इसलिए स्पेन ने स्पष्ट सहायता नहीं की। इस बाधा को दूर करने के लिए मेक्सिमिलियन ने अपने साले के पक्ष में त्यागपत्र दे दिया। इस चाल से लीग को हेप्सबर्ग से इतना समर्थन प्राप्त करने में सफलता मिल गई जिससे कि वह स्पेन से आर्थिक सहायता ले सके। इस पर फिलिप तृतीय को लीग का रक्षक और फरडिनेन्ड को उसका लेफ्टीनेण्ट घोषित किया गया और मेक्सिमिलियन को लीग की सेवा की अध्यक्षता स्वीकार करने के लिए तैयार कर लिया। मई, 1610 में प्राग की संधि द्वारा स्पेन ने तीन वर्ष के लिए आर्थिक सहायता देने का वचन दिया और इसके लिए पोप का समर्थन भी प्राप्त कर लिया गया। इस प्रकार दोनों दल युद्ध के लिए तैयार हो गये। परन्तु मई, 1610 में हेनरी चतुर्थ की अप्रत्याशित मृत्यु के कारण निर्णय फिर स्थगित हो गया। प्रोटैस्टेण्टों ने यह अनुभव किया कि वे फ्रांसीसी सहायता के बिना कुछ नहीं कर

सकते। अतः उन्होंने अनुकूल समय की प्रतीक्षा करने का निर्णय किया।[1] इस प्रकार विरोधी दलों को अवश्यम्भावी सङ्कट के लिए अपनी शक्ति दृढ करने के लिए खुली छूट मिल गई।

क्लीव-जूलिख समस्या का समाधान

क्लीव-जूलिख का प्रश्न चार वर्ष से पहले हल नही हो सका। न्यूबर्ग के काउण्ट पेलेटाइन ने इन प्रदेशों को हस्तगत करने का कार्य ब्रैन्डेनबर्ग के इलैक्टर के साथ मिलकर अपने पुत्र वुल्फगैंग विलियम को सौंप दिया। दोनों ने जल्दी ही झगड़ा कर लिया और फिर मित्रों की खोज करने लगे। वुल्फगैंग ने बेवेरिया के मेक्सिमिलियन की सबसे छोटी लड़की से विवाह कर लिया और कैथोलिक बन गया। ब्रैंडनबर्ग ने डच सहायता से जूलिख पर अधिकार कर लिया और काल्विन-वादी बन गया। साम्राज्यवादी जनरल स्पिनोला ने बेवेरिया के धन और स्पेन के सैनिकों की सहायता से डचों को निकाल बाहर किया और तब वे लूट के माल को फिर विभाजित करने के लिए सहमत हो गये। जैण्टेन (Xanten) संधि के अनुसार, जो 7 अक्तूबर, 1614 को हुई, न्यूबर्ग को जूलिख[2] और बर्ग (Berg) मिले जबकि क्लीव और रेवेंसबर्ग (Rovensberg) ब्रैंडनबर्ग के नाम कर दिये गये। इसी शताब्दी में बाद में फिर विभाजन[3] हुए और झगड़ा सदैव युद्ध छेड़ने का सरल बहाना बना रहा, किन्तु अन्त में यह सारी विरासत ब्रैण्डनबर्ग कुल ने ले ली।[4]

प्रोटेस्टेंट एकता के लिए आधार

सन् 1614 का वर्ष इसलिए स्मरणीय है, क्योंकि इस वर्ष प्रोटेस्टैण्ट धर्मा-वलम्बियों[5] के दो विरोधी भागों में एकता के पक्ष में एक ही प्रार्थना प्रकाशित हुई। हीडेलबर्ग के काल्विनिस्ट विश्वविद्यालय में आध्यात्म विद्या के प्रोफेसर पेरियस (Pareus) ने अपनी आइरेनिकम (irenicum) में लिखा कि काल्विनवादियों और लूथरवादियों के मतभेदों पर विचार करने के लिए प्रोटेस्टेण्ट पादरियों की एक आम-

---

1 संवैधानिक सुरक्षा हेतु अक्तूबर 1610 में कैथोलिक जर्मनी को लूथरन जर्मनी के साथ एकीकृत करने का प्रयत्न किया गया था, परन्तु सम्राट तथा सेक्सोनी के इलेक्टर के कारण यह योजना सफल न हो सकी। इसके लिये देखिये के. लोरेंज कृत **डाई एन्टविकलंगडर क्रिचलेस्च** पोलीटीशन वरंहान्टनिस, इन डियुट्शलैंड, पृ० 13।

2 1794 तक जूलिख न्यूबर्ग के पास रहा, बाद में फ्रांस द्वारा इस पर आधिपत्य जमा लिया गया तथा 1814 में ब्रैंडनबर्ग को दे दिया गया।

3 विशेषतः 1624 तथा 1666 में।

4 1814 में।

5 देखिए क्रेब्स रचित **पोलिटीशे परिलसिटिक**, पृ० 93।

सभा बुलाई जाये और चर्च सम्बन्धी फूट को समाप्त किया जाय, जिसके फलस्वरूप कैथोलिक बहुत अधिक लाभ उठा रहे थे। इसे दो बेमेल सिद्धान्तों को मिलाने का प्रयास (Syncretism) कहा जाता था। इस प्रस्ताव ने प्रोटैस्टैण्टों में कोई रुचि उत्पन्न नहीं की, अपितु कैथोलिकों की ओर से इस पर कई आक्रमण हुए। जैसुइट, मेंज का रुडमकोंटजेन तो अपने धर्म के शत्रुओं में मेल होने की सम्भावना से इतना भयभीत हो गया कि उसने पेरियस के विरुद्ध दो घोषणाये निकालीं।[1] उनमें से एक में उसने कहा कि सिन्क्रेटिज्स या झूंटी शान्ति केवल तभी सम्भव हो सकती है, जब पूर्ण धार्मिक एक्य हो। शान्ति[2] का प्रश्न उठाने से पहले विधर्मियों को मूलसंघ में प्रविष्ट करना पड़ेगा। उसने घोषणा की कि प्रोटेस्टैण्टों का पक्ष उत्तरोत्तर निर्बल रहा है, और कुछ वर्षों में वह स्मृति मात्र रह जाएगा। अभी भी तीन राजाओ इलेक्टर पेलेटाइन, हेस का लैंडग्रेव और ब्रैंडेनबर्ग का इलेक्टर लूथरवाद से काल्विनवाद में परिवर्तित हो चुके हैं। उनको घूम फिर कर पुनः कैथौलिक सम्प्रदाय में वापिस प्रवेश करने में क्या रुकावट थी ? **फेसाइल एस्ट यूरोप फिडेम रेडरे, एक सार्वजनिक कौंसिल** सैद्धान्तिक विभेदों का फैसला कर देगी और शान्ति एवं एकता की नई शताब्दि का प्रतिष्ठापन करेगी। ये दोनों लेख–पेरियस और कोटजेन-अपने समय में लोगों की मन स्थिति को स्पष्टतया प्रतिबिम्बित करते हैं। एक, केवल प्रोटैस्टैण्ट श्रेणियों में एकता के लिये आवाज बुलन्द करता है और दूसरा, कट्टर धर्मावलम्बी शक्ति के पूर्ण प्रभुत्व के सहारे इस बात पर बल देता था कि चाहे एक हो या बंटे हुए, प्रोटैस्टैण्टों को विना शर्त चर्च के आगे झुकना पड़ेगा जिससे वे भटक गये थे। ऐसे वातावरण में कोई समझौता सम्भव नहीं था। अध्यात्मवादी सहमत नहीं हो सकते थे इसलिये तलवार के द्वारा ही उसका निर्णय सम्भव था।

रूडोल्फ तथा हैप्सबर्ग नीति

इस समय कैथोलिक चर्च एक संयुक्त मोर्चे के रूप में था। इसके प्रतिरूप में हैप्सबर्ग परिवार में शक्तियों का क्रमिक एकीकरण हो रहा था। सम्राट चार्ल्स पंचम के राज्य त्याग के समय से, शक्तियां बिखर गई थीं। फर्डीनेन्ड प्रथम ने परिवार के छोटे सदस्यों को टाइरोल, ब्रेसगो, स्टीरिया, केरिन्थिआ, कारनिओला और अल्सेस की वसीयत करके इस क्रम को और बढ़ाया। इन पारिवारिक समझौतों का परिणाम यह निकला कि रूडोल्फ साम्राज्य की गद्दी पर बैठा तो उसके पास

1 **साइनोड़ो इमेन्जेलिकोरम** तथा **डी पेस जर्मनी**। के० ब्रिश्चर कृत **आदम वान्टजेन्डयन इरेनिकर**, पृ० 41 भी देखिये।

2 कोन्जन द्वारा इरेनिकन शब्द का उपयोग पेरूज द्वारा उपयोग में लाये गये इरेनिकुम का आलोचनात्मक रूप हो जाता है।

आस्ट्रिया, बोहेमिया और हंगरी ही वंशानुगत प्रदेश थे, जिनमे से अन्तिम दो मे प्रबल राष्ट्रीय अकांक्षायें थी और वे विद्रोह की प्राथमिक स्थिति में थे। बाक्से के नेतृत्व में हंगरी ने विद्रोह कर दिया तथा तुर्की सेना की सहायता से आस्ट्रिया पर धावा बोल दिया (1605)। बोक्से ने अपर आस्ट्रिया और ट्रांसिल्वेनिया को रोंद डाला जबकि तुर्की ने पेस्थ और ग्रेन पर अधिकार कर लिया। संयुक्त तुर्की और राष्ट्रीय धमकी के सामने ऐसा मालूम होता था कि पूर्वी यूरोप में हैस्पबर्ग की अधिकांश भूमि छिन जायेगी और इस प्रकार साम्राज्य पर परिवार का आधिपत्य खतरे में पड जायेगा—यह ऐसा भय था, जिसके कारण रूडोल्फ के भाइयों मेथियास और मेक्सिमिलियन और उसके चचेरे भाइयों फर्डीनेन्ड और मेक्सिमिलियन अरनेस्ट, ने मिलकर अयोग्य रूडोल्फ को अपनी शक्ति के कुछ भाग को छोडने के लिए बाध्य किया। उनका प्रस्ताव था कि मैथियास को मनोनीत सम्राट और उप-पदाधिकारी घोषित कर दिया जाये। लेकिन रूडोल्फ ने इस प्रस्ताव को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। अपने छोटे भाई के प्रति उन्मुक्त शत्रुता ने आर्क ड्यूकों में चिन्ता[1] उत्पन्न कर दी। उन्होंने अप्रेल 1606 में वियना को इसके लिए बाध्य किया कि वह मैथियास को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दे और तब उसने, इसी वर्ष बाद में सितवा—तोरोक की संधि की जिसके अनुसार ग्रेन और कोनिस्वा तुर्की के अधिकार में रहे परन्तु तुर्की ने वार्षिक कर का अपना दावा छोड दिया, जबकि बोक्से को हैस्पबर्ग सत्ता के अधीन[2] ट्रांसिल्वेनिया में नियुक्त कर दिया गया। साथ ही मेथियास ने सार्वजनिक समर्थन प्राप्त करने के लिए हगरी में[3] धार्मिक सहिष्णुता की घोषणा की और रूडोल्फ ने इससे चिढ़कर सितवा—तोरोक की संधि की पुष्टि करने से इन्कार कर दिया। दो वर्ष बाद रूडोल्फ झुक गया और उसने मेथियास को हंगरी, आस्ट्रिया और मोरेविया दे दिये तथा अपने पास केवल बोहेमिया और साइलेशिया ही रखे। इस समय सम्राट का जीवन अंधकारमय था। कुछ समय तक के लिए वह पागलपन के दौरे का शिकार भी हो सकता था। सन् 1606 तक उसके विशेषाधिकार आर्कड्यूकों ने ले लिये जिनका प्रधान मेथियास था जो अपने मन्त्री खलेसल द्वारा प्रेरित था। रूडोल्फ का आचरण झिझकभरा और असम्बद्ध मालूम होता है।[4] यद्यपि उनके ग्रंथ रक्षागृह नष्ट कर दिये गये थे तथा

---

1 वादविवाद की खाई को पाटने के लिए पोप द्वारा अथक प्रयास किये गये। पोप का ऐसा विश्वास था कि मेथियास को रोम का बादशाह नियुक्त किया जाना चाहिए।

2 डूमोन्ट कृत **कोर्प्स डिप्लोमेटिक** खण्ड 2, पृ० 78।

3 डूमोन्ट कृत **कोर्प्स डिप्लोमेटिक** खण्ड 2, पृ० 68।

4 डैनिस कृत फिनडे **एल इन्डिपेन्डेन्स बोहेम,** खण्ड 2, पृ० 346।

उसके विषय में उसके शत्रुओं के आलेखों से ही जानकारी होती है, तो भी ऐसा लगता है कि वह दो मुख्य इच्छाओं से प्रेरित हुआ होगा–विधर्मियों से भय और शासक के नाते किंचितमात्र भावना से। उसका विश्वास था कि साम्राज्य की सुरक्षा के लिए हंगरी पर अधिकार रखना नितान्त आवश्यक है। उसको मेथियास द्वारा विद्रोही बोक्से को मान्यता देने पर बहुत रोष आया। इसके साथ ही साथ वह एक उत्कट कैथोलिक था किन्तु किसी को पीड़ा देने के विरुद्ध था। सन् 1608 तक उसके पास केवल एक महत्वपूर्ण प्रदेश बोहेमिया रह गया था और इस प्रकार कुछ वर्षों तक प्राग, जो किसी समय महान सम्राट[1] का प्रिय निवास स्थान था, अब साम्राज्य की नाम मात्र की राजधानी रह गया।

हेप्सबर्ग भूमि में धार्मिक सुविधाएं

मनोनीत सम्राट के हाथों में प्रदेशों का केन्द्रीयकरण कुछ बलिदान (त्याग) के बिना नहीं हुआ था। प्रोटैस्टेन्टवाद पूर्वी यूरोप मे जम चुका था, और हगरी में इलेशेजी, मोरेविया में जीरोटिन और आस्ट्रिया[2] में स्वेरनेम्बर जैसे व्यक्तियों के नेतृत्व में यह एक दृढ़ आन्दोलन बन गया था। मेथियास ने कुछ रियासतें देकर अपनी स्थिति को दृढ़ बना लिया, किन्तु ये रियायतें हर जगह अलग–अलग थीं। हगरी में कस्बों, गांवों और कुलीन वर्गों को धार्मिक स्वतंत्रता दी गई थी। जबकि आस्ट्रिया और मोरेविया में यह रियायत केवल कुलीन वर्ग को ही दी गई। रूडोल्फ ने बोहेमिया में रियायतें देना हितकर समझा और उसने अपने मंत्रियों, लोबकोविट्ज, मार्टिनिट्ज और स्लावाटा की सलाह के विरुद्ध भी **लेटर आफ मैजिस्टी** पर हस्ताक्षर कर दिये जिससे बोहेमिया, साइलेशिया और लुसेशिया के राजकीय नगरों और कुलीनवर्गों को मन्दिर बनाने और लूथरवाद को बोहेमियन विधि से मानने का अधिकार मिल गया। ये अधिकार मोरेविया को भी दे दिये गये। इस प्रकार समकालीन लोगों को ऐसा प्रतीत हुआ होगा कि व्यक्तिगत जीवन को स्वतंत्रता प्रदान कर दी गई है।

बोहेमिया में धर्म

इस समय यूरोप में व्याप्त शान्ति तूफान से पूर्व निस्तब्धता के समान थी। हैप्सबर्ग अपनी प्रतिक्रियावादी नीति का आरम्भ करने के लिए रूडोल्फ की मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे, उधर बोहेमिया में पहले से ही महान् बडवानल के तमाम

---

1 चार्ल्स चतुर्थ (1316–1378)।

2 इस विषय के लिये देखिये जिडले कृत **गेगन रिफरमेशन, एंड दर ऑस्टेंड इन ओवेरोस्टेरिच इम जेहर**, 1626, **इन सिटजउनब्राइट देर केजरलिचन**, एकेडेमिक **देर विसेनसे हेकन**, बेंद oxviii।

साधन उपस्थित थे। किसी भी अन्य देश में धार्मिक विभेद की परम्परायें इतनी गहरी न थीं, और न ही उतनी सचेत और प्रभावशाली राष्ट्रीयता थी। बोहेमिया में धर्म सुधार से बहुत पहले एक प्रकार का प्रोटेस्टेन्टवाद विद्यमान था। जॉनहस का बलिदान और जिस्का[1] के प्रबल अभियान पुरानी कहानी की घटनायें मात्र रह गई थीं। लग्जेम्बर्ग के सम्राट चार्ल्स चतुर्थ ने, यद्यपि वह स्वयं ट्यूटन था, पहले ही चौदहवीं शताब्दी में देशी भाषा, साहित्य और व्यापार को प्रोत्साहित करके तथा प्राग को यूरोप की राजधानी बनाकर जेकों की आन्तरिक अभिलाषाओं का विकास किया था। 17वीं शताब्दी तक बोहेमिया के केवल दो नगर पिल्सन और बुडवीस कैथोलिक रह गये थे।[2] इस प्रकार जनसंख्या में स्लावों और गैर कैथोलिकों का बाहुल्य था। किन्तु कैथोलिकवाद, यूट्रेक्विज्म लूथरवाद, काल्विनवाद और बोहे-मियन भाइयों के सिद्धान्तों की अद्भुत मिलावट होने के कारण यह पश्चिमी यूरोप के तमाम नये और पुराने धर्मों के परिवर्तनगृह की तरह बन गया था। बोहेमिया प्रति धर्म सुधार का विप्लव केन्द्र था। अन्य किसी भी देश के लिए यह बात इतनी यथार्थ नहीं है जितनी कि बोहेमिया के लिए कि इसाई धर्म शान्ति नहीं बल्कि तलवार लेकर आया।

बोहेमियन भाईचारा

यूट्रेक्विजम बोहेमिया में अब पाखण्ड के रूप में समाप्त हो चुका था तथा राजकीय धर्म होने से इसकी लगभग बहुत सी शक्ति क्षीण हो गई थी। इसमें और कैथोलिकवाद में प्रमुख अन्तर यह था कि ये लोग पुरोहित और सामान्यजन दोनों को प्याला देने पर जोर देते थे। तथापि इसने 16वीं शताब्दी के धर्म सुधार से कुछ और तत्व भी ले लिये थे तो भी यह 17वीं शताब्दी में संचालक शक्ति नहीं रही थी। जिस दल ने देश में संयुक्त लूथरदल के बनाने में रुकावट डाली वह बोहेमियन बिरादरी थी, जिसकी स्थापना 15वीं शताब्दी में हुई थी। इस आन्दोलन को उन लोगों की ओर से जिन्हें पुराने यूट्रेक्विस्ट सिद्धान्तों से संतोष नहीं हुआ था, उत्साहवर्धक उत्तर मिला। बिरादरी को यूट्रेक्विज्म के नैतिक पतन से सहायता मिली, यद्यपि यह टैबोराइटों की भांति क्रांतिकारी नहीं था। धर्म ग्रन्थों (गोस्पेल) की शाब्दिक व्याख्या के आधार पर उनका उद्देश्य इस प्रकार का जीवनयापन करना या जैसा उनके विचार से, ईसामसीह उनसे करवाना चाहते थे। उनके आचरण सम्बन्धी विचार वही थे जो **सर्मन आव द माउन्ट में** थे। कोनवेल्ड और लोकेव जैसे पवित्र व्यक्तियों द्वारा मार्गदर्शन से वे **इवेन्जलिस्ट और** प्रजातन्त्रवादी

---

1 हुसेटस का नेता (1360–1424)।

2 डेनिस, पूर्व उद्धृत, खन्ड 2, पृ० 324।

हो गये, किन्तु विद्रोही कभी नहीं हुए। 'प्रत्येक व्यक्ति पादरी है' के सिद्धान्त पर वे जनसामान्य को अपनी संस्था की सरकार में भरती कर लेते थे किन्तु उनमें ऐसे कोई सकारात्मक और रचनात्मक तत्व नहीं थे जिन्होंने काल्विनवाद को योद्धा और विजेता के गुणों से सुसज्जित कर दिया था। उनका दृष्टिकोण परलोकवादी था। इसके साथ ही साथ वे अनेक व्यावहारिक कार्यों में भी सलग्न थे। वे सनिष्ठ शिक्षक थे, उन्होंने कोमिनियस जैसा व्यक्ति उत्पन्न किया जो प्लेटो के पश्चात् शिक्षा विज्ञान का सबसे बड़ा व्याख्याता था। किन्तु उनका झुकाव सामाजिकता और समाज की प्रथाओं से अपने आपको अलग रखने की ओर था। उनका विश्वास था, कि केवल कृषि ही एक पूर्णतया न्यायसंगत व्यावसाय है, नगर का जीवन अवश्य ही पाप पूर्ण होता है और ईसामसीह तथा ससार साथ साथ नही रह सकते। वे 1602 में राज्य के सम्पर्क में आये और तभी उन पर रोक लगा दी गई। उनके सब गिरजाघर कैथोलिकों और यूट्रेक्विस्टों को दे दिए गए। इसके पश्चात् वे संकटपूर्ण स्थति में रहे। उन्होंने अपना संगठन गुप्त धार्मिक सभायें करके, बोडोवेट्स नामक एक धनी जमींदार के नेतृत्व में बनाये रखा। इस जमींदार ने उनके सिद्धान्त स्वीकार कर लिये थे [1]। किन्तु ये सिद्धान्त 17वीं शताब्दी में अव्यावहारिकता से भी बुरे थे। वे घातक थे, क्योंकि उन्होंने स्वतः ही अपने अनुयायियों को कार्यारम्भ की समस्त वृति से वंचित कर दिया और षड़यन्त्रकारी शत्रुओं और आध्यात्मिक आदर्शवाद के उन तत्वों को उत्तेजित किया जिन्होंने बोहेमिया को हैप्सबर्ग आकांक्षाओ का सरल शिकार बना दिया था। ये ऐसे गुण थे, जिन्होंने स्लावजाति के राजनैतिक भविष्य को अवरुद्ध किया। इस अभागे देश को जल्दी ही एक महती विपदा से गुज़रना पड़ा जिसके लिये यह आन्दोलन प्रचुर रूप में उत्तरदायी था।

बोहेमिया में जातिभेद

यद्यपि किसानों की अधिकतम संख्या नाममात्र के लिए यूट्रेक्विस्ट या कैथोलिक थी किन्तु वास्तव में वे गुप्त रूप से बोहेमियन बिरादरी से प्रभावित थे। लूथरनों का अधिक बहुमत मध्यवर्ग में था। लूथरनों और यूट्रेक्विस्टों के विपरीत काल्विनिस्टों, जैसुइटों [2] और बोहेमिन बिरादरी में उत्साह और निष्ठा थी। बोहेमियन कुलीनवर्ग, देश का मुख्य अभिशाप था [3]। अनेक बार उनके धर्म परिवर्तन लालची उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये होते थे। उनका उद्देश्य था, कि एक राज्यधर्म हो जो उनके आश्रितों पर बलपूर्वक लागू किया जाय, चाहे इसके सिद्धान्तों

---

1 डेनिस, पूर्व उद्धृत, खण्ड 2, 340।

2 17वीं शताब्दी के आरम्भ में बोहेमिया में करीब 200 जेसुइट थे।

3 डेनिस, पूर्व उद्धृत, खण्ड 2, पृ० 325।

को मान्यता देना आवश्यक न हो। उनमें देश भक्ति न थी, वे बुर्जुआ और किसान वर्ग को अपना स्वाभाविक शत्रु मानते थे और अपने क्षुद्र वैयक्तिक स्वार्थों के लिये अपने देश के साथ विश्वासघात करने के लिये प्रायः तैयार रहते थे। स्लेवाटा ने[1] जिससे अपनी जाति के विरुद्ध द्वेष की कम सम्भावना थी, लिखा था कि रूडोल्फ और मेथियास के समय में कदाचित् ही उनके विरुद्ध कार्यवाही की जाती थी चाहे उन्हें घोरतम अपराध का दोषी ही क्यों न ठहराया गया हो। ये कोई कर अदा नहीं करते थे और चूंकि वहां कोई सेना नहीं थी अतः उनके लिए जोश प्रदर्शित करने का कोई स्त्रोत नहीं था। हृप्सबर्गों द्वारा बोहेमिया विजय के कुछ अच्छे परिणामों में से एक यह था कि 1627 के संविधान द्वारा उनकी विशाल शक्तियां काफी कम कर दी गईं। कुलीनवर्ग के षडयन्त्रों और साम्प्रदायिक युद्धों द्वारा फूट पैदा करने वाली शक्तियों के अतिरिक्त यहां स्लाव और ट्यूटनों की पुरानी जातिगत घृणा भी थी। इस सम्बन्ध में यह पुनः स्मरणीय है कि 17वीं शताब्दी में बोहेमिया में आज की अपेक्षा जर्मनतत्व बहुत कम था फिर भी विदेशी अल्पसख्यक प्रायः प्रदर्शनकारी दम्भपूर्ण श्रेष्ठता दिखाकर राष्ट्रीय भावनाओं को उद्वेलित करते थे। जेक देशभक्तों ने शासक वर्ग में ट्यूटोनिकतत्व की लगातार वृद्धि और जर्मन को सरकारी भाषा बनाने के रूख का प्रबल विरोध किया। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि उन नेताओं में से जो प्राग के विघटन के लिए उत्तरदायी हैं बहुत कम राष्ट्रभाषा[2] बोल सकते थे। इस समय एक बोहेमियन देश भक्त ने जर्मन चरित्र पर गम्भीर लाछन लगाया' "जिस प्रकार गोभी के कीड़े, सीने में सांप, खलियान में चूहे, बाग में बकरी चोरी करते हैं उसी प्रकार बोहेमिया में जर्मन चोरी करता है, धोका देता है, ठगाई करता है।"[3]

रूडोल्फ के अन्तिम वर्ष

लेटर आफ मेजेस्टी के बाद बोहेमियन बिरादरी तथा लूथरनों का मेल कराने और दोनों सम्प्रदायों में सहिष्णुता के सामान्य हित उत्पन्न करने के लिए प्रयत्न किये गये। बोहेमिया में वही करने का अभिप्राय था जो आग्सबर्ग समझौते ने साम्राज्य के लिये किया और इसका यह उद्देश्य पूरा हो गया, क्योंकि आंशिक सहिष्णुता की स्वीकृति ने ऊंची-ऊंची आशायें जागृत कर दीं और कल्विनिस्ट आदि अन्य सम्प्रदायों को सम्मिलित होने की मांग करने के लिए प्रोत्साहित किया। यह मांग पेश करने के लिये अनहाल्ट का उग्र काल्विनिस्ट क्रिश्चियन पेलेटिनेट से

1 वही, पृ० 368।

2 चारदेरिगट कृत हिस्तोरे द ला ग्यूरे डेट्रेनेट अन्स, खण्ड 1, अध्याय 3।

3 डेनिस, पूर्व उद्धृत, पृ० 423।

प्राग आया जिसके बदले में वह इवेन्जेजिकल सब के लिये समर्थन चाहता था। इस पर रूडोल्फ की नीति में उसकी सहज प्रवृत्तियो और शासक के रूप में उसकी आस्था के बीच सघर्ष आरम्भ हो गया क्योंकि उसकी ये प्रवृत्तिया सहिष्णुता और और शांति के पक्ष में थी परन्तु शासक के रूप मे वह धार्मिक एकरूपता लाना चाहता था।

वह बोहेमिया में अप्रिय नही था, वहा उस राष्ट्र ने उसकी मानसिक पीड़ा के कारण उसे छूट दे दी। यह छूट एक ऐसे राष्ट्र द्वारा दी गई जो शासक के दोष और दुर्भाग्यों को क्षमा करने के लिए उद्यत था, यदि वह राष्ट्रीय स्वभाव के प्रति थोड़ी सी सहानुभूति रखता हो। इसके अतिरिक्त यह सर्वविदित था कि वह शान्ति के लिए आतुर था, दोनों ओर की जाति के विरूद्ध था, बोहेमिया के लिये उसका अवकाश ग्रहण उसकी अपनी इच्छा से हुआ था, तथा उसके सार्वाधिक असावधानी के कार्य प्रतिक्रियावादी अर्धस्पेनिश गुप्त षड्यन्त्रकारियो द्वारा, जो उसके इर्द–गिर्द थे, उत्तेजित किये गये थे। उसके अन्तिम वर्ष अपने सम्बन्धियों की लगातार विरक्ति से, प्रोटैस्टेन्टों की बढ़ती हुई मांगों की चिन्ता से, षड़यन्त्र की गवाही की निराशा से, तथा शहर में जिसे उसने निवास के लिए चुना था, गहरी ईर्षा से आच्छादित थे। सन् 1611 में उसे बोहेमिया का ताज छोडने के लिए तथा अपने स्थान पर अपने भाई मैथियास के चुनाव की अनुमति देने पर राजी कर लिया गया, परिणाम-स्वरूप, रूडोल्फ, अपने जीवन के अन्तिम महीनों में एक साधारण व्यक्ति से अधिक न था। 20 जनवरी, 1612 को उसकी मृत्यु हो गई। यह अभिलिखित है, कि अपनी मृत्यु से कुछ देर पहले एक रात को उसने, हेडशेनी महल की एक खिड़की को खोला, जहां से शहर दिखाई देता था, और गम्भीरतापूर्वक प्राग और बोहेमिया [1] को अभिशाप दिया।

सम्राट् मैथियास : कैथोलिक प्रतिक्रिया

मैथियास के राज्याभिषेक से उस तनावपूर्ण आकांक्षा के वातावरण पर जो मध्य यूरोप के बड़े भाग पर आच्छादित था, कुछ भी प्रभाव नही पड़ा। अपने भाई के समान ही मैथियास अयोग्य, अव्यावहारिक, नौसिखिया, और प्रबल व्यक्तित्वों के प्रभाव में आने वाला था। उसका शत्रु अपूर्व बुद्धि वाला व्यक्ति ख्लेस्ल था। सरकार तथा पुरातत्वविभाग प्रेग से वियाना मे स्थानान्तरित किए गए और बोहेमिया विदेशियों द्वारा प्रशासित प्रान्त हो गया। कार्यकारिणी को ख्लेस्ल ने हथिया लिया। उसने निरकुंश तरीके से प्रविष्ट करने का प्रयत्न किया और वह भी ऐसे देश में जहां स्वतन्त्रा को सब चीजों से अधिक महत्व दिया जाता था। इसके अति-

1 कोवस कृत हाऊस आफ आस्ट्रिया, खंड 2, पृ० 425।

रित्त लैटर आफ मैजेस्टी को कार्यान्वित करने में जल्दी ही कठिनाइयां सामने आईं। भूस्वामी और म्युनिसिपल कौंसिल को अपने क्षेत्राधिकारों के गिरजाघरों की प्रस्तावित इमारतें बनाने पर वीटो (निषेधाधिकार) का अधिकार प्राप्त था. इसने लगातार कलह को जन्म दिया। दूसरी ओर जल्दी ही लूथरन लोग अपने अद्भुत और असांसारिक बोहेमियन बिरादरी मित्रों से अलग हो गये। 1617 में एक घोषणा प्रकाशित की गई, जिसके अनुसार सब धार्मिक इमारतों को उसी कार्य के लिए समर्पित करना पड़ेगा, जिस कार्य के लिए उनके संस्थापकों की इच्छा है। इसने विप्लव और क्रोध उत्पन्न कर दिया। प्राग के आर्कबिशप लौहलियस के अधीन कैथोलिक पादरी देश के सभी जिलों में फैल गये। इन जिलों में प्रोटेस्टेन्ट बहुत गरीब थे या इतने दूर दूर फैले हुए थे कि वे उन स्थानों पर पादरी नही रख सकते थे। राजकीय कस्बों में कैथोलिक लोगों को नागरिक अधिकार देने के लिये बाध्य किया गया और प्रोटेस्टन्टों को म्युनिसपल कौंसिल में से हटाने के क्रम का श्रीगणेश कर दिया गया। लैटर आफ मैजेस्टी की मामूली रियायतों को हर प्रकार से काट दिया गया।[1] प्रतिक्रियावादी दल यह देख रहा था कि थोड़ी बहुत रियायतों को भी बिल्कुल समाप्त करने से पहले वह कहां तक अग्रसर हो सकता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि आवश्यकता पड़ने पर बोहेमिया में कोई राष्ट्रीय नेता न था। बोहेमिया में हैप्सबर्ग विरोधी आन्दोलन का प्रधान एक काल्विनिस्ट, थर्न का हेनरी मेथियास, था जो मिलान के डेलाटोर का वशज था और उसके मुख्य उपसेनापति वेसेसलस रूप्पा और कोलोनाडे फेल्स थे। बोडोवेट और जीयरोटिन इतने अधिक सूक्ष्म नियमावलम्बी और शुत्र मति व्यक्ति थे कि वे अपने अनुयायी बनाने की प्रेरणा नहीं दे सकते थे। बोहेमियन बिरादरी के सिद्धान्तों ने लोगों के स्वभाव को शान्तिमय बना दिया था जो दबाव के आगे, बिना इसे क्षमा किये. करीब–करीब झुक गया।

बोहेमिया का राजा फर्डीनेन्ड

इसी बीच में मेथियास के उत्तराधिकारी का प्रश्न आर्कड्यूकों को विचलित करता रहा। सम्राट के सन्तान न थी और वह अपने सम्बन्धियों में से ही किसी को चुन सकता था। स्पेन फिलिप तृतीय के पुत्र मैथियास के महान् भतीजे, डान कारलस की उम्मीदवारी के पक्ष में था, किन्तु इस दावे पर कभी जोर नहीं दिया गया। 1617 में इस दावे को छोड़ दिया गया जिससे कि स्टिरिया के आर्कड्यूक फर्डिनेन्ड का मार्ग साफ हो जाये। इसके बदले में फर्डिनेन्ड ने स्पेन को अल्सेस का इलाका देने का वचन दिया, यदि वह निर्वाचित हो जाये-यह रियायत सदेहास्पद थी, क्योंकि हैप्सबर्ग ने अल्सेस में अपने अधिकारों की स्पष्ट व्याख्या नहीं की। मेथियास को इस बात के

---

1 डेनिस, पूर्व उधृत खण्ड 2, पृ० 492।

लिए मना लिया गया कि वह फर्डिनेन्ड को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दे। इस निश्चय की घोषणा जून 1617 में बोहेमिया की डायट की एक बैठक में कर दी गई। मेथियास स्वयं, चुनाव द्वारा, बोहेमिया का राजा निर्वाचित हुआ था। किन्तु दूसरी ओर के भी प्रमाण मौजूद थे, डायट ने अब फर्डिनेन्ड को अपना राजा स्वीकार कर लिया और इस तरह कुछ सीमा तक इस विचार की पुष्टि कर दी कि राजसिंहासन हैप्सबर्ग परिवार में वंशानुगत हैं। बोहेमिया की डायट की उसी बैठक में यह मांग की गई थी कि लेटर आफ मेजेस्टी का परिपालन किया जाय। फर्डिनेन्ड ने इसके प्रतिपालन का इस शर्त पर वचन दिया कि उसके आध्यात्मिक सलाहकार इसका अनुमोदन कर दें। 19 जुलाई, 1617 को फरडिनेन्ड बोहेमिया का राजा बन गया।

हंगरी के विषय में

दूसरा कदम था हंगरी के विषय में निश्चित करना। वहां बोहेमिया से अधिक निर्वाचन-अधिकार के प्रमाण थे, इसलिये इस महत्वपूर्ण सवैधानिक प्रश्न को खड़ा[1] न होने देनेके लिये विशेष सावधानी रखी गई। मई, 1618 मे प्रेंसबर्ग में हंगरी की डायट की बैठक मैथियास के एक पत्र पर विचार करने के लिए हुई जिसमें चुनाव शब्द को सावधानी से टालते हुए फरडिनेन्ड को राजा घोषित करने का अनुरोध किया गया। छोटे कुलीन वर्गो ने इसका कुछ विरोध किया, किन्तु अन्त में यह कहकर समझौता कर लिया गया कि यद्यपि सिंहासन निर्वाचन द्वारा ही दिया जा सकेगा किन्तु यह हेप्सबर्ग परिवार से बाहर किसी को नहीं दिया जा सकेगा। स्पेनिशदूत ने फर्डिनेन्ड को इसे स्वीकार न करने के लिये उकसाने का प्रयत्न किया, किन्तु मनोनीत सम्राट का झुकाव समझौते की ओर था अतः उसने इसे स्वीकार कर लिया। 16 मई को फर्डिनेन्ड को प्राचीन प्रथाओं के अनुसार सर्वसम्मति से निर्वाचित घोषित कर दिया गया। अब यह हंगरी और बोहेमिया के राजा पर था कि वह साम्राज्य प्राप्त करले जिससे कि हैप्सबर्ग वंश के समस्त प्रदेशों का समायोजन पूर्ण हो जाये।

प्रथम प्रोटेस्टेण्ट शताब्दी (1617)

समकालीन लोगों ने इस अपशकुनकारी घटना को नोट करने में भूल नहीं की होगी कि बोहेमिया की डायट की बैठक में, जिसमें फरडिनेन्ड का राजा घोषित किया गया था, मार्टिनिट्स और स्लवेटा को कुलीनों ने लैटर आफ मेजेस्टी को स्वीकार करने की मांग का विरोध किया था। 1617 के अन्तिम काल में मैथियास, सरकार को ग्यारह प्रतिनिधियों के हाथ में देकर प्राग छोड़ गया। इन प्रतिनिधियों में सात कैथोलिक और चार प्रोटेस्टेन्ट थे। लोक्कोविट्ज, मार्टिनिट्स और स्लेवेटा

---

1 कोक्स, पूर्व उद्धत, खण्ड 2, पृ० 433–440।

इस कौसिल के प्रमुख सदस्य थे। जैसे जैसे प्रतिक्रियावादी शक्तिया प्रबल होती गई वैसे–वैसे ही गिरजाघरों की सम्पति पर हमले होने से प्रोटेस्टेन्ट धर्म को और अधिक खतरा पैदा हो गया और दिसम्बर, 1617 को क्लोस्टर ग्रैब के प्रोटेस्टेन्ट मन्दिर के ध्वंश से समस्त बोहेमिया में गहरी सनसनी फैल गई। उमी समय एक रीजेण्ट मिकना ने अल्ट्राक्विज्म[1] के मध्यवर्ती मार्ग से कैथोलिकवाद को पुन: लाने की अभिलाषा को गुप्त नही रखा। इसके अतिरिक्त 1617 का वर्ष प्रोटेस्टेन्ट कथाओं मे महत्वपूर्ण था क्योंकि यह लूथर की पहली शताब्दी थी, जिसमें विटेनबर्ग के गिरजाघर के द्वार पर उसकी 95 घोषणायें चिपकायी गईं। इस उत्सव पर आध्यात्मिक साहित्य में नये सिरे से उफान आया, यह बात किसी से छिपी नहीं रह सकी कि प्रोटेस्टेन्टवाद एक शताब्दी की परख और उसमें न्यूनतायें पाये जाने के बाद अब युद्ध किये हुए और पुन: अनुप्राणित चर्च[2] के हमलों के सम्मुख झुकने वाला था। पुस्तकों की लड़ाई, जिसमें उस समय के क्रूर व्यक्तियों ने दृढ़ और कडवा मत घोल दिया आगे चलकर महान् युद्ध में परिवर्तित हो गई।

मार्च 1618 शाही पत्र ने प्रोटेस्टेन्टों की सभाओं पर रोक लगा कर चिंगारी का काम किया, जिसने ज्वलनशील सामग्री में आग लगा दी जो बोहेमिया में बहुत समय से इकट्ठी हो रही थी। 21 मई को प्रोटेस्टेन्ट डायट की बैठक कैरोलिनम में हुई और थर्न ने घोषणा की, कि केवल शक्ति के द्वारा ही **दी रीजेन्सी** के प्रतिक्रियावादी सदस्यों को सही मार्ग पर लाया जा सकता है। थर्न, रूप्पा और कोलोना के फैल्स द्वारा बहिष्कार करने का फैसला किया गया। दो दिन बाद वे स्टर्बर्ग, मार्टिनिट्ज, स्लैवोटा और लोकोविट्ज, चार कैथोलिक प्रतिनिधियों की उपस्थिति में, मिचना के स्थान पर केम्ब्रिशियस के मन्त्रित्व में मिले और उनसे यह प्रकट करने के लिये कहा गया कि क्या उन्होंने उनकी सभाओं पर पाबन्दी लगाने वाली घोषणा में कुछ भाग लिया है। जब मार्टिनिट्स और स्लेवेटा पर जैसुइटों से मिलने का आरोप लगाया गया तो वहां कोलाहल मच गया। इस गड़बड़ में मार्टिनिट्स और स्लेवेटा को खिड़की में से फेंक दिया गया और उनके पीछे विरोध करने वाले फेब्रिशियस को भी फेंक दिया गया। ये लोग काफी दूरी से फैके गये थे किन्तु चोट केवल स्लेवेटा के ही लगी। कैथोलिक गवाहों ने गिरते हुए रीजेन्टों को देवताओं द्वारा सहारा देते हुए देखा, किन्तु प्रोटेस्टेन्ट लेखकों ने मृत्यु से बचने का कारण कूड़े करकट का वह ढेर बताया, जिस पर वे गिरे थे।

---

1 देखिये गिन्डलेकृत, दी थर्टी इयर्स वार 'अंग्रेजी' अनुवाद, खण्ड 1, पृ० 53।

2 देखिये क्रेब्स का अन्तिम भाग, पूर्व उदधृत।

अध्याय 4
तीस वर्षीय युद्ध

युद्ध की विशेषताएं

बोहेमिया विद्रोह के दण्डस्वरूप, दो वर्ष बाद 26 विद्रोहियों को फांसी पर लटका दिया गया। इस विद्रोह ने एक ऐसे यूरोपीय युद्ध का सूत्रपात किया जो अवधि में, स्थानों और निमित्तों के निरन्तर परिवर्तन में, तथा भीषणता और क्रूरता में अद्वितीय था। इस वर्णन में सान्त्वना देने वाली बहुत ही कम प्रभावोत्पादक घटनायें हैं। महान् व्यक्ति इसमें बहुत कम उलझे। जिस पीढ़ी ने इस युद्ध का अन्त किया वह उस पीढ़ी की घृणा और षड़यन्त्रों से, जिसने इसे आरम्भ किया था ऊपर उठ चुकी थी। यह युद्ध प्रतिदिन जोर पकड़ता गया और इसके उपद्रवों से पीड़ित व्यक्ति इसे अनन्त युद्ध समझने लगे। इसका अन्त युद्धकारियों की थकावट और भावी युद्धों को पोषित करने वाले अन्याय तथा असन्तोषों के लगातार बने रहने से हुआ, क्योंकि इस दुखदायी संघर्ष ने उस प्रथम आधुनिक शान्ति कांग्रेस को जन्म दिया जिसने यूरोप की सीमाओं को स्थिरता देने के प्रयास में वर्तमान युग के लोगों को राइन सीमा के महत्व से परिचित कराया जो वर्तमान काल की अशान्ति का एक बड़ा कारण है। तीस वर्षीय युद्ध ने जर्मन सभ्यता को एक शताब्दी से भी अधिक पीछे धकेल दिया। इस तथ्य ने यूरोप के भाग्य को बहुत प्रभावित किया।

इसकी जटिलता

यदि कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों पर पहले बल दिया जाय तो सम्भवत: पाठक को तीस वर्षीय युद्ध की जटिलता समझने में सहायता मिले। जर्मनी में धार्मिक हलचल के और बोहेमिया में विद्रोह के कारणों पर पिछले अध्याय में विचार किया गया है। बृहत्तर जर्मन राज्यों में से (पेलेटीनेट के अतिरिक्त) कोई भी उस समय तक प्रत्यक्ष रूप से इस युद्ध में उलझा हुआ नहीं था जब तक एडिक्ट आफ रेस्टीट्यूशन जारी नहीं की गई और गुस्टवस अडोल्फस ने हस्तक्षेप (1629) नही किया। सेक्सनी और ब्रैन्डेनबुर्ग को मेजबर्ग के घेरे (1631) के बाद हैप्सबर्गों के विरूद्ध शस्त्र उठाने पड़े, किन्तु उन्होंने सम्राट् से 1635 में सन्धि (प्राग की संधि) करली। स्पेन और लोरेन साम्राज्य के सक्रिय सहायक थे, पैपेसी ने (अर्बन अष्टम के अधीन) कुछ समर्थन नहीं दिया, और कैथोलिक, लीग दल और इम्पीरियल दल, दो दलों में विभक्त हो गये। लीग दल का प्रधान बवेरिया का मैक्सिमिलियन कैथोलिक भूमियों को सुरक्षित रखने और धर्म-निरपेक्ष बिशप के पदों को पुन:

वापिसि लेने पर तुला हुआ था। दूसरी ओर इम्पीरियल दल फर्डिनेन्ड और वैलेन्स्टीन की प्रधानता में होली रोमन एम्पायर को आस्ट्रियन निरंकुशता में परिणत करने के लिए आतुर था। इस प्रकार एक पक्षीय प्रमुख नेताओं के मन में प्रादेशिक और धार्मिक आकांक्षायें मिश्रित रूप में विद्यमान थीं। युद्ध के आरम्भिक चरणों में इंग्लैण्ड ने अधिकार-वंचित इलैक्टर पेलोटाइन को गैर सरकारी और प्रभावहीन समर्थन दिया, पोलेण्ड के वेसेस और स्वीडन में युद्ध के कारण स्वीडेन 1629 तक जर्मनी के झगड़े में पड़ने के लिए स्वतन्त्र न था, स्पेन और संयुक्त प्रांतों में हुई द्वादशवर्षीय संधि के 1621 में समाप्त हो जाने पर डचों को संघर्ष के योद्धा माना जा सकता था। इसमें हंगेरी की राष्ट्रीय आकांक्षाएँ भी सम्मिलित थीं। बेथलेन गेबर और रैकोवज़ी के नेतृत्व में मगयार ने हैप्सबर्गों को पूर्व की ओर से धमकी दी थी। फ्रांस 1626 के पश्चात् एक उत्सुक दर्शक बना रहा, 1635 के पश्चात् योद्धा बन गया। उसका मित्र बवेरिया जो जर्मनी में पहिले अनुदार कैथोलिकवाद का नेता था, स्वीडिश आक्रमण के कारण सम्राट् के पक्ष में मिलने के लिए मजबूर हो गया, किन्तु वेस्टफेलिया की संधि के पश्चात् वह फिर फ्रांस के पक्ष में हो गया। स्वीडेन ने युद्ध में सबसे विशिष्ट भाग लिया, किन्तु गस्टवस अडोल्फस और रिशेल्यू की नीति में विभिन्नता होने से कठिनाई उत्पन्न हो गई। फ्रांसीसी आकांक्षाओं ने 30 वर्षीय युद्ध को प्रादेशिक-धार्मिक संघर्ष से राजवंशीय युद्ध में परिणत कर दिया।

बाल्टेलाइन और मन्टुआ के उत्तराधिकार का प्रश्न

युद्ध से मन्टुआ के उत्तराधिकार वाल्टेलाईन के प्रश्नों का सीधा सम्बन्ध था। वाल्टेलाईन मिलानीज से जर्मनी और आस्ट्रिया के मार्गों[1] पर अधिकार रखता था, मन्टुआ की डची के पास दो महत्वपूर्ण किले मान्टुआ और केसेल भी थे। मोनजोन की सन्धि के अनुसार (1626) फ्रांस ने अपने बोल्टे लाईन के निवासी प्रोटेस्टेन्ट मित्रों को छोड़ दिया जबकि चेरास्को (1631) की संधि से फ्रांसीसीयों के एक मनोनीत ने मान्टुआ प्राप्त कर लिया और इस प्रकार फ्रांसीसी उत्तरी इटली के स्पेन के अधिकृत प्रदेशों के लिए विवाद करने योग्य बन गए।

पांच लड़ाइयां

अन्त में, यह ध्यान में रखना चाहिये कि यद्यपि इस सारे युग में युद्ध चिरस्थायी हो गया था तो भी इस युग में 5 ऐसी लड़ाइयां हुई जिन्होंने संघर्ष की गति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया। ये लड़ाइयां थीं, व्हाइटहिल की (1620) जिसके द्वारा बोहेमिया के विद्रोह की समाप्ति और पेलेटीनेट की विजय सम्भव हुई

---

[1] स्प्लूगन तथा स्टेलवियों दर्रों के द्वारा।

दूसरी, लूटर (1626) जिसने डेन्मार्क को वापिस हटने के लिए बाध्य किया तीसरी ब्रीटन फेल्ड या लिपजिग (1631) जिसने प्रोटेस्टेन्टवाद के भाग्य को पुनः स्थापित किया और जो युद्ध की निर्णायक अवस्था सिद्ध हुआ, चौथी लुट्जेन (1632) जिसका प्रत्यक्ष परिणाम गस्टवस अडोल्फस की मृत्यु और अप्रत्क्ष रूप में वैलेस्ट्रीन की हत्या के रूप में निकला, नार्डलिजन (1634) जिसने स्वीडेन के किए कार्य पर पानी फेर दिया। 1634 के पश्चात् यह युद्ध फ्रांस और स्वीडेन द्वारा बवेरिया और साम्राज्यवादियों के विरुद्ध थका देने वाला युद्ध था, यह ऐसा युद्ध था जिसने समस्त जर्मनी में भुखमरी और बीमारी फैला दी, जिसमें जर्मनी का कोई भी महत्वपूर्ण प्रश्न उलझा हुआ न था तथा जिसमें लाखों नागरिक तबाह हो गये। इस अवधि में से पांच वर्ष (1643–1648) सन्धि-वार्ता में ही बीत गये।

युद्ध की विशिष्टता

अध्ययन की दृष्टि से यह युद्ध प्रत्येक काल में जिस राष्ट्र की प्रधानता रही है, उसके आधार पर सामान्यतः एक के बाद एक करके चार भागों में विभक्त किया जाता है—बोहेमिया या पेलेटाइन की, डेनों की, स्वीडन और फ्राँसीसीयों की। यदि केवल लड़ाइयों पर, जिनमें से अनेकों का ऐतिहासिक अथवा सैनिक महत्व शून्य के बराबर है, ध्यान देना हो तो यह क्रम लाभप्रद है। दूसरी वैकल्पिक विधि से इसे तीन मुख्य चरणों में विभक्त किया जा सकता है—1. पेलेटीनेट की हानि और जर्मनी प्रोटेस्टैन्टवाद का क्षय जो 1629 में पूर्ण हो गया, 2. स्वीडेन द्वारा प्रोटेस्टेन्टवाद का पुनः स्थापन 1630–1635, और 3. फ्रांस द्वारा हस्तक्षेप 1635–1648। इस विभाजन का लाभ यह है कि इससे लड़ाइयां और उनके अभिप्राय दोनों स्पष्ट रहते हैं। इस अध्याय से इसी विधि का अवलम्बन किया जायेगा, तीसरे और अन्तिम चरण में वैस्टफेलिया की सन्धि पर भी विचार किया जायेगा।

1. पेलेटीनेट का ह्रास और जर्मन प्रोटेस्टेन्टवाद का क्षय (1618–1629)

विद्रोह या युद्ध ?

डिफेनेस्ट्रेशन के समय फरडिनेन्ड प्रेसबर्ग और मेथियास वियना में था। सम्राट युद्ध नहीं करना चाहता था; क्लेसल की सहायता से इस विषय को स्थानीय रखने और विद्रोह का अल्पकालिक उबाल के रूप में देखने के लिये भरसक यत्न किया। दूसरी ओर फरडिनन्ड ने आर्क ड्यूकों का समर्थन तथा स्पेन से सहायता के वचन पाकर यह निश्चय कर लिया कि उपयुक्त समय आ गया है। उसका पहला कदम शान्ति का पक्ष लेने वाली शक्तियों को हटा देना था। क्लेसल का मथियास

पर प्रभाव था और वह आर्क ड्यूकों की चालों में सम्मिलित न था। इसलिय उसको हटाना आवश्यक था। उससे निबटने के लिये दो वैकल्पिक साधन विष प्रयोग या पोप द्वारा जाति-वहिष्कार, उपयुक्त समझे गये, किन्तु मनोनीत सम्राट दोनों साधन के प्रयोग के विरूद्ध था उनका अपेक्षा उसने उसे बन्दी बना लिया तथा पांच वर्ष के कारावास ने साम्राज्यीय मंत्री को कार्य क्षेत्र से परे हटा दिया। लडाकू कैथोलिक दल को चारों ओर से समर्थन या कम तटस्था की आशा थी। पोलैण्ड के सिजिसमड और निचले देशों के आर्कड्यूक अल्बर्ट ने सक्रिय सहायता देने का वचन दिया; फर्डिनेन्ड के साले टस्कनी के कोमिमों ने सेना भेज दी; इंग्लैण्ड का जेम्स प्रथम अभी स्पेन से मित्रता स्थापित करने की चेष्टा कर रहा था। फ्रांसीसी दरबार में कुख्यात केवल बोइलो [1] ही हस्तक्षेप का पक्षपाती था, और यद्यपि पोप पाल पचम ने इस आधार पर कि वह पहले से कैथोलिक लीग को आर्थिक सहायता देता है, अनुदान देने से इन्कार कर दिया किन्तु उसके उत्तराधिकारी ग्रेगरी पन्द्रहवे ने दो लाख फ्लोरिक की वार्षिक सहायता दी। स्पेन के राजदूत ओनेट के माध्यम से मेड्रिड से लगातार सम्पर्क रखा जाता था। जर्मनी में यद्यपि हगेरी, मोरेविया और साइलेशिया, बोहेमिया से मिलने के इच्छुक थे किन्तु सेक्सनी का जान जार्ज अपने स्वभाव और विश्वास से विद्रोहियों के विरुद्ध था, जबकि ब्रेन्डनबुर्ग तटस्थ था। फ्लग्सक्रिफ्लेन या 1618–19 [2] का पैम्फलेट साहित्य यह व्यक्त करता है कि बोहेमिया निवासी भी इसे सम्राट और उनके बीच व्यक्तिगत और स्थानीय मामला मानते थे, और इस प्रकार विद्रोह को यूरोप की शान्ति को खतरे में डाले बिना सरलता से सुलझाया जा सकता था।

बोहेमियन विद्रोह की प्रगति

डिफेनेस्ट्रेशन के बाद तुरन्त ही विद्रोहियों ने वैल्सेलास रुप्पा की अध्यक्षता में तीस डिप्युटियों का एक संचालक-मण्डल नियुक्त किया। यह सार्वजनिक रूप से विज्ञापित किया गया कि यह आन्दोलन व्यक्तिगत रूप से सम्राट के विरुद्ध नहीं है वरन् **लेटर आफ मेजेस्टी** का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध है। पिलसन और बुडनीस को छोड़कर अन्य सभी बोहमिया के नगरों से समर्थन-प्राप्त यह अस्थाई

---

1 देखिये हनोटाक्स कृत **रिचेल्यू**, जिल्द 2, भाग 2,। बोइलो के षड्यन्त्र को विफल करने के लिए फ्रेंच न्यायालय में स्मरणपत्र भेजा गया, जिसमें यह तर्क दिया गया था कि गणतन्त्रवादियों के कारण विद्रोह हुआ है—यह विवेचन **करक्यूअर फ्रांसीसी** (1619), अध्याय 6, पृ० 342–370 में मिलता है।

2 सिर्फ 1618 में ही करीब 1800 पैम्फलेट निकले, गेव्यौर, **डाइपब्लिकसिटिक ऊबर डेन बोमीचन आक्सटेन्डवोन** 1618।

सरकार जेसुइटों को देश से निकालकर, नगर के उत्साही जत्थों को शस्त्र-सज्जित करने में लग गई। जिस बात ने इस खाई को अनुद्धार्थ बना दिया वह फ्रेडरिक पंचम पेलेटाइन इलेक्टर, द्वारा अचानक मध्यस्थता करना था, उसका विवाह जेम्स प्रथम की पुत्री एलिजाबेथ से 1612 में हुआ था। उसकी बोहेमिया के राज मुकुट को स्वीकार करने की उदघोषित अनुमति का संचालक-मण्डल द्वारा सर्वसम्मिति से स्वागत नहीं हुआ, क्योंकि वह अपनी अयोग्यता के लिए कुख्यात था; और यद्यपि यह मान लिया गया था कि फ्रेडरिक को प्रोटेस्टेन्ट संघ की सहायता का पूर्ण समर्थन प्राप्त होगा तो भी सेक्सनी की सहायता प्राप्त करने का निष्फल प्रयत्न किया गया। बोहेमिया के प्रोटेस्टेन्टों में से रुप्पा और थर्न के नेतृत्व में काल्विनवादियों का अल्पमत फ्रेडरिक के पक्ष में था। यह एक स्वाभाविक था कि लूथरनों वादियों का बहुमत सेक्सनी के इलेक्टर को जर्मन प्रोटेस्टेन्टवाद का सरकारी अध्यक्ष बनाने का इच्छुक होता और यह बहुमत सम्भव था कि जर्मन राजकुमार अपने पद और साधनों से इस आन्दोलन को कानूनी और सफल बना देता, किन्तु इलेक्टर जान जार्ज ने सम्राट् से शान्ति बनाये रखना श्रेयस्कर समझा, और चाहे वह ऐसी आत्मरक्षा की प्रवृत्ति से भी प्रभावित हुआ हो तो भी वह ऐसी संस्था से जिसमें सक्रिय काल्विनवादी [1] हों कभी सौदा नहीं करता। बहुत से लूथरवादी बलपूर्वक यह मत व्यक्त करते थे कि काल्विनवादी फ्रेडरिक की विजय कैथोलिक फर्डिनेन्ड से अधिक खतरनाक होगी। उनका कहना था कि काल्विनवादी उतने ही बुरे है जितने मुसलमान और जिनकी धर्म सम्बन्धी आस्थायें कुरान से अच्छी नहीं हैं। इसलिये इस प्रकार की संकटपूर्ण स्थिति में संयुक्त प्रोटेस्टेन्टवाद की कोई आशा न थी।

वियना की ओर मेन्सफील्ड का अभियान

सेवाय का कैथोलिक एमानुएल भावी शान्ति में साम्राज्य के लिए अपनी उम्मीदवारी को आगे बढ़ाने के लिये आतुर था। उसके हस्तक्षेप ने घटनाओं को एक नया मोड़ दे दिया। उसने साहसी एल्बर्ट मैंसफील्ड के साथ उन विद्रोहियों की सहायता के लिए सेना भेजी जो नाममात्र को इलेक्टर पैलेटाइन के पक्ष में थे। उसने नवम्बर 1618 को पिल्सल पर अधिकार करके कैथोलिक जनसंख्या को यहां से चले जाने के लिये बाध्य किया। युद्ध के पहले वर्ष की यह सबसे महत्वपूर्ण सैनिक साहसिक घटना थी। 1619 की ग्रीष्म में थर्न और उसकी सेना वियना के प्रवेश-द्वार तक

---

1 इलेक्टर के कार्यों के लिये देखें, अध्याय 9। 1619 मे काल्विनवादी न्यायाधिकरण द्वारा बेनेवेड़ को फांसी दिये जाने ने भी लूथरवादियों को काल्विनवादियों से अप्रसन्न कर दिया। देखें अध्याय 10।

बढ़ गई, किन्तु फर्डिनेन्ड की अचानक दृढ़ता तथा राजधानी में और सेनाओं के आ जाने से काल्विनिस्ट जनरल को घेरा डालने का विचार छोड़ना पड़ा और बोहेमिया वापिस जाना पड़ा।

फर्डिनेन्ड का सम्राट-पद पर निर्वाचन (अगस्त 1619)

मार्च 1619 में मैथियास की मृत्यु से वह आदमी भी उठ गया जो अब भी शान्ति स्थापित कर सकता था। 20 जुलाई 1619 चुनाव की तारीख निश्चित हुई। सात के मण्डल में तीन इलेक्टर होने से यह स्पष्ट था कि प्रोटेस्टेन्ट इलेक्टरों द्वारा हैप्सबुर्ग वंश से बाहर के किसी उम्मीदवार के पक्ष में एक मत होने पर बोहेमिया का मत निर्णायक होगा। कुछ लोगों के मत में प्रोटेस्टेन्ट और अकेथोलिक साम्राज्य स्थापित करने का यह अनुपम अवसर था। कुछ लोगों को ऐसा लगता था कि सम्भवतः इस बात पर साम्राज्य की समाप्ति हो जाये। इस प्रकार अचानक बोहेमियन के राज मुकुट के महत्व में वृद्धि हो गई। इसमें विलम्ब होना फ्रेडरिक के लिये अच्छा था जिससे कि वह बोहेमिया में अपनी स्थिति को दृढ़ कर ले। एक बार बोहेमिया के राज-मुकुट पर उसका अधिकार सुरक्षित होने पर उसका साम्राज्य के लिये निर्वाचित होना सम्भव था। दूसरे उम्मीदवारों में सेवाय का चार्ल्स एमानुएल उत्सुक था, किन्तु उसकी कम सम्भावना थी। बेवेरिया के ड्यूक के लिये अच्छा अवसर था, किन्तु वह उत्सुक नहीं था डेन्मार्क का राजा भी उम्मीदवार हो सकता था। यद्यपि फर्डिनेन्ड बोहेमिया का मुकुटधारी राजा था किन्तु बोहेमिया की डायटों का दावा था कि उसे अभी तक परामाधिकार नहीं मिले थे। और गोल्डेन बुल के नियमानुसार बोहेमिया का मत अब भी डायट मे निहित था। मतों को प्रभावित करने के इस प्रकार के प्रयत्नों के बावजूद फर्डिनेन्ड 28 अगस्त, 1619 को फ्रेंकफर्ट के गिरजाघर में सर्व सम्पति से सम्राट निर्वाचित किया गया। इलेक्टर पेलेटाइन के प्रतिनिधि ने पहले बेवेरिया के मैक्सिमिलियन, के जो कि वास्तविक प्रति था, पक्ष में मत दिया, किन्तु बाद में बहुमत के साथ हो गया। इससे ग्यारह दिन पूर्व बोहेमिया की डायट ने फर्डिनेन्ड को गद्दी से उतार दिया था परन्तु 27 अगस्त को फ्रेडरिक को बोहेमिया का राजा निर्वाचिन कर दिया।

फ्रेडरिक इलेक्टर पेलेटाइन का हस्तक्षेप

समस्त प्रोटेस्टेन्ट शासकों ने विद्रोहियों द्वारा दिये गये राजमुकुट को फ्रेडरिक द्वारा स्वीकार करने को बुरा समझा, क्योंकि यह उस समय की स्वीकृत राजनीतिक नैतिकता के स्पष्टतः प्रतिकूल था [1]। उसके श्वसुर ने इसका प्रबल

---

1 तीस वर्षीय युद्ध के सम्बन्ध में फ्रेडरिक एवं उसकी पत्नी के उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में सी. वी. वेगवुड़ कृत **दी थर्टी इयर्स वार** पृ॰ 148–49 में विवेचना की गई है।

प्रतिरोध किया। समकालीनों का सर्वसम्मत मत था, (जो कि सम्भवतः गलत था) कि उसकी पत्नी द्वारा उस पर दबाव डाला जा रहा था, जिसके विषय में ऐसा कहा जाता था कि वह "एक राजकुमार के साथ पके मांस खाने की अपेक्षा एक राजा के साथ गोभी की प्लेट खाना श्रेयस्कर समझेगी। बोहेमिया निदेशालय के व्यवहार ने मामलों को और बिगाड़ दिया। उन्होंने पूर्ण क्रूरता का प्रयोग किया जो कि प्रायः क्रान्तियों के समय में पाई जाती है जबकि स्वतः संघठित संस्थाओं को अपने पृथकत्व और अतीत से अनुद्धार्य सम्बन्ध-विच्छेद का भान उत्पन्न हो जाता है। क्रान्ति-विरोधियों के लिये मृत्युदण्ड घोषित किया गया। नगर के संगठित गिरोहों को आर्थिक सहायता देने के लिये अपहरण द्वारा धन एकत्रित किया गया जिससे साम्राज्यीय कला-निधियों को हानि पहुंची और ध्वसकारी काम होने लगे जिससे बोहेमिया के लूथर वादियों के मन में काल्विनवादियों के प्रति घृणा अधिक तीव्र हो गई। फ्रेडरिक ने नीति-निर्देशन का कार्य उग्र काल्विनवादी उपदेशक स्कल्टेस पर छोड़ दिया जबकि सैनिक कार्य अनहाल्ट के उग्र क्रिश्चियन को सौंप दिये गये। जब फ्रेडरिक ने यह प्रदर्शित कर दिया कि वह राष्ट्र-नेता बनने के अयोग्य है तो लोगों की आखें खुलीं और उसकी तथा उसके दरबारियों की खुली लम्पटता से शीघ्र ही उस राष्ट्र को गहरा धक्का लगा जो अपनी इस निष्ठा के लिये प्रसिद्ध था कि नैतिकता धर्म का आवश्यक अंग है।

बैथलेन गेबर

इन घटनाओं की क्षीण प्रतिध्वनि हंगरी में पहुंची जहां राष्ट्र का नेतृत्व करने के लिये एक ऐसे व्यक्ति ने राज मुकुट स्वीकार कर लिया था जो इलेक्टर पेलेटाइन के समान अयोग्य था। बैथलेन गैबर सभ्यता के किनारे से अचानक आये हुये ऐसे नर-पिशाचों में से था जो कभी-कभी यूरोप को उल्कापातों की तरह चोंका देते हैं। अपने पूर्वाधिकारी व हितकारी[1] से छुटकारा पाकर, उसने 1613 में अपने आपको ट्रांसिल्वेनिया का राजकुमार बना लिया। यद्यपि वह अर्ध-सभ्य था, किन्तु दिखावा ऐसा करता था कि वह कुछ शिक्षित था और कला में उसे अच्छी रूचि थी। वह बाइबल का अध्यवसायी पाठक था और काल्विनवादी होने का दावा करता था। दैनिक क्षयोन्मुख जीवन भी उसके मन और शरीर की क्रियाओं को नहीं घटा सका। तुर्क और हैप्सबुर्ग आधिपत्य से चिढ़ा हुआ वह एक स्वतन्त्र राज्य

---

1 बैथलेन गैबर वास्तविक रूप में ट्रांसिल्वेनिया का उस समय शासक बन बैठा जबकि हत्यारों की सहायता से उसने अपने पूर्वाधिकारी, गेबरेल बथोरी, को हटा दिया। (1613)

स्थापित करना चाहता था; युद्ध ने उसे अवसर दिया कि वह सबसे ऊंचा मूल्य चुकाने वाले को पद बेचने और अपने मुख्य राजनीतिक गुण, विश्वासघात, को प्रयोग करे इसमें आश्चय नहीं कि ऐसे सहायकों के कारण ही बोहेमिया का विद्रोह इतना अल्पकालीन रहा। अक्टूम्बर 1619 में हंगेरी का राजा निर्वाचित किये जाने पर बेथलेन ने अपनी सेनाये थर्न और बोहेमिया से मिला ली। दोनों सेनाओं ने आस्ट्रिया पर आक्रमण किया और वियना पर पांच महीनों में दूसरी बार घेरा डाल दिया। लेकिन संकट पूर्ण परिस्थिति में अनुशासनहीन सैनिकों ने यह दिखा दिया कि व्यवस्था और नियंत्रण की पूर्ति अधिक संख्या से नहीं होती। बैथलेन और थर्न पहले प्रतिरोध को ही देखकर प्राचीरों से पीछे हट गये और इस प्रकार अपनी अयोग्यता के कारण उन्होंने उस दल को धोखा दिया जिसके नेतृत्व का उत्तरदायित्व उन्होंने लिया था।[1]

पेलेटाइन इलेक्टोरेट का प्रस्तावित हस्तांतरण

विद्रोहियों के हाथ ऐसा अवसर फिर कभी नहीं आना था। उसी मास मे जिसमें वियना घेरे में लिया जा रहा था, फर्डिनेन्ड ने बवेरिया के मेक्सिमिलियन के साथ म्यूनिख की गुप्त सन्धि पर हस्ताक्षर किये जिसके अनुसार सैनिक सहायता के बदले में उसे पेलेटाइन इलेक्टोरेट देने का वचन दिया गया। यह वचन भी उतना ही अवैध था जितना फ्रेडरिक द्वारा बोहेमिया का राज मुकुट स्वीकार करना, क्योंकि इलेक्टोरेट ने अभी फ्रेडरिक को राज्यच्युत नहीं किया था, और एस्टेटों की सहमति के बिना सम्राट को इस प्रकार का वचन देने का अधिकार न था। इसको वैधता प्रदान करने के लिए इतना ही कहा जा सकता था कि पहले कभी बवेरिया के विटलसबेक इलेक्टरल थे, किन्तु चिरकाल से मान्य विभाजन के अनुसार निर्वाचक मत पेलेटाइन शाखा में स्थिर कर दिया गया था। फ्रेडरिक द्वारा राज्य स्वीकार करना और फर्डिनेन्ड द्वारा त्याग देना, जिनके लिये दोनों के पास कोई अधिकार न थे, ऐसी बातें थीं जिन्होंने बोहेमिया के विद्रोह को तीस वर्षीय युद्ध में परिणत कर दिया।

व्हाइट हिल का युद्ध (नवम्बर 1620)

बोहेमिया और हंगरी के विद्रोहियों की सैनिक अयोग्यता और कैथोलिक शक्तियों की एकता और बल ने मिलकर जर्मन प्रोटैस्टैन्टों की संघर्ष में भाग लेने की रुचि को क्षीण करने में सहायता की। प्रोटैस्टैन्ट संघ के कुछ सदस्यों से निसंदेह ऐसा दिखाई दे रहा था कि वे जिस स्थिति में उस समय थे उसमें पीछे हटने की

---

1. हयूबर क्रन रेसबीचेट ओस्टराइक्स, 10.,3।

ओर झुक रहे हैं। फ्रांसीसी मध्यस्थों[1] ने अप्रेल 1620 में संघ से बातचीत आरम्भ की और जुलाई में उल्म में संधि पर हस्ताक्षर हुए जिससे संघ ने निश्चित रूप से अपने नेता इलेक्टर पेलेटाइन को छोड़ दिया और लीग ने संघ के सदस्यों की भूमि पर आक्रमण न करने का वचन दिया। सेक्सनी के इलेक्टर और हैसडर्मस्टेड्स में लुई को अब साम्राज्यीय हित के लिए जीत लिया गया। इलेक्टर ने लुसेशिया के बदले एक सैन्य दल देने का वचन दिया ? उन्हीं दिनों सेवायें के ड्यूक ने सघ को त्याग कर अपनी सेवायें सम्राट् को अर्पित कर दीं, इस प्रकार उसने सर्वसाधारण के सामने अपना विश्वास स्पष्ट कर दिया कि हैप्सबर्गो की मित्रता शत्रुता की अपेक्षा अधिक लाभकारी है। इन सब बातों से प्रथम हैप्सबुर्ग को प्रथम वास्तविक सफलता प्राप्त हुई। इसके बाद जल्दी ही रणस्थल में विजयें हुईं। उनमें लीग, साम्राज्यवादी और सैक्सन सेनाओं की सख्या 60,000 थी जो बवेरिया के मैक्सिमिलियन की कमान में थी। ऊपरी आस्ट्रिया के बलवाइयां को अधीन करके बवेरिया के ड्यूक ने प्रेग पर चढ़ाई कर दी। शहर के कुछ मील बाहर आठ नवम्बर 1620 को व्हाइट हिल की लड़ाई हुई। यद्यपि बोहेमिया वाले ढालों पर अच्छे स्थान पर जमें हुए थे। किन्तु शत्रुओं की सख्या बहुत अधिक थी। बोहेमिया की सेनायें अनुशासित नहीं थी, वे तोपखाने को प्रयोग में नहीं लाए और अन्त में अपनी सेना के भगोड़ों को देखकर फ्रेडरिक भी बहुत बुरी पराजय को और जल्दी लाता हुआ उन्हीं के पदचिन्हों पर चला। मैक्समिलियन का अभिवादन साम्राज्य के उद्धारकर्ता के नाम से किया गया। रोम में इस विजय को मानो नास्तिक से मुक्ति प्राप्त करने के उपलक्ष्य में मनाया गया, और जर्मन लूथरनों ने फौरन ही सम्राट को तुर्की–काल्विन अजगर से बाहर निकालने पर बधाइयां भेजी। वे इस बात को नहीं समझ सके कि अभी उनकी बारी भी आने वाली थी और यह युद्ध जो यहीं समाप्त हो जाता अभी 28 वर्ष और चलने वाला था।

युद्ध प्रचार

व्हाइट हिल की लड़ाई ने यूरोप की सामान्य स्थिति और बोहेमिया के भाग्य पर सम्यक प्रभाव डाला। अपने अधिकारों का उपयोग करते हुए फर्डिनेण्ड ने फ्रेडरिक और अनहाल्ट के क्रिश्चियन पर साम्राज्य की रोक की घोषणा कर दी (जनवरी 1621), व्हाइट हिल की लड़ाई के बाद प्राग के घेरे में पकड़े गए

---

1 मेरी डी मेडिकी के अनुयाइयों पर आश्ट्रो–स्पेन का भारी प्रभाव था तथा जेनिन के नेतृत्व में कौंसिल मुख्य रूप से, हैप्सबर्गस में दिलचस्पी रखती थी। प्रोटेस्टेन्ट यूनियन एवं कैथोलिक लीग के पुनर्मिलन के कारण फ्रेंच मध्यस्थ चिन्तित हो उठी थी। जेनिन कृत मेमोयर्स, सम्पादक पेटीटोट, 16, 63 एफ एफ।

पत्रों को कुछ समय पश्चात् प्रकाशित करके इन दो काल्विनवादियों को और भी कलंकित किया गया। यह पत्र अनहाल्ट चेसलरी से निकले हैं, इस दिखावे की भावना से जनसाधारण में मैक्सिमिलियन की कौंसिल के एक सदस्य विलियम जोचर[1] द्वारा सम्पादित एनहाल्टिस्चे केजलेइ के रूप में प्रकाशित हुए और इस रूप में वे युद्ध प्रचार का एक रोचक नमूना प्रस्तुत करते हैं। एनहाल्ट क्रिश्चियन के पत्रव्यवहार में से उद्धृतांश के संकलन का अभिप्राय यह दिखाना था कि काल्विनवाद के सिद्धान्त पश्चिमी यूरोप में प्रचलित सब न्यायपूर्ण व्यवस्था के नाशकारी थे, और असन्दिग्ध काल्विनवादियों के हाथ में आये हुए प्रोटेस्टेन्ट संघ का उद्देश्य असंदिग्ध रूप से तुर्क शासन को लाना था। जोचर ने यह दलील देते हुए कि अनहाल्ट के क्रिश्चियन और इलेक्टर पेलेटाइन के कूट षडयन्त्र साम्राज्यीय रोक लगाने के लिए औचित्य के लिए पर्याप्त समर्थन है, चतुराइ से जर्मन प्रोटेस्टेन्ट वाद को इन दोनों के षड़यन्त्र से अलग कर दिया। किन्तु इस प्रकार के साहित्य–शास्त्र का प्रयोग दूसरा दल भी कर सकता था। सन् 1621 के बसन्त में स्पेन दरबार को, निर्वाचन का श्रेय फ्रेडरिक से हटाकर मेक्सिमिलियन को देने के प्रस्ताव के पक्ष में करने के लिये, केपुचिन पादरी ह्यासिथ को मैड्रिड में एक गुप्त वार्ता करने के लिये भेजा गया। प्रोटेस्टेन्ट मतों का स्थान कैथोलिक मत के देने के मसले को क्यूरिया द्वारा विशेष महत्व दिया गया क्योंकि इस प्रकार से कैथोलिक बहुमत निर्वाचक मण्डल में बिल्कुल सुरक्षित हो जाता। वियाना स्थित पोप के धर्मदूत कराफा ने इस विषय पर ब्रुसेल्स स्थित धर्मदूत को एक पत्र लिखा किन्तु पत्रवाहक ऊपरी राइन प्रदेश में मेंसफेल्ड की सेना के हाथों में पड़ गया। यह पत्र अन्य पत्रव्यवहार सहित कॅसलादित हिस्पालेका[2] के रूप में 1622 में प्रकाशित कर दिया गया। फ्रेडरिक के एक सचिव[3], सम्भवतः केमेरेरियम, द्वारा संकलित यह उन प्रकाशनों की शृंखला की पहली पुस्तक थी जिसका अभिप्राय कैथोलिक नीति का दोहरा आवरण प्रदर्शित करना था, इसने साम्राज्यीय और लीग के उद्देश्यों में बढ़ते हुए अन्तर पर बल दिया, उसने कैथोलिकों को युद्ध के लिए जिम्मेदार ठहराया, इसे सिद्ध करने के लिये उसने ह्यासिथ के हमेडिड मिशन का उदाहरण दिया, कि किस प्रकार प्रतिक्रियावादी तत्व युद्ध को चालू रखने के लिए विदेशी सहायता मांग रहे थे, इसने इस बात से सहमति व्यक्त की कि फ्रेडरिक पर साम्राज्यीय रोक लगाकर, सम्राट् साम्राज्य की एक महत्वपूर्ण संस्था को बवेरिया के साथ किये गये अपने वचनों को पूरा करने के लिये प्रयोग में ला रहा था।

1 जोजर कृत, डेर केनजलेन स्ट्रेट पृ० 15।

2 प्रथम संस्करण का मुख पृष्ठ प्रकाशन का स्थान फ्रीस्टाड बताता है।

3 कोजर, पूर्व उद्धृत, पृ० 32।

केन्सेलांदिया टिस्पानिका का विषय है— 'स्पेन बीन बजाता है जबकि जर्मनी नाचता है।' इन दो प्रकाशनों द्वारा उठाया गया विवाद 1626 तक चलता रहा।

प्रोटेस्टेन्ट यूनियन का अन्त : पेलेटिनेट का आक्रमण

इस प्रचार युद्ध में पहला धक्का साम्राज्यवादी दल को लगा, और इसमे कोई संदेह नहीं कि **अनहाल्टिस्च केंटजली** की सफलता ने प्रोटेस्टेन्ट संघ के (1621) भंग होने में सहायता की। आगे के लिए जर्मन प्रोटेस्टेन्ट दल दो भागों में बंट गया, पहला, जिम्मेदार, लौकिक, अवसरवादी तत्व सेक्सनी के इलेक्टर की अधीनता में था, दूसरा बदनाम किन्तु अब भी युद्धरत और महत्वाकांक्षी दल था जिसका प्रतिनिधित्व फ्रेडरिक और आन्हालट का क्रिश्चियन, जैमे नेता कर रहे थे। प्रोटेस्टेन्ट संघ के पतन का पहला परिणाम यह था कि स्पिनोला और टिली के सैनिकों ने निचले पेलेटिनेट[1] पर आक्रमण कर दिया और 'विन्टर किंग' को हालेण्ड में लज्जाजनक शरण लेने के लिए बाध्य होना पड़ा, जहां अब स्पेन के साथ 1609 में हुई द्वादश वर्षीय युद्ध-विराम-सन्धि समाप्त हो चुकी थी। मेन्सफेल्ड ने अपने मिश्रित सैनिकों को राइनलैण्ड और अल्सेस में वापिस बुला लिया जहां वे अपना निर्वाह पूर्णतया लूटपाट से करते रहे और इस तरह तीस वर्षीय युद्ध की एक नई विशिष्टता का आरम्भ हुआ। व्हाइट हिल की लड़ाई का प्रभाव हंगेरी तक पहुंचा जहां कई महीनों की बात-चीत के बाद बेथलेन गेबर ने अपनी पदवी का त्याग कर दिया और व क्षति-पूर्ति के रूप में अनेक प्रदेश और साम्राज्य के राजकुमार का पथ स्वीकार कर लिया।

बोहेमिया में आतंक का शासन (1620–27)

परन्तु बोहेमिया में व्हाइट हिल की लड़ाई का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। विजय के पश्चात् 25 व्यक्तियों को जिन पर बलवे में शामिल होने का संदेह था, सार्वजनिक रूप में फांसी दी गई[2], किन्तु ये बलि के बकरे जिनमें कम से कम एक अस्सी वर्षीय और कुछ अपनी पवित्रता तथा ज्ञान के लिए प्रसिद्ध व्यक्ति थे, उन असैनिक नेताओं से बिलकुल भिन्न प्रकार के थे, जिन्होंने बोहेमिया को संघर्ष में डाला था और जो पहले ही बचकर भाग निकले थे। अब धर्मान्धता और

---

1 पेलेटिनेट में युद्धों का समकालीन वर्णन एक स्पेनिश सिपाही द्वारा दिया गया है (फ्रे. टी, यबारा) जिसे कि मोटैल फ्रेशियो द्वारा **एस्पेगेन**, पृ० 328–480 में पुनः मुद्रित किया गया है। यह विवरण सैनिक इतिहास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

2 **हरलियन मिसलेनी** में इस सम्बन्ध में अंग्रेजी विवरण उपलब्ध है, 3, पृ० 409।

अपहरण की सुनियोजित नीति से देश के धन–जन के साधनों को नष्ट होना था। एक कुख्यात लीचेंटस्टीन की प्रधानता में एक संघ अपहृत जागीरो को बेचने के लिए बनाया गया, देश का समस्त सिक्का छीन लिया गया और पुराने के स्थान पर उससे आधे के वास्तविक मूल्य का नया सिक्का पुनस्थापित किया[1] गया, कैथोलिक भी इस पीड़ा से न बच सके। बहुत मूल्य की म्युनिसिपल जायदाद कानूनी तरीके से जब्त कर ली गई। बडी–बड़ी जायदादें संघ से मिले हुए लोगों को बहुत कम कीमत में बेच दी गई। और इस समय से ऐसे परिवारो, जैसे बुकौय, ट्रोट–मैस्डोर्फ, मैर्टीनिक, और मराडा के भाग्य जाग गये। इससे भी अधिक बुरा था जेसुइट धर्म–प्रचारकों के गिरोहो द्वारा प्रोटेस्टेन्टवाद का सुव्यवस्थित दमन। ये अपने अभियान को देश के सुदूरतम भागों में ले गए। धर्म–निरपेक्ष सत्ता के समस्त साधन इनके साथ थे। आश्चर्य नही कि इन परिस्थितियो में बहुत से लोगों ने धर्म–परिवर्तन कर लिया। कहा जाता है कि जेसुइट को छः हजार व्यक्तियों के धर्म–परिवर्तन का गर्व था। संदिग्ध पुस्तकों को नष्ट कर दिया गया, बच्चों को धार्मिक नाटकों में, जो जनता के सम्मुख खेले जाते थे, भाग लेने के लिए तैयार किया जाता था जिनसे पाखण्ड पर धर्म परायणता की विजय दिखाई जाती थी। नए कैथोलिक मंत्रोच्चारण के स्थान पर पुराने (जेक) मंत्र–स्वर प्रयुक्त किये गये। अधिक सरल स्वभाव वालों को बारम्बार के चमत्कारों द्वारा भौंदू बनाकर स्वार्थ सिद्धि की जाती थी। इन चमत्कारों में मुख्य मिकोलोफ की चमत्कारक कुमारी थी जो कार्डिनल डी ट्रिचस्टीन के धार्मिक प्रचार में बहुत सहायक थी। बहुत से लोग देश छोड कर चले गये। किन्तु राष्ट्र के भारी बहुमत को इस क्रम में उद्विग्नता से भाग लेना पड़ता था। परिणामस्वरूप बोहेमिया की आत्मा का क्रमबद्ध रूप में मर्दन कर दिया गया [2]।

बोहेमिया के प्रवासी : कोमिनियस

बोहेमिया में 1632 के अन्त तक कैथोलिक विजय पूर्ण हो गई थी। प्रोटेस्टेन्टवाद का समूल नाश कर दिया गया था और अत्याचार बन्द हो गये थे। उस समय देश का जो बौद्धिक और भौतिक दमन हुआ, उसका समर्थन नहीं किया जा सकता। उस समय का इतिहास बताता है कि दमन के साथ धार्मिक मतवालेपन के दृश्य प्रायः देखने में आते थे। भूतप्रेत, जादू–टोने दैनिक कार्यक्रम हो गये, और राष्ट्रीय क्षय की ओर भी बड़ी अभाग्यपूर्ण निशानी जादूगरी करने के अपराध में गिरफ्तारियो में महान् वृद्धि दिखाई देती है।[3] ऐसे घुटनशील वाता–

---

1 डेनिस, पूर्व उद्धृत जिल्द 1, पृ० 19।

2 वही, जिल्द 1, पृ० 95।

3 डैनिस, पूर्व उद्धृत 1, पृ० 348।

वरण में विद्याभ्यास और शिक्षा का ह्रास होना स्वाभाविक था और प्राग विश्व-विद्यालय में, जो किसी समय अपने पाण्डित्य के लिए प्रसिद्ध था, उच्च साहित्य और इतिहास की शिक्षा देना बिल्कुल बन्द कर दिया गया और विज्ञान स्वीकृत मध्यकालीन संग्रहों के अध्ययन तक ह सीमित रह गया। जैसुइट प्रत्येक स्थान पर विचार–स्वातंत्रय और मौलिकता का दमन करके और विचारों की जड़ एक-रूपता के, जो विचारशीलता का विपर्यय है, प्रतिवादन से क्लिमेण्टिनम की गढ़ी से देश के समस्त बौद्धिक जीवन पर नियंत्रण रखते थे। बोहेमिया का धार्मिकजीवन जो किसी समय बल और वैचित्रय की निधि था, अब सकुचितभ्रातृसंघ बन गया जो कुमारी मेरी से सम्बन्धित अनेक कैथोलिक मण्डलियों में केन्द्रित था। प्राचीन बवेरिया का स्वरूप प्रवासियों के जीवन और लेखों में अवशिष्ट रह गया था। देशभक्त पाल स्ट्रेस्की (1583–1657) ने अपनी रेस्पब्लिका बोर्जेमा में चेक बुर्जुआ की अभिलाषाओं और ट्यूटोनिक प्रभुत्व के विरूद्व वहां के असली निवासियों को क्रोध की भावनाओं का चित्रण किया है। कोमिनियस[1] इससे भी अधिक प्रसिद्ध था। उसमें बोहेमिया की बिरादरी के उद्देश्यों में जो कुछ भी सर्वोत्तम और सबसे अधिक व्यावहारिकता, थी। उसका जीवन बैज्ञानिक धार्मिक और क्षैणिक विचारो का समन्वित रूप था। उसका दृढ़तम विश्वास मानवता की प्राकृतिक सज्जनता और शिक्षा की शक्ति द्वारा उसे प्रकाशिन करने में था। लीचटेंस्टीन के दानवों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर खदेड़े जाने पर भी उसने शिक्षक की प्रवृत्तियों को कभी नहीं छोड़ा[2] और बोहेमिया, मोरेविया, पोलैण्ड और ट्रांसिवेनिया में बहुत से लोगों को अपने उदार तरीकों का मतानुयायी करते हुए उसने अन्त में 1671 में एम्सटर्डन में आत्मबलिदान और भक्तिपूर्ण जीवन को समाप्त कर दिया। उसके अध्ययन में इतिहास आध्यात्मविद्या, दर्शन और भाषाशास्त्र सम्मिलित थे। वह 18वीं शताब्दी के विश्वशब्दकोष लेखकों का सच्चा पूर्वज था। इससे भी अधिक वह पशुबल पर मन की श्रेष्ठता और स्थिर आध्यात्मिक प्रयत्न की अजेयता का प्रतिरूप था। परन्तु कुछ ऐसे व्यक्तियों को छोड़कर, बोहेमिया में, इन वर्षों में लालच और धर्मान्धता के कारण बौद्धिक प्रगति का अन्त हो गया।

1627 का बोहेमिया का सविधान

बोहेमिया की अधीनता की शर्तों की व्याख्या 1627[3] के संविधान में की गई थी जिसके अनुसार इसे हैप्सबर्ग के अन्य प्रदेशों में मिला दिया गया। यह

---

1 1592–1671।

2 देखिये कीटिज कृत, दी ग्रेट डिडेक्टिक आफ जॉन अमोसकोमिनियस।

3 ह्यूबर, पूर्व उद्धृत, 10, 7।

सविधान 1848 तक कायम रहा। राज्य को हैप्सबर्गों की पुरुष श्रेणी में वंशानुगत घोषित किया गया और डायट को केवल उस श्रेणी का अन्त होने पर निर्वाचन का अधिकार दिया गया। चांसलर को राजा के पास रहने अर्थात् अपना निवासस्थान वियना में रखने, का विधान था। राष्ट्रीय प्रथा को बन्द करके जर्मन कानून और रोमन विधिशास्त्र के मिश्रण को लागू किया गया जो अन्य हैप्सबुर्ग प्रदेशों में चल रहा था। इसके परिणाम स्वरूप स्वतन्त्र किसान का दर्जा नीचा हो गया, क्योंकि अब यह रोमन विधिशास्त्र की दासता की लाक्षणिक धारणा से प्रभावित होता था। यह कानून बना दिया कि स्वामी को अपने कृषक दास की जायदाद पर अधिकार होगा और दास कृषक को अपने स्वामी के विरुद्ध लम्बे कब्जे का अधिकार प्राप्त नहीं था। इस प्रकार बोहेमिया में दासवृत्ति वैध सस्था बन गई, और ढूंढकर मनुष्यों को पकड़ लाने की व्यवस्था से बहुत से कृषकों को, जो भागकर बचने की कोशिश कर रहे थे, वापिस लौटना पड़ा। भविष्य में दास कृषकों को विशिष्ट व्यक्तियों पर लगाये गये कानूनों की अपेक्षा, कठोरतम नैतिक सहिता के अधीन रहना पड़ा। उदाहरण के लिए, पर स्त्री–गमन के लिये दण्ड–मृत्यु था, उसके लिए नृत्य और शिकार के मनोरंजन वर्जित थे, वह एक स्वामी को छोड़कर दूसरे के पास नहीं जा सकता था। और सघों को भगोड़ों को शरण देने से मना कर दिया गया था। अपने स्वामी द्वारा केवल घोर क्रूरता करने पर ही बोहेमिया के दास को पीड़ा से मुक्ति पाने का अधिकार था। अन्त में 1927 के सविधान के विषय में यह कहा जा सकता है कि इसने बोहेमिया में ट्यूटोनिक प्रभुत्व पैदा कर दिया। इसने बोहेमिया निवासियों की भाषा और राष्ट्रीयता का इतना दमन किया जितना कि मानव कानूनों द्वारा सम्भव था। इससे कटुता और रोप का बडा भण्डार बन गया जिसका कुछ आभास 1848 के विद्रोह में हुआ।

मैन्सफील्ड और प्लेटीनेट पर दूसरा आक्रमण—अक्टूबर 1621

वालेंस्टीन के समय से पहले बोहेमिया पुनः तीस वर्षीय युद्ध में सम्मिलित नहीं हुआ। व्हाइट हिल की लड़ाई के पश्चात् वह युद्ध में से निकल गया जहां युद्ध की प्रारम्भिक घटनायें हुई थीं। पहले की भांति ही विजेताओं में जल्दी ही फिर भेद दिखाई देने लगा। फर्डिनेण्ड ने म्यूनिख की सधि की शर्तों को पूरी करने में कुछ अनिच्छा दिखायी। इस संधि के अनुसार बवेरिया[1] के मेक्सिमिलियन को पेलेटाइन इलेक्टोरेट देने का वचन दिया गया था, जो बोहेमिया को कुचलने के खर्च की जमात में ऊपरी आस्ट्रिया में मूल्यवान अधिकार रखता या जब मेक्सिमिलियन अपनी सेना और साधनों का उपरी पेलिटनेट की विजय में उपयोग करने के लिये

---

1 वेक्सेरियट पूर्व उद्धृत, जिल्द 1, अध्याय 10।

प्रोत्साहित किया गया। अन्त में, सम्भवतः यह सोचते हुए कि वह इस प्रकार युद्ध का अन्त कर देगा उसने लड़ाई करना स्वीकार कर लिया किन्तु वह बड़ी कठिनाई के बाद लीग को 15,000 सैनिकों की एक टुकड़ी की सहायता देने के लिए मना सका। इस पर मैन्स्फेल्ड, जो इस समय ऊपरी पेलेटिनेट में जम गया था, बवेरिया से संधि करने के लिए तैयार हो गया। अक्टूबर 1621 में एक राजक्षमा पत्र पर हस्ताक्षर किये गये जिसके अनुसार प्रोटेस्टेन्ट लडाकू व जत्थेदार ने, कुछ धन के बदले अपनी 20,000 सेना को पीछे हटाना या भग करना स्वीकार कर लिया। तब मेक्सिमिलियन ने ऊपरी पेलेटिनेट की अपनी विजय को पूर्ण कर लिया। किन्तु मैन्सफील्ड, अपनी बात पर कायम नहीं रहना चाहता था। राइन घाटी की ओर मुड़कर यह निचले पेलेटिनेट को इस प्रकार रोंदने लगा जैसे वह इलेक्टर पेलीटाइन का मित्र न होकर शत्रु हो।[1] 23 अक्टूबर, 1621 को मानहीम में घुसने पर उसके साथ होरेस वियर के अधीन एक अंगरेज टुकड़ी मिल गई और तुरन्त हीडल वर्ग, विम्पफेन और हीलब्रोन पर अधीकार कर लिया गया। निचले पेलेटीनेट की इस 'रक्षा' से इसकी तबाही से भिन्न करना कठिन था। उसी वर्ष के दिसम्बर मास में मैन्सफेल्ड ने, किसी भी प्रकार से, वेतनभोगी सैनिक की तरह नहीं अपितु एक स्वतन्त्र नेता की भांति अलसेस में हेग्वेनों पर अधिकार कर लिया। सन् 1622 के आरम्भ में उसके पास 35,000 सेना थी और उस वर्ष के अप्रेल मास में फ्रेडरिक स्वयं उसके साथ मिल गया जिसने इस बीच में दो ब्रजविक के क्रिश्चियन और वेडन–दुर्लेच के मार्क्विस की मित्रता प्राप्त कर ली थी। इनमें से पहला हेलवरस्टेड्ट के गिरजे का प्रशासक और उत्साही काल्विनवादी युवक था जो अपनी चचेरी बहिन एलिजवेथ इलेक्ट्रेस पेलेटाइन के प्रति उत्सर्गपूर्ण आसक्ति से ओतप्रोत था और उसका दस्ताना अपने शिरःत्राण पर लगाता था। दूसरे की, जिसका मुख्य उद्देश्य लूट करना था, मानसिक वृत्ति अधिक व्याहारिक थी। उसने अश्वारोही सेना के आक्रमणों को विफल करने की इच्छा से रथ के नुकीले कांटे वाले पहियों का आविष्कार किया, किन्तु इस युक्ति से वह टिली द्वारा विम्पफेन में दी गई पूर्ण पराजय से अपने आपको न बचा सका (7 मई 1622) तथा अगले मास में वही दशा हेलवरस्टेड्स के क्रिश्चियन और उसके ब्रजविक के सैनिकों की होच्स्ट में हुई। इन पराजयों के कारण अपने सैनिक मित्रों की वास्तविक उद्देश्यों को समझने पर फ्रेडरिक को दूसरी बार फिर भागना पड़ा। इस बार वह सीडन गया जबकि मैसफील्ड और हैलबरस्टेड्ट निचले देशों में चले गये जहां उन्होंने नेसां के मौरिस को ब्रेडा का घेरा बढाने में सहायता दी। अब टिल्ली के लिए निचले

---

1 गार्डिनर पूर्व उद्धृत, अध्याय 11 तथा, गिन्डले, पूर्व उद्धृत, अध्याय 7।

पेलेटिनेट की विजय को पूर्ण करना शेष रह गया, यह प्रान्त पहले दो वर्षों में दो बार रौंदा जा चुका था। हीलवर्ग पर धावा बोलकर जीत लिया गया 10 सितम्बर 1622 और 1623 के अप्रेल मास तक विंटरकिंग के पास केवल उसका व्यक्तिगत सामान और उसके सम्बन्धी रह गये थे। उसके प्रदेश धरोहर के रूप में बवेरिया के मेक्समिलियन को सौंप दिये गये, उसका पुस्तकालय रोम भेज दिया गया, स्पायर्स के बिशप को प्रशासक नियुक्त किया गया और जैसुइटों की एक टुकडी काल्विनवादी होडलवर्ग में भेजी गई। इस प्रकार 1623 तक राइन के पेलेटिनेट की वही दशा हो गई जो बोहेमिया की हुई थी।

पेलेटाइन इलेक्टोरेट का हस्तान्तरण (फरवरी 1623) :

फ्रेडरिक की भूमियों को ठिकाने लगाना सरल था, किन्तु उसके निर्वाचन-परमाधिकार का फैसला करना कठिन था। जनवरी 1623 को एक डायट रेटिस्बोन में बुलाई गई जहां तीनों मण्डलों ने सम्राट द्वारा फर्डिनेन्ड पर स्वेच्छाचारिता पूर्वक 'साम्राज्य की निषेधाज्ञा' द्वारा अपनी व्यक्तिगत सत्ता आरोपित करने पर असहमति प्रकट की। फर्डिनेन्ड इलेक्टोरेट को मैक्सिमिलियन को देने के लिये गुप्त रूप से वचनबद्ध था, किन्तु यह स्पष्ट था कि वह इस बात पर हठ करता तो युद्ध का बिल्कुल नया रूप हो जाता। विटल्सवेच परिवार 1294 ई० में दो शाखाओं पेलेटाइन और बेवेरियन में बांट दिया गया था; एक को निचला और दूसरे को ऊपरी पेलेटाइन दिया गया तथा दोनों को बारी बारी से निर्वाचन मत का प्रयोग करने का अधिकार दिया गया। गोल्डेन बुल ने इलेक्टोरेट का पद पूर्णतया बड़ी या पैलेटाइन शाखा को प्रदान करके इसमें परिवर्तन कर दिया, किन्तु बाद में बेवेरिया के ड्यूक ने इस आधार पर इसे मान्यता देना अस्वीकार कर दिया कि गोल्डन बुल के लिये कभी भी पोप का समर्थन प्राप्त नहीं किया गया। इसलिये जहां तक सार्वजनिक कानून का सम्बन्ध था दोनों के पास अपने प्रमाण थे। किन्तु फ्रेडरिक ने, अपयशी ओर निर्वाचित होने पर भी अपना पद समर्पित करने की बात सुनने से भी इन्कार कर दिया जबकि सेक्सनी और ब्रेन्डेन्बुर्ग के इलेक्टरों ने इस परिवर्तन में एक गम्भीर खतरा यह देखा कि इससे प्रोटेस्टेन्टों के केवल दो मत रह जायेंगे। स्पेन इसका विरोध इसलिए करता था, क्योंकि वह फ्रेडरिक के श्वसुर जेम्स प्रथम से मित्रता रखने के लिये उत्सुक था। इस काल में अव्यवस्था होते हुए भी चिर-प्रतिष्ठित अधिकारों के प्रति कुछ आदर था। अनेकों का मत था कि कम से कम फ्रेडरिक के उत्तराधिकारियों का इलेक्टोरेट पर दावा बना रहना चाहिये। दूसरी ओर फ्रांस बेवेरिया की उम्मेदवारी का समर्थन करता था क्योंकि जर्मनी में प्रोटेस्टैन्टवाद को निर्बल करने के लिये वह एक विटल्स बेच को हैप्सबुर्ग के विरुद्ध और पोप ग्रेगरी पन्द्रहवें के पक्ष में खड़ा करना चाहता था। कुछ विचार-विनिमय

के पश्चात् डायट ने सिफारिश की कि इलेक्टरोरेट फ्रेडरिक के परिवार में ही रखा जाये और बोहेमिया के प्रोटेस्टन्टों के साथ दयालुता का व्यवहार किया जाये। मैक्सिमिलियन अपना दावा छोड़ने के लिये तैयार हो गया यदि उसे सेना पर किया गया खर्च दे दिया जाये। यह वह जानता था कि फर्डिनेन्ड यह शर्त पूरी नहीं कर सकता था। अन्त में दोनों में इस प्रकार निबटारा हुआ कि मैक्सिमिलियन को उसके जीवनकाल तक इलेक्टोरेट दे दिया जाये और इसके भाग्य के अन्तिम निश्चय के प्रश्न का निर्णय इलेक्टरों की डायट द्वारा किया जाये। तदनुसार 23 फरवरी 1623 को स्पेन, लूथर वादियों ओर काल्विनवादियों के विरोध करने पर भी इस निश्चय को कार्यान्वित कर दिया गया।[1]

प्रोटेस्टेन्ट शक्तियों का पतन

इन घटनाओं के फलस्वरूप साम्राज्यवादियों के नक्षत्र ऊंचे थे। जर्मनी मे हर जगह प्रोटेस्टेन्टों के लिये भयावह स्थिति हो गई। स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने की आशा में मैन्सफैल्ड, फ्रिसिया ओर ओल्डेन्बुर्ग को लूटने के लिये अपने डच शरत्-निवासस्थान से निकला। टिली ने, जो हालैण्ड में युद्ध-प्रसार करने का इच्छुक था, स्टेडलोन में हैल्वरस्टेड्य के क्रिश्चियन को हटाया और उसी वर्ष दिसम्बर में फ्रीसोयथ से मेन्स्फैल्ड को खदेड़ा। इससे मेन्सफैल्ड की रही, सही प्रतिष्ठा का भी अन्त हो गया। वहां का कोई स्वदेशीय नेता युद्ध करने का न तो इच्छुक था और न तैयार था ओर ऐसा प्रतीत होता था कि जर्मनी प्रति–धर्म–सुधार की विजय शक्ति के आगे घुटने टेक देगा।

रिशेल्यू : मोन्जोन की सन्धि 1626

इसी बीच 1624–1625 में तीन नए पात्र उस नाटक के दृश्य में प्रकट हुए जो अब अखिल यूरोपियन नाटक बनता जा रहा था। इनमें से पहला पात्र रिशेल्यू था जिसने 1624 में फ्रांस में शक्ति प्राप्त की। यद्यपि 1635 तक उसने निश्चित रूप से हस्तक्षेप नहीं किया तो भी उसे वेलेन्टाइन[2] के प्रश्न पर अपने बल की जांच करने का अवसर मिला। स्पेन के लिए वेलेन्टाइन का सामरिक महत्व फ्रेंच कोमेट की अपेक्षा बहुत अधिक था, क्योंकि यद्यपि इटली से नैदरलैण्ड को जाने का मार्ग फ्रेंच कोमेट में से था फिर भी सेवाय बीच में पड़ता था और इस काल में उसके विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नही कहा जा सकता था, जबकि वेलेन्टाइन में मिलान प्रदेश से सीधा प्रवेश किया जा सकता था और इस प्रकार

---

1 गिन्डले, पूर्व उद्धत, जिल्द 1, अध्याय 7।

2 वेलेन्टाइन प्रश्न के लिए देखिए, केम्ब्रिक मार्डन हिस्ट्री, जिल्द 4, अध्याय 2।

बेवेरिया और टाइलोल तक पहुंचा जा सकता था। टिली की निचले पेलेटिनेट[1] की विजय ने राइन प्रदेशों को अल्सेस और लारेन से जोड़कर इसे और भी सुविधाजनक बना दिया। वेलेन्टाइन में अर्थात् पूर्व से पश्चिम (लोक कोमा से उत्तर की ओर) की ओर फैली हुई आडा की घाटी में प्रोटेस्टेन्ट ग्रिजों समुदायों का प्रभुत्व था जिन्हें फ्रांस और वेनिस प्राकृतिक मित्र के रूप में मिले जबकि घाटी के कैथोलिक आदि निवासियों को स्पेन से आशा थी। इसलिए मिलान के सभी स्पेनिश राज्यपालों की नीति का उद्देश्य ग्रिजों को उनके अधिनायकत्व से हटाना था और इसी विचार से उन्होंने घाटी में गढ बनवाए। इन्हीं कारणों से 1622 में ग्रिजों को अधीनस्थ कैथोलिक जनता पर से अपना शासन छोड़ देने के लिए बाध्य होना पड़ा और अपने प्रभुत्व को पुनर्स्थापित करने की आशा में फ्रांस से मित्रता करने की कोशिश करनी पडी। इस पर फ्रेंच सरकार ने प्रोटेस्टेन्ट अधिकार को फिर से जमाने के उद्देश्य से वेनिस और सेवाय से मैत्री कर ली; अर्बन अष्टम ने अधिकार रूढ़ होने पर पोप के सैनिकों[2] से वेलेन्टाइन को भरकर, बीच बचाव किया। इस समय (अगस्त, 1624) रिशेल्यू ने अधिकार प्राप्त किया और उसने पैपल फौजों को बाहर निकाल दिया, किन्तु उसने सावधानी से इसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर न लेकर उस अफसर पर, जिसे सेनाओं को निकालने का कार्य सौंपा गया था, डाल दिया। किन्तु उसके पद की अवधि की स्थिति गम्भीर होने से और ह्यूगेनो द्वारा सैनिक तैयारी के कारण, उसे 1626 में झुकना पड़ा। उसने वेनिस अथवा सेवाय से सलाह लिये बिना मोन्जोन की सन्धि द्वारा (1626) स्पेन के साथ मिलकर वेलेन्टाइन के कैथोलिकों की स्वतन्त्रता और उनके धर्म की रक्षा की गारण्टी का उत्तरदायित्व लिया। यह एक ऐसा कदम था जिसने ग्रिजों को उनके प्रभुत्व से वंचित कर दिया और वास्तव में इससे दर्रो को स्पेन के हाथों में छोड़ दिया गया। अपने संस्मरणों[3] में रिशेल्यू ने इस सन्धि से फ्रांसीसी कूटनीति द्वारा प्राप्त सफलता पर अपने को धन्य समझा, किन्तु वास्तव में तब तक (1626) वह इतनी दृढ़ता-पूर्वक स्थायी न हो सका था कि यूरोप से वह अपनी बात मना सकता और न ही वह ह्यूगेनो के खतरों से सुरक्षित हो सका था। यद्यपि सन्धि में दर्रों के सम्बन्ध में कोई संकेत नहीं था किन्तु इसका पर्याप्त प्रमाण यह है कि ग्रिजों इस सन्धि की शर्तों से यह समझते थे कि उनकी स्वतन्त्रता का दर्जा उनसे छीन लिया गया और

---

1 विद्यार्थियों को नक्शे की सहायता से ऊपरी और निचले पेलेटिनेट में अन्तर करना चाहिए।

2 फेगनेज कृत **ले पेरे जोसफ एट रिशेल्यू**, अध्याय 1, पृ० 194।

3 **मेमोयर्स**, अध्याय 5, पृ० 203।

उन्हे स्पेन और वेलेन्टाइन की दया पर छोड़ दिया गया है। फ्रेंच मंत्री के इस उपक्रम की निन्दा करना कठोरता होगी किन्तु यह मानना पड़ेगा कि यह उपक्रम था क्योंकि संस्मरणों में लिखित प्रशंसक कथन कार्डिनल के लिपिकों के केवल मांगलिक वचन थे और उन्हें अकाट्य ऐतिहासिक प्रमाण नहीं माना जाता। इसलिए रिशेल्यू ने अपना कूटनीतिक जीवन अपने मित्रो (सेवाय और वेनिस) को त्याग कर और समुदाय (ग्रिजों) के साथ विश्वासघात करके, जिनका समर्थन करने का उसने दायित्व लिया था, आरम्भ किया।

इस युद्ध के सैनिक इतिहास में मोन्जोन की सधि का महत्व स्पष्ट है क्योंकि स्पेन को मिलान से अपनी सेनाओं को जर्मनी और आस्ट्रिया में घुसने के लिए खुला छोड़ दिया गया। इससे बड़ी बात यह थी कि दर्रो पर नियन्त्रण के कारण उसने वेनिस या सेवाय के लिए फ्रांस का सहयोग प्राप्त करना कठिन कर दिया। यदि स्पेन को यह सुविधा न मिली होती तो कैथोलिकों की नौर्डलिन्जन (1634) की महत्वपूर्ण विजय प्राप्त न होती। रिशेल्यू ने 1626 के बाद के वर्षों में चौकसी रखकर सतोष किया और ऐसे मित्रों की खोज में रहा[1] जिनको फांस आर्थिक सहायता देकर हैप्सबर्गो के विरुद्ध लड़ा सके।

डेनमार्क का क्रिश्चियन : धर्मनिरपेक्ष बिशप-शासित क्षेत्र

इस समय झगड़े में पड़ने वाला दूसरा व्यक्ति था डेन्मार्क का क्रिश्चियन चतुर्थ जो जेम्स प्रथम का बहनोई था। जेम्स के लिए वैवाहिक सम्बन्ध से मिले नए सम्बन्धी शुभ नहीं थे, क्योंकि वे उसे विदेशी झमेलों में उलझाते थे और कभी-कभी वे उससे अपने हिस्से से अधिक करने की भी आशा रखते थे। डेनिश राजा को प्रेरित करने वाले दो उद्देश्य थे, एक था स्वीडन के प्रति उग्र ईर्ष्याभाव और दूसरा ऐल्ब और ओडर नदियों के मुहाने प्राप्त करने की अभिलाषा। उसका पुत्र फ्रेडरिक वर्डेन के बिशप-क्षेत्र का प्रशासक था और मिण्डन पर अपना अधिकार करना चाहता था। उसने ब्रंजविक के क्रिश्चियन से हैल्बरस्टेड्ट का बिशप-क्षेत्र खरीद लिया किन्तु पादरी संघ ने इस सौदे की स्वीकृति नहीं थी। फ्रांसीसी वचनों से प्रोत्साहित होकर फ्रेडरिक ने हैल्बरस्टेड्ट पर बल प्रयोग से अधिकार करने का निश्चय किया। सन् 1625 के बसन्त में क्रिश्चियन सैनिक हस्तक्षेप करने की योजना में व्यस्त था। उसने सेक्स-बीमर के अर्नेस्ट को नौकरी में भर्ती कर लिया और होल्स्टीन के ड्यूक की हैसियत से निचली सेक्सन मण्डली के ऐसे जर्मन राजकुमारों से मित्रता की

---

1 कैथोलिक एवं जर्मन प्रोटेस्टेन्ट प्रिन्सेज के साथ रिशेल्यू द्वारा किये गये षड्यन्त्रों के लिए देखिए, गिन्डले कृत लेख, **आरकाइव फुरोस्टर आइशेक गेसचीथे**, 39, 40।

(जैसे मैक्लमेन्बुर्ग का ड्यूक) जो अब तक धर्म निरपेक्ष बिशप-क्षेत्र को अधिकार में रखना चाहते थे। इन राजकुमारों की प्रजा इस प्रयोजन के लिए लड़ाई ठानने की इच्छुक न थी और यद्यपि कुछ समकालीन धर्म निरपेक्ष ग्रिजों को उत्तरी जर्मनी में प्रोटेस्टैन्टवाद के हित के लिए सबसे उत्तम गारन्टी समझते थे किन्तु दूसरों के मतानुसार निचले सेक्सन राजकुमारों का उद्देश्य केवल प्रादेशिक लालसा था। इसलिए डेन्मार्क द्वारा बीच बचाव ऐसे उद्देश्यों से प्रेरित हुआ था जिनकी रक्षा तो की जा सकती है, सराहना नहीं। सन् 1625 का अन्त होने तक उसे इंग्लैंड, फ्रांस और हालेण्ड के समर्थन की आशा हो गई थी और 1626 के बसन्त में उसके पास 30 हजार सैनिक थे।

वेलेन्स्टीन

इस समय त्रिवर्ग का तीसरा सदस्य, जो इस समय तीस वर्षीय युद्ध में सम्मिलित हुआ 16 सौ से अधिक पुस्तकों और लेखों[1] का विषय बना रहा है। वेल्डस्टीन का एल्बर्ट वेन्सेसलस या जिसे परम्परा से वेलेस्टीन कहा जाता है 1583 में एक बोहेमियन कुलीन परिवार मे उत्पन्न हुआ था। प्रारम्भिक वर्षों में उसे लूथरवादियों ने और बाद में बोहेमियन बिरादरी ने पाला था; जब वह जैसुइटों का शिष्य हो गया तो उसकी मानसिक धारणायें अपरिवर्तनीय हो गईं और ऐसा प्रतीत होता है कि उसके प्रारम्भिक जीवन पर पड़े विरोधी धर्मों के प्रभावों ने उसे ज्योतिष के अतिरिक्त प्रत्येक दैवीशक्ति के प्रति उदासीन बना दिया। वह नाम से कैथौलिक था किन्तु उसमें धार्मिक आस्था न थी। उसके समकालीन उसकी आकांक्षा, साहस, धृष्टता और उसके सनकीपन से प्रभावित थे। पहले उसने तुर्की के विरुद्ध हंगरी के अभियानों में वीरता दिखाकर प्रसिद्धि प्राप्त की और 1618 से वह साम्राज्यवादी हित के लिए सैनिक आक्रमण करके फरडिनेन्ड का कृपापात्र बन गया था और 1620 में फ्रीडलैण्ड का राजकुमार हो गया। वह युद्ध में मुनाफाखोरी करने साथ-साथ भड़ौती लड़ाकू भी था, जब उसके सैनिक लूट-पाट से निर्वाह योग्य माल प्राप्त न कर पाते तो वह अपनी जायदाद[2] से उत्पादित पदार्थ उनको बेच देता, वह भूमि-सम्बन्धी अनुमान लगाने में भी बहुत सफल व्यक्ति था। उसके अपनी जन्मपत्री में अटल विश्वास ने धैर्य और अपने साथियों से अधिक, दृढ़ निश्चय प्रदान किया, जबकि बार-बार गठिया होने से उसमें चिड़चिड़ापन आ

---

1 देखिये वियत वेलेन्टिन, सालवोनिक रिव्यू 15, 1935 एफ वाटसन की जीवनचर्या का विवरण, वेलेस्टीन में उपलब्ध है, 1938 सी. वी. वेगवुड कृत, दी थर्टी इयर्स वार, पृ० 170 भी देखिए।

2 डेनिस कृत ला बोहेमे डेपिउस ला मोटंग्ने ब्लाचें, खण्ड 1, अध्याय 2।

जाता था और उन दौरों में वह रत्ती भर आवाज भी सहन नहीं कर सकता था। उसके जीवन में भावों को प्रेरित करने वाला तत्व था जिसके प्रति भावी पीढ़ियों ने पूर्ण न्याय किया है, क्योंकि उसके कतिपय जीवनी–लेखकों ने उसकी नेपोलियन से तुलना की है, कुछ ने उसे बिस्मार्क का पूर्ववर्ती कहा है जबकि बहुत से चेक इतिहास लेखकों ने उसे उनके इतिहास की सबसे वीर विभूति माना है। वेलेन्स्टीन के उद्देश्य ओर उपलब्धियों का संतुलित मूल्यांकन करना कठिन है क्योंकि उसके विषय में अनेकों पुस्तकें हैं।

कैथोलिकों में आपसी मतभेद

1624 और 1625 के वर्षों को श्वास लेने का अवकाश कहा जा सकता है और 1626 की वसंत में आमने सामने खडी सेनायें युद्ध के पहले वर्षों की सेनाओं की अपेक्षा अधिक विशाल और अधिक सुसज्जित थीं। इस अवकाश काल में कैथोलिक दलों के पारस्परिक भेद तीव्र हो गये जिससे उनकी सेनायें विभाजित हो गई। एक और वियना लीग और म्युनिक की प्रधानता से ऊब चुका था, दूसरी ओर फ्रांस के षड़यन्त्रों ने मेक्सिमिलियन (प्रोटेस्टेन्ट मित्रों सहित) को अपने पक्ष में करने के लिए राजवंश सम्बन्धी तत्व खड़ा कर दिया जिससे उनको हैप्सबर्गों के विरुद्ध एकत्रित किया जा सके। लीग का जनरल, टिली[1] अच्छी तरह सफलापूर्वक लड़ा था, उसकी सेनाओं ने अत्याचार करके अपयश नहीं लिया था, जैसे मैंस्फेल्ड और उसके सैनिकों ने अपने सम्मान को कलंकित किया था, जबकि उसमें पादरी मुनि की उत्सुकता और पुराने सैनिक के अनुभव का योग था। किन्तु तथापि, यदि साम्राज्य पूर्व में बैथलन गेबर के लगानार आक्रमणों से मुक्त होना चाहता था और जर्मनी में लीग के संरक्षण और गति से बढ़ती हुई प्रोटेस्टेन्ट सेनाओं की धमकी के विरुद्ध अपना अधिकार रखना चाहता था तो इसके पास दो वस्तुयें होनी चाहिये थीं—अपनी सेना और एक जनरल। दोनों जैसे मेघों से अक्समात आ गये और जब सन् 1624 में वेलेंस्टीन ने अपने खर्च पर सेना तैयार की और अपनी सेवायें अर्पित कीं तो तीस वर्षीय युद्ध में एक ऐसा व्यक्ति स्पष्टतया प्रख्याति में आ गया जो अतिविचित्र और दुर्बोध था वेलेंस्टीन ने अपनी निर्जातीय सेना में सब प्रकार के धार्मिक विचारों वाले रंगरूटों को आकृष्ट किया, उसने अन्य लोगों से अधिक वेतन दिया और उसका व्यक्तित्व जितना उसकी सेना को एकता में बांधने में सहायक हुआ उतनी और कोई वस्तु नहीं हो सकी।[2] उसने फ़र्डिनेन्ड

---

1 टिली के कार्यों के सम्बन्ध में देखिए, क्लोप कृत **टिली इम ड्रेसीगेहरीगन क्रिएज्।**

1 उसके सैनिक संगठन के विस्तृत विवेचन के लिए देखिए गिन्डले कृत **वेलेन्स्टीन** खण्ड 1, अध्याय 7।

के साथ यह तय किया कि छीना हुआ तोपखाना और युद्ध सामग्री सम्राट को मिलेगी और लूट का माल सैनिकों को वेतन देने के काम में लाया जायेगा।[1] वेलेटाइन युद्ध को एक व्यापारिक कार्य मानता था, और यह फरडिनेन्ड की निराश्रयता का प्रमाण है कि उसने ऐसे व्यक्ति की सेवायें स्वीकार करने का निश्चय किया जिस पर धार्मिक उद्देश्यों का कोई प्रभाव न था।

मेन्सफील्ड की मृत्यु (नवम्बर 1626) : लूटर का युद्ध (अगस्त 1626)

जब प्रोटेस्टेन्टों ने 1626 के बसन्त में पहले धावा बोला तो डेन्मार्क के क्रिश्चियन ने पश्चिमी जर्मनी में टिली को उलझाये रखने का काम अपने ऊपर लिया, जबकि मैन्सफेल्ड को साइलेशिया में से होकर बैथलेन गेबर की सेनाओं से मिलना था। ऐल्ब तक पहुंचने पर मैन्सफेल्ड को वेलेन्स्टीन ने डेसौ (अप्रैल 25, 1626) में हटा दिया, किन्तु यद्यपि उसे 7000 जवानों की हानि हुई तो भी वह हंगेरी में घुसता गया और जहां उसे पता चला कि विश्वासघाती बेथलेन गेबर सम्राट से बातचीत कर रहा था। वापिस मुड़ते हुए उसकी तपेदिक से बोस्नियाके एक अनजाने गांव में [2] मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् डेन्मार्क के राजा की बारी आई। अपनी दृढ़ स्थिति छोड़ने पर वह 27 अगस्त को थुरिजिया में लुटर नामक स्थान पर टिली द्वारा परास्त कर दिया गया गया। इन लड़ाइयों के कारण एल्ब और वीजर के बीच के निचले भागों को लीग और साम्राज्यवादी दोनों सेनाओं से गम्भीर खतरा पैदा हो गया। यह ऐसा खतरा था जिसके महत्वपूर्ण परिणाम निकले।[3] डेन्मार्क नरेश के मित्रों ने अचानक इस कार्य में उदासीनता-सी दिखाई, मेक्लेन्बुर्ग ने झगड़ा निबटाने की इच्छा प्रकट की और इंग्लैण्ड का चार्ल्स प्रथम क्रिश्चियन को आर्थिक सहायता देने के लिए वचनबद्ध होने पर भी फ्रांस के साथ युद्ध में लगा होने के कारग अपने पिता द्वारा डेन्मार्क में लिया गया ऋण चुकाने में असमर्थ था। संयुक्त प्रान्त भी प्रतिज्ञानुसार समर्थन देने में असफलरहे, क्रिश्चयन की प्रजा युद्ध को और जारी रखने के लिए अनिच्छुक थी, उसके सैनिक शत्रुता को स्थगित करने के लिए आतुर थे तथा केवल फ्रांसीसी सहायता पर भरोसा रखा जा सकता था। उसके अपने श्लेजविग और होल्स्टीन के प्रदेशों पर टिली और वेलेस्टीन की संयुक्त सेनाओं के धावे हो रहे थे और उत्तरी जर्मनी में कैथोलिकों के प्रयोजन की विजय अब निश्चित प्रतीत होती थी।

---

1 गिन्डले द्वारा परिशिष्ट में दिये गये 'निर्देश' देखिये बेलेन्स्टीन, 2, पृ० 387।

2 29 नवम्बर, 1626, वह मृत्यु के समय भी सशस्त्र था।

3 गिन्डले, पूर्व उद्धृत, खण्ड 1, अध्याय 8।

वेलेन्टाइन की योजनायें

अगले कुछ वर्षों में विशेष रुचि वेलेन्टाईन [1] में और उसकी सेना में, जिसकी संख्या लगभग 1,00,000 हो गई थी, केन्द्रित थी। 1626 में उसकी फ्रीडलैण्ड की जायदाद वंशानुगत डची बना दी गई, अगले वर्ष उसने सगन की जायदाद प्राप्त करली और 1628 में उसे मेक्लेनबर्ग की जब्त की हुई डची साम्राज्यवादी हित में व्यय किए गए धन की जमानत के रूप में दे दी गई। उसने जमकर लड़ने और घेरा डालने से बचने और गुरिल्ला युद्ध से शत्रु को थका कर निर्णय प्राप्त करने के मनोरथ को गुप्त नहीं रखा। जर्मनी के कैथोलिक और प्रोटैस्टेन्ट राज–कुमारों या यों कहा जाय कि उनकी प्रजा को शीघ्र मालूम हो गया कि इस थकावट में वे भी हिस्सेदार होंगे और जब वेलेन्टाइन के कप्तानों ने लीग की सेनाओं के साथ शत्रुओं जैसा व्यावहार किया तो जर्मनी के सब दल इस बात पर विचारने लगे कि आखिर ऐच्छिक फैसला क्या हो सकता था। जब महान् सौदेबाज सैनिक ने साम्राज्यीय चांसलर एगेन्बर्ग को यह मंत्रणा दी कि इन विधियों से सम्राट की वंशानुगत भूमि को पुन: प्राप्त करने का अवसर मिलेगा जिससे अन्तत: सम्राट् यूरोप में अपनी शक्ति का पुनर्निर्माण करने योग्य होगा तो यह स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि युद्ध की दिशा जर्मनी में हैप्सबर्गों का शासन निरंकुश बनाने की ओर परिवर्तित की जा रही थी। कुछ समय के लिए दुर्बल फर्डिनेन्ड ऐसी योजनाओं पर मोहित रहा और चारों ओर से विरोध होने पर भी वेलेंस्टीन की सम्पत्ति वियना में सर्वोपरी मानी जाती रही।[2] लीग ने इन शिकायतों पर बल देने के लिए अक्टूबर 1627 में मुल हा सैन में इलेक्टरों की एक डायट बुलाई जहां उन्होंने वेलेंस्टीन के सैनिकों द्वारा किए गए ध्वंसकार्यों की घोर निन्दा की और साम्राज्य द्वारा निष्पक्ष लोगों के अधिकारों की उपेक्षा तथा डेन्मार्क से युद्ध छेड़ने से पूर्व सम्राट् द्वारा इलैक्टरों की सम्पति न लेने का दोष लगाया। उस समय मेक्समिलियन ने फ्रांस द्वारा चलाई गई संधि–चर्चा की ओर अधिक अभिरुचि दिखाई। यह मान लेना चाहिए कि इसके पश्चात् लीग की निश्चित रूप से सम्राट् की नीति के प्रति सहानुभूति नहीं रही। किन्तु फर्डिनेन्ड ने डायट के डेन्मार्क से संधि करने के आवेदनों को सुनने से इन्कार कर दिया और इसलिए संघर्ष और भी तीव्र हो गया।

---

1 इस सम्बन्ध में गिन्डले द्वारा एक रोचक लेख लिखा गया है, **बेंड** 89, 154–241।

1 **ह्यूबर, पूर्व उद्धृत,** खण्ड 11, अध्याय 4 और गिण्डले कृत **वेलेन्स्टीन** खण्ड 1, अध्याय 10।

पूर्वानुदर्शन : यूरोप तथा तीसवर्षीय युद्ध (1626-28)

युद्ध की इस अवधि में (1626–28) प्रमुख युद्धकारियों के उद्देश्य इतने उलझे हुए थे कि उनका वर्णन करना कठिन है। युद्ध द्वारा लूथरवादियों और काल्विनवादियों की पारस्परिक घृणा दृढ होने के कारण प्रोटेस्टैन्टों का कोई संयुक्त मोर्चा नहीं बना। कैथोलिक भी आपस में बंटे हुए थे। लीग थोड़े समय तक अपने प्रदेशों के बचाव और जर्मनी में साम्राज्यीय सविधान के प्रतिपादन के लिये आतुर रही। सम्राट ने वेलेंस्टीन की सहायता से ऐसे मार्ग पर चलना आरम्भ कर दिया था जो साम्राज्य को इलेक्टरों, प्रोटेस्टेन्टों और केथोलिकों से मुक्त करके, एक महान् सैनिक शक्ति बना देगा। उन विदेशी राज्यों में से जो इस संघर्ष में अभिरुचि रखते थे फ्रांस ह्यूगेनाटों मे उलझा हुआ था और इसकी नीति का निर्देशन एक ऐसे राजनीतिज्ञ (रिशेल्यू) के हाथों में था जो, धर्म को राजनैतिक औचित्य में गौण करना जानता था। उसके स्वार्थ धार्मिक नहीं, अपितु वंश–सम्बन्धी थे, और प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि जब वह बीच बचाव करेगा तो वह हैप्सबर्गों के विरुद्ध होगा यद्यपि यह स्पष्ट नहीं था कि उसके जर्मन-मित्र कौन से होंगे या ये सेक्सनी जैसे प्रोटेस्टेन्ट या बवेरिया जैसे केथोलिक होंगे। स्पेन जो उस समय संयुक्त प्रदेशों से युद्ध में उलझा हुआ था इस युद्ध को जर्मनी में कैथोलिकवाद की बलपूर्वक पुनः स्थापना समझता था किन्तु उसे पोप (अर्बन अष्टम) की ओर से नहीं के बराबर समर्थन मिला जो विधर्मियों का शत्रु होते हुए भी न तो हैप्सबर्गों और न ही स्पेनिशों का मित्र था और व्यक्तिगत रूचि के कारण फ्रेंच हितों की ओर झुका हुआ था। घरेलु कार्यों की वजह से इंग्लैंड द्वारा सैनिक बीच-बचाव की कोई सम्भावना न थी यद्यपि जनता में स्पेनिश मित्रता के विचार के प्रति विरोधी भावना थी। डेन्मार्क प्रदेशों पर अधिकार करने के लिये झगड़े में पड़ा था। किन्तु युद्ध-क्षेत्रों में पराजित होने पर अब वह किसी भी कीमत पर सन्धि करने के लिये आतुर था। सेक्सनी और ब्रन्डेनबर्ग दोनों सम्राट के विरुद्ध युद्ध में सम्मिलित न थे किन्तु उनके प्रदेश प्रोटेस्टेन्टों और केथोलिकों द्वारा लगातार रोंदे जा रहे थे। केवल स्वीडन शेष रहा जो उस समय पोलण्ड से युद्ध कर रहा था। यह किसी से छिपा नहीं था कि पोलेण्ड और स्वीडन की लड़ाई [1] समाप्त होने पर स्वीडन के राजा गस्टवस अडोल्फस की इच्छा जर्मनी में प्रोटेस्टेन्टवाद को बचाने की थी, किन्तु किसी भी जर्मन राजकुमार को इस प्रस्तावित बीच-बचाव के प्रति लगाव न था, क्योंकि वे जानते थे कि स्वीडन की सैनिक सफलता के पश्चात् जर्मनी से हर्जाने के रूप में प्रदेश लेने की मांग की जावेगी। युद्ध की इस स्थिति पर हर एक अनिश्चित था और कोई यह नहीं बता सकता था कि स्वीडन या फ्रांस की सेनाओं द्वारा अखाड़े में उतरने का क्या परिणाम निकलेगा।

---

1 अध्याय 12।

स्ट्रालसुंड का घेरा (1628) : गस्टवस अडोल्फस

जब यह विदित हुआ कि गस्टवस अडोल्फस शीघ्र ही संघर्ष में भाग लेने के लिए स्वतंत्र हो जायेगा तो वेलेस्टीन ने बाल्टिक की ओर ध्यान किया, क्योंकि बाल्टिक के दक्षिणी किनारे पर अधिकार कर लेने के पश्चात् ही वह स्वीडन के आक्रमणों का अवरोध करने की आशा कर सकता था। स्ट्रालसुंड और डेनज़िग से बन्दरगाहों को पोलैण्ड के लिये, जो आस्ट्रियन हैप्सबर्गों का सबसे दृढ़ मित्र था, बचाना आवश्यक था। इसलिये वेलेस्टीन ने, बाल्टिक के नौ-सेनापति के रूप में, मई 1628 को स्ट्रालसुंड पर घेरा डाल दिया।[1] अपनी युद्धकला के नियमों से इस प्रकार का अपसरण वेलेंस्टीन की सबसे बड़ी भूल थी। गस्टवस ध्यानपूर्वक घटनाओं का अवलोकन करता रहा था और बाल्टिक के महत्वपूर्ण बन्दरगाह के घिरने पर उसने निश्चय कर लिया कि उसे हस्तक्षेप करना चाहिये। उसने शहर के अन्दर सामग्री भेजीं और खाइयों में ग्रीष्म बिताने के बाद वेलेस्टीन को घेरा उठाने और अपने 20,000 सैनिकों को पीछे हटाने के लिये बाध्य कर दिया।[2]

पुनःस्थापना की घोषणा (मार्च 1629)

यह असफलता और इसके साथ रिशेल्यू के सैनिकों द्वारा अक्टूबर, 1628 में ला रोशेल पर अधिकार करना और हैप्सबर्ग तथा लुबेक शहरों द्वारा प्रतिरक्षा की तैयारियां करना ये सब घटनाएं फर्डिनेन्ड को लीग की बात सुनने के लिये अधिक इच्छुक बनाने में सहायक हुईं। तदनुसार मार्च 1629 में उसने पुनः स्थापना की घोषणा प्रकाशित करके उनकी मांगें स्वीकार कर ली। इस अधिनियम के अनुसार केथौलिकों को, साम्राज्य की 1555 में मिली सीधी जायदादों, पर जो उनके अधिकार में थीं और उन पर, जो पेसा की संधि (1552) के समय अप्रत्यक्ष रूप से उनके पास थीं, पुनः स्थापित करना था। इसका परिणाम यह निकलता कि प्रोटेस्टैन्टों को दो प्रधान आर्कबिशप-क्षेत्रों मेकबर्ग और ब्रेमन के साथ मिडन, हैल्बरस्टेड्ट, वरडन, लुबेक और ब्रेन्डनबर्ग के बिशप-क्षेत्रों को त्यागना पड़ता, दूसरे शब्दों में उन्हें उत्तरी जर्मनी में अपने प्रादेशिक प्रभुत्व को छोड़ने की आवश्यकता का सामना करना था। पुनः स्थापना की घोषणा केथौलिकों को भी पूर्णतया मान्य नहीं थी, क्योंकि प्रोटेस्टैन्टों को उनके अधिकृत प्रदेशों से निकालने

---

1 पोमेरेनियन कस्बे के रूप में स्ट्रालसुंड नाममात्र रूप में पोलेंड के अधीन था; हैन्स कस्बे के रूप में, यह व्यावहारिकतः स्वतन्त्र था। हैप्सबर्ग की महत्वाकांक्षा के लिए देखिये रेन हार्ड कृत **डाइमोटेटाइस पोलितिक डेर हैप्सबर्गट**।

2 गिन्डले कृत वेलेस्टीन, खण्ड 2, अध्याय 3।

के लिये एक नये युद्ध की आवश्यकता होती। दूसरी यह बात भी थी कि वैलेंस्टीन[1] इसके विरुद्ध था, क्योंकि यह घोषणा चार केथौलिक निर्वाचकों की उकसाहट से तैयार की गई थी। किन्तु केथौलिकों में पारस्परिक झगड़े और ईर्ष्या होने से यह घोषणा पूर्ण रूप से कभी कार्यान्वित नहीं हो सकी।

घोषणा का प्रभाव

सैक्सन विशप–क्षेत्रों में मेजबर्ग सबसे धनी था और यदि हैप्सबर्गों का अधिकार इस पर हो जाये तो उत्तरी जर्मनी की कुंजी उनके हाथ आ जाती जैसे कि अल्सेस और स्वाबिया के अधिकार से पश्चिमी जर्मनी की कुंजी उनके पास थी ही। किन्तु इस क्षेत्र में अन्य उम्मीदवार भी थे। लगभग एक शताब्दी तक इस आर्कबिशप–क्षेत्र पर ब्रेण्डेनबर्ग परिवार के सदस्य का प्रशासन रहा था। इसके अन्तिम प्रशासक ब्रैंडनबर्ग के चार्ल्स विलियम को डेनिश युद्ध में भाग लेने के अपराध में चैप्टर ने पदच्युत कर दिया था। इस पर सैक्सनी के इलेक्टर की लालची आंखें बहुत ससय से इन पर लगी हुई थीं और ब्रेण्डेनबर्ग के प्रशासक की पदच्युति पर उसने चेप्टर को अपने ग्यारह वर्षीय दूसरे पुत्र को चुनने के लिए फुसला लिया। पुन: स्थापना की घोषणा ने इस चुनाव को रद्द कर दिया और अर्बन अष्टम ने फर्डिनेन्ड के दूसरे पुत्र लियोपोल्ड बिलियम को, जिसके अधिकार में हेल्वरस्टेड्ट पहले से था, मनोनीत कर दिया। इस प्रकार घोषणा का फल हेप्सबर्गों को उत्तरी जर्मनी में दृढ़तापूर्वक स्थापित करना था। मेजबर्ग प्राप्त करने और वेलेस्टीन को सदा के लिए मेंकलेन्बर्ग देने के पश्चात् सम्राट् ने घोषणा को आगे कार्यान्वित करने पर जोर नहीं डाला। अन्ततः ब्रेंडेनबर्ग और सेक्सनी दोनों ने प्रदेशों की जब्तियों से लाभ उठाया जो अब आरम्भ हुई थीं।

लूबेक की संधि (मई 1629)

दो महीने पश्चात् (मई 1629) ल्वेक की संधि पर हस्ताक्षर हुए जो मुख्यतया वेलेस्टीन की उकसाहट से हुई थी, उसे अन्य किसी की अपेक्षा स्वीडन की ओर से अधिक गम्भीर खतरा दिखाई देता था। इस संधि से डेन्मार्क का राजा युद्ध से अलग हो गया और उसने सेक्सन गिरजों के दावे त्याग दिये। श्लेज्विग–होल्स्टीन उसे वापिस लौटा दिया गया और क्षतिपूर्ति की मांग नहीं की गई। इस प्रकार तीसवर्षीय युद्ध के प्रथम दशक का यह परिणाम निकला कि यूरोपियन राष्ट्रों में से बोहेमिया का और जर्मन प्रोटेस्टेन्ट राज्यों में से पेलेटिनेट का लोप हो

---

1 वही, खण्ड 2, अध्याय 81 वेलन्स्टीन पर अब यह आरोप लगाया जा रहा था कि वह सेना के ऊंचे पदों पर प्रोटेस्टेन्टों को नियुक्त कर रहा है।

गया, डेन्मार्क का निरर्थक हस्तक्षेप हुआ, धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त गिरजों को कैथोलिकों द्वारा पुनर्गृहित कर लिया गया। सबसे अधिक महत्वपूर्ण, प्रोटेस्टेन्ट जर्मनी के मूल्य पर सम्राट् का प्रभुत्व बढ़ना था जिससे एक ऐसे शक्तिशाली तथा प्रतिक्रियावादी राष्ट्र का भय खड़ा हो गया जिसका सेनानायक वेलेस्टीन था और जैसुइट सलाहकार थे। साम्राज्य में ऐसे संविधान के प्रतिपादन की इच्छा थी जो उत्तर के प्रोटेस्टेन्टों और दक्षिण और पश्चिम के कैथोलिकों में महत्वपूर्ण कड़ी का काम करे। विदेशी सहायता उस सतुलन को जिसे देशी शक्तियां अधिकार में न रख सकीं फिर से ठीक करे। दो महान् शक्तियां इसमें भाग लेने के लिये अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा में निकट ही थीं। दोनों शक्तियो ने एक साथ भाग नहीं लिया बल्कि एक के बाद एक ने लिया, यह यूरोप और जर्मनी के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ। फ्रांसीसी आर्थिक सहायता से पृष्ठपोषित स्वीडन के हस्तक्षेप मे कुछ समय के लिए प्रोटेस्टेन्टों के भाग्य फिर पलटे और इस प्रकार अब तीसवर्षीय युद्ध का अधिकतम चमत्कारिक कार्य आरम्भ हुआ।

2 स्वीडन द्वारा प्रोटेस्टेन्टवाद को पुन: स्थापित करना (1630–1635)

रेटिस्बोन में वाद-विवाद के विषय

रेटिस्बोन की डायट (जुलाई 1630) और प्रेग की सधि (मई 1635) इस काल की सीमा में मानी जा सकती है। रेटिस्बोन की डायट वास्तव में सम्राट् और जर्मन कैथौलिकों के प्रतिनिधियों की एक कांफ्रेंस थी, क्योंकि ब्रेंडन्बर्ग और सेक्सनी के इलेक्टरों ने इसमें भाग लेना अस्वीकृत कर दिया था। बहस के मुख्य विषय थे मंटुआ के उत्तराधिकारी का प्रश्न, वेलेस्टीन के विरूद्ध शिकायतें और रोम के राजा का चुनाव। ये सार्वजनिक कार्य थे, इनके साथ कुछ गुप्त वार्तायें भी हुईं, जिनका पूरा विवरण इन्हीं वर्षों में प्रकट हुआ। इन विषयों पर एक–एक करके विचार करना आवश्यक है।

मंटुआ के उत्तराधिकार का प्रश्न

सन् 1627 में मन्टुआ और मांटफेरेट का अन्तिम गोंजगे ड्यूक मर गया। गोंजगे का चार्ल्स जो नेवेर्स का ड्यूक था निकटतम उत्तराधिकारी था जो फ्रेंच दरबार का प्रमुख व्यक्ति था। फ्रांस के लिए यह महत्वपूर्ण था कि फ्रांसीसी प्रभाव के नीचे रहने वाले परिवार को उत्तराधिकार मिले, क्योंकि इन प्रदेशों में मटुआ और कासल के महत्वपूर्ण किले थे, कासल मिलान और सेवाय की सीमाओं पर स्थित था। स्पेन ने गुआस्टेला के ड्यूक, नेवर्स के फ्रांसिस की उम्मीदवारी का पक्ष लिया और सेवाय के साथ मित्रता करके कासल को घेर लिया। रिशेल्यू ने स्वय मार्च 1629 में आल्प्स को उस दर्रे से पार किया जिसे आजकल मान्ट सेनिस मार्ग

कहते हैं और घेरा तोड़ दिया। इसी बीच फ्रांसीसी सेनाओं को ह्यूजनों के एक नए विद्रोह से सुलटने के लिए वापिस जाना पड़ा, और स्पेन और साम्राज्यवादी सेनाओं ने मौरफेरेट पर अधिकार कर लिया। 1630 के आरम्भ में फ्रेंच सेनाओं ने फिर आल्प्स पार किया और इस बार पिनरोलो (पिग्नेरोल) के महत्वपूर्ण किले पर अधिकार कर लिया। इस धृष्टतापूर्ण कार्य ने यूरोप में खलबली पैदा कर दी क्योंकि पिनरोलो स्टैनिश-इटली के प्रदेश में न होकर सेवायार्ड में था और, जबकि इस पर अधिकार सेवाय के लिए फ्रांसीसी मित्रता छोड़ने का दण्ड था इसने हैप्सबर्गों के इटली के अधिकार के विरुद्ध फ्रांस के अभियान का आरम्भ कर दिया। किन्तु इसी बीच मे नेवर्स के ड्यूक को उत्तराधिकार से वंचित कर दिया गया, जिसके लिए उसका सर्वोत्तम दावा था। यही फ्रांस और साम्राज्य के बीच में युद्ध होने का निश्चित कारण था।

फ्रांस और डायट

फ्रांस ने इस प्रश्न को हल करने पर जोर देने के लिए रेटिस्वोन की डायट में अपना एक राजदूत भेजा और उसके साथ फादर जोजेफ डेट्रेम्बले को, जो केपुचिन का सन्यासी और रिशेल्यू का विश्वासपात्र था, आध्यात्मिक परामर्शदाता के रूप में भेजा। आध्यात्मिक परामर्श किस प्रकार का था, यह बाद में प्रकट किया जाना था। डायट ने इस आधार पर कि सम्राट् के इटली में दावे लुप्तप्राय होगये थे इटली में साम्राज्यीय साहसिक कार्य का समर्थन करने से इन्कार कर दिया, गस्टवस अडोल्फस जर्मन भूमि पर था और वेलेस्टीन इटली सम्बन्धी किसी वचन-बद्धता के विरुद्ध था[1] इसलिये सम्राट् मन्टुआ के प्रश्न पर दब गया और उसने मन्टुआ और मोडफेरेट दोनों नेवर्स के ड्यूक को दे दिये। चेरास्को की संधि (जुलाई 1631) ने इसे फ्रांस द्वारा पिनरोलो का समर्थन करने की स्पष्ट शर्त स्वीकार करने के बाद ही नियमित किया था। सितम्बर 1631 में सम्राट् और मिलान के राज्यपाल का प्रतिनिधित्व करने वाले कमिश्नरों की उपस्थिति में वह दुर्ग विधिवत् सेवाय को वापिस कर दिया गया। इन प्रतिनिधियों के मन में ऐसा कोई संदेह नहीं था कि निकटवर्ती खलिहान के घास में[2] फ्रेंच सैनिकों की एक टुकड़ी छिपी खड़ी है, जिसने सत्कार पूरा होते ही और कमिश्नरों के प्रस्थान के

---

1 वेलेस्टीन नेवर्स के ड्यूक का मित्र था और इसलिए उससे युद्ध करना नहीं चाहता था। इससे भी अधिक वेलेस्टीन को भय था कि यदि वह इटली पर आक्रमण करे तो कहीं उसकी सेना प्लेग से नष्ट न हो जाय।

2 सोयविगनी कृत मैमोयर्स, खण्ड 1, पृ० 262, लेमान में उद्धृत, अरबन 8 एटला रिवेलिटे द ला मेसन द ला फ्रांस एत द ला मेसन द डटराइच, 27।

पश्चात् चुपके से दुर्ग पर अधिकार कर लिया। सेवाय के ड्यूक ने इस वर्ष[1] में पहले से ही रिशेल्यू के साथ गुप्त रूप से संधि करके पिनरोलो फ्रांस को बेच दिया था। यह दुर्ग सेवाय को 1696 से पहिले नहीं लौटाया गया।[2]

वेलेन्स्टीन की बर्खास्तगी

रेटिस्त्रोन की डायट के समक्ष दूसरा विचारणीय प्रश्न वेलेस्टीन के आचरण और साम्राज्य की सेना के आकार का था।[3] लीग पुन: नियंत्रण का अधिकार प्राप्त करने और अपने प्रदेशों को साम्राज्यीय सैनिकों के विनाश से मुक्त करने के लिए आतुर थी। इसमें फ्रांसीसी एजेन्ट, जिन्हें फ्रीडलैण्ड की आकांक्षाओं के सम्बन्ध में कोई सन्देह न था, लीग की पीठ ठोक रहे थे।[4] जर्मन स्वातंत्र्य की स्थिरता के लिए फ्रांसीसियों को चिन्तायुक्त अभिव्यक्तियों पर मेक्समिलियन और लीग ने सम्भवत: इतना विश्वास न किया हो जितना फ्रांसीसी प्रकट करते थे तो भी अपने विरूद्ध शक्तियों के सहयोग की धमकी के कारण सम्राट् को अपनी इच्छा के विरूद्ध वेलेस्टीन की पदच्युति की स्वीकृति देनी पड़ी। इस निर्णय का पूर्ण सम्मान कभी-कभी गलती से फादर जोजफ को दिया जाता है, किन्तु फ्रांसीसी दूतावास का सार्वजनिक कार्य मन्टुआ के उत्तराधिकार के प्रश्न के निर्णय के लिए दबाव डालना था। साम्राज्य की घरेलू समस्याओं में फ्रांस कोई विशेष बात नहीं कह सकता था। डायट ने फर्डिनेन्ड के पुत्र को रोमनो का राजा मानने से इन्कार कर दिया, इसने इलेक्टर पेलेटाइन फ्रेडरिक को क्षमा प्रदान की यदि वह बोहेमिया का अधिकार, निर्वाचन पद और अपनी तमाम सधियों का त्याग कर दे। उसने स्वभावत: इन्हें मानने से इन्कार कर दिया। इसने सम्राट् को स्वीडन के विरूद्ध सहायता करने का वचन दिया किन्तु इसमें पुनः स्थापना की घोषणा के पेचीदे प्रश्न पर मतभेद था। इस मतभेद ने सैक्सनी और ब्रेन्डेन्बर्ग को गस्टवस अडोल्फस के मैत्रीलाभ पर विचार करने के लिए और शत्रुता प्रारम्भ करने के लिए बाध्य कर दिया।

रेटिस्बोन की डायट का परिणाम

रेटिस्वोन की डायट का अन्तिम परिणाम यह निकला कि सम्राट् को तीन बातों पर झुकना पड़ा, जर्मन कार्यों में मेक्समिलियन और लीग की प्रधानता को

---

1 मार्च 31, 1631, लेमान, पूर्व उद्धृत, पृ० 22।

2 तुरिन की संधि द्वारा (देखें अध्याय 6)।

3 इसके लिए देखिये गिन्डले कृत वेलेस्टीन, खण्ड 2, अध्याय 10।

4 इसमें निम्न सम्मिलित थे : (क) कॉन्स्टैन्टीनोपल पर अधिकार करना (ख) जर्मनी में सम्राट को सर्वेसर्वा बनाना, (ग) हैप्सबर्गों के शत्रुओं से फ्रांस को मुक्त करना और (घ) अपने आ.को स्वतन्त्र प्रभुसत्ता सम्पन्न बनाना।

पुनःस्थापित किया गया, सम्राट् के पुत्र को रोमनो के राजा का पद नहीं दिया गया और मन्टुआ के उत्तराधिकार के प्रश्न का फैसला स्पेनिश उम्मीदवार के विरूद्ध फ्रांस के पक्ष में किया गया। प्रत्यक्ष रूप में रिशेल्यू को वह सब प्राप्त नहीं हुआ जो वह चाहता था क्योंकि उसने सार्वजनिक रूप से फ्रांसीसी दूतावास के कार्यों को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया क्योंकि इटली के मोर्चे से अच्छी सूचनायें आ रहीं थीं उनके अनुसार, डायट द्वारा स्वीकृत शर्तों से जो बाद में (जुलाई 1631) चेरास्को की संधि में समाविष्ट की गई, उसे अच्छी शर्तें मिलनी चाहिये थीं।

बवेरिया के साथ गुप्त समझौता

किन्तु यह रिशेल्यू की विशेषता थी कि वह विशेष प्राप्ति से प्राप्त संतुष्टि को, उसके प्रवर्तकों को अस्वीकार करके, छिपा लेता था। यह निश्चित है कि फ्रांस की इटली में कुछ आकांक्षायें थीं और उनकी पूर्ति में फ्रांस के दूतावास मन्टुआ के उत्तराधिकार का समझौता स्वीकार करने से कुछ देर हो गई थी, किन्तु दूसरी ओर यह भी स्पष्ट है कि फ्रांस ने रेटिस्बोन की डायट में एक महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की थी। जब फादर जोज़फ को रेटिस्बोन की डायट में भेजा गया था तो उसे बवेरिया-फ्रांस संधि करने के गुप्त आदेश दिये गये थे, जिनका फ्रांस के राजदूत को भी पता नहीं था। बातचीत सफल हुई, जिसके परिणामस्वरूप प्रतिरक्षा संधि हुई।[1] मार्च 1630 में शर्तें तय की गईं, बवेरिया के ड्यूक ने अपनी लीग की ओर से फ्रांस के शत्रुओं की सहायता न करना, डचों के प्रति (जो उस समय फ्रांसीसी प्रभाव क्षेत्रों में थे) तटस्थता को भंग करना, और मेक्लेन्बर्ग[2] की डची के पिछले मालिकों के दावे का विरोध न करना स्वीकार किया। मेक्लेन्बर्गवाले वेलेंस्टीन द्वारा उनकी डची छीने जाने के कारण स्वेच्छा से फ्रांस के मित्र बन सकते थे। ऐसी अवस्था में जबकि गस्टवस अडोल्फ कैथोलिक भूमियों पर धावा कर दे या लीग की सेनाओं पर आक्रमण कर दे, के सामना करने का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था। इस प्रकार मेक्समिलियन और लीग ने सम्राट् का साथ छोड़ दिया, जबकि फ्रांस ने कुछ समय के लिए सबसे महत्वपूर्ण सैनिक शक्ति की उदार तटस्थता प्राप्त करली। अब रिशेल्यू के लिए केवल यह दोष रह गया कि वह सबसे अधिक शक्तिशाली प्रोटैस्टेन्ट सैनिक राज्यों में अपने हितों को सुरक्षित कर सके और तब

---

1 फेगनीज़, पूर्व उद्धृत खण्ड 1, पृ० 540।

2 दोनों ड्यूकों ने जिन्होंने भूमि का बंटवारा किया था, 1619 में इलेक्टर पेलेटाइन के मित्रों में से थे। उन्होंने लूथरनों के लिए कार्य किया था, परिणाम-स्वरूप वेलेन्स्टीन द्वारा 1628 में उन्हें उनकी भूमि से निष्कासित कर दिया गया। इस वर्ष (1630) वेलेन्सटीन के पास मेकलेनबर्ग का प्रदेश था।

युद्ध का सारा ढंग ही पूर्णतया परिवर्तित हो जायेगा। स्थानीय और धार्मिक सघर्ष से बदलकर यह यूरोपीय और राजवश–सम्बन्धी युद्ध बन जायेगा जिसके प्रधान पात्र आस्ट्रिया और फ्रांस होंगे।

फ्रांस और गस्टवस अडोल्फस के मध्य संधि होना (जनवरी 1631)

डेनिश की अभाग्यपूर्ण कथा ने स्वीडन की तैयारियों को छिपाने का काम किया। स्वीडन की योजना यह थी कि प्रशा को अपने कार्यों का मूल आधार मान-कर मध्य यूरोप में निर्णय किया जाये जबकि डेनिश नीति राइन पर कार्यवाही करके पेलेटिनेट को पुन: प्राप्त करने और सेक्सनी के कुछ प्रदेश को हस्तगत करने की थी। पारस्परिक कटु ईर्ष्या[1] के कारण दोनों में सहयोग नहीं हो सका, क्योंकि स्वीडन का अन्तिम उद्देश्य बाल्टिक पर कब्जा करना था (इस अभिलाषा का डेन्मार्क द्वारा विरोध स्वाभाविक था) जिसकी पूर्ति के लिये बाल्टिक मे गिरने वाली जर्मन नदियों पर अधिकार करने की प्रथम आवश्यकता थी। फ्रांस को इन आकांक्षाओं का पूर्ण आभास था, और रिशेल्यू ने चारनेस को स्टाकहोम भेजा जहा बातचीत के परिणाम स्वरूप 23 फरवरी, 1631 को बारवल्ड की संधि[2] पर हस्ताक्षर हुए। इसके अनुसार गस्टवस अडोल्फस ने 4,00,000 थेलर्स की आर्थिक सहायता के बदले में, जर्मनी मे 1618 के पूर्व की स्थिति स्थापित करने के लिए 30,000 पैदल और 6,000 घुड़सवार सेना को उस देश में ले जाने का जिम्मा अपने ऊपर लिया। मित्रता की अवधि पांच वर्ष की थी और गस्टवस ने केथौलिक धर्म के कार्यो में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया। 'उसी समय ब्रेन्डेनबर्ग और सेवाय को यह विश्वास दिला दिया गया कि फ्रांस की इच्छा जर्मनों की स्वतन्त्रता को पक्का करना थी। इसके आगे यह आश्वासन भी दिया गया कि इसमें कैथोलिक इलेक्टरों के साथ एक समझौता करने से भी सहायता मिलेगी।[3] सैक्सनी और ब्रेन्डेनबर्ग के दूत मार्च 1631 में लिपज़िग में मिले, किन्तु उन्हें फ्रांसीसी प्रस्तावों पर कुछ अविश्वास हुआ और इस प्रकार पहले क्षण ही जब एक ओर प्रोटेस्टेन्ट

---

1 20 फरवरी, 1629 को समालेन्ड में अफजेबेक नामक स्थान पर स्वीडन और डेनमार्क के राजाओं का साक्षात्कार हुआ था परन्तु डेनमार्क ने सहयोग करने से इन्कार कर दिया।

2 डूमां कृत, कोर दिप्लोपातीक, खण्ड 6, अध्याय 1, इसका विवरण निम्न-प्रकार दिया गया है, 'फोयेडस प्रो डिकेनसोने सोरम रेसपेकटिव कम्यूनियम एमी–कोरम, सेक्यूरिटेट इटियम मेरिस बालथीकी एट ओसीनी'....इन शब्दों की अस्पष्टता दृष्टव्य है।

3 फेगनीज़, पूर्व उद्धृत पृ० 569।

जर्मन राजकुमारों और स्वीडन के मध्य और दूसरी ओर फ्रांस और बवेरिया में एकता होने की सम्भावना हो सकती थी तब जर्मन प्रोटेस्टेन्ट नेताओं की भीरुता और संदेह प्रकट हो गये। इस प्रकार की एकता रिशेल्यू की अभिलाषा पूरी कर देती और युद्ध सम्भवतः जल्दी ही निर्णायक स्थिति पर पहुंच जाता। किन्तु इस नीति की सफलता प्रोटेस्टेन्ट और कैथोलिक मित्रों के बीच में नाजुक संतुलन बनाये रखने और उनको बिल्कुल पृथक् रखने पर निर्भर करती थी। इसके अतिरिक्त रिशेल्यू इस योजना मे मुख्यतया अपने इस विश्वास के कारण आकृष्ट हुआ कि जर्मनी में वह सामान्य बुद्धिवालों से ही व्यवहार कर रहा था। यदि रिशेल्यू उस महान् व्यक्ति पर, जिसे उसने हस्तक्षेप के लिए आमंत्रित किया, अपना प्रभुत्व रखता, यदि वह जर्मन प्रोटेस्टेन्टों को गस्टवस अडोल्फस के नेतृत्व में एक करने और जर्मन कैथोलिक प्रदेशों पर आक्रमण करने से रोकने में समर्थ होता, तो शायद उसकी योजना सफल हो जाती। किन्तु मानव-चरित्र के अपने ज्ञान में निपुण होते हुए भी वह जर्मन राजनीति की सूक्ष्मताओं को पूर्णतया कभी भी न समझ सका तथा वह यह भी न देख सका कि स्वीडन का राजा केवल भाड़े के लड़ाकुओं के नेता से ऊंचा व्यक्ति था। प्रोटेस्टेन्ट स्वीडन और कैथोलिक बवेरिया को प्रतिक्रियावादी आस्ट्रिया के विरूद्ध अपने साधन बनाने की चेष्टा में वह जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ गया। निसंदेह उसकी विदेशी नीति मानव स्थितियों को देखते हुए बहुत सूक्ष्म थी और इसकी अवश्यम्भावी असफलता ने युद्ध को काफी लम्बा कर दिया।

गस्टवस का चरित्र

गस्टवस अडोल्फस वर्तमान इतिहास के महानतम राजाओं में से एक है। हेनरी चतुर्थ की भांति उसमें ऐसे चारित्रिक गुण थे जो उसे विशिष्ट व्यक्ति बना देते, चाहे वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में उत्पन्न क्यों न हुआ होता। लोगों के नेता के रूप में वह अपूर्व बुद्धिवाला था और उसमें पूर्ण युद्ध-कला में क्रांतिकारी परिवर्तन करने की पर्याप्त कल्पना और निर्णयशक्ति थी। उसने पदाति सेना के महत्व को ऐसे समय में पहचाना जब घुड़सवार सैनिक को अच्छी सेना की इकाई समझा जाता था, और ऐसे युग में जो भारी अस्त्र-शस्त्रों से लैस सैनिकों के व्यूह में विश्वास करता था, उसने यह अनुभव किया कि गतिशीलता कितनी आवश्यक है।[1] उसके सैनिक ऐसी बन्दूक का प्रयोग करते थे जो उसके शत्रुओं की बन्दूक से बहुत उन्नत थी, उसका तोपखाना हल्का, किन्तु प्रभावपूर्ण था। उसके सिपाही एक दूसरे को शत्रु से अलग पहचान सकते थे, क्योंकि वे एक विशिष्ट नीली व पीली पोशाक

1 एक कमान्डर एवं सैनिक विशेषज्ञ के रूप में गस्टवस के कार्यों के लिए देखिए नेपोलियन तृतीय का **सियूवंस** (18?6), अध्याय 4, पृ० 372।

पहने होते थे। युद्ध-कला और शतरंज की सादृश्य बहुत कम संतोषजनक होता है, किन्तु गस्टवस के लिए यह कहना अनुचित न होगा कि वह आधुनिककाल का पहला व्यक्ति था जो यह समझता था कि साधारण प्यादे अन्य मोहरों के मार्ग में बिल्कुल बाधक नहीं हैं। यही नहीं वे खेल की आत्मा होते हैं और उनमें अधिकतम गतिशीलता स्थापित करने के लिए तार्किक विकास सफल आक्रमण की प्रथम आवश्यकता है। वास्तव में तीसवर्षीय युद्ध में केवल वही युद्धकौशल में निपुण व्यक्ति था। यदि सिपाहियों को सर्वप्रथम बार वर्दी में खड़ा करना और मध्यकालीन युद्ध-प्रणाली को वर्तमान युद्ध-प्रणाली में परिवर्तित करना महानता है, तो गस्टवस अडोल्फस महान् व्यक्ति था। किन्तु अनुगामी पीढ़ियों द्वारा उसे याद करने के सम्भवतः कुछ अन्य और अधिक ठोस कारण हैं। वह देशभक्त था और उसने अपने देश के आर्थिक विकास के लिए बहुत कुछ किया।[1] वह बौद्धिक कार्यों में भी असमर्थ न था।[2] वह उनमें जो उसे जानते थे, विश्वास, आदर और कभी-कभी भय प्रेरित करता था। वह एक बुद्धिमान् पराक्रमी राजा था और ऐसे युग मे हुआ था जिसमें राजस्व को बुद्धि और साहस की आवश्यकता थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि उसके व्यक्तिगत उद्देश्यो पर उसकी अपनी कल्पना की छाप होती थी और वे अपने समकालीनों के अदूरदर्शी स्वार्थपरता से भिन्न तरीके के होते थे। तीव्र लूथरवादी होने के नाते उसने देखा कि यदि हैप्सबर्गों की विजय हो गई तो जर्मनी में प्रोटेस्टेन्टवाद नष्ट हो जायेगा। इस प्रकार के दुर्लभ गुणों के सयोजन के कारण वह स्वीडन की गाथाओं में महान्तम व्यक्ति और इतिहास में विलक्षण व्यक्ति माना जाता है।

उसके उद्देश्य

गस्टवस अडोल्फस के चरित्र के विषय में कभी कोई संदिग्धता नहीं रही है, किन्तु उसके उद्देश्यों के सम्बन्ध में काफी मतभेद रहा है। उसका घोषित उद्देश्य था जर्मनी के स्वातत्र्य की रक्षा करना और मेक्लनबर्ग के ड्यूक जैसे प्रोटेस्टैन्टों को उनके छिने हुए प्रदेश पुनः लौटाना। सम्राट के प्रति उसे यह शिकायत थी कि वह स्ट्रालसंड को बाल्टिक के समुद्री डाकुओं का घोंसला बनाने का प्रयत्न कर रहा था, तथा उसने जर्मनी के प्रोटेस्टेन्ट राजकुमारों का दमन किया था।[3] उसके समकालीन जानते थे कि गस्टवस बाल्टिक को स्वीडन की झील

1 इसके लिए देखिए, जे० क्रेटजचमर कृत **एच वीडिसे हेन्डलस्कोमपेनियन एण्ड कोलोनीजेशन स्वर सुचे इम 16 बन एण्ड 17 इन जारहुडर्ट (हेन्सीचे गेस्चीटसब्लेटर,)** अध्याय 17, पृ० 227।

2 वह ग्रॅशियस का एक उत्साही पाठक था।

3 चेरवेरियट, **पूर्वउद्धृत**. 2, 39।

बनाना चाहता था। वे उससे सशंकित थे, क्योंकि उन्होंने समझ लिया था कि बाल्टिक पर नियंत्रण करने के लिए प्रथम आवश्यकता इसके दक्षिणी किनारे के प्रदेश पर अधिकार करने की थी।[1] यही कारण था कि जर्मनी में स्वीडन के राजा का कभी वास्तविक स्वागत नहीं हुआ। सेक्सनी स्वीडन की प्रत्येक बात को अविश्वास से देखता था, ब्रैन्डनबर्ग उसे पोमरेनिया प्राप्त करने में प्रतिस्पर्धी समझता था। फ्रांसीसी वचनों पर विश्वास रखने वाले बवेरिया की जल्दी ही आंखें खुल गईं, जबकि स्वीडिश सैनिक लीग के प्रदेशों में घुस गये। जर्मनी के शासक गस्टवस पर अविश्वास करते थे क्योंकि वह परदेशीय था और वह उसके वही उद्देश्य समझते थे जिनसे स्वयं उनके कार्यों को प्रेरणा मिलती थी।

फ्रांस व स्वीडन की नीति में मतभेद

फ्रैंको-स्वीडिश मैत्री शर्तों के कारण यह प्रश्न और भी जटिल हो गया। बारवल्दे की सन्धि में, जो लेटिन में लिखित बहुत संक्षिप्त लेखपत्र था, और जिसे अनुमानतः जानबूझ कर अस्पष्ट रखा गया था, इस विचित्र साझेदारी की महत्वपूर्ण समस्याओं को अछूता छोड दिया गया। इस प्रकार जबकि फ्रांस इलेक्टोरेट को बेवेरिया के लिए रखना चाहता था तो स्वीडन ने इसे फ्रेडरिक को वापिस देने का वचन दे रखा था, फ्रांस अल्पकालिक और प्रबल युद्ध का इच्छुक था तो स्वीडन की तैयारियां श्रान्तिकर युद्ध के लिए थी और उस पर फ्रांस की राजवंश-सम्बन्धी आकांक्षाओं का कोई प्रभाव न था, अन्त में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि गस्टवस ने लीग के प्रदेशों पर आक्रमण न करने का वचन दिया था तो उसे हैप्सबर्ग के वंशानुगत प्रदेशों में युद्ध करने के लिए भी नहीं कहा गया था। गस्टवस अडोल्फस दो अभिप्रायों से प्रभावित था-प्रोटैस्टेन्टवाद के लिए चिन्ता, जो हैप्सबर्गों के घातक आक्रमणों के आगे झुक गये प्रतीत होते थे, और जर्मनी में प्रतिफल के रूप में प्रदेश लेने की इच्छा, जिससे स्वीडन के रिक्तकोष को लाभ हो। आधुनिक मत इन अभिप्रायों को स्वीकार नहीं करता। किन्तु गस्टवस और 17वीं शताब्दी के मत में ये अविच्छेद्य थे, क्योंकि धार्मिक संरक्षण केवल भूमि पर अधिकार होने से ही बना रह सकता था। यह विवाद निरर्थक है कि गस्टवस के उद्देश्य पूर्णतया स्वार्थरहित थे या नहीं, क्योंकि हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि गस्टवस स्वय भी अपनी स्थिति स्पष्ट करने में असमर्थ था। कैथोलिक देश का वैतनिक सिपाही

---

1 गस्टवस ने लिखा, पोमेरेनिया और बाल्टिक के समुद्रतट सम्राट के प्रति हमारी गारन्टी है। (ओडनर में उद्धृत, **दी पोलितिक स्वीडन्स इम वेस्ट फेलिस्चन फ्रीडेन कांग्रेस**, 5) यह ध्यान रखना चाहिए कि ब्रेडनबर्ग पोमेरेनिया पर अपने स्वामित्व का दावा करता था।

होने के कारण उसने अपने धार्मिक अभिप्रायों को पृष्ठभूमि में रखना उपयुक्त समझा, जबकि उत्साही लूथरवादी होने के नाते उसने अपना सबसे महान आक्रमण बवेरिया और राइन के गढ़ों पर किया और इस प्रकार अपने फ्रांसीसी वेतनदायी के अनुमानों को पूर्णतया उलट दिया। स्वीडनवासी जिस अनिश्चित अवस्था में थे उसका उदाहरण पोप अर्बन अष्टम के अभिलिखित आचरण से मिलता है जो उसने गस्टवस की मृत्यु की सूचना पर किया। कैथोलिक चर्च के प्रधान के रूप में उसने रोम के तमाम चर्चों में **टेडायम** गाये जाने का आदेश दिया, किन्तु ऐसा कहा जाता है कि उसने हैप्सबर्गों का विरोधी होने के कारण राजा की आत्मा की शान्ति के लिए व्यक्तिगत रूप से 'मास' पढ़ा।

गस्टवस और जर्मन संघ

इस प्रश्न पर गस्टवस द्वारा जर्मन राजकुमारों से किया गया पत्र व्यवहार विशेष प्रकाश डालता हैं।[2] एक ओर तो यह प्रदर्शित किया गया है कि यद्यपि वह कई बातों में आदर्शवादी था, किन्तु जहां तक राजनीति का सम्बन्ध था वह कागजी पुर्जों में विश्वास नहीं रखता था और जर्मनी में केवल प्रादेशीय और सैनिक शक्ति पर गम्भीरता से विश्वास करता था। दूसरी ओर यह तथ्य प्रकट होता है कि उसने अपेक्षाकृत छोटे से जीवनकाल में अपने विचार इतने विकसित कर लिए थे कि वह भलीभांति समझता था कि जर्मनी की धार्मिक व राजनीतिक कठिनाइयों के हल के लिए विस्तारवादी युद्ध एक आवश्यक पहला कदम है और हैप्सबर्गों की महत्वाकांक्षाओं के प्रतिरोध के लिए यूरोप में प्रोटेस्टैन्टवाद की सुदृढ़ स्थापना भी अपेक्षित है। वह इन दोनों उद्देश्यों के अन्तर को भी स्पष्टतया समझता था। वह पहले उद्देश्य को 'सेटिस्फेक्शियो' कहता था जिसका अर्थ पोमरेनिया पर अधिकार था और दूसरे को 'असेक्युरेटियों' अर्थात जर्मनिक संघ का निर्माण कहता था जो ब्रीटेनफेल्ड की लड़ाई के पश्चात अधिक महत्वपूर्ण हो गया। **नार्मफ्यूटरेरम-ऐक्शनम्** में उसने अप्रैल 1631 में लिखा, उसने घोषित किया कि उसका अन्तिम उद्देश्य जर्मनी में नये ईसाई धर्म की अध्यक्षता का निर्माण करना है। जून 1632 में उसने न्यूरेमबर्ग के सभासदों को लिखा कि जर्मन शान्ति के लिए कोई भी सुरक्षा तब तक नहीं हो सकती जब तक कि एक ऐसा संगठन न हो जो आस्ट्रिया, स्पेन

---

1 ड्रोयसन, **गुस्टाफ एडोल्फ**, खण्ड 2, 665।

2 जे० क्रेटजर कृत **गस्टाव एडोल्फस प्लेन एण्ड जील इन डचलेंड** (1904)।

3 गस्टवस के उद्देश्यों की समालोचनात्मक व्याख्या के लिए देखिए, सी. वी. वेगवूड कृत, **दी थर्टी इयर्स वार**, 331।

और पोप की सम्मिलित शक्तियों के विरुद्ध अपनी रक्षा कर सके। उसने 6 भिन्न प्रकार के राज्यों में जो इस संगठन में सहयोग दे सकते हैं, निम्न भेद बताये[1]—

(1) पहले जब्त किये गये और फिर गस्टवस द्वारा पुनःस्थापित किये गये राज्य–जैसे मेक्लेनबर्ग।

(2) अब केवल नाममात्र के राज्य-जैसे, पोमेरेनिया।

(3) हैप्सबर्ग विरोधी राज्य–जैसे, ब्रण्डेनबर्ग।

(4) वे राज्य जो गस्टवस द्वारा सहायता दिये जाने के कारण उसके आभारी हैं–जैसे, सैक्शनी और हैस–कैसल।

(5) ऐसे प्रोटैस्टैन्ट राज्य जिन्होंने हैप्सबर्गो की सहायता की–जैसे, हैसडमनटैड्ट।

(6) शत्रु और कैथोलिक राज्य जिन्हें जीतना था और 'जूरेबेली' का दावा करना था–जैसे, बवेरिया।

गस्टवस योजना की अव्यावहारिकता

इस तरह यह स्पष्ट है कि गस्टवस का उद्देश्य समस्त जर्मनी को प्रोटेस्टेन्ट धर्मप्रधान राजसंघ के रूप में संगठित करना था जो सम्राट् और प्रति-धर्म-सुधार की शक्तियों का सामना करने योग्य हो। इस राजसंघ का वह स्वयं नेता होगा। योजना का विशाल आकार तुरन्त इसको उसके अधिकांश समकालीनों की वैतनिक मात्र अभिलाषाओं से पृथक् करता है। किन्तु उसका वह विचार नितान्त असाध्य था, क्योंकि गस्टवस जर्मन भूमि के लिये विदेशी था और जर्मन राजनीति की एक विशेषता निरन्तर यह रही है कि एक ओर तो वहां विदेशी हस्तक्षेप को सदैव आमान्त्रित किया जाता था और दूसरी ओर विदेशी प्रभाव ही एक ऐसी वस्तु थी जिसके विरूद्ध जर्मन राजनीति की समस्त अनेकरूपा शक्तियां संगठित हो सकती थीं। यद्यपि जर्मनी में इतने राज्य थे जितने वर्ष में दिन होते हैं तो भी विदेशी कूटनीतिज्ञ जर्मन राजनीति को पारदर्शक उपकरण-कलाप समझते थे जिसमें से विदेशी दर्शक सब कुछ देख सकता था। परन्तु वह एक भ्रामक दूरबीन सिद्ध हुई जिसने अन्त में यूरोप की सबसे चतुर कूटनीति को भी उलझन में डाल दिया और उसे हतोत्साह कर दिया। किन्तु गस्टवस अडोल्फस इस कष्टदायक अनुभूति से कि वह भ्रम में था, बच गया। लुटजेन में उसकी मृत्यु ने एक ऐसे जीवन की समाप्ति कर दी जिसमें वीरता और आदर्श के तत्व यथेष्ट रूप में समन्वित थे।

---

1 गस्टवस ने प्रस्ताव किया कि पोमेरेनिया के प्रश्न पर स्वीडन और ब्रेडन्बर्ग को समझौता कर लेना चाहिए तथा फ्रेडरिक विलियम को गस्टवस की पुत्री क्रिस्टीना से विवाह कर लेना चाहिए।

मई 1628 में स्टालसुंड पर घेरा डालकर स्वीडन ने युद्ध प्रवेश की भूमिका आरम्भ करदी। गस्टवस ने 26 सितम्बर 1629 को 6 वर्ष के लिए युद्धविराम-संधि करके पोलेन्ड से युद्ध बन्द कर दिया और आगामी वर्ष की गर्मियों में उसने उत्तरी जर्मनी में लड़ाई आरम्भ करदी। उसने पहले पोमरेनिया पर अधिकार करके ड्यूक वोजिस्लास को उसे उत्तराधिकारी बनाने की गारन्टी देने पर बाध्य किया और फिर मेक्लेनबर्ग के प्रदेशों में से साम्राज्यीय सैनिकों को बाहर खदेड़ दिया। सन् 1631 के अप्रेल में उसने फ्रैंकफर्ट ले लिया। अब मेजवर्ग के एक पूर्व प्रशासक ब्रेन्डेनबर्ग के चार्ल्स विलियम ने नगर की ओर से स्वीडन की सहायता के लिये विनय की, क्योंकि साम्राज्यवादी जनरल पैपेनहीम पिछले वर्ष से उस पर घेरा डाले पड़ा था, तदनुसार स्वीडन के सैनिकों की एक छोटी-सी टुकड़ी फाकेनबर्ग के नेतृत्व में शहर की सहायता के लिये भेजी गयी। मेजबर्ग एल्ब पर अधिकार रखने के लिये सैनिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण हांसका नगर था। यह लूथरवाद का गढ़ था और उत्तर जर्मनी के सबसे धनाढ्य विशेष-क्षेत्रों का मुख्य स्थान था जिसके लिये सबसे कड़ा मुकाबला होता था।[1] पेपेनहीम इसके विषय में 'फण्डामेन्ट उण्ड सेन्ट्रम डेस क्रिगेस कहता था। इस नगर के दुर्भाग्य से 1631 के बसत में टिली घेरा डालने वालों से आ मिला और जल्दी ही फाकेनबर्ग के नेतृत्व मे नगरनिवासी कड़े घेरे की विभीषिका का अनुभव करने लगे। गस्टवस ने नगर की सहायता देने का वचन दिया था किन्तु उसे सेक्सनी और ब्रेन्डेनबर्ग के इलेक्टरों से उनके प्रदेशों में से गुजरने की अनुमति के लिये बातचीत करने में देर लग गई। 20 मई को साम्राज्यवादी सेना ने धावा बोलकर नगर जीत लिया और नगर मे प्रवेश करने के वाद ऐसा कत्लेआम हुआ, जिससे समकालीन भी आंतकित हो उठे। जब शहर में से ज्वाला की लपटें निकलने लगीं और 20,000 से अधिक लोग मारे गये तब जाकर बलात्कार, हत्या और लूटपाट का अन्त हुआ।[2]

---

1 विटिच से उद्धृत, मेडबर्ग, गुस्टाफ अडोल्फ एण्ड टिली, 5।

2 इस सम्बन्ध में विभिन्न मत प्रचलित हैं। प्रोटेस्टेन्ट लेखकों ने इस हत्याकांड एवं नृशंस व्यवहार के लिए टिली और उसकी सेनाओं को उत्तरदायी ठहराया है। उन्नट्रामोन्टेस ने नागरिकों पर ही इस घटना के उत्तरदायित्व को डालने की चेष्टा की है, उसके अनुसार स्वयं नागरिकों ने ही नगर को आग लगा दी। ड्रोयसन के अनुसार, यह निश्चित करना अत्यन्त कठिन है, कि इस घटना के लिए कौन उत्तर-दायी है, परन्तु अभी हाल ही में एक लेखक के (विटिच, मेजबर्ग, गस्टोव अडोल्फ एण्ड टिली) अनुसार हेग संग्रहालय में इस तरह के प्रमाण उपलब्ध हैं, जो स्वीडिश कमांडर फाकेनबर्ग को इस समस्त घटना के लिए उत्तरदायी ठहराते हैं।

ब्रीटेनफेल्ड का युद्ध (सितम्बर 1631)

मेजबर्ग का घेरा तीसवर्षीय युद्ध की सबसे भयानक घटना थी। समस्त जर्मनी और यूरोप में भय की लहर फैलने पर गस्टवस अडोल्फ ने स्वार्थी जर्मन तटस्थता का पर्दा परे फेंक दिया जो अब तक उसकी चेष्टाओं में बाधक था। ब्रेडेनबर्ग में घुसकर उसने इलेक्टर को अपने दुर्ग उसे अर्पित करने और राज्य-सहायता का वचन देने के लिये बाध्य किया। उसी समय टिली द्वारा सेक्सनी के इलेक्टर के प्रदेशों पर आक्रमण ने उसके मन को निश्चित कर दिया और जल्दी ही गस्टवस ने सेक्सनी हेस–कासल, और सेक्से वीमर से सहायता प्राप्त की। सेक्सन टुकड़ी के सैनिक निरर्थक सिद्ध हुए क्योंकि ज्यों ही उन्हें लड़ाई में लगाया गया त्यों ही वे गुल्म के गुल्म छोड़कर भाग गये। परन्तु कम से कम गस्टवस अब सहधर्मियों की शत्रुता से नहीं डरा और शीघ्र ही स्वीडन-निवासियों ने सैनिक निर्णय प्राप्त कर लिया जिसकी वे आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। 17 सितम्बर, 1631 को स्वीडन और साम्राज्यीय सेनाओं में ब्रीटेनफेल्ड (लिपज़िग के निकट) स्थान पर वास्तविक संघर्ष हुआ। पैपेनहीम और टिली दोनों स्पेन की युद्ध–कला का प्रयोग करते हुए गस्टवस द्वारा बुरी तरह पराजित किये गये। यह विजय प्रति धर्म सुधार की लहर में एक मोड़ थी। समस्त साम्राज्य इस समय स्वीडन के राजा के चरणों में था और उसे अब यह निर्णय करना था कि वह वियना में युद्ध का अन्त करने के लिये आस्ट्रिया के प्रदेश पर आक्रमण करे या फैफेनगास (प्रीस्टस वाक) में जर्मनी की धार्मिक कठिनाइयों का फैसला करने के लिये फ्रैंकोनिया और राइन के प्रदेशों की ओर मुंह करे। इस अवसर पर गस्टवस का अभिप्राय समस्त युद्ध की सबसे कठिन समस्या उपस्थित करता है, क्योंकि यह वेलेंस्टीन की जीवनी की एक अस्पष्ट स्थिति के साथ जुडकर जटिल हो गई है। इस तरह यह माना जाता है कि गस्टवस की इच्छा दक्षिण पश्चिम की ओर जाने को हुई क्योंकि उसे सूचना मिली थी कि वेलेंस्टीन, जिस पर तब बोहेमिया से निष्कासित लोगों से षड़यन्त्र करने का संदेह किया जाता था, आस्ट्रिया[1] के विरूद्ध सेना ले जायेगा, किन्तु यह व्याख्या असम्भव सी है। दूसरी ओर यह याद रखना चाहिये कि वियना पर अधिकार भी हेप्सबर्ग के लिए घातक न होता। और इसलिए गस्टवस ने जर्मनी में ही निर्णय करने का फैसला किया और जर्मनी के भी उस भाग में जहां कैथोलिक शक्ति सबसे

1885 में मेज़बर्ग का सिटी लाइब्रेरियन इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इस घटना के लिए पूरी तरह साम्राज्यवादी सेनायें उत्तरदायी थीं।

1 इसके लिये देखें ड्रोयसन कृत **गस्टाफ अडोल्फ**, 2, 422 एफ एफ और गेड़े-के लिखित **वेलेन्स्टीन वरहान डुलोन मिट डेन स्वीडन**, 17 एफ. एफ.।

अधिक दृढ़ता से सुरक्षित हो[1] सेक्सनी ने इलेक्टर को बोहेमिया पर आक्रमण करने के लिये छोड़कर और मेक्लेनबर्ग ड्यूकों को उनके प्रदेश वापिस देकर गस्टवस ने राइन के धर्माध्यक्षों के राज्यों पर चढ़ाई कर दी। निचले पेलेटिनेट को रोंद डाला गया और राइन की चढ़ाई एक विजयी जलूस बन गई। पादरी इलेक्टरों को. फ्रांस से, रिशेल्यू के ऐसे मित्र के विरूद्ध जिसे वह अब नियत्रण में नहीं रख सकता, सहायता के लिए प्रार्थना करनी पड़ी। इस प्रकार स्वीडन के राजा ने एक ही छोटे से अभियान में अपने हस्तक्षेप के उद्देश्यों की वास्तविक प्राप्ति करली थी। 1631–32 की शरद् ऋतु में फ्रैंकफर्ट और मेंज में आयोजित शानदार दरबारों में उसे विजेता और मुक्तिदाता कह कर उसके कार्यों के प्रति न्याय ही किया गया।

वेलेस्टीन की वापसी–लुटजेन की संधि

और गस्टवस की मृत्यु (नवम्बर 1632)

अब मेक्समिलियन और लोगों की आखें खुलीं और फ्रांसीसी एजेन्ट शार्नेस की चतुराई भी मेक्समिलियन को स्वीडन के सम्बन्ध में तटस्थता जारी रखने का वचन देने के लिए न मना सकी। तेज धारा की प्रगति नहीं रुकी और 1632 का अभियान टिली की पराजय और मृत्यु से आरम्भ हुआ जबकि वह स्वेडो को लेख पार करने से रोकने की चेष्टा कर रहा था। टिली की मृत्यु कैथोलिक दल और लीग के लिये इतनी दुर्भाग्यपूर्ण थी जितनी जमकर लड़ी गई लड़ाई की हानि क्योंकि इसके पश्चात् तुरन्त बवेरिया पर धावा कर दिया गया। प्रोटेस्टेन्ट मित्र की इस सफलता के कारण रिशेल्यू को अपने कैथोलिक मित्र का सहयोग खोना पड़ा। प्रोटेस्टेन्ट पक्ष इस समय सफलता के पूर्ण वेग पर था और साम्राज्यवादियों की स्थिति इतनी गम्भीर हो गई थी कि फर्डिनेन्ड को फिर से वेलेस्टीन को उसके पद पर बुलाने के लिये प्रार्थना करनी पड़ी। यद्यपि वह अवकाश-प्राप्त था और स्वीडन से भी बात–चीत करता रहा था, तो भी उसने निमंत्रण स्वीकार किया, किन्तु किन शर्तों पर स्वीकार किया यह ज्ञात नहीं है।[2] वह सेक्सनी और सम्राट् में मध्यस्थ बना

1 इसने, बेशक, रिशेल्यू की योजना को गड़बड़ा दिया। 1631के अन्त मे गस्टवस ने रिशेल्यू से आज्ञा लेनी चाही कि वह सेना लेकर वेटेलीन में स्पेन के दर्रों पर कब्जा करले, परन्तु यह इस आधार पर अस्वीकार कर दिया गया कि वेटेलीन पर स्पेन का अधिकार, स्वीडन पर अधिकार की अपेक्षा कम खतरनाक है। (फेगनीज, **पूर्व उद्धृत**, 2, 131 एफ. एफ.।)

2 गिन्डले, **थर्टी इयर्स आफ वार**, 2, 125। फर्डीनेन्ड और वेलेंस्टीन के मध्य हुई शर्तें अनधिकृत रूप से 1632 में फल-सचिफटन में प्रकाशित हुई थीं, परन्तु उन दोनों के मध्य हुई सात्रिकार संधि उपलब्ध नहीं है। सी. वी. वेगवुड कृत **दी थर्टी इयर्स आफ वार**, 315 भी देखिये।

और उसी समय उसने एक बड़ी मेना इकट्ठी करके वोहेमिया में बहिष्कृत प्रोटेस्टेन्टों द्वारा संगठित एक बढ़ते हुए विद्रोह का दमन किया। लीग के सैनिकों से मिलकर उसने प्रथम बार न्यूरेम्वर्ग में गस्टवस का सामना किया। दोनों नेता आक्रमण के लिये उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करते रहे, किन्तु जब गस्टवस ने पहल की तो उसे पीछे हटा दिया गया, जर्मन भूमि पर उसकी यह प्रथम पराजय थी। इस घटना के पश्चात् उसके अभियान में निश्चय की कमी मालूम होती है। वह दक्षिण जर्मनी में घुस गया और फिर सेक्सनी में वापिस आ गया और जिस प्रकार ब्रीटेनफेल्ड की विजय के बाद आस्ट्रिया पर धावा बोला जा सकता था उसी प्रकार न्युरेम्बर्ग की पराजय के पश्चात् उसे यह प्रलोभन भी हो सकता था कि वह ऊपरी आस्ट्रिया में उपद्रव का लाभ उठाकर अपनी पूर्व स्थिति को फिर से कायम कर लेता। इस बीच पैपेनहीम वेलेन्स्टीन से जा मिला और दोनों के पास लगभग 25,000 सेना हो गई। उन्हें शीत निवास स्थान की ओर जाते सुनकर गस्टवस ने उन पर आक्रमण करने का निश्चय किया और 17 नवम्बर 1632 को लुटज़न की लड़ाई हुई। पैपेहीम के आगमन ने साम्राज्यवादियों को, जो तीव्र भयंकर आक्रमण के आगे भाग रहे थे, फिर से एकत्र कर लिया, किन्तु उसकी मृत्यु से आंतक फैल गया और स्वेडों ने अपने लाभ को आगे बढ़ाया। उस दिन कोहरा छाया हुआ था, प्रशा में लगे एक घाव के कारण गस्टवस कवच नहीं पहन सकता था और वार करके उसे बिखरे हुए क्षत-विक्षत सैनिकों के बीच गिरा दिया गया और मार दिया गया। यद्यपि स्वीडन की सेना फिर एकत्रित हो गई, किन्तु परिणाम अनिर्णायिक रहा। युद्ध में भाग लेने वाले तीनों नेताओं में से वेलेस्टीन ही अपनी जान बचाकर बच निकला।

लुटजेन की लड़ाई के परिणाम

गस्टवस की मृत्यु की एक महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया हुई। लारेन के चार्ल्स चतुर्थ ने अपने को सम्राट् के पक्ष में घोषित कर दिया। वह पहले ही फ्रांस के शत्रुओं से मिला हुआ था, क्योंकि उसकी बहन ने भागकर आये ओर्लियां के गास्तौं से विवाह किया था। रिशेल्यू ने इस स्थिति का लाभ उठाकर अपनी सेना लारेन में भेज दी जिसने ड्यूक को उसके प्रदेशों से बाहर निकाल दिया। इस कार्य से यह प्रकट होता है कि रिशेल्यू की फ्रांस की पूर्वी सीमा को बढ़ाने की चाल अब सम्पन्न हो रही थी और वह सक्रीय भाग लेने के लिए अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था। स्वीडन को अब भी आर्थिक सहायता दी जाती थी किन्तु ओक्सेनस्टीर्न द्वारा फ्रांस को कोलमर और फिलिप्सवर्ग देने से इन्कार करना यह प्रदर्शित करता है कि स्वीडेन निवासियों की स्वतन्त्रता गस्टवस की मृत्यु से घट नहीं गई थी। किन्तु इस बीच योग्य कूटनीतिज्ञ ओक्सेनस्टीर्न के निर्देशन और सेक्स-वीमर के बर्नार्ड के कुशल

सैनिक नेतृत्व में स्वीडन ने जर्मनी में प्रबल प्रोटेस्टेन्ट अवरोध कायम रखा और रिशेल्यू प्रतीक्षा करता रहा।

वेलेस्टीन की हत्या (फरवरी 1634)

लुटजेन का युद्ध एक अन्य परिणाम उत्पन्न करने वाला था। इस समय मैक्सिमिलियन और वेलेंस्टीन के मध्य खुली शत्रुता केथोलिक पक्ष की मुख्य निर्बलता थी और जल्दी ही वियना का प्रधान न्यायालय फ्रीडलैण्ड के दुर्बोध ड्यूक के विरुद्ध शिकायतों से प्रतिध्वनित हो उठा। ड्यूक के विषय में यह समझा जाता था कि उसकी कोई भी धार्मिक आस्थायें नहीं हैं। उसकी प्रचुर सम्पत्ति और विलासपूर्ण अभिरूचियों से ऐसा लगता था कि उसकी महत्वाकांक्षायें राजतन्त्रवादी हैं। ऐसे मनुष्य का सभी दल अविश्वास करते थे और इस अविश्वास को पूर्ण करने के लिये युद्ध में केवल एक ऐसी असफलता की आवश्यकता थी जैसी उसे लूजेन में मिल चुकी थी। इस समय वेलेंस्टीन के वास्तविक उद्देश्य क्या थे, यह निश्चित करना कठिन है। उसके लिये कहा जाता था कि शायद वह जर्मनी में तानाशाही स्थापित करने के लिये स्वीडन, सैक्सनी और फ्रांस [1] से सौदा कर रहा था। वह सम्भवतः बोहेमिया का राजमुकुट प्राप्त करने के विचार से वहां के निष्कासितों के प्रस्तावों पर ध्यान दे रहा था; [2] उसकी मैक्सिमिलियन के प्रति घृणा उसे पेलेटिनेट पर अधिकार करने के लिये प्रलोभित कर ले, फिर वह चाहे केवल बदले के लिये ही क्यों न हो; उसकी स्पेन के प्रति घृणा सम्भवतः उसे फ्रांस के निचले देशों [3] में आकांशओं को प्रोत्साहित करने का प्रलोभन दे। इतनी सम्भावनाओं से सम्पन्न मनुष्य के लिये कार्य ही उसका बचाव था, क्योंकि उसकी निष्क्रियता से अवश्य ही यह सन्देह होता कि वह कोई योजना बना रहा है। वियना को ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसकी उपयोगिता समाप्त हो गई है और अब उसकी शक्ति एक खतरा है। इन सदेहों पर साम्राज्यीय सेनाध्यक्ष के शत्रुओं ने तुरन्त कार्य किया। जनवरी 1634 में उसे पद से हटा दिया गया और एक मास पश्चात् उस पर राजा के प्रति विश्वासघात का अभियोग लगाया गया। इसके पश्चात् उसके मुख्य अधिकारी ही उसके प्रति स्वामिभक्त रहे। बोहेमिया की सीमा पर स्थित नगर में शरण लेकर उसने स्वीडन से अपनी रक्षा के लिये कहा। प्रकट रूप से राज्यपाल ने, जो वियना

---

1 गेडेके, **वैलेंस्टीन वरहेनडुलगन मितडेन स्वीडन एण्ड सेचसन**। इसी ग्रन्थ के विस्तृत संस्करण में इस पत्र व्यवहार का व्यापक विवेचन किया गया है।

2 बिलेक, **बीटरेज जूर गेस्लीचेट वेलेंस्टीन**।

3 स्पेन के प्रति वेलेंस्टीन के द्वेषभाव के लिये **प्रीसीचे जाबूचर** में प्रकाशित लेख देखिये, 1868,21,416।

से बातचीत कर रहा था, नगर को स्वीडन के हाथों में पड़ने से रोकने के लिए उसके वध का निश्चय किया। 27 फरवरी 1634 को कुछ किराये के हत्यारों ने वेलेंस्टीन के सेनापतियों की उस समय हत्या कर दी जब वे एक भोज में सम्मिलित थे। तत्पश्चात् वे वेलेंस्टीन के निवास-स्थान की ओर बढ़े जहां उन्होंने उसे मार डाला जबकि वह शयनगृह में अरक्षित खड़ा था। जिस प्रकार गस्टवस अडोल्फस की मृत्यु पर उसके मुख्य मित्र फ्रांस ने सुख की सांस ली उसी प्रकार वेलेंस्टीन की मृत्यु का कैथोलिकों द्वारा हर्षाभिनन्दन किया गया। वह अद्भुत प्रतिभा और परिस्थिति के संयोग से महान् उन्नति कर गया। उसकी अवनति इसलिये हुई कि उसकी हत्या कोई गलत कार्य करने से नहीं, अपितु कुछ कार्य न करने से की गई। उसके उत्तराधिकारी गैलस पर विश्वास किया जा सकता था, क्योंकि वह शायद ही कभी गम्भीर स्वभाव हुआ हो, वह लूट-पाट के लिये तुला रहता था और उसमें इतनी कल्पना न थी कि वह खतरनाक समझा जाता।

नार्डजिन की लड़ाई (सितम्बर, 1634)

साम्राज्यीय सेनाध्यक्ष बनने के पश्चात् उसका पहला कार्य नार्डलिजन पर घेरा डालना था और उस स्थान को बचाने के लिये ही सेक्स-वीमार के बनार्ड ने लड़ाई की। नार्डलिजन की लड़ाई का अन्त स्वीडन की लघुसख्यक सेना के पूर्ण ध्वंस में हुआ (7 सितम्बर, 1634) और एक ही आधात में स्वीडन की सभी विजयें समाप्त प्राय: हो गई।

प्राग की संधि (मई, 1635)

निचले पेलेटिनेट पर साम्राज्यीय सेनाओं ने तुरन्त पुन: अधिकार कर लिया सेक्सनी का इलेक्टर वायु दिशा-सूचक यन्त्र कीसी फुर्ती से बदल गया और सम्राट से संधि करली। प्राग की संधि द्वारा (मई 1635) प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक दोनों के प्रदेश, जिन पर 1627 में उनका अधिकार था, उन्हें वापिस लौटा दिये। वे चालीस वर्ष की अवधि तक इन प्रदेशों को रख सकते थे और इस अवधि में स्वामित्व के प्रश्न को मेलजोल से हल करना था। लुसेशिया सेक्सनी के जॉन जार्ज को दे दिया गया और उसके पुत्र को मेजबर्ग के प्रशासक का पद जीवन-पर्यन्त के लिये मिल गया। आग्सबर्ग स्वीकारोक्ति (Confessions) लुसेशिया और कतिपय निर्दिष्ट साम्राज्यीय नगरों द्वारा स्वीकृत करनी थी। सम्राट के साथ सेक्सनी के इस मेल की समकालीनों ने राजद्रोह कहकर निन्दा की।[1] किन्तु नि:सन्देह इलेक्टर

---

1 इलेक्टर की नीति पर समकालीन आक्रमणों के लिए देखिये हिटजीग्रेथ कृत **दी पब्लिसटिक डेस प्रेगर फ्रेन्डस** : जॉन जार्ज पर यह आरोप लगाया गया था कि इसने अपने साथी प्रोटेस्टेंटों से परामर्श लिए बिना संधि पर हस्ताक्षर कर दिये थे।

ने अपने लिए बहुत अच्छा सौदा कर लिया और उसके उदाहरण का अनुकरण ब्रेन्डेनबर्ग के इलेक्टर, मैक्लेनबर्ग, लुनेबर्ग, ब्रेज्विक, पोमरेनिया के ड्यूकों और अनहाल्ट के राजकुमार ने किया। जर्मन राजकुमारों में से केवल सैक्से-वीमर के बनार्ड ने झुकने से इन्कार कर दिया। यह जर्मनी का अपमान था तथा इसने यह सिद्ध कर दिया कि स्वीडन की शक्ति द्वारा प्राप्त चमत्कारपूर्ण विजयों के परिणाम कितने अस्थिर निकले।

धार्मिक युद्ध का अन्त

यहां आकर धार्मिक युद्ध का अन्त होता है। इसका अन्तिम परिणाम यह निकला कि जर्मनी के प्रादेशिक राजकुमारों द्वारा अपने तमाम स्वराज्य के व्यावहारिक त्याग और हैप्सबर्गों के आधिपत्य को प्रमाणिक स्वीकार कर लिया। अकेले स्वीडन ने कैथोलिक और हैप्सबर्ग अजेयता का सफलतापूर्वक सामना किया, किन्तु उसे लडाई चालू रखने के लिए सहायता की आवश्यकता थी अन्यथा जर्मनी के किसानों में भुखमरी, कष्ट तथा अचानक मृत्यु साधारण दैनिक कार्यक्रम होने के अतिरिक्त इन 17 वर्षों तक रुक-रुक कर चलने वाले इस युद्ध के कोई स्पष्ट परिणाम नहीं निकले। चमत्कारपूर्ण यौद्धिक पराक्रम का वर्णन करने वाले सदा मिलते रहेंगे, किन्तु इन वर्षों की अज्ञात पीड़ाओं का वर्णन करने वाले योग्य लेखक कभी नहीं मिलेंगे। यह बात सभी युद्धों पर लागू होती है, किन्तु 30 वर्षीय युद्ध पर विशेष रूप से। धार्मिक उद्देश्य 1635 तक समाप्त हो चुका था। शहीद किसानों की भूमियों को अभी विदेशी योद्धाओं के नये आक्रमणों से हानि पहुंचनी शेष थी। जर्मनी प्रोटैस्टैन्टवाद ने हैप्सबर्गों की आकांक्षाओं के विरोध करने में अपनी अयोग्यता प्रदर्शित करदी। डेन्मार्क और स्वीडन दोनों ही कोई निर्णायक सिद्धि प्राप्त नहीं कर सके। अब यह फ्रांस के लिए शेष रहा कि वह इस झगड़े में पड़े। इस हस्तक्षेप से युद्ध का भीषणतम काल आरम्भ होता है।

फ्रांस का हस्तक्षेप और वेस्टफेलिया की सन्धि (1635–1648)

फ्रांस और स्पेन (1631–1635)

19 मई 1635 को फ्रांस ने स्पेन के राजा के विरूद्ध युद्ध घोषित करने के लिए एक दूत ब्रुसेल्स भेजा। लड़ाई आरम्भ करने से पूर्व की प्राचीन प्रथा का अनुसरण करते हुए रिशेल्यू ने बिल्कुल आधुनिक ढंग की तैयारियां की थीं।[1] दोनों देश कुछ वर्षों तक युद्ध करने को उद्यत रहे थे। नार्डलिंजन की लड़ाई से कुछ समय

---

1 यह कटुता पिछले 12 वर्षों से बढ़ रही थी। (वेलर्क, ह्यूग्स डी ल्योन 2, परिचय)।

पहले फिलिप चतुर्थ ने पेलेटिनेट को सुरक्षित करने के लिए सेना एकत्रित की थी। उसने बवेरिया के लिए कूटनीतिक व्यवहार द्वारा यह प्रयत्न किया था कि पोलेंड और डेन्मार्क स्वीडन से उलझ जायें और इंग्लैण्ड पेलेटिनेट में और अधिक रुचि न रखे। स्पेन के वियना स्थित राजदूत को आदेश दिया गया था कि वह इलेक्टरों और प्रोटेस्टेन्ट राजकुमारों को अपनी ओर मिलाने का यत्न करे, इसके लिए भले ही उसे पुनःस्थापना की घोषणा को त्यागना पड़े। तभी ओर्लियां के ड्यूक और मेरी डेमेडिसी के षड़यन्त्रो का रिशेल्यू के विरूद्ध स्पेन द्वारा समर्थन किया गया जबकि स्पेन की कूटनीति की सभी युक्तियो का समस्त यूरोप को यह विश्वास दिलाने में सहयोग किया गया कि युद्ध अब धार्मिक न रहकर राजनैतिक हो गया था। 1631 के अन्तिम चरण में फ्रांसीसी सेना ने मोयेन्विक पर अधिकार कर लिया जो लारेन लेने के लिए पहला कदम था। रिशेल्यू ने गस्टवस अडोल्फस को अल्सेस पर धावा बोलने के लिए आमन्त्रित किया[1] किन्तु पोप के दूत बिची ने रिशेल्यू से हैप्सबर्ग प्रदेश पर आक्रमण न करने का आग्रह किया। रिशेलू इस आशा में रुक गया कि ब्रीटेन-फेल्ड की लड़ाई के बाद गस्टवस बोहेमिया या आस्ट्रिया में घुस जायेगा किन्तु स्वीडन के राजा के द्वारा राइन की ओर जाने से रिशेलू की योजना नष्ट हो गई। जनवरी 1632 मे फ्रांस और स्पेन में इतना तनाव हो गया था कि मेड्रिड में राजकीय परिषद् की बैठक में युद्ध छेड़ना निश्चित कर लिया गया था और यदि सम्राट ने उनका कहना मानने से इन्कार न किया होता तो वास्तव में युद्ध छेड़ भी दिया जाता।

अर्बन अष्टम का दृष्टिकोण

इस बीच में पोप के दूतो ने रिशेलू और ओलिवरेज के मध्य समझौता कराने में सारी शक्ति लगादी, किन्तु अर्बन अष्टम के अस्पष्ट रुख ने उनका कार्य कठिन कर दिया। अर्बन जर्मनी में कैथोलिकवाद को विजयी देखना चाहता था, दूसरी ओर उसे हेप्सबर्गों पर विश्वास नहीं था, फ्रांस की ओर उसका व्यक्तिगत झुकाव था और उसकी स्पेन के प्रति अरुचि से कम से कम एक घटना क्युरिया में हो गई। 8 मार्च 1632 को स्थिति उस समय सकटपूर्ण हो गई जब स्पेन के कार्डिनल वोर्जिया ने स्वतः ही राजदूत का कार्य करते हुए ऐसी भाषा में, जिसे अपमानपूर्ण ही कहा जा सकता है[2], अर्बन के सशंकित पक्षपात की सार्वजनिक रूप से निन्दा की।

---

1 लोमान, **अरबन 8 एत ला रिवेलिते दी ला फ्रांस एत दी ला मेसन द ओट-रिचे**, 90 लेबान की पुस्तक का उपयोग उपर्युक्त विवेचन में व्यापक रूप से किया गया है, क्योंकि इसमें सिमानकेस संग्रहालय से महत्वपूर्ण उद्धरण उद्धृत किये गये हैं।

2 लेमान, **पूर्व उद्धृत**, 133 एफ. एफ.।

फर्डिनेंड भी पोप की सहायता पाने में असफल रहा, यद्यपि अर्बन को अपनी ओर करने के लिए कार्डिनल पाजमनी के जो हंगरी का रिशेलू समझा जाता है वियना से रोम भेजा गया, किन्तु धूर्त पोप इस मामले में नहीं पड़ा और अपने सहधर्मावलम्बयों को किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता देना अस्वीकार कर दिया। परिणाम यह हुआ कि धर्मात्मा और कर्तव्यपरायण फर्डिनेड संकट में फंस गया—क्या उसे कैथोलिक फ्रांस (जिसने अभी फ्रेंच ह्यूजनों की राजनैतिक शक्ति नष्ट की थी) से मित्रता करनी चाहिये और जर्मनी के विधर्मियों को कुचल डालना चाहिये या रिशेलू का मुकाबला करने के लिए जर्मन विधर्मियों से मित्रता करनी चाहिये ? पापों के मुक्तिदाताओं (Confessors) और पोप के नन्शिओं ने पहला मार्ग अपनाने की सलाह दी, धर्मनिरपेक्ष लोग दूसरा मार्ग अपनाने के पक्ष में थे। फर्डीनिन्ड के मन के ये संशय और हैप्सबर्ग पक्ष में पोप की उदासीनता यह प्रदर्शित करती है कि युद्ध के उद्देश्य कितने जटिल थे।

रिशेलू की सेवाय, स्वीडन और यूनाइटेड प्रोविन्सेज से संधि

किन्तु रिशेलू के व्यवहार मे कोई गडबड़ अथवा हिचकिचाहट न थी। हैप्सबर्ग द्वारा संरक्षित लारेन के चार्ल्स चतुर्थ को उसकी डची से बहिष्कृत करने के पांच दिन पश्चात् 25 सितम्बर, 1633 को फ्रांसीसी सैनिकों ने नेन्सी[1] में प्रवेश किया और जब अर्बन ने यह प्रस्ताव किया कि कैथोलिक शक्तियों को रोम में एक कांग्रेस करके उसमें अपने मतभेदों पर विचार—विमर्श करना चाहिये, तो फ्रांस ने तुरन्त नकारात्मक प्रत्युतर दे दिया। नार्डलिंजन की विजय के बाद भी सम्राट् शान्ति के प्रस्तावों पर विचार करने के लिए तैयार था, किन्तु चूंकि यह विजय प्रधानतया स्पेन के सैनिकों ने प्राप्त की थी इसलिए मेड्रिड में युद्ध लडने के पक्ष में विचारधारा प्रबल होगई।[2] इस बीच में फ्रांस अपनी तैयारियां करता रहा और पूर्वी सीमा तक अपना अधिकार जमा लिया। उसने टायर इलेक्टर से मित्रता करके मोजेल पर अपनी प्रधानता स्थापित करली। उसने स्पेन को ऊपरी अल्सेस के दुर्ग और फिलिप्सबर्ग को छोड़ने पर विवश कर दिया, बांसल के विशप से मैत्री करके मध्य-राइन प्रदेश पर अपना अधिकार दृढ कर लिया, उसकी सेना फ्रांश कान्ते के आस-पास थी और लारेन में उसके पास भावी सैनिकक्रियाओं के लिए एक प्रशंसनीय अड्डा था। रिशेलू ने फरवरी सन् 1635 में स्पेनिश नीदरलेण्ड के बटवारे अथवा स्वतन्त्रता स्थापित करने के विचार से संयुक्त प्रदेशों से अनाक्रमक और प्रतिरक्षात्मक

---

1 20 सितम्बर, 1633 की चर्मिस संधि के द्वारा लोरेन के चार्ल्स द्वारा नैसी फ्रांस से अलग कर दिया गया था।

2 लेमान, पूर्व उद्धृत, पृ० 429।

मैत्री की। उसी वर्ष अब विनीत स्वीडन से काम्पिएन की संधि लिखाई गई। यह एक ऐसा समझौता था जिससे स्वीडन की सैनिक सहायता देने का पुनः आश्वासन दिया गया और जिससे स्वतन्त्रता के विरूद्ध नये रक्षात्मक उपाय किये गये। रिवोली की सधि द्वारा, जिस पर जुलाई में हस्ताक्षर किये गये, सेवाय को फ्रांस के सक्रिय मित्रों में शामिल कर लिया गया।

युद्ध का यूरोपीय रूपधारण करना

इसलिए जब फ्रांस ने स्पेन से युद्ध की घोषणा की तो किसी को आश्चर्य नहीं हुआ।[1] यह रिशेल्यू द्वारा हैप्सबर्गो के विरुद्ध स्वीडन और जर्मनी को मिलाने मे असफल रहने का सीधा परिणाम था। फ्रांसीसी राजनीतिज्ञों ने धार्मिक कलह के शुष्कप्राय वृक्ष के तने पर राजवंशीय युद्ध की शक्तिशाली कलम लगादी। इस उपाय से समय की बचत हुई, किसी ने ऐसी क्रिया-प्रणाली की वैधता पर, जिसने सत्रहवर्षीय शरीर को स्थिर रखा, विवाद नहीं किया। यूरोपीय महाद्वीप के प्रायः सभी छोटे युद्ध और झगड़े इस महान अग्निकांड में एक हो गये और यही कारण है कि इस युद्ध को, जो 1648 में समाप्त हुआ, वर्षो की उस सख्या के नाम से सम्बोधित किया जाता है जब तक वह चलता रहा।

फ्रांस की प्रारम्भिक कठिनाइयां

इतनी तैयारियां होते हुए भी फ्रांसीसी शक्ति रणक्षेत्र में पहले सफल नहीं हुई। 16वीं शताब्दी से फ्रांस किसी विशालकाय युद्ध में नहीं पड़ा था और तब से सैनिक विज्ञान काफी विकसित हो चुका था। साथ ही फ्रांस के पास पूर्णतया सुसज्जित तथा सगठित सेना भी नहीं थी। सन् 1636 में फ्रासीसी सैनिकों को सीयर्क, फिलिप्सबर्ग और ट्रायर छोड़ कर मोसेल से वापिस हटना पड़ा तथा उसी वर्ष स्पेनिश सैनिकों ने पिकर्डी पर आक्रमण कर दिया। जब पेरिस पर खतरा आगया तब युद्ध ने अधिक राष्ट्रीय रूप धारण किया और रिशेलू को सैनिक भर्ती करने में कम कठिनाई का सामना करना पड़ा। फरवरी 1637 में फर्डीनेन्ड द्वितीय की मृत्यु और उसके पुत्र फर्डीनेन्ड तृतीय के अभिषेक से संघर्ष के प्रवाह में इसके अतिरिक्त और कोई अन्तर नहीं आया कि उसने इस परिवर्तन को दृढ कर दिया जिससे युद्ध का धार्मिक रूप जाता रहा था, क्योंकि फर्डीनेन्ड तृतीय जेसुइटों का इतना पक्का शिष्य नहीं था जितना वह स्पेन का दृढ़ एजेन्ट था।[2] फर्डीनेन्ड

---

1 साम्राज्य के विरूद्ध 1638 तक युद्ध घोषणा नहीं की गई थी।

2 "फर्डीनेन्ड तृतीय सी रेगोला एन्ना स्पेगनुलो" (गिस्टिनिया नी टु वेनिस इन फोन्टेस रेरम आस्ट्रिया कोरम, सम्पादित फीडलर, द्वितीय शृंखला, 26, 391)।

द्वितीय की मृत्यु के साथ उस पीढ़ी का अन्तिम पुरुष भी लुप्त हो गया जिसने यह युद्ध आरम्भ किया था।

फ्रांसीसी एवं स्वीडिश सेनाओं की प्रगति

स्वीडिश जनरल बेनर द्वारा 1639 में बोहेमिया पर किये आक्रमण में प्रोटेस्टेन्ट हित का कुछ भला न हुआ, क्योंकि बोहेमिया पहले ही पूर्ण रूप से लूटा जा चुका था और स्वीडिश सेना जब अपनी लूट-पाट की लिप्सा को सन्तुष्ट न कर सकी तो उन्होंने प्रतिरोध में अरक्षित निवासियों को कत्ल कर दिया। इन वर्षों में बोहेमिया, मोरेविया और साइलेशिया के निवासी शूली पर चढ़े रहे। बहुत से गांवों में एक भी निवासी नहीं छोड़ा गया और हजारों किसान पहाड़ों और जंगलों में भूख से मर गये। शेष में बहुत से विकृत और असन्तुलित बुद्धि हो गये और ऐसी अनुकूल भूमि को अंधविश्वासी शक्तियों ने अपने पजों में जकड़ लिया।[1] बेनर के साथी जनरल सेक्सवीमर के बर्नार्ड के धावे अधिक सम्मानपूर्ण ढग के थे। अपनी सैनिक क्रियाओं को राइन घाटी में ही सीमित रखते हुए उसने ब्रीसेख पर घेरा डाल दिया और शहर को दिसम्बर, 1638 में आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य किया। बर्नार्ड ने यह शहर फ्रांस को देने से इन्कार कर दिया, किन्तु अगले वर्ष ही उसकी मृत्यु हो जाने से रिशेलू को ऐसे मित्र से छुटकारा मिल गया जो जरूरत से ज्यादा स्वतंत्र हो रहा था। सन् 1639 तक फ्रांस ने अलसेस में पहला स्थायी कदम जमा लिया था और अगले वर्ष फ्रांस के वेतनिक सैनिकों ने लगभग समूचा फ्रांस जीत लिया। उसी समय आरा हस्तगत करने से स्पेन के निचले देशों को खतरा हो गया और जब (1640) इलेक्टर महान फ्रेडरिक विलियम, ब्रेंडेन्बर्ग के नये इलेक्टर ने स्वीडन से तटस्थता की संधि पर हस्ताक्षर किये तो जर्मनी में हैप्सबर्ग शक्ति की उपेक्षा की प्रक्रिया निश्चित रूप से आरम्भ कर दी गई। रिशेलू 4 दिसम्बर 1642 को मर गया, किन्तु अपने हैप्सबर्ग-विरोधी अभियान के प्रथम परिणामों को देखने से पहले नहीं।

रोक्रोय का युद्ध (मई 1643) ब्रोमसेब्रो की संधि

अडोल्फस गुस्टवस की प्रणाली में प्रशिक्षित फ्रांसीसी जनरलों, कांदे और तूरेन ने उसकी सैनिक कीर्ति का कुछ अंशों में पुनद्धार किया। आर्डेनेज के पश्चिमी-छोर पर स्थित और स्वीडन से 20 मील के अन्दर रोकोय का दुर्ग था जिसका सामरिक महत्व 1537 से माना जाता था जबकि इसकी किलेबंदी की गई थी। ऐसी कौतुकपूर्ण विजयें बहुत कम होती हैं जिनको देखने का अवसर स्पेन के इस

1। इसके लिए देखिये डेनिस कृत **ला बोहेमा डेपुइस ला सोन्टेगेने व्लाचे**, I, 348 एफ. एफ.।

दुर्ग के घेरे ने प्रदान किया। फ्रांसीसियों को रोक्रोय विजय (15 मई, 1643) का केवल इतना महत्व नहीं है कि इससे फ्रांसीसी प्रदेशों का खतरा टल गया अपितु इसलिए भी है कि इसने स्पेन की अवशिष्ट सैनिक प्रतिष्ठा को नष्ट कर दिया। तीव्र फ्रांसीसी धावों और फ्रांसीसी नेतृत्व ने स्पेन की अजेयता की पुरानी गाथा को निश्चित रूप से असत्य सिद्ध कर दिया। इस विजय ने युवक आंधिएं के ड्यूक की, जो बाद में महान और उपद्रवी कांदे कहलाया, सैनिक प्रसिद्धि स्थापित करदी। इस सफलता के बाद आंधिएं ने फिलिप्सबर्ग वापिस जीत लिया जबकि ट्यूरेन ने राइन प्रदेश पर पुनः अधिकार करते हुए मेंज और वार्म जीत लिए। साम्राज्यीय हित की निराशापूर्ण दशा का आभास इस तथ्य से होता है कि 1643 के वर्ष में फर्डिनेंड को इस बात की संभावना पर विचार करना पड़ा कि वह क्रिश्चियन चतुर्थ को ब्रेमन और हैप्सबर्ग देकर बदले में डेन्मार्क की सहायता ले, जबकि मेक्सिमिलियन अलग संधि करने के लिए गंभीरतापूर्वक विचार करने लगा। इस बीच में स्वीडन का जनरल टोर्स्टेन्सन उत्तर में ऐसे वीरतापूर्ण कार्य सम्पन्न कर रहा था, जैसे फ्रांसीसी जनरल दक्षिण में कर रहे थे। उसने श्लेज्विग-होल्स्टीन पर धावा करके डेन्मार्क के क्रिश्चियन को ब्रोम्सेब्रो (सितम्बर 1645) की संधि द्वारा साम्राज्यीय पक्ष को त्याग देने के लिए बाध्य किया। ओक्सनस्टीर्न द्वारा किये वायदों में ट्रांसिल्वेनिया के राजकुमार, रेकोवजी को हंगरी पर धावा बोलने के लिए तैयार कर दिया और अब स्वीडन की विजयी सेना रेकोवजी से मिलने के लिए बोहेमिया में से गुजरी। यद्यपि अन्त में इस मित्र ने उनका साथ छोड़ दिया क्योंकि मैन्सफील्ड लु बेथलेन गेबर के साथ था तथापि टोर्स्टेन्सन ने हैप्सबर्ग राज्यों में युद्ध जारी रखा और वियना पर भी संकट बनाये रखा। सन् 1645 तक सम्राट को स्पेन के अतिरिक्त सब मित्रों ने छोड़ दिया। सेक्सनी के इलेक्टर ने अपने राज्य में से स्वीडिश सैनिकों को मार्ग दे दिया और बवेरिया फिर फ्रांसीसी पक्ष में मिल गया तथा इस प्रकार फ्रांसीसी हस्तक्षेप और स्वीडन के सैनिक पुनरुत्थान द्वारा जर्मनी में प्रोटैस्टेन्टवाद के हितों को बचा लिया गया। तीन वर्ष पूर्व संधि की बातचीत आरम्भ हो चुकी थी।

बवेरिया पर आक्रमण (1647)

मुन्स्टर और आस्नब्रुक में चल रही शान्ति-वार्ता [1] के लम्बे समय में युद्ध

---

1 1648 में ट्यूरेन द्वारा अवसर का उपयोग न किये जाने के कारण, प्रायः जर्मनी के जैसुइटों पर सन्धि में बाधा डालने का आरोप लगाया जाता है, परन्तु एल. स्टेनबर्गर इस विचार को स्वीकार नहीं करते, **दी जैसुइटन एंड दी फ्रीडनफ्रेज** (1635-50)। यह रिपोर्ट मुख्यतः डिलिंगन के जैसुइट लेमान द्वारा अग्सबर्ग समझौते की कटु आलोचना करने पर तैयार की गई थी।

छुट–पुट, परन्तु स्थायी हमलों के रूप में चलता रहा। इस बीच न तो कोई महत्व-पूर्ण युद्ध हुआ और न प्रतिद्वन्दियों के भाग्य में परिवर्तन। सन् 1645 में बूढ़े टोर्स्टेन्सन के स्थान पर रेंगल को स्वीडिश सेना का नेतृत्व दिया गया और 1646 में वह अपनी सेनाओं को ट्यूरेन से मिलाने में सफल हुआ। इसके परिणामस्वरूप बवेरिया पर सम्मिलित आक्रमण किया गया जिससे मेक्समिलियन को सम्राट् का पक्ष छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा। मार्च 1647 में स्वीडन और फ्रांस के साथ उल्म में विरामसन्धि करके उसने तुरन्त अपने मित्रों से धोखा करना आरम्भ किया और स्वीडनों को अपने प्रदेशों से निकालने का प्रयत्न करने लगा। इस कार्य के लिए अनुपयुक्त समय चुना गया, इसकी सफलता स्पेन की सहायता पर निर्भर करती थी। 1647 के अधिकांश भाग में स्पेनिश सेना की नेपल्स में[1] परमावश्यकता थी। बवेरिया पर विपत्ति का पहाड़ टूट पडा, उसे सेना के अधिकार में रखने से भयानक सकट का अनुभव करना पड़ा। ट्यूरेन और रेंगल ने रक्षाहीन इलेक्टर के प्रदेशों पर धावा बोल दिया और मई 1648 में सुस्मर्शसैन के स्थान पर साम्राज्यवादी और बवेरिया की सेनाओं को निर्णायक पराजय दी, फ्रेंको–स्वीडिश सेनाओं ने हैप्सबर्ग प्रदेशों पर धावा बोलते हुए अपनी सफलता जारी रखी और इस युद्ध में चौथी बार वियना को संकट में डाल दिया। इस बीच में कांदे ने स्पेन वालों को लेंस की लड़ाई (20 अगस्त, 1648) में पराजित किया और इसी समय में कोनिग्स्मार्ग के अधीन स्वीडन सैनिकों की टुकड़ी बोहेमिया में घुस गई। प्राग पर गोलाबारी की गई, किन्तु कैथोलिक निवासियों के सामूहिक प्रतिरोध ने स्वीडन सेना को दूर रखा। थोड़े दिनों में आम संधि पर हस्ताक्षर हुए (24 अक्टूबर 1648)। इस प्रकार जहां से युद्ध का श्रीगणेश हुआ था वहीं इति श्री हुई और प्राग जो कभी यूरोपीय राजधानी था अब केवल प्रान्तीय नगर के रूप में रह गया।

तीसवर्षीय युद्ध के भयानक परिणाम

तीसवर्षीय युद्ध के सामाजिक प्रभावों का वर्णन शोकजनक कार्य होगा।[2] विद्यार्थी को अपने लिए जर्मनी के उस समय के कष्टों की साक्षी समकालीन अभि–लेखों में ढूंढ़नी चाहिये। जनसंख्या की हानि के आंकड़ों से कुछ पता नहीं चलता। विशेष महत्व उसके नैतिक और मानसिक अधःपतन का है जिसने यूरोप की सभ्यता

---

1 देखें अध्याय 9।

2 इस सम्बन्ध में सबसे अच्छा वर्णन सी. वी. वेजवुड कृत, **दी थर्टी इयर्स वार** 510–529 में उपलब्ध है। फ्रेटज कृत **पिक्चर आफ जर्मन लाइफ** (अनुवाद, मेलकम), 2, 1 और डब्ल्यू क्रोन कृत ए ट्रयू रिलेशन (1637) भी देखें।

में जर्मनी को उसके स्थान से निश्चित रूप से नीचे गिरा दिया। प्रत्येक युद्ध से कुछ विशिष्ट दोष फैल जाते हैं, किन्तु आधुनिक युद्ध कला में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं जिसमें शहरी आबादी को इतने अधिक कष्ट सहने पड़े हों। प्रान्त में से जाने वाली सेना मित्रपक्षीय थी या नहीं, इसका कुछ महत्व नहीं था, स्वीडिश, फ्रेंच अथवा स्पेनिश, कोई भी हो उनका पोषण तो निवासियों के खर्चे पर ही होता था। यदि किसान के पास देने के लिए कुछ नहीं होता था तो अनुमान यह लगाया जाता था कि उसने अवश्य कुछ छिपा रखा होगा जो कष्ट दिये बिना नहीं बताया जायेगा। बदले की भावना और उग्र बदले को उत्तेजित करती थी। मानवता का संहार इस क्रूरता से किया गया और इस निर्दयता से उनके अंग काटे गये, कि लोगों को यह विश्वास हो गया कि अगली बार उनके साथ भी ऐसा ही होगा। ज्यों-ज्यों युद्ध लम्बा खिंचता गया त्यों-त्यों सामान्य भाग्यवाद और अत्याचार-जनित सनकीपन लोगों में अधिक घर करता गया। कोई किसान इस आशा में खेती की बुवाई नहीं कर सकता था कि वह उसे कभी काट सकेगा। बहुत से लोगों के लिए पेट भरने का साधन केवल लुटेरे जत्थों में शामिल होना ही था। जिलों में युद्ध के अन्तिम चरणों में स्त्रियां और बच्चे भी बड़ी संख्या में सम्मिलित हो गए थे। युद्ध निराशा और लक्ष्यहीनता का दृश्य प्रकट करता था। युद्ध के अन्तिम चरणों में फ्रांस के अतिरिक्त सभी दल पूर्णतया थक चुके थे। सार्वलौकिक दुःख और जर्जरता पर पर्दा डालने वाले रणकौशल के कोई उज्ज्वल वीरतापूर्ण कार्य नहीं हुए। इस युद्ध का कोई निमित्त अथवा आदर्श न था जिसके लिए मनुष्य कुर्बानी करते।

तथ्य ये है कि सैकड़ो गांवों में एक भी निवासी न रहा, बहुत से नगरों की जनसंख्या आधी से कम शेष रह गई, मृत व्यक्तियों के मुंह में घास पाई गई, जर्मनी के कुछ भागों में मनुष्य-भक्षिता फैल गई, और जेल में भी—युद्ध में सदैव सबसे सुरक्षित स्थान—बन्दी को अपने क्षुधार्त जेलर के हाथों ऐसी मृत्यु होने का डर बना रहता था जो कानून द्वारा दी गई किसी भी मृत्यु से भयंकर होती थी। लारेन के कलाकार कैलोट की नक्काशी में छोटे-छोटे जलते हुए घरों, निहत्थे निवासियों पर, जिन्हें अपनी वास्तविक अथवा काल्पनिक सम्पत्ति का पता बताने के लिए बाध्य किया जाता था, किये जाने वाले घोर अत्याचारों और किसानों के के लटकते शरीरों से झुके हुए पेड़ों को चित्रित किया गया।[1] ग्रिमेलशौसेन की सिम्प्लीसिसीम तीसवर्षीय युद्ध का सबसे अच्छा समकालीन प्रमाण है जिसने

1 कैलोट के विचारों के लिए लेसमिजेरीज उलाग्यूरे तथा पी. प्लान कृत जेकुइस केलोट (1911) देखें।

मध्ययूरोप के सार्वजनिक साहित्य में दो पुनरावर्तनशील विषयों का वर्णन किया है, एक हास्य–भावना का प्रयोगात्मक उपहास, साधारणतया अश्लील उपहास, में सीमित होना और दूसरा कृत्रिम–प्रदर्शन जिसके अनुसार सरल–स्वभाव मनुष्य को भ्रष्टाचार तथा विवेक–शून्यता के वातावरण के अनुकूल अपने आपको व्यवस्थित करना पड़ता था।[1]

युद्ध के सामाजिक एव मानसिक प्रभाव

युद्ध के कुछ अधिक स्पष्ट प्रभाव सरलता से उद्धृत किये जा सकते है। जनसंख्या में बहुत कमी[2] होने के कारण बड़ी जागीरें बटवारे से बच गई, इसलिए जागीरदारों के परमाधिकार उसी प्रकार बने रहे। सामन्ती सस्थाओं को और अधिक जीवन मिल गया। यहां किसान अर्द्ध–दास रहे जबकि अन्यत्र उनको स्वतन्त्रता दी जा रही थी। इसलिए बड़े जमींदारों के निरकुश शासन के विरूद्ध संघर्ष करने वाले कोई छोटे काश्तकार या घरेलू किसान न थे। वेस्टफेलिया की संधि ने जर्मनी में साम्राज्यीय शक्ति को केवल नाममात्र की बनाकर अनेक छोटे राज्यों की सकुचित प्रान्तीयता को प्रमाणित कर दिया। यह ऐसी प्रान्तीयता थी जिसने कितने ही अफसर प्रचारकर्त्ता, लेखक तथा थोड़े बहुत ज्ञान प्राप्त स्वेच्छा–चारी उत्पन्न किए, किन्तु फ्रांस की राष्ट्रीय और विशिष्ट सस्कृति के समान क्रमिक विकास और इंग्लैंड के समान प्रबल सार्वजनिक मत पैदा करना असम्भव बना दिया। 15वीं शताब्दी में जर्मनी विश्व के बौद्धिक नेतृत्व में इटली का साथी था, किन्तु 17वीं शताब्दी के अन्त तक जर्मनी के एक समय के स्वतन्त्र और उन्नतिशील शहर नष्टप्राय दशा में थे और पुराने ग्राम–समुदायों की भांति वे सरलता से प्रादेशिक पूंजीपतियों के अधिकार में लाये गये। जर्मन सभ्यता का नेतृत्व राज–कुमारों और जंकरों के पास चला गया। जर्मनी महान् पुरुष पैदा करता रहा, किन्तु वे अपने एकाकीपन में ही महान् थे और अध्यात्मविद्या तथा शास्त्रीय संगीत जैसी बातों में ही सर्वोत्तम थे जो केवल थोड़े से ही मनुष्यों को प्रभावित करते थे। जर्मनी कोई राष्ट्रीय कवि पैदा न कर सका और इसलिए उसके प्रोफेसरों को शेक्सपीयर पढ़ना पड़ा। ट्यूटानिकों की शेक्सपीयर के प्रति रूचि अंग्रेजों के लिए सदा सुखदायक रही है जिन्होंने अप्रकट रूप से यह मान लिया कि जर्मन पाठक नाटककार के परिपक्व ग्रन्थों की मानवता और बुद्धि की सराहना करते हैं और टाइटस ऐड्रोनिकल जैसे मिथ्यानाटकों के प्रलाप और सहार की अवहेलना करते हैं।

---

1 जे, हैस्क, **दी गुड सोलजर शविक** (रेंग्युन शृंखलामाला में अंग्रेजी अनुवाद)।

2 प्रिंजिग, **एपिडेमिक्स टिजल्टिज फ्राम वार**, 3, 6।

इस धारणा को सदैव समर्थन नहीं मिला है, क्योंकि बहुत से जर्मनों ने शेक्सपीयर और एलिजाबेथ–परम्परावादियों के गुण की प्रशंसा की है। उनके विचार में यह गुण उसकी ओजस्विता अथवा मौलिकता से प्रमाणित नहीं होता बल्कि हिंसा और भद्देपन से होता है। यह स्वीकार कर लिया गया है कि 'जर्मन शिष्टाचार कुछ अधिक पुराने ढग के रहे है।"[1] तीसवर्षीय युद्ध का वास्तविक महत्व उससे हुए नाश में नहीं जिसकी अन्त में पूर्ति करली गई है किन्तु इस मानसिक दृष्टिकोण के विकास की एक स्थिति सूचित करने में हैं। अन्तोतगत्वा इतिहास की दिशा उन दृष्टिकोणों द्वारा निश्चित है जो ऐसी बातों में प्रकट होती है, जो देखने में तुच्छ लगती हैं और इस दृष्टि के अनुसार यूरोप अब भी तीसवर्षीय युद्ध का मूल्य चुका रहा है।

वेस्टफेलिया की कांग्रेस

तीसवर्षीय युद्ध की समाप्ति के लिए यूरोप की प्रथम महान् शान्ति कांग्रेस के परिणामों पर विचार करना शेष रह गया है। शान्ति के प्रस्ताव 1635 में ही रखे गये थे जब अर्बन अष्टम, डोजे और डेन्मार्क के क्रिश्चियन में से प्रत्येक ने स्वयं मध्यस्थता करने का सुझाव रखा। सन् 1641 में फ्रांस, सम्राट और स्वीडन के प्रतिनिधियों में हुई हेम्बर्ग की कांफ्रेंस में यह मान लिया गया कि वेस्टफेलिया में मुस्टर और ओस्नाब्रुक स्थानों पर एक साथ दो कांग्रेस होनी चाहिये, किन्तु दो वर्ष बीतने के बाद इन नगरों में प्रतिनिधि आने आरम्भ हुए। पांच वर्ष से अधिक समय तक वाद-विवाद चलता रहा और साथ-साथ युद्ध भी होता रहा। इस संधि-वार्ता से यह आशा दिखाई दे सकती थी कि यह युद्ध यूरोपीय युद्ध को समाप्त कर देगा। इसके परिणामस्वरूप हमारे सामने ऐसे नियमों पर पुनर्निमित यूरोप का मानचित्र आता है जो स्थाई रहने की इच्छा से बनाये गये थे। वेस्टफेलिया की संधि ने पूर्व क्रांतिकारी यूरोप की राज्य प्रणाली के मुख्य सिद्धान्त स्थापित किये, किन्तु इसमें केवल शैक्षणिक (एकेडेमिक) रुचि ही नहीं है, क्योंकि इसने एक ऐसा कार्य करने का प्रयास किया जिसमें यूरोपीय कूटनीति अब भी उलझी हुई है और इसने एक समस्या को, जो अब भी यूरोपीय झगड़े का एक बड़ा कारण है और भी कटु बना दिया। इसने धर्म–निरपेक्ष राज्य–सम्बन्धी सोलहवी शताब्दी की धारणा को प्रामाणिकता दे दी जो व्यापारिक सम्बन्धो में पड़ोसियों से मिली हुई थी अन्यथा उनकी प्रबल विरोधी थी, इसने साम्राज्य और पैपेसी दोनों पुरानी संस्थाओं

---

1 ए. ब्रान्डिल, शेक्सपीयर एण्ड जर्मनी (ब्रिटिश अकादमी लेक्चर, 1813, पृ० 14।

2 वेस्टे, लेसग्रान्डस ट्रीटीज डू रेगने दी लुइस, 15, 1।

को असम्मानित कर दिया जो पाशविक शक्ति की अपेक्षा कम से कम किसी अन्य वस्तु को प्रभुत्व का आधार मानने का दावा करती थीं। अब तक यह निर्णय देने का एकाधिकार कि लडाकू दलों में से दैवी अनुमोदन किसको प्राप्त है केवल पेपसी को था। भविष्य में यह सम्भव हो गया कि कोई भी लडाकू दल यह दृढ़ता-पूर्वक कह सकता था कि उसे भगवान् का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है। पश्चिमी सभ्यता की बर्बर जातियों से रक्षा करने वाली दीवार होने और प्राचीन रोम की साम्राज्यीय परम्पराओं का केवल मात्र आगार होने का दावा करते हुए मध्यकालीन पवित्र रोम साम्राज्य ने विभिन्न जाति और भाषा-भाषी लोगों को एक संघ में बांध रखा था, किन्तु अब भविष्य का निर्माण जाति और भाषा-सम्बन्धी विभिन्नताओं को बढाकर, और शक्ति की स्थापना परम्पराओं की अपेक्षा, सेनाओं को बढाकर होने लगा। साम्राज्य का स्थान राष्ट्रीयता को दे दिया गया। मध्यकालीन विश्वमित्रत्व की भावना का स्थान जातीय भावना की जागृति लेने लगी और धार्मिक धर्मान्धता की जगह प्रदेश-विजय के लोभ ने ले ली। पुरोहित, सैनिक और वकील के पेशों में एक (कूटनीतिज्ञ) की और वृद्धि हुई। नेपोलियन युद्धों ने बलात् भर्ती की प्रथा चलाकर वेस्टफेलिया की सधि द्वारा आरम्भ किये गये कार्य को पूर्ण कर दिया।

वेनिस का दृष्टिकोण और पेपसी कोर्टेरिनी की रिपोर्ट

वेस्टफेलिया वार्ता में पेपसी, वेनिस का गणतंत्र और डेन्मार्क का राजा मध्यस्थ थे। पहले दो का प्रतिनिधित्व क्रमशः फेवियो चिगी (बाद में पोप अलेग्जेंडर सप्तम) और अविस्स कोन्टेरिनी ने मुन्स्टर में किया। ओस्नाब्रुक में डेनिश दूत ने जल्दी ही किसी प्रकार का सक्रिय भाग लेना बन्द कर दिया। कोर्टेरिनी की वार्ता सम्बन्धी अतिपूर्ण रिपोर्ट[1] तत्कालीन विवरण की सर्वोत्तम रिपोर्ट है। चिगी के पत्र व्यवहार की, जो अभी वेटिकन में रखा गया है, अभी जांच नहीं हुई है।[2] पेपसी ने अपनी घोषणा जेलोडोमिनी(नवम्बर 1648)में समस्त संधि को अस्वीकार कर दिया क्योंकि वार्ता करने वालों ने कुजस रिजियो का सिद्धान्त अपनाया था और उन प्रदेशों को जो पोप के विचार में उनके नहीं थे, आपस में बांट दिया था। इस विरोध पर ध्यान नहीं दिया गया।[3]

---

1 यह **फोन्टेस रेरम ओस्ट्रीकेरम** (सम्पादित फीडलर), द्वितीय श्रृंखला माला 26, 293 एफ एफ में उपलब्ध है।

2 इसके विवरण के लिए देखिये, केम्पी लिखित, ल. **एपिस्टोलेरियो इनेडिटो दी फेब्रिको चिगी,** 1,393 थर्ड सीरीज।

3 बुगनडियन ग्रुप की ओर से स्पेन ने भी विरोध किया। स्पेन के विरुद्ध हम

प्राधान्य पर वाद-विवाद

दो स्थानों पर संधिवार्ता करने का यह कारण था कि स्वीडन वाले सम्राट के प्रभुत्व के सम्मुख झुकने को तैयार थे। किन्तु फ्रांस को प्रमुखता देने से इन्कार करते थे। इसलिए साम्राज्य और फ्रांस की वार्ता मुन्स्टर में हुई और सम्राट तथा स्वीडन की ओस्नाब्रुक में।[1] इससे सधि वार्ता में काफी विलम्ब हो गया और प्रतिनिधियों की संख्या को फिर दुगना करने की आवश्यकता हुई। इसके साथ ही प्रत्येक पूर्णाधिकारी के साथ दो वकील (अधिवक्ता) होने से वार्ताकारियों का कानूनी पक्ष बहुत दृढ़ था।[2] ये वकील इस बात का ध्यान रखते थे कि शिष्टाचार-सम्बन्धी विषयों और कानूनी यथार्थताओं को टाला न जाये और इस तरह कई मास बिल्कुल मूर्खतापूर्ण बकवास में ही नष्ट कर दिये गये। अन्तिम परिणाम ऐसी अस्पष्टताओं और असंगतियों से भरा था जो बाद में युद्ध में और आक्रमण करने का बहाना बनी। यह भी महत्वपूर्ण बात है कि सधियाँ लेटिन भाषा में लिखी गई, क्योंकि सत्रहवीं शताब्दी की लेटिन ढीली ढाली अन्तर्राष्ट्रीय अनर्गल भाषा की अपेक्षा अधिक अच्छी थी और वाक्जाल की अस्पष्टता में बिना हेरफेर किये रियायतों को असंगत आरक्षणों और विभेदों द्वारा गुप्त रखने के लिए बहुत उपयुक्त थी। और उस वाक्–प्रपंच का अर्थ स्वयं वार्ताकारी भी समझने का साहस नहीं करते थे।

फ्रांसीसी एवं स्पेनिश राजदूत

फ्रांस इस बात का इच्छुक था कि उसके मित्र, संयुक्त प्रदेश, अपने प्रतिनिधि मुंस्टर भेजे, किन्तु उनके आने में अति विलम्ब हुआ, क्योंकि वे गारन्टी न ले सके कि उन्हें वही दर्जा दिया जावेगा जो वेनिस गणतंत्र के प्रतिनिधियों का होगा। सन् 1644 का अधिकांश भाग फ्रांस के दो ऐजेन्टों सर्बियन और डी एवाक्स[3] के पारस्परिक झगड़ों में व्यतीत हो गया और जब 1645 में फ्रांसीसी राजदूत, लांग्यूविले का ड्यूक, और स्पेन का राजदूत, पेनांरडा का ड्यूक, पहुंच गये तो कोई एक दूसरे के पास इसलिए नहीं जाता था कि कहीं उसके देश के सम्मान को

भावनाओं को उत्तेजित करने के लिए फ्रांस ने इस विरोध पत्र का उपयोग किया। देखिये एडम एडामी लिखित, **रिलेशो हिस्तोरिका दी पेसीफिकेशन ओसन्ब्रुर्ग-मोनेस्टरेन्सी** (सम्पादित मेरीन, 1737, 31, 10)।

1 जोन वेस दी सेंट प्रेस्ट लिखित, **हिस्ट्री देस ट्रेप्स दी पेक्स डू** 17 एमसिकिल 2, परिच्छेद।

2 कोटेरिनी, **फोटेंस रेरिम आस्ट्रिया केरूम**, 26,317।

3 कोंटेरेनी, **फोटेंस रेरिम आस्ट्रिया केरुम**, 299।

खतरा न हो और प्रत्येक ऐसे स्थान पर जाने से टाल करता था जहां दूसरा हो क्योंकि फिर वहां प्राथमिकता की सबसे महत्वपूर्ण समस्या खड़ी हो जावेगी। उनमें संदेशवाहन का कार्य मध्यस्थ ही द्वारा किया गया। मेजरिन ने लोंग्यूविले के इस दृष्टिकोण को निरुत्साहित नहीं किया क्योंकि वह फ्रांस के इतने शक्तिशाली सरदार को संधि की शर्तें स्थिर करने का सम्मान नहीं देना चाहता था, और जब फ्रांसीसी सरकार ने यह समझ लिया कि संधि आवश्यक है तो उसने सबसे पहले फ्रांस के राजदूत को वापिस बुला लिया।[1]

संधि-चर्चा में देरी होने के कारण

तत्पश्चात् पूर्णाधिकारियों द्वारा अधिकारियों के आदान-प्रदान के समय पुनः कठिनाइयां उपस्थित हुई। फ्रांस ने स्पेन की, पुर्तगाल का राजा और केटेलोनिया का राजकुमार की उपाधियों का विरोध किया, स्पेन ने इसके बदले में संधि में अग्रसर होने में तब तक अपनी असमर्थता प्रकट की जब तक फ्रांस के शासक को सरकारी तौर पर नेवेरियां का राजा कहा जावेगा। सार्वजनिक अधिकारों के प्रति आश्चर्यजनक उत्साह प्रदर्शित करते हुए स्पेन और सम्राट के एजेण्टों ने दावा किया कि फ्रांसीसी आयोग अवैध है क्योंकि उन्होंने पेरिस की संसद के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा था[2] और उनकी यह दलील थी कि रीजेंसी की अवधि में ससद द्वारा अनुमोदन आवश्यक था। जब इस प्रकार के कपटपूर्ण दोषारोपण समाप्त[3] हुए तो राष्ट्रीय शत्रुताओं ने संधि चर्चा में और अधिक विलम्ब करने में योग दिया। यह ध्यान देने योग्य बात है कि फ्रांस और स्वीडन की ईर्ष्या इतनी उग्र थी कि उनके लिए सधि चर्चा के हेतु अलग-अलग नगरो की आवश्यकता पड़ी, किन्तु जब बातें आरम्भ हुई तो मुंस्टर में फ्रांस और साम्राज्य का आपसी वैमनस्य इतना उग्र निकला कि उसमें मुन्स्टर के एक स्वीडन-निवासी द्वारा संधिवार्ता का कार्य करवाया गया, इसी प्रकार ओस्नाब्रुक में में एक फ्रांसीसी ने साम्राज्य और स्वीडन के बीच में वार्ता करवाने का काय किया। यह सब बातें हास्यजनक नाटक के लिए सामग्री बन जातीं, यदि अभी तक युद्ध न चलता होता और संभवतः युद्ध उस समय तक रुक भी नहीं सकता था जब तक ये व्यक्तिगत भेद ठीक न किये जाते। टोर्स्टेंसन द्वारा 1645 की ग्रीष्म में डेनिश प्रान्तों पर धावे में विलम्ब करने का अधिक गम्भीर कारण था, क्योंकि

---

1 वही, 314।

2 वही, 300।

3 इन बातों में नौ महीने समाप्त हो गये (कोंटेरेनी, 301)

यद्यपि फ्रांस ने स्वीडन और डेन्मार्क को ब्रोपमेब्रो की संधि द्वारा मनाने का प्रबन्ध कर लिया था किन्तु सम्राट ने एक सेना डेन्मार्क की सहायता के लिए नहीं अपितु स्वीडन की सेनाओं को यथास्थान पर रोकने के लिए भेज दी। साम्राज्यवादियों की संधि की इच्छा स्वीडन सेनाओं की स्थिति के अनुसार बदलती रही। जब वे हैप्स-बर्ग भूमि के बाहर होती थीं तो वियना के एजेण्ट वाक्छल और सूक्ष्मताओं का भण्डार बन जाते थे और ज्योंही स्वीडिश टुकडी बोहेमिया, साइलेशिया या आस्ट्रिया में घुसी कि वही एजेन्ट केवल औपचारिक बातों के कारण अनेकों बार विलम्ब होने का ऊंचे स्वर में विरोध करने लगते। यह स्वाभाविक था कि फ्रांस भी अपनी सेनाओं की सफलताओं से प्रभावित होता, इसलिए कांदे और ट्यूरेन की विजयों के कारण उसके एजेन्ट जल्दी करने के कम इच्छुक हो गये। विशेषतया 1648 तक जबकि मेजारिन यह अनुभव करने लग गया कि जब देश के अन्दर मंत्रिमण्डल की स्थिति संदिग्ध हो तो विदेशों में युद्ध की सफलता से कभी कभी उसे सबसे उत्तम अनुमोदन प्राप्त होता है। इसमें यह बात और थी कि तमाम जर्मन राजकुमारों के व्यक्तिगत प्रतिनिधियों को सम्मिलित करने की फ्रांसीसी चाल सफल हो गई और इस प्रकार 1645 में कांग्रेस साम्राज्य की पूरी डायट बन गई जिसमें इलेक्टरों, राजकुमारों और साम्राज्यीय शहरों ने मुन्स्टर या ओस्नाब्रुक में अपने-अपने धर्मानुसार कैथोलिक या प्रोटैस्टेन्ट प्रतिनिधि भेजे। इससे सम्राट फ्रांस से और अधिक चिढ़ गया। इसके अतिरिक्त कैथोलिकों ने ओस्नाब्रुक में प्रोटैस्टेन्ट शक्ति के बढने का यह दावा करके विरोध किया कि स्वीडन फिर इसे धार्मिक युद्ध बनाना चाहता था। स्पेन द्वारा हालैण्ड से जनवरी 1648 में पृथक सधि करना मुख्यतया फ्रांस का अनादर करने की भावना से संबंधित था, फ्रांस ने इसका प्रतिशोध स्पेन को संधिवार्ता से बिल्कुल अलग रख कर लिया। तीसवर्षीय युद्ध की समस्या यह नहीं थी कि युद्ध आरम्भ किस प्रकार हुआ बल्कि यह थी कि युद्ध समाप्त कैसे हुआ।

संधि वार्ता पर बेवेरिया का प्रभाव

कांटेरिनी ने बड़े ही मनोरंजक ढंग से उल्लेख किया है कि युद्ध में भाग लेने वाले लगभग प्रत्येक व्यक्ति ने जर्मन 'स्वतंत्रय' के लिए हथियार उठाये और शान्ति सम्मेलन में वे सभी प्रादेशिक मुआवजे की मांग कर रहे थे। सितम्बर 1646 से पूर्व मुख्य आकार पर समझौता न हो सका। पहले फ्रांस इस आधार पर अपना ब्रीसेच का दावा छोड़ने के लिए तैयार था कि उसकी प्राकृतिक सीमा राइन थी, किन्तु बेवेरिया के ड्यूक ने जो अब फिर फ्रांस से मिल गया था और जिसका सम्राट पर प्रभाव था, फ्रांसीसी दूतों को अपनी मांग पर डटे रहने के लिए आग्रह किया

क्योंकि वह जानता था कि सम्राट को झुकना पड़ेगा।[1] फलतः ऐसा प्रबन्ध किया गया कि फिलिप्सबर्ग और बोसेच दोनों स्थानों में फ्रांस की सेनाएं रहे। स्पेन की कूटनीति की द्विगणित शक्ति भी फ्रांस और सम्राट के बीच होने वाले इस समझौते को न तुड़वा सकी। ओस्नाब्रूक में अभी वार्ता धीरे-धीरे चलती गई, क्योंकि वहां बड़े ओक्सर्स्टीन को केवल युद्ध द्वारा ही यथास्थान रखा गया था। युवती रानी क्रिस्टीना ओक्सर्स्टीन से उग्र ईर्ष्या रखती थी और उसके युद्ध-मंत्रित्व का अंत करने के लिए उसने स्वीडन के एजेन्टों से जल्दी से जल्दी सन्धि करने का अनुरोध किया आखिर जनवरी 1647 तक स्वीडन के प्रादेशिक 'संतोष' पर समझौता हो गया।[2]

स्वीडिश मांगें

दो बातें अभी संधि में बाधक थी। स्वीडन प्रोटेस्टैन्टवाद के दावों पर जोर दे रहा था और फ्रांस का आग्रह था कि चूंकि फ्रांस और सम्राट मे संधि की शर्तें तय हो चुकी थीं, इसलिए सम्राट् स्पेन को सहायता नहीं दे सकता था। सम्राट् ने अपने वंशानुगत प्रदेशों में प्रोटैस्टैन्टवाद के प्रति सहिष्णुता दिखाने से दृढ़तापूर्वक इन्कार कर दिया और उसने फ्रांस को यह उत्तर दिया कि यदि वह सम्राट् के रूप में स्पेन की सहायता नहीं करता तो हंगरी के राजा के रूप में कर सकता था। यह गतिरोध होने पर मध्यस्थों ने, पूर्ण गम्भीरता से, फ्रांस और सम्राट् द्वारा तुर्कों के विरूद्ध युद्ध करने का प्रस्ताव रखा, किन्तु हैप्सबर्ग अपने पड़ौसी ओटोमनों को बहुत अच्छी तरह जानते थे और उनके विरूद्ध किसी अन्य से घनिष्ठता करने के विरुद्ध थे। इस प्रकार अन्तिम क्षण में युद्ध फिर धार्मिक[4] रूप ले लेता, क्योंकि बोहेमिया, मोरेविया, साइलेशिया और आस्ट्रिया के प्रोटेस्टेंटों

---

1 फ्रांस और बेवेरिया के मध्य समझौता होने का मुख्य कारण स्वीडन और सेक्सोनी के मध्य गठबधन होना था। इसके अतिरिक्त इसका एक और कारण यह भी था, कि बेवेरिया का ड्यूक अपने प्रदेश से स्वीडिश सेनाओं को बाहर निकालना चाहता था। बोगेंट लिखता है, (**हिस्टरी देस गुरेस एट देस नेगोशियेसन्स**) कि आस्ट्रियन प्रोटैस्टैन्ट तथा स्वीडन के मध्य मित्रता स्थापित होने के भय तथा बेवेरियन डेपुटीज के इस प्रस्ताव ने कि सम्राट के नाम पर जर्मन राज्य हस्ताक्षर करें, ने सम्राट को हस्ताक्षर करने के लिए वाध्य कर दिया।

2 **कोंटेरेनी**, 325।

3 **कोंटेरेनी**, 329।

4 चिगी ने कैथोलिक शक्तियों को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया, कोंटेरेनी तुर्कों के विरुद्ध वेनिस की सहायता करना चाहता था। देखिये ओडरने लिखित, **दी पोलिनिक स्वीडन्स**, 146।

ने अब यह देखा कि उनके प्रति धार्मिक सहिष्णुता का कोई स्थान न होगा और इस प्रकार उनकी सब कुर्बानियां निरर्थक सिद्ध हो जायेगी। तब स्वीडन ने इस बात को लेकर विवाद लम्बा कर दिया कि आठवें निर्वाचक मण्डल के साथ जो अभी इलेक्टर पैलेटाइन[1] के परिवार के लिए संरक्षित है एक नवां मण्डल और बनाया जाय। इसके पक्ष में यह सिद्धान्त रखा गया कि एक विवेचनात्मक सभा में सम की उपेक्षा विषम संख्या अच्छी होती है। किन्तु वास्तव में स्वीडन अपने पक्ष में निर्वाचक मण्डल चाहता था।

स्पेन व संयुक्त प्रदेशों में मुन्स्टर की पृथक संधि (जनवरी 7, 1648)

इसी बीच में वार्ताकारी एक नितान्त अप्रत्याशित घटना घटने से आश्चर्यचकित रह गये—वह थी उनमें से दो सदस्यों द्वारा अचानक संधि करना। जब स्पेन को यह विश्वास हो गया कि फ्रांस से संधि करना असम्भव है तो उसने 1643[2] में निर्णीत योजना को कार्य रूप में परिणित करने का संकल्प कर लिया। वह यह थी कि किसी भी कीमत पर संयुक्त प्रदेशों को फ्रांस से तोड़ लिया जाये। हालैण्ड का वाणिज्यवाला प्रान्त फ्रांस से सशंकित और शान्ति का इच्छुक था, सामुद्रिक प्रांत जीलैण्ड फ्रांस से मैत्री और स्पेन से युद्ध चालू रखने के पक्ष में था।[3] संयुक्त प्रदेशों को दो विचारधाराओं में विभक्त करने के आन्दोलन के पीछे स्वार्थी अभिप्रायों को समझना कठिन न था, और कुछ समय के लिए हेग में इन दो विचारधाराओं के व्याख्याताओं में भयंकर कलह होती रही। हालैण्ड में फ्रांस विरोधी दल को मदाम द शेब्रूज जैसी मान्य साथी मिल गई जिसने बाद में दूसरे फ्रोंडे में प्रमुख भाग लिया, जबकि स्पेन ने डचों में विस्तृत प्रचार करने के लिए धन व्यय करने में कोई कसर न रखी। डच एजेन्टों के साथ मुंस्टर में उनकी पत्नियां भी आई थी और स्पेन के राजदूत ने जिसे इस कार्य के लिए धन दिया गया था, इन स्त्रियों के प्रति अधिक से अधिक अनुकूल बनना अपना व्यापार बना लिया। डचों की प्रायः प्रत्येक मांग स्वीकार करके[4] स्पेन ने उत्तर प्रदेशों के साथ मुंस्टर में जनवरी 1648 में संधि पर हस्ताक्षर कर दिए और प्रोटेस्टेन्ट

---

1 **कोंटरेनी**, 329।

2 इन्स्ट्रक्शन दादापोर फेलपी चतुर्थ अल सेक्रेटोरियो गलिरेटा पेरा ला नेगो-सिएशन द ला पाज कान होलेन्ड्स, मार्च 1643, इन कोलेसन द डोक्यूमेन्ट्स इनेडिटस पेरा ला हिस्तरी द एसपेना, लिक्स, 207 एफ एफ गेड्स लिखित **एडमिन्सट्रेशन आफ जान डी विट**, I,74, भी देखें।

3 देखिये अध्याय 9।

4 **कोंटेरेनी**, 341।

नीदरलैंड्स की पूर्ण स्वतन्त्रता विधिवत् लेखबद्ध हो गई। इस प्रकार लगभग एक शताब्दी तक रुक रुक कर चलने वाले संघर्ष का अन्त हुआ और इस काल में यह उपद्रवी प्रान्त वैभवशाली और सशक्त राष्ट्र बन गया। इस घटना का लक्षिणिक महत्व वर्तमान युग के महानतम कलाकार ने कपड़े पर चित्रित कर स्मारक के रूप में बताया है।

अल्सेस पर वाद-विवाद

इस अलग संधि का बदला लेने के लिए फ्रांस ने बवेरिया की सहायता से सम्राट् को स्पेन, लारेन, और बरगण्डी मण्डल (जिनमें स्पेन के अधिकृत निचले प्रदेश थे) को संधि वार्ता के क्षेत्र से बहिष्कृत करने की अनुमति देने के लिए मनाया। ये देश दूसरे युद्ध में उलझ जायेंगे, इस बीच में चालू युद्ध का उनके भाग्य पर किसी प्रकार का प्रभाव पड़ने की सम्भावना न थी। इसमें अल्सेस का प्रश्न आ पड़ता था। विवाद इस बात पर हुआ कि क्या अल्सेस पर फ्रांस की पूर्ण राजसत्ता हो या उसे साम्राज्यीय जागीर समझा जाये। पहली विधि फ्रांस के सम्मान के अधिक अनुकूल थी, दूसरी द्वारा फ्रांस को डायट में एक स्थान मिल जाता जिससे उसे हैप्सबर्गों के विरूद्ध लिवर का काम करने का अवसर मिलता रहता। फ्रांस की झिझक के कारण संधि–वार्ता लम्बी खिंचती गई, किन्तु अचानक फ्रांडे का पहला युद्ध आरम्भ हो जाने के कारण मेजारिन को तुरन्त[2] संधि करने का फैसला करना पड़ा और सरवियनको जो इस समय लोंगविले के वापिस बुलाये जाने पर कार्य कर रहा था, संधि करने की निश्चित आज्ञा दी गई। इस प्रकार अल्सेस के प्रश्न का—जो संधिवार्ता करने वालों द्वारा विवादित प्रश्नों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण था—जल्दी तथा झुंझलाहट में निर्णय किया गया। मुन्स्टर और ओस्नाब्रुक की संधियों पर जो मिल कर वेस्टफेलिया की संधि के नाम से पुकारी गई 24 अक्टूबर 1640 को हस्ताक्षर हुए और तीसवर्षीय युद्ध का अन्त हुआ।

मुन्स्टर और ओस्नाब्रुक की सन्धियां (अक्टूबर 1648)

साम्राज्य

संक्षिप्त रूप में संधि की शर्तें निम्नप्रकार थीं [4]:—बोहेमिया का राजमुकुट सम्राट् के वश में रहा। उसे ऊपरी आस्ट्रिया जिसे उसने बवेरिया को बन्धक के

---

1 रेमब्रान्ट, **डी एन्ड्रेचट** (यूनिटी) इन बीचमेन म्यूजियम, रोटेरडम।

2 **कोंटेरेनी**, 350।

3 ओबेच लिखित, **ला फ्रांस एत ला सेंट अम्पयर जर्मनी**, 20।

4 मुन्स्टर और ओस्नाबुक की संधियां गिलेनी कृत **डिप्लोमेटिक्स हेंड बुक खण्ड** 1, में उपलब्ध हैं।

रूप में दे रखा था, बिना मूल्य चुकाये पुनः प्राप्त हो गया और उसे अपनी वंशानुगत भूमियों में धार्मिक सहिष्णुता की स्वीकृति नहीं देनी पड़ी। समकालीनों की दृष्टि में अन्तिम विशेषाधिकार महत्वपूर्ण था जबकि दूसरे, दोनों का परिणाम साम्राज्य के आस्ट्रियन चरित्र को तीव्र बनाना था।

फ्रांस

बवेरिया के आदेश पर लड़ाई में भाग लेने वालो को जर्मनी में साम्राज्यीय जागीरों का अनुदान करके, सन्तुष्ट करना सम्भव हुआ। फ्रांस को मोयेन्विक, ब्रीसेच, पिनेरोलो के दुर्ग सहित, मेत्ज़, बरदून और टूल के तीन गिरजाघर मिले और फिलिप्सबर्ग में सेना रखने का अधिकार प्राप्त हुआ। ऊपरी और निचले अल्सेस का धनाढ्य प्रदेश उसकी पूर्ण राजसत्ता में आ गया[1] (सुप्रिमम डोमिनियम) तथा सुन्तगो और डेकापोल का 'प्रान्तीय राज्यपद का अधिकार' (प्रेफेक्त्यूरा प्रोविंशिऐलिस) अथवा उस राज्यपद के अधिकार पर आश्रित तमाम अधिकारों सहित अल्सेस के दस नगर, हेजेनौ, कोल्मार, स्लेटस्टैट, वीसन्बर्ग, लेंडो, ओबरन हीम, रोशीम, मुन्स्टर कैसर्स्वर्ग और ट्यूरिक हीम प्राप्त हुए। कुछ निश्चित मठों सहित इन दस नगरों और निचले अल्सेस के कुलीनवर्ग के पास वे विशेष अधिकार रहने दिये गये जिसका भोग वे सम्राट् से सम्बन्ध होने पर करते थे, किन्तु शर्त यह थी कि 'पूर्ण राजसत्ता' जो फ्रांस को दे दी गई थी उसमें किसी प्रकार की कमी न करे।[2] ये संधि की सबसे महत्वपूर्ण धारायें थीं और यह जानना कठिन नहीं कि इसका आलेख, जाने या अनजाने में, बहुत ही दोषपूर्ण था। पहले एक रियासत दी जाती है, तत्पश्चात् महत्वपूर्ण संरक्षण लगा दिये जाते हैं और अन्त में यह घोषित किया जाता है कि संरक्षण में ऐसी कोई बात नहीं होगी जो रियायत के क्षेत्र को कम करे। यह स्पष्ट था कि यदि एक दल संरक्षण पर दे सकता था तो दूसरा रियायत पर, केवल इतना अन्तर था कि संरक्षण का वर्णन केवल एक बार किया गया था और राजसत्ता की रियायत का दोबार। ऐसे स्वत्वाधिकार-पत्रों के पश्चात् अल्सेस का कब्जा फ्रांस के हाथों में चला गया। छलरहित वाक्यांश (इटा टैमेन) से वेस्टफेलिया के कूटनीतिज्ञों ने भारी युद्धों के लिए 17 वीं शताब्दी के सब हथियारों की अपेक्षा अधिक घातक मसाला तैयार कर दिया।

स्वीडन

स्वीडन को पश्चिम पोमरेनिया वरडेन और ब्रेमन के गिरने, स्टैटिन और विस्मार के नगर, वोलिन द्वीप, ओडर के मुहाने का प्रदेश और हर्जाना इस शर्त

1. मुन्स्टर की संधि, एल 24 तथा एल 25।
2. वही, एल 27, रुएस लिखित, अल्सेस, 1, 86 एफ एफ भी देखिए।

पर साम्राज्यीय जागीरों के रूप में किया गया कि वे अपनी सेनाओं को जर्मन प्रदेश से दूर अन्य भागों में से बाहर निकाल लें। इस प्रकार स्वीडन डायट में प्रतिनिधित्व का अधिकार पाकर और बाल्टिक सागर के दक्षिणी किनारे पर सुरक्षित पांव जमाकर एक महत्वपूर्ण जर्मन शक्ति बन गया।[1]

ब्रेन्डनबर्ग

ब्रेन्डनबर्ग को पूर्वी पोमरेनिया पर महत्वपूर्ण अधिकार तथा मिंडेन हाल्बस्टीड और कैमिन के और मेजबर्ग के विशपरिक के प्रधान के पद का उत्तराधिकार मिला। इलैक्टर के प्रदेशों को युद्ध में बहुत हानि उठानी पडी थी[2] किन्तु इसके बदले में वह कोई प्रादेशिक मांग नहीं रख सकता था। और उसने ये प्रदेश मुख्यतया फ्रांस के प्रभाव से प्राप्त किये जिसने शिशु होहेनजोलर्न राज्य के लिए उदार धर्म–माता का काम किया।

बवेरिया

बवेरिया को ऊपरी पैलेटिनेट मिला, उसका अपना इलैक्टोरल पद उसके पास रहा और पिछले पेलेटाइन के इलेक्टर के पुत्र चार्ल्स लुई के लिए, जिसे निचला पेलेटिनेट वापिस दे दिया गया था, आठवां इलेक्टोरेट स्थापित किया गया।

स्विट्जरलेण्ड

मिश्रित धाराओं में वे धारायें भी थीं जिनके अनुसार स्विट्जरलैण्ड को पूर्ण स्वतन्त्र घोषित किया गया और बरगंडी के मण्डल को (जिसमें स्पेन के निचले प्रदेश सम्मलित थे) तब तक साम्राज्य का भाग माना गया जब तक फ्रांस और स्पेन के पारस्परिक झगडे समाप्त न हो जायें।

लोरेन

लोरेन के प्रश्न का फैसला मध्यस्था निर्णय द्वारा हो अथवा फ्रांस और स्पेन की पारस्परिक सन्धि द्वारा निर्णीत किया जाये ? यह बात सर्व सम्मति से स्वीकृत हुई कि प्रत्येक साम्राज्यीय जर्मन राज्य विदेशियों से इस शर्त पर मैत्री करने के

---

1 वीडन का विचार था, कि उसने सैनिक दृष्टि से जो त्याग किये हैं उसे देखते हुए उसे अधिक पुरस्कार मिलना चाहिए। दूसरी ओर चिगी का विचार था कि उसने बातचीत के द्वारा 10 गुना अधिक प्राप्त कर लिया है, जो वह युद्ध के द्वारा प्राप्त करता (केम्पी **इन्नोसेन्जो** 10,57)।

2 इसके लिए देखिए, गिन्डले कृत, वेलेस्टीन 2, 12। गेब्यर लिखित **ब्रेन्डनबर्ग इन दी क्राइसिस देस जेहरस**, 1627 (हेंलेशी अव्हान डुलंगन, 33, अध्याय 4 व 5)।

लिए स्वतन्त्र हो कि वे मित्रताएं साम्राज्य के विरुद्ध सचालित न हों, किन्तु ऐसे प्रश्नों का निर्णय जिसका सम्बन्ध विधि निर्माण अथवा व्याख्या, युद्ध-घोषणा, कर लगाना, सैनिक कर, किलाबन्दी करना या किसी से सधि करने से हो, तब तक नही किया जायगा जब तक 'साम्राज्य' के तमाम राज्यो की स्वतन्त्र सभा अपनी अनुमति न दे। साम्राज्य की प्रशासनिक मशीन सम्बन्धी दोषों को दूर करने तथा ऐसी संस्था का जो सम्राट् के जीवन काल में रोमनों के राजा के निर्वाचन करने के प्रश्नों का निर्णय भविष्य में वार्तालाप द्वारा होगा। चिगस्कों की सधी की पुष्टि कर दी गई।

धर्म-सम्बन्धी धारायें

संधि द्वारा सहिष्णुता सम्बन्धी तत्कालीन सिद्धान्तों में कोई प्रगति नही हुई। 1624 को ऐसा सामान्य वर्ष चुना गया जिसके संदर्भ में दोनों धार्मिक दलों को अपने अधिकार में की हुई चर्च भूमियों को अधिकार में रखने या छोड़ देने का निश्चय करना होगा। यह मापदण्ड कैथोलिकों के पक्ष में था क्योंकि 1624 में जर्मनी में प्रोटेस्टेंट हित निम्नतम स्थिति मे थे। दूसरी ओर धर्मनिरपेक्ष विशपरिकों के प्रशासकों को डायट मे प्रतिनिधित्व दिया गया और संधि में उल्लिखित उनको दी गई रियायतों की संयुक्ति करने से इस धारा का प्रभाव मुख्य रूप से यह होता था कि उत्तरी जर्मनी में प्रोटेस्टेंटवाद और दक्षिणी जर्मनी में कैथोलिकवाद की पुष्टि कर दी गई। काल्विनवाद को उन्हीं शर्तों पर सरकारी धर्म स्वीकार किया गया जिन पर लूथरनवाद को किया गया था अर्थात् कुइुस रिजियों के सिद्धान्त पर और भिन्न धार्मिक मतावलम्बियों को अपने धधे समेटने और छोड़कर दूसरी जगह जाने के लिए पांच वर्ष की अवधि दी गई। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट से सम्बद्ध धार्मिक मामले पेश होने पर डायट को **जुस इयुंडी इन पोर्ट** का अधिकार था जिसके अनुसार यह स्वतः ही प्रत्येक धर्म का प्रतिनिधित्व करने वाले दो धार्मिक दलों में विभक्त हो जाती थी और चूंकि ऐसे मामले उसके सामने प्रायः आते रहते थे, इसलिए डायट के दो असंयुक्त भागों मे विभाजन ने इसे पहिले से भी अधिक असमर्थ कर दिया। किन्तु यद्यपि जर्मन राजकुमारों को निष्कासित करने की धमकी द्वारा अपने प्रदेशों में धार्मिक एकरूपता स्थापित करने का अधिकार दिया गया था किन्तु यह अधिकार सदैव प्रयोग में नहीं लाया जाता था। क्योंकि 1640 में जर्मन संख्या इतनी विरली हो गई थी कि राजकुमारों को कर देने वाली जनता के बढ़ाने की चिन्ता थी न कि उनको घटाने की। सहिष्णुता की भावना कूटनीतिज्ञों अथवा शासकों के प्रबोधन से नहीं बढ़ी बल्कि आर्थिक दबाव के कारण उत्पन्न हुई। ब्रैंडन-बर्ग और हालैण्ड भविष्य में यह सिद्ध करने वाले थे कि सहिष्णुता और सम्पन्नता सम्मिलित होती है।

साम्राज्य से जर्मनी का पृथक्करण

यह फ्रांस की विशेष कूटनीतिक विजय थी कि उसके अभिकर्ताओं ने इलेक्टरों, राजकुमारों, और साम्राज्यीय शहरों को कांग्रेस में अपने पूर्णाधिकारी भेजने के लिए मना लिया। सधि द्वारा जर्मन राष्ट्रों की प्रादेशिक स्वतंत्रता पुष्ट हो गई, और इस प्रकार वह प्रक्रिया पूरी हो गई जो देर से स्पष्ट होती जा रही थी। व्यावहारिक रूप से इसका यह परिणाम था कि सम्राट को जर्मन राजनीति पर अपने नियंत्रण को त्यागना पड़ा क्योंकि इन दुर्बल बधनों को जो सम्राट और जर्मन राज्यों में शेष रह गये थे, सुगमता से तोड़ा जा सकता था। चूंकि जर्मनी में लगभग साढे तीन सौ राजनैतिक इकाइयां थी इसलिए कूटनीतिक षड्यंत्रों में अत्यन्त वृद्धि होने की सम्भावनायें और अधिक हो गई और चूंकि अब राज्य अपना एजेन्ट विदेशों में रख सकता था तथा दूसरे देशों के प्रतिनिधियों के वहां रहने की आशा कर सकता था, इसलिए यह स्पष्ट है कि कूटनीतिक कार्यकर्ताओं की संख्या में बहुत वृद्धि हुई।

अन्त में यह स्मरण रखना चाहिये कि यह संधि सार्वजनिक विधि का एक महान् संलेख समझी जाने लगी जिसने यूरोप की राज्य पद्धति का स्तर स्थापित किया और हर विवाद में अधिकार पूर्ण पथ प्रदर्शन किया जो उस समता को उलटने का भय उत्पन्न करता था जिसको इस संधि द्वारा स्थापित किया गया समझा जाता था।[1] युट्रेक्ट जैसे महत्वपूर्ण समझौते को भी वैस्टफेलिया शान्ति का व्यवस्थापन मात्र माना गया, और समस्त प्राचीन राज्य में इस सधि को मौलिक और व्यापक समझा जाता था। इस संधि की धाराओं को मानने के बहाने फ्रांस ने जर्मनी[2] में अपने षडयंत्रों को न्यायसगत सिद्ध करने की चेष्टा की और उसने फ्रांसीसी विप्लव आरम्भ होने तक वेस्टफेलिया की संधि का बहिष्कार करके उसे कोतुहलदायक पुरातन वस्तुओं के दफ्तर में टिकने नहीं दिया।

अल्सेस का भाग्य-परिवर्तन

किसी भी पेशे को सार्थक (के योग्य) होने के लिए कभी-कभी इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि कुछ कार्य भावी संतति के लिए छोड़ दिया जाये, सर्व-ज्ञान और अभ्रान्ति सर्वाधिक निष्फल गुण है। इस दृष्टि से मुन्स्टर और ओसनाब्रुक के कूटनीतिज्ञों में कमी न थी। जब उन्होंने ऊपरी और निचले अल्सेस की सम्पन्नता फ्रांस को दी तो यथार्थ में उनका क्या तात्पर्य था ? फ्रांसीसी लेखकों ने

---

1 1791 में बर्क ने अपनी पुस्तक **थोट्स ऑन फ्रेंच अफेयर्स** में शिकायत की कि वेस्टफेलिया की संधि को फ्रांस एक प्राचीन गप्प मानता था।

2 देखें.अध्याय 5 व 6।

इस शब्द का अर्थ प्रदेश लगाया है और जर्मन लेखक इसका अर्थ कभी भी स्पष्टतया परिभाषित न कर सके, वे इसे केवल ऐसे अधिकार बताते हैं जो सत्रहवीं शताब्दी[1] में अब तक उपाधि (पदों) से संलग्न थे। निःसदेह 1648 में फ्रांस का अनुमान यही था कि उसे प्रदेश मिल गया है क्योंकि उनमें इस बात पर विवाद हुआ कि इसे प्रभुसत्ता के रूप में लिया जाये या जागीर के रूप में।[2] यह रोचक बात है कि एक फ्रांसीसी कूटनीतिज्ञ स्यात दे एवाक्स[3] पूर्ण प्रभुसत्ता लेने के विरूद्ध था, क्योंकि उसकी धारणा थी कि इस प्रकार 'अल्सेस युद्धों का लगातार कारण' बन जायेगा। इसके पूर्व कि फ्रांस यह अनुभव करे, इसका पूरा महत्व समझे बिना इस प्रश्न पर फैसला कर लिया गया तथा सधि की पुष्टी कर दी गई,[4] क्योंकि कुछ वर्षों में ही यह सुझाव दिया गया कि जिस प्रकार स्वीडन ने पोमरेनिया को जागीर के रूप में अंगीकार किया, उसी प्रकार अल्सेस को जागीर के रूप में स्वीकार करना अधिक अच्छी नीति होती क्योकि इस प्रकार फ्रांस को डायट में एक स्थान मिल जाता। फ्रांस की जर्मन सम्बन्धी (1648 से आगे के बीस वर्षो की) नीति इसी अनुमान के आधार पर समझाई जा सकती है कि अल्सेस के सम्बन्ध में एक गलती हो गई और यदि फ्रांस जर्मनी में अपना संरक्षण बनाये रखना चाहता तो इसका कुछ उपाय ढूंढना पड़ेगा। साम्राज्यवादियों के लिए 'सम्पन्नता' दे देना कोई बड़ा त्याग न था क्योंकि ऊपरी अल्सेस में यह एक मिली-जुली उपाधि थी जो हैप्सबर्गो को प्राप्त विभिन्न प्रकार के अधिकार निर्दिष्ट करती थी, जबकि निचले अल्सेस में यह व्यर्थ थी क्योंकि उसका अधिपत्य पहले से स्ट्रास्ब्रुग के विशप के पास था। इस प्रकार प्रादेशिक कब्जे और वैध अधिकारों में पूर्ण संभ्रांति थी।[5] वह व्यक्ति जिसे ह्य गुएना के नगर में फांसी का दण्ड मिला हो यह नहीं जानता था कि उसे सम्राट की ओर से फांसी पर चढ़ाया जाता था अथवा फ्रांस के राजा

---

1 रेउस कृत अल्सेस, I. 166 एफ एफ देखें।

2 इस सम्बन्ध में वाद-विवाद के लिए देखिये, **नेगोसिएशन्स सीकरेट्स दे मुन्स्टर एत द ओस्नाबर्क**, 3, 244–5।

3 वास्ट कृत **लेस ग्रेन्डस ट्रीटीज** में उदघृत।

4 ओरबेच, **पूर्व उद्धृत**, 25 एफ. एफ, यहां यह उल्लेखनीय है कि मेजारिन के अनुसार, अल्सेस को साम्राज्य की जागीर के रूप में रखना अधिक श्रेष्ठ था। (**अफेयर्स एटरजर्स**, अलमेग्ने, 73, एफ 278)।

5 यद्यपि अल्सेस फ्रांस का अंग बन गया था फिर भी वह डायट में ही अपने प्रतिनिधि भेजता था।

की ओर से [1], ओर कुछ समय तक फ्रांसीसी अधिकारों सम्बन्धी यह वैधता बहुत हद तक बनी रही और बहुत से भूस्वामियों और नगरों में इस परिवर्तन के प्रति तीव्र क्षोभ रहा जिससे उनकी वह व्यावहारिक स्वतंत्रता जिसका हैप्सबर्गो के आधिपत्य में वे उपभोग करते थे समाप्त हो गई और उसके स्थान पर एक महान् राजतंत्र का नियमित शासन स्थापित हो गया। अल्सेस अपने भाग्य में इस महत्व-पूर्ण परिवर्तन से इस कारण घबरा उठा था क्योंकि वहां स्वतंत्रता की प्राचीन तथा प्रबल परम्परायें प्रचलित थीं। किन्तु फ्रांस ने वहां की कृषि को पुनर्जीवित करके, प्रेम और जादूगरी का दमन करके, विद्यमान संस्थाओं को आदर देकर और अपनी मित्रता प्रकट करने में दीर्घसूत्री और अपने स्वाभिमान के लिए इर्ष्यालु लोगों की स्वामिभक्ति पर विजय प्राप्त करके उस उजड़े प्रदेश को सुन्दर और संतुष्ट प्रान्त में परिवर्तित कर दिया। अल्सेस पर 1648 में किया गया कब्जा यद्यपि अनुचित था, किन्तु फ्रांस ने कम से कम ऐसा कभी नहीं समझा कि उसे कुचल दिया जाये और तंग किया जाये, फ्रांस ने उसे अपनी महान् सभ्यता में साझीदार बनाकर अपनी ओर मिलाया।

---

1 अल्सेस कस्बों का दावा है, कि सम्राट अपने अधिकार त्याग चुका था। देखिए, रुएस कृत **अल्सेस,** 1,170 तथा मोसमेन लिखित **ला फ्रांस एन अल्सेस अप्रेस ला पेक्स द वेस्टफिले** । जर्मन दृष्टिकोण के लिए देखिये कार्ल जेकब कृत, **दि एवर बुंग देस अल्सेस डर्च फ्रेन्करिच इन वेस्टफेलिशियन फ्रीडन** ।

अध्याय 5

रिशेल्यू और मेज़ारिन (1610-1660)

इस अर्ध शताब्दी में, जिसका इस अध्याय में संक्षिप्त वर्णन किया गया है, फ्रांस को दो अवयस्क तथा एक चरित्रहीन राजा के शासन का अनुभव करना पड़ा। हेनरी चतुर्थ के मुकुट को लुई चौदहवें के लिए सुरक्षित रखने का श्रेय उन दो बाहरी राजनीतिज्ञों की चतुराई और सूझ को है जिनके नाम से यह अध्याय आरम्भ किया गया है। यदि ये सामान्य व्यक्ति होते तो इनकी जीवन-लीला सम्भवतः कत्ल द्वारा जल्दी ही समाप्त हो जाती। दोनों ने मध्यकालीन अधि-चिह्न की सुरक्षा में रहकर, आधुनिक नीति का अनुसरण किया।

मेरी द मेडिसी का शासन

हेनरी चतुर्थ की मृत्यु दसवर्षीय बच्ची को राज्य की उत्तराधिकारिणी छोड़कर हुई थी। मेरी द मेडिसी ने अपने मित्रों के आग्रह पर शासक का पद धारण किया। उसके चंचल और अदूरदर्शी स्वभाव का अनुचित लाभ एक गुट ने उठाया जिसका नेतृत्व पोप का पादरी, स्पेन का राजदूत, फ्रांसीसी जेसुइटों का सुपीरियर और फ्लोरेंटीन का कोंसिनी नामक साहसी व्यक्ति कर रहे थे। कोंसिनी मेरी की धाय बहन गोलिबा से विवाह करके रानी मा का स्नेहपात्र बन गया। उसकी मुख्य विशेषतायें वाह्य सौन्दर्य और कृत्रिम शौर्य का प्रदर्शन थी जो कभी कभी नारियों को मुग्ध कर लेती हैं। इस गुट का उद्देश्य केवल हेनरी पंचम के उद्देश्य को उलटना था। सली ने जो कोष फ्रांस को आक्रमणों से सुरक्षित रखने के लिए एकत्र किया था, वह अब लालची, चापलूसों, षड़यन्त्रकारियों और धोखेबाजों के काम में आने लगा जिनका जमघट लूव्र के बरामदों में लगा रहता था। यह सब विकट अतीत की स्थिति के सर्वथा प्रतिकूल था। छोटे लुई का स्पेन के फिलिप तृतीय की पुत्री ऐन आव आस्ट्रिया से विवाह करके, और हेनरी चतुर्थ की पुत्री ऐलिजाबेथ का स्पेन राज्य के उत्तराधिकारी से ब्याह कर, सन् 1612 में, उस अतीत के साथ रहा सहा सम्बन्ध खो जाता रहा।

कोंदे और स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाने का प्रस्ताव

पुरातन व्यवस्था के पुनरावर्तन का पहला परिणाम यह निकला कि बहुत से फ्रांसीसी कुलीनों ने पुनः अपना पुराना धोखाधड़ी का व्यापार आरम्भ कर

दिया। लेदीग्विए[1] और मेयेन[2] ने बोइलो[3] के नेतृत्व में, रीजेंसी के गुट को उनका भण्डाफोर करने की धमकी दी। उन्होंने घोषणा की कि स्टेट्स जनरल को बुलाया जायगा, सरकार की अव्यवस्था प्रकट कर दी जायगी और राष्ट्रीय धन का दुरुपयोग सर्व विदित कर दिया जायेगा। कोसिनी, जिसे अब मरेचलदान्क बना दिया गया था, समझौते की बातचीत में विश्वास रखता था और उसने सेंट मेनेहोल्ड की सधि की शर्तों द्वारा (मई 1614) फ्रांसीसी कुलीनों को लूट में साझीदार बनाकर कुछ समय के लिए शान्त कर दिया। इससे हर एक व्यक्ति संतुष्ट हो गया, क्योंकि जब तक शाही कोष में धन था तब तक टैक्स बढ़ाने की कोई आवश्यकता न थी। किन्तु एक कुलीन जो राजकीय वश के निकटस्थ था, ऐसा भी था, जो ड्यूक आव गाइज के कार्यों को पुनर्जीवित करने के लिए और यदि सम्भव हो सके तो ब्लाय[4] की स्टेट्स जनरल को पूर्व रूप में लाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ था। वह बूर्बो का हेनरी, कोंदू का राजकुमार, राजा का जर्मन चचेरा भाई, नामण्डी का गवर्नर और राज्य का सम्भावित उत्तराधिकारी था। उसने कोदे के व्यक्तिगत शत्रुओं, जैसे वेन्डोम (हेनरी चतुर्थ का वास्तविक पुत्र), कोंटी का राजकुमार, लोंगुवेविल और नेवर के ड्यक को अपने साथ मिला कर अपनी जाति के पृथकवाद और परमाधिकारों की स्थापना का लक्ष्य रखा। कोंदे और उसके साथियों की इन मांगों के फलस्वरूप स्टेट्स जनरल की सभा को सन् 1614 में बुलाना पड़ा।

1614 की स्टेट्स जनरल

इस अधिवेशन का कुछ ऐतिहासिक महत्व है, क्योंकि यह सन् 1789 से पूर्व स्टेट्स की अन्तिम सभा थी। इसका महत्व उस काल के विशिष्ट राजनैतिक सिद्धान्तों को प्रतिबिम्बत करने के कारण भी है। राज्य के तीनों श्रेणियों के

---

1 फ्रान्क्वा द बोन, द्यूक द लेदीग्विए (1543-1626), वह लुई तृतीय की सेनाओं का प्रधान सेनापति था।

2 हेनरी, द्यूक द मेयेन. हेनरी चतुर्थ के प्रसिद्ध शत्रु का पुत्र था जो मोंटबान के घेरे के समय (1621) मारा गया।

3 हेनरी द ला टूर-द-ओवरगन, 1555-1623 यह एक काल्विन था, जिसने हेनरी चतुर्थ के विरुद्ध षडयन्त्र रचा था। देखें अध्याय 1।

4 1576 में गाइज के द्यूक हेनरी ने लीग पार्टी का नेतृत्व सभाल लिया, इस दल का उद्देश्य (संवैधानिक प्रक्रिया के नाम पर) वेलियोस के स्थान पर गाइज को लाना था। गाइज ने अपने आपको निरंकुश बनाने के लिए ब्लोइज की स्टेट्स जनरल (1576) का भरसक उपयोग किया।

विवाद अभिलिखित हैं ।[1] बुर्जुआ को पदों के विक्रय से लाभ उठाने से रोकने के लिए कुलीनवर्ग ने 'पोलेट' कर बन्द करने का प्रस्ताव रखकर वर्गों में युद्ध करवाने की कोशिश की। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सैनिक, कूटनीतिक तथा कौटुम्बिक पद पूर्णतया उन्हीं को देने चाहिए जो जन्मजात कुलीन हों, उन्होंने न्यायिक कर्मचारियों को कुलीन का पद देने का विरोध किया और यह हठ किया कि कुलीनों के अतिरिक्त सबके लिए शिकार खेलना बन्द किया जाये। इसके प्रत्युत्तर में तृतीय स्टेट ने पेंशनों को रोकने की मांग रखी। इनके वक्ता, सैवरां नामक डिप्टी ने वाक्चातुर्य से मध्यवर्ग की भावनाओं को व्यक्त किया जबकि उसने पेंशनों पर खर्च की जाने वाली अनन्त धनराशि—जो कुल मिलाकर 5,000,000 लिव्र थी[2]—की तुलना फ्रांस में फैली हुई निर्धनता से की। प्राचीन राज्य-व्यवस्था के इतिहास में यह अपनी किस्म का अन्तिम सार्वजनिक विरोध था।

राजकीय परमाधिकार का विरोध न होना

इसके बाद होने वाले वाद-विवादों से यह अवश्य स्पष्ट हो गया कि विरोध राजा के परमाधिकारों के प्रति नहीं था बल्कि कुलीन वर्ग के विशेषाधिकारों के प्रति था। वास्तव में सैवरां ने इसके कुछ समय पश्चात् (1615) यह प्रकट करने के लिए कि राजा के अधिकार दृढ करने चाहिए स्वयं प्रभुसत्ता पर एक निबन्ध भी लिखा।[3] तृतीय स्टेट की एक और मांग यह थी कि राज्य के मौलिक अधिनियम के रूप में एक घोषणा अभिलिखित कर देनी चाहिए कि राजा फ्रांस में प्रभुसत्ता-सम्पन्न है, भगवान् द्वारा ही दिया गया ताज पहनता है और कोई शक्ति, आध्यात्मिक अथवा आदि भौतिक, उसे अपनी प्रजा की आज्ञाकारिता से वंचित नहीं कर सकती। किन्तु पादरियों के विरोध और फार्मूले के अन्तिम शब्दों में गैलिकनवाद का संदेह होने के कारण इसकी स्वीकृति नहीं हुई। कुछ ही समय पूर्व पार्लियामेंट ने स्पेन की जेसुइट मेरियाना[4] **द रेज ए रेजी इन्स्तीतूशिआं** को जला देने का आदेश दिया था, किन्तु फ्रांसीसी पादरी यह स्वीकार करने के लिए तैयार न थे कि ऐसी कोई संभावना ही नहीं हो सकती थी कि जिसमें प्रजा अपने आदि भौतिक सत्ताधारियों की आज्ञाकारिता से मुक्त हो सके। सन् 1614 का स्टेट्स-जनरल ने,

---

1 देखिये हेनोटोक्स, **पूर्व उद्धृत** 2, परि० 1, तथा रिशेलू लिखित **मेमोयर्स** (सोसाइटी द हिस्ताएर द फ्रांस 1, 317-332 द्वारा सम्पादित)

2 लिव्र के मूल्य के लिए देखिये अध्याय 1 नोट 2।

3 **त्रेते द ला सूवररेनेते द रा ए एम. एम. ल डेपुते द ला नोबलीज** (1615)।

4 देखिये, अध्याय 1।

वस्तुत: राजतंत्र के पक्ष में कोरा चैक दे दिया और लेब्रे जैसे लेखकों ने अपने लेखो द्वारा जल्दी ही सबको राजाओं के दैवी अधिकार के सिद्धान्त से परिचित करा दिया। जब डिप्टियों ने यह माग दोहराई कि उनसे सबधित विषयों पर कौसिल देन्ता में चर्चा होने पर उनका प्रतिनिधित्व होना चाहिए तो उन्हें बाहर करके ताला लगा दिया गया। यह बहस बन्द करने का ऐसा तरीका था जिसका उन्होंने कभी बुरा तक नहीं माना। ऐसी कार्यवाहियों के आधार पर यह मत प्रस्तुत किया जा सकता है कि स्टेट्स–जनरल के अधिवेशन पूर्णतया बन्द करने से फ्रांस को कोई हानि नहीं हुई।

नोटेबल्स की सभाएं : कोड मिचाड (Code Michaud)

स्टेट्स जनरल को छोड़कर नोटेबल्स की सभा ही केवल एक ऐसी सस्था थी जिसे थोडी बहुत प्रतिनिधि सस्था कहा जा सकता था। इसका अधिवेशन बहुत कम बुलाया जाता था और इसका सगठन इंगलिश मैग्नज कान्सीलियम से मिलता जुलता था, पहली सभा रिशेलू की वाल्टेलीन नीति के लिए धन की स्वीकृति देने के लिए विशेष रूप से बुलाई गई थी और दूसरी रिशेलू द्वारा फ्रांसीसी कुलीनता के विशेषाधिकारों के विरुद्ध धावा बोलने का श्री गणेश करने के लिए बुलाई गई। अंतिम सभा को, विद्रोह के बदले मे मृत्युदण्ड देने की अपेक्षा, जो सभवत: इसे स्वीकार न था, जब्ती का दण्ड देने की स्वीकृति प्रदान करने के लिए कहा गया। व्यक्तिगत 'टेली' को बन्द करने के प्रस्ताव के कुल तीन पक्षपाती थे। इस सभा के बहुत से निर्णयों को बाद में 461 धाराओ में एकत्र किया गया जिसे कोड मिचाड[1] का नाम दिया गया है, जिसमें न्याय और अर्थ-सम्बन्धी विस्तृत तरीके दिये गये हैं जो समस्त फ्रांस पर कभी लागू नही हुए और इसलिए वास्तव में यह कोड नहीं था। 1614 की स्टेट्स जनरल का अधिवेशन कुलीन वर्ग की प्रार्थना पर बुलाया गया था और उसका उपयोग उस वर्ग का ध्यान दूसरी ओर लगाने के लिए किया गया था। इसके विरुद्ध नोटेबल्स की सभा के बहुत कम होने वाले अधिवेशनों का उपयोग रिशेलू ने कुलीन वर्ग के ही विरुद्ध कभी कभी एक अस्त्र के रूप में किया। 17वीं शताब्दी के फ्रांस में प्रतिनिधि संस्थाओं की यह दशा थी।

लुई तेरहवें का चरित्र : रिशेलू का उदय

इन दिनों लुई तेरहवें की अल्पवयस्कता, षडयत्र और विश्वासघात के

---

1 कोडमिडाच के विवरण के लिए देखिये, ग्लेसन कृत **हिस्तोरे द द्राय ए दे इन्स्तीतूशिआं द ला फ्रांस**, 8,174 और एवेनेल लिखित, **रिशेलू ए ला मोनार्की आब्सोल्यू** 1,79।

वातावरण में चलती रही।[1] सन् 1616 में कोंसिनी के विरुद्ध एक नया गुट बन गया और लूंदू की संधि से कोंडे और उसके साथियों को और अधिक धन मिल गया क्योंकि इससे उन्होंने एक बार फिर धन से सबका मुंह बन्द कर दिया। किन्तु एक विदेशी स्नेहपात्र का जीवन विधाता ने छोटा ही लिखा था। एक लुयीनेस[2] नामक युवक ने किसी तरह से मारेचल के कत्ल की स्वीकृति लुई से प्राप्त कर ली और विटरी नामक कातिल द्वारा कोसिनी का लोवर में 1617 में वध कर दिया गया। बाद में विटरी को कुलीन वर्ग में सम्मिलित कर सम्मानित किया गया। लुइनेस को अब दिवगत कोंसिनी का पद मिल गया और उसने राजा के ग्रहणशील मन में ऐसी भावनाएं बैठा दी जो ओछे अस्तबल या कुत्ते रखने वालों के ही अनुरुप थी। सैक्सनी के जॉन जार्ज की तरह लुई तेरहवां शिकार करने का इतना अधिक शौकीन हो गया कि इससे राज्य का कारोबार ही अव्यवस्थित नहीं हुआ अपितु उसमें ऐसी मानसिक जड़ता व्याप्त हो गई कि वह धीरे धीरे कोई भी अन्य बात समझने के अयोग्य हो गया। लुइनेस के उत्थान ने रानी मां को भी उनसे पृथक कर दिया, किन्तु 1619 में वह बन्दीगृह से बच निकली। कुलीन वर्ग के कुछ लोग उसके पक्षपाती हो गये। रिशेलू के चातुर्य के कारण ही गृहयुद्ध को रोका जा सका और मां—बेटे में 1619 की अप्रैल में आंगूलीम के स्थान पर मेल हो गया। इस सफलता के कारण रिशेलू को कार्डिनल का टोप मिला और कौंसिल में पुनः प्रवेश प्राप्त हुआ। इस समय लुइनेस की मृत्यु और कोंदे के इटली[3] प्रस्थान ने आन्तरिक शान्ति और भी निश्चित कर दी। वर्षों की सम—विषम परिस्थिति और विफल आकाक्षाओं के पश्चात अब रिशेलू ने असंदिग्ध रूप से फ्रांस की राजनीति में पदार्पण किया। 1622 में वह कार्डिनल हो गया तथा दो वर्ष बाद कोंसिल का अनौपचारिक अध्यक्ष बन गया।

रिशेलू का चरित्र

आधुनिक इतिहास में सम्भवतः बहुत कम ऐसे पात्र हैं जिनके विषय में लोगों में रिशेलू से अधिक मतैक्य है। वह कपटविद्या, चालबाजी और क्रूरता के

---

1 देखिये, लेविसी, **हिस्तोरे द फ्रांस** 6, 2 और रिशेलू, **मेमोयर्स** (सोसाइते हिस्तोरे द फ्रांस, 2 द्वारा सपादित)।

2 चार्ल्स द अल्बर्ट, द्यूक द लुयीनेस (1578–1621) प्रारम्भ में वह हेनरी चतुर्थ का पेज बाय था। वह 1621 में कांस्टेबिल बना और उसी वर्ष उसकी मृत्यु हो गई। उसकी विधवा पत्नी शेब्रूज की डचेज बन गई।

3 नागरिक संघर्ष में लाभ उठाने में असफल रहने के कारण कोंडे 1622 में ईश्वर अराधना करने का बहाना बनाकर इटली चला गया।

तमाम गुणों में निपुण मालूम होता था। उसमें बढिया पानी किये हुए इस्पात के समान नमनीयता थी; उसकी सुसंस्कृत स्त्री-सुलभ आकृति के पीछे दृढ़ संकल्प छिपा होता था। उसमें अपने समकालीनों के समान शुष्कता न थी, किन्तु निर्दयता इतनी थी कि कभी-कभी उन्हें आघात पहुंचता था; "जो कुछ भी वह करता था, जान-बूझ कर करता था।" किसी व्यक्ति ने अभी तक केवल अपनी बौद्धिक शक्ति के प्रयोग से इतनी राजनीतिक ख्याति प्राप्त नहीं की थी। यद्पि दरबार में उसके बहुत कम मित्र थे किन्तु उसमें दृढ़ संकल्प और विचारों की अविचल समरूपता थी जो भौतिक शक्ति से कहीं अधिक भयावह लगती थी। रिशेलू के समय में फ्रांस का आन्तरिक इतिहास नहीं के बराबर है-कार्डिनल के शत्रुओं की मृत्यु-संख्या बहुत अधिक थी। कुछ लोगों में इतनी पाशविक आकर्षण-शक्ति होती है कि वह उनके साथियों में विश्वास और शक्ति का संचार करती हुई मालूम होती है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने दुर्बोध तरीकों से अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों की तमाम नैतिक और मार्मिक शक्ति को अपने इच्छानुसार शुष्क करने में सफल प्रतीत होते हैं और उनको असहाय और असमर्थ छोड़े देते हैं। भाग्यवश इस वर्ग में बहुत कम व्यक्ति होते हैं क्योंकि यह वर्ग हमेशा अनिंद्य नैतिकता और उच्च आदर्शवाद के उपदेशों से संबधित रहता है। रिशेलू इसी प्रकार का व्यक्ति था। उसकी अधि-कांश शक्ति इसी चतुर व्यक्तिगत प्रभुत्व के कारण थी जिसका प्रयोग वह ऐसे लोगों पर अबाध्य रूप से करता था जो अपनी बुद्धि की अपेक्षा उत्तेजना के अधिक वशीभूत होते थे। बिस्मार्क की तरह उसने अपरिमित हानि के बदले व्यक्तिगत महान् सफलता प्राप्त की। ऐसे लोगों का सदा सम्मान होता रहेगा जब तक लोग ऐसे व्यक्ति का आदर करते हैं जिनसे वे डरते हैं। इस दृष्टिकोण से रिशेलू का इतिहास में कोई सानी नहीं। वह जल्दबाजी मे न तो कभी चाटुकारिता से प्रभा-वित होता था और न कभी दुराग्रह से जैसाकि वूल्जे के आलोचक उसके प्रति कहते हैं। किन्तु क्रामवेल की तुलना में उसमें एक कमी थी; क्रामवेल में रुक्ष पुरुषत्व के भीतर छिपा हुआ उसका आदर्शवाद का अंश था जिसे लोग समझ सकते थे और प्रशंसा कर सकते थे। रिशेलू में अपने सम्मुख लक्ष्य के प्रति इतनी एकाग्रता होती थी कि वह हर विरोध को चीर देती थी और बिना किसी त्रुटि के अपने लक्ष्य पर जाती थी। यह उसकी चारित्रिक विशेषता थी कि उसने महानतम त्रुटियां तब कीं जब वह अपने लक्ष्य से भी आगे बढ़ गया[1] और यह बात उल्लेखनीय है कि जिस प्रकार उसकी किसी से मित्रता न थी उसी प्रकार उसके जीवनीकार अधिकांशतः उसके दोषों की गम्भीरता को कम करने की चेष्टा करते हैं।

---

1 इसका उदाहरण 1626 के पश्चात उसके द्वारा वेनिस के प्रति किया गया व्यवहार है। देखिये हेनोटोक्स, रिशेलू 2, 1, 185। अध्याय 1 भी देखिये।

मैकियावेली का शिष्य, उसके अंधविश्वास

अपनी राजनीतिज्ञता, राज-द्वेष-हीनता और, सबसे अधिक, अत्यन्त विशिष्टतापूर्ण व्यवसाय के रूप में राजनीति-कला में अपने अनुराग के कारण रिशेलू अपने दृष्टिपथ की व्यापकता में आधुनिक व्यक्ति दिखाई देता है। किन्तु आधुनिकता के होते हुए भी उसने अपने राजनैतिक सिद्धान्त पिछली शताब्दी से ग्रहण किये थे, जिसमें यह कहा जाता था कि राजनीति-कला दुष्टता के साथ महान् समझौता[1] है। अपने अंधविश्वास और निर्दयता में वह इससे भी अधिक आदिम काल की निकृष्टतम घटनाओं को स्मरण करा देता था। यद्यपि अपने संघर्ष के दिनों में उसे कपट और चापलूसी करनी पड़ी, किन्तु वह पाखण्डी नहीं था, अन्यथा वह मेकियावली की प्रशंसा इतने स्पष्ट रूप में न करता जिसके ग्रन्थ 'प्रिंस' के मौलिक सिद्धान्तों से उसका पूर्णतया मतैक्य था [2] और न ही वह सोलहवीं 'शताब्दी के इटली के 'गुण' (Virtu) को देवोचित गुण के रूप में स्वीकार करता जिसे फ्रांसीसियों ने 'एक पुरुषोचित गुण' का पारदर्शी जामा पहनाया था। यह जानते हुए भी कि मेकियावेली की बहुसंख्यक ऐसे लोगों ने भी कटु आलोचना की है और उसे अस्वीकार किया है जिन्होंने उसके सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप देने में उसे भी मात कर दिया है, यह संतोषजनक बात है कि रिशेलू एक ऐसा राजनीतिज्ञ था जो महान फ्लोरेन्टीन (मेकियावेली) को अपनी राजनैतिक प्रेरणा का श्रोत स्वीकार करने में लज्जा का अनुभव नहीं करता था। रिशेलू का विश्वास था कि राजनीति-कला में हिचकिचाहट और पश्चात्ताप घातक होते है, नैतिकता को, जो व्यक्ति पर नियंत्रण रखती है, राज्य पर हमेशा लागू नहीं करना चाहिये, और सत्रहवीं शताब्दी के फ्रांस जैसे देश को, जहां अतिशक्तिशाली तथा बेरोजगार कुलीन वर्ग हो, केवल कठोर और दृढ़ सरकार ही नाश से बचाने में समर्थ होती है। मुख्यतः

---

1 यह परिभाषा एनीवेल स्कोती द्वारा दी गई है। देखिये, तोफेनिन लिखित, **मकियावली ए इल टेकटिस्मो**, 128।

2 उसको इस बात पर आश्चर्य था, कि किसी ने भी मेकियावली के सिद्धान्तों को रक्षित करने का प्रयत्न नहीं किया। अनेक समकालीनों ने यह शिकायत की है कि जहां एक और मेकियावेली की आलोचना करना फेशन हो गया था वहीं दूसरी ओर व्यवहारिकतः इसके सिद्धान्तों का पालन किया जाता था—'यह मुझे बड़ा विचित्र लगता है जहां कहीं मैं जाता हूँ मैंकियावेली की आलोचना सुनता हूँ जबकि व्यावहारतः उसके सिद्धान्तों को अपनाया जाता है।' (**मोडर्न पोलिसीस टेकेन फ्राम मेकिआवेल**, 1652 डेडीकेशन)

3 रिशेलू, **टेस्टामेंट पोलीटिक**, पार्ट 2, अध्याय 2।

तार्किक मनोवृत्ति होते हुए भी उसका अंधविश्वास की ओर अधिक झुकाव था। उसने पेरिस के कार्मेलाइटस से अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करने की ही विनय नहीं की अपितु उन्हें भविष्य बताने के लिये भी कहा।[1] इसके बदले में उन्होंने होली सेक्रामेंट की मदर माग्रेरट के नाम पर 'अंग्रेजों की हार' का वचन दिया। जब निश्चित तारीख बताने के लिये दबाव डाला गया तो उसे विश्वास दिलाया गया कि 'अभी प्रार्थना की जा रही है।' सन् 1628 में ला रोशेल के पतन से, ऐसी भविष्य-वाणियों में उसकी निष्ठा को पक्का करने में और सहायता मिली होगी। सभी अंधविश्वासियों की तरह वह भी अति निर्दयी हो सकता था। ला रोशेल के एक विद्रोही के वध के सम्बन्ध में, जिसके विषय में यह विशेष रूप से ज्ञात था कि उसका किसी से विवाह होने वाला है,[2] उसकी आज्ञा थी कि उसके सिर को वल्लम पर रखकर दिखाओ—इससे उसकी मंगेतर मर जायेगी।' एक बेड़े के उलटने की आकस्मिक दुर्घटना में बड़ी संख्या में ह्यूजनों के डूब जाने की खबर सुनकर उसने जो हर्ष प्रकट किया वह स्पष्टतः अभिव्यक्त था। रिशेलू इतना महान् इसलिये था कि उसके चरित्र में वे बातें नहीं थीं जो केवल उस युग या राष्ट्र की विशेषतायें थीं। इस किस्म के व्यक्ति सदैव विजयी रहेंगे जब तक उत्तेजना रहित विचारयुक्त बुद्धि, उत्तेजना और भावना पर काबू पा सकती है।

1624 में कौंसिल का नेता बनना

रीजेन्सी के दिनों में जब तक वार्तालाप द्वारा निर्णय की अपेक्षा हिंसा को श्रेष्ठता दी जाती थी, तो लूकोन के युवक विशप को देश निकाले पर अपने पादरी या मेरी–डी–मेडिसी के पास आश्रय मिला था, जिस श्रेष्ठ स्थान से वह समस्त संसार का सर्वेक्षण कर सकता था जो अब उसकी ओर आकृष्ट होता जा रहा था। मेरी–द–मेडेसी जैसी चरित्रहीन स्त्रियों के पास रहने वाला दुर्बोध्य और व्याधि पीड़ित पादरी अपने प्रमुख समकालीनों की दृष्टि में कुटिल मनोवृत्ति का व्यक्ति था। अपने स्पर्धियों की दुर्बलताओं और पापों के बल पर ही रिशेलू प्रभुता पा सका और जब वित्त के सुपरिन्टेन्डेन्ट ला वियुविले को अति दुष्ट व्यवहार के लिये दंडित किया गया तो उसका मार्ग साफ हो गया। वह सन् 1624 में प्रथम मंत्री के रूप में कौंसिल का नेता हो गया और जब एक बार उसने स्त्री–जनित प्रभाव का चोला उतार फेंका तो उसने निर्दयी किन्तु कार्यक्षम शासन का सूत्रपात कर दिया।

उसके विरूद्ध षड्यंत्र

इसके पश्चात् 1642 में उसकी मृत्यु तक फ्रांस का इतिहास केवल महलों

---

1 ब्रेमा हिस्त्वार लितेरेर द सेंतीमें रेलीजियू आं फांस, 2, 230।

2 दा वेनेल, रिशेलू ए ला मानार्कीआव्सोल्यू 4, 77।

के विद्रोह तक ही सीमित नहीं रहा है, वरन् केवल काल क्रमानुसार वर्णन के अतिरिक्त उसमें और भी बहुत कुछ है। किन्तु रिशेलू के प्रशासनिक कार्यों का विस्तार-पूर्वक निरूपण करने से पूर्व उसके शासन के विरुद्ध जो विद्रोह हुए उनका वर्णन करना अधिक अच्छा रहेगा। सन् 1626 में उसको राजकीय परिषद से हटाने का षड्यंत्र रचा गया।[1] इस चैलेस नामक षड्यत्र का नेतृत्व लुई के छोटे भाई–दुःख-दायी आर्लियों के गास्तों ने किया, जिसकी साथी शेव्रूज की डचेस थी, जो फ्रांस को विदेशी प्रभाव में लाने के लिये कई षड्यत्रों में प्रमुख भाग ले रही थी। इस षड्यत्र का ठीक समय में पता चल गया। गास्तों को छेड़ना बहुत मुश्किल था, किन्तु डचेस को निर्वासन दे दिया गया और उसके एक प्रेमी शले को जिस पर षड्यत्र में योग देने का सदेह किया जाता था, यद्यपि यह सिद्ध नहीं किया जा सका, कत्ल करवा दिया गया। रिशेलू सब महान् प्रशासकों की तरह, अपनी कार्य सिद्धि में बलि के बकरों को काम में लाना जानता था। 1630 में मेरी–द–मेडिसी ने जिसके कारण मंत्री का भविष्य बना था, विद्रोह कर दिया। नारी होने के कारण राजमाता को मंत्री के हाथों में निरकुश शक्ति होने का बहुत खेद था। उसे आस्ट्रिया की ऐन, मेरीलक[3] और वेसम्पियर[4] का सहयोग मिल गया, किन्तु अपने पुत्र से मत्री को पदच्युत करने का वचन लेने के कुछ देर बाद रिशेलू के अचानक प्रकट हो जाने से स्त्रियों के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति सन्न रह गया। लुई तेरहवां भाग गया, किन्तु कार्डिनल ने उसे वर्साय में ढुंढवा लिया और व्यक्तिगत बातचीत के बाद लुई फिर उसके बंधन में फंस गया जिससे वह लगभग बच निकला था। एक

---

1 लेवीसी, पूर्व उद्धृत, 6, 2, बुक 3, अध्याय 2।

2 इसके लिये देखिए कजिन, मेदम द शेव्रूज, अध्याय 1, मेरी द रोहन मान्तबजो, शेव्रूज की डचेस (1600–1679) का विवाह 1617 में ल्यूंस में हुआ था तथा क्लाड द लोरेन, ड्यूक द शेव्रूज का 1622 में। आस्ट्रिया की ऐने से उसकी मित्रता ने रिशेलू को ईर्ष्यालु बना दिया।

3 माइकेल द मेरिलक (1563–1632) 1624 में कीपर आफ द सील्स तथा बाद में वित्त अधीक्षक बन गया। बाद में इसे हटा दिया गया तथा रिशेलू द्वारा इसे दंडित भी किया गया।

4 फ्रान्कवा द वेसम्पियर, मारकेल द फ्रांस (1579–1646) ने हेनरी चतुर्थ तथा लुई 13 की सेनाओं में कार्य किया था। रिशेलू के विरुद्ध षडयंत्र में भाग लेने के कारण इसे 1631 में बैस्तील में नजरबन्द कर दिया गया था तथा फिर 1643 में रिशेलू की मृत्यु हो जाने के बाद ही रिहा किया गया। बैस्तील में इसने अपने संस्मरण लिखे हैं।

बार फिर सत्तारूढ़ होने पर रिशेलू उन सब व्यक्तियों के लिये जो उसके विरूद्ध मिले हुए थे, निसंदेह 'छले गये व्यक्तियों का काल'[1] बन कर आया। और अब उसने लोगों में निर्दयता की अपेक्षा अपनी अस्थिरता का अधिक आतंक फैला दिया। उसने मेरीलक के भाई को पकड़ लिया और पहले से ही गढ़े हुए एक अपराध में उसे एक के बहुमत से मृत्यु दण्ड दिलवाया। वह जानता था कि उसके प्रतिरोध की वेदी पर एक निर्दोष की बलि उतना ही आतंक पैदा कर देगी जितना बहुत से दोषी व्यक्तियों को दण्डित करने से होता है। राजमाता को ब्रुसेल्स में शरण लेनी पड़ी और गास्तो भी जल्दी ही जा मिला और फिर वहां से स्पेन के साथ मिलकर षड्यंत्र आरम्भ किये गये जिनके दूसरे फ्रांडे काल में घातक परिणाम निकले। रिशेलू के लिये यह संतोषप्रद था क्योंकि अब उसे जिन स्त्रियों से निबटारा करना था उनमें से एक की कमी हो गई थी क्योंकि रिशेलू का जादू केवल पुरुषों पर ही अचूक होता था।

सिंक मार्स का षड्यंत्र (1641)

तीसरे विद्रोह का वास्तविक कारण निर्वासित गास्तो था—यह मोंटमोरेंसी द्वारा किया गया था। ड्यूक आव आर्लियां 1632 में बरगंडी में से होते हुए फ्रांस पर आक्रमण करके लेंग्एडोक पहुंचा, जहां उसके साथ केस्टलनाडरी के स्थान पर गवर्नर मोंटमोरेंसी जा मिला। उनकी सम्मिलित सेनाओं को स्कोम्बर्ग के अधीन सरकारी दलों ने पराजित कर दिया, और मोंटमोरेंसी को पकड़ लिया गया। इसके बाद रिशेलू को अपनी स्थिति पर 'डे आव ड्यूप्स' से भी अधिक विश्वास हो गया। इसके अतिरिक्त, वह जानता था कि इतने बड़े प्रान्त के लोकप्रिय गवर्नर का शिकार किया जा सकता है। इसलिये, टूलोज की पार्लियामेंट को अपनी इच्छा के विरूद्ध मोंटमोरेंसी पर मुकदमा चलाने के लिये बाध्य होना पड़ा और उसका वध पूर्वी देशों में सुलभ सत्वरता और गोपनीयता से कर दिया गया। समकालीनों को इस बात में कोई संदेह नहीं मालूम होता था कि विद्रोह के फलस्वरुप लेंगुएडोक के गवर्नर का वध होना चाहिये था, किन्तु इन लोगों को भी जो हिंसा के दृष्यों से भली प्रकार से परिचित थे, रिशेलू की हठधर्मी, जिससे वह अपने शिकार का वध

---

1 नवम्बर 1630।

2 हेनरी द्वितीय, ड्यूक द मोंटमोरेंसी, 1595–1632। इसने वफादारी के साथ 1629 तक न्यायालय का कार्य किया जबकि वह फ्रांस का मार्शल बनाया गया, 1632 में उसे बचाने के प्रयत्न किये गये, परन्तु रिशेलू अपने निश्चय पर दृढ़ रहा।

करता था, बहुत अखरी । सन् 1641 में सिंक मार्स[3] के षड्यंत्र से रिशेलू को अपने प्रदेश पर खून की छाप लगाने का अन्तिम और सुन्दर अवसर मिल गया । गास्तो और मदाम द शेव्रूज के स्पेन के साथ मिलकर राजद्रोहात्मक विचार विनिमय संक्रामक हो गये थे । लुई तेरहवें के प्रिय युवक, सिंक मार्स के मार्क्विस ने स्पेन से एक संधि पर हस्ताक्षर किये जिसके अनुसार उसने फ्रेंच सेना[3] द्वारा जीते हुए सब स्पेनिश प्रदेशों की आर्थिक सहायता के बदले में लौटाने के वायदे का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया । इस दस्तावेज का भेद खुलना सिंक मार्स की मृत्यु का वारंट सिद्ध हुआ, और उसके साथ ही उसके मित्र डेथोक का भी वध कर दिया गया, जिसका केवल इतना अपराध था कि उसे षड्यंत्र का पता था किन्तु उसने यह बतलाया नहीं था ।

रिशेलू का निरंकुशतावाद

सन् 1624 से 1642 तक के वर्षों में फ्रांस का आन्तरिक इतिहास और रिशेलू की विविध क्रियायें एक साथ चलती रहीं । उसने एक आदेश द्वारा राज्य के प्रमुख मन्त्री की उपाधि प्राप्त करली थी, जो पद अभी तक फ्रांस में अज्ञात था और व्यावहारिक रूप में तानाशाही के बराबर था, क्योंकि कोंसल दे' ता उसी के आदमियों द्वारा निर्मित थी, और इस प्रकार पेरिस की पार्लियामेन्ट को उसकी डिग्रियों की केवल रजिस्ट्री करके अपने को सन्तुष्ट कर लेना पड़ता था। उसके शासन की मुख्य विशेषतायें एकरूपता, मौन और सुविधा की दृष्टि से कार्य कुशलता थी। प्रशासन को ऐसे खण्डों में विभाजित किया जा सकता है जिसके अनुसार उन पर कार्यवाही की गई । (क) ह्यूजनों (ख) चर्च (ग) कुलीन वर्ग (घ) पार्लियामेन्ट और प्रान्तीय सरकार तथा (ङ) प्रेस, पुलिस और जनमत ।

ला राशेल का घेरा

(क) ह्यूजनों--सामूर की एसेम्बली (1611) में ह्यूजनो ने अपने आपको जर्मनी की प्रोटेस्टैन्ट व्यवस्था की भांति 'मंडलों' में संगठित कर लिया । 1598 और 1629 के समय में उन्होंने 9 सामान्य अधिवेशन किए--उनमें से दो (1617 में और 1620 में) बिना राजकीय स्वीकृति के थे । नांते की राज·

---

1 हेनरी द रूजे, मार्क्विस द सिंक मार्स, 1620-1642 ।वह रिशेलू से नाराज हो गया था क्योंकि रिशेलू ने उसे मेरी द गोन्जेग से विवाह करने की अनुमति देने से इन्कार कर दिया था । आगे चल कर यही मेरी द गोन्जेग पोलेंड की महारानी बनी ।

2 लेवीसी, पूर्व उद्धृत अध्याय 12 ।

घोषणा द्वारा फ्रांसीसी प्रोटेस्टेन्टों को इस आशा में असाधारण रियायतें दी गई थीं कि वे अन्ततोगत्वा राजदया उन्हें फिर कैथोलिक चर्च में वापिस ले आये। रिशेलू को भी यह विश्वास था कि उन्हें तर्क द्वारा जीता जा सकेगा। जल्दी ही उसका यह भ्रम दूर हो गया। सत्तारूढ़ होते ही उसने अनुभव किया कि ह्यूजनो ने राज्य के अन्दर एक सघीय गणतन्त्र बना रखा था जिसमें टुरेन,[1] डुक्के स्ने[2] और कोर्न्राट[3] (फ्रेंच अकादमी का सस्थापक) जैसे अच्छे व्यक्ति भी थे, और बौइ-लान जैसे खतरनाक आदमी भी थे, जिसने रिशेलू के विरूद्ध लगभग सभी विद्रोहों में भाग लिया, और रोहन[4] जैसे योग्य सैनिक भी थे जिनमे राजभक्ति न थी। रिशेलू द्वारा फ्रांसीसी प्रोटेस्टेन्टों के राजनीतिक कार्यों के दमन को आधुनिक तथा तात्का-लिक दोनों मापदण्डों से न्याय-संगत कहा जा सकता है, क्योकि एक सशस्त्र गणतंत्र के रूप में उसका अस्तित्व राज्य की सुरक्षा के लिए खतरा था, जबकि वे अपने दुर्गों में इतने ही असहिष्णु थे जितने कैथोलिक[5] अपने दुर्गों में। इसलिए उसका इंग्लैण्ड से मित्रता करके ह्यूजनों का दमन करना इतना ही सुसंगत था जितना जर्मन प्रोटेस्टेन्टों द्वारा सम्राट के विरूद्ध विद्रोह में उनसे मित्रता करना। अप्रैल 1621 में ला रोशेले की एसेम्बली ने अपने सबसे अधिक उग्र सदस्यों को अभियान की योजना बनाने का कार्य सौंपा, उसी वर्ष फ्रांस को सशस्त्र प्रतिरक्षा के ख्याल से 8 मण्डलों में बांट दिया गया। जल्दी ही यह संस्था इंग्लैण्ड के साथ सक्रिय संधि और स्पेन से सम्भावित सहायता के कारण सरकार के लिए खतरा बन गई, और आगामी वर्षों में ह्यूजनों अधिक अड़ियल और अधिक प्रतिरक्षा-सम्पन्न हो गये। रिशेलू द्वारा ला रोशेल का घेरा, जो नवम्बर 1627 में आरम्भ किया गया, बकिंघम के रही[6] के टापू पर किए गये आक्रमण का उचित प्रत्युतर था। जब अंगरेजी जंगी बेड़ा घिरे हुए टापू को सहायता पहुंचाने में असमर्थ रहा और जब उसके 2000 निवासी भुखमरी के शिकार हो गये तो ला रोशेले का समर्पण (28-

---

1 फ्रेंच जनरल, 1611–1675।

2 फ्रेंच एडमिरल, 1610-1688।

3 पेटर्न आफ लेटर्स, 1603–1675।

4 1579–1639 सली का दामाद था। ला रोशेले की रक्षा की थी तथा जिसने रिशेलू के विरुद्ध सभी विद्रोहों में भाग लिया था।

5 रिशेलू ने अपनी **टेस्टामेन्ट पोलीटिक** (1764 का संस्करण, 1, 2) में लिखा है, कि शासन समालते समय 'ह्यूजनों ने राजा के सारे शासन को विभाजित कर दिया था।'

6 देखिये गार्डिनर, **हिस्ट्री आफ इंग्लैण्ड** 6 और रोनसियर **हिस्ट्री द ला मेरीन फ्रान्सेस** 4, 534–557।

अक्टूबर 1628) हुआ और विजेता ने ऐसा अनुसीमन दिखाया कि उसे प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। वह यह नहीं समझा कि फ्रेंच प्रोटेस्टेन्ट अच्छे फ्रांसीसी क्यों नहीं हो सकते। इसलिये जब उसके सैनिकों ने रोहन[1] द्वारा चलाये लेगुएडोक में विद्रोह को कुचल दिया तो उसने नेताओं के अतिरिक्त सबको राजक्षमा प्रदान की तथा पूजा की स्वतन्त्रता भी दे दी। अले की संधि (1629) से फ्रांस में ह्यूजनों की स्थिति का 56 वर्षों के लिए फैसला हो गया। उनको स्वतन्त्र धर्म-विश्वास की स्वीकृति दे दी गई किन्तु पृथक राजनीतिक अस्तित्व से वंचित कर दिया गया, और तत्पश्चात् वे फ्रेंच समाज के सबसे अधिक राजभक्त और परिश्रमी अंग सिद्ध हुए। वे फ्रांडे में राजतन्त्र के प्रति स्वामिभक्त रहे और उनमें से बहुत से प्रसिद्ध जनरल और असैनि ककर्मचारी निकले जबकि परिश्रम और किफायत करके उन्होंने फ्रांस को धनवान बनाने में योग दिया। धार्मिक मतभेदावलम्बियों के प्रति उसने ऐसा प्रबुद्ध दृष्टिकोण अपनाया जो उसके समकालीनों की हठधर्मी के बिलकुल विपरीत था। उसने अपने निरंकुश शासन द्वारा ह्यूजनों की उनके पड़ौसी कैथोलिकों से रक्षा की।

गैलिकन्स तथा अल्ट्रामोंटेन

(ख) चर्च—ये ही राष्ट्रीय सिद्धान्त उसके फ्रेंच चर्च के प्रति दृष्टिकोण में देखे जा सकते हैं। कार्डिनल होने के नाते वह गैलिकन सिद्धान्तों से, जो उस समय दृढ़ होते जा रहे थे, और सोरबोन के सिंडिक, रिचर[2] के लेखों से प्रचारित हो रहे थे, सार्वजनिक रूप से घनिष्टता नहीं कर सकता था, किन्तु देशभक्त फ्रांसीसी होने के नाते उसकी अल्ट्रामोंटेनो से कोई सहानुभूति न थी, और वह अल्ट्रामोंटेन प्रचार के विशेष कुख्यात नमूनों के प्रति पेरिस की पार्लियामेंट द्वारा अपनाये जाने वाले रूख से प्रसन्नतापूर्वक सहमत हो गया। इस प्रकार उसने दोनों उग्रदलों में मध्यस्थ का काम किया। एक तरफ उसने रिचर को अपनी मांगें संयमित रखने के लिए मनाया तथा दूसरी ओर जैसुइटों को उनके ठिकाने पर रखा। उसने डुपुयी की त्रियूते दे लिबर्ते द ले ग्लीस गैलीकेन और सेन्टरेली की द सिज्मेत[3] को दबाये

1 1628–9 लेविसी, पूर्व उद्धृत 6, 2, अध्याय 3।

2 रिचर ने अपने गेलिकन विचारों का प्रतिपादन **दी एक्लेसिएसटिका एत पोलिटिका पोटेस्टेन्ट** (1711) तथा **एपोलोजी द गेरसन** (1616) में किया है। उसके विचार इतने अधिक क्रांतिकारी थे, कि उसे उनमें संशोधन करना पड़ा। गेलिकनवाद के लिए अध्याय 8 का सारांश देखिये।

3 इन दोनों पुस्तकों के शीर्षक इनके उद्देश्यों को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त हैं। देखिये **इन्स्ट्रकशन्स डोनीस (रोम), 1, भूमिका।**

रखा। गैलिकन सिद्धान्त के लिए वचनबद्ध हुए बिना उससे फ्रांस में गैलिकन स्वन्त्र-ताओं की प्रथा को यथावत् बनाये रखा। चर्च को साम्यता और आज्ञापालन के गुणों का पालन कराने वाली संस्था मानता था। वह धर्म को समाज के विभिन्न अंगों को जोड़ने वाला समझता था, आध्यात्मिक अनुभव नहीं। पादरी इस राज्य के चर्च की एक इकाई था। रिशेलू इस बात पर बल देता था कि पादरियों को अपने आध्यात्मिक परमाधिकारों को सुरक्षित रखते हुए राज्य–सेवक के रूप में अपनी स्थिति को स्वीकार कर लेना चाहिये। इसलिये वह बड़े पादरियों के चुनाव में बहुत सावधान था और संतों या केवल अपनी योत्यता पर निर्भर व्यक्तियों की अपेक्षा अच्छे खानदान और प्रशासनिक योग्यता वाले पादरियों को प्राथमिकता देता था। उसके विचार से वह पादरी जिसे पदोन्नति प्राप्न हुई हो अपने पद की उच्च प्रतिष्ठा बनाये रखने में लोभ के कारण असफल होगा। उसके विचार से आदर्श किस्म का बड़ा पादरी हृष्ट–पुष्ट, उच्च कुलोत्पन्न नेन्सी का बिशप ला मोथ हाउडनकोर्ट था जो अपने धर्माध्यक्ष के क्राससे उसी सरलता से आशीर्वाद दे सकता था जिस सरलता से वह उसके हत्थे से उसे नीचे गिरा सकता था। चर्च पदा-धिकारियों की नियुक्ति के लिए राजा को परामर्श देने के लिए कौंसिल आफ कनसाइंस नियुक्त की गई। राजकीय नियंत्रण का इस तथ्य से पता लगता है कि चर्च की सामान्य सभायें कठोर निरीक्षण में होंगी, और सभा का स्थान तक सर–कार द्वारा निश्चित किया जायगा। रिशेलू पर यह संदेह किया जाता था कि बूल्जे की तरह वह फ्रांस में किसी न किसी प्रकार का स्थायी लीगेट–पद प्राप्त करना चाहता था और इस प्रकार अपने लिए बाई ब्रिजेन्टाइन ढंग का पादरी का पद बनाना चाहता था। वह यह जानता था कि उसके और फ्रेंच पादरी पर पूर्ण नियंत्रण के बीच में वेटिकन एकमात्र रुकावट थी और केवल रोम के आदेशों को मानने वाले धार्मिक पंथों के असंख्य विभाग, चिर–आवश्यक सुधारों को रोकते थे, क्योंकि दोहरी स्वामिभक्ति उत्पन्न करते थे। किन्तु इस बात पर संदेह किया जा सकता है कि क्या सचमुच उसके मन में आध्यात्मिक स्वातन्त्रय की अभिलाषा थीं, क्योंकि यद्यपि 1628 के ह्यूजनो विद्रोह के दमन के बाद मोन्टाबन में उसका विजय-प्रवेश एक ऐसी मेहराब के नीचे से हुआ था जिस पर ड्यूक का ताज और पादरी का क्रास अंकित थे, तो भी शायद दार्डिनल को ऐसा विश्वास थाकि इस संकेत से कोई हानि न होगी और इससे पैपेसी में उसकी स्थिति और मजबूत हो जायेगी।[1]

---

1 **मैमोयर्स द मोंनकेल** (1718) 1, 17।

प्रांतीय गवर्नरों की पद-मुक्ति

(ग) **कुलीन वर्ग**–

फ्रांस को टयूडर राज्य जैसा अनुभव कभी प्राप्त नहीं हुआ था। इसलिये वहां का जागीरदार कुलीनवर्ग 17वीं शताब्दी में पुरानी लुप्त सभ्यता के व्याख्याता के रूप में जीवित था। रिशेलू की इच्छा थी कि राज्य और चर्च में कुलीनों का एकाधिकार बना रहे, किन्तु वह उनको दूरस्थ प्रान्तों की–कुछ अभी फ्रेंच राज्य में पूरी तरह विलीन भी नहीं हुए थे, जीवन-पर्यन्त गवर्नरी देने के विरुद्ध था। इसलिए उसके प्रयत्न विशेषतः प्रान्तीय गवर्नरों के विरुद्ध थे। उसने उनके पदों को वंशानुगत होने से रोक दिया और उनमें से अधिकांश को निर्वासन देकर हटा दिया। सन् 1614 में ऐसे 16 स्थानीय गवर्नर पद थे, जिसमें बेरी (कोंडे), ब्रिटेनी (वेंडोम), नार्मन्डी (लौंगिविले), पिकार्डी (लुयेन्स), चैम्पेन (नीवर्स), आर्वन (चवरियूज), डफिन (सोइसंस), प्रोवेंस (गाइज) और लेंग्रुएडोक (मोंटमोरेंसी) भी सम्मिलित थे। रिशेलू की मृत्यु के समय केवल चार गवर्नर शेष थे।[1] वेंडोम को चेले षडयंत्र में भाग लेने के अपराध में कैद किया गया था, गाइज को प्रोवेंस विद्रोहों को प्रोत्साहन देने के कारण पदच्युत कर दिया गया, मोंटमोरेंसी का वध करवाया गया था, सोइसस 1641 में मारा गया था, रोहन को देश निकाला दिया गया और वह भाड़ेत लड़ाकू नेता बन गया।[2] अब लुई चोदहवें के लिये, गवर्नरों की अवधि को तीन वर्ष तक सीमित करके, उन्हें वर्साय में अनिवार्य उपस्थिति के द्वारा क्षीण करके और उनके लिए मदाम द सेविए के कथनानुसार शोर, ढोल, वायलिन और शाही वातावरण छोड़कर, प्रान्तीय गवर्नर के पद को नाम मात्र का पद बनाना शेष रह गया।

द्वन्द्व युद्धों का दमन

द्वन्द्व युद्धों के विरुद्ध अपनी घोषणाओं का दृढ़तापूर्वक प्रयोग करके रिशेलू ने कुलीन वर्ग के सबसे प्रिय विशेषाधिकार पर बार किया। 1628 की घोषणा द्वारा पहले अपराध पर पदच्युति और कुछ अवधि के लिए देश निर्वासन और दूसरी बार अपराध करने पर मृत्युदण्ड लागू कर दिया गया।[3] मोंटमोरेंसी–बाउटविले और चेपल्स के काउण्ट को इस घोषणा के अन्तर्गत प्राणदन्ड दिया गया था। किन्तु

---

1 केटल, **द एडमिनिस्ट्रेशन इन फ्रांस सोस ला मिनिस्टर डू कार्डिनल द रिचेलियु**, 30।

2 वेनिस की सेवा में। देखिये बुहंरिग, **वेनेडिंग, गस्टवस, अडोल्फस एंड रोहन** 83–135।

3 देखिये रिशेलू, **मेमोयर्स** (सोसाइटी दी हिस्तोरे द फ्रांस) 5,226।

वास्तव में द्वन्द्व–युद्धों की प्रथा का समूल नाश नहीं हुआ और यद्यपि रिशेलू ने फ्रांसीसी कुलीन वर्ग को आतंकित कर दिया किन्तु उन्हें समाज के लाभप्रद अंग बनाने के लिए कुछ नहीं किया। यह कार्य संभवत: किसी मानव की शक्ति से बाहर था। फ्रांसीसी क्रांति से पूर्व फ्रांस अपने परम्परागत कुलीन वर्ग को समाप्त न कर सका।

पार्लियामेन्ट की राजनैतिक शक्ति का अपहरण

(घ) पेरिस की पार्लियामेण्ट और प्रान्तीय जागीरें–

पेरिस की पार्लियामेन्ट राज्य का प्रभुसत्ताधारी सदन था जो केवल ऐसी घोषणाओं को पंजीकृत कर, अपने विधायी नियंत्रण के अधिकार को स्थापित करता था, जिन्हें उसकी स्वीकृति प्राप्त होती थी।[1] यह अधिकार पूर्णरूपेण कभी भी स्वीकृत नहीं किया गया, जैसे जब इसे बोलोग्ना (1516) के कन्कोर्दा को दर्ज करने के लिए कहा गया तो पार्लियामेन्ट ने व्यर्थ विरोध किया था और इसे रिकार्ड पर अपना विरोध दर्ज करके सतोष करने पर बाध्य होना पड़ा था। प्रभुसत्ताधारी तथा सदा से अभिन्न भाग होने के नाते राजा (लिट द जस्टिस) उनसे आज्ञापालन करवा सकता था। किन्तु पेरिस की पार्लियामेन्ट, वास्तव में, एक न्यायिक कार्य करने वाली विधिसंमत् कारपोरेशन थी और बहुत से ऐसे कार्य सम्पादन करने का दावा करती थी जो इंग्लैण्ड में प्रिवी कौंसिल को दिये गये हैं। एक ओर इसके दावों और विशेषाधिकारों में सामंजस्य–हीनता और दूसरी ओर किसी वास्तविक शक्ति या राष्ट्रीय सहारे के अभाव के कारण पार्लियामेन्ट रिशेलू का विशेष विरोध न कर सकी। उसने धर्मोपदेशक–सम्बन्धी मामलों पर इसे निर्णय देने की अनुमति दे दी, क्योंकि उसकी गैलिकनवाद के प्रति सहानुभूति थी। किन्तु वह इस पर महत्वपूर्ण राज्य के कैदियों पर निर्णय देने में विश्वास नहीं करता था। ऐसे कार्यों के लिए वह असाधारण न्यायिक कमीशन अधिक श्रेस्कर समझता था क्योंकि उसके नियोजन में वह नियंत्रण रख सकता था। इस प्रकार पार्लियामेन्ट के जोरदार विरोधों के विरुद्ध 1631 में कुख्यात चेम्बर द ला अर्सनल की सृष्टि की गई और इन विरोधों का उत्तर लुई ने एक संदेश में दिया, "आप लोगों का काम केवल मास्टर पीटर और मास्टर जान के पारस्परिक झगड़ों पर निर्णय देना है और यदि आपने इससे आगे बढ़ने की चेष्टा की तो मैं आपके नाखूनों को अन्त तक काट दूंगी।"[2] यह भाषा इस बात का संकेत करती है कि यह कार्डिनल की कलम द्वारा लिखी गई

---

1 संसद के संगठन एवं अधिकारों के लिए देखिये मेरियन, **डिक्शनरी द इन्सटीट्यूशन्स द ला फ्रांस।**

2 ग्लासो, ला पार्लमेन्ट द पेरिस सन रोल पोलिटिक 1, 144।

है। जब लुई ने 1626 में ओलियों के गास्तोंन के साथ फ्रांस से भागने वाले को राजद्रोह के लिए दोषी घोषित किया तो पार्लियामेन्ट ने विरोध किया किन्तु 'लेटर्स द जुसियन' द्वारा उसे घोषणा दर्ज करने के लिये बाध्य किया गया और उसे सूचित कर दिया गया कि उसे राज्य के कार्यों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है।[1] इस अवसर पर दो सभापतियों और एक कौंसलर को देश से बाहर निकाल दिया गया। पार्लियामेन्ट ने फ्रेंच अकादमी की स्थापना का इस विचार से विरोध किया कि कहीं यह प्रतिस्पर्धी संस्था न बन जाये। और 1636 में घोषणा को इस शर्त पर दर्ज किया कि यह अपने कार्यक्षेत्र को रुचि और भाषाविज्ञान के मामलों तक सीमित रखेगी। वित्तीय घोषणाओं के अवरोधन के कारण रिशेलू को सन् 1635 में पार्लियामेन्ट को निर्बल बनाने का एक और तरीका निकालना पड़ा। पार्लियामेन्ट के कौंसलर का पद मूल्यवान और बेचने योग्य विशेषाधिकार था। दिसम्बर 1635 में फ्रांस द्वारा युद्ध छेड़ देने के कारण धन की आवश्यकता थी। इसलिए रिशेलू ने कौंसलरों के चौबीस पद और बढ़ा कर तथा उन्हें बेचकर धन इकट्ठा कर लिया और साथ ही इन्हें दुगुना करके इस विशेषाधिकार को कमजोर कर दिया। यह उपाय कुछ अगुआ सदस्यों को देश निष्कासन और कैद किये बिना पारित न हो सका। फिर यह समझौते द्वारा नये कौंसलरों की संख्या घटाकर अट्ठारह कर दी गई। यह प्रयोग 1637 में फिर दोहराया गया और इसके बाद यह कार्डिनल के विरुद्ध शिकायत का कटुतम विषय बना रहा। संसद का अन्तिम तौर पर अपमान 1641 में हुआ जबकि पार्लियामेन्ट को न्यायिक मामलों तक और राजनीति में केवल पूछने पर सलाह देने तक सीमित रहने का आदेश दिया गया। यह एक ऐसा आदेश था जिसने पार्लियामेन्ट की नजरों में राजनैतिक शक्ति के लोभ को सदा लटकाये रखा। इससे फ्रांडे में राजकीय मामलों में हस्तक्षेप करने के कारणों को समझने में सहायता मिलती है। रिशेलू का यह कार्य निश्चित रूप से लुई चौदहवें के राज्य में पूरा हुआ जब पार्लियामेन्ट प्रभुसत्ताधारी सदन न रही।

पे देंता पर गृद्ध दृष्टि

रिशेलू प्रान्तीय जागीरों के मामले में अधिक सफल नहीं रहा यद्यपि उसे उनसे पार्लियामेंट की अपेक्षा कम भय था। लेंगुएडोक, ब्रिटेनी, बंगडी, प्रोवेंस और

---

1 संसद जहां पहिले राज्य घोषणाओं की पुष्टि करती थी तथा महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने में हिस्सा बंटाती थी....उसी को अब यह आदेश दिया जा रहा था कि वह राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप न करे। (कोर, वेनिटन राजदूत, 1641, रिलेजिनी डिगली एमबेसीटोरी वेनिटी सं० बरचेट अ बरोजी (फ्रांस) 2,341)।

डाफिन पे देंता इटैट्स थे। इनमें नारमंडी भी सम्मिलित की जा सकती है। यह जागीरों के सम्मेलन 1655 तक करती रही किन्तु यह घृणित एल[1] के अधीनस्थ थी और इसीलिये वास्तव में पेदें लेक्शिआं थी। प्रान्तीय एता प्रजातांत्रिक तत्वों से बहुत परे थे; वे बुर्जुआ और स्थानीय वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे। वे लम्बे समय के बाद मिलते थे, और यद्यपि उन्हें कुछ वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त थी और वे सरकार के साथ मिलकर मिश्रित धन से, जो उन्हें टेली के रूप में अदा करना होता था, सौदा कर सकते थे किन्तु उनमें व्यावहारिक रूप में कोई कार्य करने की बुद्धि न थी।[2] मोटेस्क्यू[3] के बाद पे दें लेक्शिआं इलेक्शन की तुलना में पे देता इटैट्स की प्रशंसा करने का रिवाज सा चल पड़ा, किन्तु यह भुला दिया जाता है कि स्थानीय राज्य लोकप्रिय न होकर अल्पजनों द्वारा शासित थे, और पेदें लेक्शिआं इलेक्शन में साहसी और योग्य इन्टेन्डेन्ट ऐसे सुधार कर सकते थे जो मरणासन्न और प्रतिक्रियावादी सभाओं वाले प्रान्तों में असम्भव थे। किन्तु वास्तविक स्वेच्छाचारी शासक सभ्यता चाहता है, और रिशेलू को 'एता प्राविन्सिआ' इसलिये अप्रिय नहीं थीं कि वे उसे कष्ट पहुँचाती थीं अपितु इसलिये कि वे एक ऐसे युग की स्मृतिचिन्ह थीं जिसमें फ्रांस का राजा 'प्राइमस इन्टर रीज' (समान में प्रथम) से कुछ अधिक था। हो सकता है कि लेंगुएडोक, बर्गण्डी और प्रोवेंस पर सरकारी न्यायाधिकरण या 'चुनाव' थोपने के प्रयत्न में उसका कोई और भी उद्देश्य हो– प्रस्ताव को त्यागने के बदले में धन लेना। किन्तु 1630 में डिजोन के शराब के अंगूर उगाने वालों में विद्रोह हुए जब 'चुनाव'[4] प्रस्तावित किये गये ये ऐसी धमकियां थीं जिससे हो सकता था कि मंत्री आगे की कार्यवाही करना छोड़ देता। ब्रिटैनी की स्टेट्स रिशेलू की नीति के प्रति सबसे अधिक अनुकूल थी और इस प्रांत में व्यापारिक कम्पनियां[5] स्थापित की गई, जैसे कि पश्चिमी द्वीप में की गई थी, जिनसे स्थानीय समृद्धि में भारी उन्नति हुई। केवल प्रोटेस्टेन्ट प्रान्त डाफिन को (1628) अपनी स्थानीय एस्टेट्स से हाथ धोना पड़ा। नारमंडी की एस्टैट्स का 1655 में अन्त हो गया क्योंकि डेप्युटी लोग काम करने में असफल रहे। अन्यथा

---

1 देखिये अध्याय 1

2 केलट, **पूर्व उद्धृत**, 204 एफ एफ।

3 **द सिप्रेट द लाज**, 13, अध्याय 12।

4 केलट, 271। रिशेलू के द्वारा 'चुनाव' को लागू करने के प्रयत्नों का भारी विरोध किया गया, देखिये द अवेनल, **रिशेलू ए ला मोनार्की आंब्सोल्कू** 4, 182।

5 17वीं शताब्दी की फ्रांसीसी व्यापारिक कम्पनियों के लिये देखिये **बोनेस्क्स लेस ग्रेंडस कम्पनीज द कामर्स**, 3।

प्रान्तीय एस्टेट्स फ्रेंच क्रान्ति तक कायम रही और राजनीतिक आदर्शवादियों को यह सिद्ध करने के लिये कि फ्रांस में अब भी संविधान के कुछ चिन्ह हैं, मसाला देती रही।

पेम्फलेट और "राज्य की विवेक बुद्धि"

(ङ) प्रेस, पुलिस और जनमत–

प्रत्येक योग्य स्वेच्छाचारी शासन में यह तीनों एक विभाग के अन्तर्गत होते है। रिशेलू का जीवनकाल उस युग के अन्तर्गत आता है जब फ्रांस और इंगलैण्ड में समाचार पत्र अपनी प्रारम्भिक अवस्था में प्रकाशित होने लगे थे। कार्डिनल छपे शब्द की अमित सम्भावनाओं को भली प्रकार समझता था।[1] **गजट और मरक्यूर** पत्रों पर उसका पूरा नियन्त्रण था। ये पत्र ऐसी सरकारी खबरों का प्रकाशन करते थे जिनका प्रकाशन उचित समझा जाये और वे मंत्री की नीति को न्याय संगत ठहरायें। किन्तु समाचार पत्र की अपेक्षा पेम्फलेट अभी तक साहित्यिक समर्थन सबसे अधिक प्रभावशाली अस्त्र थे। और यदि इन पत्रों में रिशेलू की कठोर आलोचना होती थी तो उनका पास में रखना भी खतरनाक था। वह इस बात का ध्यान रखता था कि वह ऐसे पेम्फलेट निकालने वालों को जिन्होंने उसके कार्यों के पक्ष में लेख छापना अपना व्यापार बनाया था, आर्थिक सहायता देता रहे। तीस वर्षीय युद्ध में सम्मिलित होने से पूर्व उसने हैप्सबुर्गों के विरूद्ध फ्रांस की शिकायतों को कुछ उत्तेजक नीति-घोषणापत्रों में छपवाकर जनमत को अपनी ओर किया। यह प्रचार विदेशी नीति[2] सम्बन्धी मामलों तक ही सीमित नहीं था, क्योंकि **लेब्रे की द–ला सूबरैनेटी द रवा** (1632) नामक पुस्तक में दैवी सिद्धान्त की पूर्ण व्याख्या की गई है। लेब्रेट के मतानुसार केवल राजा पर ही विधि निर्माण ओर उसका अर्थ निरूपण करने का उत्तरदायित्व है, किन्तु उदाहरण के तौर पर

---

1 इसके लिये देखिये, **लै आइडीस पोलिटिक्स ऑन फ्रांस**, अध्याय 2, रिशेलू के प्रचार का रोचक विवरण फेग्नीज के दोनों ग्रंथों में भी पाया जाता है। **ला पेरा जोसफ एत रिशेलू**। पेग्नीज़ कृत **ल ओपनियन पब्लिक एत ला प्रेसे सो लुई तेरहवां, (रिव्यू द हिस्तोरे डिप्लोमेटिक**, 1900, 352–401)।

2 कुएसशन्स डिसाइंग्स सुर ला जस्टिस दे आर्म्स दे रोइस द फ्रान्स (1634) में रिशेलू की नीति के साथ केथोलिक सिद्धान्तों के समन्वय करने की चेष्टा की गई है। इन पत्रों में लोरेन, मिलान, रोसिलन, सेवाय और यहां तक कि गनोआ पर भी फ्रांस के प्रमुत्व का दावा किया गया। तत्कालिक समय के लिये फेन्कन और फेन्सन को सरकारी प्रचारक के रूप में रख लिया गया था। फेंकन के लिये देखिये. गेले, **फेंकन ए ला पोलितिक द रिशेलू** 1617–1627।

वह प्रस्ताविक विवेयक को अपनी कौंसिल, एस्टेट्स और पार्लियामेन्ट के पास उनकी औपचारिक अनुमति के लिये भेज सकता है, यद्यपि वह इसके लिये बाध्य नहीं है। युद्ध घोषित करना अथवा संधि के लिये बातचीत आरम्भ करना राजा का काम है, किन्तु इसके आगे भक्तिपूर्ण ढंग से उसने यह और जोड़ दिया कि तमाम युद्ध न्यायसंगत होने चाहिये और चतुराई से लड़े जाने चाहिये। इस लेखक के अनुसार प्रभुसत्ता पर इतनी ही पाबन्दी है कि राजा अपनी प्रजा की जायदाद नहीं लेगा.... यह आरक्षण भी अगले शासन में वापिस ले लिया गया।[1] राज्य की विवेक बुद्धि को ऐसे कार्यों को न्यायपूर्ण बनाने के लिए प्रयोग में लाया गया है जो अन्यथा अनैतिक दिखाई दें। राजा अपनी संधियों से बंधा नहीं होता और न ही उनको अपने पूर्वजों के ऋण चुकाने के लिये बाध्य किया जा सकता है। ऐसी ही धारणाओं की व्याख्या एक अन्य अर्ध सरकारी पुस्तक बामजक लिखित प्रिन्स (1631) में की गई। पुस्तक का नाम मेकियावेली की ओर सकेत करता है और उसके परिच्छेद ऐसे लगते है जैसे इल प्रिंसिप का अनुवाद हो। यह काम राजा का है कि वह राज्य के हित के लिये जब आवश्यकता हो तो प्रबल प्रतिकार करें। भारी कर लोगों के लिये इतना ही लाभप्रद हो सकता है जितना सूजे हुए शरीर में जोंकें लगाना। शासक के लिये आवश्यक नहीं कि खतरे के सिर पर आने तक की प्रतीक्षा करे, वह साधारण शंका पर आवश्यक कदम उठा सकता है। रिशेलू और उसके आज्ञाकारी लेखक प्रचारकों के जत्थे ने इन तरीकों से लुई चौदहवें के राज्य का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

रिशेलू लेखक के रूप में

कार्डिनल स्वयं लिखा करता था। बहुत से अध्यात्म सम्बन्धी भाषाओं के अतिरिक्त उसने कुछ 'मेक्सिम्स देंता'[2] संकलित किये। सम्भवतः उसने टेस्टामेंट पोलितिक लिखी जो उसके नाम से प्रकाशित हुई और यदि उसने अपने संस्मरण स्वयं नहीं लिखे तो सम्भवतः उसने लिखवाये हैं।[3] जहां तक राज्य के सिद्धान्तों का सम्बन्ध है, रिशेलू के सामान्य विचार, जिनकी व्याख्या इन संकलनों में है, निम्न-लिखित सामान्य तथ्यों में बांटे जा सकते हैं—

(१) अराजकता का एक मात्र विकल्प निरंकुश राजतँत्र है।

---

1 लुई चौदहवें के इस दावे के लिये कि 'राजा अपनी प्रजा की सम्पत्ति का स्वामी है' उसके **मेमोयार्स** देखिये। **मूल** पृ० 320 भी देखिये।

2 हेनोटोक्स द्वारा इनका प्रकाशन **मेलेंगेज हिस्टोरिक्स** 3, 705 एफ एफ **कलेक्शन दे डोक्यून्टस इनेडिरस द लहिस्टोरे द फ्रान्स** में किया गया है।

3 देखिये **रिव्यू दे कुएशन्स हिस्टोरिक्स**, अक्टूबर, 1928।

(2) कुलीन वर्ग को महत्वपूर्ण राजकीय पदों से बहिष्कृत कर देना चाहिये किन्तु उन्हें अपना जीवन राज्य की सेवाओं में सैनिक कार्यों में लगाना चाहिये।

(3) मंत्री को अनुमान के आधार पर आवश्यक कदम उठाने के लिये तैयार रहना चाहिये जबकि व्यक्तिगत रूप में उसे पूरा सबूत देने के लिये तैयार रहना चाहिये।

(4) यह श्रेयस्कर है कि जहां राज्य की सुरक्षा को खतरा हो वहां यदि थोड़े व्यक्तियों को, चाहे वह अन्यायपूर्ण ही क्यों न हो, कष्ट उठाना पड़े तो उन्हें कष्ट सहन कर लेना चाहिये।

(5) दमन और भारी कर, यदि वे सीमित हों तो, जनसाधारण के लिए अच्छे हैं, ठीक वैसे ही जैसे खच्चर और बोझ ढोने वाले पशुओं को काम के योग्य रखने ने लिए लगातार कार्यव्यस्त रखना चाहिए।

(6) जब तक बुद्धिमान मनुष्यों की अपेक्षा मूर्ख व्यक्ति अधिक हैं तब तक बहुसंख्यक लोग अपने सर्वोत्तम हितों को नहीं समझ सकते। यह एक व्यक्ति के निरंकुश शासन के पक्ष मे अन्तिम दलील है, जो अपनी सर्वप्रधान स्थिति के कारण राज्य के प्रत्येक तत्व के वास्तविक हितों की कल्पना कर सकता है।

(7) ईसाई धर्म, आज्ञापालन और अधीनता के कर्तव्य पर बल देने के कारण शासित वर्ग में सामान्य सिद्धान्तों के आदर्श के पक्ष को प्रस्तुत करता है, परन्तु इस प्रकार के लाभ के लिए एक ही रूप की ईसाइयत को प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

रिशेलू की पुलिस प्रणाली

जब प्रचार इस प्रकार की उद्देश्य पूर्ति में असफल रहा तो रिशेलू की पुलिस प्रणाली आगे बढ़ी। हमने पहले बतलाया है कि रिशेलू राज्य के कैदियों के विरुद्ध कार्यवाही के लिये सामान्य न्यायालयों पर अवलम्बित न था। उसने निजी रूप से 1631 में विशेष न्यायाधिकरण की स्थापना की थी।

---

1 कुल मिलाकर इस संबंध में रिशेलू अपने समकालीनों की अपेक्षा अधिक जागरुक था, वह बल प्रयोग में विश्वास नहीं करता था। यद्पि ब द में फ्रांसीसी जनमत ने बलप्रयोग का समर्थन करना आरम्भ कर दिया। जो यह विश्वास करते हैं कि एक युवराज को धार्मिक मामलों में बल का प्रयोग नहीं करना चाहिये....वे गलती पर हैं। (बोसट, **पोलितिक तिरी देस प्रोपर्स पेरोल्स....7,3,10**)।

चेम्बर द ल आसनल अर्धरात्रि में वध करने के लिए कुख्यात था। अगर सामान्य न्यायालय को प्रयोग में लाना होता था तो कार्डिनल ऐसे जजों को, जिन पर स्वतंत्र विचार का संदेह होता था, पदोच्युत करके आज्ञा पालन करवा लेता था। और जब उसने टूलोज की पार्लिमेन्ट को 1632 में मोंटमोरेंसी की जांच करने के लिए बाध्य किया, तो उसने एक सरकारी अफसर शात्यनिवूफ, जो राज-मुद्रा का रक्षक था, को इस मामले में पार्लियामेन्ट के व्यवहार पर अध्यक्षता करने के लिए भेजा। इसके अतिरिक्त उसने इन्टेन्डेन्ट्स से भी काफी काम लिया।[1] प्रारम्भ में इन्टेन्डेन्ट्स की नियुक्ति सम्भवतः पक्षपातपूर्ण स्थानीय क्षेत्राधिकार के अविवेक और भोलेपन से व्यक्ति को बचाने के लिए और उसकी अधिक शक्तिशाली लोगों की शक्ति के दबाव से रक्षा करने के लिये की गई थी। वे केवल सरकार के प्रति उत्तरदायी थे। पहले वे प्रान्तों में पुलिस इन्स्पेक्टरों और कभी कभी गुप्तचरों के रूप में जाते थे किन्तु समय गुजरने पर वे अपने प्रान्तों में व्यस्त प्रशासकों के रूप में स्थापित हो गये। फ्रांडे के दिनों में इन्टेन्डेन्ट्स का दमन किया गया किन्तु कोल्बर्ट ने इस प्रणाली को फिर चालू कर दिया।

फ्रेंच अकादमी की स्थापना

साहित्य के क्षेत्र में भी रिशेलू के प्रशासन की एकरूपता और विशिष्ट केन्द्रीकरण का पता चल जाता है। फ्रेंच अकादमी 29 जनवरी 1635 की घोषणा द्वारा स्थापित की गई थी या कह सकते हैं कि नियमित की गई थी और इस प्रकार आलोचकों और उत्साही शब्दशास्त्र-विशेषज्ञों के एक छोटे से दल को जो वेलेन्टाइन कोंरार्ट के घर में एकत्र हुआ, सरकारी दर्जा प्राप्त हो गया। अकादमी ने, कार्डिनल के प्रोत्साहन से, फ्रांसीसी भाषा का एकस्तरीयकरण करने के लिये एक शब्दकोष तैयार करने का कार्य शुरू किया। यह कार्य 1694 से पूर्व पूरा न किया जा सका। गद्य और पद्य लिखने के नियमों का संग्रह करने के प्रयास में अकादमी को अधिक सफलता न मिली किन्तु साहित्यिक रुचि के न्यायाधिकरण के रूप में यह स्थायी रही।

रिशेलू और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था

रिशेलू सबसे महान् युद्ध-मंत्री था और फ्रांसीसी सेनाओं के लिए जो धन लिया जाता था वह लोगों के लिये बहुत कष्टदायक होता था। नार्मण्डी में 'न् पिडिस' का विद्रोह (1639) असह्य निर्धनता के कारण हुआ था और प्रथम मंत्री द्वारा थोपे गये कठोर राजस्व से भी असम्बन्धित न

---

1 देखिये हैनोटोक्स, **ओरिजिन द ल इन्स्टीट्यूशन देस इन्टेन्डेन्टस द प्रोविनसेज।**

था । विद्रोह ऐसी पाशविकता से दबाया गया जो ऐसे लोगों में पाई जाती है जो छोटे स्तर के लोगो के जीवित रहने के अधिकार पर संदेह करते हैं । रिशेलू के प्रशासन में बजटों के ब्यौरे से वर्तमान मुद्राप्रसारण के रूप में कुछ ज्ञात नही होता, किन्तु यह उल्लेखनीय है कि कार्डिनल की वित्त अथवा व्यापार में रुचि न थी ओर उसकी नीति में निश्चित आर्थिक लक्ष्यों को सिद्ध करने के प्रयत्न बिल्कुल निरर्थक हैं । जब तक उसे सेना और राजस्व मिलता रहता तब तक तो उसने यह भी विचार नहीं किया कि वह फ्रांस के सर्वोतम साधनों को समाप्त कर रहा था या नहीं, धन इकट्ठा करना के तरीकों की न्यायोचितता पर विचार करना तो दूर की बात है । यदि कभी उसने आर्थिक समस्याओं पर विचार किया भी हो तो उसके विचार अपने समकालीनों से न भले थे न बुरे । यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि उसके शासन के पिछले चरणों मे बहुत से गांव उजड़ गये और वहां के निवासियों को खानाबदोशी जीवन बिताने के लिए बाध्य होना पड़ा । जब वह अपनी सब शक्तियों को समस्त यूरोप पर फ्रांस का आतंक जमाने के कार्य में केन्द्रित कर रहा था, वह यह न देख सका कि इंग्लैड और हालेंड, स्पेन और पुर्तगाल से औपनिवेशिक प्रधानता छीन रहे थे । देश का भविष्य सबसे बड़ी सेनायें रखने अथवा क्रूर कार्यकुशल कार्यपालिका रखने से नहीं बनता अपितु समुद्र पर अधिकार करने और सरकारों द्वारा प्राकृतिक साधनों का विकास करने से, जिसमें जनमत भी कुछ भाग ले, अच्छा बनता है । महान् औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित करने के लिए साहस और कुर्बानी के गुण होने चाहिये जिनकी पूर्ति प्रशासनिक गुणों से नही की जासकती चाहे वे कितने भी अच्छे क्यों न हों । रिशेलू ने शासन किया परन्तु वह रचनात्मक कार्य नहीं कर सका ।

रिशेलू की मृत्यु : उसका उत्तराधिकारी

कार्डिनल का देहान्त 4 दिसम्बर 1642 को हो गया और लुई तेरहवां 14 मई 1643 को चल बसा । सैनिक मामलों को छोड़कर लुई ने राजा के रूप में अपने कर्तव्यों में कोई विशेष रुचि नहीं ली और तमाम उत्तरदायित्व और नये काम अपने मत्री पर छोड़ दिये । रिशेलू फादर जोजेफ को अपना उत्तराधिकारी बनाना चहता था, किन्तु उसकी 1639 में मृत्यु हो गई और उसके बाद जुलूस मैजारिन को जो पहले से कार्डिनल था, प्रथम मंत्री के कार्यवाहन के लिए नियुक्त कर दिया गया । मैजारिन ने योग्यतापूर्ण ढंग से रिशेलू की विदेशनीति को जारी रखा और वह स्पेन के पतन और फ्रांस की विजय तक जीवित भी रहा, किन्तु उसका आन्तरिक प्रशासन उसके पूर्वाधिकारी से बहुत अधिक कष्टपूर्ण था ।

आस्ट्रिया की एन की रीजेंसी

लुई तेरहवां एक पंच वर्षीय बालक के लिये सिंहासन छोड़ गया और उसके

वसीयतनामे के अनुसार आस्ट्रिया की एन को अधिक से अधिक सीमित अधिकार देकर रीजेन्ट नियुक्त कर दिया गया। एन को एक कौंसिल की सलाह पर काम करने का अधिकार था, जिसमें वह स्वयं, ओर्लियां का ड्यूक, (जिसने राज्य के लैफ्टीनेन्ट गवर्नर की उपाधि प्राप्त कर ली थी), कोण्डे का राजकुमार, और मैज़ारिन थे जिनके सहायक अफसर चांसलर सेगूइर, वित्त के सुपरिन्टेन्डेन्ट बोथिलियर और राज्य के मन्त्री शेविग्नी जैसे व्यक्ति थे। इस समय तक मेजारिन रानी का प्रेम-पात्र बन गया था।[1] उनके हित व्यावहारिक रूप में लगभग समान थे और वे रीजेंसी कौंसिल से मुक्ति पाने के लिये एक बार आपस में मिल गये यह कार्य कठिन नहीं था, क्योंकि ओर्लियां और कोंडे एक-दूसरे के प्रति बहुत ईर्ष्यालु थे, वे केवल मेजारिन और कौंसिल के सरकारी सदस्यों को नापसन्द करने में एकमत थे। अपने योग्य सहयोगी की उकसाहट में आकर एन ने अपनी असली आकांक्षा को छिपा लिया और मेजारिन को पदच्युत करने की चर्चा करने लगी और बियुफोर्ट के ड्यूक जैसे बदनाम व्यक्तियों (जो अपनी बदजुबानी के लिये प्रसिद्ध था) के साथ पक्षपात करके कौंसिल के प्रत्येक व्यक्ति को एक दूसरे के विरूद्ध कर दिया और काफी होशियारी से कोडे और ओर्लियां को पार्लियामेन्ट के समक्ष उसे रीजेन्सी के पूरे अधिकार देने का प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए तैयार कर लिया। पार्लियामेन्ट ने जो एक एक बार फिर राजनीतिक कार्य हस्तगत करना चाहती थी, इस प्रार्थना को मन्जूर कर लिया। ज्यों ही वह पूरी रीजेट बनी उससे इटेलियन को अपना प्रथम मन्त्री नियुक्त कर दिया। तब कौंसिल की आंखें खुलीं कि उसे मूर्ख बनाया गया। फ्रांस के इतिहास में वह पहली घटना नहीं थी जब स्त्री की चतुराई ने पुरुष की शक्ति पर विजय प्राप्त की। आने वाले वर्षों में ऐसे कई अवसर आये जब इस तरह असमान संघर्षों में स्त्री की विजय हुई।

मेजारिन का चरित्र

इस प्रकार रिशेलू की तरह, मेजारिन ने स्त्री के कन्धों पर बैठकर प्रसिद्धि प्राप्त की। दोनों में तुलना मेजारिन के विपक्ष में जाती है। इतिहासज्ञों का झुकाव फ्रांस के समकालीन संस्मरण-लेखकों के फैसले की ओर है। वे यह भूल जाते हैं कि इनमें से अधिकांश संस्मरण कार्डिनल के ही शत्रुओं द्वारा नहीं लिखे गये थे

---

1 यह अभी भी विवादास्पद है कि मेजारिन ने गुप्त रूप से आस्ट्रिया की एन से विवाह कर लिया था अथवा नहीं। हेनोटोक्स (इट्टडस क्रिटिक्स सुरल, 227) का विश्वास था कि वह गुप्त रूप स विवाह कर चुका था। मैजारीन के पत्रों का संपादक, शेरुएल, निर्णय को स्थगित करना चाहता था। एन की पुत्रवधू, डचेज आफ ओर्लियाअस ने घोषणा की कि विवाह सम्पन्न हो चुका है।

अपितु ऐसे लोगों द्वारा भी लिखे गये थे जो कानून और व्यवस्था की हर एक प्रणाली के शत्रु थे। फ्रांसीसी इटेलियन की किसी भी बात पर विश्वास करने के लिये तैयार थे। द रेज ने अफवाह फैलाई कि कार्डिनल बचपन में ठबकतरा था, जबकि अधिक गम्भीर लांछन यह था कि वह छोटी जाति का था, जिसको उस समय भी ऐसे ही माना जाता था जैसे अब। सच्चाई यह है कि मेजारिन अपने यौवन में जुआरी था और उसका जुआ खेलना अनुचित हो सकता था किन्तु वह चोरी के अपराध में कभी दण्डित नहीं हुआ था। दूसरे अभियोग के सम्बन्ध में उसे अपनी वंश परम्परा पर लज्जित होने का कोई कारण नहीं था क्योंकि मातृ-पक्ष की ओर से वह कोलोना परिवार से था।[1] वह चर्च की ओर इसलिये आकर्षित हुआ क्योंकि इससे कूटनीतिक पेशे में जाने का अवसर था। पेपल नन्शिओं के रूप में उसने मंटुअन उत्तराधिकार की जटिल वार्ता में यह कला सीख ली थी और चेरास्को की संधि मुख्यत: उसी ने करवाई थी।[2] फ्रांस में पोप के प्रतिनिधि के रूप में रहते हुए उसने अपने गुणों के अन्य प्रमाण दिये इसके अतिरिक्त रिशेलू को, जो मनुष्यों की बहुत अच्छी पहचान करता था, अपना उत्तराधिकारी बताने के लिये मेजारिन की योग्यता में तनिक संदेह न था। यदि दोनों के अन्तर पर ध्यान दिया जाये तो यह चुनाव बड़ा अजीब-सा लगता था। फ्रांस का व्यक्ति स्पष्ट वक्ता बात पर अड़ने वाला और हमेशा अपनी प्रतिष्ठा का ख्याल रखने वाला था जबकि इटेलियन समझौता पसन्द और एंठवाला, नम्र और धोखेबाज, बदले की भावना वाला और व्यंगोक्ति करने वाला था। वह अपनी कार्यसिद्धि सम्मुख आक्रमण न करके अपने शत्रुओं को एक दूसरे से भिड़ाकर करता था। वह बड़े से बड़े अपमान को पी सकता था अप्रच्छन्न रूप से अपनी स्वीकृत देश की कीमत पर स्वयं तथा अपने सम्बन्धियों को धनवान् बना सकता था। धन इकट्ठा होने पर उसके कंजूसी के तमाम घृणित दोष स्पष्ट हो गये।[3] रिशेलू ने अपने और फ्रेंच राजा के लिए एक बड़े महल का निर्माण कराया था, जो पहले पैलेस कार्डिनल कहलाता था और

---

1 देखिए कोसीं लिखित ल ज्यूनेस द मेजारिन, अध्याय 1, और लेटर्स द कार्डिनल मेजारिन (कलेक्शन्स द एक्यूमेनम्स इनएडिटस सूरल हिस्तोरे द फ्रांस) 1, भूमिका।

2 देखिये अध्याय 4। इस समय की घटनाओं का पूरा विवरण (1629-1631) कोसीं के द्वारा दिया गया है। पूर्व उद्धृत, अध्याय 4, 5, 6।

3 ला रोचे फोकेल्ड ने उसके सम्बन्ध में कहा है—"इल अवे द पेतीत व्यूमीम दांन्स सेस प्लू ग्रान्द प्रोजेर्स" शेरुएल द्वारा उद्धृत, हिस्तोरे द फ्रांस पेनडेन्द ला माईनारिटे द लुई चौदहवां, 1, 15।

अब पैलेस रायल कहलाता था। मेजारिन जवाहरात और बहुमूल्य रत्न हजम कर गया। उनका अन्तर यहीं समाप्त होता है। दोनों अपनी लक्ष्यसिद्धि प्राप्त करने के लिये फ्रांस में निरंकुशता स्थापित करने के लिए, उचित–अनुचित सब कुछ कर सकते थे, दोनों परम्पराओं और बंधनों में न फंसकर शासक की सोलहवीं शताब्दी की धर्म निरपेक्षता की धारणा में पूर्ण विश्वास रखते थे। दोनों को फ्रांसीसी कुलीनों में फैली हुई अराजकता का मुकाबला करना पडा। सत्रहवीं शताब्दी के यूरोप में फ्रांस को महानतम शक्ति बनाने का श्रेय दोनों को बराबर है, और यह रिशेलू के मानवचरित्र के गहन अध्ययन का प्रमाण है कि उसने फ्रांस के भाग्य की बागडोर ऐसे व्यक्ति को सौंपी जो उससे बहुत भिन्न मालूम होता था।

इम्पोरटेंट

कुलीन वर्ग ने मेजारिन को उस चालबाजी में भाग लेने के लिए, जिससे वह और एन प्रभुत्वशाली बन गये, कभी क्षमा नहीं किया। उसके बाद उन्होंने अपने सब प्रयत्न मन्त्री को पदच्युत करने में लगा दिये। उनके षड़यन्त्रों का प्रथम आभास उस समय हुआ जब उन्होंने 1643 में बिथोफोर्ट (जो नाममात्र का नेता था क्योंकि वह हेनरी चौथे[1] का पौत्र था) के नेतृत्व में, और शेव्रूज की डचेस द्वारा जो स्पेन की नौकरी में सबसे होशियार गुप्तचर स्त्री थी,[2] संगठित, एक 'इम्पोरटैन्टंस' नामक दल बनाया। षडयन्त्रकारी 'इम्पोरटैन्टस' कहलाते थे, क्योंकि उन्होंने रहस्यमय और प्रभावोत्पादक ढग बना रखा था। कहने को उनका लक्ष्य बियुफोर्ट को ब्रिटेनी दिलाने का था, किन्तु वास्तव में वे कुलीनवर्ग को वही रियायतें वापस दिलाना चाहते थे जो रिशेलू ने समाप्त कर दी थीं और फ्रांस की विदेशी नीति को पलटकर अंग्रेजी पार्लियामेन्ट के विरूद्ध चार्ल्स प्रथम को सहायता करना चाहते थे। मेजारिन ने बियुफोर्ट को गिरफ्तार (सितम्बर 1643) करा कर अपने आपको कत्ल होने से बचाया और उसके साथी अपने षड़यन्त्रों को चालू रखने के लिये पेरिस से दूर सुरक्षित स्थान पर चले गये। इस समय तीस वर्षीय युद्ध में फ्रांसीसी सेनाओं की शानदार विजयों ने घरेलू राजनीतिक प्रश्नों से ध्यान हटा दिया और बहुत से कुलीनों को अस्थायी नियुक्तियां हो गईं।

वित्तीय कुशासन

ऐसी सामरिक सफलता जिससे युद्ध का अन्त निकटस्थ नहीं होता लोगों को

---

1 यह ड्यूक द वेनडोम का पुत्र था, जो कि हेनरी चतुर्थ का वास्तविक पुत्र था।

2 इस समय की मेडम द शेव्रूज की गतिविधियों का विस्तृत विवरण कोजिन द्वारा लिखित मदाम द शेव्रूज, 114–198 में दिया गया है।

बहुत जल्दी निरुत्साहित करती है, और जब युद्ध धीमी गति मे लम्बा खिंचता गया तो लोगों का ध्यान मैजेरिन के प्रशासनिक दोषों की ओर गया।[1] अपने पूर्ववर्ती की तरह कार्डिनल को फ्रांस के उद्योग या व्यापार में कोई रूचि न थी और युद्ध के दस वर्षो के बजट के बाद फ्रांस का कोष केवल खाली ही नही हो गया अपितु तीन वर्ष की अनुमानित आय की पेशगी आने पर अवलम्बित था। कुलीन वर्गों को उपाधियां बेचना, नये पद बनवाना और करदाता किसानों के नये ग्राहकों से पेशगी कर लेने के तमाम पुराने तरीके अपनाये गये। ये सामान्य तरीके थे, किन्तु जनसाधारण के क्रोध का कारण नये करों का आरोपण था, जबकि अफसर लोग मैजोरिन की देखा देखी निजी सम्पत्ति के सग्रह करने में लगे हुए थे। वित्त के अन्यायी अधीक्षक दे' गरी ने पेरिस की दिवारों के ठीक बाहर बने हुए तमाम रहने के मकानों पर कर लागू कर दिया। बहाना यह किया गया कि ऐसी इमारतें गैर कानूनी हैं, अपने निर्णय की पुष्टि के लिये उसने पिछली शताब्दी के संविधि को फिर से लागू किया जो लीग के युद्धों में प्रतिरक्षा के अभिप्राय से पेरिस से कुछ दूर तक घर बनाने पर रोक लगाता था। पचास से अधिक वर्षों तक पेरिस आक्रमणों के खतरे से मुक्त रहा क्योंकि शहर की दीवारों के बाहर आसपास बस्तियां बस गई थीं। किन्तु ऐडिट द टोयज के अनुसार अब बस्तियों के निवासियों को या तो कर देना पड़ता या वे अपने घरों को गिरते हुए देखते। इस उपाय का इतना घोर विरोध हुआ कि इसमें काफी सुधार करना पड़ा और सरकार को बलपूर्वक ऋण लेना पड़ा फ्रांसीसी सैनिकों की लगातार सफलताओं के कारण सरकार से निश्चित अवरोध रुक गया और इस प्रकार उन सफलताओं ने मैजोरिन ओर देमरीं को कर के नाम पर लूट की संगठित प्रणाली से राष्ट्रीय भावना को तोड़ने की नीति का अनुसरण करने के लिये स्वतन्त्र कर दिया।

वार्षिक आयः रेन्टीज

फ्रांडे नामक आन्दोलन भड़काने में सरकार द्वारा केवल **रेन्टीज में** हस्तक्षेप करने की आवश्यकता थी। सत्रहवीं शताब्दी के पेरिस मे बुर्जुआ एक बड़ा वर्ग था जिसने अपनी पूंजी का बड़ा हिस्सा राष्ट्रीय **रेन्टीज** में लगा रखा था जो उनको म्युनिसिपल होटल द विले द्वारा बिना कमीशन के दे रखे थे। ऐसे समय में जब राष्ट्रीय बैंकों की स्थापना नहीं हुई थी, आधुनिक सोने के मुलम्मे वाली जमानत के

---

1 इस समय का सबसे अच्छा विवरण शेरुएल कृत **हिस्तोरे द फ्रांस पेन्डेन्ट ला माईनोरिटे द लुई चौदहवें**, 3, 4 फोन्डे के समय मेजारिन द्वारा किया गया अधिकांश पत्र-व्यवहार **लैटर्स द कारडिनल** मेजारिन (डोक्यूमेन्टस् इनेडिटस सूरल **हिस्तोरे द फ्रांस**) खंड 3, 4 और 5 में उपलब्ध है।

तुल्य बच्चों और विधवाओं की ओर से धन लगाने का बड़ा प्रचलन था। दूसरी ओर अत्यन्त साहसी जुआरियों को आकृष्ट करने के लिये यह काफी रोचक सौदा था क्योंकि कभी कभी रेन्टीज से कुल रकम पर 50 प्रतिशत व्याज मिलता था यह इस बात की साक्षी है कि सरकार की साख कितनी गिर सकती थी। यह प्रणाली फ्रांस की अर्थव्यवस्था में पहले पहल 1522 में आरम्भ की गई थी। सली द्वारा संदिग्ध लेखों को अस्वीकार करने और व्याज की दर को घटाने की कोशिश करने पर भी लोगों ने रेन्टीज खरीदना जारी रखा; सन् 1643 में उनकी पूंजी लगभग चालीस लाख पौण्ड स्टर्लिंग के बराबर थी।

इंग्लैंण्ड से तुलना

मैजोरिन और ड द' मरी ने मूल्य कम करने के लिये इस राष्ट्रीय जमानत पर व्याज की अदायगी में हस्तक्षेप किया; जब कीमतें गिर गईं तो उन्होंने बहुत धनराशि खरीद ली, बिना चुकाये हुए व्याज का कुछ भाग अदा कर दिया और जब मूल्य बढ़े तो उन्हें बेच दिया। किसान वर्ग को कुचलना, जिससे वह सिर न उठा सके, सम्भव है किन्तु समृद्धिशाली और शिक्षित बुर्जुवा. को लूटना प्रायः क्रान्ति में परिवर्तित हो जाता है। रेन्टीज में हस्तक्षेप करना पहले फ्रांडे या पार्लियामेन्ट का फ्रांडे के मुख्य कारणों में से एक था। किन्तु इस आन्दोलन को विशेष संवैधानिक महत्व देना या इसकी इंग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट के महान सघर्ष से तुलना करना गलती होगी क्योंकि इसका नेतृत्व एक विशेषाधिकार युक्त कारपोरेशन ने किया जो व्यवहारिक सिद्धान्तों के लिये नहीं अपितु स्पष्ट बातों के लिये लड़ रही थी, जैसे कर में कमी कराना और राष्ट्रीय वित्त प्रशासन में किसी न किसी प्रकार की मौलिक ईमानदारी रखना। मौलिक फ्रांडियर स्वेच्छाचारी गिरफ्तारी से मुक्ति की मांग करने में इगलैण्ड के कामन्स के समान थे, और वे कुछ हद तक निस्संदेह अंगरेजों के उदाहरण से प्रेरित हुए थे किन्तु न तो उनकी परम्परा ऐसी थी और न उन्हें कोई एसा नेता मिला जिसने इंग्लैन्ड के गृहयुद्ध को सिद्धान्तों के झगड़े में में परिवर्तित कर दिया। इसके अतिरिक्त पहला फ्रांडे जल्दी ही दूसरे अर्थात कुलीन वर्ग के फ्रांडे में परिवर्तित हो गया। यह एक ऐसा आन्दोलन था जिसने फ्रांसीसी कुलीन वर्ग में अराजकता की रही सही सब प्रवृत्तियां खुली छोड़ दीं।

पार्लियामेन्ट का विरोध

फ्रांडे शब्द का अर्थ 'गुलेल' है और फ्रांडियर मूलतः पेरिस के गुण्डों के लिये प्रयोग में लाया जाता था जो जाती हुई गाड़ियों में लोगों पर कीचड़ उछालने में आनन्द लेते थे। बाद में इस शब्द का प्रयोग किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिये किया जाने लगा जो किसी दल से सम्बन्धित होने के कारण अथवा सैद्धान्तिक मतभेद होने पर सरकार के विरोधी पक्ष का प्रमुख होता था। जनवरी 1648 में जब रीजेन्ट

ने पार्लियामेन्ट को कुछ वित्तीय घोषणा में दर्ज करने का आदेश दिया तो महाधिवक्ता, ओमरटेलन ने ऐसे शब्दो में विनय की जिनसे विद्रोह का खतरा झलकता था। उसी वर्ष 13 मई को पार्लियामेन्ट ने 'अरे द यूनियन' द्वारा फैसला किया कि चारों प्रभुसत्ता–सम्पन्न सदन–चैम्बर डेस कोम्पटेज, कोर्स डेस एड्स, ग्राण्ड कौंसिल और पार्लियामेंट–सामान्य तरीकों पर निर्णय करने के लिए चैम्बर द सेन्ट लुई में एकत्र हों। आस्ट्रिया की एन मनुष्यों को साधने में तो होशियार थी, किन्तु वह समूर्त अवैयक्तिक खतरे का अनुमान कर लेने में असमर्थ रही। इसलिये सरकार ने रेन्टीज की अदायगी स्थगित कर दी और पौलेट बन्द कर दिया। पार्लियामेंट इस कर को जारी रखना चाहती थी क्योंकि इससे उनके पदों का वंशानुगत होना वैध बन जाता था। जून 1648 में इनके कुछ नेताओं को कैद और देश से निष्कासित करने के कारण पार्लियामेंट में विरोध अधिक तीव्र हो गया। इसी तारीख से फ्रांडे का आरम्भ हुआ।

सरकार की हार

इस बीच में चारों सदनों की सयुक्त सभा की बैठक सुधार की योजना तैयार करने के लिए चैम्बर द सेन्ट लुई मे हुई। व्यत्तिगत स्वतन्त्रता की गारन्टी और इन्टेन्डेन्ट्स को हटाने की मांगों के अतिरिक्त योजना में मुख्यतया वित्तीय प्रस्ताव थे, जैसे एकाधिकार बन्द कर देने चाहिये, विलासिता–सम्बन्धी विदेशी आयात को रोक देना चाहिये, टैली घटना चाहिये, दुर्व्यवहारी लोगों को विशेष न्यायाधिकरण के सुपुर्द करना चाहिये, पार्लियामेंट द्वारा युक्त और अनुचित दबाव के बिना दर्ज किये कोई कर नहीं लगाना चाहिये और रेन्टीज की नियमानुसार अदायगी होनी चाहिये। यदि इन मांगों को स्वीकार कर लिया जाता तो शायद फ्रांस वैधानिक राजतन्त्र बन जाता और रिशेलु द्वारा किया गया बहुत सा काम व्यर्थ हो जाता। मेजारिन की प्रेरणा से एन ने लगभग प्रत्येक बात को स्वीकार करके उस समय की स्थिति को संभाल लिया। यही एक संभव तरीका था, आखिर मेजारिन यह जानता था कि समय से पूर्व मिली सफलता विद्रोह को आसानी से कुचल सकती थी क्योंकि आपत्ति में दी गई रियायतें सुरक्षित काल में प्रायः तोड़ी जा सकती हैं। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की गारन्टी के विषय में कुछ नहीं कहा गया। सरकार केवल उन करों के लिये वचनबद्ध थी जो भविष्य में लगाये जायें।

पाल व गोंदी द्वारा बीच–बचाव

लेंस में कोडे की विजय (20 अगस्त 1648) से मेजारिन विरोधियों को भयभीत करने के लिए अचानक प्रहार करने के लिये प्रेरित हुआ। इसलिए उसने एन को चार्ल्स के दुर्भाग्यपूर्ण उदाहरण पर चलने के लिये प्रेरित किया और

पार्लियामेंट के सबसे प्रमुख नेताओं को जिनमें लोकप्रिय ब्रौसेल भी था गिरफ्तार करने के लिए कहा। गिरफ्तारी के दिन के बाद (27 अगस्त) से पेरिस की गलियों में बाड़ै लगा दी गई और भीड़ को जल्दी ही युवक पाल द गोंदी का नेतृत्व मिल गया जो बाद में पेरिस का आर्कबिशप और कार्डिनल द रेज बना। ही स्वत: नियुक्त नेता गोंदी ने उसने, जिस पक्ष का वह नेतृत्व करता था, उसी पक्ष को किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक नष्ट किया। उसमें कोई योग्यता (विनोदी होने के अतिरिक्त) न थी। उसमें न साहस था और न सिद्धान्त। वह विशेष रूप से खतरनाक था, क्योंकि वह दो आततायी गुटों को--पेरिस की भीड़ जिसकी मदद उसने अपनी चाची के धन से की और फ्रेंच कुलीन का राजद्रोह करने वाला अंग जिसके साथ वह चुनाव और जन्म के कारण संबधित था--जोड़ने वाला था। अपने ही सिद्धान्त वाक्य 'एक आर्कबिशप के दोष एक दल के मुखिया के लिए गुण बन सकते हैं', में विश्वास रखने को कारण उसका उद्देश्य पहले उपद्रवकारियों का नेता बनना, फिर कार्डिनल और अन्त मे रिशेलू के समान अधिकार प्राप्त करके प्रथम मन्त्री बनना था। ऐसे मनुष्यों के हस्तक्षेप के कारण फ्रांड दु:खित और स्वांगभरे भ्रष्ट लोगों का मिश्रित रूप बन गया।

सेंट जर्मन की घोषणा—अक्टूबर 1648

एनएक बार फिर अस्थिरता का प्रदर्शन करते हुए झुक गई जिससे मालूम होता था कि उसने मेजारिन की सलाह से ऐसा किया गया है। ब्रोसल और उसके साथियों को बरी कर दिया गया और लेंस के विजेता युवक आंघिए को, जो अब अपने पिता की मृत्यु[1] के बाद कोंडे का राजकुमार बना, पेरिस बुलाया गया। सेन्ट जर्मन की घोषणा में (22 अक्टूबर) वे सभी सुधार थे जिनकी मांग चैम्बर द सेन्ट लुई ने की थी। दूसरे दिन मुसून्टर के फ्रेंच एजेन्ट सर्वियें को आदेश भेज दिया कि वह फौरन सन्धि कर ले। पार्लियामेंट अब पूर्ण विजयी मालूम होती थी और मेजारिन ने अपने आप को बीच में से बिल्कुल हटा लिया। दो दिन बाद वैस्टफेलिया की संधि पर हस्ताक्षर होने से शान्ति और सुशासन के युग की आशा रखने वाले सब लोगों को यह आरम्भ शुभ मालूम हुआ। मगर यह आकांशा जल्दी ही ठुकरा दी जाने वाली थी, क्योंकि लगभग चार वर्ष के लिए गृहयुद्ध आरम्भ होने वाला था।

पहला फ्रांडे—जनवरी—मार्च 1649

युद्ध की समाप्ति पर फ्रांसीसी सैनिकों को अपने प्रदेशों में नौकरी करने के लिये मुक्त करने और ओर्लियां और कांडे से सहायता का वचन प्राप्त करने के

---

1 1646 में।

बाद एन ने क्षणिक शान्ति के बाद, प्रत्येक रियायत को खत्म करने और पार्लियामेंट पर प्रहार करने का फैसला किया। 5 जनवरी 1649 को एन सेन्टजर्मन चली गई और पार्लियामेंन्ट को मोंटार्गिस जाने का आदेश मिला। यह आदेश युद्ध की घोषणा माना गया। इसलिए कोंडे के बढ़ते हुए सैनिकों के विरूद्ध प्रतिरक्षा के लिए पेरिस को दृढ़ता से संगठित किया गया। जनवरी 1649 के अन्त तक शहर को पूरी तरह से घेर लिया गया और जब दीवारों के बाहर कोंडे घेरे को सकड़ा कर रहा था, उसका भाई कोंटी अपने बहनोई लांगुए विले तथा अन्य साथियों बिउफोर्ट बोइलान औरगोंदी के साथ मिलकर शहर रक्षा करने में जुटा हुआ था। कुलीन वर्ग के साथ यह अनचाही मित्रता उतनी ही गड़बड़ाने वाली थी जितनी बुर्जुवा के लिये विनाशकारी थी, किन्तु इससे जनता को प्रोत्साहन देने में सहायता मिली। छोटी टुकड़ियों ने कभी कभी शहर से बाहर धावे करके युद्ध में सार्वजनिक रूचि बनाये रखी। इन धावों में गोंदी ने तीव्रता के कारण विशेष ख्याति प्राप्त की क्योंकि कोई खतरा आने पर वह तेजी से फाटकों के अन्दर घुस आता था। अधिक कुटिल घटना स्पेनिश दूत का पेरिस में प्रवेश होना थी। विद्रोह की ज्वाला प्रान्तों में फैलने लगी। पार्लियामेंट को भय हुआ कि कहीं उनके साथी कुलीन लोग धोखा देने वाले वार्तालाप में न फंस जायें। इस आशंका ने उसे समझौते का प्रस्ताव रखने के लिए बाध्य किया। मेथियूमोले--प्रजा की स्वतन्त्रता का उग्रहामी और देशभक्त--के नेतृत्व में पार्लियामेंट ने कोर्ट से संधि करना स्वीकार कर लिया और पहले फ्रांडे का रूईल की संधि द्वारा अन्त हो गया, जिस पर 11 मार्च 1649 के दिन हस्ताक्षर हुए जबकि पूर्व स्वीकृत रियायतें प्रमाणित की गईं और पार्लियामेंट द्वारा दर्ज की गईं घेरे का अन्त आतिशबाजी द्वारा बनाया गया। जनता को भुखमरी से बचने पर हर्ष हुआ।

राजकुमारों की गिरफ्तारी–जनवरी 1650

इस स्थिति पर फ्रांडे की संवैधानिक रुचि समाप्त हो जाती है। सैद्धान्तिक रूप में पार्लियामन्ट की विजय हुई, किन्तु कुलीन वर्ग के साथ मेल करने से इसकी स्थिति द्विविधाजनक हो गई। कोंडे की, प्रतिफल के बिना कोर्ट की सहायता करने की कोई इच्छा न थी, और उसने मूर्खता से यह मान लिया कि मैजारिन द्वारा दी गई रियायतें उसकी कमजोरी का प्रमाण थीं। उसे इस बात में तनिक भी सँदेह न था कि उसका जन्म और सेवायें पुरस्कृत करने योग्य हैं, उसकी सेवाओं के बदले प्रथम मन्त्री का पद मिलना बहुत स्पष्ट था। अपनी बहिन और बहनोई (लौगुए) कोएडजुटर (पाल द गोंदी) की उकसाहट से उसने व्यक्तिगत तानाशाही अपनाकर मैजारिन के स्थान पर एक महत्वहीन व्यक्ति जार्जी का नाम प्रस्तावित किया। यह ऐसा अपमान था जिसने एन को इस अहंकारी जनरल का शत्रु बना

दिया। 1649 की ग्रीष्म तक यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि राजतंत्र के असली शत्रु पार्लियामेन्ट नहीं वरन् राजकुमार थे। कोंडे स्वभाव से कठोर और अहंकारी था, सैनिक सफलता से उसका सिर और भी फिर गया, उसके अहंकार से मित्र और शत्रु दोनों असंतुष्ट हो गये। उसने अपनी महत्वकांक्षायें और सैनिक तैयारियां गुप्त रखने की इतनी कम परवाह की कि सार्वजनिक सुरक्षा के हित में उसको हटाना आवश्यक हो गया। इसलिये 18 जनवरी 1650 को मैजारिन ने उसे कोंटी और लौगुएविले सहित गिरफ्तार करा दिया और हेवर के पास भेज दिया।[1] यह दूसरे फ्रांडे या राजकुमारों के फ्रांडे के विद्रोह का संकेत था।

राजकुमारों का फ्रांडे–1650–1652

दूसरा फ्रांडे[2] अधिक समय तक जारी रहा और पहले की अपेक्षा बहुत अधिक दूर तक फैला था। पहला पेरिस के कुछ पास के घेरे तक ही सीमित था। प्रान्तीय गवर्नर के पद कुलीनों के पास थे। उन्होंने अपने वंशानुगत प्रभाव से प्रान्तों को भड़का दिया जब स्पेन से उनकी बातचीत ने एक नया खतरा पैदा कर दिया, विशेषतया तब जब कि ट्यूरेन ने अपने देश से धोखा करके आर्कड्यूक लियोपोल्ड से मित्रता कर ली। 1650 के पूर्व भाग में कोर्ट ने राजभक्त सैनिकों की सहायता से शान्ति स्थापित करने की आशा से सारे देश में भ्रमण किया, किन्तु यह कार्य निराशाजनक रहा, क्योंकि कुलीन वर्ग का प्रभाव फ्रांस के कोने कोने में पहुंच चुका था और जैसे ही ट्यूरेन और उसके स्पेनिश सैनिकों ने पिकार्डी पर धावा बोला, समस्त दक्षिणी–पश्चिमी भाग में विद्रोह भड़क उठा। कोंडे की राजकुमारी ने बोर्दो में अपने आपको स्वतंत्र शासक बना लिया, केवल बुर्जुआ की राजभक्ति ने शहर को स्पेन के हाथों में पड़ने से बचाया। कुछ समय तक मैजारिन निश्चल रहा, किन्तु राजकुमारों की गिरफ्तारी के बाद वह बुर्जुआ और कुलीन वर्ग की मित्रता तोड़ने में सक्रिय रूप से जुटा हुआ था। वह जानता था कि जब तक वह एक दूसरे को भिड़ा सकता था तब तक सुरक्षित था और उसे इस अपनाये हुए देश के ज्ञान से विश्वास हो गया था कि दोनों दलों में, जो अब उसके विरुद्ध एक हो गये थे, मेल की अपेक्षा विरोध के तत्व अधिक थे।

---

1 राजकुमारों की गिरफ्तारी के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई उत्तेजना का विवरण **मेमोयर्स द मेडम द मेटेविले**, 3, 131–141 में उपलब्ध है।

2 दोनों फ्रांडों के मध्य एक गुप्त समझौता हो गया था इसके अन्तर्गत यह तय हो गया था कि वे (1) युवराजों की रिहाई करायेंगे (2) मेजेरिन को हटाकर चेटोनेफ की नियुक्ति करेंगे (3) ओरलियन्स को कौंसिल की प्रेसीडेन्सी प्रदान की जावेगी और (4) कुलीनों से वैवाहिक संबंध स्थापित किये जावेंगे। देखिये कोजिन, **मेडम द लोंग्यूविले देन्डेन्ट ला फ्रोंडे**, 2, 371 एफ. एफ.।

दोनों फ्रांडे मिलाने की चेष्टा

पाल द गोंदी की अभिलाषा 'नोब्लेस़ द रोब' का पद प्राप्त करने और कुलीन वर्ग में प्रभावोत्पादक मित्रता कराने की थी। उसने दोनों को समीप लाने के लिए बहुत परिश्रम किया, क्योंकि दोनों के सयोग से ही मैंजारिन का पा। सम्भव था।[1] मैंजारिन द्वारा उसे कार्डिनल के पद के लिए मनोनीत करने से इन्कार करने पर उन्होंने अपनी गतिविधियों को और तीव्र कर दिया। विरोधी उत्तरदायी और अनुत्तरदायी तत्वों को एक करने की योजना में कोएडजुटर को कुछ होशियार किन्तु कुख्यात स्त्रियों की सहायता प्राप्त थी, जैसे डचेस द शेव्रूज मैंडम द लौगुएविले, गोन्जाग की एन (पेलेटाइन की राजकुमारी) और मेडोमोयसले द शेव्रूज। उसका ख्याल था कि इस प्रकार से उत्पन्न अराजकता से शायद उसकी मूर्खतापूर्ण आकांक्षाओं के लिए मार्ग खुल जाये। इस गुट के उद्देश्यों में विवाह द्वारा मित्रता स्थापित करना भी एक था और जब उन्होंने ओलियां और पार्लियामेन्ट दोनों को मिला लिया तो उन्होंने शक्तियों की वह एकता प्रदर्शित की जिसका मुकाबला करने की मैंजारिन कभी आशा नहीं कर सकता था।[2] उनकी पहली मांग राजकुमारो को बरी करने और प्रथम मत्री को निकालने की थी। एक बार फिर मैंजारिन तूफान के सामने झुक गया और फरवरी के आरम्भ में फ्रांस से भाग गया। राजकुमार 11 फरवरी 1651 को बरी कर दिये गये। पेरिस में विजयी जुलूस में दाखिल होकर, वे लग्जेम्बर्ग की ओर गये, फिर ओलियां के निवास–स्थान पर गये जहां पार्लियामेन्ट और राजकुमारों की एक राष्ट्रीय सभा का आयोजन किया गया। रानी और उसके पुत्र इस समय कैदियों के समान थे और कुछ व्यक्तिगत रूप से खतरे में थे। जिन प्रस्तावों पर लग्जेम्बर्ग की सभा में विचार हुआ उनमें ये थे–स्टेट्स जनरल की बैठक बुलाई जाये, रानी को रीजेंसी से वंचित कर दिया जाये और उसे किसी मठ में भेज देना चाहिए और छोटे लुई चौदहवें पर बीस सदस्यों की कौंसिल का शासन रहे जो तीनों स्टेटों का प्रतिनिधित्व करते हों। फ्रेंच राजतत्र के लिए 1789 की क्रांति से पूर्व सबसे अधिक खतरनाक संकट–काल था जिसमें से इसे गुजरना पड़ा। किन्तु मैंजारिन, जो कोलोन में निर्वासित व्यक्ति था और अब भी पत्रव्यवहार[3] द्वारा फ्रांस पर शासन कर रहा था, यह जानता था कि दोनों फ्रांडे का यह अपवित्र मेल अधिक दिन नहीं टिक सकता।

---

1 मैजेरिन टू ले टेलर (लेटर्स, सम्पादित चेरुएल, 3,976)

2 द्वितीय फ्रांडे में गोंडी की महत्ता के सम्बन्ध में पूर्ण विवरण कोम्टे लाज लिखित ल कार्डिनल द रेटज एत अफेयर ड चेपू में उपलब्ध है।

3 यह पत्रव्यवहार (विशेषत; ल टेलर के साथ हुआ पत्र व्यवहार) लेटर्स, खड 4 में प्राप्य है।

दोनों फ्रांडों में झगड़ा, मार्च–मई, 1651

कुलीन वर्ग और बुर्जुआ में एकता हुए अभी कुछ ही दिन हुए थे कि वे बिखरने लग गये। लग्जेम्बर्ग सभा के प्रथम जोश मे ही ऐसी 'घटनायें' हुई जबकि कुछ डिप्युटियों को **'डिफेनेस्ट्रेशन'** की[1] धमकी दी गई। मैजारिन का सिद्धान्त वाक्य **"सैल्युतेम एक्स इनिमिसिस नोस्ट्रिस"** जल्दी ही पर्याप्त रूप से न्याय संगत सिद्ध होने वाला था। ओर्लियां जिसका एक महत्वपूर्ण स्थान अवश्य था पर व्यक्तित्व न[2] था, अपने मित्रों को मिलाये रखने में सफल न हुआ। वह इस तरह कार्यवाही करता था जिस प्रकार दूसरे स्नान करते हैं–वे आखे बन्द करते हैं और कूद पड़ते हैं। जाति संबधी पक्षपात जल्दी ही प्रकट होने लगे, और जब गोंडी ने फिर किलेब दी करने की बात चलाई तो कोंडे ने गर्व से कहा कि उसने कभी 'नालियों और कमरे के बर्तनों' के युद्ध में भाग नहीं लिया। एन ने, जिसके सौन्दर्य का असर अभी भी होता था, इन दोनों जातियों को बिल्कुल अलग करने के काम में लिया और बड़ी चतुराई से कोंडे के विरुद्ध कोएडजुटर[3] की सहायता लेने का प्रबन्ध कर लिया। मई 1651 तक यह आन्दोलन एक बलवा मात्र रह गया। कोंडे के नेतृत्व में कुलीन वर्ग का एक छोटा सा भाग राजतन्त्र के विरुद्ध यह विद्रोह कर रहा था। इसके बाद पार्लियामेन्ट और बुर्जुआ दोनों बूर्बोन वंश के सबसे वफ़ादार सहायक रहे।

गृहयुद्ध

इस वर्ष समस्त ग्रीष्म में ऐने ने मैजेरिन के कुछ सबसे घृणित अधीनस्थों को पदच्युत करके पार्लियामेन्ट को अपने पक्ष में बनाये रखा, किन्तु वह कोंडे को शान्त करने में असफल रही। उसके और उसके पुत्र के लिये, जिसे इस समय वयस्क घोषित कर दिया गया था, परिस्थिति अब भी चिन्ताजनक और खतरनाक थी। वह पेरिस का पूरा विश्वास उस समय तक प्राप्त न कर सकी जब तक उनको यह मालूम था कि वह अनुपस्थित प्रथम मन्त्री से अब भी पत्रव्यवहार करती है। सीमान्तों पर फ्रैंच कुलीनवर्ग के मेल से स्पेनिश सैनिक लगातार खतरा बने हुए थे। फ्रांस के सबसे अच्छे जनरलों कोंडे और ट्यूरेन ने उनके विरूद्ध युद्ध की एक प्रकार से घोषणा कर रखी थी; उसका बहनोई, औलियस, उसके शत्रुओं का नाममात्र का

---

1 **मेमोयर्स द ओकर तलोन** (संपादित, माइकोड एत पोजूलेट), 423।

2 द इटेज (**मेमोयर्स**, सं० फिलेट एत चेनटेलाज, 2, 175) ने ओर्लियन्स के विषय में कहा है, "उसके पास साहस के अतिरिक्त वह सभी कुछ था, जो एक ईमानदार व्यक्ति में होना चाहिए।"

3 कोंडे भी सम्भवत: सम्राट बनना चाहता था, **"इल ने ओरेट पलस क्वाले मेनर ए रेक्स"** (**डी रेटज, मेमोयर्स**, 3,307)।

अध्यक्ष था, उसका एकाकी मित्र और सलाहकार मैजेरिन बहिष्कृत था। नार्मेंडी से प्रोवेंस तक सारा देश विद्रोह और गृहयुद्ध में डूबा पड़ा था। किन्तु अन्त में सारे आन्दोलन की उद्देश्यहीनता ही इसके लिये विनाशकारी सिद्ध हुई। विद्रोही नेता केवल निजी स्वार्थों के प्रभाव में थे और फिर जल्दी ही उनके लक्ष्यों में विरोध हो गया। अक्टूबर में पार्लियामेन्ट ने कोंडे को राजद्रोह का दोषी घोषित किया और गोंडी को कार्डिनल के पद के लिये मनोनीत करने का वचन देकर उसे शान्त करने के बाद रानी और राजकीय सैनिकों ने प्रान्तों का दौरा किया तथा कई शहरों से पहले की भाँति मित्रता पुनः स्थापित की। दिसम्बर 1651 तक स्थिति में इतना सुधार हो गया कि मैजेरिन भाड़े के सिपाहियों की फौज सहित फ्रांस में वापिस आ गया और जनवरी 1652 में वह पोयटीयर के स्थान पर कोर्ट से जा मिला।

दूसरे फ्रांडे के अभियान

जब मैजेरिन के वापिस आने की खबर सर्व विदित हो गई तो पार्लियामेन्ट ने उसका सिर काटने के लिये इनाम रखा किन्तु कोई सक्रिय विरोध संगठित न किया। अन्त में ओर्लियां को इस मामले में कूद पड़ने के लिये फुसला लिया और वह कोर्ट के विरुद्ध कोंडे से निश्चित रूप से मिल गया। इस बीच में बियुफोर्ट और नेमूर्स, पेरिस को जाने वाले राजभक्त सैनिकों को बीच में रोकने के उद्देश्य से अपनी अलग अलग सेनायें लेकर ऐंजर्स में इकट्ठे होने के लिये चले, उधर मैजेरिन ने धन देकर ट्यूरेल की सहायता खरीद ली थी, 1652 के आरम्भिक महीने, जिसे विनम्र शब्दों में लौयर का अभियान कहा जाता है, में बीते; किन्तु वास्तव में वे अभियान के स्वांगों की एक श्रृंखला से कुछ ही अच्छे थे जो किसानों के अतिरिक्त, जिनकी फसलें राजभक्त और कुलीन दोनों की सेनायें उजाड़ रही थीं, सभी का मनोरंजन करते थे। जब ट्यूरेन औलियां के शहर पर अधिकार करने की कोशिश की तो साहसी मैडमोयसेल द मोटपेंसियर (जो गास्टन की पुत्री और अपने भतीजे लुई चौदहवें से विवाह की इच्छुक थी) ने कुलीनों के पक्ष में शहर पर कब्जा कर लिया और इससे उसने इच्छित विज्ञप्ति प्राप्त की, उसी समय में (मार्च 1652) कोंडे ने आवेश में आकर दक्षिण पश्चिम को खाली कर दिया जहां पर उसका शासन असंदिग्ध था, और बियुफोर्ट और नेमूर्स की सेवाओं के साथ मिलकर रायलिस्ट सैनिकों को ब्लीनों के स्थान पर पराजित किया (8 अप्रेल)। अपनी इस सफलता को आगे बढाने की अपेक्षा उसने मैजेरिन के विरुद्ध घृणा की चिंगारी सुलगाने के लिये, पेरिस की ओर प्रस्थान करने की मूर्खता की और इस प्रकार उसने ट्यूरेन को पेरिस और राजकुमारों की संयुक्त सेनाओं के बीच में रोक लगाने का अवसर दे दिया। यह ट्यूरेन की ऐसी चाल थी कि जिससे विद्रोहियों को इटेंप्स नामक

स्थान पर हार खानी पड़ी (4 मई)। अपने गहन अहंकार के अतिरिक्त सब सोच विचार को तिलांजली दे कर कोंडे ने आर्टोवस और पिकार्डी में स्पेनिश सैनिकों को, और चैम्पेन में लारेंन वालों को बुला लिया, जिससे पेरिस वालों का मत पूर्णतया उसके विपक्ष में हो गया और इस प्रकार मैजेरिन के पुनरागमन का मार्ग खुल गया। उसने पार्लियामेन्ट के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग करने की वृथा कोशिश की। दो जुलाई को फौबुर्ग सेंट एन्टोयन में उसके सैनिकों की पूर्ण पराजय होती यदि मैडमोयज़ल द मोंटपेंसियर ने बेस्टिल की तोपों का मुंह ट्यूरेन के राजभक्त सैनिकों की ओर न मोड़ा होता। किन्तु इन निर्लज्ज स्त्रियों और नपुंसक पुरुषों के निरर्थक युद्ध के पीछे फ्रांस की (किसान और बुर्जुआ) शान्ति के पक्ष में व्यापक अभिलाषा थी। मैजेरिन और राजगृह व्यवस्था पुनः स्थापन की इस उत्कट इच्छा पर ही विजय की आशा कर सकते थे।

कोंडे

गलियों की लड़ाई में कठिनाई से प्राप्त विजय के आधार पर कोंडे ने पेरिस पर नियन्त्रण किया तथा पार्लियामेंट के कुछ प्रभावहीन लोगों को बाध्य करके और न मानने वालों को वध द्वारा शांत करके उसने ओर्लियां की राज्य के लैफिटटनेन्ट–जनरल के पद पर नियुक्ति करवा दी। बिग्रुफोर्ट पैरिस का गवर्नर हो गया और शहर के कार्य कुलीनों की एक कमेटी को सोंप दिये गए। स्पेन व लारेन के सैनिकों के फ्रांस से कुछ ही मील दूर तक आगमन (अगस्त 1652) के कारण मेजारिन को दूसरी बार फिर फ्रांस छोड़ना पड़ा, किन्तु डर कर नहीं अपितु इस–लिए कि वह राजकुमारों को यह बहाना न करने दे कि जब तक वह फ्रेंच भूमि पर था तब तक शांति नहीं रह सकती। मेजारिन बहुत उपयुक्त समय पर फ्रांस छोड़ गया, क्योंकि उसके जाने के बाद राजगृह के पास पेरिस में वापिस बुलाने की प्रार्थना करने के लिये कई शिष्टमण्डल भेजे गये। कोंडे के सैनिकों द्वारा छोड़ कर चले जाने से और बुर्जुआ की बढ़ती हुई शत्रुता के कारण उसकी स्थिति दिन प्रति दिन काबू से बाहर होती गई। अक्टूबर में वह स्पेन के साथ मिलने के लिये राजधानी छोड़ गया और नेतृत्व का त्याग होते ही दूसरा फ्रांडे वेग से पतनोन्मुख होने लगा। 21 अक्टूबर को रानी और लुई चौदहवें ने पेरिस में पदार्पण किया जहां जनता ने उसका उत्सुकता से स्वागत किया। उन्होंने अब सत्रहवीं शताब्दी के उस महान् सत्व को समझ लिया था कि निरँकुशता का एकमात्र विकल्प अराजकता है। औलियां तथा शेष विद्रोह के नेताओं को अपनी जागीरों में वापिस जाना पड़ा। पार्लियामेन्ट को राजनीति में फिर कभी हस्तक्षेप करने से मना कर दिया गया। गोंदी, जो सारे आन्दोलन का संचालक था और अब कार्डिनल द रेज़ था, कैद कर लिया गया। कुछ समय पूर्व दी गई सब रियायतें बन्द कर दी गईं। इस प्रकार पेरिस की

पार्लियामेन्ट राजनैतिक प्रमुखता के संक्षिप्त काल के बाद पुनः विधिनिगम के पुराने कार्य पर आ गई। ये चार वर्ष युवक राजा के जीवन के सबसे अधिक प्रभाव डालने वाले काल से मेल खाते हैं। इसके बाद से वह पेरिस से घृणा करने लगा और राजा का स्थायी निवास स्थान लोवर की अपेक्षा वर्सायल बनाया गया। केवल फ्रांडे की घटना ही लुई चौदहवें के निरंकुशतावाद का समर्थन करती थी।

दोनो फ्रांडे के उद्देश्य

इस स्थान पर यह पूछा जा सकता है कि क्या यह आन्दोलन किसी सुसंगत राजनीतिक अथवा संवैधानिक सिद्धान्तों द्वारा प्रेरित हुआ था। पहले फ्रांडे में पार्लियामेन्ट की मांगों को छोडकर, विद्रोह व्यक्तिगत और उत्तरदायित्वहीन उद्देश्यों के आधार पर हुआ था। कोंडे प्रथम मन्त्री बनाना चाहता था, शायद उसकी इच्छा फांस का राजा बनने की हो। गोंदी कार्डिनल की टोपी चाहता था, औलियां के मन में अनिश्चित विचार थे कि उसकी भी कद्र होनी चाहिये, उसकी लडकी विवाह द्वारा फ्रांस की रानी होने के लिये आतुर थी, और स्त्रियां मुख्यतः वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छुक थीं। इसमें भद्दे प्रहसन का प्रबल तत्व था और केवल मात्र एक समान भावना, मेजरिन के प्रति घृणा थी।[1] कुलीनों के लिये विद्रोह विलेट्स डाउक्स के झूठे अभियानों का सुखान्त नाटक था बुर्जुआ के लिये यह उन्हें भ्रमजाल से जल्दी निकालने वाला था। किसानों के लिये यह भुखमरी और बर्बादी थी। तमाम स्वतः नियुक्त नेता इतिहास में नाम कमाना चाहते थे। सुघड़ शासन की यह विशेषता होती है कि वह इस प्रकार की कारीगरी को न्यूनातिन्यून करना है। किन्तु यद्यपि यह सारा आन्दोलन निष्प्रयोजन था तो भी हम मैजरिन के बहुत से लेखों और उस समय के पैम्फलेटों से सरकार के सिद्धान्त निश्चित कर सकते हैं। कार्डिनल द रेज[2] जैसे लेखकों का मंतव्य है कि निरकुशता और प्रथम मन्त्री का शासन नई बातें थीं जो रिशेलू से आरम्भ हुई। फ्रेंच राष्ट्र की परम्परायें सवैधानिक थीं, निरंकुश नहीं। दूसरे सिद्धांन्तवादियों का कहना था कि राजतंत्र की अभी निर्वाचित होने की विशेषता नष्ट नहीं हुई थी।[3] फ्रांडे के दिनों में कुलीन वर्ग ने स्टेट्स जनरल[4] की सभा बुलाने पर बल दिया, किन्तु 1614 के अनुभव का स्मरण करते हुए थर्ड स्टैट ने, यह जानते हुए कि ऐसी सभा उनके शत्रुओं के

---

1 मैजेरिन की आलोचना के लिये देखिये, मोरेउकृत **चोक्स द मैजेरिन डेस, और लेस इडीज पौलिलिक्स एन फ्रांस** अध्याय 4।

2 **मेमोयर्त** (म० फिलेट एत चेनटे लोज), 1,270 एफ. एफ.।

3 मोरेकृ **चोक्स द मैजेरिन एडस,** 2,458।

4 **वही, 2, 230।**

हाथ मजबूत करेगी, इस मांग का विरोध किया। यह उल्लेखनीय है कि कुछ पैंम्फलेटों ने वित्तीय प्रणाली में मौलिक परिवर्तन की सिफारिश की और कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय के अनुपात से राष्ट्रीय आय में अपना हिस्सा देना चाहिये।[1] दूसरी ओर सामान्य मत यह था कि पार्लियामेन्ट थर्ड स्टेट का एक भाग होने के कारण अपनी स्थिति केवल राजा से ही प्राप्त करती थी[2] इसलिये विधान पर उसका कोई अधिकार न था। यह भी एक विशेषता थी कि बहुमत (नगण्य) कम लोगों को छोड़कर पैंम्फलेटो के प्रकाशक यह स्वीकार करते थे कि राजतन्त्र युक्तियुक्त और आवश्यक था और इसके विशेषाधिकार बने रहने चाहिये एवं दृढ़ करने चाहिये।

फ्रांडे और लुई चौदहवां

लाक्षणिक होने के कारण ये दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हैं। यह समझना कठिन नहीं है कि उनका लुई चौदहवे के सिद्धान्तो के साथ कैसे मेल हो सकता था, क्योंकि उनका एक ही सुसंगत तत्व में विश्वास था—एक सशक्त राजतंत्र की आवश्यकता जिसमें राजा स्वयं राज्य करे, उसका प्रथम मंत्री नही। फ्रांडे ने फ्रांसीसी क्रान्ति के लिये नहीं अपितु वर्साय की निरकुशता के लिये मार्ग तैयार कर दिया।

आर्थिक प्रभाव

जब फ्रांडे फरवरी 1653 में पेरिस वापिस आया तो उसने अच्छी तरह से समझ लिया था कि फ्रांडे से केवल हैप्सबर्ग ही लाभान्वित हुए और फ्रांस ने तीस वर्षीय युद्ध के अन्तिम चरणों मे जितनी प्रतिष्ठा बनाई थी उसका अधिकांश हिस्सा खो दिया है। इतिहासज्ञों ने इन परिणामों पर तो बल दिया है और फ्रांडे के अद्भुत तत्वों के महत्व को आवश्यकता से अधिक स्वीकार किया है (विशेषतया डूमा द्वारा), परन्तु गृहयुद्ध के इन वर्षों के सामाजिक व आर्थिक प्रभाव पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। वस्तुओं के सामान्य कार्यक्रम के उपद्रवों की सदा जनसंख्या के उस हिस्से पर प्रतिक्रिया होती है जो बड़ी कठिनाई से अपना जीवन–निर्वाह करते हैं और इसमें फ्रांडे अपवाद न था क्योंकि सशस्त्र जत्थों द्वारा देहातों की बर्बादी ने किसानों में गहन, यद्यपि मौन, कष्ट फैला दिया। जहां हतभाग्य मजदूर अपने वीरताहीन और गुमनाम अस्तित्व को कायम रख सका वहां भी युद्ध का अर्थ चाहे बाहर हो या घर में, उसके लिये स्थायी अरक्षा और न्याय–विरुद्ध मार्ग था।

---

1 वही, 2, 45।

2 वही, 2, 465।

बौनहोम मिजिरे[1] की कथा के अनुसार, जो फ्रांडे के ठीक बाद के वर्षों में देहात में प्रचलित थी, 17वीं शताब्दी फ्रांस के अत्यन्त खतरनाक विद्रोह का उपसंहार कही जा सकती है। कथा के अनुसार सेंट पीटर और पाल का निर्धनता ने आतिथ्य किया (यह जाने बिना कि उसके अतिथि कौन थे ?)। जाते समय उन भक्तों ने अपने अतिथि-सत्कार-कर्ता को कोई मांग करने के लिए कहा। निर्धनता ने यह आशीर्वाद मांगा कि जो भी कोई पेड पर चढे वह अपने स्वामी की इच्छापर्यन्त रुका रहे। यह वरदान दे दिया गया। एक दिन मृत्यु स्वयं आ गई और उसे नाशपाती के पेड़ पर चढने के लिए फुसलाकर उसे पकड़ लिया जहां से उसे इस शर्त पर छोड़ा गया कि वह अपने पकड़ने वाले को महान्याय के दिन तक न बुलायेगा। इस प्रकार निर्धनता हमेशा अन्त तक बनी रहेगी।

स्पेन के साथ युद्ध

प्रान्तों को शान्त करने के बाद मैजारिन स्पेन से चल रहे युद्ध की ओर ध्यान देने के लिए स्वतंत्र हुआ जो यह स्मरण होगा, वेस्टफेलिया[2] की संधि से समाप्त न हुआ था। तीस वर्षीय युद्ध की समाप्ति ने दो मुख्य लड़ाकुओं-फ्रांस और स्पेन-को पृथक् पृथक् कर दिया था, जिनका झगड़ा पिरेनीज की संधि तक (1659) समाप्त नहीं हुआ था। इस काल में गृहक्लेश नहीं के बराबर थे यद्यपि द मरी के उत्तराधिकारी फोकट, ने वित्तीय कुप्रबन्ध में अपने पूर्ववर्ती को भी मात कर दिया और अन्याय से कमाये लाभ का अत्यधिक दिखावा करके अपना पतन स्वयं बुला लिया। किन्तु फ्रांस में कोई संस्था प्रभावोत्पादक विरोध का संगठन करने में समर्थ नहीं थी और राष्ट्र अविचलित निष्ठा और रुचि से युवक लुई चौदहवें की प्रगति को देख रहा था। यहीं से मैजारिन अब अपने जीवन के सबसे उज्ज्वल और रचनात्मक भाग में अवतरित होता है।

इंग्लैण्ड से व्यापारिक मित्रता—नवम्बर 1655

राष्ट्रीय शत्रु के विरुद्ध सेना की गति को तीव्र करते हुए मैजारिन ने अपनी विदेशी नीति में यह दिखा दिया कि वह चतुर था और पहले से धारणाएं नहीं बनाता था। यह समझकर कि इंगलैंड एक बडी शक्ति बन गया था, उसने क्रामवेल से मित्रता कर ली। यह मैत्री तब संभव हुई जब प्रोटेक्टर के मन से डचों की

---

1 फ्लेट द्वारा उद्धृत, ला मिजरे ओ टेम्टस द ला फोन्डो, 519।

2 इस संघर्ष को विस्तृत करने के लिये सामान्यतः फ्रांस को उत्तरदायी माना जाता है। देखिये, कलेक्शन द डोक्यूमेन्स इनएडिटस पेरा ला हिस्तोरे द एसपाना 34,511 में पेगारेन्डा द्वारा लिखित रिलेसिओं एल रे दोन फिलिप चतुर्थ (1650)।

सहायता से विशाल प्रोटेस्टेन्ट संघ बनाने की आशाओं का भ्रमजाल पूर्णतया टूट गया। 3 नवम्बर 1655 को दोनों देशों के व्यापारिक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। मैजारिन ने स्टुअर्ट परिवार के किसी व्यक्ति को सहायता न देने का वचन दिया जिनका प्रमुख उन दिनों महाद्वीप पर कार्डिनल द रेज के साथ षडयंत्र करने में व्यस्त था। इस मैत्री से स्पेन समझौते के लिए अधिक उत्सुक हो गया।

विवाह का प्रस्ताव : अंगरेजों से मैत्री (1657)

1656 तक फ्रेंको–स्पेनिश संघर्ष का अन्त दृष्टिगोचर होने लगा और सामान्य साधन के रूप में विवाह द्वारा मैत्री प्रस्ताव रखा गया। कुछ समय तक मैजारिन ने सावधानी से चुने हुए वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा बूर्बो–हैप्सबर्ग संघर्ष को समाप्त करने की साध्यता पर विचार किया। 1656 में, मेरिया थेरेसा जो फिलिप चौथे की प्रथम विवाह से उत्पन्न पुत्री थी, लुइ चौदहवें के लिए सबसे उपयुक्त वधू मालूम होती थी। चूंकि उस समय स्पेनिश हैप्सबर्ग वंश मे नियमानुसार दोनों लड़कियां–मेरिया और मारगेरेट थेरेसा–आती थीं, और फिलिप के नियमानुसार और अधिक संतति होने की कम सम्भावना लगती थी, इसलिये इस विवाह द्वारा अन्त में स्पेनिश उत्तराधिकार का सब या अधिक भाग प्राप्त करने की फ्रांसीसी संभावना बहुत अधिक मालूम होती थी। मैजारिन ने अनुमान लगाया कि अगर यह मैत्री हो जाये, चाहे यह प्रतिज्ञा हो और या कागज पर ही लिख दिया जाये, तो हेनरी चौथे और रिशेलू का काम पूर्ण हो जाये। यह ऐसा शानदार कार्य था कि प्रथम मंत्री ने अपनी योजनाओं को अधिक से अधिक शान्तचित्त और विवेचन से, विस्तृत किया। किन्तु स्पेनिश मंत्री डान लुई डे हेरो इटेलियन के जोड़ का व्यक्ति था, और ज्योंही विवाह का प्रस्ताव रखा गया संधि की बातचीत तोड़ दी गई (सितम्बर 1656)। तब मैजारिन इंग्लैंड की ओर झुका और 3 मार्च 1657 को फ्रांस और इंग्लैंड में एक वर्ष के लिए मित्रता की संधि पर हस्ताक्षर हो गये। दोनो देशों ने दो शहरों, डंर्क और ग्रेवलिंस पर संयुक्त कार्यवाही करने का समझौता किया जो जीते जाने पर मित्रो में बांटे जायेगे।

मेजारिन द्वारा जर्मनी में षड्यन्त्र

फ्रेंको–इंगलिश मैत्री जैसी कूटनितिक विजय होने पर भी स्पेन ने संधि करने की इच्छा नहीं की। सीमान्त लड़ाइयों से कुछ लाभ मालूम नही होता था, जो इस काल में महत्वहीन और अनिर्णायक थी। इसलिए मेजारिन शत्रु को सबसे अलग करने के कार्य में अग्रसर होने के लिए बाध्य हो गया। नेपल्स[1] के मामले में मेजारिन का हस्तक्षेप सफल नहीं रहा, किन्तु उसने जर्मनी की राजनीति में विघ्न

1 देखें अध्याय 9।

डालने के लिए वेस्ट फेलिया की संधि द्वारा दिए गए अपूर्व अवसर की उपेक्षा न की थी और कुछ वर्षों तक एजेन्ट के बाद एजेन्ट राइन[1] के दूसरी ओर जनमत को 'शिक्षित' कर रहे थे। एक फ्रांसीसी स्थायी एजेन्ट साम्राज्यीय डायट के विचारों से सम्पर्क रखने के लिए सन् 1653 से रेटिस्बान में रहता था। मेजारिन ने अल्सेस के अधिकार को (वेस्ट फेलिया की संधि द्वारा उसे पूर्ण प्रभुसत्ता दी गई थी) जागीर में बदलने की असफल चेष्टा की, ताकि इस प्रकार लुई चौदहवें को डायट में प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व मिल जाये। डायट निर्णय नहीं कर सकी कि क्या करे, किन्तु अन्त में उसने उसे शैल्फ में रख कर समस्या का हल किया जैसे कि यह तमाम महत्वपूर्ण प्रश्नों का फैसला करने में सामान्यतः करती थी। मेजारिन का आदर्श वाक्य था 'समय और मैं संसार के विरुद्ध हैं'। डायट इसी सिद्धान्त पर चली किन्तु जब कि मेजेरिन के लिये समय का मतलब कुछ महीने था जिनमें वह वापिस जाकर अपनी योजनाओं को परिपक्व कर सके, डायट समय का अर्थ उस समय से लेती थी जो विस्मृति द्वारा सब कठिनाइयों को हल कर देता है।

राइन की लीग (1658–1668)

डायट को प्रभावित करने में मेजेरिन की असफलता होने पर भी और यद्यपि 1657 में फर्डिनेन्ड तीसरे की मृत्यु होने पर साम्राज्य के लिए हैप्सबर्ग (लियोपोल्ड) की चुनाव होने से फ्रांस के अनुमान उलट गये थे किन्तु जल्दी ही एक अवसर आया जिसका लाभ उठाने में फ्रेंच कूटनीति ने सुस्ती नहीं की। मुख्य जर्मन राजकुमार 1651 से वेस्टफेलिया के निर्णय पर बनाये गये छोटे-छोटे राज्यों के बेमेल समूह में एकता का तत्व भरने के लिये लीग या मंडल बनाने की कल्पना पर सोच-विचार कर रहे थे। सन् 1656 में मेंज के इलेक्टर के नेतृत्व में प्रोटेस्टेन्ट तथा कैथोलिक जर्मन राज्यों की एकता बनाए रखने और युद्ध को टालने के अभिप्राय से एक्लिजियास्टिकल इलेक्टरों का एक संघ बनाया गया। बड़ी विचित्र बात है कि इस आन्दोलन के नेताओं ने अनुमान किया कि इन उद्देश्यों की पूर्ति का सबसे अच्छा तरीका विदेशी राजाओं, यानि स्वीडन और फ्रांस के शासकों को अपना मित्र बनाना है, जिनकी महत्वाकांक्षाएं सर्व विदित थीं कि वे जर्मन शांति के सबसे अधिक प्रतिकूल हैं। इस प्रकार यह मंडल जो राइन की लीग[2] कहलाया

---

1 इसके लिए **इन्स्ट्रक्शन्स डोनीस ओक्स एमबसडर्स द फ्रांस डेपुइस ल त्रेते द वेस्टफेलिया (जर्मनिक डाइट)** में वोटोट, ग्रेवल और वरजूस को दिये गये निर्देश देखिये।

2 लीग के सम्बन्ध में पूर्ण विवरण प्रीब्राम लिखित, **ब्रिट्रेज जुर गैसचीचेट देश राइन बेंडस वोन** 1658 में दिया गया है। और बेब, **पूर्व उद्धृत** 57,एफ एफ भी देखिये।

(1658 में संस्थापित) एक प्रकार का अपरिपक्व राष्ट्र संघ था, क्योंकि यह ललकार के स्थान पर मेल द्वारा युद्धों को परिमित करने के काम में लग गया, और इसकी कौंसिल में, जो राइन के किनारे फ्रेंकफर्ट में बैठक करती थी, एक सोच विचार करने वाली सभा थी जो अपने जर्मन सदस्यों के झगड़ों में मध्यस्थता करने में समर्थ थी। इस योजना की रचना जर्मनी के दो अत्यन्त विलक्षण व्यक्तियों ने की--फिलिपवान मेंज का इलेक्टर स्कौन बोर्न; और उसका सचिव बोयनेबुर्ग। बोयनेबर्ग को याद था कि किस प्रकार फ्रांस ने तीस वर्षीय युद्ध में कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्टों के मेल को कुछ समय तक बनाये रखा था। इसलिए उसका विश्वास था कि फ्रांस जर्मनी के छोटे-छोटे राजकुमारों और लड़ाकू धार्मिक सम्प्रदायों को जोड़ने में सीमेन्ट का काम कर सकता था। स्कौनबौर्न ने जो छोटे पद से बढ़कर ऊपर उठा, विदेशी आक्रमणों में लगातार खतरे से अपने देश को बचाने के प्रयत्नों में राजनीति और देशभक्ति का परिचय दिया। उसे आशा थी कि उसकी वांछित लीग यूरोप के जनमत पर शिक्षाप्रद प्रभाव डालेगी क्योंकि उसका यह विश्वास था कि सर्वसामान्य गारन्टी की प्रणाली मैत्री द्वारा शक्ति को निष्फल बना देगी और अन्ततः यूरोपीय शान्ति की ओर ले जायगी। उसके सिद्धान्त उनके आदर्शवाद से पृथक कर देने के बाद, अठारहवीं शताब्दी के सिद्धान्त का बुद्धिमतापूर्ण, पूर्वज्ञान देते थे जिनका आशय यह था कि पूर्व और पश्चिम की महान सैनिक शक्तियों की स्पर्धा को रोकने का सर्वोत्तम तथा शक्तिशाली साधन जर्मन मण्डल द्वारा मध्यवर्ती यूरोप को नियंत्रण में रखना था।

फ्रांस राइन की लीग से मिल जाता है---अगस्त 1658

यह स्वाभाविक था कि मैजेरिन इस योजना का बड़ी रूचि से अनुसरण करता, यद्यपि वह इसके शान्तिप्रद आदर्शों को फ्रांसीसी भाषा में ऐसे शब्दों से वर्णित करता था जो अंग्रेजी शब्द 'मूर्ख बनाने'[2] के बहुत अधिक समान थे। फ्रेंच एजेन्ट को, जो डायट को भेजा गया था, निर्देशन दिया गया था कि वह लीग की ओर से जर्मनी में प्रचार करे और उसे पेरिस की ओर से बताया गया था कि राइन की लीग शायद अपने ही लाभ के लिये सम्राट के विरूद्ध सम्मिलित हो जाये क्योंकि हैप्सबर्ग जर्मन 'स्वतन्त्रता' के वास्तविक शत्रु थे। 1657 के साम्राज्यीय चुनाव को अपने लिए लाभकारी बनाने में फ्रेंच कूटनीति की असफलता पर मेजारिन ने लीग के विषय में अधिक गम्भीरता से विचार करना आरम्भ किया। अगस्त 1658 में फ्रांस इसका सबसे उत्साही सदस्य हो गया। इसका सदर मुकाम, मेन-घर-फ्रेंकफर्ट

---

1 देखिये अध्याय एक।

2 'पेटैलिनेज', ओरबेच, पूर्व उद्धृत, 3।

फ्रांसीसी प्रभाव वाले क्षेत्र में था। लियोपोल्ड ने बिना किसी दुराव के अपने विचार प्रकट किए कि चूंकि लीग की सम्मतियों का निर्देशन फ्रांस करता था, इसलिए यह सम्भाव्य शत्रु संस्था थी। इसलिये जबकि फ्रांस इस सभा का सदस्य था तब तक मैजेरिन को स्पेनिश और साम्राज्यीय हैप्सबर्ग के विरुद्ध अपने इरादो में जर्मनी के निष्पक्ष रहने का विश्वास था। एक तो अपने दो सदस्यों—फ्रांस और स्वीडन—की ईर्ष्या के कारण और दूसरे चूंकि इसके जर्मन सदस्य यह समझने लग गए थे कि लुई चौदहवें के उद्देश्य शांन्तिपूर्ण न थे, इन कारणों से राइन की लीग 1668 में टूट गई। किन्तु उस तारीख से पूर्व यूरोप में राजनैतिक स्थिति बहुत बदल चुकी थी। उस समय तक फ्राँस निश्चित रूप से स्पेनिश उत्तराधिकार की मुहिम में उतर चुका था और जर्मनी को, बोयने से लेकर डेन्यूब तक फैले, कई युद्धों में घसीट चुका था। हथियारों की मुठभेड़ में राईन की लीग की आदर्शवादी अभिलाषायें जल्दी ही भूली जाने वाली थीं।

स्पेनिश प्रतिरोध का पतन

इस प्रकार फ्रांस और स्पेन का युद्ध हैप्सबुर्ग और बूर्वों के झगड़े में केवल मात्र एक तत्व था। मैजेरिन का यह नगण्य काम न था कि उसने उसे लम्बे संघर्ष में एक अध्याय का सफलता पूर्वक अन्त किया और लुई चौदहवें को एक शक्तिशाली और सुव्यवस्थित राज्य वसीयत में दिया। जर्मनी और इंग्लैड में मैजेरिन की कूटनीतिक चालों द्वारा यूरोप में लगभग अकेला किये जाने पर, स्पेन निचले प्रदेशों पर 1658 तक अपना अधिकार स्थिर रख सका, जबकि 1658 की लड़ाईयों ने उसके प्रतिरोध का अन्त कर दिया। ट्यूरेन ने ड्यूक की लड़ाई के बाद डंकर्क पर अधिकार कर लिया (14 जून 1658) और लुई चौदहवें के विलक्षण प्रवेश के बाद शहर को अंगरेजों के हवाले कर दिया गया। फिर फ्लैमिश के तटवर्ती नगरों पर अधिकार किया गया और ब्रेबेंट पर धावा बोल दिया गया। इन विजयों के बाद एक कूटनीतिक कपट किया गया। अक्टूबर 1658 में, राजगृह प्रकट रूप से, सेवाय के ड्यूक की लड़की की लुई से मंगनी करने में भाग लेने के लिये लियंस गया चाल सफल हो गई। तुरन्त एक स्पेनिशदूत वैवाहिक मैत्री के आधार पर संधि का प्रस्ताव लेकर लियँस भेजा गया। और इस प्रकार अन्त में, मेजेरिन की, सावधानी से नियोजित चालों को सफलता मिलनी ही थी। सेवाय की मारगेरेट से जल्दी से छुटकारा पाया गया—उसकी भावनाओं पर किये गये कुठाराघात का कोई कूटनीतिक महत्व न था क्योंकि सेवाय एक छोटा सा राज्य था, स्पेन से बातचीत शुरू हो गई। किन्तु मैजारिन की विजय इतनी जल्दी पूर्ण न हुई जितनी कि अनुमान किया जा सकता था, क्योंकि एक अपशकुन होने से स्थिति बदल गई थी। फिलिप के, जल्दी ही दूसरी पत्नी से, एक पुत्र और उत्तराधिकारी पैदा

होने वाला था। कोई भी यह अनुमान नहीं लगाता था कि निर्बल बच्चा बच जायेगा और आगामी चालीस वर्षों का प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय पूर्व विचार इस मान्यता पर आधारित था कि यह बच्चा (चार्ल्स) कुछ महीनों में मर जायेगा। इस अभागे बच्चे के भाग्य में, जिसका जन्म मैजरिन के पूर्व विचारों में कल्पनातीत बात थी प्रत्येक डाक्टरी और कूटनीतिक भविष्यवाणी को, सन् 1700 तक जीवित रहकर, उलट देना लिखा था। स्पेनिश उत्तराधिकार के प्रश्न पर, जो 1658 में लगभग समाप्त हो चुका था यूरोप को अभी करीब दस लाख प्राणों की आहुति और देनी थी।

पिरेनीज की संधि (नवम्बर 1659)

बातचीत, जो पिरेनीज[1] की संधि करके समाप्त हुई, कूटनीतिक शंकाओं पर पूरा ध्यान रखते हुए की गई। भाग्यवश फ्रांस को स्पेन से विलग करने वाला एक बिडासोआ नाला है। इस नाले में इले डेस फेसांस नामक टापू पर पिरेनीज की संधि की गई और लम्बे वादविवाद के बाद 7 नवम्बर 1659 में उस पर हस्ताक्षर हुए। यह संधि वेस्टफेलिया की संधि की इस दृष्टि से पूरक कही जा सकती है क्योंकि इसने स्थाई राष्ट्रीय सीमायें निर्धारित कीं। फ्रांस की विजय प्रमाणित मान ली गई और इस प्रकार उसे रुसिलोन और आर्टोय तथा कुछ फ्लेमिश नगर, जैसे ग्रेवलिन्स, लैंडेसीज, अवेस्नस, और थियोविले और लग्जम्बर्ग में मोटमेडी, मिल गये। फ्रांस ने केटेलोनिया और स्पेन ने अल्सेस का दावा छोड़ दिया। लारेन और पुर्तगाल दोनों त्याग दिये गये। फ्रांस ने अपनी पूर्वी सीमान्त पर मोयेन्विक और स्टेने जीत लिये और पुर्तगाल को उसके स्वतंत्रता के संघर्ष में छोड़ दिया। कोंडे को क्षमादान देकर उसकी जागीरें वापिस कर दी गई। मेरिया थेरेसा को स्पेनिश उत्तराधिकार के सब दावे छोड़ने पड़े और उसके बदले में उसे पांच लाख क्राउन का दहेज देने का वचन दिया गया। परन्तु यह दहेज कभी नहीं चुकाया गया।

यूरोप में सामान्य शान्ति 1660

अब संधि की केवल मुख्य शर्त पूरी होनी शेष रही। जून 1660 में विवाह इतनी शानशोकत और धूमधाम से हुआ कि सत्रहवीं शताब्दी में भी उसकी तुलना नहीं की जा सकती। ओलिवा की सँधि द्वारा (3 मई 1660) जो मुख्यतया फ्रेंच कूटनीति द्वारा तय हुई, उत्तर का युद्ध समाप्त हुआ और इसलिये यूरोप, 1660 की ग्रीष्म में 1648 से भी अधिक शांति के युग में प्रवेश करता मालूम होता था।

---

1 वास्ट लिखित, **लेस ग्रांडस ट्रेटस ड्यूरेगेन द लुई चौदहवें** I, 79–175 में इसका विवरण देखिये।

इंगलैंड में अलोकप्रिय राजा विहीन राज्य अपने अन्त पर था और उन्मत्त जोश के बीच राजतंत्र की पुर्नस्थापना हो गई उत्तरी यूरोप में, स्वीडन डेन्मार्क और ब्रेन्डन दुर्ग ने एक बार फिर पारस्परिक झगड़ों को तय कर लिया; जर्मनी में तीम वर्षीय युद्ध के परिणामों में सतत उन्नति हो रही थी; फ्रांस गृहयुद्ध की केवल स्मृति ही रह गई थी और स्पेन के साथ संघर्ष पुरातन अवस्था के अत्यन्त चमत्कारिक विवाह के साथ समाप्त हो गया। 1663 में मैंजेरिन लुई को वह राजमुकुट पहना सका जिसे उसने इतनी अधिक आपत्तियों में संभाल कर रखा था और इतने बड़े उत्तराधिकार का विस्तार बता सकता था जितना फ्रांस कभी शस्त्रशक्ति से जीतने की आशा भी नहीं कर सकता था।

मैंजारिन की मृत्यु (मार्च 1661)

प्रथम मंत्री अपनी विजय के बाद कुछ महीने ही जीवित रहा। उसकी मृत्यु 1 मार्च 1661 को हुई। उसकी मृत्यु से कुछ दिन पूर्व उसने अपना तमाम धन राजा को इस विश्वास पर भेंट करने के लिये उकसाया गया कि यह बहुत शोभनीय माना जायेगा और यह उसे वापिस कर दिया जायेगा।[1] मैंजरिन को इस विचित्र प्रस्ताव पर अमल करने के लिये उत्तेजित किया गया। लुई ने फौरन भेंट स्वीकार कर ली और तीन दिन तक इस विषय में कोई बातचीत न की। ये मैंजारिन के जीवन के सबसे चिन्ताग्रस्त दिन थे। उसे अन्तिम घंटों में धन वापिस मिलने पर आराम मिला, और उसके लाखों डालर उसकी भतीजियों में बांट दिये गये। उसके पास इतना अपार धन था कि शेष धन का केवल एक भाग पैंले द लिन्स्टीट्यूट और बिब्लिओ थीक मैंजारिन बनाने के लिये पर्याप्त था, जिसमें अब कार्डिनल का बृहत पुस्तकालय है।

---

1 इसके लिये देखिये, एवेसयज द लुई चौहदवां (ग्रोविले द्वारा सम्पादित), 6,289।

अध्याय 6

बूर्बां और हैप्सबर्ग

फ्रांस की हैप्सबर्ग–विरोधी नीति का समर्थन

इस अध्याय में उस विवाद पर विचार किया जायेगा जो यूरोप में प्रधानता प्राप्त करने के लिए, एक ओर फ्रांस के बूर्बा और दूसरी ओर स्पेन तथा साम्राज्य के हैप्सबर्गों में चला। इस विवाद की प्रथम अवस्था वेस्टफेलिया की सन्धि द्वारा पूर्ण हुई और दूसरी पिरेनीज़ की सन्धि द्वारा (Peace of the Pyreness)। मानचित्र पर दृष्टि डालने से यह ज्ञात हो जायगा कि इन समझौतों से प्राप्त प्रदेश–वृद्धि में फ्रांस की सीमायें किस प्रकार प्राकृतिक सीमाओं के अधिक निकट पहुँच गईं, और चूंकि ये लाभ हैप्सबर्ग–अधिकृत बहुत विस्तृत प्रदेशों से हुए थे, इसलिए यह माना जा सकता है कि यूरोप के मानचित्र की इस प्रकार की पुनर्रचना से शक्ति–संतुलन को स्थिर रखने में सहायता मिली। इन दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए हेनरी चतुर्थ, रिशेलू और मेजारिन के आक्रमणों को न्याय–संगत कहा जा सकता है, क्योंकि तीनों को ही फ्रांस के प्रदेशों पर आक्रमणों में रक्षा करने के प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना आवश्यक था, और इन्होंने हैप्सबर्गो के बढ़ते प्रभुत्व को, जैसा चार्ल्स पंचम का था, मानकर यूरोप और फ्रांस दोनों का कल्याण किया। किन्तु इस संघर्ष की तीसरी अथवा अन्तिम अवस्था में फ्रांसीसी नीति को न्याय–संगत मानना कठिन है, क्योंकि 1660 के बाद फ्रांसीसी सीमाओं को कोई खतरा नहीं था, स्पेन की सैनिक शक्ति का ह्रास सर्वविदित था, और सम्राट्, जिसने जर्मन राजनीति से हाथ खींच लिया था, पूर्वी यूरोप में तुर्कों से अपने प्रदेश सुरक्षित रखने में सफल नहीं हो रहा था। उस समय सीमाओं की रक्षा नहीं, किन्तु स्पेनिश उत्तराधिकार प्राप्त करने की अभिलाषा मुख्य उद्देश्य था। राजवंशीय संघर्ष व्यापारिक प्रभुत्व के प्राप्त करने के झगडों में लुप्त हो गया। इसलिए, जहां तक फ्रांस और सम्राट् का संबंध है, यह कहा जा सकता है कि उनका झगड़ा राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए हुआ और हैप्सबर्ग और फ्रांस में चली आ रही दीर्घकालीन घृणा की अग्नि उस पूर्णाहुति से बुझी, जिसमें पश्चिमी यूरोप का अधिकांश भाग 13 वर्ष तक झुलसता रहा।

लुई के आक्रामक युद्धों के औचित्य पर कुछ भी सन्देह हो, किन्तु यह निश्चित है कि लुई क्वाटोर्ज की ऐतिहासिक प्रसिद्धि बहुत बढ़ गई। भय जो उसने समस्त यूरोप में उत्तेजित किया, **राजस्व व्यापार में अपने को लगा देना,** उसकी सच्ची

पवित्रता और धर्म–परायणता, राष्ट्रीय उत्साह जो उसने सैनिकों की कीर्ति को प्राप्त करने के लिए बढ़ाया—इसमें से प्रत्येक की और इन सबकी प्रशंसा वंशानुगतो ने की है। उसे कूटनीनित चातुर्य, ठीक निर्णायक और निर्माणकारी विचारशक्तिवाला होने का गौरव प्रदान किया गया है। वह अपने परिश्रम दूरदर्शिता और सार्वजनिक निमित्तता के कारण स्पेन के फिलिप द्वितीय से भी आगे बढ़ गया था और इस प्रकार अपने ममेरे भाई इंग्लेण्ड के चार्ल्स द्वितीय के बिल्कुल प्रतिकूलगामी था जिसे लोग क्षमी और निकम्मे रसिक से अधिक नहीं मानते। लुई विनोदी वृति का न था। उसने सूर्य को अपना चिन्ह चुनने में कोई हठधर्मी नहीं की, क्योंकि उसका दृष्टिकोण और प्रभाव सार्वलौकिक था, और उच्च सभ्यता वाली तथा तीव्र लड़ाकू जाति की सबसे विशिष्ट आकांक्षाओं का वह अर्ध देवी साकार रूप था। नेपोलियन के कार्यों का मूल्यांकन करने के लिए उसकी प्राप्तियों और उनके पीछे छिपे उद्देश्यों का विश्लेषण सम्भव है। किन्तु लुई इतना पवित्र था कि उसका मानवी मूल्यांकन करना सम्भव नहीं, क्योंकि वह व्यक्ति की अपेक्षा धार्मिक विश्वासी अधिक था। वह पूर्व विचार और बुद्धि का केन्द्र–बिन्दु था जहां से वर्साइल की सब क्रियायें प्रकाशित होती थीं। वह एक ऐसा विचार (hypothesis) था जिसके आधार पर उसके राज्य की तमाम कीर्ति बिल्कुल सरलता से वर्णित की जा सकती है।

लुई चौदहवे का धर्म-विश्वास (cult)

धर्म–विश्वास (cult) केवल फ्रांसीसियों तक ही सीमित नही। लुई की कूटनीति का विभागीकरण इतना जटिल है कि इसकी तह में कितनी प्रतिभा है, यह जान लेना बहुत कठिन है। किसी तात्कालिक लाभ के लिए अपनाये गये साधनों की मौलिकता, चाहें घूस या धमकियां हों, अथवा स्त्रियां या कातिल हों, इन सब साधनों की उन यूरोपीय लेखकों और विद्वानों ने जो इस राज्य को उन सब की ऐतिहासिक अभिव्यक्ति मानते हैं, जो मानव की उपलब्धियों में महानतम हें, या तो उन्होंने प्रशंसा की है अथवा उन्हें क्षम्य मान लिया है। किन्तु यह संभव है कि ल खा मोलील (le Roi Soliel) से बहुत घनिष्ठ समीपता होने में मानवीय मान्यताओं की साधारण भावना में बाधा उपस्थित हो गई है। यदि हम इस विचार को स्वीकार कर लें कि कूटनीति की सफलता धोखे में आने वाले व्यक्तियों के अनुपात से आंकी जाती है, राजा में स्थिरतापूर्वक काम करने के बिरले गुण को उसकी तीव्र बुद्धि का सपूत माना जाए, तथा यह माना जाए कि एक श्रेष्ठ पुरुष अवश्य महान् व्यक्ति होगा, तो हम लुई चौदहवें के धर्म–विश्वास (cult) को स्वेच्छा से मानने के लिए तैयार हैं। इस मानसिक अवस्था को सिद्ध करने लिए एक उदाहरण पर्याप्त होगा। यह माना जाता है कि लुई चौदहवें की योग्यता इस तथ्य से सिद्ध हो जाती है कि 1672–1678 के युद्ध की पिछली अवस्थाओं में वह

अपने संयुक्त शत्रुओं में फूट पैदा करने में सफल होने के कारण सैनिक सफलताओं से अधिक अच्छी शर्तें मनाने में सफल हुआ । फ्रांसीसी कूटनीति की यही चाल उसके राज्य के विरूद्ध किये गये बाद के यूरोपीय संगठनों पर भी लागू होती है। किन्तु यह व्याख्या इस बात को स्वीकार नहीं करती कि इतिहास में संगठन का एक भी ऐसा उदाहरण नहीं जिनमें भेद और ईर्ष्या अपने आप ही नहीं बढ़ी। इसके अतिरिक्त, यह इस महत्वपूर्ण तथ्य पर पर्दा डाल देती है कि लुई का आचरण इस काल में यूरोप के जनमत के सम्बन्ध में असंगत अनुमान और भ्रांत धारणाओं पर आधारित था। यद्यपि उसने अपनी चतुरता से चार्ल्स द्वितीय को फ्रांस के शक्तिशाली शत्रुओं से तोड़ लिया, परन्तु इसका परिणाम यह हुआ कि उसने अपने विरूद्ध इंग्लैण्ड की कड़ी शत्रुता बढ़ा ली। उसने अरक्षित डे विट (De witt) को सरलतापूर्वक अपदस्थ कर दिया। बदले में उसे डचों और विलियम ऑफ आरेंज के दृढ़ निश्चय का सामना करना पडा। उसने आसानी से जर्मन राजकुमारों को मूर्ख बना दिया। फ्रांस के शत्रुओं की बढ़ती हुई संख्या में उनकी प्रजा की और वृद्धि कर ली। लगभग 40 वर्ष तक वह स्पेनिश उत्तराधिकार के लिए चल रही बातचीत में सफलता के बाद सफलता प्राप्त करता रहा और फिर उसे संशयपूर्ण (संदिग्ध) लाभ के लिए यूरोप के अधिकांश भाग से लड़ना पड़ा। असीमित परिगणना, दैनिक तत्परता, होशियारी आदि गुणों से उसने अनेकों कूटनीतिक विजय प्राप्त कीं। उसकी मान्यता थी कि सरकार को धोखा देने का तात्पर्य राष्ट्र को पराजित करना है। उसकी ऐसी त्रुटियों से भरी लम्बी जीवनी इस तथ्य के कारण संभव हो सकी कि फ्रांस के अतिविकसित साधन उसके हाथों में थे। और चूंकि वह उस पवित्र पद पर आसीन होकर त्रुटि अथवा अन्याय कर ही नहीं सकता था अतः इस दृष्टिकोण का आधुनिक दृष्टिकोण में परिवर्तित हो जाना कठिन नहीं है। वे गुण जो पहले धार्मिक प्रभाव के फलस्वरूप माने जाते थे आजकल व्यक्तिगत परिश्रम का परिणाम माने जाते हैं और निरन्तर पूर्व विचारक राजा को राजोचित बुद्धि का मूर्त रूप माना गया है। संभव है इस प्रकार ऐतिहासिक साहित्य निष्कपट और पुण्यात्मा लोगों के सम्प्रदाय का समारंभ कर सके। आधुनिक युग में राज्य-रोहण करने वाले राजाओं में लुई चौदहवां सबसे चतुर व्यक्ति था।

युद्ध की अवस्थाएं

सुविधा की दृष्टि से लुई चौदहवें के आक्रामक युद्धों का अध्ययन तीन कालों विभाजित किया जा सकता है जिनमें से प्रत्येक एक संधि द्वारा समाप्त हुआ। पहला काल पिरेनीज की संधि से आरम्भ होता है (1659) और निमेजेन (1678) की संधि से समाप्त होता है, दूसरा रिज़विक की संधि (1679) से समाप्त होता है। तीसरे का अन्त यूट्रेक्ट (1713-15) में आम शांति स्थापना से हुआ।

1 पिरेनीज की संधि से निमेजन की संधि तक

मेरिया थेरेसा के दावे

दोनों राजवंशो में विवाह द्वारा समझौता करने का विचार उतना ही 'पुराना था जितना लुई स्वयं था और इसका सूत्रपात मेजारिन और आस्ट्रिया की ऐन' से हुआ था जिसमे स्पेनिश उत्तराधिकार का कुछ भाग फ्रांस को मिल जाना, इस योजना पर वैस्टफेलिया वार्ता में परामर्श किया गया। आरम्भ से ही इसे एक दूसरे को मिलाने के साधन के रूप में नहीं बल्कि आक्रमण[1] के लिए बहाना बनाने के साधन समझकर विचार किया गया। तब से यह योजना फ्रांसीसी बाह्य नीति का महत्वपूर्ण अंग बन गई और यह स्पेन से बातचीत करने में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न बन गया। पिरेनीज की सधि का प्रारूप बनाते हुए फ्रांसीसी एजेन्ट लियोन ने सबसे महत्वपूर्ण मोयेनेन्ट (moyehhant) धारा को प्रस्तुत किया था जिसके द्वारा मेरिया थेरेसा ने अपने लिये और इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से अपने पति की ओर से, पैतृक उतराधिकार के सब दावों को इस शर्त पर त्याग दिया कि उसे 18 महीने के अन्दर 5 लाख क्राउन का दहेज अदा कर दिया जाये। चूंकि इस दहेज की कभी अदायगी नहीं हुई इसलिए लुई, 1662 में यह दावा कर सकता था कि उसकी पत्नी द्वारा स्वीकृत त्याग निष्प्रभाव था।

फ्रांस और बरगंडियन सर्कल, लोरेन का क्रय (1662)

इस समय फ्रांस की दृष्टि स्पेन के राज्य पर न थी और न ही पूर्वी द्वीप-समूह पर थी अपितु बरगंडियन सर्कल पर थी जो स्पेन के निचले देशों और फ्रांश कांते से निर्मित था। यह भाग चार्ल्स द बोल्ड (Charles the Bold) के उत्तरा-धिकार में था और यह हैप्सबर्गों द्वारा चार्ल्स की उत्तराधिकारिणी के सम्राट मैक्सीमिलियन प्रथम के साथ विवाह से प्राप्त हुआ था। जब तक वह प्रदेश हैप्स-बर्गों के अधिकार में थे तब तक फ्रांस की पूर्व की ओर प्रगति रुकी हुई थी और उसकी पूर्वी सीमा सुरक्षित थी। यह स्पष्टतया अनुभव किया जा रहा था कि पेरिस उत्तर–पूर्वी सीमा के बहुत निकट था, फलतः सम्पूर्ण 17वीं शताब्दी में फ्रांस ने फ्लैंडर्स में दुर्गों की श्रृंखला द्वारा अपनी सीमा को सुदृढ़ बनाने के तरीकों को कभी व्यक्त नहीं किया। मैजारिन ने 1646 में अपना यह विचार प्रकट किया था कि "निचले प्रदेश पेरिस के लिए दुर्भेद्य दीवारों का काम करेंगे जो फिर फ्रांस का वास्तविक हृदय होंगे।"[2] अल्सेस और लोरेन हैप्सबर्ग राज्यों की श्रृंखला में कड़ियों का काम कर रहे थे जो उत्तर सागर से आल्प्स तक फैले हुए थे। और यही श्रृंखला

---

1 लीग्रेले, लडिप्लोमेटिक फ्रेनकाइस एन ला स्कसेशन द एसपेग्ने, 1,6।

2 शेरूएल, हिस्तोरे द फ्रांस पेन्डेन्ट लामाइनोरिटे द लुई चौवहवां (2, 275–6)।

एल्सेस पर अधिकार करने मे तोडी जा चुकी थी। लुई ने 1662 मे घूस देकर लोरेन पर अधिकार प्राप्त कर लिया था और इसके ड्यूक चार्ल्स चतुर्थ को उसके जीवनकाल तक की आय देकर उससे अलग कर दिया गया था। किन्तु इस प्रबन्ध मे यद्यपि उसे आगे कार्यवाही के लिए कुछ अच्छे आधार मिल गए परन्तु उसे डायम में स्थान नहीं मिला और न ही जर्मनी में उसकी प्रतिष्ठा बढी।

बरगंडियन सर्किल में साम्राज्यी दावे

जब लुई लारेन के क्रय से विशेष लाभ प्राप्त करने में असफल रहा तब वह बरगडियन सर्किल की तरफ मुडा जहा साम्राज्यीदावे इतने ही अस्पष्ट थे जितने एल्सेस और लोरेन में। मुन्सटर की सधि में बरगंड़ी के सर्किल को साम्राज्य का एक भाग घोषित किया गया (इस जागीर पर अधिकार के कारण स्पेन डायट में एकमत का प्रयोग करता था) किन्तु दूसरी ओर मुन्स्टर की बातचीत में इस सर्किल को सामान्य समझौते से इसलिए स्पष्टतया अलग रखा गया क्योंकि अभी वहां फ्रांस और स्पेन का झगड़ा चल रहा था। इसलिए फ्रांस के पक्ष की ओर से यह तर्क दिया जाता था कि स्पेन द्वारा बरगंडी के प्रान्तों पर अधिकार होने के कारण फ्रांस को उन्हें शत्रु प्रदेश समझने का अधिकार था। यद्यपि साम्राज्य के साथ उनका सम्बन्ध केवल संदिग्ध था किन्तु इस विवाद को विशेषतूल नहीं दिया गया क्योंकि इन प्रदेशों की साम्राज्यी जागीरें न स्वीकार करने का मतलब यह होता कि यदि कभी बरगंडियन सर्कल उसके अधिकार में आजाये तो फ्रांस डायट में एक स्थान प्राप्त करने का दावा नहीं कर सकता था।[1] इसलिए फ्रांसीसी कूटनीति सर्कल को साम्राज्य से अलग करने के लक्ष्य पर लग गई ताकि इसके भाग्य का निर्णय उस समय चल रहे संघर्ष (1648–1659) के परिणाम पर निर्भर हो। अन्त में इस खतरे का अनुमान करके स्पेन ने राइन की लीग की सदस्यता के लिए प्रार्थना–पत्र भेज कर सर्किल के लिए सहायता लेने का प्रयत्न किया। किन्तु फ्रांस ने लीग की कौंसिल को छल द्वारा एक प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए फुसला लिया था कि वर्तमान तमाम सदस्यों की अनुमति के बिना कोई नया सदस्य न बनाया जाए।[2] इसलिए 1660 तक स्थिति ऐसी हो गई थी कि फ्रांस का बरगडियन सर्किल से दो प्रकार का व्यवहार हो सकता था। उसे शत्रु देश मानकर स्पेन से जीत लिया जाए, इसमें यह आवश्यक नहीं था कि उस सम्राट से ही शत्रुता की जाये अथवा उसे पिरेनीज की संधि द्वारा दहेज देने के वचन का वैध एवजाना कहकर ले लिया जाय क्योंकि यह दहेज कभी अदा नहीं किया गया।

---

1 आएरबाख, लाफ्रांस ए ला सेन्ट एम्पमर रोमेन, 108 एफ एफ।
2 26 जौलाई, 1663।

पिरेनीज की संधि होने के 18 मास बाद परित्याग की धारा को समाप्त हुआ समझा जा सकता था। लुई की केवल एक हिचकिचाहट थी कि उसका श्वसुर अभी जीवित था। सितम्बर 1665 में फिलिप चतुर्थ की मृत्यु हो गई उसकी वसीयत[1] में लिखा गया था कि यदि उसके पुत्र चार्ल्स के कोई पुत्र संतान न हो तो स्पेन का उत्तराधिकार इन्फैन्ट मारग्रेट (Infante Margrate) (जो सम्राट लियोपोल से विवाहित थी) को दिया जाये। यदि ऐसा न हो सके तो उसकी बहिन पूर्व सम्राज्ञी मेरिया (स्वर्गीय फर्डीनेन्ड तृतीय की विधवा) को दिया जाय, यदि यह भी संभव न हो तो उसकी चाची सेवाय की डचेस के उत्तराधिकारी को दिया जाय। वसीयत की इन धाराओं के अनुसार लुई या मेरिया थेरेसा कोई दावा नहीं कर सकते थे, किन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या फिलिप के लिए इस प्रकार राज्य का उत्तराधिकार देना उचित था जबकि उसका असंदिग्ध उत्तराधिकारी जीवित था। इसलिए फ्रांस द्वारा इस प्रकार के उत्तराधिकार की संदिग्धता से विचलित होने से इन्कार करना न्याय-संगत था। क्या विधिवेत्ता पहली शादी की बड़ी सतान मेरिया थेरेसा की ओर से कोई दावा पेश कर सकते थे ? मांग होने पर पूर्ति भी हो गई। क्यूरेन के डूहम[2] नामक एक सचिव ने एक युक्ति प्रस्तुत की जो इतनी अच्छी थी कि जिस पर लुई को लगभग विश्वास हो गया। उसके सुझावों को मान लिया गया और उन्हें सरकारी तौर पर Traite des droits de la reine tres chretienne sur divers etats de la monarchia de l'Espagne में[3] घोषित कर दिया।

दावों का विवरण

पेम्फलेट के पहले भाग में परित्याग और उसके रद्द होने का विवरण है। दूसरे में मेरिया थेरेसा के अधिकारों का दर्पण है जो उसके पति लुई को हस्तान्तरित हो जाता है। ये हक लग्जेमबर्ग और बरगंडियन सर्कल के प्रान्तों में निजी सम्पति के उत्तराधिकार को नियमित करने वाली प्रथाओं पर आधारित थे। एक प्रथा ऐसी थी की जिसके अनुसार दूसरे विवाह से उत्पन्न पुत्रों की अपेक्षा पहले विवाह की पुत्रियों को जायदाद का उत्तराधिकार मिलता था और चूंकि यह प्रथा ब्रेम्बैह, एंटवर्प, लिम्बर्ग, मेलिस, अपरग्वैल्डरलैंड, नमूर और कैम्ब्राड में प्रचलित था, इसलिए

---

1 फिलिप चतुथ की वसीयत के लिए देखिए, लेग्रेले, पूर्व उद्धृत, 1, 458–517–17।

2 वही, 1,74।

3 इसका पूरा विवरण लोन्के लिखित ला रिदाउटे द ला फ्रांस एतव लएस्पेगने ओक्स पेज-बास, 225 एफ एफ में प्राप्य है।

इन तमाम प्रांतों का उत्तराधिकार मेरिया थेरेसा को मिल जाना चाहिए था इसी प्रकार चूंकि हेनाल्ट फ्रैंक एलयु (Frank Allew) था इसलिये यह फिलिप की सबसे बड़ी संतति को बिना लिंग-भेद किये मिल जाना चाहिए और चूंकि फ्रैंचे कांमटे में समान विभाजन का सिद्धान्त प्रचलित था इसलिए इसका तीसरा भाग फ्रांस की रानी को मिलना चाहिए। इन मांगों में लक्समबर्ग का चौथा भाग और जोड़ा गया क्योंकि वहां ऐसा रिवाज था कि सभी बच्चे जायदाद के अधिकारी होते थे। और लड़कों को लडकियों से दुगुना भाग मिलता था। केवल फ्लैडर्स का जिला टूनाई, तीन चौथाई लक्ममबर्ग और दो तिहाई फ्रैंचे काम्टे पर दावा नहीं किया गया। इन दोनों का समर्थन करने वाले दस्तावेज का लेटिन और स्पेनिश भाषा मे अनुवाद किया गया और उनका खूब प्रचार किया गया।

दावों का औचित्य

ऐसे हास्यास्पद दावों की घोषणा से शायद ही कभी जनमत का अपमान हुआ हो। व्यक्तिगत सम्पत्ति का उत्तराधिकार को निश्चित करने वाली स्थानीय प्रथाओं को ऐसे राज्यों की प्रभुसत्ता निश्चित करने के लिए, जिनमें यह प्रथा मान्यता प्राप्त हो, लागू करने का विचार असामान्य होते हुए भी प्रशसनीय दिखाई देता है। किन्तु यह मान्यताओं पर आधारित था (१) प्रभुसत्ता का अर्थ स्वामित्व था और (२) राज्यों का पनीर की तरह विभाजन हो सकता था। सम्भवतः समकालीन मत प्रभुसत्ता की इस धारणा के विरुद्ध आवाज न उठाता, किन्तु यह मत मानता था जो बिल्कुल ठीक भी था, कि व्यक्तिगत सम्पति के उत्तराधिकार को स्थिर करने वाली प्रथाओं का प्रभुसत्ता का उत्तराधिकार निश्चित करने वाले नियमों से कोई सम्बन्ध न था। इसके अतिरिक्त बारगंडियन सर्किल का निर्माण करने वाले प्रान्तों के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण न था जो बंटवारा करने के इस काल्पनिक तरीके को न्याय संगत बताता। लुई से विवाह होने पर मेरिया-थेरेसा फ्रांसीसी नागरिक बन गई थी, किन्तु अब इस तर्क के आधार पर वह अपनी इच्छानुसार अपने पिता के राज्य में किसी भी सम्प्रदाय के कानूनी अधिकार ग्रहण कर सकती थी और किसी भी ऐसे विशेषधिकारों का चुनाव कर सकती थी जितना ब्रबैंत, मैक्सिको या नेपल्स में निवास करने वाली उसके पिता की प्रजा उपभोग करती थी। इस समानता के आधार पर (Analogy) वह स्पेन की शासक होने का दावा कर सकती थी यदि यह सिद्ध कर दिया जाता कि व्यक्तिगत सम्पति की हकदार दूसरी शादी से उत्पन्न हुए पुत्र की अपेक्षा पहले विवाह से उत्पन्न हुई पुत्री होगी। इन तर्कों का सबसे अच्छा उत्तर योग्य आस्ट्रियन कूटनीतिज्ञ फ्रैंज लिसोला[1]

---

1 लिसोला के सम्बन्ध में सर्वोत्तम विवरण ए. एफ. प्रिब्राम द्वारा दिया गया है, फ्राज पोल फ्रिहट वोन लिसोला, 1613–1674 एंड दाई पोलिटिक सेइनर जैत।

द्वारालिखित **बौल्कियर डे एस्टेट ए जस्टिस** था जिसका फ्रास के विरूद्ध प्रचार इतना स्थिर और दृढ़ था कि कम से कम एक बार उसकी हत्या करने का भी प्रयास किया गया। लिसौला ने अपने घोषणा पत्र में तर्क दिया था कि जायदाद के उत्तराधिकार के लिए दिया गया तर्क शस्त्रो को प्रयोग में लाने का एक बहाना मात्र था और यदि यूरोप इस प्रकार के तर्कों को क्षमा करता है तो शक्ति जल्दी ही अधिकार को दास बना लेगी।

फ्रांस की सैनिक तैयारियां

फ्रांस का ठोस तर्क उत्तराधिकार पर न होकर अपनी सुसगठित थल व नौ-सेना पर आधारित था। 17वीं शताब्दी के अधिकांश भाग मे फ्रांस में सबसे अच्छे सैनिक प्रशासक थे। 1643 में माइकल लेटलियर की युद्ध के राज्य सचिव-पद पर नियुक्ति होने पर वहां पुनर्निर्माण का काल आरम्भ हो गया जिसमें कम्पनियों का साहसी सैनिकों को निजी अधिकार में रखना बद कर दिया गया। क्योंकि अब उन्हें कर्नल के अधिकार में ले लिया गया जिसको सरकार के विशेष निरीक्षण में रहना पड़ता था।[1] 1662 में उसका पुत्र लूव्वाय (Lowvois) राज्य-मत्री हुआ जो उत्साही और कुशल होने के साथ-साथ भ्रष्ट और क्रूर भी था। उसने उन सब दोषों को, जो उसकी दृष्टि में आये दूर किया। फ्रांससी सेना को नियमित और स्थायी बनाने का श्रेय भी उसी को है। पासे–वोलेंट्म या अनियमित सैनिको का दमन किया गया और कर-प्रणाली के स्थान पर एजेन्टों द्वारा भारी फीस लेकर सिपाहियों को नियुक्त किये जाने वाली पद्धति के स्थान पर भर्ती का नया तरीका अपनाया गया जिसके द्वारा राज्य स्वयं सीधी भर्ती करने लगा। सैनिक कमीशन के पद अब भी खरीदे जा सकते थे, परन्तु अफसरों को योग्यता सम्बन्धी परीक्षाएं पास करनी पड़ती थीं और पदोन्नति किसी विशेष श्रेणी के लिए सीमित नहीं रखी गई थी। अब नाममात्र के अफसरों के साथ पूर्व योग्यता प्राप्त अफसर भी लगा दिये गए थे जिससे वीरता के साथ, जिस पर कुलीनवर्ग अब भी अपना एकाधिकार समझता था, अनुभव का संयोजन हो जाए। लूव्याय ने कर्नल और जनरल के पद के बीच में ब्रिगेडियर जनरल का नया पद स्थापित करके, ऊंचे पदों में कुछ परिवर्तन किये। उसने कमीशन का पद चाहने वाले युवक कैडटों के प्रशिक्षण के लिए सुवि-धाएं प्रदान की। यद्यपि फ्रांसीसी सैनिकों का वेतन कम होता था, किन्तु वे पूर्णतया लैस रहते थे और उन्होंने फ्रांसीसी सैनिक उत्साह बनाए रखा जिसके लिये उनका राष्ट्र प्रसिद्ध था। उसने पदों की कठोर शृंखला स्थापित की। अभी तक वहां

---

1 इस सम्बन्ध में अच्छा विवरण एल. एन्डे लिखित, **माइकेल ल टेलर एत ओरगनाइजेशन द आर्मी मोनारकी** में उपलब्ध है।

युद्ध-क्षेत्र में नेतृत्व करने की योग्यता प्राप्त सभी जनरल बारी-बारी से सेना को समादेश दिया करते थे, अब उसने यह आदेश देकर कि भविष्य में युद्ध क्षेत्र में वरिष्टता के आधार पर समादेशक नियुक्त होंगे, सेना के निर्देशन में एकता स्थापित की।

लूव्वाय और वॉबेन

कमसरियट, नये घोड़ों, रोगी व माल वाहन, तोपखाना और बारूद-खाना विभाग, युद्ध कमिश्नर के नियन्त्रण में रखे गए। इस दिशा में लूव्वाय का कार्य महान् था। अब फ्रांसीसी सेनाओं को भोजन के लिए देहातों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता था। वहनकारी सेनाएँ भोजन-सामग्री तथा चारा तक पीछे पीछे साथ लेकर चलती थी, शताब्दी के अन्तिम चरणों में एक विशेष वर्दी पहनने की प्रथा सामान्य हो गई थी। पाइक और मस्कैट नामक बन्दूक को सगीन में मिला दिया गया और हथगोलों का प्रयोग आरम्भ कर दिया गया। अनिवार्य भर्ती का परिष्कृत रूप मुख्यतया उस कुलीन वर्ग पर लागू किया गया जो सीमाओं के निश्चित क्षेत्र के अन्तर्गत रहते थे। यह अनिवार्य सेवा वर्ष के कुछ थोड़े से महीनों के लिए होती थी। लूव्वाय ने फ्रांसीसी सेना की सख्या 200000 तक पहुँचा दी जिसमें आयरिश स्कॉट और स्विस टुकड़ियां भी सम्मिलित थीं। फ्रांसीसी सेनाओं के सेवी वर्ग के विकास और पुन सगठन के साथ साथ वॉबेन द्वारा सुरक्षा के विज्ञान मे की गई महान् प्रगति भी सम्मिलित हो गई। वॉबेन अपने समय का सबसे कुशल इंजीनियर था। उसने फ्रास की रक्षा के लिए दुर्गों का ऐसा जाल बिछा दिया जो 19 वी शताब्दी तक में दुर्गम माने जाते थे, और उनमें से बैलफोर्ड पर सन् 1870–71 में तीन महीने तक घेरा पड़ा रहा। वॉबेन ने शत्रु-दुर्गों का गणित में पाई जाने वाली यर्थाथता के साथ दमन किया। प्रतिरक्षा के साथ साथ आक्रमण करने में भी उसने अपनी प्रतिभा का ऐसा परिचय दिया कि लुई को घेरा डालने वाली युद्ध कलासे प्रेम हो गया, क्योंकि जब मूक इंजीनियर का कार्यपूर्ण हो गया तो लुई को नये क्षेत्रों में चमत्कारपूर्ण ढग से प्रवेश करने के प्रशसनीय अवसर मिलते थे। लुई को यह श्रेय प्राप्त है कि उसने लूव्वाय और वाबेन की सैनिक प्रतिभा को पहिचान लिया और उन्हें काम करने की पूर्ण स्वतत्रता प्रदान की।

फ्रांसीसी नौ–सेना

जो कार्य लूव्वाय ने फ्रांसीसी स्थल सेना के लिए किया वही उसके प्रतिस्पर्धी कोलबर्ट ने फ्रांसीसी नौ–सेना के लिए किया। रिशेलू ने युद्ध में मनुष्य और जहाज भेजने के लिये व्यवसायी जहाजी बेड़े के महत्व को समझ लिया था, किन्तु उसके उत्तराधिकारी ने उसकी बिल्कुल उपेक्षा की। कोलबर्ट ने फ्रांसीसी बन्दरगाहो

पर जहाजों के निर्माण को प्रोत्साहन दिया और फ्रांसीसी नौ-सेना को 15 के स्क्वैड्रन से बढाकर 200 के बेड़े तक पहुँचा दिया। यह प्रगति कोलबर्ट के पुत्र और उत्तराधिकारी सीग्नेले ने जारी रखी। उन दिनों नावें चलाने का कार्य अपराधियों, तस्कर-व्यापारियों और भगोड़ों के गिरोह, ह्यूजनों और तुर्की दास किया करते थे। कोलबट ने तटीय नगरों में अनिवार्य भर्ती का एक नियम लागू करके इनकी अपेक्षा एक समरूप त्रिवर्ग तैयार किया। उसने समुद्री तोपखाने और जल–सम्बन्धी ज्ञान की वैज्ञानिक आधार पर स्थापना की। नौ–सेना के अफसरों को अभी भी केवल एक सीमित वर्ग में से लेने की प्रथा को जारी रखा। फ्रांसीसी नाविकों के कुशल और वीर होने पर भी फ्रांसीसी नौ–सेना का पेशा केवल योग्यता पर आधारित न था, जैसा स्थल–सेना में था। लुई चौदहवें के शासन के आरम्भिक वर्षों में फ्रांसीसी बेड़े ने बार्बरी सामुद्रिक लुटरों को भूमध्यसागर में तंग करने का लाभदायक कार्य किया। अल्जीयर्स और ट्यूनिस में समुद्री डाकुओं के शक्तिशाली संगठन रहते थे जो सुल्तान के राज्य को नाममात्र के लिए स्वीकार करते थे। उनसे ईसाईबन्दियों को मुक्त कराने के लिए धन की अपार राशि प्रतिवर्ष देनी पड़ती थी। 1662 में तुर्की से सम्बन्ध–विच्छेद के खतरे की आशंका होने पर भी फ्रांसीसी बेड़े ने भूमध्यसागर में चक्कर लगाने शुरू कर दिए और अल्जीरिया के किनारे पर जिजेली (Djidjeli) नामक स्थान पर अधिकार कर लिया। ट्यूनिस और अल्जीयर्स पर बम बरसाये गए, तथा बहुत से बन्दियों को छुड़ा लिया गया। इस प्रकार लुई ने अपना शासनारम्भ भूमध्यसागर में नौ–सैनिक प्रमुखता स्थापित करके किया।[1]

संयुक्त प्रदेशों से वार्ता

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि लुई चौदहवें के राज्यारोहण के कुछ ही वर्षों के अन्दर उसकी विदेशी नीति की सहायता के लिए पर्याप्त सैनिक शक्ति तैयार हो गई थी। कूटनीतिक शस्त्र की भी उपेक्षा नहीं की गई। बरगडियन सर्कल की विजय करने का बीड़ा उठाने से पहले लुई ने उत्तराधिकार को स्वीकार करने-वाले देशों की मित्रता प्राप्त करने की चेष्टा की। स्पेनिश निचले प्रदेशों को प्राप्त करने के लिये संयुक्त प्रदेशों की मित्रता को काफी समय से प्रथम आवश्यकता माना जाता था और 30 वर्षीय युद्ध के हस्तक्षेप करने से पूर्व 1635 में रिशेलू[2] ने स्टेट्स जनरल से एक संधि की थी जिसके अनुसार स्पेनिश नीदरलेंड्स का दोनों

1 फ्रेन्च नौ सेना का इतिहास सी. एच. द ला रोनसियो द्वारा लिखा गया है तथा इसके खंड 4,5 और 6 सत्रहवीं शताब्दी से सम्बन्धित हैं।

2 डूमोंट, कोर्ट्स डिप्लोमेटिक 6, 1, 80 एफ. एफ.।

देशों में बंटवारा करना और अवशिष्ट प्रदेश को एक गणतंत्र बनाना स्वीकार किया गया। इसमें डचों के हिस्से में स्पेनिश फ्लैण्डरलैंड ब्रूगेंडा और निचले शेल्ट (Lower Scheldt) के बायें किनारे का प्रदेश आया जबकि फ्रांस को थीयोनविल, नामर और ब्लैन्केनबर्ग (Blacken berghe) तक का फ्लेमिश समुद्री तट मिलना था किन्तु राजनीतिज्ञ फ्रांस को अपने सीमान्त के इतना निकट नहीं रखना चाहते थे। इस लिए इस संधि का कोई फल नहीं निकला। 1650 में इस संधि को पुनः जीवित करने का प्रस्ताव रखा गया[1] किन्तु उसी वर्ष नवम्बर मास में आरेन्ज के विलियम द्वितीय की मृत्यु हो जाने से बातचीत आगे नहीं बढ सकी। सन् 1663 में फिर इस योजना पर बातचीत की गई और मार्च में दे'स्वाद (D'eslvades) को जान ड़े विट (John De witt) के साथ निर्णयात्मक बातचीत के लिए हेग भेजा गया।[2] डेविट को गुप्त रूप से मालूम हो गया था कि 6 फ्लेमिश नगर स्विस ढंग के गणतन्त्र की रचना करना चाहते थे। इसलिए डच सरकार ने आस्टेन्ट माथस्ट्रिच (Ostende Malstriest) रेखा को नई सीमा रेखा बनाने का प्रस्ताव रखा और अपनी विजय को आसान करने के लिये स्पेनिश निचले प्रदेशों में विद्रोह उकसाने की योजना तैयार की किन्तु यह योजना असफल रही। इसका मुख्य कारण यह था कि लुई डच पेन्शन भोगी एक साधारण व्यक्ति से वाद विवाद करने के विरुद्ध था और उसके सिद्धान्त विद्रोहीकारी लोगों को प्रोत्साहन देने की अनुमति नहीं देते थे। इन सिद्धान्तो का पालन सदैव नहीं किया जाता था किन्तु उसके श्वसुर के जीवन काल में उनका प्रभाव उसके आचरण पर अवश्य रहा। डचों साथ इस वार्ता की असफलता फ्रांस द्वारा 1672 में हालेण्ड पर आक्रमण करने का एक कारण बन गयी।

इंग्लैण्ड से वार्ता

इस मामले में उसे इंग्लैण्ड का चार्ल्स द्वितीय सरलता से मानने वाला मित्र मिल गया। लुई ने इसका प्रारम्भ उस सनकी राजा से डंकर्क और मार्डिक को खरीद कर किया जो अपना और अपने देश का सम्मान नकद मूल्य में बेचने के लिए सदैव तैयार रहता था। चार्ल्स की बहिन हेनरीटा मेरिया ने लुई के छोटे भाई अर्लियां के फिलिप से विवाह किया और स्वयं ब्रेगेन्जा की कैथरीन से विवाह करके चार्ल्स ने पुर्त्तगाल से मित्रता की। इस प्रकार यह देश उस जंजीर की एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गया, जिससे फ्रांसीसी कूटनीति स्पेन को अपने घेरे में बांध रही

---

1 1650 में बेलिव्रेरे को दिये गये निर्देश, इन्सट्रकशस डोनीस (हालण्ड) 1, 12 एफ एफ।

2 लेगले, पूर्व उद्धघृत, 1,85 और लेकेवरे-पोन्टेल्स, जीनदविट, 1,298-302।

थी। फ्रांस के सम्बन्ध तुर्की, पोलैन्ड और स्वीडन से अच्छे थे और इन देशों को अपने पक्ष में बनाए रखने के लिए प्रत्येक प्रयत्न किये गये क्योंकि ये सब मिलकर यूरोप के बीच में एक कर्ण रेखा की भाति फैली हुई प्रादेशिक दीवार का काय करते थे और पूर्व में हैप्सबर्ग प्रदेशों की सीमाओ पर हर स्थान पर जमे हुए थे। जर्मनी मे फ्रास दीर्घकाल तक बवेरिया और ब्रैंडेनबर्ग का 'पोषण' करता रहा। 1668 ई० तक फ्रांस राइन की लीग की प्रमुख प्रेरणा-शक्ति बन गया। 1665 में फिलिप चतुर्थ की मृत्यु के समय फ्रास आन्तरिक और बाह्य दृष्टियों से आक्रामक नीति के लिए तैयार हो चुका था और मई 1667 में ट्यूरेन ने औपचारिक रूप से युद्ध की घोषणा किये बिना 35,000 सैनिकों के साथ स्पेनिश निचले प्रदेशों पर धावा बोल दिया। छोटे और निर्णायक अभियानों द्वारा चालराय (Charleroy), आर्मेटियर्स (Armentiers), टूर्ने (Tournai), डूआय (Douai) और लिले (Lille) पर अधिकार कर लिया गया, किन्तु अभियान की यह चमत्कारिक सफलता लुई की योजनाओं के लिए अभिशाप सिद्ध हुई, क्योंकि यूरोप की कूटनीतिक स्थिति एकदम बदल गई। यह परिवतन लुई चौदहवे के साथ हुई एक व्यक्तिगत घटना के साथ-साथ हुआ जिसने लुई चौदहवे की नीति पर स्पष्ट प्रभाव डाला।

विभाजन की गुप्त संधि (जनवरी 1668)

13 जनवरी 1668 को सम्राट् लियोपोल्ड के प्रथम पुत्र की शैशवावस्था में ही मृत्यु हो गई और उसके पोस्टमार्टम के बाद सम्राट् के डाक्टरी सलाहकारों ने उसे चेतावनी दी कि साम्राज्ञी (मेरिया थेरेसा की छोटी बहन मेरी मारगैरेट) से स्वस्थ संतान उत्पन्न होने की संभावना नहीं है। उनकी यह चेतावनी 1670 और 1672 में सत्य सिद्ध हुई[1]। लियोपोल्ड को कैथोलिकवाद के वास्तविक भविष्य के विषय में चिन्ता थी। उसका सदा यह विश्वास रहा कि तुर्कों और प्रोटेस्टेन्टों के विरुद्ध बूर्बा और हैप्सबर्गों की मित्रता निश्चित संरक्षण का कार्य करेगी। लियोपोल्ड दो घटनाओं के कारण वियना स्थित-फ्रांसीसी राजदूत ग्रीमानविले (Gremonville) की बात सुनने को तैयार हो गया। एक घटना थी पिछले वर्ष की ग्रीष्म मे फ्रासीसी हथियारों की सफलता और दूसरी उसके बाद कोई उत्तराधिकारी न होने की सभावना। 20 जनवरी 1668 को उसने लुई के साथ एक गुप्त संधि पर हस्ताक्षर किये जिसके अनुसार दोनों ने आपस में स्पेनिश साम्राज्य का विभाजन कर लिया। उस समय चल रही लड़ाइयों की समाप्ति पर फ्रांस के लिये लग्जेम्बर्ग और फ्रेंच कामटे और कैम्ब्राय (Cambrai), डूआय (Douai) सेन्ट ओमर (St. Omer), बर्गे (Bergues) और फर्न (Furnes) निश्चित

---

1 लेग्रेले, पूर्व उद्धृत, I, 142 एफ एफ।

किए गए। किन्तु उसने अन्य विजित प्रदेश वापिस करने का वचन दिया। यह भाग फ्रांस को तत्काल मिलना था। स्पेनिश राजा की मृत्यु के बाद (जिसकी प्रतिमास संभावना बनी रहती थी) सम्राट के लिए स्पेन, वेस्ट इण्डीज, मिलान, बेलीरिक द्वीपसमूह, सार्डीनिया और केनारीज निश्चित किये गये जब कि फ्रांस के अन्तिम हिस्से में निचले प्रदेश (Low Countries) पूर्वी फिलीपाइन्स, स्पेनिश नेवारे, नेपल्स, सिसली और उत्तरी अफ्रीका के अधिकृत प्रदेश आये। स्पेन का चार्ल्स द्वितीय ऐसा रोगी शिशु था जिसकी शीघ्र मृत्यु प्राय: निश्चित मानली गई थी। संधिवार्ता करने वालों के मन में कोई संदेह न था कि बहुत थोड़े समय में विभाजन पूरा करने का अवसर आयेगा। संधि को पूर्णतया गुप्त रखने के लिए इसे एक मजबूत संदूक में रखा गया और टस्कनी के ग्रांड ड्यूक के संरक्षण मे भेज दिया गया। दोनों दलों ने विभाजन की कोई ऐसी अन्य संधि न करने की गम्भीरता पूर्वक शपथ ली जो इस विभाजन से मेल न खाती हो। किन्तु यहां यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु से बहुत पहले ही मजबूत संदूक और उसके अन्तरित लेखों को पूर्णतया भुला दिया गया।

त्रिदल संधि (मई 1668)

फरवरी 1668 में कोन्डे ने फ्रेंच कोम्टे पर धावा बोल दिया और कुछ ही सप्ताहों में राजधानी बेसनकों (Besencon) सहित समस्त प्रांत फ्रांस के अधिकार में आ गया। यूरोप अब पूर्णतया भयभीत हो गया और इसका पहला परिणाम समुद्री शक्तियों अर्थात् इंग्लैण्ड और हालेण्ड में मित्रता होना था, जिसमे कुछ समय बाद स्वीडन भी सम्मिलित हो गया। यह त्रिदलीय संधि मई 1668 में हुई। इस संधि का उद्देश्य फ्रांस को अपने सीमान्तों तक सीमित रखना था, क्योंकि ये सीमाएँ वैस्टफेलिया और पिरेनीज की संधियों द्वारा निर्धारित की गई थी। अब जबकि गुप्त संधि पर हस्ताक्षर हो चुके तो लुई को स्पेन से सन्धिवार्ता करने में कोई आपत्ति न थी। ए-ला-शपल[1] की शांति से, जिस पर मई 1668 में हस्ताक्षर हुए लुई ने फ्रेन्च कोम्टे को वापिस लौटा दिया, किन्तु बर्ड्वे फर्न, आरमेण्टीयर्स, औडेनार्ड, कोर्ट्राय, लिले डुआय, टूर्नाय, ब्रिशे, आथ और चार्लेराय अपने अधिकार में रखे। इस प्रकार की निर्णायक विजय के बाद भी फ्रेंच काम्टे वापिस कर देने पर चारों ओर लुई की उदारता की प्रशंसा होने लगी[2]। अभी तक गुप्त संधि का भेद प्रकट नहीं हुआ था।

---

1 वास्ट लेस ग्रांडस ट्रीटीज, 2, 1, 22।

2 लुई ने एक मेडिल बनवाया था जिसपर लिखा था 'पंक्स प्रेलेटा ट्रूम्फ' विजेताओं को शांतिप्रिय है।

सम्राट लियोपोल्ड

ए–ला–शपल की शांति द्वारा प्राप्त किये गये फ्लैमिश नगर विशेष महत्व-पूर्ण तो नहीं थे, किन्तु वे भावी विजयों के लिए अड्डों का काम अवश्य कर सकते थे। इस प्रकार लुई औडेनार्ड से घेण्ट, बिशे से मौंस और आथ से ब्रूसेल्स पर अधि-कार करने की आशा कर सकता था ताकि जब विभाजन हो जाय तो फ्रांस ब्रैवेण्ट और फ्लैण्डर्स को अपने साम्राज्य में विलय करने की अनुकूल स्थिति में रहे। चूंकि स्पेन का चार्ल्स द्वितीय अभी भी जीवित था, अतः लुई अधिक अधीर हो गया। वियना में ऐसे प्रभाव काम कर रहे थे जिनसे फ्रांसीसी राजदूत को गुप्त संधि के खतरे में पड़ने की आशंका हुई। इस स्थिति में हैप्सबर्ग और बूर्बों के संघर्ष में सम्राट लियोपोल्ड का व्यक्तित्व सामने आने लगा। वह पहले से ही चर्च के लिए बना था, किन्तु एक भाई की मृत्यु हो जाने से उसे सम्राट बनना पड़ा। उसे कविता, संगीत और ललित कलाओं से प्रेम था। वह स्वयं संगीत–रचनाओं में लीन रहता था और निष्कपट, पर कभी कभी अविवेकपूर्ण, संरक्षण दे देता था[1]। उसने शिक्षा को प्रोत्साहन देकर, कैथोलिक एकता स्थापित करके तथा सेना संगठित करके अपने बिखरे प्रदेशों में समृद्धि और व्यवस्था स्थापित करने के लिए बहुत काम किया। यद्यपि वह प्रकृति से दयालु स्वभाव वाला था, परन्तु उसे अपनी जेसुइट शिक्षा और हैप्सबर्ग रक्त के कारण प्रोटेस्टेन्ट प्रजा के विरुद्ध बहिष्कार ने कठोर तरीके अपनाने पर मजबूर होना पड़ा। हंगरी में वह अपना शासन मग्यरों की आकांक्षाओं को सैनिकों और कर–संग्रह–कर्ताओं के पांव तले कुचलने के पश्चात ही सम्भव बना सका। अपनी प्रजा और तुर्की खतरे से निरन्तर भयभीत लियोपोल्ड ने विनीत और सावधान प्रशासन की उलझनों में शरण ली। वह स्वयं अपना प्रथम मंत्री बनने[2] और वर्साय में अपने भानजे के समान यश प्राप्त करने का इच्छुक था। वह स्वभाव से ही पांडित्य–प्रदर्शनकारी, अत्यधिक अहंभाव से पूर्ण और अपने और दूसरों के लिए बहुत शंकाशील व्यक्ति था कि प्रबल और प्रभावोत्पादक शासन के लिए अनुपयुक्त था।[3] भविष्य की संभावनाओं पर आधा-रित अनुमानों से परिचित वह प्रायः सामयिक आवश्यकताओं के प्रति ध्यान नहीं

---

1 प्रीब्राम और प्रेगनेऊ, **प्राइवेट ब्रीफ केज़र लियोपोल्ड प्रथम, एन देन ग्राफेन पोटिंग,** 1,32।

2 **वही,** 22।

3 वेनिस के राजदूतों मोलिन (1661) और वेनियर (1693) ने इस सम्बन्ध मे लियोपोल्ड के **चरित्र** का अच्छा वर्णन किया है, **फ्रोटेस रेरम आस्ट्रिया केरम, द्वितीय श्रृंखला,** 29,49 और 311।

देता था। उसे अपने निर्णय में विश्वास न था। वह कूटनीतिक चक्र के प्रत्येक मोड़ पर शंका करता था, उसकी शारीरिक आकृति भी उसके विरुद्ध थी क्योंकि उसका निचला जबाड़ा काफी आगे को बढ़ा हुआ था जैसा कि हैप्सबर्गों के शारीरिक गठन में प्रायः पाया जाता था और चूंकि वह अपना मुख प्रायः खुला रखता था, यह लक्षण उसकी कुरूपता और अदृढ़ता को और अधिक बल देता था। जैसा कि उसके व्यवहार से प्रकट होता था वह इतना अलग रहता था कि उसके दरबारी भी उसे बहुत कम जानते थे। 1668 की गुप्त संधि पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद उसे सदा यह भय रहता था कि कहीं संदूक वाला भेद न खुल जाये और जब एक बार फ्रांसीसी राजदूत ने मेड्रिड[1] में डान जुअन द्वारा शक्ति प्राप्त करने पर उसके विचार जानने का आग्रह किया तो लियोपोल्ड केवल यही उत्तर दे सका "भगवान के लिए संधि को गुप्त रखो।"[2] बूर्बों से की गई अपवित्र संधि उसकी मानसिक शांति को विचलित कर देती थी। एक बार 1670 के अन्त में उसने डेविड को गुप्त वचन दे दिया कि यदि लुई ने संयुक्त प्रदेशों पर आक्रमण किया तो वह फ्रांस से अपने सम्बन्ध विच्छेद कर लेगा, जबकि फ्रांस को उसने यह विश्वास दिलाया कि इससे उसका तात्पर्य यह था कि ऐसी स्थिति में वह तटस्थ रहेगा। चूंकि शाही कोष खाली होता जा रहा था इसलिए उसने फ्रांसीसी दूत को इशारा दिया कि यदि उसे आर्थिक सहायता दी जाये तो उसका बुरा नहीं माना जायेगा।[3] बूर्बों और हैप्सबर्गों के संघर्ष के बीच लुई 14वें का व्यक्तित्व इस प्रकार का था।

डचों का विरोध

ए-ला-शपल की संधि के बाद चार वर्ष तक शांति रही और वह डच आक्रमण के युद्ध के साथ समाप्त हो गई। एक बार तो ऐसा लगा कि लुई के पास 1672 में हालेण्ड पर आक्रमण करने का इसके अतिरिक्त कि उसकी विजयों का शौक था, कोई कारण नहीं था किन्तु इसके अन्य कारण भी देखे जा सकते हैं। लुई कई प्रयत्न करने पर भी स्पेनिश नीदरलैंड के प्रस्तावित बटवारे के सम्बन्ध में स्टेट्स–जनरल से समझौता करने में असफल रहा। मेजारिन ने 1656 में डचो को शत्रु देशों से व्यापार करने से रोका था और डच जहाजों द्वारा फ्रांसीसी बन्दरगाहों में लाये गये माल पर कर लगा दिया था। दोनों देशों मे व्यापारिक ईर्ष्या के कारण आयात-निर्यात करो का झगड़ा छिड़ गया जिसमें फ्रांसीसियों की अपेक्षा डचों को अधिक

1 देखिए मूल पृष्ठ 374।

2 लेग्रे ले **पूर्व उद्धृत** 1,151।

3 वेस्ट, **लेस ग्राउन्ड ट्रीटीज** 2,25। लुई ने उत्तर दिया "उसको यह नहीं सोचना चाहिए कि वह रुपयो से हिज मेजेस्टी की मित्रता खरीद सकेगा।

हानि उठानी पड़ी क्योंकि समार के माल–वाहन का अधिकांश व्यापार संयुक्त प्रदेशों के पास था और फ्रांस के डच बन्दरगाहों पर जाने वाले जहाजों की संख्या थोड़ी थी, अत: स्टेट्स जनरल इसका बदला न ले सकी। 1664 में लुई निचले प्रदेशों के लिए अपना दावा रखने से पूर्व यूरोप के मत को अपने पक्ष में करने का इच्छुक था, इसलिए उसने फ्रांस द्वारा लगाये गये रक्षित कर को डचों के लिए कम कर दिया। किन्तु तीन वर्ष बाद उसने अपने उत्तराधिकार के दावे से समस्त यूरोप को चौंका दिया और हालेण्ड पर अत्यधिक कर (Tariff) लगा कर विचलित कर दिया।[1] परन्तु दोनों देशों में अनबन के केवल यही कारण न थे। डचों के पास नमकीन मछली के व्यापार का एकाधिकार था और उनके फ्रांसीसी और अंग्रेज-स्पर्धी मछली को नमकीन बनाने और पैकिंग करने का भेद नहीं जान सके। 1634 में स्टेट्स–जनरल ने फ्रांस से बड़ा कर्ज लिया था जो कभी अदा नहीं किया गया। उन्होंने स्पेन के साथ 1648 में जो संधि की वह फ्रांसीसी कूटनीतिज्ञों के मन में अब भी खटकती थी। कोलोन के इलेक्टर और लीज के विशप की ओर से शिकायत थी कि डच मियुज और राइन के किनारे पर कई स्थानों पर अपनी सेना का जमाव कर रहे थे। इसके अतिरिक्त लुई डचों से घृणा करता था। वे गणतंत्री और धर्म–विरोधी थे, उनके इतिहास का आरम्भ विद्रोह से हुआ, वे व्यापारियों और पनीर के सौदागरों की सभा द्वारा प्रशंसित थे जिनके साथ किसी भी स्वाभिमानी राजा द्वारा बातचीत करने की आशा नहीं की जा सकती थी, डच जनता का वर्णन लुई कोंडे कह कर किया करता था। वास्तव में युद्ध के कई कारण थे। जनमत को उत्तेजित किया गया, इस बीच में यह भी ध्यान था कि लुव्रोयस द्वारा कुशलतापूर्वक बनाये गये महान् अस्त्र को शायद प्रयोग में न लाने से जंग लग जाये। दोनों देशों में ऐसी तनावपूर्ण स्थिति में कुछ घटनायें हुईं या ऐसी घटनायें की गईं। कहा जाता है कि डचों ने एक तमगा बनाया जिसमें वर्साय स्थित डच राजदूत गोस्वावान बेविनिजन (Gosva van Bewiningen) को सूर्य का मार्ग रोकते हुए दिखाया गया है। इससे अधिक स्पष्ट अपमान और क्या हो सकता था क्योंकि लुई ने सूर्य को अपना चिन्ह बनाया था, तथा वह वर्साय के प्रासाद के मुख्य द्वार पर अब भी चमक रहा था।

लुई की संधियां

डोवर की गुप्त संधि

जिस प्रकार बर्गण्डियन सर्कल पर आक्रमण करने से पूर्व सन्धियों का जाल

---

1 1660–72 के आर्थिक संघर्ष के लिए देखिए, एस. एंजिगा, **हेट वोसपेल वान डेन ओरलूग वान** 1672 (1926)। एंजिगा का कहना है कि लोविस भी उतना ही उत्तरदायी था जितना कि कोल्बर्ट।

बिछा लिया गया था उसी प्रकार हालैंड पर हमला करने में पूर्व सन्धियों का जाल बिछा लिया गया। 1669 में ब्रैन्डेन्बर्ग के इलेक्टर से संधि की गई जिसके अनुसार फ्रांस ने 10,000 आदमी उधार देने के बदले में स्पेनिश ग्वेल्डरलैंड देने का वचन दिया और दूसरे वर्ष बवेरिया के इलेक्टर की छोटी पुत्री (जब वह उचित अवस्था प्राप्त करले) से डाफिन का विवाह करने का वचन दे कर अपनी ओर मिला लिया गया और इसके बदले में इलेक्टर ने साम्राज्य के लिए चुनाव में लुई का अनुमोदन करने का वचन दिया[1] (जबकि लियोपोल्ड उसके मार्ग से हट जाये)। अप्रैल 1672 में स्वीडन से संधि की गई जिसके अनुसार रीजेन्सी सरकार ने आर्थिक सहायता के बदले में, डेनमार्क से मिलकर डच जहाजों को साउन्ड करना बन्द करने का वचन दिया। पहली जून 1670 को की गई डोवर की संधि से इंगलैण्ड का चार्ल्स द्वितीय लुई का पेंशनर बन गया और उसने संयुक्त प्रान्तों पर आक्रमण करने में सहायता देना मन्जूर कर लिया। इस लूट में चार्ल्स के हिस्से में शेल्ट नदी का मुहाना और वालचेरेन का टापू निश्चित किये गये, जबकि संधि की एक गुप्त धारा के अनुसार उसने रोमन कैथोलिक बनने और यूरोप में रोमन कैथोलिकवाद को विकसित करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया। आने वाले अभियान के विवरण का सावधानी से प्रबन्ध किया गया था, यद्यपि डच व्यापारी फ्रांस की सैनिक तैयारी का उद्देश्य भली प्रकार जानते थे तो भी वे इतने जाति-पक्षपात रहित थे कि उन्होंने फ्रांसीसी सरकार को गन पाउडर और सिक्का बेचना जारी रखा। उस समय के सबसे बड़े जनरलों, कोंडे, टूरेन और लग्जेम्बर्ग को उनके कार्य सौंप दिये गये और लुई ने स्वयं युद्ध की सर्वोच्च कमान अपने हाथ में ली।

हालैंड पर आक्रमण

लुई ने युद्ध की घोषणा करने की औपचारिकता को समाप्त कर दिया। फ्रांसीसी सेनाओं ने जून 1672 के आरम्भ में प्रस्थान किया और वे राइन के मार्ग से डच प्रदेश में घुस गई। कुछ महीनों में सारा यूट्रेक्ट प्रांत रौंद डाला गया और चिन्तित डच सरकार ने संधि के लिए प्रार्थना की। लुई के द्वारा रखी गई संधि की शर्तें इतनी अपमानजनक थीं कि वे फौरन ही अस्वीकार कर दी गई। निराशापूर्ण वातावरण में जॉन डेविट का वध कर दिया गया[2] और राज्य की प्रतिरक्षा का कार्य आरेंज के विलियम को सौंपा गया। फ्रांसीसी सैनिकों को बाहर निकाल दिया

---

1 1658,1670 और 1679 में इलेक्टरों के मत प्राप्त करने के लिए लुई ने जो प्रयत्न किए उसके लिए देखिए, **लेस टेन्टेटिव्ज द लुई चौदहवे पोर अराईवर एम्पायर।**

2 देखिए अध्याय 11।

गया और ऐम्सटर्डम को जीतने के असफल प्रयास के बाद लुई को 1672 के बसंत में अपनी सेना वापिस बुलानी पडी।

हेग की महान् सन्धि (ग्रांड अलायेंस) 1674

हालेण्ड का आक्रमण बिल्कुल निरर्थक सिद्ध हुआ क्योंकि इस हमले का बदला लेने के लिए आरेंज का विलियम डट गया। यूरोप फिर एक बार धृष्ट विजेता के विरुद्ध एक होगया और स्वीडन के अतिरिक्त सभी देशों, जिनको लुई ने बड़ी सतर्कता से संयुक्त प्रदेशों से अलग किया था अब डचों की रक्षा के लिए एकत्रित हो गये। लियोपोल्ड का विचार था कि युद्ध छिड जाने से वह गुप्त सन्धि से मुक्त हो गया था और इसलिए वह आसानी से फ्रांसीसी सन्धि से अलग कर लिया गया। बैन्डेनबर्ग, डेन्मार्क, और ब्रंजविक ने भी यही मार्ग अपनाया। अंग्रेजी, जनमत फ्रांस के विरुद्ध युद्ध लड़ने के पक्ष में था। जब सम्राट, स्पेन और लारेन के ड्यूक ने डचों की सहायता करने का उत्तरदायित्व लिया तो लुई के विरुद्ध दूसरा महान् सयोजन (Coalition) बन गया जो प्राय: हेग की महान् सन्धि (Grand Alliance–1674) के नाम से प्रसिद्ध है।

टूरेन की मृत्यु और कोंडे का अवकाश ग्रहण करना

डच युद्ध अब राइन और स्पेनिश निचले प्रदेशों में घेराबन्दी करने में परिणित हो गया। फ्रांस ने सन् 1673 में माएसट्रिच पर अधिकार कर लिया और अगले वर्ष फ्रेंच कोम्टे पर फिर धावा बोल दिया। इस बीच जर्मनिक डायट ने मई 1674 में फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। टूरेन ने पेलेटिनेट और अल्सेस में, जहां उसके विरुद्ध बैडेन्बर्ग, आस्ट्रिया और ब्रंजविक की सेनाएँ थी, बडी चतुराई से आक्रमण किए। 1674 की ग्रीष्म में मित्र देशों को सिंजीम (Sinzheim) और लेडेनबर्ग में पराजित करके, टूरेन ने व्यवस्थित रूप से पैलेटिनेट को रौंद डाला। कोई रियायत नहीं दी गई। अत्याचार और प्रतिशोध के कारण युद्ध का रूप अधिक आधुनिक हो गया। जर्मन सैनिकों ने अल्सेस पर धावा बोल दिया और टूरेन को 1674–75 के शीतकाल में वापिस मुड़ने का दिखावा करना पड़ा। टूरेन में शत्रुओं के विरुद्ध सफलता मिलने से उतावलापन आ गया था, वह इससे लाभ उठाकर तेज गति से आगे बढ़ा और कुशल युद्ध-रीति से संयुक्त मित्रराष्ट्रों की सेनाओं को लगातार मुलहासेन (Milhausen), कोलमर (Colmar) और तुर्खीम (Turkheim) में हराकर अल्सेस खाली करने पर बाध्य कर दिया। यह टूरेन का सबसे शानदार और अन्तिम अभियान था। वह 27 जुलाई 1675 को सेसबेच की लड़ाई में मारा गया और उसके स्थान पर कोंडे की नियुक्ति हुई। कोंडे ने मित्र देशों के जनरल मांटेकुकुली को राइन के पार जाने पर बाध्य किया। किन्तु इस

विजय के बाद उसने अवकाश ग्रहण कर लिया। इस प्रकार फ्रांस ने अपने सर्वोत्तम जनरल इस युद्ध में खो दिये।

संधिवार्ता

इस प्रकार यूरोपियन युद्ध जिसका सूत्रपात हालैण्ड पर किये गये आक्रमण के साथ हुआ था, लगभग 6 वर्ष चलता रहा इससे फ्रांस को अस्त्र शस्त्र के कुछ जौहर दिखाने के अतिरिक्त कुछ लाभ नहीं हुआ। उसका एक मात्र मित्र–स्वीडन ब्रैंडन्बर्ग के इलैक्टर द्वारा 1675 में फहर्बेलिन (Fehrbellin) की लड़ाई में पराजित कर दिया गया था और जनवरी 1678 में विजयी इलेक्टर ने स्टेटिन (Stettin) पर अधिकार कर लिया। फ्रांस में ब्रिटेन और नारमंडी में अत्यधिक कर, जो अबाध्य युद्ध के कारण आवश्यक हो गये थे, विद्रोह का कारण बन गये। अंग्रेजों से आर्थिक सहायता मिलने पर भी उनकी मैत्री पर अवलम्बित नहीं रहा जा सकता था। 1677 में संघ के नेता ने ड्यूक आव यार्क, जैम्स की पुत्री मेरी से विवाह करके अपनी स्थिति को फ्रांस के विरुद्ध और दृढ़ कर लिया। दूसरी ओर जर्मन राजकुमार, जो इस युद्ध से केवल धृष्ट ब्रैन्डेनबर्ग को ही लाभ होता देख रहे थे, लड़ाई से ऊब रहे थे और जब लुई संधि करने की इच्छा को और अधिक न छिपा सका तो बातचीत शुरू कर दी गई। 1678–79 में निमेजन (Nymegen) के स्थान पर फ्रांस, स्पेन, संयुक्त प्रदेश और सम्राट के दलों में बातचीत हुई, जिन्हें मिलाकर निमेजन की संधि कहा जाता है। इसकी सामान्य धाराएँ निम्नलिखित थीं:—

फ्रांस ने स्टेट्स जनरल[1] को मएस्ट्रिच (Maestricht) पुनः लौटा दिया और डचों के लाभ के लिये व्यापारिक चुंगी कम कर दी। यह कार्य 1667 के अधिक व्यापार–संरक्षणवादी उपायों के स्थान पर 1664 की चुंगी नीति की पुनः स्थापना द्वारा किया गया। निचले प्रदेशों (Lower countries), चार्लराय, कोर्ट्राय, औडनार्ड और घैंट (Gharlroi Courtrai, Ondenarde, Ghent) की चौकियां छोड़ कर बदले में सीमा स्थित सैंट ओमर (St. Omer), कैसल (Cassel), पोपरिंघ (Poperinghe), बेलियूल (Bailleul), यीप्रेस (Ypres), कैम्ब्राय (cambrai), माबियुज (Maubeuge) और वेलेन्शिएन (Valenciennes) स्थान

---

1 स्टेटस जनरल के साथ संधिवार्ता 1674 में आरम्भ हुई थी। (इन्सट्रकशंस डोनीस हालेंड, 291 एफ एफ) निमेजन की संधि के लिए देखिए वही, 344 एफ एफ। समूची शर्तों के लिए देखिए वेस्ट, लेस ग्रांडस ट्रीटीज 2,23, 148 सभी महत्वपूर्ण पत्र व्यवहार की प्रतियाँ ब्रिटिश संग्रहालय में उपलब्ध हैं (हारले 1516–1523)।

ले लिये । फ्रांस को सबसे अधिक लाभ फ्रैंच कोम्टे लेने से हुआ । सम्राट के साथ सधि द्वारा लुई ने फिलिप्सबर्ग में सेना रखने का अधिकार त्याग दिया, किन्तु उसे ब्रीसैख (Breisach) और फ्रीबर्ग (Freiburg) मिल गये । लारेन के ड्यूक ने सामने रखी गई शर्तों को मानने से इन्कार कर दिया । इसलिए डची पर फ्रांस का सैनिक अधिकार बना रहा और इस प्रकार उसे नैंसी और लांग्वी पर सुदृढ़ अधिपत्य जमाने का अवसर मिल गया ।

सैंट जर्मेन और फान्टेन ब्ल्यू की संधियां (1679)

सैंट जर्मेन की सधि (6 जून 1679) जिसके द्वारा फ्रांस ने ब्रैन्डेनबर्ग के इलैक्टर को पोमरेनिया की विजयें स्वीडन को अर्पित करने के लिए मना लिया था और फान्टेनब्ल्यू की सधि (सितम्बर 1679) जिसके द्वारा डेन्मार्क ने अपनी बाल्टिक की विजयें स्वीडन को लौटा दीं, इन्हें निमेजन की संधि का अनुपूरक कहा जा सकता है । पिरेनीज की संघि की भांति, निमेजन की संधि के पश्चात भी विवाह सम्बन्ध हुआ । लुई की भतीजी, ओर्लियां की मेरी लुईस ने स्पेन के राजा चार्ल्स द्वितीय के साथ विवाह कर लिया और इसके बाद उस अभागे राजा के कुछ वर्ष खुशी से बीते ।

फ्रांसीसी जनता के विचार और लुई चौदहवां

फ्रांस द्वारा फ्रैंच कोम्टे की प्राप्ति को लगातार दो बार विजय करने के कारण न्याय-सगत ठहराया जा सकता है । फ्रांसीसी प्रदेश मे यह मूल्यवान वृद्धि थी, अन्यथा निमेजन की संधि से फ्रांस की स्थिति यूरोप में विशेष सुधरी नहीं थी । स्पेन के उत्तराधिकार की चर्चा अभी दूर की बात थी । चार्ल्स द्वितीय जीवित था और हो सकता था कि उसके संतान भी हो जाय । 1668 की गुप्त सन्धि अब तक लुप्त प्राय: (absolete) हो चुकी थी और सम्राट् अब शत्रुदल में मिल गया था । भविष्य में लुई को अस्ट्रिया के हैप्सबर्गों और स्पेन दोनों का मुकाबला करना था । हालैंड पर धावा करके लुई ने सबसे बड़ा शत्रु खड़ा कर लिया, पैलेटिनेट की तबाही ने जर्मन भूमि में कटु शत्रुतायें और राष्ट्रीय ईर्ष्यायें जागृत कर दीं, फ्रांस के धन जन के साधन खत्म होते जा रहे थे । परन्तु 'विश्व की रानी और एक व्यक्ति की दासी'[2] फ्रांस यूरोप विजय की चकाचौंध से उन्मत्त होकर अपने शासक की नीति से पूर्णतया सहमत हो गया था, क्योंकि लाग्लोमर के आदमी धन देने और मरने के लिए तैयार थे । छानबीन करने वालों की आवाज ढ़ोल और नगाड़ों की

---

1 देखिए अध्याय 11 ।

2 यह विक्टर ह्यूगो की कहावत है ।

आवाज में दब गई तथा संसार का सबसे बड़ा तर्कशील राष्ट्र दिखावटी सामान्यता के सम्मोहन में फस गया।

निमेजन की संधि से रिज्विक की संधि तक (1679-1697)

पुर्नमिलन

पिछले अध्यायों में हमने दो युद्धों के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन लिखा। अधिक उपयुक्त नाम के अभाव में उन्हें उत्तराधिकार युद्ध (war of devolution) और डच आक्रमण का युद्ध (war of dutch invasion) कहा जाता है। पहिले युद्ध का अन्त एक सार्वजनिक और गुप्त सन्धि से हुआ। सार्वजनिक सन्धि से सामान्य किन्तु ठोस, लाभ हुआ और गुप्त सन्धि द्वारा स्पेन के उत्तराधिकार का पर्याप्त अंश देने का वचन मिला। स्पेन के राजा के अभी तक जीवित रहने के कारण और गुप्त सन्धि का महत्व समाप्त हो जाने से लुई को ऐसा जरूर लगा कि वह धोखे में आ गया क्योंकि उसने इस गुप्त सन्धि के कारण ही सार्वजनिक सन्धि में सामान्य शर्तें रखी थीं।

दूसरे युद्ध द्वारा फ्रेंच कोम्टे मिलने से फ्रांसीसी भू-प्रदेश में वृद्धि तो हो गई, किन्तु इससे स्वीडन के अतिरिक्त इसके सब मित्र शत्रु बन गये और इस प्रकार उसने डच और विलियम तृतीय से सदैव के लिए शत्रुता मोल ले ली। लुई ने अपनी असफलताओं से कुछ सबक सीखा। डच आक्रमण के युद्ध से उसे यह शिक्षा मिली कि वह किसी निर्बल देश पर मनमाने ढंग से केवल इसलिए हमला नहीं कर सकता, क्योंकि वह उसके निवासियों को पसन्द नहीं करता। वेस्टफेलिया की सन्धि ने यूरोप को समान संतुलन की स्थिति में कर दिया था और यदि एक और विध्वंसक गड़बड़ी होती तो उसकी प्रतिक्रिया दूसरे पक्ष में भी होती। यह लुई की विशेषता थी कि वह सन्धि में ही, जिससे यूरोप में स्थिरता कायम रखने की गारन्टी की आशा थी, आक्रमण करने के बहाने ढूंढ़ निकाले और इस "धृष्ट अनुज्ञा और मौलिक कानून में कुछ अस्पष्ट लेखांश" लेकर उनकी कुछ ऐसी व्याख्या करके यह चेष्टा करे कि अन्तर्राष्ट्रीय विधि-शास्त्र के सबसे अधिक स्वीकृत संलेख के आधार पर ही लूट को न्याय-संगत घोषित किया जा सके। फ्रांस ने मुन्स्टर की सन्धि द्वारा निश्चित तमाम इलाके 'उनके अधीन प्रदेशों सहित' प्राप्त कर लिए थे और अब इस स्पष्ट तथा सीधे वाक्यांश को छानबीन करने के लिये विधि-विशेषज्ञों को सौंप दिया गया, जो उसके अर्थों में हेरफेर और कपट करने का अवसर ढूंढ़ने के इच्छुक थे। इस धारा के अन्तर्गत कौन से "अधीन प्रदेशों" का दावा किया जा सकता था ? इतिहास के अन्वेषकों के लिए, जिन्होंने बरगन्डी मंडल (Burgandian Circle) के प्रान्तों में उत्तराधिकार-सम्बन्धी विभिन्न प्रथाओं के प्रचलन को स्पष्ट किया था, यह सिद्ध करना कठिन काम न था कि प्राचीन काल में विभिन्न

समयों में थोड़े बहुत कुछ कस्बे कुछ ऐसे प्रान्त के अधीन थे जो हाल में ही फ्रांस ने प्राप्त किये थे, यद्यपि इन मामलों में प्राचीन ऐतिहासिक रूचि के अतिरिक्त और कुछ शेष न था किन्तु जिस निर्लज्जता से 1665 के 'अधिकारान्तरण' के दावे प्रकाशित किये गये वे इस प्रकार की पारिभाषिक कठिनाई से समाप्त होने वाले न थे। जब लुई चौदहवां अपने स्वार्थ के लिए किसी दावे को पुनर्जीवित करना चाहता था तो उसका पुराना पड़ जाना कोई बाधा नहीं थी और यदि उसका तर्क संतोषजनक न होता था तो तोपखाना संतुष्ट कर देता था। तदनुसार 1680 में मेज की पार्लियामेंट (वरदून, टूल और मेज की ओर से), ब्रीसैख की कौंसिल (अल्सेस की ओर से), और बेसनकोन की पार्लियामेंट (फ्रेंच कोम्टे की ओर से) को आदेश दिया गया कि उन कस्बों को जो विशेष अन्वेषण के फलस्वरूप किसी न किसी समय अधीन सिद्ध हुए हैं, क्रमशः उन प्रान्तों में, जिनके अधीन वे थे, मिलाये जाने की घोषणा करदे। मेज की पार्लियामेंट ने एक असाधारण चैम्बर द रियूनियन्स (chamber of reunions) नियुक्त किया जिसने अल्सेस की सत्ताधारी कचहरियों और फ्रेंच कोम्टे से मिलकर इन आदेशों का पालन किया। सम्मिलित किये जाने वाले कस्बों में लाटरवर्ग, जर्मनशीन, सोरब्रुक, ज्वीब्रुकेन ओर मौंट-बिलियर्ड कस्बे थे। इस प्रकार कासल[1] ले लिया गया किन्तु इनमें सबसे महत्वपूर्ण स्ट्रासबर्ग का मिलाया जाना था जहां से फ्रांसीसी फौजें घेरा डालने के बाद शांतिपूर्वक 30 सितम्बर 1681 को चली गईं। निचले अल्सेस का समीकरण करने के लिये स्ट्रासबर्ग को अधिकार में करना जरूरी था। इस शहर के विनियोजित करने के पक्ष में एक छोटी सी घटना यह थी कि 1681 तक अल्सेस-निवासियों ने बहुत अंशों में फ्रांसीसी शासन को अंगीकृत कर लिया था और नगर के श्रमिकों ने अल्पजन शासन के (burgheer oligarchy) विकल्प में फ्रांसीसी शासन का स्वागत किया।

फ्रांस के विरुद्ध मैत्री (सितम्बर 1681)

इस पुनर्मिलन (reunion) के कारण यूरोप की दबी हुई शत्रुता फिर भड़क उठी। स्वीडन भी अपने पुराने मित्रों के विरुद्ध होने के लिए बाध्य हो गया, क्योंकि लुई की रियूनियन्स ज्विब्रकेन तक पहुंच गई थीं जो चार्ल्स ग्यारहवें के

---

1 इसके लिए देखिए **इन्सट्रक्शंस डोनोस** (सेवोद, **सीडिनिमा मांटुआ**) 2, 1678 में कांसल प्राप्त करने के लिये मांटुआ से गुप्त समझौता किया था। इसमें मैथियोली मध्यस्थ था, जिसने कि विश्वासघात करके वेनिस, स्पेन और सेवाय को समूची योजना बतादी। इसके लिये उसे गिरफ्तार करके पिनरेलो के किले में बन्द कर दिया गया। देखिए फंक ब्रेन्टोनो रिव्यू हिस्टेरिक 6,253 एफ एफ।

पारिवारिक अधिकार में था[1]। औरेंज के विलियम और स्वीडन के चार्ल्स ग्यारहवें ने सितम्बर 1681 में हेग में एक मैत्री संधि की। सम्राट और स्पेन शीघ्रतापूर्वक उसमें सम्मिलित हो गये। लुई चौदहवें के विरुद्ध क्रमानुसार यह तीसरी बार संघ बनाया गया था। दो पूर्वगामी संघ त्रिदलीय सन्धि (1668) और हेग की महान् सन्धि (1674) थी। फ्रांसीसी सेना ने लग्जेमबर्ग पर धावा बोल दिया। पश्चिमी यूरोप फिर युद्ध में कूद पड़ता यदि अचानक पूर्व की ओर ध्यान नहीं आकर्षित किया जाता। तुर्कों ने वियना को घेर लिया और मोस्ट क्रिश्चियन किंग (most christian king) ने खुली लड़ाई उस समय स्थगित कर दी, जबकि विधर्मी साम्राज्य की राजधानी को खतरे में डाल रहे थे। लियोपोल्ड ने फ्रांस द्वारा प्रस्तावित सहायता लेने से इन्कार कर दिया और भयभीत होकर राजधानी से भागते हुए उसने सोबीस्की पर तुर्की झुण्डों से निबटने का भार छोड़ दिया[2]। 1683 में वियना में तुर्कों की असफलता के बाद लुई ने फिर आक्रमक कार्यवाही आरम्भ कर दी और उसका सामना स्पेन को करना पड़ा। फ्रांस ने लग्जेमबर्ग को अधिकार में कर लिया और कोर्ट्रॉय और औडेनार्ड पर घेरा डाला, किन्तु रेटिस्बान[3] के अस्थायी समझौते से (अगस्त 1684) लुई ने स्पेन और सम्राट के साथ समझौता कर लिया जिसके अनुसार उसे स्ट्रासबर्ग, लग्जेमबर्ग और औडेनार्ड मिल गये और उसके पास 1 अगस्त 1681 के पहले के प्रदेश भी रह गये। यदि इस समय स्पेन को अपने मित्रों से अधिक सहायता मिली होती तो फ्रांस इतनी अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता था।

रेटिस्बान का समझौता (अगस्त 1684)

रेटिस्बान के समझौते ने लुई को उसके भाग्य-शिखर पर पहुंचा दिया। प्रत्येक स्थान पर उसकी सैनिक कार्यवाही को सफलता मिली। उसके समुद्री बेड़ों ने भूमध्यसागर में बारबरी के समुद्री डाकुओं को फ्रांसीसी झंडे का सम्मान करने के लिए बाध्य किया। जिनोआ पर बमबारी की गई और स्पेन की मैत्री[4] से अलग कर लिया गया। और इसके डोज (Doze) को वर्साय में जाकर क्षमा-याचना करने व अपमानित होने के लिये बाध्य होना पड़ा।[5] हंगरी पर तुर्कों के दुखदायी धावों से सम्राट निर्बल हो गया। स्पेन ने एक छोटे से अभियान में यह

---

1 इंसट्रक्शन्स डोनीस (स्वीडन), 18।

2 देखिए अध्याय 11।

3 वेस्ट, पूर्व उद्धृत, 2,135–149।

4 केलेगरी, प्रोपोनडेरन्स स्ट्रेनिएरे, 297।

5 देखिए अध्याय 9।

सिद्ध कर दिया कि उसके सैनिक साधन समाप्तप्राय हो चुके हैं। फ्रेंच कोन्टे लग्जेमबर्ग और फ्लैंडर्स में दुर्ग–शृंखला की प्राप्ति फ्रांसिसी सैनिक क्रांति का स्पष्ट परिणाम था, स्ट्रासबर्ग अब फ्रांसीसी भूमि पर था। जब तक भाड़े का टट्टू चार्ल्स द्वितीय सिंहासनारूढ़ था तब तक इंगलैण्ड पर भरोसा किया जा सकता था और यह आशा तर्कसंगत ही थी कि स्पेन के चार्ल्स द्वितीय के नये फ्रांसीसी विवाद से लुई का प्रभाव अस्कोरियल (Escorial) में इतना अधिक हो जायेगा जितना कि व्हाइट हाल में था। फ्रांस के विरुद्ध संघ के नेता होने के नाते जहां तक औरेंज के विलियम का सम्बन्ध है उसके विषय में यह कहा जा सकता है कि यूरोप में कोई भी सेनापति इतनी लडाइयों में पराजित नही हुआ जितना वह पराजित हुआ। 1668 तक उसके सैनिक साधन बहुत सीमित थे। अपने निजी प्रदेशों में लुई ने नेण्टस की घोषणा (1685) को हटाकर धार्मिक एकरूपता स्थापित करदी।

आग्जबर्ग की लीग (जुलाई 1686)

इस स्थिति से क्रमशः पतन हुआ और यद्यपि यह धीमा था पर था निश्चित। लुई चौदहवें के विरुद्ध आग्जबर्ग की लीग पहलेही (17 जुलाई 1686) स्पेन साम्राज्य स्टैटस जनरल, स्वीडन और बवेरिया द्वारा बनाली गई जिसका नाममात्र अभिप्राय वेस्टफेलिया की सन्धि को कायम रखना था, यद्यपि वास्तविक प्रयोजन लुई चौदहवे को नीचा दिखाना था। यह 1701 की महान् सन्धि की भूमिका थी।

लियोपोल्ड और स्पेनिश उत्तराधिकार

पश्चिमी यूरोप की कूटनीति के सामने अब भी प्रधान विचारणीय विषय यही था कि स्पेन के चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के पश्चात क्या होगा। 1668 की गुप्त संधि पर हस्ताक्षर होने के बाद अब तक परिस्थिति काफी बदल चुकी थी। लियोपोल्ड की पहली पत्नी 1668 में मर चुकी थी, फिलिप चतुर्थ की वसीयत की शर्तों के अनुसार यह लड़की स्पेनिश प्रदेशों की अनुमानिक उत्तराधिकारिणी (heiress presumption) थी। हैप्सबर्गों के लिए उत्तराधिकार अखंड रखने की आशा से पारिवारिक निबटारा करने का बीडा उठाया गया तथापि भावी घटनाओं को समझने के लिए उसका विस्तृत ब्योरा जानना आवश्यक है। मेरिया ऐन्टीनिया निर्बल स्वास्थ्य की थी, किन्तु बवेरिया के इलेक्टर, मेक्सीमिलियन एमान्युअल के साथ उसके विवाह का प्रस्ताव रखा गया। इस मित्रता को लियोपोल्ड की ओर से पूरा अनुमोदन प्राप्त न था, क्योंकि वह फ्रांस और बवेरिया की परम्परागत मित्रता को जानता था और जब उसने विवाह की स्वीकृति दे दी तब भी उसे यह भय था कि यह विवाह अन्ततोगत्वा उत्तराधिकार को बूर्बोवंश को हस्तान्तरित करने का कारण न बन जाये। इसके अतिरिक्त उसने अपना विवाह फिर किया (न्युबर्ग की इलियो-नोरा मैंडेलीन के साथ) जिससे 1678 में जोजफ नामक पुत्र हुआ। अभी एक

सन्तान और होने वाली थी और यदि वह भी लड़का हुआ तो, लियोपोल्ड के विचार के अनुसार यह पुत्र उत्तराधिकार के लिए सबसे उपयुक्त उम्मीदवार होगा, क्योंकि यह स्वाभाविक है कि सम्राट जोजफ का पक्ष लेगा। इसलिए जब मेरिया अण्टोनिया का मेक्सिमिलियन एमान्युअल से जुलाई 1685 में विवाह हुआ तो लियोपोल्ड ने इस बात पर बल दिया कि उसकी पुत्री तमाम अधिकारों के त्याग-पत्र पर जिनका दावा चौथे फिलिप्स की वसीयत के अनुसार उसकी ओर से किया जा सकता था, हस्ताक्षर कर दे। इस विचार से कि फिलिप की वसीयत की मान्यता संदिग्ध है और स्पेन के चार्ल्स के उत्तराधिकारी हो सकते हैं या वह अपनी निजी वसीयत लिख सकता है, लियोपोल्ड के अनुमान तथ्यों की अपेक्षा दूरस्थ सम्भावनाओं पर आधारित थे। स्पेन को बवेरियन विवाह और उससे सलग्न त्याग-पत्र की स्वीकृति देने के लिए कहा गया किन्तु जब स्पेन सरकार ने त्यागपत्र की धाराओं के सम्बन्ध में अधिक सूचना देने के लिए कहा तो वियना से एक हरकारे को पूरे ब्यौरे के साथ भेजा गया किन्तु, कारण चाहे कुछ रहे हों, वह अपने ठिकाने पर कभी नहीं पहुंचा और यह बात फैला दी गई कि उसे भूमध्य सागर में समुद्री लुटेरों ने पकड़ लिया।[1] 1685 में लियोपोल्ड के प्रत्याशित पुत्र उत्पन्न हुआ और पिता के सम्मान में उसका नाम चार्ल्स रखा गया। यह आशा की जाती थी कि वह उसका उत्तराधिकारी बनेगा। सम्राट ने तब यह घोषित कर दिया कि फिलिप की वसीयत में लिखे उसकी सबसे बड़ी पुत्री के अधिकार, अब चार्ल्स को हस्तांतरित कर दिये गये हैं, जो द्वितीय विवाह से उत्पन्न उसका सबसे छोटा पुत्र था, किन्तु निचले प्रदेश उसने अपने दामाद बवेरिया के एलेक्टर के लिए सुरक्षित रखे। अब लियोपोल्ड ने, अपने राज्यों का बंटवारा करते समय, मेक्सिमिलियन, एमन्युअल को निचले प्रदेशों का मनोनीत राजा बनाकर ब्रूसेलस में नियुक्त कर दिया। वह छोटे आर्कड्यूक चार्ल्स को स्पेन भेजना चाहता था ताकि उसका पालन-पोषण उसी दरबार में हो जहां एक दिन उसके द्वारा शासन करने की आशा की जाती थी। इसी चार्ल्स की ओर से मित्र-राष्ट्रों ने आगे चल कर स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध लड़ा।

स्पेन की रानी मेरी लुइस

लेकिन सम्राट् जब वसीयत को तुर्प का पत्ता बनाकर खेल रहा था उस समय भी लुई चौदहवां मेरिया थेरेसा के त्याग-पत्र की अवैधता पर जोर दे रहा था और उसका कहना था कि उसके अधिकार स्वयं ही डाफिन के पास चले जाते हैं।

---

1 गिएडके, दाईपोलितिक ओस्टराइक्स इन देर स्पेनिश चेन एरफोल्जफ्रेज 1,24–25।

उसे आशा थी कि उनकी भतीजी स्पेन की रानी मेड्रिड में फ्रांसीसी प्रभाव को और अधिक बढ़ावा देगी और इस प्रकार डाफिन की उम्मेदवारी के लिए मार्ग तैयार कर देगी। अभाग्यवश ओर्लियन्स की मेरी लुइस स्वभाव से ही इस चाल को आगे बढ़ाने के उपयुक्त नहीं थी, उसने अपने आसपास के खतरों को नहीं समझा और अपने प्रफुल्ल स्वभाव और विचारहीनता से स्पेनिश दरबार में फ्रांस के प्रति घृणा उत्पन्न करदी। यद्यपि वह राजा चार्ल्स के प्रति स्वामिभक्त पत्नि थी और उसने राजा के जीवन में जो थोडी बहुत प्रसन्नता थी, वह प्रदान की किन्तु उसका ईर्ष्यालु और धोखेबाज अमला उसे व्यवस्थित रूप से तंग करता रहा।[1] राजमाता के नेतृत्व में आस्ट्रियन तत्व मेरी लुइस से छुटकारा पाने के पक्ष में था और चार्ल्स का विवाह उसकी पहली भतीजी मेरिया आन्तोविया से करना चाहता था, किन्तु 1685 में बवेरियन विवाह सम्पन्न होने से यह सम्भावना समाप्त हो गई और उसके बाद रानी के शत्रु उस समय तक संतुष्ट नहीं हुए जब तक उन्होने उसे नष्ट नही कर दिया। स्पेन की इस अभागी रानी के साथ जो व्यवहार किया गया वह यूरोप के राजवंशों के इतिहास में भी स्मरण रखने योग्य है। उसके दो प्यारे तोतों का गला घोंट दिया गया, क्योंकि वे फ्रांसीसी भाषा बोलते थे तथा उसके फ्रांसीसी नौकरों को वहां से भेज दिया गया। यह सिद्ध करने के इरादे से कि रानी अपने अंग रक्षकों से अनुचित सम्बन्ध रखने की अपराधिनी है बनावटी पत्र लिखे गये और अन्तिम अपमान यह था कि चार्ल्स के उत्तराधिकारी पैदा न होने का कारण भी उसे ही बताया गया। उसे प्रबल औषधियां दी गई ताकि उसके सन्तान हो और इनसे उसकी मृत्यु हो गई। यह निश्चित नहीं कि ऐसा अनजाने में हुआ अथवा जानबूझ कर किया गया। उसकी मृत्यु 12 फरवरी 1689 को विष के कारण हुई। लुई चौंदहवें ने इस बात पर जोर दिया कि उसका पोस्टमार्टम नही किया जाय क्योंकि इससे अन्य अड़चनें खडी हो सकती थीं।[2]

जनता के विचार और उत्तराधिकार

इसी बीच लियोपोल्ड की सुनियोजित योजनाओं में एक अड़चन खड़ी हो गई। जब उसने स्पेनिश सरकार से विनय की थी कि उसकी पुत्री का विवाह और त्याग-पत्र स्वीकार कर लिया जाये तो इसके उत्तर में इस प्रश्न की जांच के लिए एक आयोग नियुक्त किया जा चुका था। आयोग ने 1686 में यह निर्णय दिया कि मेरिया अन्टोनिया का त्याग पत्र अवैध था क्योंकि वंशानुगत अधिकार अत्याज्य होते हैं और उत्तराधिकार में केवल राष्ट्रीय अनुमति से परिवर्तन हो सकता था।

---

1 लेग्रेले, 1, 276–7 और गियेडके पूर्व उद्धृत. 52–81।

2 इन्सट्रक्शन डोनीस (स्पेन), 26।

कभी कभी 17वीं शताब्दी में कम प्रतीक्षित मौकों पर अग्रिम प्रकार के वैधानिक मत उद्धृत[1] किये जाते हैं। इसका परिणाम यह था कि यदि कोई स्पेनिश सरकारी घोषणा इस विषय पर थी तो उसके अनुसार उत्तराधिकार बवेरियन विवाह की संतान का होगा, और चूंकि स्पेन के चार्ल्स द्वितीय के कभी कोई उत्तराधिकार न होने की निश्चितता बढ़ती जा रही थी इसलिए यह स्पष्ट था कि मेरिया अन्टोनिया की संतान का ही सबसे अधिक दावा होगा। आयोग की स्थापना से दूसरा अर्थ यह निकाला जा सकता था कि फिलिप चतुर्थ की वसीयत अब भी वैध थी। इस समय यदि बवेरियावालों के एक पुत्र हो जाय तो सब दावेदारों से उसका अधिकार सबसे कम शंकास्पद हो। 1692 में बवेरिया के इलेक्टर के पुत्र उत्पन्न हुआ और महान् राष्ट्रों के भाग्य कभी भी इतनी अनिश्चितता में नहीं पड़े जितने इस शिशु एलेक्टोरल प्रिंस फर्डीनेन्ड जोजफ के जीवन से। चार्ल्स ने पहली वसीयत जो उसने नवम्बर 1698 में की, इस बालक को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और फिलिप के घोषित इरादे को स्थिर कर दिया। इसलिए छोटे एलेक्टोरल प्रिंस की ओर का दावा केवल मात्र विवाद योग्य था और सम्भवत: यूरोपियन जनमत को यह स्वीकार्य भी होता, क्योंकि बवेरियन घराने को स्पेन-साम्राज्य का हस्तान्तरण होना बूर्बा या हैप्सबर्गों को स्पष्ट रूप से लाभदायक न था। किन्तु स्पेन के उत्तराधिकार का निर्णय इतनी सरलता से नहीं होना था। लियोपोल्ड ने मेड्रिड-स्थित अपने गुमास्ते द्वारा चार्ल्स को अपनी वसीयत रद्द करने के लिए बहकाया, अचानक एक दूसरी घटना घटित हो गई। कुमार बालक अपनी आयु के सातवें वर्ष में बीमार हो गया और दु:खी माता-पिता द्वारा यथा सम्भव उपाय करने पर भी वह फरवरी 1699 में चल बसा। उसकी बीमारी की परिस्थितियों और शीघ्र ही मृत्यु ने शँका पैदा कर दी।[2] विष-प्रयोग के सुझाव आये और कुछ समकालीन व्यक्तियों ने यह संकेत किया कि यह घटना बच्चे के नाना द्वारा सम्पादित की गई है ओर इस प्रकार अपनी पुत्री के त्याग को उसके और उसके पति के पहले त्याग के सौदे से कहीं महान् बना दिया। इस प्रकार आन्तरिक क्षेत्र में दु:खान्त और चिन्तापूर्ण अनुमानों के नाटक का एक दूसरा चरण समाप्त हुआ जिसका प्रतिरूप शायद जानगाल्ट द्वारा लिखित एक महान् किन्तु विस्मृत पुस्तक, द अन्टेल (The Entail) के अतिरिक्त अन्य किसी काल्पनिक साहित्य में नहीं मिलता।

एक असाधारण नीतिघोषणा-पत्र (सितम्बर 1688)

आग्जबर्ग की लीग की रचना के तुरन्त बाद के वर्षों में लुई चौदहवां उदासीन नहीं रहा। जब राइन का एलेक्टर पैलेटाइन (1685) में निस्संतान मर गया

1 लेग्रेले, 1,290।

2 सामान्य विचार यह है कि उसकी मृत्यु चेचक से हुई।

तो उसके प्रदेश एक सपिण्डी शाखा को मिले जिनका मुखिया न्युबर्ग का विलियम (william of Newburg) था जो सम्राट का श्वसुर था और बाद में स्पेन के चार्ल्स द्वितीय का भी श्वसुर हुआ। लुई की दृष्टि में न्युबर्ग का विलियम और उसके सम्बन्धी आपत्ति जनक पड़ोसी थे, इसलिए उसने पिछली एलेक्टर पैलेटाइन के एक संबंधी से अपने भाई ओर्लियन्स के फिलिप के साथ विवाह होने के आधार पर पेलेटिनेट लेने का सुन्दर दावा पेश किया। उसी समय उसने अपने एक मनोनीत व्यक्ति कार्डिनल फर्स्टन वर्ग को कोलन्स (यह बिशप चिरकाल से बेवेरिया के घराने के अधीनस्थ समझा जाता था) निर्वाचित कराने का प्रयत्न किया, और जब पादरी संघ ने दूसरे उम्मीदवार का निर्वाचन कर लिया तो लुई ने बलपूर्वक अपने मनोनीत व्यक्ति को वहां बैठा दिया। सितम्बर 1688 में उसने एक नीति घोषणा पत्र निकाला [1] जो अन्य किसी भी बात के अतिरिक्त उसकी राजनैतिक नैतिकता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। उसमें यह बात दोहराई गई है कि जब तुर्क सम्राट को दुःख दे रहे थे तो उस समय लुई ने उसके विरुद्ध खुला झगड़ा नही किया। आगे कहा गया तुर्क खतरा हटते ही सम्राट फ्रांस पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगा, हाल में बनाये गये संगठन, जैसे आग्जबर्ग की लीग, हैप्सबुर्गों की आक्रामक चालों को प्रोत्साहन देने की इच्छा से बनाये गये थे और इन चालों से पूर्व सीमान्त प्रांतों जैसे पैलेटिनेट, को अपने अधिकार में करना चाहते थे। लुई के मतानुसार, इलैक्टर पेलेटाइन, आक्रमण की इस चाल में सहयोग और सहायता दे रहा था। इसके परिणामस्वरूप यद्यपि फ्रांस का राजा शांति चाहता था तो भी उसे हथियार उठाने के लिए बाध्य होना पड़ा। किन्तु 1688 तक यूरोप इस प्रकार के राजनैतिक प्रलापों से पूर्णतया परिचित हो गया था। फ्रांसीसी सीमाओं को कोई खतरा नहीं था सम्राट यद्यपि अपने फ्रांसीसी भाई को बहुत नापसन्द करता था किन्तु वह अपने निजी प्रदेशों की प्रतिरक्षा से एक आदमी को भी मुक्त नही कर सकता था। स्पेन सैनिक दृष्टि से अब नगण्य था। लुई की घोषणा का केवल एक अर्थ यह था कि उसने पहले अपने "अधिकारान्तरण" के दावों से और रियूनियन द्वारा जब्तियां करके यूरोपीय जनमत की अवहेलना की थी। अब उसने अपने आपको शांति-प्रेमी के रूप में दिखाने का उपयुक्त अवसर समझा जिसे चालबाज शत्रुओं ने तलवार उठाने के लिए बाध्य कर दिया था।

पैलेटिनेट पर दूसरा धावा (1688)

घोषणा पत्र के प्रकाशन के साथ ही एक फ्रांसीसी सेना ने डाफिन के नाममात्र के नेतृत्व में पैलेटिनेट पर हमला बोल दिया और तेजी से फिलिप्सबर्ग, मनहीम,

---

1 डिप्लोमेटिक, 7,2, 170–171।

फ्रैन्केन्थल, और कैसरस्लाटेर्न पर अधिकार करके जल्दी ही समूचे प्रान्त पर फ्रांसीसी अधिकार जमा लिया लूव्वाय (Louvois) के सुझाव पर विजय के पश्चात विनाश किया गया। अल्सेस और जर्मनी के बीच में एक बड़ी दरार बनाने के लिए पैलेटिनेट की घनी भूमि को उजाड़ कर एक लम्बा टुकड़ा बना दिया गया जो अब विनाशकारी दिखाई देने लगा था।[1]

1688–9 के शीतकाल ने तबाही का वह नजारा देखा जो इतना व्यवस्थित और निर्दयतापूर्ण था, जितना वर्तमान इतिहास में कोई हो सकता है। किसी के साथ रियायत नहीं की गई, जो लोग बच गये उन्हें अपने टूटे मकानों को फिर से बनाने की मनाही कर दी गई और उन्हें बर्बरता और अग्निदाह की कहानियां सुनाने के लिए सीमांन्त प्रदेशों में खदेड़ दिया गया जिसने बेमेल विभिन्न भाषा-भाषी जर्मन राज्यों को एकता और क्रोधपूर्ण राष्ट्र के सूत्र रूप में बांध दिया उस काल के जर्मन पैम्फलेट साहित्य में[2] अरक्षित और निर्विरोधी प्रात के पूर्ब विनाश से उनकी भावनाओ की उग्रता का कुछ आभास मिलता है। लुई का यह कार्य सबसे अधिक विस्मयजनक है कि उसने वहां सैनिक आवश्यकता का बहाना तक नहीं बनाया। किसी नीति के विचार से भी यह आक्रमण नहीं किया गया था, यह तो एक चिढ़े हुए व निराश व्यक्ति का सकेत था जो अपने निकटस्थ और निर्बलतम पड़ौसियों की उखाड़ पछाड़ कर रहा था। अब तक लुई ने कूटनीतिक प्रथाओं को माना, उसने अपने शत्रुओं से इस आशा के साथ सौदा किया था कि स्पेन के साम्राज्य का शीघ्र ही बटवारा कर लिया जाये, 1688 में वह समझौते की बातचीत से ऊब चुका था। उसकी सेनाएँ यूरोप में सबसे अधिक शक्तिशाली थीं तथा अब उसके और कीर्ति ग्लोयर (La Gloire) के बीच में कोई अन्तर नहीं रहा।

अंग्रेजी क्रान्ति (1689)

इन अनुमानों में उस रक्तहीन डच व्यक्ति पर कोई ध्यान नहीं दिया गया जो अपने जीवन को प्रतिशोधात्मक कार्य में लगाये हुए था, जिसको एक महान देश के सब साधन प्राप्त होने वाले थे। इस समय लुई के सीमान्त अभियानों को यूरोपीय युद्ध में परिवर्तित करने के लिए केवल 1689 की अंग्रेजी क्रांति की आवश्यकता थी। इंगलैण्ड के राज्यच्युत जेम्स द्वितीय ने वर्साइल में आश्रय प्राप्त किया और विलियम ने अब इंगलैण्ड की नीति परिवर्तित कर दी। मई 1689 में सम्राट

---

1 ध्यान रहे कि यह पेलेटिनेट पर किया गया दूसरा आक्रमण था, पहिला आक्रमण 1674 में तुरेन द्वारा किया गया था।

2 देखिये अध्याय 7।

और संयुक्त प्रान्तों में फ्रांस के विरुद्ध आक्रामक सैनिक सन्धि हुई। दिसम्बर में विलियम भी उसमें सम्मिलित हो गया और कुछ मास उपरान्त स्पेन और सेवाय भी मिल गये। आग्जबर्ग की आध्यात्मिक लीग का स्थान अब वियाना की सैनिक सन्धि ले लिया।[1] पेलेटीनेट की तबाही ने समस्त पश्चिमी यूरोप को लुई चौदहवें के विरुद्ध एकता के सूत्र में बांध दिया।

फ्रांसीसी सफलतायें

इसके बाद जो लड़ाइयां हुईं उसमें पहिले फ्रांस को सफलता मिली। आयरलैंड ने स्टुअर्ट्स का पक्ष लिया। फ्रांसीसी नौसेना ने बेन्दीजे में और बीची हैड से परे इंगलैण्ड और हालैण्ड के सयुक्त समुद्री बेड़े को पराजित कर दिया। इंगलैण्ड पर धावा करने की योजना बनाई गई। एक घेरा चेरबोर्ग (Cherbourg) पर डाला गया, तूरविल (Tourville) के आधीन एक फ्रासीसी बेड़ा मई 1692 तक चैनल पर अधिकार किये रहा जबकि एडमिरल रसेल (Russell) ने फ्रांस की घटिया सेना को लाहोग (La Hogue) की लड़ाई में हरा दिया। इस पराजय के बाद फ्रांसीसी नौ सेना ने युद्ध में कोई विशेष भाग नहीं लिया।

कातीना और यूजीन

लग्जेमबर्ग[2] ने 1689 मे निचले प्रदेशों पर धावे बोले और प्रत्याक्रमणों का युद्ध आरम्भ हो गया। 1691 में फ्रांस द्वारा मोन्स और 1692 में नमूर विजय कर लिये गये और उसी वर्ष मार्शल लग्जेमबर्ग द्वारा विलियम को स्टीन्किर्क (Steinkirk) और नीरविंडन में पराजित कर दिया गया। इटली में कातीना ने लुई के चचेरे भाई सेवाय के विक्टर अमादयू के विरुद्ध सफल अभियान किया, जो सेवाय द्वारा फ्रांसीसी मित्रता के लिए रखी गई शर्तों को मानने के लिए तैयार न था और प्रकट रूप से कैसेल को हथियाने के उद्देश्य से मित्र राज्यों में मिल गया। विक्टर अमादयू अमेडियस (Victor Amadeus) की प्रसिद्धि को उसके एक महान् जनरल प्रिंस यूजीन, जो एक फ्रांसीसी शरणार्थी था, ने कम कर दिया। कातीना ने प्रथम विजय स्टेफार्ड में प्राप्त की (अगस्त 1690) और फिर नाइस और मोंटमिलियन पर अधिकार कर लिया। डाफिन पर विक्टर अमादयू के आक्रमण का वहां के निवासियो ने डट कर मुकाबला किया और कातीना के सेवाय धार्ड पर, ट्यूरिन के बाहर, मारसेग्लिया के स्थान पर विजय होने से अक्तूबर 1693 में, फ्रांसिसी प्रदेश पर बना हुआ खतरा दूर हो गया। इस विजय के उपलक्ष में फ्रांसीसी जनरल को मार्शल की उपाधि दी गई।

---

1 वेस्ट, पूर्व उद्धृत 2,152,153।

2 फ्रेंकोंस हेनरी द मोन्टमोरेंसी–बोटविल्ले, ड्यूक आफ लक्जमबर्ग (1628–1695)।

रायस्विक और रिज्विक की संधियां (1696-97)

यह असफलतायें युद्ध के पिछले वर्ष तक स्थिर नहीं रह सकी। 1695 में लग्जेमबर्ग की मृत्यु हो गई और उसका स्थान अयोग्य विलेराये ने लिया। चैनल में फ्रांसीसी नौ सैनिक कार्यवाहियां जीनाबार्ट के अधीनस्थ अंग्रेजी बेड़े के विरुद्ध अर्ध समुद्री लुटेरों की लड़ाई में सफल न हो सकीं। पश्चिमी द्वीप-समूहों में कुछ मामूली झड़पें हुईं किन्तु ज्यों ज्यों लड़ाइयां लम्बी खिचती जा रही थीं त्यों त्यों निर्णायक स्थिति की आशा घटती जा रही थी। फ्रांस अकेला ही कई मोर्चों पर युद्ध लड़ रहा था। मित्र राष्ट्र जानते थे कि अधिक समय का लगना उनके पक्ष में होगा और फ्रांस के राष्ट्रीय साधन अन्ततोगत्वा समाप्त हो जायेंगे। स्पेन के चार्ल्स द्वितीय के मृत्यु शैय्या पर होने की सूचना पाकर लुई ने एक बार फिर शांति स्थापन[1] करने का विचार किया ताकि यदि चिर प्रत्याशित मृत्यु हो जाये तो सभी राष्ट्र उसके शत्रु ही न रहें। पहले विक्टर अमेडियस को उसके तमाम विजित प्रदेश लौटाकर गुट से अलग कर लिया गया। साथ में पतरोलो और केसेल (जो सम्राट को वापिस करने थे) भी दे दिये। ये शर्तें तथा विक्टर अमाद्यू की सबसे बड़ी लड़की का लुई के पोते बरगंडी के ड्यूक से विवाह ट्यूरिन की संधि की मुख्य शर्तें थीं जिस पर जून 1696 में हस्ताक्षर किये गये। अगले वर्ष सितम्बर-अक्तूबर (1697) में रिज्विक की संधियों पर बातचीत हुई और एक ओर से फ्रांस और दूसरी ओर से इंगलैण्ड, हालैण्ड, स्पेन और सम्राट ने हस्ताक्षर किये। सन्धि की मुख्य शर्तें निम्नलिखित थीं—

1. लुई चौदहवें ने विलियम तृतीय को इंगलैण्ड का राजा स्वीकार कर लिया और स्टूअर्टस को सहायता न देने का वचन दिया।
2. लौरेन में कुछ बाहरी चौकियों के अतिरिक्त फ्रांस ने ट्रायर फिलिप्सबर्ग, ब्रिसेच, फ्रीबर्ग और लौरेन वापिस कर दिये।
3. कोलोन के झगड़े का बवेरियन उम्मीदवार के पक्ष में फैसला किया गया।
4. पैलेटिनेट का प्रश्न औलियां का डचेस को पेंशन देने के बाद न्युबर्ग परिवार के पक्ष में तय किया गया।
5. लग्जेमबर्ग, आथ, शार्लरवा, कोर्ट्राय और कैटालोनिया स्पेन को वापिस दे दिये गये।
6. फ्रांसीसी आयात-निर्यात-कर डचों के पक्ष में कम कर दिया गया।

---

1 1695 में लुई ने हालैंड से अलग से संधि करने का विचार किया था। (इंसट्रक्शंस डोनीस, हालैण्ड। 479) 1697 में उसने घोषणा की कि युद्ध जारी रहने पर फ्रांस के सम्मुख अनेक कठिनाइयां उत्पन्न हो जावेंगी। वही, 509।

युद्ध का परिवर्तित महत्व

ये शर्तें लुई चौदहवें के दुर्भाग्य की परिचायक हैं . यदि फ्रांसीसी अस्त्र-शस्त्र तथाकथित आग्जबर्ग की लीग के युद्धों में लगातार असफल रहते तो भी रिज्विक की सन्धि की शर्तों से जो उसने स्वीकार कर लीं उस संधि की शर्तों से अधिक कठोर न होती । इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि युद्ध की असफलताओं को ही पूरा महत्व दिया जाना आरम्भ नहीं हो गया था अपितु सधि वार्ताओं में लडने-वालों के विदित साधनों की भी गणना होने लगी थी । इस प्रकार युद्ध अब भड़ैत और पेशेवर सैनिकों के केवल फौजी झगड़े से एक महान् संघर्ष में परिवर्तित होता जा रहा था, जिसमें राष्ट्रीय अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता था और राष्ट्र का धन-जन का प्रत्येक साधन प्रयोग में लाना पडता था । शक्ति-संतुलन की रक्षा भड़ैत बल्लम-धारियों की चमत्कारी लड़ाइयों से नहीं अपितु महान् राष्ट्र के कष्टों और बलिदानों द्वारा करनी थी । युद्ध क्षेत्र के विकास और महत्व के लिए मुख्यतया लुई चौदहवां उत्तरदायी है, क्योंकि उसकी सेना की मर्दनकारी श्रेष्ठता और निर्मम निर्दयता जिससे उन्हें प्रयोग में लाया जाता था—का सामना करने के लिए उसके शत्रुओं को तमाम साधनों का प्रयोग करना पडता था, इस प्रकार युद्ध सभ्यता के लिए सबसे बडा खतरा बन गया ।

इंगलैण्ड और फ्रांस पर युद्ध का प्रभाव

इस विषय में इंगलैण्ड और फ्रांस पर युद्ध का प्रभाव बिलकुल भिन्न पड़ा । इंगलैण्ड उजड़ने से बच गया । रसद जुटाने के लिए, आर्थिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए वहां राष्ट्रीय ऋणों तथा बैंक आफ इंगलैण्ड जैसी बड़ी संस्थाओं का श्रीगणेश हुआ जिनसे ऋण-व्यवस्था को ठोस आधार पर बनाने में सहायता मिली । दूसरी ओर फ्रांस का कोल्बर्ट के उपायों से निर्मित कोष शीघ्रता से खत्म हो गया । उत्पादनशील उद्योगों को बनाये रखने के लिए कोई उपाय नहीं किये गये और यदि यह युद्ध कुछ वर्ष और चलता रहता तो फ्रांस दिवालिया हो जाता । इसके अतिरिक्त अब लुई का यौवन बीत चुका था । वह अपने सर्वोत्तम जनरलों और मंत्रियों से अधिक देर जीवित रह चुका था और अब अन्त मे वह, फ्रांस के विरुद्ध जो प्रबल घृणा उत्पन्न हो गई थी, उसके कुछ परिणामों को समझने लगा था । इन सब प्रवृत्तियों का जन्मदाता केवल वह स्वयं और लूव्वाय थे । आखिर स्पेन का चार्ल्स मृत्यु के निकट था और जब स्पेन के उत्तराधिकार के मार्मिक प्रश्न ने फिर प्रमुखता प्राप्त की तो इस पर विचार करने के लिए अन्य सब विचारणीय विषय एक ओर हटा दिये गये । सूची से तमाम स्पर्धी हटा दिये गये जबकि मौनीकृत और आशा-वान यूरोप की दृष्टि में 22 मुकुट धारण करने वाला धीरे-धीरे अपने शत्रु के सामने झुक गया जिसके साथ उसने जीवन भर संघर्ष किया था ।

रिज्विक की संधि से युट्रेक्ट की संधि तक (1697–1715)

स्पेनिश उत्तराधिकार के दावेदार

रिज्विक की सधि (सितम्बर 1697) और स्पेन के चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु (1 नवम्बर 1700) के बीच के वर्षों में स्पेन के उत्तराधिकार का प्रश्न यूरोप की कूटनीति के समक्ष एक प्रमुख समस्या थी। उत्तराधिकार के तमाम दावे स्त्रियों के माध्यम से होते थे। लुई चौदहवा फिलिप तृतीय की सबसे बड़ी लडकी (आस्ट्रिया की रानी) का पुत्र था, और फिलिप चतुर्थ की सबसे बडी लड़की से विवाहित था (मेरिया थेरेसा)। लियोपोल्ड फिलिप तृतीय की एक छोटी लडकी का पुत्र था और फिलिप चतुर्थ की छोटी लड़की से विवाहित था। जबकि लुई की माता और पत्नी ने उत्तराधिकार के लिए समस्त अधिकार त्याग दिये थे किन्तु सम्राट की माता अथवा पत्नी ने कभी ऐसा नहीं किया, अपितु उसकी लड़की को अपने सौतेले भाई आर्क ड्यूक चार्ल्स के पक्ष में त्याग-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए फुसला लिया। लुई यह तर्क दे सकता था कि उसकी माता और उसकी पत्नी का त्यागपत्र वैध न था, क्योंकि अत्याज्य वशानुगत अधिकार छोड़े नही जा सकते थे। इसके अतिरिक्त उसकी पत्नी का त्याग-पत्र एक शर्त पर दिया गया था जो कभी पूरी नहीं हुई। दूसरी और लियोपोल्ड फिलिप चतुर्थ की वसीयत पेश करके इसका उत्तर दे सकता था जिसमें उत्तराधिकार प्राथमिकता के आधार पर सम्राट के स्त्री सम्बन्धियों के पक्ष मे किया गया था। और फ्रांसीसी दावों का अनुल्लेख द्वारा बहिष्कार कर दिया गया था परन्तु लियोपोल्ड का दावा भी इसी प्रकार एक त्याग-पत्र के कारण जटिल बन गया था। उसकी पुत्री मेरिया अन्तोनिया ने त्याग-पत्र में लिख दिया था जिसे स्पेनिश सरकार ने मान्यता देने से इन्कार कर दिया था।[1] इसलिए फ्रांसीसी दावों और साम्राज्यीय अनुमानो के होते हुए भी यूरोप ने सम्राट लियोपोल्ड के दौहित्र और बेवेरिया के एलेक्टर के शिशु को सरकारी रूप से उम्मीदवार अगीकृत कर लिया। यदि प्रश्न के कानूनी पहलू को एक और रख दिया जाये तो यह मामला ऐसा था जिसका समूचे पश्चिमी यूरोप से गहरा सम्बन्ध था। एक बहुत बड़ा मत इस पक्ष में था कि स्पेन के उत्तराधिकार को अखण्ड रखा जाये और किसी प्रबल शासक को सौंपा जाये जो हैप्सबर्ग मडल के बाहर का हो क्योंकि बटवारे के समय सम्भवतः युद्ध हो जाये और इस बात से हर एक सहमत था कि चार्ल्स पचम के साम्राज्य के पुनरावर्तन का खतरा मोल लेना भयकर होगा। स्पेन में भी इस मत को मानने वाले बहुत से लोग थे और इस मत से चार्ल्स द्वितीय स्वंय भी प्रभावित हुआ। इस मत के विपक्ष में यह तर्क दिया जाता

---

1 देखिए अध्याय 6।

था कि बूर्वो द्वारा फ्रांस और स्पेन के साम्राज्यों को एक कर लेना इतना ही गम्भीर खतरा था, जितना चार्ल्स पंचम के साम्राज्य का पुनरावर्तन करना और इस दृष्टि से आर्क ड्यूक चार्ल्स डाफिन की अपेक्षा कम आपत्तिजनक उम्मीदवार था, क्योंकि छोटा पुत्र होने के कारण चार्ल्स के सम्राट बनने की कम सम्भावना थी। इन देशों ने जो आर्क ड्यूक के पक्ष में थे यह जानने का प्रयत्न नहीं किया कि यदि उसका बड़ा भाई निस्संतान मर गया (जैसा कि वास्तव में हुआ) तो क्या होगा।

अक्टूबर 1698 की विभाजन संधि

इंग्लैंड और सयुक्त प्रान्तो की जो समुद्री शक्तियां थी, उनका इस प्रश्न से गहरा सम्बन्ध था। वे अपने शत्रु बूर्वो की शक्ति के बढ़ने से भयभीत थे। औपनिवेशिक देश होने के कारण उनके स्वार्थ स्पेन के उपनिवेशों में थे तथा उस राजा के लिए जो इंग्लैण्ड और हालेण्ड दोनों के भाग्यों का निर्देशन करने वाला था, के लिए स्पेन के निचले प्रदेशों के भाग्य का अन्तिम निपटारा बहुत महत्वपूर्ण था। रिज्विक की सधि होने के बाद से ही फ्रांसीसी कूटनीति विलियम तृतीय को फ्रांस विरोधी गुट से तोड़ने के कार्य में जुट गई थी किन्तु वार्साय[1] के शत्रु के लिये विलियम के हृदय की घृणा को दूर करना बहुत कठिन था। अन्त में इस कठिनाई पर भी काबू पा लिया गया और 11 अक्टूबर 1698 को फ्रांस, इंग्लैड और हालेण्ड में बंटवारे की एक गुप्त संधि पर हस्ताक्षर हो गये।[2] इसके अनुसार बवेरिया के एलेक्टोरल प्रिंस को या यदि वह न हो सके तो उसके पिता को स्पेन द्वीप-समूह, निचले प्रदेश और सार्डीनिया मिलेगा, डाफिन को दोनों सिसली और टस्कन की बाहरी चौकियां, फाईनेल और गुइयोस्कीया मिलेगी जबकि आर्क ड्यूक चार्ल्स को मिलान मिल जायेगा।

मार्च 1700 की बंटवारे की संधि

चार्ल्स द्वितीय की वसीयत

इस संधि का रहस्य शीघ्र ही प्रकट हो गया और चार्ल्स द्वितीय ने बटवारे के विचार को इतना नापसंद किया कि नवम्बर 1698 में उसने छोटे बवेरिया के एलैक्टोरल प्रिंस को अपने सारे राज्य का उत्तराधिकारी बनाकर वसीयत पर

---

1 विलियम के पत्र व्यवहार ग्रिम्ब्लोट कृत **लेटर्स आफ विलियम थर्ड एन्ड लुई 14, एण्ड देअर मिनिस्टर्स** (1697-1700)। विभाजन संधियों का सम्पूर्ण विवरण लेग्रेल कृत, **पूर्व उदधृत** तथा रेनाल्ड लिखित, **लुई 14 एत गुलेम III हिस्तोरे देस ड्यूएस ट्रीज द पटेरज एत दू टेस्टामेंट द चार्ल्स सेकिंड।**

2 लेग्रेले, 2,437-9।

हस्ताक्षर कर दिये। इस प्रबन्ध से जो भी सरकारें इस बटवारें का लाभ उठाना चाहती थीं, प्रसन्न नहीं हुई। तीन महीने बाद एलेक्टोरल प्रिंस की मृत्यु ने (फरवरी 1699) सात वर्ष के बच्चे को बीच में से हटा दिया और कूटनीतिक उलझन का एकीकरण खत्म हुआ। फ्रांस और समुद्री शक्तियों को एक बार फिर बातचीत शुरू करनी पड़ी और मार्च 1700 में उन्होंने एक संधि पर हस्ताक्षर किये [1] जिसके अनुसार वह भाग जो एलेक्टोरल प्रिंस को दिया जाना था अर्थात स्पेन द्वीप समूह और निचले प्रदेश, अब आर्क ड्यूक चार्ल्स को देने निश्चित किये गये जबकि डाफिन के लिए इटली के प्रांत स्थिर किये गये और मिलान के स्थान पर लारेन के ड्यूक को मनाकर उसकी डची देने की योजना रखी गई। यद्यपि मिलान की डची सेना फ्रांस के बस के बाहर की बात थी फिर भी लारेन को इसके बदले में स्वीकार करने के विचार से फ्रांसीसी कूटनीतिज्ञों ने मिलान के कैथेड्रल की शिल्पकला की सुन्दरता का जोरदार शब्दों में वर्णन किया।[2] इस दूसरे बटवारे को गुप्त नहीं रखा गया। सम्राट को इस पर अपनी स्वीकृति देने के लिये कहा गया किन्तु उसने इन्कार कर दिया। मेड्रिड में स्पेन के राज्य के इस प्रस्तावित बटवारे के विरुद्ध प्रबल विरोध हुआ। चार्ल्स द्वितीय को विश्वास था कि स्पेन साम्राज्य के अखण्ड बने रहने से कैथोलिक मत और यूरोपीय शांति को सुरक्षित रखना सम्भव था। वह इस बात से क्रुद्ध हो उठा कि विधर्मी राष्ट्र जो केवल व्यापार करने पर तुले हुए थे, कैथोलिक साम्राज्य के प्रस्तावित विघटन से कोई लाभ उठा सकें। राज्य के खण्डित होने पर इस प्रकार के खतरों की आशंका और स्पेन के प्रदेशों को कैथोलिक मत का गढ़ बनाये रखने की अभिलाषा से चार्ल्स और स्पेन के राष्ट्रीय दल ने प्रेरित होकर किसी ऐसे कैथोलिक राजकुमार को पूर्व उत्तराधिकार देने की बुद्धिमत्ता पर विचार किया जिससे राजकुमार के शासक परिवार का सदस्य होते हुए भी सामान्यतया साम्राज्य प्राप्त करने अथवा फ्रांस का राज्य प्राप्त करने की बहुत कम सम्भावना हो। इसलिये उन्हें एक ऐसा राजकुमार चाहिये था जिसकी प्रतिष्ठा और पारिवारिक सम्बन्ध स्पेन के राज्य को अखड रखने में पर्याप्त हों, किन्तु उसकी राजवंशीय आशाएं और आकांक्षाएं इतनी अधिक न हों कि वह यूरोप के लिए खतरा बन जाये। जहां तक व्यक्तिगत पक्षपात का सबंध था वहां तक चार्ल्स को, जो कुछ ट्यूटोनिक था, उससे अलग कर दिया गया था (उसकी दूसरी पत्नी की घृणा से) और घृणा करने वालों में उसके दरबार के कुछ प्रभावपूर्ण व्यक्ति थे, जिनमें कार्डिनल पोर्टो कैरारो था। अन्त में लुई चौदहवें के दूसरे पौत्र अंजु के ड्यूक फिलिप का

1 वही, 3,690।

2 वही, 3,669।

चुनाव हुआ। उत्तराधिकार और उसके बीच में डाफिन और बरगंडी का ड्यूक दो थे। अन्तिम निर्णय करने के पूर्व चार्ल्स ने पोप से परामर्श किया और उसका अनुमोदन प्राप्त किया (जुलाई 1700)। 2 अक्टूबर 1700 को उसने प्रसिद्ध वसीयत पर हस्ताक्षर कर दिये जिसके अनुसार स्पेन के साम्राज्य की अंजू के फिलिप के नाम वसीयत कर दी। यदि यह असफल रहे तो उत्तराधिकार उसके छोटे भाई बैरी के ड्यूक को मिलेगा। यदि वह भी असफल रहा तो आर्क ड्यूक चार्ल्स को और अन्त में सेवाय के ड्यूक को मिलेगा। यह शर्त रख दी गई थी कि स्पेन का उत्तराधिकार फ्रांस के राजमुकुट में कभी सम्मिलित नहीं होगा।

स्पेन का चार्ल्स द्वितीय

इस प्रकार स्पेन के चार्ल्स द्वितीय ने अपने अन्तिम सार्वजनिक कार्य में केवल स्पेन के भविष्य के लिए ही नहीं अपितु यूरोप की शान्ति के लिए भी कुछ सावधानी दिखाई और उतावला या अविवेकी कदम उठाने की अपेक्षा उसने बहुत सावधानी से सोच विचार कर और सम्भवत: ऐसे राजनैतिक कौशल का कदम उठाया कि यदि कोई अन्य इन परिस्थितियों का हल निकाल सकता तो इससे श्रेष्ठतर न होता। कहते हैं कि इंगलैण्ड के चार्ल्स की नामराशि ने मरने में इतना समय लगा देने के कारण क्षमायाचना की। स्पेन के चार्ल्स को वैद्यक-शास्त्र के तमाम नियमों के अनुसार जीवित नहीं रहना चाहिये था और उसकी जीवित मृत्यु के चालीस वर्षों में उसे षड्यंत्रकारी राजाओं और कूटनीतिज्ञों ने जी भर कर अभिशाप दिये। चार्ल्स ने अपने पिता से एक शारीरिक व्याधि प्राप्त की थी। चार वर्ष की अवस्था में वह इतना असहाय था जितना नवजात शिशु, दस वर्ष का होने पर भी वह शिशु ही था, पैंतीस वर्ष की अवस्था में वह इतना जीर्ण हो गया था जितना एक अस्सी वर्ष का बूढा। मुंह की भद्दी बनावट के कारण वह ठीक तरह से बोल भी नहीं सकता था और न भोजन चबा सकता था, इससे उसे बुरी तरह बदहजमी रहती थी। उसे लगातार बार-बार होने वाले तीव्र बुखार हुआ करते थे और मृगी का रोग था तथा मृत्यु से पूर्व उसे जलोदर का रोग भी हो गया। उसके सुखी जीवन के क्षण उसकी पहली पत्नी आर्लियां की मेरी लुइस के साथ विवाहित जीवन के बारह वर्ष थे। अपनी दूसरी पत्नी न्युबर्ग की एन के साथ एक कमरे में अकेले रहने से उसे डर लगता था।[3] अधिक शर्मीलापन और दृढ़ता की कमी होने के कारण प्रायः उसे मूर्ख समझा जाता था। विदेशी राजदूत उससे मिलते समय

---

1 लेग्रेल 3,355-6।

2 वही 3,718 एफ एफ।

3 लेग्रेले, 2,48-51।

उसकी भावभंगी की अद्भुत स्थिरता को देखकर भ्रम में पड जाते थे उस समय वह एक अंधेरी और बडी चित्रशाला की गैलरी में मेज के एक कोने पर इस प्रकार बैठता था कि उसका एक पार्श्व ही दिखाई देता था।[1] किन्तु इतने कठोर शारीरिक कष्टों के होते हुए भी चार्ल्स हृदय और मस्तिष्क के अच्छे गुणों से रहित न था। उसके प्रिय मनोरंज शतरंजन और विलियर्ड थे, जिनमें कम से कम उतनी बुद्धि की आवश्यकता होती है जितनी तत्कालीन राजाओं के "वीरतापूर्ण" विनोद में। वह बहुत अधिक देशभक्त और धर्मात्मा था। उसमें मित्रता करने की योग्यता थी और सम्मान की भावना थी। यदि उसे अच्छा स्वास्थ्य मिला होता तो यह विश्वास करना तर्क–संगत है कि वह अपने आपको स्पेन की भलाई के कार्यों में लगा देता। स्पेन एक ऐसा देश है जिसने अच्छी सरकार की सराहना की है और जिसने अपने शासकों में आत्म सम्मान और गौरव के गुणों की प्रशंसा की है।

उसकी मृत्यु (1700)

उसके अन्तिम वर्ष अधिक दयनीय हैं, जबकि 1698 मे यह स्पष्ट हो गया कि मृत्यु धीरे-धीरे उसके समीप आ रही है तो उसकी दीर्घायु करने के लिए सबसे अद्भुत उपाय काम में लाये गये। उसकी पत्नी पर चार्ल्स को विष देने का आरोप लगाया गया और वह बहुत कठोर नियंत्रण में रखी गई। यदि विष–प्रयोग उसका स्वास्थ्य गिरने का कारण न था तो शायद वह प्रेतात्माओं से घिरा था, इसलिये उस अभागे रोगी पर सन्यासियों जैसे भूत प्रेत निकालने वालों को छोडा गया, जब वे असफल रहे तो प्रेतों का शमन करने वाले एक प्रसिद्ध दक्ष–एफ. मौरो टेण्डा (F. Mauro Tenda) को वियाना से मेड्रिड भेजा गया और इस प्रकार जब अस्कोरियल के शाही अन्त:पुर धार्मिक ढोंगियों के उपद्रवी कोलाहल से भरे हुए थे, तो राजकीय कक्षों में रानी और उसकी आस्ट्रीयन महिलाओं द्वारा लूट मचाई जा रही थी, क्योंकि समय रहते वह अधिक से अधिक सम्पत्ति एकत्र करने की इच्छुक थी। 18 नवम्बर 1699 को चार्ल्स यह भविष्यवाणी करते हुए अपनी माता और पहली पत्नी की समाधि पर गया कि एक वर्ष के अन्दर वह उनसे मिल जायेगा। अगले वर्ष के सितम्बर मास में उसकी दशा चिन्तनीय हो गई। उसके स्वास्थ्य के लिए सार्वजनिक प्रार्थनायें की गईं। नात्र देम द तोशा की चमत्कारी मूर्ति और सेवील के सेंट इसीडो और अल्कला के सैंट डीगो के पवित्र अवशेष एक सार्वजनिक जुलूस में निकाले गये। समूचे स्पेन में वास्तविक खेद और दुख की भावना थी कि स्पेन के हैप्सबर्गो का अन्तिम राजा जा रहा है। पहली

---

2 उदाहरणत: **इन्सट्रक्शन्स डोनीस**, मे रेबेनक द्वारा दी गई रिपोर्ट देखिये (स्पेन) 1,412।

नवम्बर सन् 1700 के दिन चार्ल्स (दुखिया) संसार से चल बसा और उसकी मृत्यु ने महान् यूरोपीय दावानल को रोकने वाली अन्तिम अवशिष्ट बाधा को दूर कर दिया।

यूरोप और वसीयत

वसीयत के प्रकाशन से समूचे यूरोप में गहरी सनसनी फैल गई। पहले पहल फ्रांस में दो मत थे, इसे स्वीकार कर लिया जाये अथवा सबसे अन्तिम बंटवारे को कार्यान्वित किया जाये, किन्तु लुई ने महान् बपौती को जो अब उसके हाथ में थी, पकड़ने का फैसला किया। अंजू के ड्यूक को स्पेन के सब अधिकृत प्रदेशों में फिलिप पंचम के नाम से राजा घोषित किया गया और अप्रैल 1701 में उसने राजधानी में पदार्पण किया। पहले यूरोप द्वारा किसी भी बंटवारे की संधि की अपेक्षा वसीयत को मान्यता देने की सम्भावना प्रतीत होती थी, यदि लुई यह विश्वास दिला देता कि फ्रांस और स्पेन के राजमुकुट पृथक रखे जायेंगे। केवल स्टेट्स-जनरल विरोध में थी क्योंकि उन्हें बूर्बों की धमकाने वाली समीपता से भय था। इंगलैण्ड में विलियम युद्ध का इच्छुक था और उसकी झुंझलाहट अब और बढ़ गई क्योंकि बटवारे की सधियों में उसका भाग सबको विदित हो गया। किन्तु अंगरेज उसकी नीति का पूर्ण समर्थन नहीं करते थे। यद्यपि फ्रांस के प्रति अब भी घृणा थी किन्तु डच ईर्ष्या भी थी और इसके साथ यह भावना भी थी कि विलियम बदला लेने की अपनी अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए अंग्रेजी साधनों को काम में लाना चाहता है। फ्रांस में अधिकांश लोग युद्ध और युद्ध कर से ऊब चुके थे। लुई की राजवंशीय आकांक्षाएं वर्साइल से बाहर अधिक रूचि रखने में कम होती जा रही थीं। यह सर्वविदित था कि निर्वासित ह्यूजनों में बहुत से लोग फ्रांस के राजा के कटु शत्रु थे और उनमें से कुछ हालेण्ड और इंगलैण्ड के गुप्तचर विभाग में काम करते थे।[1] स्पेन में बहुमत वसीयत को मानने और फिलिप को अवसर देने के लिए तैयार था यद्यपि कुछ प्रान्तों से, विशेषकर केटेलोनिया अरबौन वेलेशिया द्वारा अलग होने के लिए आन्दोलन करने की धमकियां दी गयीं। सीमान्तपर पुर्तगाल था जिसे अंग्रेजी सहानुभूति प्राप्त थी। यह सत्य है कि यद्यपि कोई भी यूरोपीय देश चार्ल्स की वसीयत द्वारा किये गये निर्णय से अपनी सुरक्षा पर कोई बड़ा खतरा नहीं समझता था, किन्तु 17वीं शताब्दी के अन्तिम तीस वर्षों में शासकों और कूटनीतिज्ञों के मनों में इतनी ईर्ष्या और कटुता भर चुकी थी कि उसे साफ करने के लिए लोगों ने इसे अच्छा अवसर समझा। इसके अतिरिक्त

1 इसके लिए देखिये डेडियू लिखित लरोले पोलितिक देस प्रोटेस्टेन्ट फ्रेंक एस, अध्याय 8 व 9।

इंगलैण्ड, हालैण्ड और फ्रांस के औपनिवेशिक विस्तार के साथ व्यापारिक नीति ने निश्चित रूप से यूरोपीय लड़ाइयों का न्याय सगत कारण बन कर इसका स्थान ले लिया। स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध नाम मात्र के लिए बूर्बोनो को अति शक्तिशाली बनने से रोकने के लिये लड़ा गया था। यह भय इस सम्भावना पर आधारित था कि शायद फिलिप पचम या उसके वशज फ्रांसीसी राजगद्दी प्राप्त करने मे असफल हो जायें। किन्तु इसका वास्तविक उद्देश्य शक्तियों द्वारा फ्राम को व्यापारिक श्रेष्ठता प्राप्त करने से रोकना था इसकी निरर्थकता बिलकुल स्पष्ट हो गई जब 1711 में सम्राट जोज़फ की मृत्यु मे और आर्क ड्यूक चार्ल्स के साम्राज्यारोहण से हैप्सबर्ग प्रधानता जो सम्भावना पर आधारित न होकर तथ्य पर आधारित थी, बूर्बोनो की प्रधानता का एक मात्र विकल्प दिखाई देती थी। इसका अन्त तब हुआ जब सभी युद्धों में भाग लेने वाले थक गये, जब ब्रिटेन अपनी विजयों से लगभग उतना ही थक गया था जितना फ्रास अपनी पराजयों से। युद्ध की केवल एक देन यह थी कि यूरोप के मानचित्र को एक बार फिर "स्थाई" पुनर्रुप दिया गया।

हेग की ग्रांड अलायंस (सितम्बर 1701)

यह सम्भव था कि युद्ध रुक जाता और अंजू के फिलिप को राजगद्दी पर बैठने दिया जाता यदि लुई अपने अदूरदर्शी कार्यों के कारण समुद्री शक्तियों में उसके प्रति ईर्ष्या न बढा देता। उसने 1 फरवरी 1701 को पार्लियामेंट से एक राजाज्ञा दर्ज करवाई जिसके अनुसार फिलिप पचम और उसके वंशजों का फ्रांसीसी गद्दी पर अधिकार स्वीकार किया गया।[1] यद्यपि इसका यह अर्थ लगाना आवश्यक नहीं कि यदि फिलिप के वंशज सिंहासन पर बैठ भी जायें तो फ्रांस और स्पेन के राज्य एक हो जायेंगे क्योंकि फिलिप और फ्रांस के उत्तराधिकरण में दो राजकुमार और उम्मीदवार थे। कुछ दिनों बाद लुई ने फ्लेंडर्स (Flenders) में सीमावर्ती गढ़ों को डच दुर्ग रक्षकों से खाली कराने के लिए फ्रांसीसी सैनिको को भेज दिया। किन्तु संयुक्त प्रदेश युद्ध के लिए तैयार न थे और उन्होंने अधिक अवसर प्राप्त करने का दृष्टि से फिलिप पंचम की मान्यता स्वीकार कर ली (फरवरी 22,1701)। फ्रांस के नीदरलेड्स पर आक्रमण करने की इंग्लैण्ड की जनता में प्रतिक्रिया हुई और विलियम की टोरी सरकार ने उसके अनुरोध पर फिलिप के उत्तराधिकार का औपचारिक अनुमोदन तो कर दिया (17 अप्रैल 1701) लेकिन आगामी मई मास में स्टेट्स जनरल का एक आवश्यक संदेश प्राप्त हुआ जिसमें फ्रांस द्वारा फ्लेंडर्स पर अधिकार कर लेने पर उत्पन्न खतरों की ओर ध्यान आकर्षित किया

1 वैस्ट, लेस ग्राडस ट्रेटस, 3,24।

गया था। इस घोषणा की इंगलैंड में जोशभरी प्रतिक्रिया हुई। युद्ध की घोषणा करने के लिए आवेदन पत्र भेजे गये। पार्लियामेंट में आर्थिक सहायता के पक्ष में मत दिये गये और विलियम को यह अधिकार दिया गया कि इंगलैण्ड के स्वत्वों की रक्षा के लिए वह संधियां कर सकता है। उन्हीं दिनों लुई ने स्पेन स्थित अपने पोते के सरक्षण का अधिकार अपने उपर ले लिया और मिलान के प्रदेश मे फ्रांसीसी सैनिक भेज दिये। इस प्रकार उसने सार्वजनिक भावनाओं को और भी ठेस पहुंचाई इसका परिणाम यह हुआ कि समुद्री शक्तियों ने 7 सितम्बर 1701 को हेग की ग्रांड अलायेन्स पर हस्ताक्षर किये। इसके अनुसार इन शक्तियों ने सम्राट के वंश में स्पेन अधिकृत प्रदेशों के बटवारे का प्रस्ताव रखा और उसने इंग्लैण्ड और हालेण्ड के अधिकृत प्रदेशों और व्यापार को सुरक्षित रखने में उनकी सहायता करने का वचन दिया। इस सधि के अनुसार बातचीत करने के लिए लुई को दो महीने का समय दिया गया। यदि इस में वह समझौते के लिए तैयार न हुआ तो मित्र राष्ट्रों ने निचले प्रदेशो को (फ्रांस और इंग्लैण्ड के बीच में रोक रखने के लिए) और मिलान प्रदेश को (शाही नागरिक के रूप में सम्राट को देने के लिए) विजय करने का उत्तरदायित्व लिया। नेपल्स और सिसली प्रदेश भी इन सैनिक योजनाओं में सम्मिलित कर लिये गये थे क्योंकि विदेशों में व्यापार करने के लिए अंग्रेजों और डचों के लिए इनकी स्थिति महत्वपूर्ण थी और इस प्रकार का प्रबन्ध किया गया था कि जिससे ये समुद्री शक्तिया इन्डीज में अपनी समुद्री विजयों से लाभान्वित हो। समझौता करने वाले राज्यों[1] ने यह भी मान लिया कि वे संधि वार्ता संयुक्त रूप से करेंगे और फ्रांसीसी और स्पेन के राज्यों को पृथक करने पर बल देंगे तथा फ्रांस को स्पेन के उपनिवेशों से व्यापार करने से बहिष्कृत करेंगे। इस तरह हेग की ग्रांड अलायेन्स को फ्रांस के विरूद्ध चुनौती न कहकर बटवारे सम्बन्धी अन्तिम सधि कहना अधिक उपयुक्त होगा। इसमें और बटवारे सम्बन्धी पिछली संधियों में अन्तर केवल इतना था कि इसमें फ्रांस सम्मिलित नहीं था और समुद्री शक्तियों के उद्देश्य पूर्णतया स्पष्ट हो गये थे।

स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध की पूर्व घटनायें

इतना होने पर भी लुई ने अपनी स्थिति को ऐसा नहीं बनाया कि उसमें सुधार नहीं किया जा सके, क्योंकि ग्रांड अलायन्स के पीछे किसी प्रकार की दृढ़

---

1 ब्रन्डबर्ग भी इसमें सम्मिलित हो गया जो कि 1700 में प्रशिया का साम्राज्य बना। फ्रांस ने इसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया परन्तु स्पेन के उत्तराधिकार युद्ध के दौरान बर्लिन और फ्रेडरिक प्रथम से बातचीत की जाती रही। देखिए, इन्सट्रकशन्स डोनीस (प्रशिया) 257 एफ एफ।

राष्ट्रीय भावना न थी। ऐसा सम्भव था कि लूट के बटवारे में उन राज्यों में आपस में तनातनी हो जाये। किन्तु जेम्स द्वितीय सितम्बर 1701 मे परलोक सिधारा गया और लुई ने रिज्विक की संधि के स्पष्ट विरुद्ध उसके पुत्र "झूठा दावा करने वाले" को इंग्लैण्ड का जेम्स तृतीय स्वीकार कर लिया। इससे इंग्लैण्ड मे जहां युद्ध का प्रबल हामी ह्विग दल सतारूढ हो गया था, राजनैतिक भावना कटु हो गई। 19 मार्च सन् 1702 को विलियम तृतीय की मृत्यु होने पर भी इंग्लैण्ड में फ्रांस विरोधी भावना कम नही हुई। लुई को अब केवल राजनीतिज्ञों और कूटनीतिज्ञो का सामना ही नहीं करना था अपितु एक महान राष्ट्र से निबटना था जो अपने धर्म, अपनी स्वतत्रता, और 1688 की क्रांति के निर्णय में व्यय किये गये धन की प्रतिरक्षा के लिए जोश से भरा था। इंग्लैण्ड में यह भावना थी कि यदि वहां स्टुअर्ट फिर सत्तारूढ़ हो गये तो कैथोलिक मत की पुर्नस्थापना हो जायेगी और ह्विगो द्वारा किये गये आर्थिक वायदे अस्वीकार कर दिये जायेंगे। इसीलिए स्टुअर्ट क्वीन ऐनी के राज्यारोहण से इंग्लैण्ड की उस विदेश नीति में कोई परिवर्तन नहीं आया जिसके साथ विलियम तृतीय ने इंग्लैण्ड को बांध दिया था। गणतत्री हालेंड ने भी अपने मृत राज्य की परम्पराओं को जारी रखा और इसलिए लुई द्वारा किये गये पुनवार्ता का प्रयास असफल रहा।[1] 15 मई 1702 को सम्राट, इंग्लैण्ड और स्टेट्स जनरल ने एक साथ फ्रांस के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी और स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध आरम्भ हो गया।

सेनाओं मे तुलना

ग्रांड अलायस का नेतृत्व करने वाले तीन व्यक्ति हीनसीयस (Hensious), मार्लबोरा, और प्रिंस यूजीन थे जिनमें सैनिक और कूटनीतिक योग्यता का सुन्दर सामजस्य था। उन्होंने बहुत सावधानी से तैयारी की थी। क्योंकि उन्होंने फ्रांस को लगभग विलग कर दिया और वे डेनमार्क, प्रशिया, हैनोवर, पैलेटाईन के एलैक्टर, मुन्स्टर के विशप तथा अन्य छोटे रजवाड़ों की सहायता पर भरोसा कर सकते थे। एक बड़ी बात यह थी कि उनके पास सैनिकों का कुल योग अनुमानतः 250,000 हो गया। नौ सैनिकशक्ति में फ्रांस उनकी तुलना में कुछ भी नहीं था। इस सयुक्त शक्ति के मुकाबले में, फ्रांस 200,000 से अधिक सैनिक न जुटा सका। उसकी नौ सैनिक शक्ति सारे विश्व में फैले स्पेन साम्राज्य की प्रतिरक्षा करने के लिए अपर्याप्त थी। यूरोप में उसे बैल्जियम और इटालियन, इन दो मोर्चो पर युद्ध करना पड़ता। इससे भी गम्भीर बात यह थी कि फ्रांस सरकार की योग्यता में कमी हो गयी थी। लुव्वाय (Louvous) के स्थान पर चेम्ले (Chamley) और काल्बर्ट की जगह

1 **इन्सट्रक्संस डोनीस** (हालेण्ड) भाग, 2।

चेमीलर्ट (Chamillart) नियुक्त किये गये थे। लुई को स्वय अपनी निजी शक्तियों पर पहले से भी अधिक भरोसा था। मित्रों में फ्रांस केवल बवेरिया के इलेक्टर (जिसे साम्राज्य और स्पेनिश नीदरलेंडस के लिए उम्मीदवार होने पर सहायता देने का वचन दिया गया, जिसके बदले में उसने 10000 सैनिक भेजे), सेवाय के विक्टर अमेडियस (Victor Amadeus) (जो 1703 के अन्तिम चरण में साम्राज्य वादियों से जा मिला) और पुर्तगाल (जिसे अंग्रेजों ने उसी वर्ष व्यापारिक मित्रता करके फ्रांस से अलग कर लिया था) पर भरोसा कर सकता था। इस प्रकार फ्रांस के मित्रों में उसका केवल मात्र स्थाई मित्र बवेरिया ही था। इस मित्रता का कुछ सामरिक महत्व भी था, क्योंकि इससे फ्रांस को जर्मनी के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए कोलोन और लीज जैसे अड्डे मिल गये।

मित्रों में मतभेद

युद्ध के प्रारम्भिक कुछ वर्षो मे गैवैल्डरलैंड में और कोलोन के विशपरिक में की गई सैनिक गतिविधियो मे मित्र देश पूर्णतया सफल रहे। किन्तु उनके आपसी विचारों में गम्भीर मतभेद थे। मार्लबारों इस बात के लिए उत्सुक था कि उसकी सेनायें डटकर लडाई करें और फ्रांस पर धावा बोल दें, किन्तु डच इतनी अधिक सावधानी रखना चाहते थे, कि वह भीरुता की परिचायक हो गई, उन्हें केवल अपनी सीमा तक की चिंता थी। इस बात पर मतभेद था कि निचले देशों में किए गए विजित प्रदेशों पर डचों का अथवा सम्राट का प्रशासनिक अधिकार रहे। इन मतभेदों के कारण कुछ अशों में पहले फ्रांस बिलकुल ही असफल न रहा। 1702 के अक्टूबर मास में फ्राइडलिजन के स्थान पर विलर्स ने वेडन के मार्ग्रेव की सेना को पराजित किया और अगले वर्ष के सितम्बर में उसे होचस्टैड्ट (Hoechstadt) पर फिर हराया। इन लड़ाईयों के कारण बवेरिया आक्रमण से बच गया। किन्तु विलर्स को भी एलैक्टर से वही शिकायत थी जो मार्लबारो को डच से थी। इस मतभेद के कारण विलर्स को वापिस बुला लिया गया। इटली में फ्रांस के मिलानी पर किये गये अधिकार को, सेवाए के ड्यूक ने नवम्बर 1703 में सम्राट के साथ मिलकर संकटपूर्ण स्थिति में डाल दिया। एक मास पश्चात इंग्लैण्ड ने पुर्तगाल के साथ मेथुअन (Methun) की संधि करके उसे फ्रांस से तोड़ लिया। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप मित्र देशों ने अपने उद्देश्यों में भी हेरफेर किया। 1701 में वे बटवारे की नीति से ही सन्तुष्ट हो गये थे। अब उत्साह बढ़ जाने से उन्होंने फिलिप पांचवें को राज्याच्युत करने, फ्रांस को स्पेन अधिकृत प्रदेशों से बहिष्कृत करने और आर्कड्यूक चार्ल्स को स्पेन का राजा बनाने का उद्देश्य रखा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मित्र देशों ने 1704 के युद्धों में अपने समस्त प्रयास फ्रांस के एक मात्र मित्र बवेरिया के विरुद्ध जुटा दिये।

ब्लैंन्हीन की लड़ाई (अगस्त 1704)

सन् 1704 के जुलाई मास में मार्लबारो ने डोनावर्थ के स्थान पर डेन्यूब नदी पार करके बवेरिया पर धावा बोल दिया और अगस्त में प्रिंस यूजिन की सेनाओं से जा मिला। 13 अगस्त को टेलर्ड और मेक्सिमिलीयन में न्यूअल के अधीन फ्रैंकों–बवेरियन सेनाओं को होचेस्टेडट के स्थान पर निर्णायक पराजय दी गई। यह युद्ध की पहली महत्वपूर्ण लड़ाई थी। जल्दी ही बवेरिया आक्रमणों की दया पर आश्रित हो गया और इस विजय का महत्व अंगरेजों द्वारा जिब्राल्टर पर अधिकार (4 अगस्त 1704) करने से और बढ़ गया। इसके बाद ही आर्कड्यूक चार्ल्स ने अपनी सेनाएं केटेलानिया में जा उतारीं और मित्र देशों के पक्ष मे वेलेशिया और म्युर्सिया जीत लिए। चूंकि फिलिप पचम के पास सेना लगभग नहीं के बराबर थी और यह निश्चित जान पडता था कि स्पेन मे उसके पास जो कुछ बचा है वह भी वह खो बैठेगा इसलिये नौ सेना (1705–1706) को शीत ऋतु में लुई ने बंटवारे के आधार पर सधिवार्ता का प्रस्ताव रखा, जिसके अनुसार आर्क ड्यूक को राजा की उपाधि के साथ स्पेन दे दिया जाए जबकि फ्रांस केवल लोरेन्स और स्पेन नीदरलैण्डस का कुछ भाग लेकर सतुष्ट हो जायेगा। किन्तु इस समय मित्रों में आपस में लड़ाई आरम्भ करने की अपेक्षा एकता अधिक थी (विशेष रूप से मार्लबारो के कूटनितिक प्रयत्नों के फलस्वरूप) इसलिए टीन्सिनयस ने लुई के आवेदनों का जवाब कोरे इन्कार मे दिया। (यह डचों की "कृमि" के नाम से पुकारने वाले राजा का कटु अपमान था)। लुई को अभी अपनी सफलता के काल की उदण्डता का पूरा बदला मिलने का अनुभव करना था।

रेमिलीज की लड़ाई (मई 1706)

फ्रांसीसियों का इटली से वापिस हटना

एक बार खुली छूट मिलने पर मार्लबारो ने उन अन्तज्ञान साधन और एकाग्रता के गुणों का प्रयोग किया, जिन्होंने उसकी वर्तमान युद्ध के महानतम जनरलों में गिनती करादी। अब प्रसिद्ध युद्धों का काल आरम्भ हुआ। मई 1706 के विलेराय और एलेक्टर निचलों देशों के थे और मार्ल बारो ने 70 000 सैनिकों के साथ रेमिलीज के स्थान पर उन्हें जा घेरा। एक ही दृष्टि में उसने फ्रांसीसी कमजोरी को भांप लिया और 23 मई को उनके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। फ्राँसीसीयों के वामपार्श्व पर दिखावटी हमला करके उसने मध्य मोर्चे पर, जो निर्बल स्थान था, भारी आक्रमण किया और शत्रु को रेमिलीज से भगा दिया। यह दौड़ जल्दी ही भगदड़ में परिवर्तित हो गई। जिस प्रकार बैल्टींग की लड़ाई से बवेरिया पर विजय प्राप्त हुई थी उसी प्रकार रेमिलीज की लड़ाई से बेल्जियम मित्र देशों को

मिल गया अब फ्रांस प्रतिरक्षा की स्थिति में आ गया। वेन्डोम को उत्तर-पूर्व सीमान्त की रक्षा के लिए इटली से वापिस बुलाना पड़ा। उसके इटली से चले जाने के बाद वहां भी विपत्ति आरम्भ हो गई। अगस्त के अन्त मे विक्टर अमेडियस और प्रिंस यूजिन ने अपनी सेनाओं को मिला कर फ्रांसीसी सेना पर धावा बोल दिया जो उस समय ट्यूरिन के साधारण घेरे में व्यस्त थी। मित्र देशों के जनरलों ने फ्रांस को निर्णायक पराजय दी तथा ट्यूरिन की लड़ाई के बाद फ्रांसीसी सेनाएं उत्तर इटली से वापिस चली गई। स्पेन में फ्रांसीसी स्वत्वों को इसी प्रकार के दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा। फ़िलिप पंचम बार्सिलोना पुनः प्राप्त करने मे असफल रहा और दूसरी ओर बढ़िया सेना होने के कारण उसे अपनी राजधानी छोड़ने के लिए बाध्य होना पडा। 25 जून 1706 को आर्कड्यूक को चार्ल्स तृतीय के नाम से राजा बनाने की घोषणा कर दी गई। इस प्रकार ग्रीष्म ऋतु में ही फ्रांस के हाथ मे बैल्जियम, मिलानीज और स्पेन निकल गये।

स्पेन में मित्र देश

इन विजयों मे स्पेन की विजय चिरस्थायी नहीं रही। स्पेन की भ्रष्ट सरकार और सैनिक अयोग्यता के कारण विदेशी यह न समझ सके की स्पेन की गिरती हालत में भी वहां के लोगों में राष्ट्रीय भावना जैसी कोई चीज थी और अब वह भावना बहिष्कृत राजा के पक्ष में जोर पकड रही थी। ऐसी बात नहीं थी कि स्पेन का राष्ट्रीय मन फिलिप के लिये पक्षपात पूर्ण हो, उसके चरित्र में ऐसी कोई विशेषता न थी कि लोगों में उसके प्रति भक्ति भावना हो, बल्कि वे यह न भूल सके कि फिलिप चार्ल्स की वसीयत के अनुसार वैध राजा बनाया गया था। यद्यपि लुई ऐसी बाते करता था कि शायद उसे अपने पोते को त्याग देना पड़े। फिर भी स्पेन ने एकदम सच्चाई के पक्ष में दृढ आवाज उठाई। स्पेन में मित्रों की सेना का समादेश (Command) अर्ल पीटर बारो कर रहा था जो अनुपम बुद्धिवाला होते हुए भी अस्थिर मन का था। चार्ल्स आर्कड्यूक के साथ पूर्णरूप से सहयोग देने में असफल रहने के कारण फ्रांसीसियों को अवसर मिल गया। अगस्त 1706 के आरम्भ में फिलिप को फिर उसका राज्य मिल गया। अब फ्रांसीसी जनरल बरविक ने कार्थजेना को पुनः हथिया लिया, उसी समय भूमध्यसागरी प्रान्तों में मित्र-राष्ट्रों को प्रतिरक्षा के लिए बाध्य होना पडा। इसी बीच में लुई की दशा ऐसी हो गई, जो डचों के साथ सधिवार्ता का प्रयत्न अभी जारी रख रहा था, कि उसे पोप और स्वीडन के चार्ल्स बारहवें को मध्यस्थ बनाने के लिए कोशिश करनी पड़ी। किन्तु मित्र देश जो मार्लबारो की सफलताओं के कारण प्रेरणा पा रहे थे दृढ़ रहे और उन्होंने अपने सकल्प को स्पष्ट कर दिया कि उनके लिये कम से कम स्वीकार्य शर्त फिलिप पंचम को गद्दी से उतारने की होगी। फ्रांस के राष्ट्रीय साधन समाप्त

प्राय: हो चुके थे किन्तु विधि की विडम्बना ऐसी थी कि मनार का केवल एक भाग जो बूर्बां के लिये मुक्ति का साधन बना था, वह स्वयं स्पेन था। बूरविक ने 1707 के सभी अभियानों में मित्र देश की सेनाओं को रोके रखा। उसने उन्हें अलमेजा (अप्रैल 25) पर हराया और केटेलोनिया के अतिरिक्त शेष सभी भूमध्यसागरीय प्रांत जीत लिये। पीट्शवारो के स्थान पर स्टैनहोप को भेजने से भी मित्र राष्ट्रों की क्षतिपूर्ति नहीं हुई। फ्लैंडर्स मे मार्लबारो की प्रगति को वेन्डोम और एलेक्टर ने रोक लिया। इस प्रकार 1707 की घटनाओं से लुई को आशा थी कि अभी उसने सब कुछ नहीं खोया है।

औडनार्ड की लड़ाई (जुलाई 1708)

फ्रांस पर आक्रमण

1708 का श्री गणेश फ्रांसीसियों द्वारा, स्टुअर्टों के पक्ष में स्काटलेण्ड में सेना उतारने के साथ आरम्भ हुआ। एक फ्रांसीसी जहाजी बेडा फोर्थ पहुंचा। किन्तु स्काटवासियों ने उसका प्रत्युतर नही दिया। फ्रांसीसी यह अनुमान नही लगा सके कि उन्होंने स्थल पर उतरने के लिये गलत स्थान चुना है, और यदि वे स्काटलैण्ड के उत्तर में उतरते तो उनका मैत्रीपूर्ण स्वागत होता।[1] निचले देशों मे 1706 की विपत्तियों का पुनरावर्तन हुआ। शैल्ट (Scheldt) पर अधिकार जमाने की आशा से वेण्डोम ने औडनार्ड पर आक्रमण करने का निश्चय किया किन्तु मार्लबरो और प्रिंस यूजीन की सेनायें उससे पहले पहुच गई। 11 जुलाई 1708 को औडनार्ड पर फ्रांसीसी सेनाओं को भारी पराजय का सामना करना पड़ा, इसके पश्चात फ्रांस पर आक्रमण हुआ। दिसम्बर में विद्युत वेग से लीज जीत लिया गया। इस सर्वनाश के कारण लुई ने संधि करने की फिर सिर-तोड़ कोशिश की। तदनुसार लुई ने फिलिप को उत्तराधिकारी से पूर्णतया हटाना, वेस्टफेलिया की संधि का वही अर्थ स्वीकार करना जो जर्मनी ने लगाया था, स्टुअर्ट का साथ छोड़ना और डचो को अपनी सीमांत पर रोक लगाने के लिए याईप्रेस, मेनिन, लिले, टूर्नाय और मावियूज देना, स्वीकार कर लिया। घरेलू कठिनाइयों के कारण जिनमें फ्रांस के कोष का समाप्त होना, फसल के खराब होने से खाद्य पदार्थों की कमी से फ्रांस की जनशक्ति का गम्भीर ह्रास, आदि तमाम सम्मलित थीं। लुई किसी भी प्रकार की सन्धि शर्ते स्वीकार करने के लिए व्यग्र हो हो रहा था, और वार्ता इतनी जल्दी चली कि मई महिने में हेग कान्फ्रेन्स की प्रारम्भिक बातें तैयार कर ली गई। किन्तु लुई को जब अपने पोते को गद्दी से

---

1 ब्रिटेन में फ्रांसीसी सेना के उतरने की योजना के सम्बन्ध में देखिये, लेस प्रोजेटस द डीसेन्ट एन एंगलेटर इन रिव्यू डहिस्तोर डिप्लोमेतिक 25।

आवश्यकता पड़ने पर शक्ति द्वारा उतारने में सहायता देने के लिए कहा गया तो उसने इसको अस्वीकृत करके साहस और सम्मान का परिचय दिया। सन्धि वार्ता फिर भंग हो गई और जब मित्र देशों की कठोर शर्त को प्रकाशित किया गया तो लुई ने देखा कि सम्पूर्ण फ्रांस की राष्ट्रीय भावना उसके साथ थी। इस प्रकार 1709 में स्पेन का उत्तराधिकारी युद्ध फ्रांस और स्पेन दोनों के लिये राष्ट्रीय युद्ध बन गया जिसमें उन दोनों के भाग्य पूर्णतया घुलमिल कर जुड़ गये, जबकि मित्र राष्ट्रों के लिये यह केवल विजयों और बदला लेने के लिये लड़ा जाने वाला युद्ध था जिसका उद्देश्य लुई चौदहवें को नीचा दिखाना और फ्रांस को महान व्यापारिक और सामुद्रिक शक्ति बनने से रोकना था।

संधिवार्ता का आरम्भ होना

1709 की लड़ाइयों में फ्रांस ने बड़ी वीरता दिखाई। यद्यपि मार्लबरो ने सितम्बर में मालप्लेकट के स्थान पर बूफ्लर्स और विलर्स को पराजय दी किन्तु मित्र देशों की इतनी क्षति हुई कि इसे पिरिक (Pyrrich) विजय कहा जा सकता है। इस क्षति का यह परिणाम निकला कि फ्रांस आक्रमण से बच गया। अगले वर्ष के आरम्भ में संधिवार्ता गरट्रुइडेनबर्ग (Gertruidenburg) के गढ़ में पुनः प्रारम्भ की गई जिसमें मोरचल, डैटक्सले और ऐबीडे, पोलिग्नेक, फ्रांसीसी प्रतिनिधि और वाइज और बान डर चुसन डच एजेन्ट थे। मुख्य प्रश्न यह था कि लुई फिलिप को स्पेन से निकालने में सहायक होगा या नहीं। परन्तु लुई ने पहले ही इस प्रकार की सहायता देने से इन्कार कर दिया था। किन्तु उसके द्वारा फ्रांसीसी सेना स्पेन से वापिस बुला लेने के कारण फिलिप इतना बिगड़ गया कि फ्रांस द्वारा मित्र देशों से अलग संधि वार्ता होने का खतरा उत्पन्न हो गया। फलतः लुई और उसके पोते में बिलकुल अनबन हो गई। इस प्रकार की परिस्थिति में और-चूंकि फ्रांस की स्थिति निराशाजनक होने से, लुई को इस बात के लिए मना लिया गया कि वह फिलिप को स्पेन से निकालने के लिए आर्थिक सहायता देगा[1] इस प्रकार के विश्वासघात के लिए लुई के प्रति कठोर निर्णय देना अनुचित है। वह हृदय से विश्वास करता था कि मैड्रिड स्थित उसका रक्षित ऐसी लड़ाई लड़ रहा था जिसका पक्ष गिर चुका था। उसने अपने राज्यकाल में पहली बार इस बात को समझा कि उसका मुख्य कर्तव्य अपने देश के प्रति है। उसके देश के लिए अन्य सब बातों से बड़ी आवश्यकता थी, शांति की। इसमें कोई सन्देह नहीं कि युद्ध सचिव टरसी और जस्टुअर्डवर्ग स्थिति फ्रेंच एजेन्टों ने संधि वार्ता का आधार स्थापित करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। किन्तु डच असम्भव मांगों पर हठ करते रहे। सबसे बड़ी

1 देखिए, वेस्ट, पूर्व उद्धृत, 3,38 एफ एफ।

और अत्याधिक आपत्तिजनक सुविधा देने के कुछ दिन बाद लुई ने उसे नीरस कर दिया और सन्धिवार्ता टूट गई। उसने घोषणा की कि "अपने बच्चों के विरुद्ध लड़ने की अपेक्षा शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध घोषित करना श्रेयष्कर है।" यदि इस समय युद्ध का अन्त हो जाता तो फ्रांस अपमानजनक शर्त स्वीकार करके भी संतुष्ट रहता, इस संघर्ष को लम्बा खींचना मित्र देशों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध हुआ। फ्रांसीसी पक्ष को उसके दो वंशानुगत 'शत्रुओं' से सहायता मिली वे थे—स्पेन और इंगलैण्ड।

स्पेन में मित्र राष्ट्रों की पराजय

सन् 1720 के आरम्भ में चार्ल्स आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग और अंगरेजों के स्टैनहोप के अधीन सेना के साथ केटैलोनिया के स्थान पर उतरा। ग्रीष्मकाल में फिलिप को लेरिडा के स्थान पर पराजित किया गया। 18 सितम्बर को मित्र देश मैड्रिड में प्रविष्ट हुए, जबकि फिलिप ने वेलाडोलिड में शरण ली। परन्तु एक बार फिर स्पेन की जनता न्याय के पक्ष में सगठित हो गई, तथा आक्रमणकारियों को शीघ्र ही मालूम हो गया कि सैनिक विजय सदैव जनमत के विरोध की पूर्ति नहीं करती। अब जबकि गरट्रुइडेनवर्ग की वार्ता भंग हो चुकी थी, लुई ने अपने पोते को सैनिक सहायता देने में स्वतंत्र समझा और जब वेनडोम, 250,000 सैनिकों सहित पिरेनीज पर्वत के पार गया तो आक्रमणकारियों को पुनः अपनी प्रतिरक्षा के लिए मजबूर होना पड़ा। दिसम्बर में क्रमशः ब्रिहुएगा व विलविकिओसा के स्थानों पर स्टैनहोप और स्टैटरमबर्ग की पूर्ण पराजय हुई तथा गुरिल्ला युद्ध के परिणाम-स्वरूप मित्र देशों की सेना का चिन्ह मात्र ही शेष रह गया। ये लड़ाईयां इस दृष्टि से निर्णायक थीं कि इनसे स्पेन बूर्बों को पुनः प्राप्त हो गया। इन युद्धों ने मित्र देशों को सधिवार्ता पर गम्भीरता से विचार करने के लिए प्रभावित किया।

इंगलैण्ड में राजनैतिक परिवर्तन (1710)

ग्रीष्म के प्रारम्भिक दिनों में इंगलैण्ड में (1710) ह्विगो के हार जाने से फ्रांस के पक्ष में स्थिति सुधर गई। इंगलैण्ड में यह लड़ाई ह्विगों के युद्ध के नाम से पुकारी जाती थी जो केवल मार्लबारों और सैनिक ठेकेदारों के अनुकूल थी। प्रत्युत जो अंगरेजों की सैनिक विजयें महाद्वीप पर हो रही थी उनसे जनता मे उत्साह नहीं बढ़ रहा था। ह्विग नेता गोडोल्फिन अंगरेजी विचारो का प्रभाव डालने अथवा उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए योग्य न था, क्योंकि उसकी मुख्य अभिलाषा ऐसे उपायों द्वारा सत्तारूढ़ रहने की थी जिनसे वह तीन बार शासन कर सका और क्रांतिकाल में भी अपने पद पर बना रहा। उसका कोई अपना दलीय विचार नहीं था और वे 'झूठे-' दावे दार (Pretender) और एलेक्ट्रेस सोफिया दोनों से मेल खाते थे। किन्तु सेंट जर्मन को लिखा गया कि उसका एक पत्र ह्विगो

के हाथ में पड़ा है तो उसे ह्विग सिद्धान्तों को स्वीकार करना पडा अन्यथा उसका भण्डा फोड़ हो जाता। वह विवाह द्वारा मार्लबारो से सबंधित था, वह युद्ध मंत्री इस रूप में था कि जब तक लोगों का ध्यान प्रधानतया विदेशी मामलों की ओर लगा हुआ था तब तक वह अपने पद पर सुरक्षित था। किन्तु जब मार्लबारों की डचेस ने रानी से झगड़ा कर लिया और ड्यूक को राजदरबार का समर्थन न मिला तो गोडोल्फिन का एक मात्र सहारा भी समाप्त हो गया। इंगलैण्ड में, डाक्टर से चेवरल पर अभियोग जैसी अन्य घटनाएं होने के कारण टोरीदल फिर शक्तिशाली हो गया और 1710 की पतझड में टोरी सरकार ह्विगो द्वारा आरम्भ किए गए युद्ध को समाप्त करने के लिए दृढ प्रतिज्ञ हो कर सत्तारूढ हो गई। तब हारले–और बोलिंगओक ने मार्लबारों और गोडोल्फिन की नीति को उलट दिया। इस प्रकार मिली जुली सरकार का सबसे अधिक शक्तिशाली सदस्य सरकार से अलग कर दिया गया।

फ्रांस की सैनिक शक्ति का पुनरुत्थान

1711 में सम्राट जोजफ की मृत्यु और उसके स्थान पर उसके भाई चार्ल्स का निर्वाचन, इन दोनों घटनाओं ने अंगरेजों की शक्ति सम्बन्धी नीति की और पुष्टि की क्योंकि अब बूर्बोनों का स्थान हैप्सबर्गों द्वारा लेने का खतरा था। फिर भी लड़ाई जारी रही। मार्लवारो फ्लैंडर्स में अंगरेजी सेनाध्यक्ष बना रहा, किन्तु उसके अधिकार सीमित कर दिये गये। इन घटनाओं के साथ फ्रास में सैनिक शक्ति का पुनःरूत्थान स्पष्टतया दिखाई दे रहा था। एक महान राष्ट्र अकस्मात ऐसे साधनों के प्रभाव मे आने से, जिनकी उसे स्वप्न में भी कल्पना न हो, स्वयं भी आश्चर्यचकित हो सकता था। सन् 1711 में फ्रांस पुनःयौवनावस्था प्राप्त करता हुआ प्रतीत होता था। एक बार फिर उसके वीर सैनिकों ने आक्रमक कार्यवाई शुरू की। एक फ्रांसिसी नौ सेना के बेड़े ने सितम्बर में रियो–डे जेनियरो पर अधिकार कर लिया। अगले वर्ष ग्रीष्म में उसने इस युद्ध मे लड़ी गई केवल एक बड़ी लड़ाई में विजय प्राप्त की। साम्राज्य और डच यूट्रेक्टर में चल रही संधिवार्ता मे अडचने डालने का हर सम्भव प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने फ्रांस पर आक्रमण करने के लिए जो 130,000 सेना एकत्रित की थी उसके विरुद्ध विलर्स केवल 70,000 सैनिक भेज सका। किन्तु इस बार भाग्य ने फ्रास का साथ दिया और जब यूजिन लैंड्रेसीज (Landrecies) पर घेरा डाल रहा था उस समय विलर्स ने स्कैलर्ट में जेस उनेन स्थित मित्र सेनाओं पर धावा बोल दिया, इस लड़ाई में फ्रांस ने पूर्ण विजय प्राप्त की। यह विजय इसलिए महत्वपूर्ण न थी कि इमसे किसी लक्ष्य की तुरन्त प्राप्ति हुई बल्कि इसका नैतिक प्रभाव बहुत हुआ क्योंकि इससे मित्र सेना की अजेयता की परम्परा नष्ट हो गई और निराश समझे जाने वाले पक्ष में जान

पड़ गई। उनेन की लडाई ने यूट्रेक्ट में चल रही संधिवार्ता की सफलता निश्चित करदी।

यूट्रेक्ट की संधियां

संधिवार्ता की प्रगति का वर्णन करना श्रमकाय कार्य है क्योंकि सूक्ष्म नियमों और तुच्छ बातों के कारण जैसी वेस्टफेलिया की वार्तायें बाधक हुई थी, इसमें भी देर होती गई और भ्रम पैदा होते गये। फ्रांस और ब्रिटेन में संधि की शर्तें तय होने पर ब्रिटेन ने फ्रांस और दूसरे मित्र देशों की वार्ता में मध्यस्थता का काम किया। सम्राट को मानना बहुत कठिन सिद्ध हुआ। शेष–फ्रांस व ब्रिटेन, हालैण्ड, पुर्तगाल, सेवाय और एशिया के साथ 31 मार्च 1713 को यूट्रेक्ट में पृथक पृथक सब संधियों पर हस्ताक्षर हुए।[1] समझौते की मुख्य धाराएं निम्नलिखित थी. --

ग्रेट ब्रिटेन

फ्रांस और ग्रेटब्रिटेन में जो संधि हुई उसके अनुसार फ्रांस ने हेनोवर वंश के उत्तराधिकारी को मान्यता दे दी। डंक्रिक की किलेबन्दी तोड़ दी और हडसन की खाड़ी, अकेडिया, न्यूफाउण्डलेण्ड और स्टेकिटस के टापू अंगरेजों को दे दिये। अंग्रेजों ने फ्रांस के आयात पर लगाये गये निषेधात्मक करों को घटाकर उसी दर पर लगाये गये निषेधात्मक करों की अंग्रेजों के पक्ष में पुन: व्यवस्था की, जैसी की 1664 में की गई थी।[2] फिलिप पंचम द्वारा फ्रांस के और फ्रांसीसी राजकुमारों द्वारा स्पेन के सिंहासन के दावे के त्याग को अनुलंघनीय घोषित कर दिया गया।[3]

संयुक्त प्रान्त

स्टेट्स जनरल को निचले देश धरोहर के रूप में रखने के लिए तब तक के लिए दिये गये जब तक वे सम्राट के साथ अपनी सीमा पर रोक लगाने के विषय में किसी निश्चित निर्णय पर न पहुँच जाए। फ्रांस ने मेनिन, टूर्नाय, फर्न और याइप्रेस पर अधिकार सम्बन्धित अपनी सब मांगें त्याग दीं। बवेरिया के एलैक्टर को नभूर और चमूलेराय सहित लक्जमबर्ग पर कब्जा रखने का तब तक के लिए अधिकार दिया गया जब तक उसकी जागीरें उसे वापिस प्राप्त न हो। डचों ने फ्रांस को लिलेएयर और बिथून अर्पण कर दिये।

सेवाय

सेवाय के ड्यूक को ओल्क्स बार्डोनेशिया और प्रागेलटा सहित नाइस सौंप

---

1 वेस्ट 3,68, एफ एफ।

2 **ट्रीटी आफ नेवीगेशन एंड कामर्स** (वेस्ट 3, 87 एफ एफ)।

3 **वही**, धारा 6 (पृष्ठ ˉ4)।

दिया गया जबकि इसके बदले में फ्रांस ने बोर्सेलोनटे ले लिया। विक्टर अमादय्स के साथ वायदा किया गया कि उसे सिसली दिया जायेगा तथा राजा की पदवी दी जायेगी तथा फिलिप का वंश समाप्त होने पर उसे स्पेन के सिंहासन का उत्तराधिकारी माना जावेगा।

पुर्तगाल

पुर्तगाल को फ्रेंच गायना और ब्राजील के सीमान्त के कुछ प्रदेश दिये गये। ब्रैडन्बर्ग को प्रशिया की राजगद्दी के लिए प्रमाणित मान लिया गया और उसे स्पेनिश ग्वेलडरलैण्ड दिया गया। इसके बदले में उसे ओरेन्ज के प्रदेश पर अपने दावे (स्त्रियों के पक्ष में) को त्यागना पड़ा।

फिलिप पंचम द्वारा जिब्राल्टर और माइनोर्का देना (जुलाई 1713)

सम्राट और फिलिप दोनों ने इन वार्ताओं में भाग नहीं लिया था, जिसका अर्थ था कि वे स्पेनिश साम्राज्य के किसी प्रकार के विभाजन के लिए अपनी अनुमति न देंगे। किन्तु जब उन्होने देखा कि विरोध निष्फल है तो वे भी जल्दी ही मान गये। 13 जुलाई 1713 को फिलिप ने ग्रेटब्रिटेन के साथ की गई संधि पर हस्ताक्षर कर दिये जिसके अनुसार उसने जिब्राल्टर और माइनोर्का ब्रिटेन को और सिसली सेवाय को दे दिये, फिलिप ने 26 जून 1714 को स्टैट्स जनरल और 6 फरवरी 1715 को पुर्तगाल से की गई संधियों पर हस्ताक्षर कर दिये। इसी बीच में बूर्बो और हैप्सबर्गों के वर्षों पुराने संघर्ष का रास्टैडस की संधि द्वारा फैसला कर दिया गया जिस पर 6 मार्च 1714 को हस्ताक्षर हो गये।[1]

रास्टाड की संधि (मार्च 1714)

रास्टाड की संधि द्वारा फ्रांस का अलसेस और स्ट्रासबर्ग पर स्थायी प्रभुत्व स्वीकार किया गया और लुई ने राइन नदी के दक्षिणी किनारे के तमाम जीते हुए प्रदेश जिसमें, ब्रीसैक, फ्रीबर्ग और कहल सम्मिलित थे, सम्राट को वापिस दे दिये। कोलोन के आर्क बिशप और बेवेरिया के एलेक्टर को उनके राज्य वापिस मिल गये। फ्रांस ने नेपल्स, मिलानीज, सार्डिनिया और स्पेनिश नीदरलेण्ड (टूर्नाय, याइप्रेस, मेनिन, और फर्न सहित) पर साम्राज्य अधिकार को मान्यता दे दी। अभी डच सीमा पर रोक का प्रश्न हल नहीं हुआ था। यह नवम्बर 1715 की बेरियर संधि द्वारा तय हुआ जिसके बदले सम्राट ने ग्वैलडरलैंड में स्थित वेन्लू और सेंटमाइकल और फ्लेमिश सीमा पर कुछ प्रदेश डचों को दे दिए। डचों को फर्न, नोक, याइप्रेस, मेनिन, टूर्नाय और नामूर में अपनी सेनाएं रखने का अधिकार

1 वेस्ट 3, 162 एफ. एफ.।

भी दिया गया, सेम्सटरडम और ऐन्टवर्प की आपसी स्पर्धा के खतरे को ध्यान में रखते हुए संकेल्डट का मार्ग बन्द कर दिया गया। इन स्थानों के अतिरिक्त शेष सभी स्पेनिश निचले देश सम्राट को दे दिए गये। 1720 में सम्राट ने सेवाय को सार्डीनिया देकर सिसली ले लिया। इस प्रकार इटली और बेल्जियम में स्पेनिश राज्य के स्थान पर आस्ट्रिया का राज्य हो गया।

यूट्रेक्ट की संधि के परिणाम

यूट्रेक्ट की संधि इस पुस्तक में वर्णित इतिहास-काल की उपयुक्त इतिश्री है। इसी की मुख्य धाराओं द्वारा वेस्टफेलिया की सन्धि की धाराओं में कुछ सुधार हुआ। इसने इस सिद्धान्त को पूर्णतया अभिव्यक्ति प्रदान की कि राज्यो की, वहां के निवासियों के मत को जाने बिना, धन सम्पति की तरह अदला बदली की जा सकती थी। संधिवार्ताकारों को इस बात की चिन्ता थी कि अब इटली, जर्मनी और बैल्जियम केवल भौगोलिक चिन्ह ही रह गए थे। ऐसा लगता है कि उन्होंने यह मान लिया कि स्पेनिश साम्राज्य का उसके दावेदारों में बटवारा करने से शक्ति संतुलन फिर बन जायेगा और यूरोप मे एक बार फिर शान्ति स्थापित हो जायेगी। यद्यपि यह सन्धि पुरातन राज्य की प्रचलित कूटनीतिक परम्पराओं से ऊंचे आधार पर नही हुई थी तो भी यूट्रेक्ट की सन्धि लाभहीन न थी। इससे बूर्बा साम्राज्य का खतरा टल गया। अप्रत्यक्ष रूप में इससे स्पेन को लाभ हुआ क्योंकि इससे उसके अधिकर से यूरोपीय प्रदेश निकल गए जिनके लिए वह ऐसे उत्तरदायित्वों से बंधा हुआ था, जिन्हें पूरा करना उसके सैनिक व आर्थिक साधनों से परे की बात थी, और जब पिरेनीज पहाड़ उसकी वास्तविक सीमा बन गया तब स्पेन अपनी यूरो-पीय आकांक्षाओ को पूरी करने की अपेक्षा अपने धन को राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये व्यय करने योग्य हुआ।

सन्धि और भविष्य

किन्तु यह सन्धि भूत की अपेक्षा भविष्य की ओर अधिक देखती है। सेवाय को इससे बहुत लाभ हुआ और वह इटली में सबसे शक्तिशाली स्वतन्त्र देश बन गया, जबकि जर्मनी का भाग्य प्रशिया के उत्सुक हाथों में सौंप दिया गया। यूरोप और औपनिवेशिक शक्ति के रूप में हालेण्ड की अवनति पूर्व सूचित हो गई और ग्रेट-ब्रिटेन भविष्य की महान सामुद्रिक एवं व्यापारिक शक्ति बन गया। न्यूफाउन्डलैण्ड और अकेडिया की प्राप्ति ने उत्तर अमेरिका में प्रमुखता पाने के लिये महान संघर्ष का सूत्रपात किया। जिब्राल्टर पर अधिकार भावी ब्रिटिश साम्राज्य को—इंग्लैण्ड-जोड़ने की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी बन गया। यूरोप के सचिवालयो में राजवंशीय आकांक्षाओं का स्थान औपनिवेशिक स्पर्धा ने ले लिया और प्रशिया जैसे नवोदित

प्रबल राज्यो ने उस पुराने एकाधिकार को समाप्त कर दिया जिसके अनुसार नेतृत्व कुछ ही राज्य परिवारों तक सीमित था।

जर्मन और फ्रांसिसीयों का द्वेष विरोध

वास्तव में यह सब बाते सत्रहवीं शताब्दी की न होकर अठाहरवीं सदी की हैं। लुई चौदहवें का काल यूरोप के लिए एक ऐसा शाप छोड़ गया जिसे काल ने उसे दुष्टता मे और अधिक दृढ़ कर दिया—जर्मनी और फ्रांस में स्पर्धा और एक दूसरे के प्रति घृणा। इन दोनों जातियों में इतना अधिक बैर विरोध बढ़ गया कि जो फ्रासिसीयों और स्पेनिश लोगो की पुरानी विपरीतता से भी अधिक उग्र था। यूरोप के भाग्य में उत्तराधिकार में प्राप्त ऐसी कई घटनायें हैं। सार्वजनिक शिक्षा के प्रसार और आधुनिक मुद्रणालय से इस दूषित भूतकाल की प्रतिध्वनि और भी अधिक मात्रा में किसी भी समय फिर गूंज सकती है और तब कूटनीति तुरन्त तीव्र रूप में परिवर्तित हो सकती है, जिसे युद्ध कहा जाता है। राष्ट्रों का पारस्परिक सम्पर्क अविवेकी जनमत के भारी दबाव का शायद प्रतिकार न कर सके जबकि पत्रकार और प्रचारक ऐसे जनमत को सरलता से किसी भी ओर झुका सकते हैं किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में कम से कम अन्तराष्ट्रीय विग्रहों ने अधिकांश आकर्षण और जोश खो दिया है, जो कभी इतिहास को उत्प्रेरित किया करता था। स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध इस बात का एक और प्रमाण है कि सर्वप्रथम आक्रमण करना ही सदैव लाभकारी नहीं होता।

अध्याय 7

लुई का निरंकुशतावाद

ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में लुई चौदहवां

लुई चौदहवें का राज्य विश्व का एक ऐसा सूक्ष्म दर्शन है जिसमें फ्रांस और यूरोप की दो पीढ़ियों का दिग्दर्शन हो सकता है। यह ऐसा सूक्ष्म दर्शन है जो एक ऐसे मनुष्य के व्यक्तित्व के चारों ओर घूमता रहा जिसने अपना राज्य-चिन्ह सूर्य और उद्देश्य 'नेक प्लूरिबस इम्पर' (nec plurilus umpar) रखा जिसका तात्पर्य यह था कि वह दूसरी दुनियां को दीप एवं शक्ति प्रदान करने के कार्य में अनुपयुक्त न था। नि.सदेह यह एक ऐसा महान् राज्य था जिसकी उपमा केवल आकाश की अपरिमितता से ही दी जा सकती थी। जिस समय अंग्रेज राजत्व को मूर्खता के हाथो से छुटकारा दिलाने के लिये विभिन्न युक्तियों के प्रयोग कर रहे थे उस समय फ्रांसीसी जनता दैवी अधिकार पर आधारित राजतन्त्र की गर्म धूप का आनन्द ले रही थी और ईसाई धर्म के सत्य प्रभु-प्रेरित राजा के जीवन से प्रतिदिन चरितार्थ हो रहे थे। जब कि अन्य स्थानों में शासकों को समझौतों और मौनिक प्रतिज्ञाओं के बधन में बांधा जा रहा था, उस समय भी फ्रांस में 'ओल्ड टैस्टामेंट' को ही राजनीति का सबसे अधिक प्रामाणिक प्रथम ग्रन्थ माना जाता था।

उसके प्रारम्भिक वर्ष

लुई चौदहवें का जन्म सन् 1638 ई० में हुआ था। प्रारम्भिक अवस्था से ही लुई तेरहवें के ज्येष्ठ पुत्र और आस्ट्रिया की एन को उस पद के लिये सावधानी से शिक्षा दी गई जिस पर उसके बैठने की आशा थी। बालक राजकुमार को किस प्रकार की शिक्षा देनी है इसके सम्बन्ध में इतने स्पष्ट अभिलेख हैं जितने अन्य किसी राजा के सम्बन्ध मे प्राप्त नहीं हुए।[1] उसके लडकपन के हस्तलेख के नमूने सुरक्षित रखे हुए हैं और उसकी एक कापी का शीर्षक है **"ल होमाज ए द्यूब औ स्वा इल फान्त सेक ल्यूरलियूर प्लेस्त"**। उसके संरक्षक शिक्षक फिलिप फोर्टिन, सियोर द ला हाक्वेत ने सातवर्षीय बालक के लिए 1645 में **"कातेशिज्म रायले"** का संकलन किया जिसमें उसने इस बात पर बल दिया कि

---

1 देखिए लेकरगेयट कृत **ल एजुकेशन पोलितिक द लुइस** 14। प्रस्तुत अवतरण एवं अगले दो अवतरणों की सामग्री के लिये लेखक इस पुस्तक का ऋणी है।

राजकीय शक्ति केवल धार्मिक प्रमाणों के बल पर ही प्राप्त की जा सकती है जिसका उद्देश्य मुख्यतः चर्च और राज्य में नवीन परिवर्तनों को रोकना है। इसलिये संदिग्ध मतवालों के लिये कलम और स्याही का प्रयोग वर्जित होना चाहिये तथा नास्तिकों को सूली पर चढ़ाने में किसी दुःख का अनुभव नहीं होना चाहिये। किन्तु इस पुस्तक में राज्य के मन्त्रियों के दुष्कर्मों की निन्दा भी की है। परिणामस्वरूप मेजारिन ने इस पुस्तक को लुई से ले लेना उचित समझा। फोटिन 'ईस्टामेट द कान्सील फिदेली दू ल बोन पेर ए सेन औफान्त' के प्रकाशन में अधिक सफल हुआ जो 1648 में प्रकाशित हुई तथा जिसके 16 संस्करण छपे। इस विचार से कि शिक्षा प्राप्त करने का मार्ग भी राजोचित हो, विशेष प्रकार के ताश के पत्ते तैयार किये गये जिनके द्वारा लुई इतिहास, भूगोल और पौराणिक ज्ञान का सुविधाजनक अध्ययन कर सकता था। उसके लिये भूगोल, अलंकार–शास्त्र, नीति–शास्त्र, दर्शन-शास्त्र की सामग्री (सब शुष्क ज्ञान) ला माथ ले वायर ने तैयार की तथा जिस सुगमता और शीघ्रता से राजकुमार की शिक्षा के संरक्षकों ने उनका मुद्रण करवाया सम्भवतः उससे आकर्षित होकर क्लाड जाली ने अपनी गैर सरकारी पुस्तक **रेक्यूइल द मेक्सिम्स....... पूर ल इन्स्तीत्यूशिआँ दु रा कान्त्रे फासे ए पर्निशियूस पोलितिक दु कार्डिनल मेजारिन** (Recueil de maximes......Pour l' institution du roy Contre lan fansse et Pernicecuse politique du Cardinal Mazarin), प्रकाशित की जिसमें उसने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया कि राजा विधि के अधीन है। यह पुस्तक साधारण जल्लाद द्वारा जलादी गई।

उसकी शिक्षा

इतिहासज्ञ पेरेफिक्स द्वारा लुई को लैटिन की शिक्षा दी गई और उसने सीजर की **'कोमेंटरीज'** पढ़ी। उसने सम्भवतः **डान् क्विग्जाट**, **स्केरोन** (Scarron) का **'रोमन कामिक'** और कोमिन्स के **'मेमायर्स'** भी पढ़े हों। मेजरे द्वारा लिखित **'हिस्ट्र आफ फ्रांस'** जो 1643 में प्रकाशित हुई थी उसे रात को नींद लाने के लिए उसके वालेत-द-शाम्ब्र द्वारा सुनायी जाती थी।[1] इनके अतिरिक्त उसे इटालियन, गणित और 'ताश' (सम्भवतः जब पुस्तकों द्वारा पढाने के सभी प्रयास विफल हो गये) सिखाये गये किन्तु वह कभी भी किसी भी रूप में शिक्षा–प्राप्त व्यक्ति न था तो भी सेंट साइमन के इस कथन में कोई सत्यता नहीं है कि वह केवल पढ़ या लिख भर सकता था।[2]

---

1 लेकरगयट **पूर्व उद्धृत**, 112।

2 **मेमायर्स** 12, 13।

प्रारम्भिक प्रभाव

राजकुमार की माता ने उसके लालन-पोषण में बाह्य पवित्रता की आदतें डालने का कठोरता से पालन किया। शिक्षक संरक्षकों के अतिरिक्त उसका एक शासक (विलेराय) था जो सामाजिक रूप में शिक्षा विज्ञान-वेत्ताओं से भिन्न था और मुख्यतया कुमार के आचरण और बाहरी जीवन से सम्बन्धित था। प्रारम्भिक शिक्षा से उसके मस्तिष्क में जो एक विशेष दृष्टिकोण बना वह प्रोटेस्टेन्टों के विरुद्ध घृणा की भावना थी। कहा जाता है कि मृत्यु-शय्या पर पड़े हुये मेजारिन ने लुई को यह सलाह दी थी कि वह स्वयं शासन करे और जानसेनवादियों का दमन करे। इस सलाह का उसने पूर्णतया पालन किया। उसके जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उसके पितामह फिलिप चतुर्थ की उपलब्धियों को उसके समक्ष सर्वदा आदर्श के रूप में रखा गया। 1643 के पश्चात् लुई तेरहवें और रिशेलू के नामों का बहुत कम वर्णन किया जाता था। इस प्रकार ये प्रभाव उस राजा के प्रारम्भिक जीवन पर पड़े जिसका शासन मार्च 1661 में मेजारिन की मृत्यु से आरम्भ हुआ।

राजत्व एक व्यवसाय

वर्तमान इतिहास में किसी भी अन्य राजा से अधिक, लुई इस बात में विश्वास करता था कि राजत्व एक बहुत विशिष्ट वृत्ति है जिसका लगातार प्रयोग होना चाहिये और उसमें मनुष्यों को समझाने का चातुर्य होना चाहिये।[1] यद्यपि उसकी स्वयं की योग्यता सामान्य थी किन्तु उसने एक ऐसे व्यावसाय में, जिसके लिये कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है, वास्तविक प्रमुखता प्राप्त की। उसका समय दैनिक सरकारी कार्यक्रम में इतनी नियमितता से गुजरता था कि पंचांग की सहा-यता से उसके कार्यों के द्वारा समय का पता बताया जा सकता था। कौंसिल की बैठक में बीमारी की हालत भी उसकी उपस्थिति में बाधक नहीं हो सकती थी, क्योंकि उसके सलाहकार उससे शयनागार मे भी मिल सकते थे। राज्य के उत्तरा-धिकारी की मृत्यु भी उसके सरकारी कर्तव्यो के पालने में केवल आंशिक रूप में ही बाधक हुई। उसका विचार था कि राजा अपने देश को उस सर्वोच्च स्थान से देखता है जिसमें दूसरा कोई भी साझेदार नहीं हो सकता। वह राज्य की आव-श्यकतायों को सार्वलौकिक दृष्टिकोण से देखता है, इसलिए प्रत्येक प्रतिस्पर्धी हित का निर्णय करने के लिये वह सबसे योग्य व्यक्ति है। अपने संस्मरणों में जो उसने

---

1 "इलसे फेट अन आर्ट द रेगनर मोइसं पार साइंस एत पार रिफलेक्शन क्यूपार लेस कन्जस्चर्स एत पार ल हेबी चूड़"। (स्पेनहिम, रिलेशन द ला कोर फ्रांस एन 1690, संस्करण 1882, पृष्ठ 7)।

विशेष रूप से डाफिन के लिए लिखे थे, राजा के परमाधिकारों का उल्लेख किया—"ईश्वर का स्थान ग्रहण करते हुए जैसे हम उसके अधिकार में हिस्सा लेते हैं ऐसे ही मानो हम उसकी बुद्धिमता में भी हिस्सा लेते हैं। उदाहरणार्थ मानव चरित्र की पहिचान करने में, नौकरियों के बटवारे करने में, और पारितोषकों के वितरण में।"[1] इस विचार-धारा के साथ-साथ लुई को (सूचना देने वाले के चरित्र का जैसा भी ज्ञान होता था उसके आधार पर) प्रश्न करने एव उत्तर देने की आदत थी। उसकी लाभप्रद सूचना का समीकरण करने और उसे अपनी ही वस्तु बनाकर उपयोग में लाने की योग्यता लुई की ऐसी विशेषता थी जो प्रायः उन व्यक्तियों में होती है जिन्हें विचारक होने की अपेक्षा कर्मक्षेत्र में उतरना पड़ता है, किन्तु क्या इसे विलक्षणता कहा जा सकता है–जैसा कुछ लोग मानते हैं–या नहीं यह सदैव विवादपूर्ण रहा है। यह उल्लेखनीय है कि लुई को उत्तराधिकार में सर्वोत्तम मत्री मिले थे जिनकी मृत्यु के पश्चात् निम्नस्तरीय लोगों की नियुक्ति हुई।

लुई और फ्रांसीसी संविधान

अपने परमाधिकारों के सम्बन्ध में इस प्रकार की धारणा रखते हुए लुई से यह आशा नहीं की जाती थी कि वह असगत सिद्धान्तों और लुप्त दावों की छाया से, जिसे फ्रांसीसी संविधान का नाम दिया जाता है, अपने आपको जकड़ा हुआ महसूस करेगा। उसकी सरकार की योजना में न्यायिक परिषद के अतिरिक्त पार्लियामेंट का और कुछ योग न था, फ्रांडे में इसकी कार्यवाही का रिकार्ड नष्ट कर दिया गया था और 1665 में इसकी सर्वोच्च धारी न्यायालय की उपाधि भी समाप्त हो गई। स्टेट्स–जनरल का अधिवेशन बुलाने का प्रश्न ही नही था जब तक कि उसके शासन के उत्तर काल में मित्र राष्ट्रों ने स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध में यह मांग नहीं रखी कि फिलिप पंचम द्वारा फ्रांस का सिंहासन त्याग "स्टैट्स आव द रेल्म" के सामने किया जाये, किन्तु लुई ने असेम्बली आव नोटैबल्स की बैठक बुलाने के अतिरिक्त और किसी भी बात पर अपनी अनुमति नहीं दी। कुलीन-वर्ग और चर्च को नाममात्रिक अधिकारों के अतिरिक्त प्रशासन से बहिष्कृत किया हुआ था। जब तक वह मदाम द मैंन्तेनान के प्रभाव में न आ गया जैसुइट कन्फेसरों से निश्चित रूप से प्रभावित नहीं हुआ। कुलीनवर्ग को सरकार से दूर रखने के उसके नियम में बियोविलियर्स के ड्यूक को मन्त्रि पद देना ही केवल मात्र एक अपवाद है। लुई को अपने मन्त्रियों में व्यक्तित्व या सामाजिक उच्चता की अपेक्षा श्रम, ईमानदारी और अधिकारिता के गुणों की आवश्यकता थी। केवल इसी आधार

---

1 **मीवरस द लुइस** 14, ग्रेविले द्वारा सम्पादित, 2,283।

पर वह मौलिक और प्रतिभावान् होने का पूर्ण सम्मान प्राप्त कर सका जो जन-साधारण के मत में उसके कार्यों को मिला।

लुई का शासन व्यक्तिगत था। उसकी सहायता के लिये चार महान कौंसिलें थी।[1] कौंसिल द इटेट, कौंसिल द देपेशे, कौंसिल द फिनान्स और कोंसिल प्रिवे। कुछ कम स्थायी कौंसिलें भी थी जैसे कौंसिल आफ कामर्स जो 1664 में हेनरी चतुर्थ द्वारा बनाई कौंसिल के नमूने पर स्थापित की गई, पादरियों की वृत्ति में संशोधन सम्बन्धी अधिक महत्वपूर्ण प्रश्नों का निर्धारण करने के लिये कौंसिल आव कान्शेंस स्थापित की गई थी जिसमें स्वयं राजा, उसका कन्फेसर और पेरिस का आर्कबिशप होते थे। इस अन्तिम कौंसिल ने ही नान्ते की घोषणा को रद्द करने का निर्णय किया था। किन्तु लुई चौदहवें के शासन की सबसे महत्वपूर्ण संस्था एक कौंसिल न होकर एक पद था—राज्य सचिव का। हम पहले बता चुके हैं[2] कि यह पद प्रारम्भ में कितना छोटा और महत्वहीन था, सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस पद पर फ्रांसीसी इतिहास के कुछ महानतम प्रशासकों की नियुक्ति की गई। इस युग के परराष्ट्र मामलों के राज्य-सचिव थे द ब्रियेर, पिता एवं पुत्र (1647-1663) ह्यूगुए द लियोन (1663-1671), पोम्पोन (1671-1679) कोल्बर्ट द क्रोइसी[3] जो महान् कोल्बर्ट का भाई था, (1679-1696) तथा कोल्बर्ट द टोर्सी जो क्रोइसी का पुत्र था (1699-1716)। युद्ध-सचिवों में प्रसिद्ध थे, माइकल ले तेलिए (1643-1677), जिसका सहायक 1662 से उसका पुत्र लूवाय था, लूवाय (1677-1691), लुवोयस का पुत्र बार्बेज्यू (1691-1701) और शैमिलार्त (1701-1730) समुद्री व्यापार के राज्य मंत्री थे। कोल्वर्ट (1669-1683) उसका पुत्र सेनले (1683-1690), पान्तशार्त्रेन (1690-1699) और उसके बाद उसका पुत्र (1699-1715)। मेसां दु राय के सचिव का पद कोल्बर्ट और उसके बाद उसके पुत्र सेनले के पास रहा (1683-1690), पान्तशार्त्रेन के पास (1690-1693) तक रहा, तत्पश्चात् उसके पुत्र के पास (1693-1699) रहा।

अधिकारी परिवार : कारकुन

इन सूचियों से यह विदित होता है कि लुई के राज्यकाल में तो महान् अधिकारी परिवार थे लूवाय और कोल्बर्ट के—जिन्होंने 1690 से पूर्व तमाम महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों का आपस में लगभग ठेका ले रखा था। उनकी पदा-

1 अन्ते, पृष्ठ 39।

2 अन्ते, पृष्ठ 41।

3 देखिये अन्ते, पृष्ठ 248, टिप्पणी एक।

वधि बहुधा समकालीन भी रही है जिससे कि पुत्र अथवा भतीजा अपने कर्तव्य सम्भालने से पूर्व कुछ काल तक प्रशिक्षण प्राप्त करले। ऐसा भी दिखाई देता है कि एक व्यक्ति कई सचिव पदों पर कार्य करे, जैसे कोलबर्ट, जिसे इतने अधिक विविध प्रकार के कार्य करने पड़ते थे कि उसे देश की आर्थिक और वित्तसम्बन्धी हालतों का प्रथम ज्ञान प्राप्त करने का अपूर्व अवसर मिल जाता था। इन प्रशासकों और प्रान्तों के बीच संयोजन का कार्य कारकुनों के पद द्वारा किया जाता था, जो इस काल में कभी कभी योग्य और ख्याति-प्राप्त व्यक्तियों द्वारा पूर्ण किये जाते थे तथा जो उस प्रान्त के हित में तत्परता से कार्य करते थे जो उनके अधीन होता था। जब से शेलू ने इस पद को पुनर्जीवित किया तब से कारकुनों का कर्तव्य विस्तृत हो गया था यहां तक कि लुई चौदहवें के राज्य में तो यह लगभग असीमित था वे अपील के न्यायालय का सभापतित्व करते और न्याय और वित्त के विवादास्पद प्रश्नों का फैसला करते थे। वे कृषि-उद्योग, संदेश-वाहन, पुलिस और मण्डियों का नियमीकरण करते थे। वे सैनिकों की व्यस्तता और उसके ठहराने का ध्यान रखते थे, नगरपालिका-प्रशासन का निरीक्षण करते थे, विश्वविद्यालयों और अकादमियों को नियमबद्ध करते थे और पुअर ला (Poor Law) अधिकारी, सफाई निरीक्षक, कर-सञ्चकर्ता और स्थानीय ग्रन्थ-रक्षागृह के संरक्षक का काम करते थे। कोलबर्ट ने उन्हें अवकाश-काल में मूल्यवान् पाण्डुलिपियों को खोज निकालने की आज्ञा दे रखी थी।

वर्णन–विधि

सुविधा की दृष्टि से लुई चौदहवें के निरंकुशतावाद का चार भिन्न भागों में विषयानुसार विचार किया जा सकता है (1) आर्थिक व औद्योगिक नियन्त्रण (2) चर्च (3) दरबार और समाज (4) जनमत। यह तरीका तिथि-क्रम के अनुसार न होकर केवल वर्णन की स्पष्टता को ध्यान मे रखकर अपनाया गया है।

जे० बी० कोल्बर्ट

आर्थिक औद्योगिक नियंत्रण

जिस प्रकार लूवाय द्वारा फ्रांसीसी सेनाओं का पुनर्गठन किया गया था उसी प्रकार जॉन बैप्टिस्ट कोल्बर्ट द्वारा वित्त और व्यापार की पुर्नव्यवस्था की गई। रीम्स के एक वस्त्र-विक्रेता होने के कारण कोल्बर्ट को व्यापारिक व्यवसाय के लिए प्रशिक्षित किया गया था। किन्तु माइकल ले ते लिए[1] और मेजारिन की नौकरी में लगे रहने के कारण मेजारिन ने राज्य सेवा के लिए उसकी सिफारिश की।

---

1 यह (1603–1685) लेवेरियस का पिता था तथा 1643 में युद्ध सचिव के पद पर नियुक्त हुआ था।

उसका चरित्र अन्तरात्मा को मानने वाला और परिश्रमी था, व्यवस्था और निर्देश उसे प्रिय थे, तथा वह अपनी लक्ष्य-सिद्धि मे क्रूर भी था। उसे विश्वास था कि यदि उचित नियमों का भली प्रकार मे पालन कराया जाय तो जहां पहले आलस्य और अभाव बने हुये थे वहां उद्योग और प्रचुरता बढ़ेगी। उसे कुछ कानूनी प्रशिक्षण भी प्राप्त हुआ था। उसके सुधारो और 1667 के ओर्डीनेंस सिविल द्वारा जाबता दीवानी के एकीकरण करने से उसे विधिवेत्ता समझा जाता था। यह एक विशेषता है कि उसका सबसे अधिक स्थायी कार्य विधि-संहिता मे समाविष्ट है। 1661 मे फूक्वे के दुष्टव्यहार को प्रकट करने में उसने जो भाग लिया उससे उसने प्रसिद्धि प्राप्त करली और उसके कौंसिल द फिनान्स में दाखिल होने से पूर्व वित्तीय अधीक्षक का अपमान (उसे पिग्नेरोल के किले में आजीवन कारावास दिया गया था) किया गया था। 1665 मे वह वित्त का कन्ट्रोलर जनरल होगया और चार वर्ष बाद इन कार्यो मे राज्य के चार सचिव पदों में से दो के कार्य—मेरीन और मैसां दु राय—उसे और सौप दिये गये। इस प्रकार लुई के अन्य अधिकारियों की अपेक्षा उसके उत्तरदायित्व अधिक थे। लुई के राज्य के महान् आर्थिक पुनर्निर्माण का श्रेय किसी अन्य की अपेक्षा उसको सबसे अधिक है।

वित्तीय सुधार

फूक्वे के मुकद्दमे के लम्बी अवधि तक चलने से वित्तीय प्रणाली के अनेको दोष स्पष्ट हो गये जो सली द्वारा कभी दूर नहीं किये गये थे, यह प्रणाली मेजारिन और रिशेलू के प्रशासन-काल में बिलकुल भ्रष्ट हो चुकी थी। कोल्बर्ट ने कुछ समय के लिए दुर्व्यवहार और अपव्यय की गति को रोका। यद्यपि उसने इस प्रणाली में, जिसके कारण दोषों का होना अवश्यम्भावी था, कोई कठोर परिवर्तन नही किया फिर भी उसने अभी तक कई अविकसित साधनों का उपयोग किया और इस प्रकार लुई चौदहवे द्वारा चलाये गये खर्चीले युद्ध को सम्भव बनाया। उसने 1659 में वित्तीय सुधारों की एक योजना तैयार की थी जिसका उद्देश्य गबन करने वालों पर न्यायाधिकरण के सामने अभियोग लगा कर, कर इकट्ठा करने पर व्यय घटाकर 'टैली' मे समानता लाकर और लाभहीन पदों को तोड़ कर राष्ट्रीय वित्तों को व्यवस्थित करना था।[1] ऐसा न्यायाधिकरण 1661 में स्थापित किया गया और वह चार वर्ष तक अपना कार्य करता रहा। उसने अपराधियों के विरुद्ध सूचना देने वालों को प्रोत्साहन दिया तथा उन्हें जुर्माने का कुछ अंश दिये जाने की घोषणा की। इन चार वर्षों में इस न्यायाधिकरण ने अपराधियों से खूब धन खींचा। काल्बर्ट ने व्यापार का अनुभव होने के कारण, आम व्यय रखने की सरकारी प्रणाली मे

1 इसके लिए देखिये नेमार्क कृत कोल्बर्ट एंड सन टेम्स, 1,43 एफ एफ।

सुधार किया और अब राष्ट्रीय वित्त की पूरी लेखा परीक्षा होने लगी, जांच पूर्व-निश्चित औपचारिक रूप में न होकर बहुत गम्भीर होने लगी। कुल आय और व्यय का लेखा जोखा रखने के लिए सामान्य रोकड़ बही काम मे लाई जाती थी जबकि दो खाता-बहियों में आय व व्यय को ब्यौरेवार लिखा जाता था। मासिक रिपोर्ट के कारण पिछले वर्ष के उसी काल से तुलना करना सम्भव हो गया और सली के समय की भांति, बजट केवल आंकड़ों का संकलन न होकर एक पूरा लेखा-विवरण बन गया। बहुत से निरर्थक पद, खर्चीले व्यय समाप्त कर दिये गये। 'रेंटीज' को क्रयमूल्य पर न खरीद कर 1639 के पश्चात् चालू कम दरों के आधार[2] पर फिर खरीदने से कुछ असंतोष अवश्य फैला।

कोल्बर्ट और 'टेली'

कोल्बर्ट ने 'टेली' को अधिक न्यायसगत कर बनाने की चेष्टा की। उसने उसमें मामूली सा समायोजन कर दिया जिससे पे देता को पहले से कुछ अधिक अनुपात में अदा करना पड़ा। यद्यपि इस कर का अधिकांश भार अब भी पे देलेक्शिआं को ही सहन करना पड़ता था। पद अथवा कुलीन वर्ग के आधार पर 'टैली' से मुक्ति कठोर छानबीन के पश्चात की जाती थी। दस सतानों वाले लोगों को पूरी छूट दे दी जाती थी। नव विवाहित दम्पतियों के साथ रियायत की जाती थी। 'टैलीरेली' का पुन समायोजन जायदाद को नए सिरे से आंक कर करने का प्रयत्न किया गया, किन्तु इसमें केवल आंशिक सफलता मिली। कृषि-प्रणाली उसी प्रकार रहने दी गई, किन्तु जहां कहीं इस बात का प्रमाण मिलता था कि किसान (fermier) ने राज्य से बहुत ही पक्षपातपूर्ण संविदा किया है तो उसकी रियायत रद्द करदी जाती थी और उसे फिर से ऐसी वार्ता पर ही आरम्भ किया जाता था जो राज-कोष के पक्ष में हो। इन विधियों से सम्पूर्ण और वास्तविक वार्षिक आय का अन्तर कम से कम किया जाता था। अन्तर केवल इकट्ठा करने और प्रशामन करने के मूल्य का होता था, तथापि लुई चौदहवें के निरन्तर अभियानों का फ्रांसीसी साधनों पर इतना अधिक दबाव पड़ा कि कोल्बर्ट को 1683 में अपनी मृत्यु से पूर्व अन्य प्रकार के रेन्टीज (6 प्रतिशत) उत्पन्न करके राष्ट्रीय ऋण बढ़ाना पड़ा तथा पद और सम्मान बेचने पड़े।

व्यावसायिक सिद्धान्त

अब तक कोल्बर्ट ने लुई के लिए जो कुछ किया वह सली ने जो कुछ हेनरी चतुर्थ के लिए किया था उससे कुछ अधिक न था। उसे अपने ह्यूजनों पूर्वाधिकारी द्वारा किये गये सुधारों से पूर्व जानकारी थी। वह हेनरी के शासन को आदर्श मानता था, परन्तु उसका अनुकरण करके आगे बढ़ाने को तैयार नहीं था। वाणिज्य-परिषद जो 1664 में स्थापित और 1667 में भंग कर दी गई, केवल

उस शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में स्थापित कौंसिल को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न मात्र था। कोल्बर्ट पहले के बूर्बों राजा द्वारा चलाई गई योजनाओं में से कुछ को पूरा करने के काम में जुट गया। व्यावसायिकवाद (merchantilism) शब्द का प्रयोग इसके बाद के वर्षों में अर्थ-शास्त्र के उन सिद्धान्तों के वर्णन के लिए किया जाता रहा है जिनका कोल्बर्ट अनुसरण करता था। यद्यपि यह शब्द लाभदायक है तो भी यह स्मरण रखना चाहिए कि 17वीं शताब्दी में राजनैतिक आर्थिक व्यवस्था जैसा विषय लगभग अज्ञात था और राजनीतिज्ञों के उपयोग के लिए सिद्धान्तों का कोई नियमबद्ध सग्रह न था। फिर भी कुछ ऐसी पूर्व धारणायें या अविवेकपूर्ण विचार थे जो पश्चिमी यूरोप में विस्तृत रूप में स्वीकार किये गये थे। इस प्रकार पुरानी धारणा का कि किसी भी देश के लिए कृषि आवश्यक उद्योग है स्थान इस सिद्धान्त द्वारा लिया जा रहा था कि जहां राज्य को स्वावलम्बी होना चाहिए वहीं इसे निजी देशी उद्योग और निर्यातों द्वारा सम्पत्ति इकट्ठी करनी चाहिए।[1] इस मत के अनुसार यह आग्रहपूर्वक कहा जाता था कि कृषि-कार्य की भी एक सीमा है जिससे आगे वह उत्पादक कार्य नहीं रहता जबकि उद्योग की असीमित सम्भावनायें है। यह सिद्धान्त (formulate) सर्वप्रथम एक इटैलियन अर्थशास्त्री अण्टोनियो सेरा ने अपने **"उन देशों मे जहां खाने नहीं है सोना और चांदी लाने की विधियों पर संक्षिप्त लेख"** में स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया (1613)। इसी प्रकार की दलीलें मोंट केटीन द्वारा लिखित "ट्रीटाइज आन पोलिटिकल इकानमी" मे भी पाई जाती है।[2] व्यावसायिकवाद का मौलिक सिद्धान्त यह है कि सम्पत्ति बहुमूल्य धातुओं से अर्जित होती है और चूंकि सोने चांदी को निश्चित राशि परि-भ्रमण में रहती है इसलिए यह हर एक देश के हित में है कि वह इसका अधिका-धिक सग्रह करे। इस तर्क से यह निष्कर्ष निकाला गया कि राष्ट्र विदेशियों के धन से फलता फूलता है और इस तरह आक्रामक युद्ध को कुछ हद तक न्याय संगत माना गया क्योंकि यह सदा माना जाता था कि सैनिक विजय शत्रु के मूल्य पर प्रत्यक्ष रूप से देश को लाभ पहुंचाती है। इसलिए इस दृष्टि से व्यावसायिकवाद रक्षात्मक था, किन्तु यह आक्रामक भी हो सकता था क्योंकि यह राज्यों के आर्थिक सम्बन्धों में केवल अपने और स्पर्धात्मक तत्वों पर ही बल देता था।

क्या कोल्बर्ट स्वतंत्र व्यापार का पक्षपाती था ?

परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि व्यावसायिकवाद अनिश्चित अर्थ वाला

---

1 देखिये सी. डब्लू. कोल **फ्रेन्च मरकेनटिलिस्ट डाक्ट्रिन्स बिफोर कोल्बर्ट।**

2 मोंटक्रेटीन द वेटेविल्लो, **त्रेत दल इकोनोमिक पोलितिक** (1615) सम्पा-दित फंक ब्रेन्टेनो (1889)।

शब्द है और इसका अर्थ काल और देश के अनुसार भिन्न भिन्न होता रहा है। यहां हमारा संबंध कोल्बर्ट द्वारा इसका प्रयोग करने की विधि से है। इस सम्बन्ध में उसके सिद्धान्त और प्रयोग में विरोध है। उसने एक संस्मरण में, जो 1651 में मजारिन के लिये लिखा गया था फ्रांस के समुद्री व्यापार के विकास के लिये दो आवश्यकताओं, रक्षा और स्वतंत्रता की व्याख्या की है। रक्षा से उसका तात्पर्य यह था कि फ्रांसीसी जहाज समुद्री डाकुओं के भय से मुक्त हों और उनके माल को विदेशी बन्दरगाहों में जब्त किये जाने का खतरा न हो। स्वतन्त्रता का यह तात्पर्य था कि वह देश (इंगलैण्ड) जो फ्रांसीसी शराब और रेशम की सबसे अच्छी मंडी है इन आयातों पर से चुंगी हटाले जिससे दोनों देशों के व्यापार को प्रोत्साहन मिले।[1] इसलिए सिद्धान्त रूप में जहा तक इंगलैण्ड का सम्बन्ध था कोल्बर्ट स्वतंत्र व्यापार का पक्षपाती था। सन् 1669 में वह इंगलैण्ड के साथ एक दूसरे के आयातों से समानता के व्यवहार के आधार पर प्रस्तावित व्यापारिक संधि के कार्य में व्यस्त रहा किन्तु इस प्रस्ताव का कुछ फल न निकला, क्योंकि फ्रांसीसी मंत्री का हठ था कि फ्रांस में आयात होने वाले अंग्रेजी माल की सामग्री के आकार और कारीगरी आदि की वैसी ही सख्त जांच होगी जैसी फ्रांसीसी माल की होती थी। कोल्बर्ट की राय में इस सिद्धान्त को त्यागने का अर्थ अपने सब आर्थिक सुधारों को छोड़ देना था। इसी स्थान पर उसकी वार्ता भंग हो गई। कोल्बर्ट ने इंगलैण्ड के साथ स्वतंत्र व्यापार के लाभ के बदले में भी अपने प्रिय नियमों को नहीं त्यागा,[2] तब भी 1678 मे फ्रांस और इंगलैण्ड के मध्य व्यापार का संतुलन फ्रांस के पक्ष में 3500000 लाख लिव्र आंका गया था।[3] ऐसा माना जाता था कि जब तक फ्रांस सोने-चांदी की इतनी आमद बनाये रखेगा तब तक वह आक्रामक सैनिक राज्य बना रहेगा। यह पहिले देखा जा चुका है कि 1667 की चुंगी की दर आरम्भ मे डचों को हानि पहुंचाने के विचार से लगाई गई[4] थी जो पश्चिमी यूरोप के 4/5 व्यापारिक माल ढोने पर अधिकार रखते थे और इसका सामान्य परिणाम जो निकलना अवश्यमभावी है वह यह है कि जबकि कोल्बर्ट कुछ क्षेत्र में अपने समकालीनों से आगे था तो कुछ क्षेत्रों में उसे उनका ही अनुसरण करना पड़ता था। इन युक्तियो में घरेलू व्यवसायों की पूर्ण रक्षा करना उनको नियमित करना, तथा विदेशियों के

---

1 नेमार्क, कौलबर्ट एत सन टेम्पस, 1 परिशिष्ट 1।

2 वही, 1,288।

3 मेमायर्स आफ वान बेनिगगन इन वास्ट से उद्धृत, लेस ग्रांड ट्रीटीज, 2,66, टिप्पणी।

4 देखिये अध्याय 6।

विरुद्ध निरोधात्मक चुंगी लगाना भी मम्मिलित था। एकाधिकार स्वीकार करना भी इसी योजना का अंग था। कोल्बर्ट को आशा थी कि फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया और वेस्ट इंडिया कम्पनियां जो 1664 में स्थापित हुई थीं, इंगलैन्ड और हालैंड के सामुद्रिक प्रभुत्व का सामना कर सकेंगी। इसी प्रकार उपनिवेशों को आदि रूप में कच्चा माल देने का साधन समझा जाता था। एक निश्चित सीमा पर पहुंचने के उपरान्त समुद्र पार अधिकारों को बढ़ाने के प्रयत्नों को रोक दिया जाना चाहिए अन्यथा इससे उपनिवेशों द्वारा व्यापारिक स्पर्धा बनने और इस प्रकार मातृदेश को को हानि पहुंचाने का भय था।

कोल्बर्ट और कृषि

अपने देश में कोल्बर्ट का काम सृजनात्मक एवं प्रशासनिक था। उसने 'टेली' को अधिक न्यायपूर्वक आंक कर, नमक का मूल्य घटा कर और पशुओं और घोड़ों को वैज्ञानिक रीति से पालने के लिये धन देकर किसान की सहायता की जबकि उन प्रान्तों में जो राज्य सचिव होने के कारण उसे दिये गये थे उसने दल-दली मांगों का सुधार किया और जमींदारों को कृषि-कार्य में रुचि लेने के लिये प्रोत्साहित किया।[1] समुद्री जहाज बनाने के लिए प्रचुर मात्रा में लकडी देने के लिये उसने राज्य के वनों के प्रशासन को 1669 के अध्यादेश द्वारा पुनर्गठित किया और इस साधन से आय में बहुत वृद्धि की। किन्तु यह वृद्धि स्थिर नहीं रखी जा सकी, क्योंकि बाद में स्थानीय 'गुट' राज्य के वनों से लकड़ी खरीद लेते थे जिससे उन्हें लकड़ी सस्ती पडती थी और फिर जहाज बनाने वालों को महंगे भाव पर बेचते थे।

उद्योगों पर नियंत्रण

कोल्बर्ट की महान्तम सफलता न तो वित्त में थी और न कृषि में, अपितु उद्योगों के निर्देशन और प्रोत्साहन देने में थी। इस आशा से कि अन्ततोगत्वा देश का उत्पादन पूर्णतया फ्रांसीसी जहाजों में ही ले जाया जायेगा, उसने जहाज-निर्माण के लिए आर्थिक सहायता दी, वह एक विशाल फ्रांसीसी औपनिवेशिक साम्राज्य के स्वप्न देखता था। हालैंड सर्वाधिक प्रबल प्रतिस्पर्धी था, उसकी समृद्धि को नष्ट करने के लिए कोल्बर्ट को चार बातें आवश्यक प्रतीत होती थीं—प्राचीन धन्धों को पुन स्थापित करना, नये शिल्पों का सृजन करना, नौ सेना और व्यापारिक जहाजों का विकास करके विदेशों की मंडियो को हस्तगत करना और कृषि सुधार करना क्योंकि भोजन सस्ता और मजदूरी कम होनी चाहिए। इस प्रकार उद्योगों का नियमीकरण करना उसकी महान् और सुनियोजित योजना का अंग था।

---

1 नेमार्क, पूर्व उद्धृत 1,309 एफ. एफ.।

उसकी प्रेरणा से पारित बहुत सी घोषणाओं का अभिप्राय कपड़े जैसे अन्यान्य शिल्पों के माल की उत्तमता और नाप का स्तर निश्चित करना था। कच्चा माल और कारीगरी दोनों को विधि के अन्दर सामाविष्ट किया गया। ऊन और सन का निर्यात बन्द कर दिया गया। गिल्ड और व्यापारिक निगमों के नियमों की जांच सरकार द्वारा की जा सकती थी अन्यथा नये संघों को लाइसैंस देकर उनके एकाधिकार को समाप्त किया जा सकता था। 1673 में एक महान् "वाणिज्य अध्यादेश" (ordinance of commerce) की घोषणा की गई जो एक पूरी व्यापारिक नियमावली थी जिसमें खलासी गीरी, संविदा, दीवालियापन और वाणिज्य द्वन सम्बन्धी क्षेत्राधिकारों के लिए निश्चित नियम बना दिये गये थे। इस घोषणा ने अनेकों प्रचलित स्थानीय प्रथाओं का स्थान ले लिया तथा यह क्रांति तक चालू रही। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार हेनरी चतुर्थ ने रेशम की उन्नति पर लिखी एक सरकारी पाठ्यपुस्तक सब जगह प्रचारित की थी उसी प्रकार कोल्बर्ट ने ऊन रगने और इस कार्य के लिये आवश्यक चीजों की तैयारी के लिये व्यावहारिक निर्देशों की एक ग्रंथ माला छपवाई। कपड़े की केवल ऐसी गांठों पर जिनके निरीक्षण करने पर सरकारी निरीक्षक संतुष्ट हो दीवानी टिकिट चिपका दिया जाता था, किन्तु कुछ मामलों में ये नियम व्यवसाय को प्रोत्साहन देने की अपेक्षा उसे दबाने में आधिक सहायक हुए, क्योंकि निर्माता प्राय: चिढ जाते थे और अपरि-वर्तनशील मापदण्ड, जो मांग और पूर्ति के सिद्धान्त या स्तर में परिवर्तन का कुछ ध्यान नहीं रखते थे, कठोरता से लागू किये जाते थे। एक समकालीन[1] ने सामान्य मत प्रकट करते हुए कहा "**मान्शवर कोल्बर्ट एप्यूजे ला मातिएर दे एग्लीमें।**"

निर्माता

कोल्बर्ट के कार्यों का सबसे अधिक सफल काल 1664 से 1672 तक था जब उसने कपड़ा बनाने, लिनेन, चमड़े, रेशम और टैपेस्ट्री बनाने का काम फिर से चलाया[2]। इनका आरम्भ हेनरी चतुर्थ द्वारा किया गया था, यद्यपि रिशेलू और मेजारिन ने इसको तिरस्कृत कर दिया था। नये शस्त्रागार और ढलाई के कारखाने में सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे जबकि बदरगाहों में जहाज निर्माण उद्योग के पुनरुत्थान से चहल-पहल होने लगी थी। कोल्बर्ट ने कपड़ा-उद्योग में सबसे उन्नत तरीकों को प्रयोग मे लाने के लिए विदेशी या डचों की सहायता का उपयोग किया. कारकास्सोन में कपड़ा बनाने का निर्देशन एक डच विशेषज्ञ द्वारा किया जाता था तथा ऐजिविल में एक डच पूंजीपति वान रोबेज द्वारा अनेक लोगों

---

1 जी. मार्टिन कृत, **ला ग्रान्दे इन द सट्री सोस ल रेगने द लुइस** 14, 157।

2 **नेमार्क, पूर्व उद्धृत**, 1,236 एफ एफ।

को नौकरी और शिक्षा दी जाती थी। यह स्मरणीय है कि इन विदेशियों को नांते की उद्घोषणा के खण्डन सम्बन्धी नियमों से मुक्त रखा गया था तथापि उन्होंने फ्रांस छोड़ दिया। दूसरे उद्योगों में भी इसी प्रकार बाहर से बुलाये गये विशेषज्ञों की सहायता ली जाती थी। मुरानो के कांच कारखाने के वेनीशियन कारीगरों को काच बनाने की कला सिखाने के लिये 1665 में पेरिस मे बुलाया गया और बुरानो के स्त्री-कारीगर वेनीशियना के फीते बनाने का प्रशिक्षण देने के लिये फ्रांस मे बस गईं। आशा की गई थी कि फ्रांस के कांच और फीते की उसी प्रकार खूब मांग होगी जैसे वेनीशियन माल की, किन्तु यह आशा निराशा में परिणत हो गई। इसका कारण यह हो सकता है कि कोल्बर्ट द्वारा अनुमोदित विशिष्ट शिल्प-कलाओ के लिये किसी विशेष प्रकार की फैक्टरी या कारखाना प्रणाली की आवश्यकता थी जबकि उस समय फ्रांस में गृह-उद्योग-प्रणाली पूर्णतया प्रचलित थी। इस कारण आग्जेर में फीता बनाने के काम को बड़े पैमाने पर चलाने के परीक्षण को छोडना पड़ा, क्योंकि फैक्टरी-संगठन का समावेश करने के विरूद्ध प्रबल आपत्तिया थी जो कुछ तर्क संगत भी थी। फिर भी यह प्रणाली टेपेस्ट्री और कलापूर्ण सज्जा का सामान बनाने में आंशिक रूप से सफल रही। 1667 में कोल्बर्ट ने कलाकार लेब्रुन के निर्देशन में एक बडा टेपेस्ट्री का स्कूल और कारखाना होटल दे गोबलिन में स्थापित किया। वार्साय की सजावट एव कई अजायबघरों में प्रदर्शनार्थ वस्तुओ को देखकर इसके सुखद परिभाषाओं की अब भी प्रशसा की जा सकती है, किन्तु, यद्यपि यह बात कुछ शिल्पों मे सबसे उत्तम दर्जे के काम के लिये प्रसिद्ध है, तो भी यह सत्य है कि कोल्बर्ट ने कुछ ऐसे धधों को भी कृत्रिम प्रोत्साहन दिया जो फ्रांसीसी स्वभाव से मेल नहीं खाते थे और जिन्हें उखाड़ने के लिये केवल स्वाभाविक प्रतियोगिता की आवश्यकता थी। डच युद्ध ने एसी अनेक योजनाओं का अन्त कर दिया।

नांते की उद्घोषणा को तोड़ने के आर्थिक परिणाम

सन् 1673 के पश्चात् कोल्बर्ट को अपदस्थ कर वह स्थान राज्य-कृपा से लूवाये को दे दिया गया, यह परिवर्तन फ्रांस के लिये विनाशकारी रहा क्योंकि लूवाय ने लुई चौदहवें की निकृष्टतम प्रवृत्तियो को प्रोत्साहन देने में सहायता की और कुछ ही वर्षों के अन्दर कोल्बर्ट के सुधारो के फलस्वरूप हुए अधिकांश लाभ समाप्त हो गये। इसकी पराकाष्ठा 1685 में नांते की उद्घोषणा को तोड़ने के साथ हुई जो राष्ट्र की आर्थिक भलाई के लिये विनाशकारी सिद्ध हुई, चाहे इसके नैतिक प्रभाव के विषय में कुछ भी क्यों न कहा जावे। ह्यूजनों राष्ट्र का सबसे परिश्रमी अंग था जिसमें निपुण, पूंजीपति और चतुर शिल्पी दोनों प्रकार के लोग थे। जब उन्हें देश छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा तो वे अपने साथ अपना समस्त

कौशल भी इंगलैण्ड, हालैण्ड स्विट्जरलैण्ड और ब्रैन्डेनबर्ग ले गये। इसके साथ ही फ्रांस में तैयार हुए माल की माग विदेशों में तेजी से घट गई। बहिष्कृत लोगों की कृपा से अंग्रेजी रेशम–उद्योग को नया प्रोत्साहन मिला, हालेण्ड निजी तौर पर मौजे, टोप, ताफने और रेशमी वस्त्र बनाने लगा। ऊन और रेशम जेनेवा में निर्मित किया जाने लगा डेन्मार्क ने निजी कांच निर्मित करना आरम्भ कर दिया। ह्यूजनो को निष्कासित करके लुई ने कोल्बर्ट की पुनर्निमाण–योजनाओं को नष्ट कर दिया और इस प्रकार अपने शत्रुओ को बहुमूल्य उपहार दे डाला।

आर्थिक अवनति

फ्रांस की आर्थिक स्थिति लुई चौदहवें के शासन के अन्तिम वर्षो का शोचनीय चित्र प्रस्तुत करती है।[1] कोल्बर्ट के उत्तराधिकारियों-पान्त शार्त्रे शैमिलार्त और देमारे–मे वित्तीय योग्यता न थी और न ही उद्योगों के विकास के लिए जोश था। उन्हें वे अपूर्व अवसर प्राप्त नहीं हुए, न वह ज्ञान मिला जो उनके पूर्वाधिकारी को अनेक प्रकार के कर्तव्य करने मे प्राप्त हुआ था। वे प्रशासक होने की अपेक्षा दरबारी थे। बहुत से दोष जिन्हें निकालने के लिये कोल्बर्ट ने भरसक यत्न किया था अब और भी अधिक संख्या में एकत्रित हो गये। वावन ने 1695 में लिखित अपनी **प्राजे द कैपितशिओं** पुस्तक में यह प्रदर्शित किया है कि 'टैली' इतना अधिक भ्रष्टाचारी हो गया था कि 'देवता स्वयं भी उसे नहीं सुधार सकते थे' और अपनी **डीम राएल**[2] (1707) में उसने यह दावा किया है कि फ्रांस की जनसंख्या का दसवां भाग भिक्षुक बनने के लिये बाध्य कर दिया गया था। इसको दूर करने के लिए उसने प्रस्ताव किया कि तमाम प्रत्यक्ष करों को बन्द कर प्रत्येक व्यक्ति पर समान रूप से 1/10 कर लगा दिया जाना चाहिये तथा उसमें किसी को भी छूट नहीं दी जाये। इस प्रकार का कर 1710 में लगाया गया किन्तु पादरियों, निगमों और **पे दे' ता** ने इतनी अधिक रियायतें प्राप्त कर लीं कि इससे बहुत अधिक निराशाजनक आय हुई। बोइसगिलबर्ट अपनी पुस्तक **फैक्टम द-ला–फ्रांस** (1706) में लिखता है कि वे किसान जिन पर 'टैली' एकत्र करने का घृणित कार्य अरोपित किया गया था अपना अधिकांश समय अपने घरों की अपेक्षा जेलों में काटा करते थे[3]। उसने सुझाव दिया कि 'टैली' को पुनः आंका जाये और यह प्रत्येक व्यक्ति पर

---

1 देखिये वुइट्री कृत **ला देसोरड्रे देस फाइनेन्सेस ए ला फिन डू रेगने द लुइस 14, बेलू लेस गेक्लेस लुई 14** और मारटिन, पूर्व उद्घृत, 252 एफ. एफ,।

2 देखिए एम, विसंकृत **लेस ओरीजिन्स पत लेस देसतीमोज द ला दिक्समे रोयले द वावन।**

3 ये निर्वाचित एसेर्योस थे। देखिए अन्ते, पृष्ठ 24 टिप्पणी 2।

लगाया जाये तथा यदि कोई घाटा हो तो वह चिमनियों पर कर लगाकर पूरा किया जाये। विस्तार में चाहे कुछ भी मतभेद क्यों न हों, किन्तु तात्कालिक लेखक इस बात पर सहमत थे कि स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध के समय फ्रांस इतनी दरिद्रता और दुर्गति की अवस्था में पहुंच गया था कि फ्रांसीसी कृषक-वर्ग की दुःखद गाथाओं की तुलना करना भी असम्भव था। कर पहले से भी अधिक बढ़ा दिये गये तथा पहले से अधिक असमान हो गए, कदाचरण के अवसर जैसे पहले मिला करते थे अब फिर आरम्भ हो गए तथा जो नये उद्योग कोल्बर्ट ने चलाये थे वे प्राय समाप्त हो गये। मुख्य बात यह है कि जो चीजें बचाकर रखी गई वे उसकी संहितायें, अध्यादेश, नियम और निरीक्षक थे जिन्हें लुई चौदहवें जैसे व्यक्ति की सरकार ही समझ सकती थी तथा उनका आदर कर सकती थी, परन्तु वह उस भावना और उपक्रमण को समझने में अयोग्य थी, जिससे कोल्बर्ट की योजनाओं को प्रेरणा मिली थी।

चर्च

लुई के निरंकुशतावाद का अध्ययन प्रथमतः फ्रांसीसी चर्च, द्वितीय पोप तथा तृतीय ह्यूजनों के प्रति उसके दृष्टिकोण से किया जा सकता है। उसके जानसेनिस्टों और क्वायटिस्टों के प्रति व्यवहार का वर्णन एक अन्य अध्याय में किया गया है।

गेलिकन प्रथा

उस समय के फ्रांसीसी चर्च की स्थिति को समझने के लिए यह बताना आवश्यक है कि फ्रांस में गेलिकन प्रथा का क्या अर्थ है। लीग के युद्धों में पोलीतिक दल ने अपनी मांगों में एक भाग बूर्ज की म्हान् प्रैग्मैटिक सैक्शन (1438) को पुनःस्थापित करने की रखी थी जो फ्रांसीसी धार्मिक स्वतन्त्रताओं का घोषणा-पत्र (मैग्ना कार्टा) थी जिसमें बेसल और कौंस्टैन्स की कौंसिलों में वर्णित प्रगतिपूर्ण सिद्धान्त समाविष्ट थे। पन्द्रहवीं शताब्दी के समाप्त होने से पूर्व फ्रासीसी राजा और पोप के बीच में बातचीत हो जाने से प्रेग्मेटिक सेक्शन का सौदा कर लिया गया परन्तु बोलोना के कन्कार्दा द्वारा (1516) इसे निश्चित रूप से रद्द कर दिया गया। परिणामस्वरूप पोप को दिये जाने वाले कई लगान फिर से लागू कर दिये गये। फ्रांसीसी प्रथम ने पादरी और बिशप मनोनीत करने का अधिकार प्राप्त कर लिया, यद्यपि बड़े गिरजों के पादरियों द्वारा निर्वाचन औपचारिक रूप से फिर भी चलता रहा। यद्यपि फ्रांस ने ट्रैन्ट की कौंसिल के मत-सम्बन्धी नियम स्वीकार कर लिए थे फिर भी सरकारी रूप से अनुशासनिक आज्ञायें सभी लागू नहीं की गई और इस तरह फ्रांस पर प्रति सुधार आन्दोलन का कोई प्रभाव नहीं पड़ा जैसा कि

पौलेण्ड पुर्तगाल और इटली के कुछ राज्यों पर पड़ा था जहाँ पुनर्जीवित पेपेसी के सम्पूर्ण दावे मान लिये गये थे और लागू कर दिये गये थे, फिर वे चाहे जैसुइटों या इंक्विजिशन द्वारा किये गये हों। अनेक बुद्धिमान फ्रांसीसीयों द्वारा सोलहवी शताब्दी के अन्त में यह व्यक्त किया गया कि फ्रांस में किसी दूरस्थ भूतकाल मे ऐतिहासिक युग में (जो किसी समय क्लोविस काल कहा जाता है) वैधानिक राजा के अधीन एक राष्ट्रीय चर्च – कैथोलिक किन्तु रोमन–रहा था और इसी धारणा पर यह तर्क दिया जाता था कि आध्यात्मिक मामलों के अतिरिरिक्त सब मामलों में फ्रांसीसी राजतन्त्र पेपेसी के नियंत्रण से स्वतन्त्र होना चाहिये।

गेलीकनवाद के तीन प्रकार

यहीं से धीरे धीरे गेलीकनवाद के तीन प्रकार आरम्भ हुए–ससदीय, धर्माध्यक्ष–सम्बन्धी और राजकीय। इनमें से प्रथम बहुत ही अधिक उग्र था तथा संघभेद पृथक करने से कम की बात स्वीकार करने को तैयार न था। दूसरा प्रकार सबसे अधिक अस्थिर था क्योंकि लान्रे का जमे[1] और म्यूक्स का बोसुए जैसे कुछ बिशप ऐसे सिद्धान्त का स्वागत करते थे जो व्यवहार में उनके अधिक्षेत्र को विदेशी मठों के अतिक्रमण से मुक्त करदे जिनका प्रधान कार्यालय रोम में था, तो भी बहुत से बिशप राजा और पोप के बीच में विभाजित मित्रता के पक्ष में थे। तृतीय अथवा राजकीय प्रकार इस दृष्टि से राजनीतिक था कि शायद ऐसे सिद्धान्तों के लागू होने पर राज्य के परमाधिकार बढ जायें। 17वीं शताब्दी के पूर्व भाग में गैलीकनवाद सैद्धान्तिक रूप से व्यापक रूप में स्वीकार कर लिया गया था लेकिन पेपेसी को चुनौती नहीं दी गई थी।[2] 'अपेल कोम दाब्यू' द्वारा कोई भी व्यक्ति जो धर्माध्यक्ष की कचहरी के निर्माण से या रोम से पुन: प्राप्त लेखपत्र के लागू होने के कारण पीड़ित था। ससद में अपील कर सकता था और उसकी आज्ञा को स्थगित करा सकता था। यह एक ऐसा विशेषाधिकार था जिसे प्रजा की स्वतंत्रता में पादरियों के हस्तक्षेप के विरुद्ध सबसे अधिक कारगर रक्षास्तम्भ समझा जाता था। जब यह स्वीकार किया जाता है कि 17वीं शताब्दी में पादरियों की पदोन्नति के निरीक्षण में पोप का केवल मामूली प्रभाव था तथा उसको फ्रांस से बहुत कम मालगुजारी मिलती थी और पेपेसी का फ्रांसीसी चर्च पर केवल इतना ही वास्तविक अधिकार था कि राज्य द्वारा मनोनीत बिशप पद और पदोन्नतियों की नियुक्तियों को वह पोप आज्ञा द्वारा प्रमाणित मात्र करता था। अत: यह स्पष्ट है कि गैलीकनवाद

---

1 देखिये अध्याय 8।

2 इन्सट्रक्शंस डोनोस (रोम) 2, परिचय, में 17 वीं शताब्दी के फ्रांस में गोलिकनवाद के सम्बन्ध में अच्छा विवरण दिया गया।

आन्दोलन भौतिक दुष्प्रयोगों के विरुद्ध न था, अपितु बौद्धिक पराधीनता का विरोध करता था जो उन तमाम दावों को स्वीकार करने मे उपलक्षित होता था जो कम से कम सिद्धान्त रूप में पेपेसी अपने अधिकार में रखती और उन्हें कार्यान्वित करती। परन्तु यद्यपि यह आन्दोलन भौतिक वस्तुओं मे सम्बद्ध न था तो भी यह बहुत प्रबल था। इसने कुछ बिशपों को अपने प्रदेशों का पुनर्गठन करने तथा पाखण्ड एव दुराचार सम्बन्धी शिकायतें स्वयं सुनने के लिए प्रेरित किया। राजा के इस ओर झुकाव का कारण यह था कि गैलिकनवाद राजा की परमाज्ञाओं को बढ़ाने के पक्ष में था और इसलिए इसने पार्लियामेन्ट को राजनैतिक कार्य करने के लिये फिर अनुप्राणित कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप 1792 में जैसुइटों को फ्रांस मे बाहर निकाल दिया गया। यह धर्मनिरपेक्ष और निरकुश राज्य की धारणा को विकसित करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण तत्व सिद्ध हुआ।

रिगेल

इस प्रकार जब लुई सिंहासनारूढ़ हुआ तो फ्रांस में एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसे लोगों का था जो फ्रांस के चर्च को राष्ट्रीय मानते थे, वे इसे समस्त ईसाई वर्ग का चर्च नहीं समझते थे और पोप को इसका अध्यक्ष न मान कर राजा को इसका अध्यक्ष मानते थे। शायद लुई फ्रांस के लिये वही करता जो हेनरी अष्टम ने इंगलैंड के लिए पहले ही कर दिया था। उसका विशेष कारण यह था कि अविग्नान जो पोप का महत्वपूर्ण अधिकृत प्रदेश था, फ्रांस के सन्निकट था जिसे फ्रांसीसी राज्य में कभी भी मिलाया जा सकता था। एक विशेष बात यह भी थी कि वे पोप जिनसे उसका कामकाज पड़ता था प्रायः कम योग्यता और सम्मानवाले व्यक्ति थे। लुई चौदहवें ने 1673 की घोषणा में गैलिकन सिद्धान्त को पहली बार निश्चित रूप से स्वीकार किया उसने रिगेल (regale) को सब देशों के लिए घोषित किया। केवल उन पादरी प्रदेशों को छूट दी गई जिन्होंने मूल्य चुका कर मुक्ति प्राप्त करली थी। रिगेल फ्रांसीसी राजाओं का पुराना विशेषाधिकार था जिसके अनुसार किसी पादरी के रिक्त स्थान की मालगुजारी राजा को दी जाती थी यह (ऐहिक रिगेल) (temporal regale) राजा को अधिकार था कि जब तक पादरी का कोई स्थान रिक्त हो तब तक बिशपरिक की आय के अन्तर्गत वह उस पर नियुक्ति कर सकता था। यह आध्यात्मिक रिगेल (spiritual regale) था। इस प्रकार का द्वैत रिगेल फ्रांस में सब जगह लागू नहीं था। लैंगुएडोक में बहुत से बिशप क्षेत्र इससे मुक्त थे और अन्य कई जगह मूल्य देकर मुक्ति खरीद ली गई थी। निसदेह 1673 की घोषणा कोल्बर्ट निर्मित कानून का एक अंश मात्र थी जिसका अभिप्राय अनियमितताओं और अपवादों को दूर करना था। किन्तु यह प्रश्न धन का न होकर सिद्धान्त का था। 17वीं शताब्दी में रिक्त बिशप-क्षेत्रों की मालगुजारी

सर्वदा आध्यात्मिक पादरियों के प्रदेशों के आवश्यक प्रशासन का खर्च चुकाने में लगाई जाती थी। 1673 में आध्यात्मिक रिगेल पर मुख्य आक्षेप यही था। इस विषय में कोई विशेष बात न उठती यदि पामिएर का कालेट और एलेट का पैविलां (दोनों लैंगुइडौक) दोनों विशप राजाज्ञा का दृढ़ निश्चय से विरोध न करते। इस विरोध को एक तथ्य ने और अधिक पेचीदा बना दिका। इन दोनों विशपों पर यह सदेह था कि वे जेन्सेनिस्टों से सहानुभूति रखते हैं, इन्हें जेन्सेनिस्टों का समर्थन भी प्राप्त था। इस प्रकार वे पादरियों के शासन-सम्बन्धी अधिकारों के पक्षपाती और धार्मिक नये परिवर्तनों के विरोधी थे।[1] इनोसेंट ग्यारहवें ने दोनों विशपों का पक्ष लिया और समझौता करने से इन्कार कर दिया, यद्यपि लुई ने 1682 में यह कह दिया था कि वह ट्रेन्ट की कौंसिल की अनुशासन-सम्बन्धी घोषणाओं को इस शर्त पर स्वीकार कर लेगा कि पेपेसी 1673 की घोषणा का अनुमोदन कर दे। इस विवाद का एक विशप की मृत्यु होने पर भी अन्त न हुआ। पामिएर का पादरी प्रदेश बिशप के प्रतिनिधि द्वारा प्रशासित था और उसने राजा द्वारा नियुक्त नगर-पादरियों के अधिकार के विरुद्ध झगड़ा खड़ा किया। जब इन्नोसेंट ने यह धमकी दी कि पामिएर के पादरी-प्रदेश में लुई द्वारा नियुक्त जो भी व्यक्ति वृत्ति लेगा उसे जाति से बहिष्कृत कर दिया जायेगा तो झगड़ा गम्भीर रूप धारण कर गया। क्या राजा को फ्रांसीसी चर्च की सम्पत्ति के संरक्षक के रूप में पादरियों की वृत्तियों पर योग्यता प्राप्त व्यक्तियों की नियुक्ति करने का अधिकार था अथवा यह परमाधिकार अन्ततः सदैव पोप का था ?

1682 की गैलिकन धारायें

फ्रांसीसी चर्च और पोप के पारस्परिक सम्बन्धों का यह समूचा प्रश्न अब दांव पर था। 1682 के आरम्भ में फ्रांसीसी पादरियों की सामान्य सभा में जो इसी उद्देश्य से बुलाई गई थी इस समस्या पर विचार-विमर्श किया गया। मुख्यतः बोसुए द्वारा उत्प्रेरित सभा ने गैलिकन धाराओं के सम्बन्ध में लुई की नीति की व्याख्या की। यह इस प्रकार थी:—

(1) धर्म-निरपेक्ष मामलो मे राजा धर्मोपदेशक पादरियों के अधिकार-क्षेत्र में नहीं हैं।

(2) आध्यात्मिक मामलों में पोप सर्वोच्च है किन्तु जो कौंस्टेंस की कौंसिल की घोषणाओं की वैधता का विरोध करते हैं फ्रांसीसी चर्च उनसे सहमत नहीं हैं।

---

1 जैसनीजम एवं गेलिकेनिज्म के आपसी सम्बन्धों के लिए देखिए अध्याय 8।

(3) गेलिकन चर्च और फ्रांस द्वारा अंगीकृत रीति-रिवाज एवं परम्परायें, नियम और चर्च के आदेश ऐसे नियम होंगे जो पोप और फ्रांस के पारस्परिक सबंध निर्देशित करेंगे।

(4) यद्यपि सिद्धान्त सम्बन्धी मामलों के निर्णय में पोप का मुख्य भाग होगा और यद्यपि उसकी घोषणाओं का समूचे चर्च से संबध होगा तो भी उसका निर्णय असशोधनीय नहीं होगा जब तक कि इसका अनुमोदन चर्च द्वारा न हो जाय।

गेलिकन धाराओं का महत्व

इन चारों में पहली धारा इतनी स्पष्ट है कि इसके विरोध की सम्भावना नहीं। दूसरी धारा नकारात्मक ढंग से, कौंस्टेंस की कौंसिल द्वारा कथित जनरल कौंसिलों की प्रमुखता के महत्वपूर्ण सिद्धान्त को पुनर्जीवित करती है। चर्च की घोषणाओं को मानने वालों ने इस सिद्धान्त को संदेहास्पद माना और पेपेसी ने इसे कभी स्वीकार नहीं किया। तीसरी धारा की रचना सम्भवत: जान-बूझ कर अस्पष्ट रखी गई क्योंकि "चर्च की घोषणायें" विधिशास्त्र की निश्चित धाराओं के रूप में थीं जबकि गेलिकन चर्च और फ्रांस द्वारा मान्यता प्राप्त रिवाज या नियम कौन से हैं, यह कोई नहीं बता सकता था। इसी प्रकार चोथी धारा का वाक्यांश-'सिद्धान्त-सम्बन्धी मामलो में मुख्य भाग" भी अस्पष्ट है और तार्किक दृष्टि से इसे दूसरी धारा मे निहित सिद्धान्त का परिणाम माना जा सकता है। आजकल तो इसे विधर्म माना जायेगा, किन्तु सत्रहवीं शताब्दी में इस विश्वास को कि पोप कभी गलती नहीं कर सकता, कट्टरता से लागू नहीं किया जाता था तथा बहुत से कैथोलिक तो इसे मानते भी नहीं थे। सक्षिप्त रूप में इन चारों धाराओं का तत्व यह है कि पहली केवल विवादास्पद थी, दूसरी प्राचीन क्रांतिकारी सिद्धान्त को अप्रत्यक्ष रूप से पुनर्जीवित करती थी, तीसरी ने विवाद में एक नई बात जोड़ दी— "गेलिकन चर्च और फ्रांस द्वारा मान्यता प्राप्त रिवाज और नियम," और चौथी-धारा द्वारा उस कट्टर सिद्धान्त को मानने से निश्चित रूप से इन्कार कर दिया गया जिसके विषय में उस समय कैथोलिको में मतैक्य न था। सामूहिक रूप में यह कहा जा सकता है कि चौथी धारा सबसे महत्वपूर्ण थी, क्योंकि यह सबसे कम अनिश्चित थी, इस धारा को स्वीकार करने से पोप की वे तमाम घोषणायें फ्रांस में निरर्थक हो गईं जिनका अनुमोदन फ्रांसीसी पादरियों की सभा—अर्थात् लुई चौदहवें—नहीं करती थी।

इन्नोसेंट ग्यारहवें से संघर्ष

बोसुए को आशा थी कि रोम इन चारों गेलिकन धाराओं को स्वीकृति प्रदान करेगा, किन्तु उसे निराश होना पड़ा। इन्नोसेंट ग्यारहवें ने उन तमाम

पादरियों को जिन्होंने 1682 की सभा में भाग लिया था और जिन्हें बाद में राजा ने बिशप पदों या पादरी-वृत्तियों पर मनोनित किया था, नियुक्त करने की घोषणा करने से इन्कार करके विवाद को और भी गम्भीर बना दिया। लुई ने इस के जवाब मे बिशप पदो के ऐसे मनोनीत व्यक्तियो के पक्ष में पोप की घोषणा (bulls) मांगने से इन्कार कर दिया जो सभा में सम्मिलित नही हुए थे। और यदि यह विवाद बढ़ता जाता तो इसके फलस्वरूप फ्रांस में घोषणाओं द्वारा नियक्त कोई बिशप ही न रहते।[1] फ्रासीसी जैसुइटो तक ने लुई का पक्ष लिया यद्यपि उन्होंने उसका पक्ष सम्भवत. इसलिए लिया हो क्योंकि यह सब विदित था कि इन्नोसेंट ग्यारहवा उनके पक्ष को पसन्द नहीं करता था। यद्यपि बोसुए ने उन धाराओं के पक्ष मे अपनी लेखनी उठाई तो भी लुई की धार्मिक आस्थाओ ने उसे चैन से नही बैठने दिया। और अन्त मे उसे मदाम द मन्तेनान के कन्फेसर (confessor) के पक्ष मे पोप की घोषणा कराने के लिय मना लिया गया जिसे उसने शार्त्रे के बिशप पद के लिए मनोनीत किया था। 1693 तक झगड़े की गम्भीर स्थिति को पार कर लिया गया और सभा ने एक सरकारी पत्र में पोप को स्पष्टतया लिख दिया कि वह पोप के धर्म-सम्बन्धी परमाधिकारो से मेल न खाने वाली किसी भी बात को अनकही मानेगी। लुई ने स्वय भी यह स्पष्ट कर दिया कि धाराओं का हठधर्मी से पालन नही किया जायेगा और इसके बदले में पोप ने फ्रांस में रिगेल को भविष्य में चालू रखने की स्वीकृति देदी। इस प्रकार लुई ने प्रारम्भिक स्तर पर विजय प्राप्त करली और गेलिकन धाराओ को भी औपचारिक रूप से समाप्त नही किया। वर्तमान की भाति उन दिनो भी यह स्वीकार किया जाता था कि किसी कानून को समाप्त करने के लिये जिस विधायी स्वीकृति की आवश्यकता है, वह कानून बनाने वाली विधायनी शक्ति के कम से कम बराबर अवश्य हो और लुई यह बात भली प्रकार जानता था कि फ्रांसीसी पादरियों की सभा द्वारा पारित और पार्लियामेंट द्वारा रजिस्टर की हुई किसी घोषणा को उसका पत्र समाप्त नहीं कर सकता था।[2] फ्रांसीसी गेलिकनवाद केवल अपनी शक्ति की जांच कर रहा था। वास्तविक मतभेद 1713 तक टलते रहे जबकि पोप की घोषणा युनिजेनिटस (Unigenitus)[3] के प्रकाशन से ऐसी शक्तियां सामने आई जिन्हें लुई भी नियंत्रित न कर सका।

---

1 इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार मेनशन कृत डोक्यूमेंट्स रिलेटिफिस दभ कलंजी एवक ला रोये ते (1682–1705) में उपलब्ध है। इस विषय का सम्पूर्ण विवरण मिकाड़ कृत लुई 14 एवं इन्नासेंट ग्यारहवें मे पाया जाता है।

2 इसके लिए देखिये इन्सट्रक्शंस डोनीज (रोम), 2 परिचय।

3 देखिये अध्याय 8।

ड्यक दक्रेक्वी के मामले

पेपेसी और राजा के पारस्परिक झगड़े का केवल मात्र कारण गेलिकनवाद ही न था। लुई के लम्बे राज्यकाल में कुछ ऐसी घटनायें हुई जो यद्यपि थीं तो साधारण किन्तु जिनके कारण चर्च से अलगाव होता गया। इनमें से एक[1] 1662 में घटित हुई जो रोम स्थित फ्रांसीसी राजदूत ड्यूक द क्रेक्वी और पोप अलेग्जेंडर सप्तम के बीच राजदूतो के स्वाधिकार सम्बन्धी प्रश्न को लेकर उत्पन्न हुई। उग्र और हठी स्वभाव वाले क्रेक्वी ने रोम–स्थित राजदूत के स्वाधिकारों में असीमित वृद्धि करने की जिद्ध करके यह विवाद अनिवार्य कर दिया। इसका प्रभाव यह पड़ा कि न केवल फानेस पलाजो का दूतावास बल्कि उसके आसपास के जिले का भाग भी पोप की पुलिस के अधिकार क्षेत्र से निकल गया। इस प्रकार अवांछनीय व्यक्ति जिन्होंने फ्रांसीसी दूतावास से आज्ञा-पत्र प्राप्त कर लिये, निर्बाध रूप से गम्भीर अपराध करने लगे। क्रेक्वी के आने के बाद जल्दी ही रोम की गलियों में इतने दगे होने लगे कि पेपेसी को कोर्सिकन सिपाहियो की संख्या में वृद्धि करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इन झगड़ों को बढ़ाने के लिए राजदूत के लवाजमे तथा कोर्सिकन सिपाहियो में थोडी सी झड़प होने की आवश्यकता थी। पोप अलेग्जेंडर के भतीजे डान मेरियो को यह दुःख था कि राजदूत उसके पास राजकीय स्तर पर भेंट करने के लिये नहीं आया। इसलिय उसने कौर्सिकनों को दूतावास के अन्दर भेज दिया जिसके जाने से राजदूत के कर्मचारी बहुत प्रसन्न हुए। यह चुनौती फिर दोहराई गई और 20 अगस्त 1662 को दूतावास को तीन घण्टे तक घेरे में रखा गया। परिणामस्वरूप कुछ व्यक्तियों की मृत्यु हो गई तथा पूजा से लौटती हुई राजदूत की पत्नी को गाड़ी से उतार लिया गया। चूंकि वैटिकन ने इस उपद्रव के लिय क्षमा नही मागी इसलिये दिसम्बर के आरम्भ में क्रेक्वी रोम छोड़ कर चला गया। उसी समय पोप के नन्शिओं को फ्रांस से निकाल दिया गया। इधर लुई द्वारा अविग्नोन पर अधिकार करने के लिये सेनाये भेजने पर ही अलेग्जेण्डर झुका। परि–णामस्वरूप 12 फरवरी को पीसा-शांति-सन्धि पर हस्ताक्षर हुए। अविग्नान वापिस कर दिया गया और पोप की ओर से मांगी गई क्षमा-याचना को स्वीकार कर लिया गया। वेटिकन का गर्व चूर करने और फ्रास के ताज का अपमान करने की स्मृति में रोम की कौर्सिकन बस्ती में एक सूच्याकार स्तम्भ स्थापित किया गया जो बाद में फ्रांस द्वारा रियायत दिये जाने के रूप में हटा दिया गया। लुई और पोप के मध्य यही सबसे बड़ा वैयक्तिक संघर्ष था।

---

1 इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण गेरीन कृत लुइ 14 एतले सेन्ट सीज, 1,283–419 में उपलब्ध है।

वेटिकन में फ्रांसीसी प्रभाव

अलेग्जेण्डर की धर्माध्यक्षता में और भी कई झगड़े थे,[1] किन्तु इनमें किसी विशेष सिद्धान्त की उलझन न थी और वे बातचीत द्वारा सुलझा लिये गये थे। अब वेटिकन में स्पेन के स्थान पर फ्रांस का प्रभाव हो गया था और इन चुनावों में क्लीमेंट नवम, क्लीमेंट दशम और इनोसेंट ग्यारहवां फ्रांस के पक्ष में थे। आगामी वर्षों में लुई ने धार्मिक कट्टरता के पक्ष में अत्यधिक उत्साह दिखाया और 1713 तक उसने गैलिकनों की 1682 वाली स्थिति को त्याग दिया एवं पोप व उसके धर्म में असीम निष्ठा रखने लगा।

ह्यूजनो

टेन[2] ने सन् 1873 में यह मत प्रकट किया था कि यदि फ्रांस में सेंट बार्थोलोम्यू का हत्याकाण्ड और नान्ते की घोषणा का खण्डन न होता तो 19वींशताब्दी तक वहां एक उदार और संसदीय सरकार स्थापित हो जाती। राज्य के मूलभूत कानून का उल्लंघन तथा हेनरी चतुर्थ के राज्य की अत्यन्त उल्लेखनीय सफलता को समाप्त कर देना लुई की निरंकुशता की पराकाष्ठा थी चाहे इतिहासकार इस कलंक का कारण फ्रांसीसी चर्च या जैसुइटों या लूवाय या मदाम द मेन्तेनान को बताये। व्यक्ति विशेष अथवा किसी सस्था का पक्ष लेने के इच्छुक तथ्यों को तोड़मोड़ कर पेश करने वाले लोग सम्भवतः यह स्पष्ट करने की चेष्टा भी करें कि ह्यूजनों खतरनाक एवं राजद्रोही थे किन्तु लुई के सलाहकार कोई भी क्यों न हो, उसे इतिहास निर्णायकों के समक्ष उस कार्य का पूरा उत्तरदायित्व लेना होगा जो उसकी मनोवृति का प्रबलतम लक्षण था। कभी-कभी फिलिप द्वितीय एवं तृतीय की अविचल कट्टरता को युग की विचारधारा की विषम परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए क्षमा किया जा सकता है, लेकिन उसके उत्तराधिकारी लुई के सम्बन्ध में इस प्रकार का तर्क नही दिया जा सकता क्योंकि सन् 1629 से ही ह्यूजनों ने राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना बन्द कर दिया था। फ्रांडे के संघर्ष में वे अपनी वफादारी के लिये विशिष्ट समझे जाते थे, उन्होंने कई प्रमुख समाजसेवी व्यक्ति पैदा किए थे तथा वे समाज के अत्यन्त परिश्रमी एवं उद्यमशाली वर्ग में समझे जाते थे तथा उन्हें एक कानून द्वारा जिसे बार बार दृढ़ किया गया, सरक्षण दिया गया था जिसे व्यावहारिक रूप में अखण्डनीय समझा जाता था। इसके अतिरिक्त 1685 में जनमत पहले की अपेक्षा बदल चुका था जिसने पूर्वशताब्दी में मोरि-

---

1 देखिये चैटलोज लिखित, ल कार्डिनल द रेटज एतसेस मिशंस डिप्लौमेटिक रोम।

2 जुर्नल दे देबात, नवम्बर 23,1873।

स्कोस के निष्कासन को क्षमा किया था, क्योंकि धार्मिक युद्धों का युग अब समाप्त हो चुका था[1]। अब राष्ट्र धीरे-धीरे अनुभव करने लगे थे कि कर देने वाली जनता को निष्कासित करने की अपेक्षा देश में रखना अधिक अच्छा है। विज्ञान की तार्किक प्रगति के साथ साथ विश्व-सम्बन्धी दृष्टिकोण की संकीर्णता कम होती जा रही थी तथा धर्म को झगड़ों तथा बलिदानों से पृथक रखने की विचारधारा का आरम्भ हो गया था। उस काल में एक ऐसे समाज की कल्पना साकार होती जा रही थी जिसमे सम्पूर्ण राज्य में एक ही धार्मिक सिद्धान्त की मान्यता के आदर्श के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही थी और जो कुछ धार्मिक सिद्धान्तों के पालन कराने के साथ साथ अध्यात्म ज्ञान सम्बन्धी प्रश्नों में व्यक्ति को आंशिक स्वतन्त्रता देने के पक्ष में थी। लुई ने अतीत की एक निकृष्टतम प्रथा को इस आशा से पुनः प्रचलित किया कि धर्म परायणता के इस प्रदर्शन से उसकी अपनी अनियमिततायें ढक जायेंगी और उस देवता को भी मना लिया जायेगा जो जीवन के प्रति उसके दृष्टि-कोण से साम्य रखने वाला समझा जाता था।

ह्यू जनों के विरूद्ध अभियान

सन् 1655 में पहली बार फ्रांसीसी ह्यू जनों के लिए खतरा उत्पन्न हुआ। उस वर्ष में आयोजित फ्रांसीसी पादरियों की सामान्य सभा में रहीम्स के आर्कबिशप हेनरी द गोन्ड्रिन ने यह मांग की कि नान्ते की राजघोषणा का वैधानिक रूप से स्पष्टीकरण किया जाये। इस मांग के परिणामस्वरूप जब वकीलों एवं वेदान्तियो की एक बैठक उस घोषणा के परीक्षण हेतु बुलाई गई जो अर्ध शताब्दी से भी अधिक समय से संतोषपूर्ण ढंग से अमल में लाई जा रही थी तो इनके हाथों में यह छिन्न भिन्न हो गई[2] सन् 1665 में लुई को राज घोषणा की 'व्याख्या' फिर से करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार कर लिया गया। यद्यपि यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि उसे यह कार्य करने के लिए किसने तैयार किया परन्तु कानून के स्पष्टीकरण के विचार से फ्रांसीसी पादरियों से उसने यह प्रतिज्ञा की कि वह

---

1 देखिये अध्याय 9।

2 पी मेनीर, **ल एक्जीक्यशन द ल इडिट द नान तेज दास ला बास लेगयूडोक** एसकोबर के **थियोलोजिआ मोरेलिस** ग्रन्थ से ऐसे तर्क उदधृत किये जा सकते हैं जो इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि एक युवराज को विधि उलंघन का अधिकार था यदि इस प्रकार वह किसी सभावित दुर्घटना को उपेक्षित कर सके (प्रैंसिसो स्केनडेलो, नान टेनेटूर एक एकजामेन एक, अध्याय 5, क्वेस्ट 32) देखिये अध्याय 8, पोवस एत सेबेटियर कृत, **एट्यूडस सुरला सिवोकेशत द ला इडिट द नान्तेज**।

उनकी उन सभी बातों को स्वीकृति दे देगा चाहे वैधिक दृष्टि से वे पूर्णतया न्याय-संगत भी न हों। अतः आरोपित उल्लंघनों को जांचने के लिए आयोग के सदस्य नियुक्त किये गये, फ्रांस के ग्रन्थ-रक्षागार इस बात के पूर्णसाक्षी हैं कि ह्यूजनों के जीवन को असहाय बनाने और उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता को नियंत्रित करने केलिए कितना छल कपट किया गया।[1] अतः राजघोषणा की 9 वीं धारा के अनुसार इन्हें अपना धर्म उन्हीं स्थानों पर मनाने की अनुमति दी गई जहां वे 1596 और 1597 में मनाया करते थे। तत्पश्चात बने सब पूजाग्रह अवैधानिक होंगे और गिरा दिये जायेंगे। घोषणा द्वारा यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि तमाम सैनिक व असैनिक पद ह्यूजनों के लिये खुले थे किन्तु ऐसा कोई स्पष्ट कानून नहीं था जो ह्यूजनों को ऐसे पदों पर नियुक्ति का अधिकार देता हो, इसलिये उन्हें ऐसे सभी पदों से हटा देना चाहिये। कानून में प्रोटेस्टेन्टों को दिन में दफनाने के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा गया था। इसलिए उन्हें यह क्रिया रात में ही करनी होगी। राज-घोषणा पतित व अनैतिक प्रौढ़ों के प्रति थी किन्तु उनके बच्चों को कैथोलिक धर्म में परिवर्तित करने पर किसी प्रकार की कानूनी बाधा न थी, चाहे किसी भी तरह उन्हें कैथोलिक धर्मावलम्बी क्यों न बना लिया जावे। 1666 के पश्चात इस प्रकार के तर्क ह्यूजनों क्षेत्रीय प्रान्तों में अधिकारी वर्ग और धर्म-प्रचारकों के द्वारा प्रचारित किये गये। लुई ने उस वर्ष अप्रेल में एक घोषणा प्रकाशित की जिसमें ह्यूजनों द्वारा अब तक उपयोग में लाई जाने वाली कुछ सुविधाओं का वर्णन किया जो व्यापक जांच के पश्चात् अन्यायपूर्ण पाई गई थीं। यह घोषित किया गया कि राज-घोषणा की व्याख्या करके उसे कठोरता से लागू किया जाये। कएन का दु बास्क वार्साय को एक विरोध-पत्र लेकर गया और उसने उन तरीको के प्रभाव को पूर्णतया स्पष्ट किया जो फ्रांसीसी पादरी उस पर जबरदस्ती लगा रहे थे। किन्तु उसका विरोध निष्फल रहा और पादरी लोग लुई पर छोटे छोटे उपद्रवों तथा सामान्य हस्तक्षेप पर दण्ड दे देने के लिए दबाव डालते रहे। ये दण्ड निष्कासन करने से भी बदतर थे, क्योंकि इस प्रकार आयुक्त और प्रचारक बच्चों को तंग करके अप्रत्यक्ष रूप से उनके माता-पिता पर प्रहार करते थे। 1681 की घोषणा द्वारा ह्यूजनों पर अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेशों में भेजने पर रोक लगा दी गई और उनके विवेक की आयु 7 वर्ष निश्चित करदी[2] अर्थात् उत्साही कैथोलिक एजेन्टों से घिरा हुआ 7 वर्षीय ह्यूजनों बालक अपने लिए स्वतन्त्रतापूर्वक धर्म स्वीकार कर सकता था। यदि कोई प्रोटेस्टेन्ट माता–पिता अपने बच्चे का

1 देखिए पी जेचन, **क्यूलिक्स प्रिलिमेनीरीज द ला रिवोकेशन द ल इडिट द नानतेज एन लैंगयुएडोक** (1661–1685)।

2 पाक्स एत सेबेटियर, एट्यूडस रिवोकेशन द ल इडिट द नान्ते, ·59।

पुनधर्म परिवर्तन करना चाहे तो इसे महान् अपराध समझा जाता था और उसे कारावास अथवा मृत्यु-दण्ड दिया जा सकता था।

धर्म-परिवर्तन-विभाग

ह्यूजनों को जीतने के लिए कई अन्य तथा कपटपूर्ण तरीके अपनाये गये। सन् 1676 में एक फण्ड खोला गया जिसमें से धर्म त्याग करने वाले प्रोटेस्टेन्टों को पुरस्कृत किया जा सकता था। यह फण्ड कैथोलिक धर्म परिवर्तित पेलिसाँ नामक व्यक्ति द्वारा प्रशासित था। हर धर्म परिवर्तन करने वाले के लिए 6 से 12 लीव्र तक इनाम दिया जाता था। परन्तु शर्त यह थी कि धर्म-त्याग का आवश्यक प्रमाण-पत्र वह साथ लावें। प्रोटेस्टेन्टों ने ठीक वैसा ही प्रत्युत्तर दिया। एक धनी ह्यूजनी महिला मदाम हरवएत ने धर्म परिवर्तन का एक प्रतिद्वन्दी केन्द्र बनाया जो निर्बल सदस्यों को पुनः धर्म में लौटा सके। यद्यपि इस तरह बार बार धर्म परिवर्तन करना भी व्यवसाय बन गया, परन्तु बहुत ही कम लोग इस तरह के प्रभाव में आये, परन्तु धर्मान्ध लोग इस प्रकार के फण्डों को इस आशा से बढ़ाते रहे कि आध्यात्मिक लाभ होगा।[1] इन तरीकों के असफल होने पर शक्ति का प्रयोग अनिवार्य हो उठा।

नान्ते की राज-घोषणा का खण्डन (अक्तूबर 1685)

सन् 1682 के बाद नांते की राज-घोषणा की 'व्याख्या' अधिकाधिक कठोर होती गई।[2] ह्यूजनों का किसी भी सरकारी पद पर रहना दुःसाध्य कर दिया गया और आर्थिक दृष्टि से उन्हें पंगु बना दिया गया। लैंग्वेडोक में पुरानी सुविधाओं को प्राप्त करने के पुनःप्रयास का कठोरता से दमन किया गया यहां तक कि भग्न मन्दिरों के खण्डहरों में पूजा निषिद्ध करदी गई। 1684 में व्यथित प्रोटेस्टेन्टों ने जो अब भी स्वामिभक्त थे और विश्वास करते थे कि लुई को उसके दरबारियों और पादरियों द्वारा धोखे में रखा जाता है अपने अग्रणी पादरी क्लाड द्वारा तैयार किया गया एक आवेदन-पत्र राजा के सम्मुख रखा जिसमें जोरदार शब्दों से सहिष्णुता के लिए नम्र निवेदन किया गया और राजा को स्मरण कराया गया था कि उसके पूर्वजों ने उस घोषणा को पूर्णतया निभाया था। इसका प्रतिरोध फ्रांसीसी

---

1 1676 में लुई ने बड़ी भारी मात्रा में पेलिसन फंड में योगदान दिया। (चेवरस द लुई 14, संग्रोविले, 6, 357) धर्म परिवर्तन करने वाले व्यक्ति को 6 लिव्र दिये जाते थे। (अंगरेजी मुद्रा में यह लगभग **12** शि. 6 पें. के बराबर होता है।)

2 राजघोषणा के खंडन करने से पूर्व एवं परवर्ती घटनाओं का विवरण ई. गुईटार्ड कृत कोलबर्ट एत सिगनेले कोन्वे ला रिलिजन रिफोरमों में उपलब्ध है।

पादरियों की सामान्य सभा [1] द्वारा प्रेषित आवेदन-पत्र में किया गया कि नान्ते की राज-घोषणा की बहुत सी धारायें अनियमित पाई गईं। इसलिए इसे पूर्णरूप से वापिस ले लेना चाहिये और (उन्ही के शब्दों में) 'फ्रांस मे ईसामसीहका निर्विघ्न राज्य पुनः स्थापित होजाना चाहिये।' वार्साय मे यह समझा जाता था कि राक्षसों ने पहले ही ऐसा राज्य स्थापित कर रखा था। जब ह्यूजनों जिलों में सामूहिक धर्मपरिवर्तन के समाचार आये तो लुई को अपनी नीति मे पूरा विश्वास हो गया कि शक्ति प्रयोग न्यायसगत था। फ्रांसीसी गांवो में वे दृश्य फिर से नजर आने लगे जो तीस वर्षीय युद्ध के समय के बाद यूरोप मे दृष्टिगोचर नहीं हुए थे।[2] अपने आश्रितों के प्रति चिन्ता और दुःखो से पीडित हजारों प्रोटेस्टेन्टों से जबरदस्ती धर्म-त्याग की शपथ ग्रहण करवाई गई। एक घोषणा द्वारा 17 अक्टूबर 1685 को नान्ते की घोषणा का पूर्ण रूप से खण्डन कर दिया गया जिसमें यह तथ्य अभिलिखित है कि इसका मूल अभिप्राय नास्तिको को अपनी ओर मिलाना था और अब जब कि यह कार्य सम्पन्न हो चुका है यह राजघोषणा व्यर्थ है। यद्यपि ह्यूजनों को देश-निष्कासन की आज्ञा नहीं दी गई, किन्तु उनके पंथ को पूर्णतः वर्जित घोषित कर दिया गया और उनके विदेश-गमन पर रोक लगा दी गई।

खण्डन का उत्तरदायित्व

बहुत से प्रोटेस्टेन्ट परिवारों ने 1685 के पूर्व ही फ्रांस छोड़ दिया था। आजीवन कारावास के भय से बहुसंख्यक लोग खण्डन[3] के पश्चात् बच कर भाग गये। खण्डन के विनाशकारी आर्थिक परिणामों पर पहले ही विचार किया जा चुका है।[4] इस प्रकार एक विशाल और कार्य-व्यस्त सम्प्रदाय उखड़जाने से जो व्यक्तिगत कष्ट हुए उनका कोई अभिलेखन नहीं है। फ्रांसीसी पादरियों की विजय हुई। प्रतिस्पर्धी चर्च को उन्होने नष्ट कर दिया और अब उन्होंने लुई की इतनी प्रसंशा की जितनी कि बोसुए (Bossuet) की लेखनी कर सकती थी। उन्होंने पहल की, लुई ने स्वीकृति दी, लूवाय ने उसे क्रियान्वित किया। तीनों ने उस पाप में साझेदारी की जो धार्मिक हठधर्मी के मलिन कृत्यों के अभिलेखों में भी प्रमुख है।

होबरयू

न्यायालय (The Court)

लुई चौदहवां फ्रांडे द्वारा सिखाया गया पाठ कभी नही भूला इसमे उसके

---

1 गुईटाई, पूर्व उद्धृत, अध्याय 3।

2 वही, अध्याय 5।

3 वही, अध्याय 7। यह विदेश गमन 1669 से 1690 तक चलता रहा।

4 देखिए अध्याय 7।

राज्य सम्बन्धी सिद्धान्त को सम्भवतः बल भी मिला होगा। वासयि में कुलीन-वर्ग को अलग कर दिया गया और उन्हें शक्तिहीन बना दिया गया। इसी प्रकार का प्रभावशाली व्यावहार उन लोगों के साथ किया गया जो निर्धन थे अथवा राजा के आगे जी हुजूरी करने वाले न थे। लूई ने अपने राज्यकाल के प्रारम्भ में ऐसे देहाती लोगों के विरूद्ध शिकायतों का फैसला करने के लिये विशेष न्यायाधिकरण नियुक्त किये जो वर्ष भर अपनी जागीरों में ही अपनी जीविका अर्जित करते थे और उनमें से बहुत से व्यक्ति अपने किसानों के साथ दुर्व्यवहार करते थे। इन न्यायाधिकरणों में ग्रान्द जूर दावर्न (Grand Jours d' Auvergne) (1665–1666) सबसे प्रसिद्ध था। यह संसद के सोलह सदस्यों का एक असाधारण राजकीय आयोग था जिसका अध्यक्ष महाधिवक्ता ओमर टेलोन था। यह आयोग आवर्न निवर्ने (Nivernais), फोरेज (Forez), बियोजोले (Beaujolais), लियोने (Lyounais) और बेरी (Berry) के प्रान्तों में न्याय के अनुचित प्रयोग के विरूद्ध कड़ी जांच करने के लिये आवर्न में क्लरमोण्ट के स्थान पर बैठता था। इसकी कार्यवाही का लेखा जोखा यह प्रदर्शित करता है, कि प्रान्तीय न्याय से अनियन्त्रित कुलीन वर्ग असहाय किसानों को किस प्रकार शिकजे में जकड़े हुए था तथा उसे किसानों के समूचे जीवन पर पूरा अधिकार दिया गया था। उन लोगों में ऐसे व्यक्ति भी होते थे जो निर्दयता के घोरतम कार्य करने से भी हिचकने वाले न थे। बहुत से व्यक्ति जो इस आयोग के सम्मुख पेश किये गये, कत्ल या हिंसक डकैती के अपराधी थे। कुछ पर तो बुरी तरह से अत्याचार किये गये थे उदाहरणतः एक कुलीन के विरुद्ध यह सिद्ध किया गया कि उसने अपने किसानों को एक ऐसी काल कोठरी में बन्द कर दिया जिसमें वे न खड़े हो सकते थे और न लेट सकते थे और अन्त में मृत्यु ने उन्हें इस कष्ट से छुटकारा दिलाया।[1]

ग्रान्द जूर ने अनेकों को मृत्युदण्ड दिया और यद्यपि वैयक्तिक प्रभाव के कारण प्रायः इन आदेशों का पालन न हुआ तो भी इस चेतावनी का पूरा प्रभाव हुआ तथा किसानों को भविष्य में अपने जीवन की अधिक सुरक्षा प्राप्त हुई।

शाही अधिकारी

प्रशासनिक पदों के अतिरिक्त भी कुछ ऐसे नाममात्रिक पद थे जिनका कुलीन-वर्ग जन्म से ठेकेदार होता था। इनमें ग्रांड चैम्बरलेन का पद था जो राजदूतों से भेंट

---

1 इस संबंध में विस्तृत विवरण वी. ई. फ्लेचर कृत **मेमायर्स सुर लेस ग्रांडस जोर्स द ओवर्गने** (1665) में उपलब्ध है। यह ग्रन्थ 1856 में चैरुल द्वारा पुनः मुद्रित किया गया था। फ्लेचर की यह पुस्तक फ्रांसीसी कुलीन द्वारा किये गये अत्याचारों का बहुत ही रोचक वर्णन प्रस्तुत करती है।

करने के अवसर पर राजा के साथ रहता था राजा के जागने पर उसे कमीज देता था और मृत्यु होने पर कफन में बांधता था, वस्त्र भंडारी (master of wardrobe) का पद कार्य शब्दार्थ से ही स्पष्ट हो जाता है, ग्रांड इक्युयर (Grand Ecuyer) अस्तबल अध्यक्ष होता था। इनमे बहुत छोटे पदों के लिये फ्राँसीसी कुलीन वर्ग आपस में झगड़ता था। दम्भी सेट साइमन किसी भी कौटुम्बिक पद पर नियुक्ति प्राप्त करने की शांतिपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा, क्योंकि इस प्रकार की नियुक्ति से उसे अन्तःपुर में स्थान मिल सकता था। लुई समझता था कि इस प्रकार की सामाजिक जाति को निर्बल बनाने का यही तरीका था कि उस जाति के सदस्यों की सख्या ऐसे व्यक्ति सम्मिलित करके बढा दी जायं जो उसी जाति के होने का दावा करें। फलतः इस काल में अनकों व्यक्तियों को कुलीन वर्ग मे सम्मिलित होने का अधिकार बेचा गया। इस दृष्टि से कि नोब्लेस देंपी (Noblesse d' epee) के लिये नोब्लेस द रोब (Noblerre de robe) एक उपयुक्त प्रशसनीय उपहार भी था। यह बात आश्चर्यजनक नहीं कि जनमत रोटियर श्रेणी में सम्मिलित होने को अपमानजनक और इससे बाहर रहने को ओछा सम्मान समझने लगा। अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक लगभग 4000 एसे पद थे जिनमें से प्रत्येक कुलीनता का अधिकार प्रदान करता था। सन् 1704 की घोषणा द्वारा नोबलेस द रोब को वशानुगत कुलीनता का अधिकार दे दिया गया, केवल 1694 के एक वर्ष में ही 500 लोगों को कुलीन-वर्ग में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार 1789 की क्राति के समय के कुलीन-वर्ग की रचना फ्रांडे के कुलीन वर्ग से बहुत भिन्न थी। कुलीन वर्ग का लुई के पूर्णतः अधीन होने का एक प्रमाण यह तथ्य भी है कि उसके राज्य में कुलीनों के नेतृत्व में केवल एक विद्रोह–रोहन का विद्रोह हुआ। उसने लुबोयस के प्रति घृणा से उत्तेजित और अपने कर्ज अदा करने के लिए बाध्य होकर 1674 में डचों को किग्ल बोउफ (Qiulle beouf) बेचने की चेष्टा की और इस विद्रोह के कारण उसे और उसके साथियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

वर्साय

वर्साय कुलीन वर्ग के निवास का केन्द्र था, जहां ये वर्ग आलस्य और शिकार खेलने की आदत के कारण पतित हो गया था। लुई वार्साय के देहाती आवास को ग्रीष्मकालीन निवास स्थान के रूप में बचपन से जानता था,[1] 1660 के बाद वह वहां अक्सर जाने लगा। वहा का बड़ा उद्यान उन खेलों और क्रीडाओं के लिये बहुत उपयुक्त स्थान था जिनसे वह युवक राजा मदाम–द–मोटेंस्पन का सत्कार

1 लुई 14 के वर्साइल के सम्बन्ध में भारी मात्रा में साहित्य उपलब्ध है। देखिये फेनेक्रेस्क कृत, वर्सायसरोयल।

करना चाहता था। 1669 में वहां भवन के पुन निर्माण का कार्य आरम्भ हुआ और जो महल आज विद्यमान है वह 1710 में बनकर पूरा हुआ। वर्साइल का लघुरूप ट्रिएनन (Trianon) 1688 में तैयार हो गया था और विशेष रूप मे मदाम–द–मोण्टेस्पन के लिये बनवाया गया था। किन्तु जब लुई इससे ऊब गया तो उसने मार्ली (Marly) में एक और महल बनवाना आरम्भ किया। इन तीनों ने उस योजना की पूर्ति करदी जो धीरे धीरे विकसित हुई थी। वर्साय, दरबार के लिये, राजा के मित्रों के निवास के लिये मार्ली और ट्रिएनन स्वयं राजा के लिये निश्चित हुए, इन तीनों में पहला और तीसरा आज भी इस राज्य की शिल्प स्मृति के रूप मे विद्यमान है। इन इमारतों पर लगभग 116,000,000 लिव्र व्यय हुआ, किन्तु इससे भी गम्भीर थी वह हानि जो मनुष्यों के मरने से हुई। उस युग के लोगों को फव्वारों और जल जीवों के लिये जलाशयों की सनक सवार थी इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये इयुर नदी को मोड़ने के लिये 30,000 मनुष्य काम में लगे थे। खुदाई का कार्य करते हुए बहुत से मजदूर सम्भवतः मलेरिया से मर गये। अन्त में इयुर के पानी का उपयोग करने की योजना त्याग दी गई और वर्साइल की झील सीन नदी के पानी से मार्ली के पम्पों द्वारा भरी गई। 1682 में वर्साइल, लुई चौदहवें का राजकीय मुख्यालय हो गया, उस दिन से फ्रांस के राजा ने कृत्रिम एकान्त के कारण फ्रांसीसी जनता से उस समय तक सम्पर्क नहीं किया जब तक कि 1709 में भीड़ फाटक तोड़ कर अन्दर नहीं घुस आई।

लुई चौदहवें का चरित्र

लुई चौदहवें की मानसिक व शारीरिक विशेषतायें विशाल और प्रतापी दरबार के नेतृत्व के लिये बहुत उपयुक्त थीं। उसका व्यक्तित्व महान् व प्रतापी था और उसकी उपस्थिति एवं व्यवहार कौशल से ही लोग उसको बरबस सम्मान देते थे, अपरिचितों से वह सदा मृदु एवं नम्रता का व्यवहार करता था।[1] यद्यपि उसने अपनी स्पेनी माता से आलसीपन की कुछ मनोवृति प्राप्त की थी, फिर भी वह परिश्रमी और चैतन्य रहने वाला था। उसकी स्मरण शक्ति अच्छी थी वह कला के कार्यों मे कुछ रुचि लेता था और सदैव अपने आदेशों के परिपालन पर जोर देता था। वह कभी नहीं भूलता था कि वह राजा है इसलिये उसे अपने सम्बन्धियों से भी अधिक घनिष्ट नहीं होना है।[2] वह अपने स्वभाव को अवसरा–

---

1 वेनिस राजदूत द्वार लुई की व्यक्तिगत विशेषताओं का सुन्दर विवरण गिस्टिग्न कृत (1665–1668) रिलाजिओनी देगली एम्बेसिटारी वनिटी फ्रांस 3, 172 मे उपलब्ध है।

2 उदाहरणों के लिये देखिये चेवरूज व लुईस 14 में लुई के मेमायार्स विशेषत: 2,74।

शुमार रख सकता था । उस पर भावुकता अथवा आवेश का असर नहीं होता था और अन्तिम वर्षो के अतिरिक्त उसने पश्चाताप अथवा दुःख के भाव नहीं दिखाये । उसका चरित्र इस प्रकार का था कि वह अपने निकटतम सम्पर्क में आने वाले लोगों को थका दे, किन्तु स्वय शान्त व अविचलित रहे । उसमें हसमुख स्वभाव का अभाव था । वह चापलूसी का केवल स्वागत ही नहीं करता था अपितु उसमे विश्वास भी करता था । वह अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष जागरूक था यहां तक कि उसका व्यसनी लवाजमा भी उसके स्थिर स्वास्थ की प्रशसा और स्पर्धा करता था, मानव स्नेह का पूर्ण अभाव होने के कारण उसके प्रेम के कार्य चमत्कारिक होते हुए भी सामान्य थे । वह उस भावना से हीन था जो दैनिक जीवन के उलट फेर में प्रायः साधारण मनुष्यों में भी विकसित हो जाती है, वैयक्तिक जीवन में उस पर असभ्य एवं अहकारी होने का सदेह किया जा सकता था ।

शाही लवाजमा

रानी मेरिया थेरेसा ने इस वर्ग में बहुत कम भाग लिया । पतिव्रता, पवित्र और आज्ञाकारी होते हुए भी उसे उन स्त्रियों के कारण अपने आपको अलग रखने पर बाध्य होना पडा जिन्हें लुई ने खुले तौर पर उसके स्थान पर अंगीकार कर लिया था । उसने पहली मित्रता (जो उसके विवाह के एक वर्ष के अन्दर आरम्भ हो गई) आर्लियों की हैनरीटा की दासी युवती मैंडमोमेल द ला वैलियर (Made moiselle de la vallieve) से की । कुछ विफल प्रयत्नों के बाद यह युवती एक मठ में जाने में सफल हुई । काउन्ट आफ वर्मन्दाय और मैडमोसेल द ब्लाय नामक उसके दो बच्चे थे । 1667 में रानी की एक दासी मदाम द मान्तेस्पन राजा की प्रेयसी बन गई और उसने पति को तलाक दे दिया । इस प्रकार लुई 1674 तक दोहरा व्यभिचार करता रहा। रानी को अपनी दोनों सौतों के साथ जनता के सामने आना पड़ता था ।अन्ततः मदाम द मान्तेस्पेन को राजा की अन्य प्रेयसियों के सामने झुकना पड़ा और 1690 में वह दरबार छोड़ गई। उसकी सात में से तीन जीवित सन्तानें मैडमोसेल द ब्लाय (दूसरा), काउन्ट आफ टूलोज और मेन का ड्यूक थीं । इन सबको वैध सतान बना लिया गया था और 1714 में उन्हे फ्रांसीसी राज्य के उत्तराधिकारी होने का अधिकार दे दिया गया । लुई की तमाम वैध सन्तानों में उसके मन में इनके लिये ऊंचा स्थान था । बोसुए को इस बात का श्रेय प्राप्त है कि दरबार में धर्म शिक्षक होने के नाते उसने राजा को सर्व साधारण के सामने अनियमित जीवन बिताने पर झिड़का ।[1] यद्यपि कभी कभी ऐसा लगता

1 देखिए गेजियर, बोसुए ए लुई 14, 58 एफ. एफ ।

था कि उसे पश्चात्ताप हुआ है फिर भी ऐसी मनोवृति अधिक देर तक नही रहती थी।

मदाम द मान्तेनन

मेरिया थेरेसा की मृत्यु 1683 मे हो गई। उसने कहा था कि विवाहित जीवन में उसने केवल 20 दिन खुशी से बिताये। मदाम द मान्तेनन के साथ लुई के सम्बन्ध मैडमोसेल द ला वेलिएट अथवा मदाम द मान्तेस्पेन से भिन्न स्तर के थे। फ्रान्काय दौ बिने ने जो एक पुराने और प्रसिद्ध ह्यूजनों परिवार मे थी प्रारम्भिक अवस्था में एक लूले कवि स्केरन (Scarron) से विवाह किया था और 1660 में पच्चीस वर्ष की आयु में विधवा हो गई। लुई ने पहले पहल उसे मदाम द मान्तेस्पन के कनिष्ट पुत्र की धाय अथवा परिचारिका के रूप में देखा और बाद में उसे मारविकस द मेन्तेनन की उपाधि दे दी। समकालीन लोगो का साक्ष्य–इसकी पुष्टि सेंट साइमन द्वारा व्यक्त की गई घृणा से होती है–बताता है कि मदाम द मेन्तेनन एक अद्वितीय स्त्री थी जो शारीरिक एवं आत्मिक दोनों प्रकार के गुणों से मोहित करती थी। वर्साय में लगे हुए उसके चित्रों से यह स्पष्ट हो जाता है कि लुई के अन्तःपुर की अन्य स्त्रियों से वह बिल्कुल पृथक थी और सम्भवतः इसीलिये वह इतनी प्रभावशाली भी थी। उसका चरित्रिक सौन्दर्य और दूसरों के लिये विचार पूर्ण उत्कण्ठा जो उसके जीवन की आवश्यकताओं के कारण उसमें विकसित हुई थीं, लुई के भ्रान्त आत्म गौरव का सुधार करने में साधक हो सकती थी। उसकी निश्चल पवित्रता और अचल सत्यता के कारण राजा अपनी प्रोढ़ावस्था में भी उसका आदर करने लगा। उसने इस परिवर्तित स्थिति मे भी जो भाग्य ने उसे दी थी, इन विशेषताओं को सुरक्षित रखा इससे लुई उसे प्रेमिका न रख कर विवाहित स्त्री बनाने को उत्सुक हुआ। 1684 के आरम्भ मे एक रात दोनों का गुप्त रूप से विवाह हो गया, दुलहिन 49वें और दूल्हा 46वे वर्ष मे थे किन्तु मदाम द मेन्तेनन फ्रांस की रानी कभी नहीं बनी। राजा पर उसका प्रभाव निर्विवाद रूप से था, यद्यपि प्रकट रूप से सार्वजनिक नीति के मामलों में वह अलग रही।[1] उसमें नया धर्म ग्रहण करने वाले व्यक्ति की भांति पूरा जोश था, उसने पवित्रता को केवल फैशन नहीं बनाया अपितु लुई और उसके न्यायालय की धर्म–परायणता को और भी दृढ़ किया। उसने वर्साय की दुष्चरित्रता को घटाया किन्तु

---

1 गेफरोय ने अपनी कृति **मेदम द मेटेनन द एपरस स कारसपोडेंस ओथेन्टिक** में यह प्रतिपादित किया है कि लुई के किसी भी अबुद्धिमता पूर्ण कार्य के लिए उसे उत्तरदायी नही ठहराया जा सकता और इस प्रकार यह उसे उसके विरूद्ध सेंट सिमन एवं माइक्लेट द्वारा लगाये गये आरोपों से मुक्त करता है।

उसे नीरस नहीं होने दिया, उसने सैंट सायर (St. Cyr) में लड़कियों का एक स्कूल स्थापित किया जिसमें वह विशेष रूचि रखती थी।[1] अपने पति की मृत्यु के बाद वह चार वष तक जीवित रही। 17 वीं शताब्दी में केवल यही एक शाही विवाह था जो सुविधा अथवा नीति पर आधारित न था। यह एक ऐसा तथ्य है जो यह समझा सकता है कि आधुनिक जीवनी लेखकों ने उसके व्यक्तित्व का इतने अधिक विस्तृत रूप में क्यों प्रयोग किया है।

लुई के उत्तराधिकारी

डाफिन जिसे सामान्यत: मान्शेन्योर के नाम से पुकारा जाता है सन् 1661 में उत्पन्न हुआ था। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषतायें उसका ढीलापन और आलस्य थी तथा जीवन के 50 वर्षों में वह वर्साय में बहुत गौण रूप से रहा। वह बोसुए का शिष्य था। उसके लिए लेटिन और ग्रीक लेखकों के विशेष सस्करण तैयार किये गये।[2] उससे पिता ने राजनीति में शिक्षा देने के लिए संस्करणों का सकलन किया और उसकी शिक्षा की योजना ऐसे तरीकों पर बनाई गई जो अध्यापन विधि के इतिहास में अद्वितीय थी। कोई भी विद्यार्थी शिक्षा के इतने अच्छे प्रबन्ध होने पर कभी भी इतना अयोग्य सिद्ध नही हो सकता था जितना कि वह हुआ। वह डरपोक और निरूत्साही व्यक्ति था और घंटों तक पलंग पर पड़े-पड़े अपने बूटों को छड़ी में चटकाता रहता था अथवा गजट में न्यायालय की खबरों को बार बार पढ़ता रहता था। बड़ा होने पर उसे अपने पिता के मार्ग से परे रहने की चिन्ता रहती थी। बवेरिया की एक राजकुमारी के साथ विवाहोपरान्त उसके तीन पुत्र हुए, बरगंडी का लुई, अंजु का फिलिप, और बेरी का चार्ल्स परन्तु अपने पिता के पद-चिन्हो पर चलते हुए उसने अपनी पत्नी की उपेक्षा की और म्यूदां मे वह मैडमोसेल स्वाइन के मोहपाश में फंस गया। लुई के भाई आर्लियां के ड्यूक का चरित्र भी ऐसा ही था जो अपना समय खाने और सजावट की मेजों पर बिताता था, वह सेन्ट क्लाउड में क्लीवत् और लम्पट व्यक्तियों के समाज का केन्द्र बना हुआ था। उसका पुत्र शात्रे का ड्यूक, जिसे समकालीनों ने उसके सम्बन्धियों की अपेक्षा बुराईयों मे अधिक व्यस्त रहने की कीर्ति प्रदान की। अपने पिता की मृत्यु के बाद 1701 में ओर्लियां का ड्यूक और 1715 में रीजेन्ट बन गया डाफिन का सबसे बड़ा पुत्र बरगण्डी का ड्यूक फेनलन का शिष्य था और ऐसा प्रतीत होता

---

1 ऐसा प्रतीत होता है कि यह शिक्षा पद्धति पूर्णतया सफल न हो सकी। "ल इन्सट्रक्शन न व पास ट्रोप बेन एत मैस पोटेजेज वोंट वाइट"। (द हसोन बिल्ले एण्ड हेनोटोक्स, सोयवेनीर्स सुर मेदाम द मेटेनन, 32।

2 केएन के हुएत द्वारा सम्पादित, 'डालफिन क्लेसिक्स'।

है कि इस प्रसिद्ध उपदेश का उसके चरित्र पर उसके पिता पर पड़े बोसुए के प्रभाव की अपेक्षा से अधिक प्रभाव पडा, क्योंकि वर्साय में शायद एक वही राजकुमार था जिसमें चरित्र अथवा योग्यता के कुछ चिन्ह थे। सन् 1712 के फर्वरी मास में, सम्भवतः चेचक से उसकी पत्नी के देहावसान के 6 दिन और उसके पिता के एक वर्ष बाद उसकी मृत्यु हो गई और मृत्यु की इस शृंखला से सनसनी फैल गई। इसके लिए छल-कपट विश्वासनीय नहीं हो सकता क्योंकि मामूली सी बातों पर विष-प्रयोग के दोष लगा दिये जाते थे, और उन दिनों चेचक से अनेकों लोग मृत्यु के शिकार हुए थे। बरगण्डी का ड्यूक एक शिशु को छोडकर स्वर्गवासी हुआ जो बाद में लुई 15वां हुआ। अंजू का ड्यूक स्पेन का फिलिप पंचम हुआ, बैरी का ड्यूक 1714 में एक दुर्घटना के कारण चल बसा। लुई की मृत्यु के पूर्व उसका केवल एक पुत्र, एक भाई और तीन में से दो पोते थे। वैध उत्तराधिकार उसके एक शिशु पड़पोते के जीवन पर निर्भर करता था। सम्भवतः राजा ने अनुभव किया हो कि ये घटनायें दैवी कोप के फलस्वरूप हुई हों किन्तु दुःख और बुढापे के बावजूद उसने अपनी प्रतिष्ठा और शांति अन्त तक कायम रखी।

वर्साय का जीवन

डेन्जियो (Dangeau) ने वर्साय के दैनिक जीवन का सूक्ष्मता से वर्णन किया है, बाद में उसके पत्र (journal) का उपयोग सेन्ट साइमन के संस्मरण लिखने में किया गया[1]। दैनिक कार्यक्रम का आरम्भ राजा को औपचारिक रूप से जगाने से आरम्भ होता था, तत्पश्चात सबसे पहले एक पद्धति के अनुसार शाही राजकुमार राजा के शयन-गृह मे प्रवेश करते थे। ग्रीष्म में मार्ली कोम्पीन और फौन्टेनब्लो राजा के प्रिय स्थान थे जहां बहुत दिनों तक शिकार करना या बाजों का शिकार करना चलता रहता था तथा सदा अनेकों ऐसे पदों के लिये झगड़ा होता रहता था जिनसे पदाधिकारियों को दरबार मे सरकारी दर्जा मिलता था। लुई अपने परिवार के मनोरंजन कार्यों पर कड़ा नियंत्रण रखता था। वह उन्हें जुआ खेलने, ऋण अदा करने, और पत्र व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहन देता था। वह शासकीय ढग से नृत्य भी करता था किन्तु उसके सस्लिष्ट शाही नृत्य उस युग के उसके वैयक्तिक गौरव के अनुपयुक्त नहीं थे और संगीत आधुनिक धुनों की अपेक्षा अधिक ऊचे दर्जे का होता था। इन मनोविनोदों के साथ साथ दैनिक धर्मसभा (Mass) हुआ करती थी जिसमें राजा हमेशा उपस्थित रहता था। बोसुअट

---

1 सेंट सिमां के संस्मरणों के एतिहासिक महत्व के लिए देखिए चेरूएल, **सेंट सिमां कोम हिस्तोरिएं द लुईस 14।**

और बोर्डेलो जैसे उपदेशकों की शानदार वक्तृता कभी प्रसन्न करने वाली और कभी घबराने वाली होती थी ।

वर्साय की मनोवृत्ति

वर्साय का आचार व्यवहार पूर्णतया विधि पूर्वक व्यवस्थित होता था और मानव जीवन के तमाम स्वस्थ कार्यों से वंचित किये हुए लोगों में केवल राजा के व्यक्तिगत जीवन सम्बन्धी सूक्ष्म से सूक्ष्म विवरण गहन वार्तालाप के विषय बने रहते थे । आधुनिक युग के दरबारो की अपेक्षा लुई के दरबार में, अवसरवादिता लम्पटता और सामान्य लोगों के लिए अच्छे अवसर थे जहां मस्तिष्क एव चारित्रिक स्वतन्त्रता का कठोरतापूर्वक दमन किया जाता था, जहां पाखण्ड और चापलूसी इस हद तक फैल गये थे कि जिनका प्रभाव या तो महा सनकी या महा मूर्खों के अतिरिक्त सब पर पड़ता था । जो जीवन, ताश के खेल में दुःखी किसानों से एेंठे हुए धन के दाव लगाने में, बिना परिश्रम किये निरापद् पशुओं का शिकार करने मे, मानव देवता की अर्चना से प्रेरित होकर स्वांग भरने में, ऐसे पदों को प्राप्त करने के लिए दौड लगाने में जो उतरदायित्वहीन और चापलूसीपूर्ण थे व्यतीत होते थे, वे जीवन सब प्रकार से निरर्थक थे । एसे जीवन से कुलीन वर्ग भ्रष्ट हो गया था जिनमें न कोई परम्परा थी न लाभप्रद कार्यो के अवसर मिलते थे. जो केवल अपनी जाति पूजा के आधार पर सम्बन्ध थी और लगातार ऐसे मिथ्या कुलीनों द्वारा परिवर्द्धित की जाती थी जो कुलीनता खरीदते थे ।

लुई पन्द्रहवें पर आक्रमण

जनमत

यूरोप के इतिहास सम्बन्धी साहित्य में लुई और उसकी नीति की कटु आलोचना मिलती है ।[1] उसके राज्य की वे घटनाएँ जिनका अन्य सब घटनाओं की अपेक्षा अधिक प्रबल विरोध हुआ थीं–1681 में पुनः एकीकरण (re-unions) 1685 में राजघोषणा का खण्डन, 1688 में पेलेटिनेट पर दूसरा आक्रमण, और 1700 में चार्ल्स द्वितीय की वसीयत को स्वीकार करना । इंगलैंड, हालैण्ड और जर्मनी में यह कह कर लुई से घृणा की जाती थी कि वह अनुत्तरदायी निरकुश राजा है जो अपने देश की स्वतन्त्रता को कुचल रहा है और जिसका उद्देश्य यूरोप को पूर्ण दास बनाना है । 1685 ई. के पश्चात् फ्रांसीसी ह्यूजनों शरणार्थियों ने आवाज में अपनी आवाज मिलादी पास्टर जूरियू (Juriew) को आलोचना सबसे कटु और व्यक्तिगत थी । फ्रांसीसी सीमाओं के अन्दर पत्रों पर इतना कठोर नियत्रण

---

1 एच गिलट कृत ल रेगने द लुइस 14 एत ल ओपीनियम पब्लिके एन एलमेगने (1914) में सर्वोत्तम विवरण उपलब्ध है ।

था कि यह निश्चित था कि लुई 14वें का स्तुति-पाठ करने वाली जनता में शायद ही कोई छिपा हुआ विरोधी हो। लुई 14वां कई प्रसिद्ध लेखकों के लेखन का विषय बना रहा हैं। यहां केवल सक्षिप्त वर्णन ही दिया जा सकता है और इस दृष्टि से सामान्य सारांश की अपेक्षा संकलन करना ही अधिक उपयुक्त है।

जर्मन मत

फ्रांस द्वारा 1688 में पेलेटिनेट की तबाही पर जर्मन जनता की भावना के प्रदर्शन की तुलना केवल फ्रांस और ब्रिटेन के उस प्रदर्शन से की जा सकती है जो उन्होने 1914–1918 के युद्ध में जर्मनी द्वारा बेल्जियम पर अधिकार करने पर किया था। बड़ी संख्या में पैम्फ्लेट प्रकाशित किये गये जिनमें से कुछ में भद्दे चित्र भी थे जिनमें फ्रांसीसी सैनिकों पर क्रूरता का आरोप लगाया गया था। इन सैनिकों को हूण कहा गया है जिनके लिये निर्दयता का कार्य करना सम्भव था। उनके अफसर युद्ध को कत्ल और लूट खसोट का अवसर समझते हैं और उनका राजा राक्षस और भगवान् की निन्दा करने वाला है और भगवान् द्वारा प्रेरणा प्राप्त करने का दावा करता है तथा तुर्की नमूने की सरकार का ऐसी ईमानदारी से अनुकरण करता है कि वह कुस्तुन्तुनिया में इतना अच्छा मुसलमान कहा जा सकता है जितना पेरिस में कैथोलिक। इन विषयों पर पैम्फलेट एक मत हैं। उन लेखकों का, जिन्होंने ऐतिहासिक सर्वेक्षण करने का प्रयास किया है, मन्तव्य था कि फ्रांस एक नवीन देश था[1] (चार्ल्स मेन के सच्चे वंशज राइन नदी से पूर्व के निवासी फ्रैंक हैं) और उसकी समस्त संस्कृति पड़ोसियों से चुराई गई है। उनका कहना था कि उनके विश्वविद्यालय रोमन अर्थात जर्मन सम्राटों ने स्थापित किये थे, गणित उसने इंगलैण्ड से उधार लिया था, जानपद–वास्तुकला इटली से, किलेबन्दी का विज्ञान स्पेन और हालैण्ड से, बारूद–तोपखाना और छापाखाना जर्मनी से, नौविधा जिनोआ से, शासक के सिद्धान्त तुर्कों से, और साहित्य यूरोप के प्रत्येक राष्ट्र से सीखा था[2] ऐसा माना जाता था कि फ्रांस ने युद्ध को सशस्त्र डकैती का रूप दे दिया था, उसके शासक हाब्स और मैकियावेली के शिष्य थे। फ्रांसीसी कूटनीति अन्य देशों की अपेक्षा विशिष्ट थी क्योंकि उसने विभिन्न देशों के लिये उपयुक्त एजेन्टों के चुनाव को कला के रूप में परिवर्तित कर लिया था–आस्ट्रिया के लिये उनकी धैर्यशीलता से थकाने वाले फ्रांसीसी, स्पेन के लिये धर्माध्यक्ष, इंगलैण्ड के लिये नास्तिक, हालैण्ड के लिये वाकपटु, अच्छे खाने पीने वाले जर्मनी और कलहकारी,

---

1 यह एक पुरातन विवाद का नवीनीकरण था जिसमें यह कहा गया था (1254-1273) कि फ्रांसीसी सच्चे फ्रांक है या मात्र फ्रेंसी जेन्स।

2 गिलट, पूर्व उद्धृत, 245।

रोम के लिये। "जहां शैतान नहीं जा सकता वहां वह एक जादूगरनी और एक जेसुइट को भेजता है"[1] जर्मन जातियों ने स्वयं अपनी सरलता और सार्वजनिक विश्वास में बहुत अधिक आस्था और अपनी सीमा से परे होने वाली घटनाओं के प्रति उदासीन रह कर दुर्भाग्य को आमन्त्रित किया। एक प्रान्त की क्रमानुसार बर्बादी से प्रेरित ऐसे विचार थे। जैसा कि कभी कभी समझा जाता है, विशाल पैम्फलेट साहित्य की संक्षिप्त परीक्षा यह स्पष्ट करती है कि न तो युद्ध प्रचार के तरीके और न उससे प्राप्त लाभ ही 20वीं शताब्दी के आविष्कार हैं।

जूरियु

लुई की असहिष्णुता के शिकारों में सबसे प्रमुख लेखक जूरियु था[2] जिसकी पुस्तक "सूपिर द ला फ्रांस असवलेव" (soupirs de la France esclave) में लुई के शासन के तरीकों की संभवतः अत्यधिक कटु आलोचना है। यह अगस्त सन् 1688 में प्रकाशित हुई जो स्पष्टतया उस राजा की ओर संकेत करते हुए लिखी गई थी जिसमें उसे निष्कासित किया था एवं षड्यंत्रकारी कहा था। उसकी मान्यता थी "प्रत्येक राष्ट्र को ऐसे राजा को उसी समय गद्दी से उतार देने का अधिकार है जब वह अपने अधिकारों की सीमाओं का उल्लंघन करने लग जाये।[3] राजा का व्यक्तित्व और राज्य के हित अलग अलग अस्तित्व रखते हैं और चूंकि लुई ने दोनों में भाव विरोध स्थापित कर रखा था इसलिये जूरियु के मतानुसार फ्रांस की सुरक्षा को खतरे में बिना डाले राजा पर आक्रमण करना सम्भव था। ऐसा प्रजा-पीड़क राजा समस्त यूरोप के विरोध को उभाड़ कर ही सीधे मार्ग पर लाया जा सकता है, यदि सारा यूरोप उसके विरुद्ध हथियार उठाले तभी वह शासन में सुधार करने के लिये बाध्य होगा और स्टैट्स-जनरल की शक्ति को पुनः स्थापित करेगा। जूरियु ने इस प्रकार अपने राजा विरोधी कार्यों के साथ अपनी राजभक्ति में एकता स्थापित करने की चेष्टा की, वह लुई के विरुद्ध एक सशस्त्र संगठन बनाने के कार्य में पूर्णतया जुट गया, वह निष्कासित ह्यूजनों का जोशीला नेता था उसने स्पेनिश उत्तराधिकार युद्ध में एक गुप्तचर पद्धति का संगठन किया था। इन कार्यों को राजद्रोही कहा जा सकता है किन्तु जूरियु ऐसे राजा के प्रति स्वामिभक्त न था जिसने उसके अनेक सहधर्मी ह्यूजनों को स्वदेश छोड़ने के लिए बाध्य किया हो।

---

1 गिलट, पूर्व उद्धृत, 98।

2 जूरियु के लिए देखिये डेडियू ल रोल पोलितिक देस प्रोटेस्टेटस फ्रेंकाइस, अध्याय 9, 10 व 11।

3 डेडियू द्वारा उदधृत, पूर्व उद्धृत, 66।

फ्रांसीसी मत

विदेशों में की जा रही विरोधी आलोचना के बावजूद फ्रांस में एक मत मे उसकी स्तुति की जाती थी। फ्रांडे आन्दोलन के दमन के पश्चात फ्रांसीमी अधिक स्वामिभक्त हो गये। किसी अन्य देश में दड के प्रति स्वामिभक्ति इतनी आश्चर्यजनक सीमा तक नहीं पहुंची थी। ऐसा कहा जाता था कि "फ्रांस ही केवल एक ऐसा यूरोपीय देश है जो अपने राजा की मूर्तिवत्त पूजा करता है।" इसकी तुलना में स्पेनियार्ड अपने राजा को कुछ रुखाई से देखते थे और राजकुमार की अपेक्षा राज्य की पूजा करते थे। फ्रांसीसी लुई चौदहवें की किस सीमा तक पूजा करते थे[1]–केवल उद्धरण ही ऐसी मूर्खताओं का स्पष्टीकरण कर सकते हैं। सन् 1644 में ही पी. लेबी ने लुई के लिए ऐप्यूकेटियो रेगिया नामक पुस्तक का सकलन किया था जिसमें उसने गम्भीरतापूर्वक यह प्रस्तावित किया था कि राजा को प्रत्येक प्रातः इस बात का स्मरण करना चाहिए कि उसे ईश्वर की भूमिका निभानी है और प्रत्येक दिन की समाप्ति पर उसे अपने आपसे पूछना चाहिये कि उसने ऐसा किया या नहीं–

> "Hodie mihi gevenda est persona dei ..densue hodie an homo fui ?"

जिस वर्ष लुई स्वयं राज्य करने लगा उस वर्ष पी. सेनाल्ट ने डाफिन के जन्म दिन पर उसे एक धर्मोपदेश दिया, जिसमें राजा की ईश्वर से और डाफिन की ईसा–मसीह से समता की गई। गौडियो (Godeau) ने अपनी पुस्तक '**इलोजज हिस्टोरिक्स**" में यह मत प्रकट किया था कि जिस प्रकार सेंट लुई नवम् का नाम केलेंडर में है उसी प्रकार सम्भवतः सैंट लुई चौदहवें का भी होगा। परन्तु उसके प्रकाशन की तिथि (1665) दुर्भाग्यपूर्ण रही क्योंकि लुई ने उसी वर्ष अपने अनोरस पुत्रों के लिये संसद से वैधता प्राप्त की थी तथा मदाम–द–मान्टेस्क्यू के साथ सार्वजनिक रूप से रहने लगा था। इसके काफी प्रमाण मिलते हैं कि लुई अपनी प्रशंसा को सत्य मानता था। उसने अपने संस्मरण (1661) में यह घोषित किया कि राजा का सम्मान करना धार्मिक कर्तव्य है क्योंकि वे पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधि हैं और केवल भगवान के प्रति उत्तरदायी हैं[2] इस विषय की पुष्टि बोसुए तथा अनेकों कम प्रसिद्ध व्यक्तियों ने की तथा इस सिद्धान्त का विस्तार किया। ये

---

1 वही, 67, लेकरगेयट कृत ल **एजुकेशन पोलितिक द लुई** 14 में अनेकों दृष्टान्त उपलब्ध हैं।

2 "सेलुई कुई अ दोने देस रोइस अक्स होम्स ए बोलू क्यू ओन लेस रेसपेक्टेट कोमेसेस लेप्टीनेन्टस्" (मेमायर्स आफ लुई 14 इन **चेवेरूज** सं० ग्रेविले 2,285)।

सब लोग राजा को ईश्वर का पवित्र प्रतिनिधि मानते थे और उसके आलोचकों को नास्तिक कहते थे। इन सब मतों में इस बात पर बल देने में सर्व सम्मति होने को ध्यान में रखते हुए[1] यह बात आश्चर्यजनक नहीं है कि फ्रांसिस डेवन की De la puissance qu'out rois sur les peuples et du pouvoudes peuples sur les rois (1650) नामक पुस्तक के प्रकाशन से लेखक को गम्भीर परिणामों का सामना करना पड़ा होगा। डेवन का यह मन्तव्य था कि शासितों के प्रति कर्तव्यों को जिस अनुपात से राजा पूर्ण करते हैं उसी अनुपात से उसकी आज्ञा का पालन होना चाहिए। उसे पागल माना जाने लगा और इस तरह से वह गिरफ्तारी अथवा उससे भी अधिक कठोर दण्ड से बच गया।

हाब्स और लुई चौदहवां

यह स्वतः सिद्ध है कि 17वीं शताब्दी का दार्शनिक मत निरपवाद रूप से राज्य में निरकुश शासन के पक्ष में था। लेकिन जब लुई चौदहवें के फ्रांसीसी पक्षपातियों ने नास्तिक हाब्स को दैवी अधिकार सिद्धान्त के पक्ष में कर लिया तो बेहूदगी की हद हो गई। यह हठी और अस्थिर अंग्रेज दार्शनिक, जिसका दर्शन उसके समय में समझा भी नहीं जाता था, अपनी विषमताओं और प्रतिकूलताओं के कारण आधुनिक भाष्यकारों को चक्कर में डाल देता है, उसके सिद्धान्त निरंकुशता के पक्ष में थे, किन्तु चूंकि वह नास्तिक अथवा ईश्वर को न मानने वाले व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध था इसलिए दैवी अधिकार के सिद्धान्त को मानने वाले अंग्रेजी मत ने उसके सिद्धान्तों का उपयोग नहीं किया यद्यपि बहुत से धर्माध्यक्षों ने लेवियाथन को साधारण रूप से पढ़कर इसके लेखक को अपने मत का समर्थक माना। हाब्स क्रान्तिकारी था, क्योंकि उसने राज्य द्वारा लगाये गये आदेशों को मान्यता नहीं दी और इस प्रकार धार्मिक अत्याचार के आधार को नष्ट कर दिया, किन्तु उसने समझौता सिद्धान्त का प्रयोग उन बातों को असत्य सिद्ध करने के लिए किया जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति सत्य सिद्ध कर चुका था, इसलिए वह फ्रांस में बहुत से राजनीतिक सैद्धान्तिकों की प्रशंसा का पात्र बन गया। यहां उसके व्यक्तिगत विचार उतनी अच्छी तरह प्रचारित न थे जितने इंगलैण्ड में। इन अक्ल के अन्धे सिद्धान्तकारों को 'लेवियाथन' उसी सिद्धान्त को वैज्ञानिक रीति से सिद्ध करने वाली मालूम हुई जिसे

---

1 लुई शासन के सामान्य राजनीतिक सिद्धान्त के लिए देखियें इ. नइस, लेस थ्योरीज पोलितिक्स एत ला ड्रोइट इंतरनेशनाल एन फ्रांस। दी एडीटर्स (ई बुर्जुआ एंड एल एन्ड्रे) आफ द वोलूयम पेम्फलेट्स इन लेस ग्रेरसेज द ल हिस्तोरे द फ्रांस 4, 4, का मत है कि कुछ सीमा तक लुई अपनी आलोचना से प्रभावित हुआ था, परन्तु इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

दैवी सिद्धान्तवादी बाइबल से सिद्ध करते थे और इस कारण इस दृढ़ता से सुरक्षित सिद्धान्त का और अधिक प्रमाणीकरण करके यह आकर्षक व सहायक मालूम हुई। सन् 1649 में सोरबियरे (Sobiere) ने द सिव (Decive) का फ्रांसीसी अनुवाद प्रकाशित किया और 1660 में फ्रांसिस बोनियो (Francis Bonneau) ने अपनी पुस्तक एलिमेंटस द ला पोलितिक द मोंस हाब्स (Elemants de la Politique de Mons Hobbes) लुई को समर्पित की जिसमें उसने स्वीकार किया कि "Euclide et mons. Hobbes ont vu les choses a fond" उसने हाब्स के सिद्धान्तों का फ्रांसीसी स्कूलों में सरकारी शिक्षण के लिये प्रबन्ध किये जाने की सिफारिश की। बोनियो की इतनी पैनी दृष्टि न थी जितनी वह समझता है कि अंग्रेज गणितज्ञ में थी, अन्यथा वह इस अद्भुत मेमने की जिसे दैवी अधिकार मानने वालों के गुट में सम्मिलित कर लिया गया, ऊन के नीचे से कुछ और ढूंढ निकालता।

दैवी अधिकार

वंशानुगत दैवी अधिकार की पूर्ण अभिव्यक्ति इंगलैण्ड और फ्रांस में एक ही समय में हुई परन्तु फिल्सर और बोसुए, ने अपनी व्याख्यायें ऐसे काल में की जब इसकी धार्मिक स्वीकृति पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा था। पुनर्जागृति के राजनीतिक सिद्धान्तवादियों ने जिसे रोमन विधि या उच्च साहित्यिक पूर्व प्रमाण अथवा उपयुक्तता पर आधारित किया उसे लुई चौदहवें के प्रशंसकों ने धर्म अथवा ओल्ड टेस्टामेन्ट पर आधारित किया जो केवल मौखिक रूप से ही प्रेरित नहीं मानी जाती थी अपितु जीवन के समस्त व्यापार को नियमित करने के लिये एक विधि बन गई थी और इस प्रकार विधि निर्माता और राजनीतिज्ञ के लिये मार्ग-दर्शक थी। 17वीं शताब्दी में हेब्रू का अध्ययन आजकल की अपेक्षा अधिक प्रचलित था इसके परिणामस्वरूप अधिकांश शिक्षित लोग प्राचीन यहूदी इतिहास की संस्थाओ और धारणाओं से अच्छी तरह परिचित थे। उनका विश्वास था कि ईश्वर राजा को पृथ्वी पर अपना क्रोध निकालने का यंत्र बना कर नियुक्त करता है इसलिए उसकी निरंकुशता को सर्वोत्तम प्रकार की मानव सरकार स्वीकार किया गया है। जब तक लोग ओल्ड टेस्टामेन्ट के प्रति इस दृष्टिकोण में विश्वास रखते थे तब तक दैवी अधिकार सिद्धान्त पूर्णतया सुसंगत था और जो लोग इसमें संदेह करते थे उन्हें पाखण्ड और धर्मघात का दोषी ठहराया जाता था। परन्तु 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यह कहना सत्य नहीं होगा कि ओल्ड टेस्टामेन्ट के प्रति यह सर्वसम्मत दृष्टिकोण था क्योंकि लोगों में परीक्षण करने की भावना काफी समय पूर्व जागृत हो चुकी थी, लोग महसूस करने लगे थे कि प्रकृति के रहस्यों की खोज करने से धर्म को हानि की अपेक्षा लाभ होगा, वे यह स्वीकार करने के लिए तैयार

नहीं थे कि मानव ज्ञान की समस्त परिधि एक पुस्तक तक ही सीमित है[1]। पादरी लोग दैवी अधिकारों को अन्य पवित्र बातों से अलग नहीं मानते थे, फलतः इस तर्क का बल घटने पर भी वे लोग इंगलैण्ड और फ्रांस में इस सिद्धान्त को दृढतापूर्वक मानते रहे। इंगलैण्ड में यह भावना आरम्भिक हेनोवर काल के आत्मोत्सर्गी टोरी-वाद के यश में अलक्ष्य रूप से विलीय हो गई और जैसे जैसे इसके पुर्नस्थापन की सम्भावना स्पष्टतया कम होती गई, वैसे वैसे इसमें विश्वास रखने वालों के लिये यह और अधिक आकर्षक होती गई। सच्चा विश्वासी यह मानता था कि राजा पानी के ऊपर रहता है और इस तथ्य से, कि वह सम्भवतः वहीं बना रहेगा, स्वामिभक्ति घटने की अपेक्षा बढ़नी चाहिये। परन्तु फ्रांस में वैधानिक सरकार का विकल्प नहीं था इसलिये इस सिद्धान्त के बहुत कठोर परिणाम निकाले गये और राजा द्वारा जो सदा उपस्थित रहता था तथा जिसके जीवन में कोई विशेषता न थी, क्रियान्वित किये गये।

बोसुए की व्याख्या

इस सिद्धान्त का पूर्ण रूप बोसुए[2] ने अपनी पुस्तक पोलितिक टाइरी दे प्रोपे पेरोले द ले, ब्रटीचर सेन्त में प्रदर्शित किया था—यद्यपि यह इस विषय संबंधी पहली फ्रांसीसी व्याख्या न थी किन्तु यह स्पष्टतया सब कुछ व्यक्त करने वाली प्रथम पुस्तक थी कि इस सिद्धान्त को स्वीकार करने का पूरा तात्पर्य क्या है। यह ग्रंथ इस दृष्टि से महान है कि इसमें बाईबिल के प्रमाणों द्वारा तमाम सम्भव आक्षेप कुचल दिये गये, यह ग्रंथ पूर्णतया उत्प्रेरक है और इसे एक ऐसे व्यक्ति ने लिखा था जो अपने लेख में गलतियां और असंगतियां दर्शाने पर भी बिलकुल अविचलित रहा। बोसुए के मतानुसार राज्य का सिद्धान्त **ओल्ड टेस्टामेन्ट** मे उद्बोधित हुआ था, उसकी स्थिर व प्रामाणिक टीका उसकी पुस्तक में दी गई है जिनमें किसी प्रकार का सुधार नहीं किया जा सकता था, क्योंकि ऐसी मान्यता थी कि वे मनुष्य द्वारा नहीं बनाये गये। इसकी सर्वोत्तम समालोचना उस राजा का राज्य है जिसके लिये वह लिखी गई थी।

लुई और राज्यकीय समाजवाद

लुई ने कभी कभी इस सिद्धान्त का रोचक प्रयोग किया। उसने 1662 की राज-घोषणा में प्रसारित किया "Il n'y a pas de droit ni mieux etabli ni plus inseparablement attache' a' notre couronne que celui de

---

1 देखिये अध्याय 13।

2 बोसुए के सम्बन्ध में रोचक विवरण रिशेलू द्वारा दिया गया है (लेस ग्रांड्स एकरीवेंस फ्रेंकेस)।

mouvance et directite universelle que nous avons sur toutes les terres de notre royaume."[1] उसके सस्मरणों में दिये गये वक्तव्य का कानूनी अर्थ यह है[2] कि राजा अपनी प्रजा की व्यक्तिगत जायदाद का अन्तिम अधिपति है, प्रजा तो केवल उसका उपभोग कर सकती है। राजघोषणा का तात्पर्य वर्ष भर के लगान की अदायगी पर विशेषाधिकारों को वैधानिक बनाना था और इसमें एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त समाविष्ट था कि इससे सार्वभौमिक सत्ता और पूर्ण प्रभुत्व या मिलकीयत में एक रूपता हो जाती है। इस प्रकार व्यक्तिगत जायदाद खत्म हो जाती है और राज्य समाजवादी बन जाता है। लुई ने इसे कठोरता से लागू नहीं किया, उसने इसकी केवल 'व्याख्या' करके ही सतोष कर लिया। ज्यूरियों[3] के मतानुसार कोल्बर्ट के समय में ऐसा प्रस्ताव किया गया था कि समस्त व्यक्तिगत सम्पत्ति को जब्त कर लिया जाये और कुछ समय के लिए उसे कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित कर दिया जाय परन्तु इसकी पुष्टि में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इस प्रकार के विचार से सामान्य जनमत को कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि इस सिद्धान्त से विद्यार्थी पहले ही परिचित थे और दासता[4] के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए ग्रेशियस ने पहले ही इस पर बल दिया था। इन्हीं विचारों ने आगे चलकर भावी शताब्दि में डचों में और मानवता के प्रति[5] रूसो के विचारों में परिवर्तन किया।

लुई और अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियाँ

इसी सिद्धान्त के इस निष्कर्ष का खण्डन किया गया कि जिस प्रकार राजा लोग ईश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं उसी प्रकार वे अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों से भी बंधे

---

1 इसमेंबर्ट **एनसिन्स लुई फ्रंकेसेस**, 20, 165। हिटीयर कृत **ला डोक्टिने द एल एबसोल्यूतजिम** 124 में उद्धृत।

2 'लेस रोइस सोंट सिगनेयर्स एबसोलुस एत ओंत नेचुरलमेट ला डिसपोजिशन प्लेन एत लिवर द टुइस लेस बीयन्स कुई सोंट पोजेटस ओसी-बिएन पार लेस जेस द इंग्लिस कुई पार लेस सक्यालियर्स, पोयर एन यूजर—सेक्ट ल बसाइन जनरल द ल्योर इतास' (**चेवरूज**—2,121)।

3 इसमेबर्ट, **आंशिएं** लाय **फ्रान्केज**, 20,165। जे० हितिअर कृत **ल दा क्ट्रिन द ल आब्सोल्यूतिज्म**, 124।

4 'लेस रोइस सोंट सेगेन्योर्स एब्सोलस एत ओत नेचुरलमेंट ला डिस्पोजीशन प्लेन एत लिबट द तोस लेस बेंस सोंट पजेज असी बिएन पारलेस जेंस देगलिस बुई पारलेस सेक्युलियर्स पोर अन यूजर स्यूवेंट ल बे सोन जनरल द ल्योर एतात।

5 कोड़ मिकॉड में इस सिद्धान्त की पूर्व झलक दिखाई देती है।

नहीं है। इस सम्बन्ध में राजा को निर्णय करना है कि अमुक संधि हस्ताक्षरकर्त्ताओं की इच्छाओं को कहां तक पूरित करती है, इस सम्बन्ध में लुई ने अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों के सम्बन्ध में विस्मार्क द्वारा अपनाये गये दृष्टिकोण का अनुसरण किया। लुई और विस्मार्क दोनों ही सन्धियों को एक अस्थाई सुविधा समझते थे। उनके मतानुसार यदि ये सन्धियां सदैव के लिए बन्धनकारी हैं तो इसका अर्थ था कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का युग समाप्त हो गया हैं। लुई ने अपने पुत्र को आश्वस्त करते हुए कहा था कि सन्धियों में मित्रता और सहयोग की अभिव्यक्ति केवल एक कूटनीतिक शिष्टाचार[1] का द्योतक है। लुई चौदहवें की विदेश नीति इन्हीं विचारों की पुष्टि करती है।

लुई और मौलिक कानून

अन्त में लुई का यह भी कहना था कि उसके दैवीय अधिकार उसे इस बात की स्वतन्त्रता देते हैं कि वे राज्य के मूलभूत[2] नियमों का भी उल्लघन कर सकता है। इन मूलभूत कानूनों की कभी भी स्पष्ट व्याख्या नहीं की गई, सत्रहवीं शताब्दी में भी इन मूलभूत कानूनों में कुछ तत्व ऐसे समाविष्ट हो गये थे जो फ्रांसीसी राजतन्त्र के वंशानुगत परामपराओं के द्योतक थे। सन् 1700 में संसद में लुई ने घोषणा की जिसके अनुसार स्पेन के फिलिप पंचम को फ्रांस का उत्तराधिकारी घोषित किया गया, युद्ध घोषणा यूरोप के जनमत की स्पष्ट अवहेलना थी और आगे चलकर स्पेन के उत्तराधिकार युद्ध[3] का कारण भी बनी। युट्रेक्ट की संधि के दौरान मित्र राष्ट्रों ने यह आशका प्रगट की थी कि फिलिप का उद्देश्य दोनों साम्राज्यों[4] को आपस में मिलाना है जिस पर यह व्यक्त किया गया था कि फ्रांसीसी राजतन्त्र द्वारा प्रदत मौलिक कानूनों के अन्तर्गत फिलिप के फ्रांसीसी सिंहासन के प्रति प्राप्त अधिकारों को कम नहीं किया जा सकता। आखिर लुई को यह स्वीकार करना पड़ा परन्तु अप्रैल 1712 में टोरसी को लिखे गये अपने एक संस्मरण[5] में लुई ने यह स्पष्ट कर दिया कि बातचीत को सफल बनाने के लिए फिलिप के स्तर को स्वीकार किया जा सकता है परन्तु इसको सदैव के लिए स्वीकार नहीं किया जा सकता

1 चेवेरूज, सं. ग्रोविले, 1, 64।

2 देखिए वही, पृ० 71।

3 देखिए वही। पृ० 267।

4 देखिए कोरसपोंडेंस आव बोलिगब्रोके (1798) 2, 199।

5 वही, 2, 22–26। यह तर्क दिया जाता था कि चूंकि फिलिप के ये अधिकार मूलभूत कानून पर आधारित थे अतः कोई भी मानव कृत कानून उन्हें नष्ट नहीं कर सकता था।

क्योंकि यह मूलभूत कानून के विरुद्ध है। जुलाई, 1714 मे स्वयं लुई द्वारा इन मूलभूत कानूनों का उल्लघन किया गया जबकि उसने इस प्रकार का अधिकार प्राप्त कर लिया कि ऐसी अवस्था में जबकि वैध उत्तराधिकारी की मृत्यु हो जाये तो जारज पुत्र को भी उत्तराधिकारी बनाया जा सकता है। इस प्रकार लुई अपनी इच्छानुसार मौलिक कानूनों का उल्लंघन करता रहा और क्योंकि ऐसा कोई नियम नहीं था [2]जिसके द्वारा लुई पर भी कोई कानून लागू किया जा सके ऐसी अवस्था में स्पष्टता कानून लुई की इच्छा पर आधारित था और वह इसका उपयोग अपनी इच्छानुसार कर सकता था। इन परिस्थितियों में लुई चौदहवें की निरंकुशता पर उतना अधिक ध्यान नहीं दिया जाना चाहिये जितना उसके सम्भाव पर।

---

1 इसमेबर्ट आंशियें लुई फ्रांकेज, 20 620।

2 लुई ने कामन ला के संबंध में अपने संस्मरण में लिखा है, फोदें सुट ला रेजन द इतात, ला प्रियेमर देश लुंइस मेस ला प्लस इनकोन्यू एतला प्लस ओव्स-क्योर ए तोस सेयक्स कुई ने गवरनेंट पेस चेवेरूज 56। इस सम्बन्ध में सबसे अच्छी टिप्पणी द रेट्ज द्वारा की गई है 'ल द्रोइत देस प्यूपिल्स एत ल द्रोइत देस रोइस न एकोट दें सी बिएन क्यू देंस ल साइलेंस'।

अध्याय 8
जैसुइट और जैन्सनिस्ट

कुछ व्यक्तियों के मतानुसार फ्रांसीसी विवेक का सबसे अधिक प्रकटीकरण तुरेन और कोन्डे अभियानों मे दिखाई देता है, कुछ अन्यों के अनुसार वर्साय की सुन्दरता में भी प्रकट होता है। इनके अतिरिक्त एक और वर्ग भावनाओं की अभिव्यक्ति में भी इस प्रकार के विवेक प्रदर्शन को देखता है। जेसुएट और जेन्सेनस्टि के आपसी संघर्ष के परिणामस्वरूप इस युग की कुछ महत्वपूर्ण बातों को देखा जा सकता है।

अनुकम्पा का सिद्धान्त (The theory of Grace)

सेटपाल और सेन्टऑगस्ताइन पहले दो धर्मोपदेशक थे जिन्होंने मानव, आत्मा और ईश्वर के मध्य सम्बन्धों के प्रति ध्यान आकर्षित किया। दोनों ही विचारकों ने अनुकम्पा के सिद्धान्त की व्यापक व्याख्या की और इस सिद्धान्त पर विभिन्न प्रकार के रहस्यमय आवरण भी डाले जो कि एक सामान्य व्यक्ति को निराश कर देने के लिये पर्याप्त थे। सेन्ट आगस्ताइन ने 386 ई० पू० में धर्म-परिवर्तन किया था। उन्होंने अपना जीवन ईसाई-धर्म के सिद्धान्त को स्थापित करने एवं उनकी व्याख्या करने में लगाया, परन्तु उन्होंने इस सम्बन्ध में ईसाई-धर्म के संस्थापक का अनुकरण नहीं किया, अपितु सेन्टपाल का अनुगमन किया। जहां स्टोइक्स का यह विचार था कि अनुकम्पा का सिद्धान्त मानव प्रयत्नों के परिणामस्वरूप प्राप्त किया जा सकता है वहीं दूसरी ओर सेन्टपाल के मतानुसार यह सिद्धान्त केवल ईश्वर के द्वारा ही प्रदान किया जाता है तथा मानव-मुक्ति के सम्बन्ध में दैवी शक्ति महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। मैनीकन की शिक्षाओं में जहां कि सेन्ट आगस्ताइन के पतन के सिद्धान्त (the doctrine of fall) के आधार पर समझौता किया जा सकता है, यह कहा जा सकता है कि ये दोनों ही सिद्धान्त अच्छे और बुरे के प्रतिरोधक पर आधारित थे, जिस पर सेन्ट आगस्ताइन ने अपने अनुकम्पा के सिद्धान्त का निर्माण किया था और जो मानव जीवन में दैवी आधार पर व्यक्ति को प्रभावित कर सकता था। इस आधार पर आगस्ताइन ने यह निष्कर्ष निकाला कि केवल वे ही व्यक्ति चुने जा सकतें हैं जिन पर ईश्वर का वरदहस्त है। इसके विपरीत पेलेगियन्स जो कि मोक्ष-प्राप्ति में मानवीय योगदान पर भी कुछ बल देते थे, को नास्तिक या विधर्मी कहा गया और यहीं से ईसाई-धर्म दो भागों में विभाजित हो गया, जिनमें से एक को अनुकम्पा का सिद्धान्त

(theory of grace) का समर्थक और दूसरे को स्वतन्त्र इच्छा का सिद्धान्त (theory of freewill) कहा जाने लगा। अनुकम्पा के सम्बन्ध में आगस्ताइन के विचारों ने एक नये सिद्धान्त को जन्म दिया जिसे देवाधीनता के सिद्धान्त (doctrine of predestination) कहा जाने लगा। आगस्ताइन के मतानुसार ईश्वर आरम्भ से ही व्यक्तियों के लिए दण्ड की व्यवस्था नही करता, न ही वह उनके भविष्य के बारे में जानता है, ईश्वर तो व्यक्तियों को नैतिक और विवेकशील शक्तियों से मुक्त कर देता है। इन व्यक्तियों के उपयोग का उत्तरदायित्व स्वयं व्यक्तियो पर ही है। सन्त के मतानुसार बिना ईश्वरीय अनुकम्पा के व्यक्ति कुछ प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिये मानवीय दण्ड और ईश्वरीय कृपा अतुलनीय है। काल्विनवादी विचारधारा और कुछ सीमा तक लूथरवादी दृष्टिकोण एक दूसरे के अधिक समीप हैं। अन्तर केवल यह है कि प्रोटेस्टैन्ट मानव-पतन के सिद्धान्त के परिणामों पर अधिक बल देते हैं और व्यक्ति की प्रकृति को एक ऐसी विकृत प्रकृति मानते हैं जो बिना ईश्वरीय अनुकम्पा के अभिशाप है[1]। मुक्ति प्राप्त करने के सम्बन्ध में प्रोटेस्टेन्ट और सेन्टआगस्ताइन के मतानुसार मानव-प्रयत्न व्यर्थ है। इस प्रकार इन अनेक अर्थों में सेन्ट पाल और सेन्टआगस्ताइन की शिक्षायें वर्तमान समय की देवाधीनता के सिद्धान्त पर आधारित प्राय. सभी धर्मशास्त्रों की मूल है।

वाल्टेयर और अनुकम्पा सिद्धान्त (valtaire on grace)

अपनी पुस्तक दिक्शिआनेएर फिलोसोफिक में वाल्टेयर अनुकम्पा के सिद्धान्त की निम्न प्रकार व्याख्या करता है—धर्मोपदेशक अनुकम्पा (grace) शब्द का उपयोग ईश्वर का एक विशेष कार्य मानकर करते हैं जिसका उसने व्यक्ति को सुखी और न्यायरत बनाये रखने के लिए उपयोग किया है। कुछ के अनुसार ईश्वर ने सभी व्यक्तियों को अनुकम्पा प्रदान की है, कुछ के अनुसार यह अनुकम्पा केवल एक विशिष्ट जाति के सदस्यों तक ही सीमित है, और कुछ के अनुसार यह बहुत ही अधिक सीमित है।

धर्मोपदेशकों के अनुसार यदि कोई विरोध करता है तो उसको क्षमा किया जा सकता है।[2] यह एक प्रकार से ऐसी क्षमा है जो ऐसे अपराधी को प्रदान की जाती है जो पुनः कभी दण्डित नहीं किया जाता। सेन्टथामस के मतानुसार अनुकम्पा का सिद्धान्त एक ठोस रूप में है, जेसुइट बोहर के अनुसार यह ऊन जैने से

---

1 देखिये मेबिले, कांतोवर्स सूर ल लिब्र ओ दि-सेप्तिएम सिएक्ल, तथा एन० एबरक्रोम्बे, दि आरिजन-आव जैनसेनिज्म।

2 आम धार्मिक राय यह थी कि सफीशिएन्ट ग्रेस का प्रतिरोध किया जा सकता था और इस प्रकार यह वास्तव में इनसफिशिएन्ट थी।

क्वाय (un jene sais quoi) के नाम से पुकारा जाना चाहिये। सम्भवत: यह सबसे अच्छी परिभाषा है।

ऐसा कहा जाता है कि मोरक्को के राजा मूले इस्माएल के 500 सन्तानें थीं। आप उस समय क्या कहेंगे यदि माउण्ट एटलस का कोई फकीर आपसे आकर यह कहे कि मोरक्को के राजा को सपरिवार भोजन कराने के पश्चात मूले इस्माएल ने निम्न प्रकार अपने विचार व्यक्त किये, "मैं मूले इस्माएल हूं और अपने वैभव के लिए मैंने आप सब को जन्म दिया है। मैं आपका उतना ही ध्यान रखता हूं जितना कि एक मुर्गी अपने बच्चों का ध्यान रखती है। मैने एक घोषणा कर दी है कि मेरा एक छोटा लड़का टेफीलेट का राजा होगा और दूसरे के पास मोरक्को रहेगा और जहां तक मेरे अन्य 498 बच्चों का सम्बन्ध है, मैं आदेश देता हूं कि उनमें से आधे पहियों के नीचे कुचल दिये जायें और शेष जला दिये जायें, आखिर मैं मूले इस्माएल हूं।" सम्भवत: आप इस मुसलमान फकीर को, अफ्रीका का सबसे बड़ा मूर्ख मानेंगे।

परन्तु यदि तीन या चार हजार मुसलमान फकीर इसी प्रकार की बातों को दोहराने लगे तो आप क्या करेंगे ? क्या आप उनका पानी और रोटी उस समय तक के लिये बन्द नहीं कर देंगे जब तक कि वे पुन: ठीक होश हवास में नहीं आ जाते ? आप कहेंगे कि मेरा यह विचार उचित है यद्यपि यह **सुप्रालेप्सरीज**[1] के मत के विरुद्ध है जो विश्वास करते हैं कि मोरक्को के शाह ने अपने 500 उत्तराधिकारियों को केवल अपने वैभव के लिये उत्पन्न किया है और जो केवल सदैव यही सोचते रहते हैं कि केवल दो को छोड़कर, जिनके भाग्य में शासन करना लिखा है, अन्य सभी को या तो मार दिया जायेगा या जला दिया जायगा। परन्तु आप कहेंगे कि मैं **इन्फ्रालेप्सरिज** की विचारधारा पर आक्रमण करते समय गलत हूं, जो कि यह मानते हैं कि वास्तव में मूले इस्माएल अपनी सन्तानों को नष्ट करना नहीं चाहता, परन्तु वह यह देख रहे हैं कि ये सन्ताने उसके लिए लाभप्रद नहीं है। अत: उन्होंने एक अच्छे पिता होने के कारण यह निर्णय लिया है कि बच्चों से छुटकारा पाने का केवल एक ही मार्ग है—या तो उन्हें जला दिया जाय या उन्हें मार दिया जाय। काश ! सुप्रालेप्सरिज, इन्फालेप्सरिज सफीशियेन्ट, एफीशियेन्ट, जेनसेनिस्ट और मौलिनिस्ट मनुष्य के अनुरूप व्यवहार करते और ऐसी घृणास्पद मूर्खताओं से संसार को सन्तप्त करना छोड़ देते।

---

1 सुप्रालेप्सरीज का यह विश्वास था कि दैवी आज्ञायें मानव अस्तित्व से पहले ही प्रदान कर दी गई थीं। इनफ्रेलेप्सरीज के अनुसार कि ये आज्ञायें पतन के परिणामस्वरूप आरम्भ हुई थीं। काल्विनवादी सुप्रालेप्सरीज का समर्थन करते थे।

मोलिना तथा कानग्रुइज्म

करीब दो शताब्दियों तक धर्मोपदेशक इसी प्रकार के विषयों में बुरी तरह उलझे रहे। मध्य युग के उत्तरार्ध में सेन्ट आगस्ताइन की विचारधारा में कुछ परिवर्तन दिखायी दिये और एक बार फिर अनुकम्पा व स्वतन्त्र इच्छा के सिद्धान्तों पर वाद-विवाद आरम्भ हो गया। काल्विन ने देवाधीनता (प्रिडेस्टीनेशन) के सिद्धान्त की जो व्याख्या की थी वह किसी अन्य बात से समझौता नहीं कर सकती थी, जो मुख्यत: चर्च-पिताओं के (church fathers) अधिकारों को अविवादास्पद मानती थी। यह सोचते हुए कि अनुकम्पा तभी प्रभावकारी होती है जब इच्छा सहयोग करे पुर्तगाल के ऐवोरा (Evora) नामक स्थान में लुईमोलीना[1] (1535-1601) नामक एक ईसाई धर्मोपदेशक ने स्वतन्त्र इच्छा और पूर्व निर्धारित अनुकम्पा (Predetermined Grace) के सिद्धान्तों को अपनी पुस्तक De liberi arbitrii cum Gratiae donis con cordia, (1588) में मिलाना भी चाहा। मोलिना की पुस्तक व्यापक रूप में पढ़ी गयी और उसके द्वारा प्रदत्त समझौता जिसे कानग्रुइज्म (Congruism) कहा जाता है बहुतों को स्वीकार भी था, परन्तु डोमिनिकन्स द्वारा इसकी कटु आलोचना की गई जो कि इसे पेलागिअन (Pelagian) समझते थे। मोलिना के मतानुसार वह विज्ञान जिसके द्वारा ईश्वर भविष्य के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है, वास्तव में क्या है और क्या होगा के बीच का विज्ञान है। यह एक माध्यमिक विज्ञान है जिसके द्वारा ईश्वर भविष्यवाणी कर सकता है। इस प्रकार ईश्वर अपनी योजना को बिना मानव की इच्छा की स्वतन्त्रता में बाधा उत्पन्न किए लागू कर सकता है। इसी प्रकार व्यक्ति अनुकम्पा के सिद्धान्त का विरोध कर सकता है, चाहे यह कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि अनुकम्पा प्राप्त करने से पूर्व उसकी इच्छा शक्तिशाली होनी चाहिये। एक निर्लिप्त मस्तिष्क भी बिना किसी पूर्व निश्चय के भविष्य का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। यह एक ऐसा सिद्धान्त है जो कि वर्तमान युग में अनोखा नहीं कहा जा सकता। इस सिद्धान्त ने एक लम्बे वाद-विवाद को जन्म दिया जिसके मुख्यत: जेसुइटों की ओर से मोलिना और डोमीनिकन्स की ओर बेनेज आफ सेलामेन्का (Benez Salamanca) (1528-1604) प्रतिनिधि थे। 1594 में पोप क्लीमेंट अष्टम ने इन विवादास्पद धर्म-गुरुओं को

---

1 इस स्थान पर स्पेन के जेसुइट माइकेल मालीनास (1627-1696) से मत भ्रम नहीं होना चाहिये जिसने अपनी पुस्तक स्प्रीच्युल गाइड (16 5) में कुछ सिद्धान्तों की विवेचना की है और जिसके लिए उसे दण्डित भी किया गया था। देखिये अध्याय 8।

रोम में आमन्त्रित किया जहां वाद-विवाद के दौरान अनेक जैसुइट धर्म-प्रचारक दुर्जय डोमीनिकन थामस आफ लेमाज (Dominican Thomas of Lemas) के सामने सशरीर धराशायी भी हो गये। ऐसा कहा जाता था कि उसकी स्मरणशक्ति श्रेष्ठ थी, आवाज में बल था और शरीर गठित था।[1] अनेक पोप आये और चले गये, परन्तु किसी निर्णय पर नही पहुंचा जा सका, और जब 1605 में यह विवाद समाप्त हुआ तब भी कोई निर्णय नहीं लिया गया। यद्यपि सामान्य राय यह थी कि जेसुइट गलती पर थे और वेनिस से उनके बहिष्कार के बाद पॉल पंचम ने उनके कष्टों को और अधिक बढ़ाना नहीं चाहा, अन्यथा वह उसी वर्ष उनके सिद्धान्तों का खण्डन करने वाला था।

डोमिनिकन और जैसुइट

17वीं शताब्दी के कैथोलिकों के सम्मुख अनुकम्पा के दो विकल्प थे टामिज्म (Thomism) और मोलिनिज्म (Molinism), जिनमें से एक डोमिनिकन और दूसरा जैसुइट था, जिनमें से उन्हें एक चुनना था। यदि एक ईश्वरी इच्छा (will of god) पर बल देता था तो दूसरा मानव स्वतन्त्रता पर, यदि एक अपरिवर्तनशील था और समझौते का इच्छुक नही था तो दूसरा, उदार, सहिष्णु और आशावादी था जो यह मानकर चलता था कि मोक्ष प्राप्त करना मानवीय प्रयत्नों के बाहर नहीं है। टामिस्ट यह मानते थे कि व्यक्तिगत सन्तुष्टता सर्वोपरि है और इसके बिना कोई व्यक्ति अपने कार्यों को ईश्वर के सम्मुख न्यायोचित नहीं ठहरा सकता। 'एफीशियण्ट' के प्रतिकूल 'सफीशिएण्ट' अनुकम्पा प्रत्येक व्यक्ति को दैवी आभास के रूप में मिलती है और वह आत्मा को वास्तविक अर्थात् एफीशिएण्ट अनुकम्पा के लिए। दूसरी ओर जैसुइटों का यह विचार था कि मानव इच्छा और ईश्वरीय कृपा साथ साथ कार्य करती है यह तो व्यक्तिगत स्वतन्त्रता है जो मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को निर्धारित करती है, 'सफीशिएन्ट' और 'एफीशिएन्ट' अनुकम्पा बिल्कुल अलग अलग नहीं है, बल्कि इन्हें आपस में मिलाया जा सकता है। ईश्वर का पूर्व विज्ञान एक रहस्य है जिसका जैसुइट रहस्योद्घाटन करना नहीं चाहते। उनका अनुकम्पा का सिद्धान्त व्यावहारिक है, एक कठिन समस्या का शान्तिप्रिय हल है, और इसलिए वे यूरोप में कैथोलिकवाद की पुनः स्थापना चाहते हैं। दूसरी ओर स्पेनिश डोमिनिकन एक संकुचित विचारधारा को अपनाते हैं जिनके अनुसार राष्ट्रीय जागरण मूर्स (Moors) से एक लम्बे संघर्ष का परिणाम है। यदि डोमिनिकन्स चाहते तो वे बहुत आसानी से अपने विरोधी विचारधाराओं का सफाया कर सकते थे। जैसुइटों ने इसीलिए अपनी विचारधारा को व्यापक रूप

1 पेक्योर, ला जेनसिनिज्म, 195।

दिया, क्योंकि वे विश्वास करते थे कि मोक्ष सभी व्यक्तियों को प्राप्त हो सकती है, और इस प्रकार सत्य का प्रचार किया जा सकता है।

जैनसेन (Jansen)

लूवें विश्वविद्यालय द्वारा इस वाद-विवाद में एक नया तर्क प्रस्तुत किया गया। 1520 से ही यह विश्वविद्यालय रूढ़िवादियों और लूथरवाद के विरोध के लिए प्रसिद्ध था परन्तु शताब्दि के उतरार्द्ध में यह सन्देह किया जाने लगा कि इस विश्वविद्यालय के ही कुछ प्रोफेसर उन सिद्धान्तों को ही अपना रहे है जिनके लिए इतना भारी सघर्ष किया गया था। 1551 और 1636 के बीच दो प्राध्यापको बेयस[1] (Baius) और जेनसेनिअस प्रिडेस्टीनेशन के सम्बन्ध में काल्विनवादियों के समान ही थे। बाद में जेनसेन ने (1585-1638) अपने जीवन में भारी मात्रा में धर्म-सबधी साहित्य प्रस्तुत किया। उसके विचार कैथोलिक परम्पराओं के अनुसार थे और उसकी मृत्यु भी यप्रेस विशप (Bishop of ypres) के रूप मे हुई। और यदि उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका आगास्टिनस नामक ग्रंथ प्रकाशित न हुआ होता तो उसे कोई भी न जानता। उसने सेन्ट आगस्ताइन के जीवन का व्यापक अध्ययन किया परन्तु एक आलोचक या व्याख्याता के रूप में नहीं, अपितु एक टीकाकार के रूप में, जिसने उसके मूल ग्रन्थों की व्याख्या की। उसका विश्वास था कि धर्म एक समझने की वस्तु नहीं है अपितु एक स्मरण-शक्ति का तत्व है, और इस संबंध में व्यापक सामग्री बाइबिल व चर्च-पिताओं के पास उपलब्ध है। तदनुसार उसने अगस्ताइन की सभी पुस्तकों का 10 बार अध्ययन किया और विशेषत: उन ग्रंथों का जो ईश्वरीय अनुकम्पा के सिद्धान्त से सम्बन्धित थे 30 बार अध्ययन किया। यदि वह विधर्मी था तो एक मात्र अनिच्छापूर्वक ही। उसने यह कभी नही सोचा कि सेन्ट आगस्ताइन पर उसकी विवेचना चर्च-संबधी विषयों में विवाद को जन्म देगी।

जेनसेन और सेन्ट सायरन

डच धर्मोपदेशक डुबर्गिए द हारेन नामक एक उत्कट स्वप्न-द्रष्टा के घनिष्ठ सम्पर्क में आया जो 1581 में बेयोन नामक स्थान में एक पुराने बास्क परिवार में उत्पन्न हुआ था तथा जो 1620 में ए बे आफ सेन्टसायरन का 'एबी' हो गया। डच में सावधानी और परिश्रमशीलता थी इसके विरूद्ध बास्क में उद्दाम उत्साह था। दोनों में यही समानता थी कि वे सेन्ट आगस्ताइन के जिज्ञासु शिष्य बनने को

---

1 माइकेल बेयस अथवा द बे (1513-1589)। डोमिनिकन बेज से भ्रमित नहीं होना चाहिए।

उत्सुक थे। वेयोन मे जब जेनसेन सेन्ट सायरन के अतिथि के रूप में ठहरा हुआ था तो आतथ्यिकारी माता अपने पुत्र को यह चेतावनी देने के लिए बाध्य हुई कि वह अपनी विचारधारा को नियन्त्रित रखे अन्यथा वह फ्लेमिंग (जेनसेन) को इन बड़ी-बड़ी पुस्तकों से मार डालेगी।[1] ऐसा कहा जाता है कि उसके जीवन का अन्त जहर खिला कर किया गया।[2] सेन्ट सायरन जेनसेन के समान ही पक्का रूढ़िवादी था, परन्तु उसने रिशेलू के किसी भी सिद्धान्त को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।

एण्टोनी अरनॉल्ड

एक अन्य व्यक्तित्व जिसने काल्विनवाद के भाग्य-निर्माण मे महत्वपूर्ण भाग लिया वह एण्टोनी अरनॉल्ड था जो कि गेलीकन की 20 वीं संतान थी जिसने पेरिस विश्वविद्यालय में जैसुइटों के प्रवेश के विरूद्ध फ्रांसीसी विरोध का प्रतिनिधित्व किया था। यह प्रतिरोध बड़ा भयकर था क्योंकि यह विश्वविद्यालय की स्वतन्त्रता से सबंधित था। यह संघर्ष 1643 में उस समय तक समाप्त नहीं हुआ जब तक कि (रिशेलू की मृत्यु हो गयी) फ्रांस में जैसुइट समर्थकों की संख्या कम नहीं हो गयी और उन्होंने शैक्षणिक एकाधिकार के प्रति अपने प्रतिरोध को वापस नहीं ले लिया।[3] अरनोल्ड परिवार जो कि इस प्रकार के परिणाम के लिये बहुत अधिक उत्तरदायी था, जैसुइटों द्वारा कभी भी नहीं भुलाया जा सका। 1612 में उत्पन्न एन्टोनी अरनोल्ड फ्रांस में जैसुइट-विरोधी परिवार का एक प्रसिद्ध सदस्य था और अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में सेन्ट सायरन से बहुत अधिक प्रभावित हुआ था। वह अपनी कृति द ला फीक्वेन्त कम्यूनियाँ (De La Frequente Communion) के लिए बहुत अधिक प्रसिद्ध है जिसमें उसने आध्यात्मिक तत्परता पर बहुत अधिक बल दिया है। इनोसेन्ट 11वें ने उसको कार्डिनल बनाना चाहा, बोसुए ने उसके ग्रन्थों का बहुत व्यापक अध्ययन किया। यद्यपि वह जैसुइटों का शत्रु था तथापि वह निष्ठावान कैथोलिक था।

प्रारम्भिक जेनसेनिस्ट

इस प्रकार जहां तक जेनसेन, सेन्टसायरन और एन्टोनी अरनोल्ड के जीवन-वृत्तों से ज्ञात होता है, अपने आरम्भिक वर्षों में जेनसेनिस्ट आन्दोलन (यदि इसे आन्दोलन कहा जाय) एक मात्र जेसुइट विरोधी प्रचार था। जो उत्साही कट्टरपंथी

---

1 हालेन्ड स्थित लीरडाम के निकट 1585 में उत्पन्न हुआ था, 1630 में लोवेन में प्रोफेसर नियुक्त किया गया, 1635 में यप्रेस का विशप बना तथा 1638 में मृत्यु हुई।

2. पी० एफ० मेथ्यू कृत लेस कन्फलसिनरीज द सेन्ट मीडार्ड 12 में उद्धृत।

3 गेजियर कृत हिस्तोरे जनरेल द मूवमेन्ट जेनसनिस्म 145।

कैथोलिकों द्वारा सचालित था । कट्टरपथ और सेण्ट आगस्ताइन के नाम पर आरम्भिक जैनसेनवादियों ने कैथोलिक विचारधारा से मालिनिस्ट सम्प्रदाय की इच्छा-स्वतन्त्रता को समाप्त करने का प्रयत्न किया । ऐसा प्रतीत होता है कि इसी इच्छा स्वतन्त्रता के सिद्धान्त की सहायता से सम्भवत: जैसुइट ईश्वरीय सत्ता को चुनौती देना चाह रहे थे ।

बेरूल, आंगेलीक, अरनोल्ड और जामे(Berulle, Angelique Arnauld and Zamet)

जेनसेनवाद के इतिहास में तीन और मुख्य विचारक सम्मलित किये जा सकते हैं जिनमें से प्रथम कार्डिनल बेरूल (1575–1629) जो कि सेन्ट सायरन और जेनसन दोनों के ही मित्र थे तथा जिनकी 1661 में स्थापित फ्रेंच आरेटरी ने जेसुइटों के प्रचुर विरोध को जन्म दिया था, स्कूलों और विश्वविद्यालयों को भी उनकी शिक्षाओं ने बहुत अधिक प्रभावित किया था । जैसुइटों ने बेस्कले के विरूद्ध रिशेलू को अपने पक्ष में प्रस्तुत किया, सौभाग्य से 1629 में बेरूल की मृत्यु हो गयी अन्यथा सम्भवत: बेसले के विरूद्ध रिशेलू का पद ग्रहण करना एक राष्ट्रीय वाद-विवाद को जन्म देता । इस संदर्भ में माता आंगेलीक अरनोल्ड ने भी विशेष भूमिका अभिनीत की जो एन्टोनी की बहन थी और अपनी आरम्भिक अवस्था में ही पेरिस के निकट स्थित पोर्ट रोयल द शाम्स के मठ की संरक्षिका थी, वह अपनी इच्छा के विरूद्ध धार्मिक जीवन में प्रविष्ट करायी गयी थी, परन्तु आध्यात्मिक प्रवृत्ति की ओर उनके दृष्टिकोण को मोड़ने का बहुत कुछ श्रेय तत्कालिक धर्मोपदेशकों को भी है ।[1] इन धर्मोपदेशकों में मुख्यत: सेल्स के सेन्टफ्रांसिस और मडाम शान्तल थे । आंगेलीक अरनोल्ड इनकी इतनी अधिक भक्त बनी कि उसने अपना समूचा जीवन इस आध्यात्मिक क्षेत्र को ही अर्पित कर दिया । 1625 में अस्वस्थता के कारण वह पोर्ट रायल में निवास करने लगी जिसका निर्माण कार्य 1655 में पूरा हुआ । लांग्रे के बिशप जामे की जागरूक पवित्रता से प्रभावित होकर आंगलीक ने उसे पोर्ट रायल में पादरी का कार्य करने के लिये मना लिया और कुछ समय तक दोनों ने प्रशासन और संगठन के अपने कार्यों में एक दूसरे से सहयोग किया । जेनसेनवाद के आरम्भिक वर्षों में जामे[2] का भी अपना विशिष्ट स्थान है, क्योंकि वह एक सच्चा और लगन का मनुष्य था और जैसुइटों तथा आल्टामाण्टेनों के अतिक्रमणों का निरन्तर विरोधी था । वह जेनसेनवाद के आधुनिक

---

1 सेट-बेवे, **पोर्ट रायल** (सं० 1840) 1,97 एफ. एफ. ।

2 देखिये प्रूनेल कृत **सेबसटीन जेमट, रवेक्यू द लेंगरेस, लेस आर्टिजिन्स द्यू जेनसनिज्म ।**

एवं राष्ट्रीय रुप का प्रतिनिधि है जो फ्रांस ने विकसित किया होता यदि उस पर विदेशी प्रभाव न पड़े होते। यह जामे था जिसने एक बास्क को पोर्ट रायल में विपुल आध्यात्मिक सम्पदा एकत्र करने के लिए बुलाया था। जेनसेनवाद का इतिहास 1633 में उस समय आरम्भ होता है जब सेन्ट सायरन उसके संघ में प्रविष्ट हुआ।

सेन्ट सायरन

चर्च माता को सेंट सायरन[1] सेल्स का एक नया सेन्ट फ्रांसिस दिखाई दिया। यह एक ऐसा व्यक्ति था जो अपने जीवन की पूर्व प्रचलित सभी भौतिक विचारधाराओं से बिल्कुल अलग था। उनके उपदेशों का सार यह था कि यह वर्त- मान संसार भ्रष्टाचार और पाप से भरा हुआ है। यहां तक कि चर्च भी इस प्रकार के कार्यो में लिप्त है और एक सामान्य व्यक्ति को मोक्ष मिलना बड़ा दुर्लभ है। यहां तक कि बड़े-बड़े परिवारों में भी सम्भवत: किसी एक की ही रक्षा की जाती होगी।[2] यदि मोक्ष प्राप्त करने वालों के नाम उदघृत करने लगे तो सम्भवत· केवल उन्हीं बच्चों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जिनकी मृत्यु जन्म लेने के साथ ही हो गई थी। यद्यपि सेन्ट सायरन उदारवादी धर्मोपदेशक के रूप में स्वीकार किया जा सकता है तथापि उसने उन सभी काल्पनिक कलाओं का खण्डन किया जो व्यक्ति को भ्रष्ट करती है। वह बसन्त ऋतु से घृणा करता था क्योंकि इस ऋतु में उत्पन्न होने वाले फूल अल्पजीवी होते हैं और किसी प्रकार का फल नही देते। इसके विपरीत वह शरद ऋतु को अधिक पसन्द करता था। उसके मतानुसार एक ऐसी आध्यात्मिक शक्ति है जो व्यक्ति की आत्मा को सदैव प्रभावित करती रहती है। जब यह प्रभाव पूरा हो जाय तो व्यक्ति को संसार से मुक्ति दे देना आवश्यक है, तभी उसे मोक्ष मिल भी सकती है।[3]

इस प्रकार के उपदेशों ने मठ में रहने वाली स्त्रियों को बहुत अधिक प्रभा- वित किया। अभी तक उनकी ओर से यह शिकायत की जाती रही थी कि उपदेश के समय सड़क पर हो रहा शोर उनको बहुत अधिक विचलित करता है, परन्तु यह सब शिकायतें उस समय समाप्त हो गयीं जब सेन्ट सायरन ने यह कहना शुरू किया

---

1 ब्रीमांड (हिस्तोरे लितररे दयु सेन्टीमेन्ट रिलीजिक्स एन फ्रांस, 4,2) उसे 'अन बेरूले मेलेडे' (un berulle malade) कहकर पुकारता है। सेंते-वीबे, पूर्व उद्धृत, 1, खंड 2 तथा ल पोर्ट रायल द म. द सेन्ट सायरन भी देखिये।

2 प्रूनेल, सीबेसटियन जेमट, 251।

3 सेंट सायरन कृत लेटर्स स्प्रीच्यूल्स एत चैरीटिनेस (सं० 1674), खण्ड 1,28।

कि हम उस व्यक्ति से प्रेम करते हैं जो हमें शाप देता है, क्योंकि हम उसी व्यक्ति के शरण में फिर जाते हैं जिससे कि वह हमारी रक्षा करे।[1] सेन्ट सायरन का दर्शन काल्विन की अपेक्षा अधिकांश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण तथा कुछ के लिये सौभाग्य-पूर्ण था। उसका दर्शन एक प्रकार से समुद्र में आये तूफान के समान था जो बहुत शीघ्र ही तीव्र गति को प्राप्त कर लेता है तथा बहुत शीघ्र ही ठंडा भी हो जाता है। परन्तु इतना तो मानना ही होगा कि उसने आध्यात्मिक क्षेत्र में अनेक रगों को जन्म दिया, चाहे इन रंगों का परिणाम समाज के लिये अधिक दुविधाजनक ही क्यों न रहा हो। आरम्भ मे जैमा बहुत अधिक उत्साही था, परन्तु वह शीघ्र ही ईर्षालु बन गया। वह ऐसा अनुभव करता था कि उसके सहयोगी ने जिसे कि उसने स्वयं आमन्त्रित किया था अपदस्थ कर दिया है और अब उसका वह महत्त्व-पूर्ण स्थान नहीं रहा है जो सम्भवतः पहले था। सेन्ट सायरन के सम्बन्ध मे लिखते हुए जैमा ने लिखा, "ईश्वर ने इस व्यक्ति को एक प्रकार से मेरे लिये फांसी के फन्दे के रूप में दिया है। उसने मुझे सत्यता का मार्ग दिखाया, परन्तु मैं अनुसरण नहीं कर सका और अब वही मार्ग मेरी हत्या कर रहा है।" आंगलीक आरनोल्ड़ के साथ विचार विभिन्नता में उसे मुख्य पादरी[2] पद (Diocese) से हट जाने के लिये बाध्य किया, परन्तु कुछ ही समय पश्चात सेन्ट सायरन को भी रिशेलू की आज्ञा से पोर्ट रायल छोड़ने के लिये बाध्य होना पड़ा और विसेन्स स्थित कारगार में शरण लेनी पड़ी।

उसकी गिरफ्तारी के कारण

सेन्ट सायरन किसी अपराध के लिये दोषी नहीं था। यदि उसका कोई अपराध था तो यह कि वह ड्यूक आफ आर्लियां और हाउस आफ लोरेन की युव-रानी के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कराने में असफल रहा था। जेसुइटों द्वारा सेन्ट सायरन के प्रति षड्यन्त्र रचने का आरोप लगाया गया, उस पर यह आरोप था कि वह चर्च की सत्ता को उखाड़ फैंकना चाहता है[3]। उसके मित्र जैनसन ने 1635 में एक परिषद के द्वारा जिसे **मार्स गैलिक्स** (mars gallicus) कहा जाता है, रिशेलू और गस्टवस अडोल्फ के बीच मित्रता समाप्त करने के लिए प्रयुक्त किया था। यही नहीं, उस पर यह भी आरोप लगाया गया कि वह इस प्रकार के विचार का प्रचार करता रहा कि पिछली 5 या 6 शताब्दियों से चर्च जैसी कोई संस्था

---

1 सेलडन कृत टेबिल टॉक।

2 प्रूनेल, पूर्व उद्धृत, 233।

3 देखिये गेजियर कृत हिस्तोरे जनरेल द्यू मूवमेन्ट जेनसनिस्ट 1,42, तथा फूजट कृत लेस जेनसनिस्टस 89।

ही नहीं रही है तथा जैसुइटो का निष्कासन होना चाहिए।[1] इन्ही सब कारणों के वशीभूत होकर सेन्ट सायरन को जेल भेजने के लिए रिशेलू को आदेश देने पड़े। जब सेन्ट सायरन को कारागार मे बन्द कर दिया गया तो रिशेलू यह सोचने लगा कि वास्तव में कहीं सेन्ट सायरन ही सही न हो। इसीलिये उसने अपने संस्मरण-लेखक को इस प्रकार के आदेश दिये कि वह यह सिद्ध करे कि आधुनिक विचार ही सन्तोषप्रद है। कार्डिनल की विचारधारा काफी सुविधाजनक थी, परन्तु उसकी मृत्यु के उपरान्त संस्मरणकर्ता ने इस बात का ध्यान रखा कि उसके संस्मरण कहीं नष्ट न हो जाय।[2]

कारागार में उसकी गतिविधियां

कारागार के अपने 6 वर्ष सेन्ट सायरन ने पुस्तक लिखने में बिताये। उसका महान ग्रंथ लेत्र क्रेतिएन ए स्पिरितुएल (Letters chretiesnnes et spirituell) प्रकाशित हुआ। जैसुइट और उनके साथी इस बात पर बहुत अधिक प्रसन्न थे कि उनका शत्रु कारागार में पड़ा हुआ है। पोर्ट रायल का शैक्षणिक कार्य जो कि सेन्ट सायरन के द्वारा आरम्भ किया गया था, अस्थायी समय के लिये बन्द कर दिया गया और फोबर्ग, सेन्ट जैक्युएम मठ की स्त्रियां अनावश्यक रूप मे बहुत अधिक प्रचार का केन्द्र बन गयीं। रिशेलू की मृत्यु के पश्चात सेन्ट सायरन को रिहा कर दिया गया, परन्तु उसके कुछ ही महीनों पश्चात उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार 1643 में उसकी मृत्यु ने जैनसेनवाद के संदर्भ में चल रहे नाटक के एक अंक को समाप्त कर दिया।

द ला फ्रीक्वेन्त कम्युनिआं (The dela frequente communion)

यह हम देख चुके हैं कि जैसुइट मौलिना द्वारा जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया था उन सिद्धान्तों ने कैथोलिक धर्मोपदेशकों के मध्य 'फ्रीविल' और 'प्रिडेस्टीनेशन' के मध्य वादविवादों को जन्म दिया, और यह भी एक वास्तविक सत्य है कि जैसुइटों ने जिस प्रकार 'फ्रीविल' के सिद्धान्तो की रक्षा की वह केवल पोप के द्वारा निन्दा किये जाने का कारण इसलिए नही बना, क्योंकि उसे वेनिस से बहिष्कृत कर दिया गया था। सेंट आगस्ताइन के आधार पर जैनसेन द्वारा मौलिना के विचारों का खण्डन **आगस्टीनस** नामक प्रसिद्ध पुस्तक मे प्राप्त है। यह तीन जिल्दों का ग्रन्थ लेखक की मृत्यु के दो वर्ष पश्चात 1640 में प्रकाशित हुआ। 1643 तक जैसुइटों ने जैनसेनवादी विचारधारा का उस समय तक कोई प्रतिरोध नहीं किया जब तक कि अप्रत्याशित रूप में अरनोल्ड कृत द ला

---

1 फूजट कृत लेस जैनसनिस्टस, 90 से उदधृत।

2 गोदफ्रेय हरमेंट मेमायर्स (स० गेजियर), 1,81।

फ्रीक्वेन्त कम्यूनिआं प्रकाशित नहीं हो गई। इस पुस्तक में कुछ ऐसी गतिविधियों का दिग्दर्शन कराया गया है जहां कि जैसुइट अपने शिष्यों को भौतिक कार्य करने के लिये यथा नृत्य करना इत्यादि की अनुमति प्रदान कर देते हैं। यद्यपि यह अनुमति इस शर्त के साथ प्रदान की जाती थी कि वे अपने पापों की मुक्ति के लिए क्षमा प्रार्थना अवश्य करेंगे।[1] फ्रीक्वेण्त कम्युनियां का सिद्धान्त सर्वोत्तम उपाय समझा जाता था और यह समाज की उन स्त्रियों में बहुत प्रचलित था जो आध्यात्मिक सुरक्षा के साथ-साथ सांसारिक वैभव का भी उपयोग करना चाहती थीं। यह विचारधारा विनसेन्स के बन्दी की, जिसने अपने मित्र आरनोल्ड की सहायता से इस अनैतिक विचारधारा का खण्डन किया था, कटु आलोचना का विषय बनी। **फ्रीक्वेन्त कम्युनियां** नामक पुस्तक उन घटनाओं का परिणाम नहीं थी जिन्हें की सामान्यतः समझा जाता है अपितु यह उन कारणों का परिणाम थी जो मोक्ष-प्राप्ति के सिद्धान्तों की स्पष्ट विवेचना चाहते थे। जैसुइटों के मतानुसार यह पुस्तक उनकी विचारधारा पर एक भारी प्रतिघात था। इसीलिये उन्होंने इस पुस्तक के लेखक को प्रताडित करने में कोई कसर बाकी न रखी। एन आफ आस्ट्रिया की कोर्ट पर इनका इतना अधिक प्रभाव था कि अरनोल्ड को बाध्य होकर सन्यास लेना पडा। तत्पश्चात् इस प्रकार की विचारधारा को जन्म दिया गया कि यह पुस्तक यूकेरिस्ट सिद्धान्तों पर आक्रमण करती है। यह एक दुर्भावना का परिणाम था। इस पुस्तक को पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति इस प्रकार के विचार से सहमत नहीं हो सकता था। अरनोल्ड की पुस्तक बहुत अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि फ्रांसीसी जैनसेनवाद पर यह पहला महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस पुस्तक के द्वारा सेन्ट सायरन के उपदेशों की व्यापक रूप में अभिव्यक्ति की गयी है तथा लौकिक और पारलौकिक जीवन के मध्य अन्तर की व्यापक विवेचना भी प्रस्तुत की गयी जिसे की जैसुइट धर्मोपदेशक एक ही रूप में देखते रहे हैं।

पांच घोषणायें (the five propositions)

इस स्थान पर जैसुइट दो बातों से सबसे अधिक प्रभावित हुये थे। प्रथमतः अरनोल्ड परिवार के प्रति उनकी व्यक्तिगत घृणा और द्वितीयतः जेनसेन द्वारा चुनौती के रूप में प्रस्तुत किये गये अनुकम्पा (grace) के सिद्धान्त। जब वे शिष्यों को दूर करने में असफल रहे तो उन्होंने अपना ध्यान धर्म गुरुओं की ओर केन्द्रित किया और इस दृष्टि से **आगस्टीनस** (Augustinus) विवेचना की विषय-सामग्री थी। निकोलस कार्ने एक भूतपूर्व जैसुइट था और धार्मिक पुस्तकों का परीक्षणकर्ता होने के कारण इसकी विचारधारा महत्वपूर्ण स्थान रखती थी, परन्तु उसकी सेवायें

1 गोदेफ्राय हरमेंट, मेमायर्स (सं० गैजियर), 1, 81।

भी जैनसेन–विरोधी रूप में स्वीकृत की गयीं । आगस्टीनस का सावधानी पूर्वक अध्ययन करने के पश्चात वह उसमें से 7 घोषणाओं का संकलन प्रस्तुत करता है (जो बाद में केवल पांच ही रह गये) और जिन्हें यह वंशानुगत कहता है । वे घोषणायें निम्न प्रकार हैं—[1]

1 कुछ ऐसी देवीय शक्तियां भी हैं जिनकी की आज्ञा का पालन करना सम्भव नहीं, क्योंकि उनके पास आवश्यक, सन्तोषप्रद मात्रा में अनुकम्पा (grace) का अभाव है ।

2 पतन की अवस्था में आन्तरिक अनुकम्पा के साथ किसी प्रकार का प्रतिरोध नहीं किया जा सकता ।

3 पतन के पश्चात अच्छा या बुरा किसी भी रूप में व्यक्ति के लिये आन्तरिक स्वतन्त्रता रखना सम्भव नहीं है । इसलिये यदि उसे वाह्य बाध्ताओं से मुक्त कर दिया जाये तो वह काफी होगा ।

4 अर्ध–पेलेगियन्स (Semi–Pelagian) यह स्वीकार करते हैं कि अनुकम्पा के प्रतिपादन के लिये यह आवश्यक है कि आन्तरिक रूप से अनुकम्पा का सिद्धान्त स्वीकार किया जाय । परन्तु वे वंशानुगत परम्पराओं के समान ही यह विश्वास करते थे कि यह अनुकम्पा केवल मानव–इच्छा के द्वारा ही नियन्त्रित की जा सकती है ।

5 अर्ध-पेलेगियन्स (Semi-Pelagian) विचारधारा के अनुसार ईसामसीह बिना किसी भेद–भाव के सभी व्यक्तियों के हित के लिये परलोक सिधारा था ।

31 मई, 1653 को ये उपयुक्त पांच घोषणायें इनोसेंट दशम के द्वारा कटु आलोचना का पात्र बनी । जैनसेन के शिष्यों को पाखण्डी अथवा नास्तिक के रूप में चित्रित किया गया ।

क्या ये पांच घोषणायें जैनसेन की पुस्तक में उपलब्ध हैं ?

यह ध्यान रखा जाना चाहिये कि पांच घोषणायें आगस्टीनस में से उद्धृत नहीं की गई हैं, परन्तु ये वे सिद्धान्त थे जिनके सम्बन्ध में ऐसा कहा जाता है कि ये उपर्युक्त पुस्तक में सम्मिलित है । बोसुए द्वारा ठीक ही कहा गया है कि ये सिद्धान्त पुस्तक की आत्मा है, परन्तु अनेक जैनसेनवादी प्रशिक्षक धर्मोपदेशक थे और उन्होंने यह दृष्टिकोण अपनाया कि यद्यपि यह पांच घोषणायें कटु आलोचना का विषय हैं तथापि उन्होंने यह स्वीकार करने से इन्कार कर दिया कि इन पांच घोषणाओं में से कोई भी घोषणा जैनसेन के द्वारा प्रतिपादित की गयी थी । इस

---

1 गेजियर, **पूर्व उद्धृत**, खंड 1, अध्याय 5 ।

दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप अधिकार (right) और तथ्य (fact) के बीच अन्तर ने जन्म लिया। कुछ विचारकों के द्वारा यह प्रतिपादित किया गया कि पांच घोषणायें 'अधिकार' की सामग्री हैं। परन्तु वास्तविक तथ्य यह है कि ये घोषणायें आगस्टीनस में कहीं पर भी प्राप्य नहीं है।[1] इस प्रकार जैसुइटों द्वारा जैनसेनवादियों की कट्टर विचारधारा को तोड़ मरोड़ कर एक नया अर्थ देने की चेष्टा की गयी जिन्होंने अपने कैथोलिक विरोधियों को अपमानित करने के लिये अपने आपको नास्तिक या पाखण्ड कहलाना तक प्रारम्भ कर दिया। यही उस बहु उद्धृत कथन का अर्थ है जिसके अनुसार यह कहा जाता है कि 'उस समय तक जैनसेनवादी थे ही नहीं जब तक कि जैसुइटों ने उन्हें खोज न निकाला।'

डोमीनिकन और जैनसेनवादी

आरनोल्ड-समर्थक दल के लिये एक और भी ऐसा तर्क था जिसके द्वारा वह अपने सिद्धान्तों की रक्षा कर सकते थे। मोलीनिस्ट अथवा जैसुइटों का अनुकम्पा सम्बन्धी सिद्धान्त डोमीनिकन्स द्वारा आलोचना का विषय बनाया गया था जिनकी रूढीवादिता के सम्बन्ध में मत-वैभिन्य नही हो सकता। डोमीनिकन सिद्धान्तों का प्रतिपादन सेन्ट आगस्ताइन के दर्शन से उदधृत किया गया था अतः कुछ बातों को छोड़कर जैनसेनवादी विचारधारा और डोमीनिकन विचारधारा में तारतम्य स्थापित किया जा सकता था। अरनोल्ड अपने उतरार्द्ध में सम्भवतः इसी विचारधारा से प्रेरित था और सम्भवतः इसकी झलक उसकी कृति **लेटर्स प्रोविन्सिएल्स**[2] में दिखायी देती है। परन्तु शीघ्र ही इस रक्षित मार्ग को अपनाना दूभर हो उठा। चाहे सत्य हो या असत्य, इस प्रकार की अफवाह फैलने लगी कि जैनसेनवादी पोप की प्रभुता में विश्वास नहीं करते, यूक्राइस्ट सिद्धान्त को अस्वीकार करते हैं तथा वे काल्विनवादियों[3] से भी अधिक खतरनाक हैं। परिणामस्वरूप डोमिनिकनवादियों ने जैसुइटों के पक्ष में मिलने में ही अपना भला समझा और एक संयुक्त मोर्चा बनाये रखने की दृष्टि से उन्होंने अपने धार्मिक मतभेदों को समाप्त करने की चेष्टा की। अतः कुछ व्यावसायिक धर्मोपदेशकों को छोड़कर सभी ने यह अनुभव किया कि काल्विनवादी, डोमिनिकन्स और जैनसेनवादी सभी इस विचारधारा से सहमत हैं कि मोक्ष-प्राप्ति में मानव इच्छा किस सीमा तक अपना योगदान देती है। इस प्रकार यह विचार-

---

1 **लैटर्स प्रोविन्सएल्स** के अन्तिम दो खंडों में पेसकल इसी तर्क की प्रस्थापना करता है।

2 देखिये एच० एफ० स्टीवर्ट कृत **दि होलीनेस आव पेसकल**, 35, एफ-एफ।

3 ऐसा बहुधा कहा जाता था कि "जैनसनवादी काल्विन-वादियों के ही समान थे जो गिरजे के उत्सवों में भाग लेते थे।"

धारा चर्च पिता सेन्ट आगस्ताइन की विचारधारा पर आधारित थी और इस विचारधारा के विरोधी जैसुइट व्यक्तिगत दुर्भाग्य के कारण पोप की निन्दा करने में पिछड़ गये थे। दूसरे शब्दों में कैथोलिक दृष्टिकोण के अनुसार यह कहा जा सकता है कि प्रोटेस्टेन्ट दल का उग्रवादी समूह सम्भवतः यह दावा करता था कि वे उग्र कैथोलिकों की अपेक्षा अधिक रूढ़िवादी हैं। यही कारण है कि 17वीं शताब्दी के मध्य तक यह विचारधारा अधिकांश व्यक्तियों के मस्तिष्क में घर करती जा रही थी कि रूढ़िवादिता मात्र एक सापेक्ष है और प्रोटेस्टेन्ट और कैथोलिक दोनों ही इनके सामान्य सिद्धान्तों मे विश्वास करते हैं, यद्यपि इन सिद्धान्तों के अर्थ के सम्बन्ध के विभिन्नता हो सकती है।

अधिकार और तथ्य में अतन्र (Distinction of right & fact)

इस तर्क का कि पांच घोषणायें जेनसेन धर्म में प्राप्त नहीं है पेपेसी द्वारा 1656 में प्रतिउत्तर दिया गया। उनका कहना था कि चाहे शब्दशः ये प्रतिज्ञ ये उपलब्ध न हों परन्तु भावना के रूप में में ये सब प्रतिज्ञायें आगस्टीनस मे अवश्य प्राप्य है। एक फ्रांसीसी क्रिश्चियन द्वारा यह सुझाव दिया गया कि इन पांच घोषणाओ की पुष्टि राजकीय आधार पर कर दी जाये जिस पर सभी ईसाई और प्राध्यापक अपने हस्ताक्षर करे लेकिन इसके बावजूद भी जेनसेनवादी अपने इसी तर्क पर दृढ़ रहे कि ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता जिनके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि जेनसेन की कृतियों में पांच घोषणायें मौजूद हैं। 'अधिकार' और 'तथ्य' में अन्तर करते हुए उन्होंने कहा है कि हो सकता है कि पोप अधिकार के प्रश्नों पर उचित दृष्टिकोण अपना ले परन्तु जहां तक 'तथ्यों' का सम्बन्ध है उसका निष्कर्ष गलत भी सिद्ध हो सकता है। उदाहरणतः पांच घोषणायों की आलोचना करने के सम्बन्ध में वह उचित कहा जा सकता है किन्तु जब वह विचारता है कि यह पांच प्रतिज्ञायें आगस्टीनस मे से ली गई है तो उसे सही नहीं कहा जा सकता। पेस्कल पहला विचारक था जिसने इस प्रकार के अन्तर को प्रस्तुत किया, और पेस्कल के रूप में ही इस धार्मिक विवाद का सच्चा विचारक भी सामने आया। यह पेस्कल ही था जिसने जैनसेनवाद को एक सम्प्रदाय के दायरे मे से निकाल कर एक महान नैतिक और बौद्धिक आन्दोलन के रूप में प्रस्तुत किया। इस सम्बन्ध में, और अधिक विवेचना करने से पूर्व यह आवश्यक होगा कि हम पोर्ट रायल का वर्णन करें जो जैनसेन के मित्र सेन्ट सायरन के कारण महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर चुका था।

दो पोर्ट रायल्स

1625 में आंगलीक अरनोल्ड अपना मुख्यालय पेरिस-स्थित रायल को स्थानान्तरित कर चुका था। परन्तु 1648 में पोर्ट रायल द शाम्प में अनेक भिक्षुणियां रहने लगी थीं। अतः दो पोर्ट रायल बन गये थे जिनमें से एक पेरिस में और

दूसरा वर्साय के निकट था ।[1] तात्कालिक समय मे पोर्ट–रायल घाटी बहुत अधिक पवित्र थी और 1636 के पश्चात तो जैनसेनवाद में विश्वास करने वाले अनेकों व्यक्ति इसकी ओर आकर्षित भी हुए, क्योंकि पेरिस के वैभव के विपरीत यहा इस घाटी में भौतिक और आध्यात्मिकता के दर्शन अधिक सुविधाजनक थे । वे व्यक्ति एक महत्वपूर्ण घर मे रहते थे जो घाटी की ओर खुलता था । वे अपनी आध्यात्मिक विचारधारा के साथ ही साथ नवयुवक वर्ग में सांस्कृतिक और शैक्षणिक प्रगति के सम्बन्ध में भी जागरूक थे । वे सेन्ट आगस्ताइन की विचारधारा को पुनः प्रतिपादित करना चाहते थे । इन व्यक्तियों में एण्टोनी अरनोल्ड, उनके भाई अरनोल्ड द एन्डेली, सेंट आगस्ताइन कृत **कन्फेशन्स** के अनुवादक द तिलेमोण्ट ल मेत्रे, और निकोले थे ।[2] इन्होंने यूनानी विचारधारा का पुनरावर्तन किया और लैटिन के स्थान पर फ्रांसीसी भाषा को लोकप्रिय बनाया । उनकी अधिकांश साहित्यिक उपलब्धियां आपसी सहयोग का परिणाम थीं और इस दृष्टि से पोर्ट रायल **लाजिक** को एक मानक ग्रंथ कहा जा सकता है । 1655 मे ब्लेज पैस्कल भी उनसे मिल गया, जिसने अपनी युवावस्था में ही गणित–सम्बन्धी योग्यता के कारण अधिकांश व्यक्तियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था । 1623 में उत्पन्न पैस्कल स्वास्थ्य की दृष्टि से बडा दुबला–पतला था परन्तु उसकी मानसिक शक्तियां असाधारण थीं । 16 वर्ष की अवस्था में उसने कोनिक सेक्शन्स पर महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखा । 2 वर्ष पश्चात उसने गणक यन्त्र तैयार किया तथा इटैलियन भौतिकवेत्ता टोरीसिली की गवेषणा के आधार पर जब उसने अपने सिद्धान्त की स्थापना की तब उसे पहली बार जैसुइटों की ईर्षालु प्रवृति का आभास हुआ ।

पैस्कल

ऐसा कहा जाता है कि ब्रह्माण्ड की सृष्टि गणितज्ञों के द्वारा की गई है ।[3] एक नास्तिकवादी के रूप में पैस्कल यह निष्कर्ष निकाल सकता था कि ब्रह्माण्ड की वास्तविकता बुद्धि से परे है । परन्तु एक रेखा–गणितशास्त्री के रूप में उसने सम्भवतः यह अनुभव किया गया होगा कि ब्रह्माण्ड अनेक तत्वो का परिणाम है । मोन्तेन के लेखों का अध्ययनकर्ता होने के कारण उसने एपीक्यूरिअन वाद को

---

1 भिक्षुणिया (nuns) सम्बन्धी वर्णन के लिये एम० एफ० **लानडेस कृत दि नंस आव पोर्ट रायल** देखिये ।

2 इन व्यक्तियों से सम्बन्धित विवेचन ब्रीमोंड कृत **हिस्तोरे लितररे द्यू सेंटीमेंट रिलिजक्स एन फ्रांस**, 4, तथा सेंट बेवे लिखित पोर्ट रायल, खड 1, व 2 में देखिये ।

3 देखिये सर जेम्स जींस लिखित **दि मिस्टीरियस यूनीवर्स** ।

स्वीकार किया परन्तु एक विद्यार्थी के रूप में अपनी अन्तरात्मा के प्रश्नों का उत्तर देने के लिये भी उसमे आत्मिक शक्ति का होना आवश्यक था। इस प्रकार विभिन्न विचारधाराओं से पीड़ित रहने के पश्चात जैसा कि आगे चलकर काण्ट ने भी किया, उसने इस विचार का प्रतिपादन किया कि ज्ञान को सीमित रखा जाना चाहिये जिससे कि विश्वास का उतना ही विकास हो सके, रहस्यमय आवरण के प्रति विश्वास पुष्ट होता जाये, इसके लिये यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपने विवेक का उपयोग न करे। वह पहले ही 1646 मे सेन्ट सायरन के दो शिष्यों से सम्पर्क स्थापित कर चुका था, 8 वर्ष पश्चात ऐसा प्रतीत होता था कि उसके सभी सन्देह सदैव के लिये समाप्त हो चुके हैं। एक तात्कालिक घटना ने प्रक्रिया को पूरा कर दिया। यह घटना थी उसकी भतीजी का प्राकृतिक उपचार जो पोर्ट रायल के हस्तक्षेप का परिणाम था। परन्तु इस घटना ने जैसुइटो के साथ द्वेष-भाव को और अधिक बढ़ावा दिया और सम्भवतः इसीलिए दूषित पैस्कल ने भावनात्मक उद्वलन के बावजूद ईसाई धर्मोपदेशकों के व्यक्तिगत गुणो में विश्वास करना समाप्त कर दिया। तत्पश्चात उसने अपना समस्त जीवन मनोवैज्ञानिक अनुभवों को विकसित करने में लगाया। सेन्ट पाल और सेन्ट आगस्ताइन की तरह ही उसे भी विकृत चित्त (new rosis) कहा जाना चाहिये।[1]

पेस्कल व आरनोल्ड

जनवरी 1655 में पेस्कल ने पोर्ट रायल द चैम्प मे अपना निवास स्थान परिवर्तित कर लिया। इसका अर्थ किसी विशिष्ट विचारधारा का कट्टर भक्त बनना न था, पोर्ट रायल में विवेक स्वतंत्रता पूरी तरह व्याप्त थी और पेस्कल की उपस्थिति ने उन्हें यह अनुभव नहीं होने दिया कि वह एक जेनसेनवादी है। उसने पोर्ट रायल में ऐसे समय मे प्रवेश किया जबकि ऐसा प्रतीत होता था कि आगस्टीन के अनुकम्पा सम्बन्धी सिद्धान्त के विरुद्ध उठाहा गया अरनोल्ड का संघर्ष समाप्त हो जायेगा और वह जेसुइटों और मॉलिनिस्ट का सघर्ष समाप्त हो जायेगा और वह जेसुइटों और मोलिनिस्ट के सामने झुक जायेगा। एक नवागन्तुक इस सम्बन्ध में उत्पन्न वाद विवाद में अभिरूचि व्यक्त कर सकता है। परन्तु उसके जीवन ने एक बार पुनः करवट ली जबकि अनुकम्पा सम्बन्धी सिद्धान्त ने उसके जीवन को नया मोड़ दिया।

---

1 पेस्कल पर पर्याप्त मात्रा में सामग्री उपलब्ध है। देखियें ई० जोरी कृत एल्यूद पेसकेलाइन्स, 1927, आर० एच० सालता पेसकल, दि मेन एंड दि मैसेज, 1927, सी० जी० जे० वेब कृत पेस्कल्स फिलासफी आव रिलीजन 1929, एच० एफ० स्टीवर्ट लिखित पेस्कलस एपोलोजी फार रिलीजन फ्राम दि पेनसीज 1942, जी० ट्रक० कृत पेस्कल, सन टम्पस एत ला नोत्रे 1950।

आरनोल्ड की निन्दा

उस समय स्थिति अत्यन्त ही विस्फोटक बन गयी जब पेस्कल ने वापिस हटती हुई सेना का साथ दिया। एक सामान्य घटना एक बहुत बड़े संघर्ष का कारण बन गयी थी। सेण्ट सुलपिस आलिए के नेतृत्व में जेनसन का विरोधी माना जाता था। 1655 के आरम्भिक वर्षों में सेन्ट सुलपिस के एक ईसाई पुजारी ने ड्यू द लियान–कोर्ट की सर्वोच्चता को इस आधार पर मानने से इन्कार कर दिया कि वह जेनसेनवादियों का पक्षपाती है। आरनोल्ड ने तत्काल अपने दो पत्रों के माध्यम से इस सम्बन्ध में जनता से अपील की जिसमें उसने यह प्रतिपादित करने की चेष्टा की कि 'अधिकार' (right) और 'तथ्य' (fact) में अन्तर है। तथा उसने अनुकम्पा संबंधी मोलिनिस्ट विचारधारा की आलोचना की। तात्कालिक समय में सरवोन और वेटीकन दोनों ही स्थान जैसुइटों के भारी प्रभाव क्षेत्र में थे। पोप भी[1] तात्कालिक शताब्दी का सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति समझा जाता था। अतः इस बात की सम्भावना थी कि आरनोल्ड निन्दा का पात्र बनेगा तथा चर्च से जेनसेनवादियों को निष्कासित कर दिया जायेगा। 1656 में पहली सम्भावना सत्य निकली जबकि आरनोल्ड के दो पत्रों से उदघृत की गयी पांच घोषणायें फेकल्टी आव थियोलोजी द्वारा आलोचना का पात्र बनी (यह निन्दा–प्रस्ताव बहुत ही अल्प बहुमत से पारित हुआ था), अल्पसंख्यकों को इस बात के लिए बाध्य किया गया कि उन्हें इस निष्कासित आज्ञा से उत्पन्न गतिरोध का समर्थन करना चाहिये। आरनोल्ड को फेकल्टी में से बहिष्कृत कर दिया गया तथा **सोसीयस सोर्बोनिक्स** (socius sorboricus) आदि सभी विशेषाधिकार उससे छीन लिये गये। यह अभी भी विवादास्पद है कि वास्तव में जैसुइट इस प्रकार के कठोर दण्ड के लिए कहां तक उत्तरदायी थे। परन्तु अनेक फ्रांसीसी विद्वानों ने इस प्रकार के प्रयासों का जो धार्मिक विचारधाराओं में हस्तक्षेप करते थे, विरोध किया। उनके मतानुसार कैथोलिकवाद सन्देह से परे था। जिन्होंने इस प्रकार के कदमों के समर्थन किया था उन्होंने भी आरनोल्ड और पोर्ट रायल पर लगाये गये आरोपों का खण्डन किया। अब इन्हें एक ऐसे समकक्ष नेता की आवश्यकता थी जो धार्मिक तर्क वितर्कों के आधार पर इनकी रक्षा कर सके और फ्रांस के जनमत को सन्तुष्ट कर सके।

जैसुइट और अनुकम्पा

लेटर प्रोविन्शियल्स की विवेचना करने से पूर्व यह आवश्यक है कि उन

---

1 देखिए अध्याय 9।

परिस्थितियों का अध्ययन किया जाये जिनके अन्तर्गत पेस्कल ने जैसुइट और जैनसेन-वादियों के विवाद को मूलभूत विवाद की संज्ञा दी । जैसुइट केवल धर्मोपदेशक ही नहीं थे, अपितु व्यावहारिक रूप में नैतिकतावादी भी थे। आध्यात्मिक दृष्टि से उन्हें जीवन और आचरण से सम्बन्धित व्यावहारिक समस्याओं पर भी विचार करना पड़ता था। जहां तक उनके अनुकम्पा संबंधी सिद्धान्त का सबंध है, वह अपराधों का निराकरण करने में सहायता देती है। उनके स्वयं के अनुसार यह अन्तरात्मा की शक्ति है जो व्यक्ति को उसके पापों से मुक्त कराती है। आगस्ताइन वादी प्रोटेस्टेन्ट और जेनसेनवादी प्राकृत शक्ति के साथ अन्तरात्मा की शक्ति को देखने की चेष्टा करते हैं। काल्विनवादियों के अतिरिक्त कोई भी अन्य ईसाई समुदाय मिशिनरी भावना से इतना अधिक प्रभावित नहीं हुआ जितना की जैसुइट हुए थे, उनकी गतिविधियां आदिम युग की अवस्था से लेकर चरम सीमा तक अपने सिद्धान्त का विकास करती हैं। मालावार धार्मिक[1] उत्सव (Malabar rites) इस बात का प्रमाण है कि इस प्रकार की रियायतें किस सीमा तक दी जा सकती थी।

16वीं शताब्दी के आन्दोलन

यह ध्यान रखना चाहिये कि जैसुइटों के ऊपर एक गम्भीर उत्तरदायित्व था कि वे कैथोलिक धर्म सम्प्रदाय के सबंध में उन सभी लोगों का विश्वास बनाये रखें जिनको कि उन्हें सौंपा गया था। ये एक ऐसे समय में अस्तित्व में आये थे जबकि यूरोप बौद्धिक और मध्ययुगीन दर्शन की विचारधारा से हट रहा था। ऐसे समय पर इन्होंने 16वीं शताब्दी के विभिन्न आन्दोलनों से सहयोग किया, जबकि डोमीनिकन्स अथवा टामिस्टों ने मध्ययुगीन चर्च की रूढ़िवादी परम्पराओं का प्रतिनिधित्व किया। उसी समय डन्स स्कोटस के उत्तरार्द्ध में अनेक ऐसे डाक्टर हुए जिन्होंने नयी विचारधारा को जन्म दिया तथा ओक्हम सरीखे अनेक विचारकों ने मध्ययुगीन विचारधारा के विरोध में अनेक नये सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया। स्वयं चर्च भी पुनरूत्थान आन्दोलन से नही बच सका। यहां तक की 16वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में डोमीनिकनवादियों में भी एक स्पेनिश धर्मोपदेशकों का समूह था [2] जिनमें विटोरिया और सोटो सम्मिलित थे जो कि मानवतावादी अधिक था और जिसने अन्य महत्वपूर्ण बातों के अतिरिक्त प्राकृत सिद्धान्तों की प्रस्थापना की। 1567 में पोप पायस पंचम ने अधिकृत रूप में सेन्ट टामस को डाक्टर आफ चर्च

---

1 देखिये ब्रूकर लिखित ल कोम्पेन द जेसस, 99 एफ. एफ.।

2 देखिये ई. नाइस लिखित ड्रोइल देस जेंस एत लेस एनसियस जूरीस कन्सुलेटस एस्पेगनोलस।

घोषित कर दिया, डोमिनिकन्स के लिए इसका परिणाम था अन्वेषण और प्रयोगात्मक विधि की समाप्ति। तत्पश्चात् वे एकस्तरी कृत व्यवस्था के जन्मदाता बन गये और 1914 में पोप पायस दशम ने इस बात की पुष्टि की कि डोमिनिकन सिद्धान्त रूढ़िवादी कैथोलिक विचारधारा का ही रूपान्तर है। इस प्रकार 16वीं शताब्दी से पूर्व आकारोन्मुख पद्धति स्थान ग्रहण कर चुकी थी, कौंसिल आव ट्रेन्ट व्यावहारिक दृष्टि से 'प्रिडेस्टीनेशन' के सिद्धान्त को छोड़कर अन्य सभी सिद्धान्तों का विश्लेषण कर चुकी थी तथा डोमिनिकन आफ ग्रेस के सिद्धान्त पर अपनी अनुमति दे चुकी थी। नान टैक्नीकल शब्दों में इस सिद्धान्त के अनुसार कर्तव्य उस समय तक अपने उद्देश्य की प्राप्ति मे सफल नहीं हो सकते जब तक कि वे अनुकम्पा की सहायता से न किये गये हों। सेलामानका विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बेन्ज ने सर्वप्रथम इस सिद्धान्त की व्याख्या की और इन आधार पर 16वी शताब्दी के कैथोलिक चर्च में प्रगतिशील शक्तियो की आलोचना की। इसमें कोई सदेह नहीं कि डोमिनिकन और अनुकम्पा से सबधी सिद्धान्तों में काफी अन्तर है परन्तु यह एक नमूना है कि जहां सेलामानका विश्वविद्यालय और लोवेन अपने समान विचार रखते थे, वही पहले को रूढिवादिता में तो दूसरे को नास्तिकता के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त थी। जेनसेनवादी आन्दोलन के इतिहास मे ही इस प्रकार की असंबद्धता से संबधित किसी समाधान को ढूंढा जा सकता है।

जैसुइट और आधुनिकवादी

प्रतिधर्म सुधार आन्दोलन के आधुनिकवादी जैसुइट थे और उनके विदेशी काल्विनवादी डोमिनिकन और जैनसेनवादी प्रतिक्रियावादी आगस्तीनियन विचार–धारा से प्रेरित थे। यह तथ्य बहुत मत्वपूर्ण है कि 1525 मे इग्नेशियस लोयेला डोमीनिकन न्यायधिकरण द्वारा ही दण्डित किया गया था, यह स्पेनिश इन्क्वीजिशन के समय घटित घटना थी। उसकी कृति **एक्सर सोटिया स्पिरीचुआ** तथा प्रत्येक शनिवार को कुमारी मेरी के प्रति उसकी भक्ति ने इस सदेह को निर्मित करने में सहायता दी कि वह यहूदी सप्ताह' (jewish sabbath) मना रहा है। जेसुइट आधुनिकवादी थे क्योंकि वे विशेष तत्वज्ञानी माने जाते थे। उन्होंने स्वतन्त्रता के संबंध में अपने स्वयं के सिद्धान्तों की स्थापना की, उन्होंने विरोधियों के साथ समझौता करने से इन्कार कर दिया, परन्तु उन्होने अनुकम्पा के सिद्धान्त को मानव परिधि के भीतर लाने की चेष्टा की जिसे मानवीय प्रयत्नों के द्वारा प्राप्त किया जा सके। अपने अंतिम क्षणों में वे जैनसेनवादियों के सम्पर्क में आये। मध्ययुगीन धार्मिक विचार–धारायें मुख्यत: आज्ञापालन और सत्ता के सिद्धान्त पर आधारित थीं। मध्य युग में बौद्धिक क्षेत्र में प्रसिद्धि परीक्षाओं को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करके नहीं समझी जाती थी और न ही मूल ग्रंथों के लेखन से, अपितु सार्वजनिक

वादविवादों पर किसी विरोधी को पराजित कर अथवा किसी एक विशेष सिद्धान्त पर आलोचनात्मक टीका करके अर्जित की जाती थी। 15वीं शताब्दी के अन्त तक इस प्रकार अनेक बार सम्मान अर्जित करने की चेष्टा की गयी और इस अवधि में विवेकशील साहित्य भी भारी मात्रा में उपलब्ध रहा। जैसुइटों ने इस साहित्य को विरासत के रूप में ग्रहण किया। 1494 में क्लेवेसियों ने (Summa Casuum Conscientiae) की रचना की और अधिकांश मध्ययुगीन धर्मोपदेशकों के विषय में यह कहा जा सकता है कि उनके बृहदाकार ग्रंथ तब तक पूरे नहीं होते थे जब तक उनमें कुछ न कुछ वितण्डावाद और शब्द जाल न हो। इसी अर्थ में यह सत्य है कि जैसुइटों के आने से पूर्व केज्युइस्ट मौजूद थे। यद्यपि जैसुइट केज्युइस्ट्री के आविष्कारक नहीं थे तथापि उन्होंने विश्वविद्यालय में सार्वजनिक समारोह के लिए उतने अधिक तर्क नहीं दिये जितने कि गलती स्वीकारने के अवसर पर प्रदत्त किये।

द कैज्युइस्ट

अपने अस्तित्व की प्रथम शताब्दी के दौरान जैसुइटों ने बहुत बड़ी संख्या में कैज्युइस्टों को जन्म दिया जिन्होंने आत्मिक शक्ति के लिये विभिन्न साधनों को उसी प्रकार एकत्रित किया जिस प्रकार की आज स्वास्थ्य रक्षा के लिये चिकित्सा पुस्तकों को एकत्रित किया जाता है। जैसुइट कैज्युइस्ट में सबसे अधिक प्रसिद्ध विचारक स्पेनिश धर्मोपदेशक ऐस्कोबार (1589–1669) था जिसकी पुस्तक **थियोलोजिया मारलिस** जो कि 1643 में प्रथम बार प्रकाशित हुई, अनेकों संस्करणों में प्रकाशित हुई। ऐसे लेखकों के द्वारा जिन साहसिक सिद्धान्तों की स्थापना की गई उन्होने शीघ्र ही जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इनकी सबसे अधिक आलोचना एर दुमोंलिन कृत (Catalogue on denombrement des traditions romaines) (जेनेवा, 1632) में प्राप्य है। 1644 में केज्युइस्ट के सिद्धांतों मे La thelogic morale des Jesuits में लेख प्रकाशित हुए जो कि एक प्रकार का संकलन था, तथा जिसे आरनोल्ड को भेंट किया गया था। उन्होंने उन सभी विवादास्पद बातों को जिनके अन्तर्गत जैसुइट कैजुइस्टी का उपभोग करते थे, ध्यान में रखते हुए यही कहा जा सकता है कि 17वीं शताब्दी में जैसुइट कैज्युइस्ट अवनति की ओर जा रहे नैतिकता के सिद्धान्त को पढ़ा रहे थे और मानवीय व्यवहार में भी सापेक्ष्यवाद के सिद्धान्त को सम्मिलित करना चाहते थे। 1631 में बैल्जक[1] ने अपनी कृति प्रिंस में इस बात का संकेत दिया है कि कैथोलिक नैतिकतावादी सिद्धांतों में इसके विरोधियों के विरोध के परिणामस्वरूप कुछ परिवर्तन दिखायी दिये हैं, अब हमारी धार्मिक विचारधारा अधिक सरल और अनुकूल है।

---

1 जे० एल० पी० बेल्जक, 1594–1654।

इसका बड़े लोगों की अभिरूचियों के साथ अधिक अच्छी तरह से सामञ्जस्य स्थापित किया जा सकता है, यह अपने सिद्धान्तों और उनके हितों के बीच ताल-मेल बैठा सकती है और उस पुरानी धार्मिक विचारधारा जैसी असस्कृत और कठोर नही है। आज हमने कुछ ऐसे उपकरणों को भी प्रतिपादित किया है और जो चोर की भी अपनी अन्तरात्मा की क्षति का भी उपचार कर सकें।

कैज्युइस्ट विचारकों की प्रवृति

यह विचारधारा स्वीकारोक्ति (Confession) के ग्रंथों तक सीमित नहीं थी, क्योंकि ल मांयेन तथा मुग्निए सरीखे जैसुइट लेखकों ने यह सिद्ध करने के लिये ग्रन्थ लिखे थे कि नैतिकता लचीली होती है और भौतिक जगत में निवास करते हुए भी मोक्ष प्राप्त की जा सकती है। **लाडिवोशिय्रां ऐंजो** (1652) में इस विचार-धारा को स्वीकार किया गया कि सन्मार्ग न तो कठोर है और न संकुचित। यह इतना अधिक व्यापक है कि इसमें व्यक्ति पथ-भ्रष्ट नहीं हो सकता।[1] परन्तु कुल मिलाकर यह तो स्वीकार करना ही होगा कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रंथ था, यद्यपि इसमें भी उन्ही रीतियों की विशेषता निविष्ट थी जिन्हें कुछ जेसुइट केज्युइस्ट प्रयोग करते थे। आगस्टीनियन और मोलिनिस्ट-विरोधी विचारधारा का विरोध करते हुए इस सिद्धान्त का विरोध किया गया कि मोक्ष केवल कुछ ही व्यक्तियों के लिए सीमित है। जैसुइटों ने एक ऐसे नैतिक दर्शन की स्थापना की थी जिसके अन्तर्गत किसी भी प्रकार के दोष या अपराध यहां तक कि पाप या हत्याओं को भी क्षमा किया जा सकता था।

यह आध्यात्मिक विद्या उतनी ही प्राचीन है जितनी कि मानव प्रकृति और प्रत्येक बार यही कहा जाता है कि व्यक्ति अपनी अन्तरात्मा को पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं कर पाया है। आध्यात्म विद्या में व्यक्तित्व कला भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। प्रसिद्ध विचारक सिसरो के द्वारा उसकी प्रसिद्ध कृति **द आफिसिस**[2] मे इस प्रकार की विवेचना प्राप्य है। यह विचारधारा पारिवारिक अध्ययन के विषय में विशेष स्थान रखती[3] है। इस विचारधारा को लागू करने में जैसुइटों का विचार यह था कि जहां अन्य इस प्रकार के वक्तव्य कला का अनुमोदन नहीं करते वहां जैसुइट विचारधारा समाज को एक निश्चित स्थान पर ले जा कर छोड़ती है। इसके मुख्यतः दो सिद्धान्त हैं जो निम्न प्रकार हैं:-

---

1 देखिये ब्रीमोंड **पूर्व उद्धृत**, 1,376 एफ एफ।

2 खंड 3। इसे सिसरो का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त नहीं था।

3 स्त्रियों से सम्बन्धित अनेक आधुनिक मेगनीज। 'प्रोब्लेम्स आव कन्डक्ट' प्रतियोगिता की विवेचना करती है, इस संदर्भ में कैज्युइस्ट उनकी समस्याओं का समाधान निकाल सकते थे।

(1) अनुकूल परिस्थितियों का सिद्धान्त–

जब किसी आध्यात्म सम्बन्धी धारा के विषय में मत विभिन्नता हो तो सबसे अधिक सुविधाजनक अर्थ को स्वीकार कर लिया जाना चाहिये। तदनुसार ईसाई पुरोहितो को इस बात की जो अन्य ईसाई पुरोहितों को दण्ड देते समय अपनी वेषभूषा त्याग देते हैं, अनुमति मिल जाती है। हाब्स के शब्दों मे इस प्रकार स्वतन्त्रता का अर्थ यह निकाला जा सकता है कि 'स्वतंत्रता वही है जिसकी ईश्वर अनुमति देता है।' यदि चर्च पुरोहित किसी कार्य के लिए व्यक्ति को अपराधी नहीं मानते तो इसका अर्थ यह निकाला जाना चाहिये कि तब वह कार्य अपराध की श्रेणी में नहीं आता।

(2) एक दूसरी विधि को प्रोबेबलिटी का सिद्धान्त कहते हैं। यह सर्व प्रथम एक स्पेनिश डोमीनिकन, बारटोलोमे द मैदिना (1528–1581) द्वारा प्रतिपादित किया गया था। एसकोबर ने और अधिक व्यापक रूप में विवेचना करते हुए लिखा है, "विभिन्न विचारों के संदर्भ मे जैसक्राइसट को अधिक आसानी से समझा जा सकता है। यह एक महानुभाव के लिये अच्छा नहीं होगा कि यदि वह वेलेडोलिड मे मैड्रेड जाना चाहता है तो उसे एक मार्ग दिखाने के स्थान पर अनेक मार्ग दिखाये जाये ? क्योंकि हो सकता है कि वह एक मार्ग या तो काफी लम्बा हो और या फिर काफी सकुचित जिससे कि उस पर चलना भी दूभर रहे[1]।' इस प्रकार यह दो विचाराधारा व्यक्ति के सम्मुख यह विकल्प प्रस्तुत करतीं हैं कि इन मे पहली विचारधारा को स्वीकार कर लिया जाये और यदि इन दोनों विचारधाराओं में कोई सघर्ष उत्पन्न होता है तो उस अवस्था में उस विचारधारा को स्वीकार किया जाना चाहिये जिसका चर्च ने विरोध न किया हो। प्रोबेबलिटी का सिद्धान्त उस दशा में उपयोगी था जब कोई व्यक्ति बुद्धिवादी धार्मिक विचारधारा से किसी प्रकार की प्रेरणा प्राप्त करना चाहता हो। निश्चित समयावधि के पश्चात चर्च के प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा दी गई विवेचना समयानुकूल प्रतीत होती थी और ऐसी अवस्था में यह भी सम्भावना थी कि प्रतिरोधक विचारधारा को भी एक निश्चित अवधि समाप्त होने के पश्चात सम्भवत: स्वीकार कर लिया जाय। चर्च के रूढ़िवादी समर्थकों की विचारधारा को देखते हुए यह सम्भव था कि प्रतिक्रियावादी वातावरण बनने में शायद सहायता मिले। 18वीं शताब्दी में लीगुरिया के केन्ट एल्फोंसो की विचारधारा इस प्रकार के तर्कों का सम्यक उत्तर कहा जा सकता था। इस विचारधारा के अनुसार 'प्रोबेबिल' के विभिन्न स्तर थे और यह व्यक्ति विशेष के आचरण पर निर्भर करता था कि उसके प्रति किस प्रकार का दृष्टिकोण

---

1 एच० एफ० स्टीवर्ट, पूर्व उद्धृत, 40।

अपनाया जाये। लेक्जीज्म कैथोलिक चर्च के द्वारा कभी भी स्वीकार नहीं किया गया था और पोप इनोसेन्ट ग्यारहवें के द्वारा इसकी कटु आलोचना की गई थी। परन्तु अनेक जैसुइट कैज्युइस्ट लैक्विजम्ट[1] भी थे और यही कारण है कि इन मतों का विरोध करने के लिये **लेटर्स प्रोविन्सियेल्स** (Letteres provinciales) लिखी गई। लेक्जीज्म का प्रति रूप ट्यूटिअरिज्म था, और इस दृष्टि से जेनसेननिस्टों को ट्यूटिअरिस्ट कहा जा सकता है।

आचरण की समस्या (Problem of Conduct)

ट्यूटिअरिज्म और लेक्जिजमिज्ल की आत्यान्तिक अवस्थाओं के बीच में मानव व्यवहार का पूर्ण विज्ञान है। ये नाम केवल उन विभिन्नताओं और विशेषताओं को प्रच्छन्न कर लेते हैं जो ज्ञात अथवा अज्ञात रूप में अब भी अपने साथियों के साथ हमारे सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं। उदाहरणत. मान लीजिए कि इन्हीं विचारधाराओं के किसी समर्थक के सम्मुख आधुनिक व्यापारिक नैतिकता की समस्या उत्पन्न हो, यथा कि उसे अमुक-अमुक वस्तु चैक के जरिये खरीदनी चाहिये या नहीं जबकि इस बात का भय हो कि चैक का सम्भवतः भुगतान न किया जा सके। ट्यूटिअरिस्टवादियों के अनुसार ऐसी अवस्था में वे चैक तभी देंगे जबकि उन्हें यह पूरा विश्वास हो कि चैक का भुगतान कर दिया जायेगा। प्रोबेबिलिस्ट विचारधारा के अनुसार वे इस आशा में चैक जारी कर देंगे कि बैंक के द्वारा अधिविकर्ष (honoured) के रूप में भुगतान कर दिया जावेगा जबकि लेक्जिस्टवादियों के अनुसार वह अधिक संशय के बिना इस बात को सोचे हुए कि चैक का भुगतान होगा या नहीं, चैक जारी कर देंगे। इस प्रकार ट्यूटिअरिस्ट किसी भी प्रकार की जोखिम उठाने के लिए तैयार नहीं होंगे। इस प्रकार प्रोबेलिटी सिद्धान्त के समर्थक व्यापारिक सुविधा को देखेंगे और लेक्विजस्ट बिना किसी सोच विचार के अपने उद्देश्य को विफल सिद्ध कर देंगे।

केज्युस्ट्री की भावना (The Spirit of Casuistry)

जबकि केज्युइस्ट मोक्ष-प्राप्ति के लिए पश्चाताप (एट्रिशन) जैसे सिद्धांत पर विश्वास करते हैं तो जेनसेनिस्ट मानव-आत्मा के सम्पूर्ण विशुद्धीकरण अर्थात् 'कन्ट्रीशन' में विश्वास करते हैं। इस प्रकार दोनों के बीच प्रतिक्रिया पूर्ण हो गई थी। बास्क्वे (1551-1604) के अनुसार ईसाई कर्तव्य मानव क्षमता से सीमित होते हैं

---

1 कैथोलिक धर्मसम्प्रदायवादी सदैव से प्रोबेबिलज्म एवं लेक्सीजम में अन्तर करते रहे हैं, परन्तु किन्हीं क्षेत्रों में दोनों में बहुत निकटता भी दिखाई पड़ती है।

और जीवन के अंतिम क्षणों में ही ईश्वर को याद करना पर्याप्त है। [1] (एस्कोवार[2] के मतानुसार जीवन में 4 ऐसे अवसर आते हैं जब ईश्वर को याद करना आवश्यक होता है)। 1657 में एक स्पेनिश जैसुइट ने केज्युइस्ट विचारधाराओं की उक्तियों[3] का संकलन किया जो विभिन्न विषयों से संबधित हैं और यद्यपि इनको किसी प्रकार से अनुमोदित नही किया गया था तथापि ये विचारधारायें इतनी अधिक अनैतिक और अपवादकारी थीं कि पुस्तक के वितरण पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। एस्कोवार द्वारा[4] लिखित पुस्तक के एक अध्याय में मनस्थिति के सम्बन्ध में कुछ विवेचना की गयी है जिसमें यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया है कि ऐसी भी कुछ परिस्थितियां हो सकती हैं जहां राजा को स्वनिर्मित कानूनों को उल्लंघित करने का अधिकार हो। "Proprie Loquendo ex vi Coactiva non obligatur, quia lex obligat subditos: nullus autom sibi subditus ert." कोई भी अपने प्रति उत्तरदायी नहीं हैं (no one is subject to diuself) ये शब्द समूची विचारधारा का दिग्दर्शन करने के लिए पर्याप्त हैं इनका अर्थ यह है कि कोई भी व्यक्ति उस समय तक सुरक्षित है जब तक वह कानून की पकड़ में नहीं आता। मानव अन्तः-करण के प्रति उसका कोई उत्तरदायित्व नहीं। वास्तव में इससे अधिक अनैतिक और कोई दूसरी विचारधारा नही हो सकती।

दि लेटर्स प्रोविंसियल्स (The letteres provinciales)

प्रोविन्शियल[5] लेटर्स का प्रारम्भ अर्नाल्ड की प्रतिरक्षा के उद्देश्य से हुआ था। अन्ततः इसमें कतिपय आस्थाओं का पूर्ण और प्रगल्भ प्रतिपादन अभूतपूर्व रीति से हुआ है। फ्रांसीसी भाषा की क्षमताओं के विषय में लोगों को उस समय तक अनुभव नहीं हुआ जब तक कि पेंस्कल ने लिखना आरम्भ नहीं किया। इससे पूर्व किसी भी लेखक ने व्यंग-शैली का प्रयोग इतने प्रचण्ड रूप में नहीं किया था। तब से अभी तक किसी भी गद्य-लेखक ने आलोचना और विनाश की शक्ति से इतनी तात्कालिक

---

1 कमेंटोरीरम एत डिस्प्यूटेशनम इन टरटेम पारटेम सेटी थोमें, ivi 1616 में प्रकाशित संस्करण का पृष्ठ 95 देखें।

2 लिबर थियोलोजिये मोरेल्स (स० 1659)।

3 देखिये अध्याय 4।

4 एस्कोबार, पूर्व उद्धृत।

5 हेवट द्वारा संपादित सस्करण सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है 1657 में प्रकाशित संस्करण का पूर्ण शर्षक लेस प्रोविसियल्स अ लेस लेटर्स एराइटस पार लुइस द मोंतेल आ एन प्रोविसियल द सेस एमिस एत अवस आर. आर. पी. पी. जेसुइटस सर ल मुनेत द ला मोरेल एत द ला पोलितिक द सेस पिरेस।

सफलता प्राप्त नहीं की है।[1] मनस्थिति का सम्पूर्ण विशालकाय ढांचा गौरवहीन और धराशायी कर दिया गया। पेस्कल की आलोचना का प्रहार इतना तीखा था कि मनस्थिति जैसे सिद्धांतों से सहानुभूति रखने वाले कुछ व्यक्ति तो यह भी सोचने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि इस प्रकार के प्रहारों के परिणामस्वरूप यह सिद्धांत सदैव के लिए समाप्त ही न हो जाय। यहां तक कि मनः स्थिति सिद्धांत के शत्रु तक अब यह विचारने लगे थे कि अधिक अच्छा यह होता कि **लेटर्स प्रोविन्सियल्स** लेटिन भाषा में लिखी जाती जिससे कि धार्मिक व्यवस्थाओं पर कम से कम प्रत्यक्ष प्रहार तो नहीं होता। यही कारण था कि **लेटर्स प्रोविन्सियल्स** के वितरण पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। यद्यपि आगे चलकर पेस्कल की विचारधाराओं में अनेक परिवर्तन हुए परन्तु उसने कभी भी जैसुइट मनस्थिति सिद्धांत के प्रति अपने दृष्टि-कोण में परिवर्तन नहीं किया। यह सत्य है कि उसने अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए सम्पूर्ण सामग्री में कुछ विशिष्ट सामग्री का ही चयन किया था। परन्तु उसने अपने विपक्षियों के उन्हीं मतों का चयन किया था जो अत्याधिक अविश्वसनीय नहीं थे। एकमात्र ध्वंसात्मक आलोचना का शाश्वत मूल्य नहीं होता परन्तु कुछ स्थितियों में वह आवश्यक होती है। नैतिकता के संबध में केजुइस्ट्री को पेस्कल ने जिस कुख्याति के गर्त में डाला उससे वह कभी भी निकल न सकी।

मिरेकिल आफ दि होली थार्न

मोलिनिस्ट और डोमिनिकन अनुकम्पा के सिद्धान्तों को विवेचित करने का पेस्कल का एक मात्र उद्देश्य यह प्रदर्शित करना था कि उसके जेनसेनवादी मित्र नास्तिक नहीं थे तथा जैसुइट केज्इस्टों की भौतिकवादी विचारधारा दोष विहीन न थी। धीरे धीरे पेस्कल ने अपनी इस सुनियोजित योजना पर कार्य करना आरंभ किया और उसी प्रकार 13वीं **प्रोविन्सियल** अधिकाधिक लोकप्रिय होती गयी। 1657 की वसन्त मे जबकि 19वीं प्रोविन्सियल लिखी जा रही थी उसे जब्त कर लिया गया। इसकी लोकप्रियता के संबंध में विभिन्न प्रकार के तर्क प्रस्तुत किये गये हैं। इसकी लोकप्रियता का एक कारण यह भी था कि इसके प्रकाशित होने वाले पत्रों ने अनेकों सिनिक्स पाठकों का ध्यान भी अपनी ओर आकर्षित किया था। पेस्कल धार्मिक संघ की कीमत पर किसी प्रकार का लोक–रंजन नहीं करना चाहता था, चाहे वह संघ से कितना ही असहमत क्यों न हो। दूसरा संभवतः कारण यह था कि 1657 के आरंभिक वर्ष में जेनसेनवादियों की ओर से मेजारिन और एन आव आस्ट्रिया को प्रभावित करने के प्रयास किये जा रहे थे। परन्तु इन सबके

1 सेंट बेवे की कृति के तृतीय संस्करण में लेटर्स प्रोंविसियल्स के साहित्यिक पक्ष की व्यापक विवेचना प्राप्य है।

अतिरिक्त सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि पेस्कल धार्मिक आज्ञाओं में बहुत कम विश्वास करता था, उसने अपनी धार्मिक शंकायें दूर करली थीं और जिस प्रकार उसने अपने जीवन का बलिदान किया था वह स्वयं में एक उदाहरण था। उसका धर्म को सबसे महत्वपूर्ण योगदान विध्वसंकारी लेटर्स की अपेक्षा रचनात्मक पेन्सीज था। परन्तु यह सत्य कुछ काल पश्चात् ही समझा गया। उसका मत एक घटना से दृढ़ीभूत हुआ। इसे 'दि मिरेकिल आफ होली थार्न' कहा जाता है। 6ठी प्रोविन्सियल (मार्च 1656) के आरम्भ करने से पूर्व उसकी भतीजी मार्ग्वेराइट पेरियल एक खतरनाक भंयकर अल्सर से पीड़ित थी।[1] वह पोर्ट रायल के अवशेष—कांटो के मुकुट का एक भाग—के लगाने से स्वस्थ हो गई। इस चमत्कार में विश्वास के कारण पेस्कल यह विचारने लगा कि ईश्वर पोर्ट रायल की ओर है और इसे रक्षित करने की आवश्यकता नहीं होगी।

पेस्कल पर आक्रमण

इस समय लेटर्स (Lettres) से संबंधित कटु विवाद पर विचार करना संभव नहीं होगा। पेस्कल पर इतने विभिन्न प्रकार के अस्त्रों से आक्रमण किये गये थे कि यह संदेह होने लगा था कि इनमें से बहुत ही कम अपने लक्ष्य पर लगे थे।[2] ऐसा कहा जाता है कि वह मौलिक नहीं था। उसने जैसुइट कैज्युइस्टों पर पुराने अस्त्रों से आक्रमण किये थे और सदैव नूतन साधनों का उपयोग नहीं किया एस्कोबार के उद्धरणों में उसने या तो मूल अश छोड़ दिये या उन्हें संक्षिप्त कर दिया। उसका यह विचारना उचित नहीं था कि केवल जैसुइट ही कैजुइस्ट्री के लिये उत्तरदायी थे।[3] वास्तव में वे तो डोमीनिकन्स और फ्रांसिसकन्स द्वारा प्रतिपादित अकाट्य रूढ़िवादिता का ही अनुसरण कर रहे थे। उनको यह अनुभव करना चाहिये था कि सामान्यतः सभी बड़े धार्मिक सम्प्रदायों में कुछ ऐसे व्यक्ति प्रविष्ट हो जाते हैं जो वास्तव में उस सम्प्रदाय के विरोधी होते हैं, अतः केवल उन्हीं व्यक्तियों के आधार पर उस सम्प्रदाय के प्रति निश्चित रुख अपनाना उचित नहीं कहा जा सकता है। उनको यह ध्यान रखना था कि अधिकांश कैज्युइस्ट जिनको कि उन्होंने उदधृत किया है, व्यक्तिगत रुचि सम्पन्न व्यक्ति थे तथा बहुमत विद्वान और विवेकशील व्यक्तियों का था। (इसकी पुष्टि तथ्यों से भी हो जाती है) एक और आरोप जो पेस्कल पर लगाया जाता है वह यह है कि जब वह लेटर्स प्रोविन्सियल्स

---

1 सितम्बर 1657।

2 देखिए ब्रोऊ कृत लेस जेसुइटस द ला लीगेन्दे, खण्ड 1, अध्याय 10 और 11।

3 गेजियर पेस्कल एत एसकोबार।

लिख रहा था तब वह बीमार था [1] (वैसे पेस्कल अपने समूचे जीवन भर ही रोग-ग्रस्त रहा था तथापि मानसिक दृष्टि से वह पूरी तरह चेतनशील था)। दूसरा आरोप उस पर यह भी लगाया जाता है जो यद्यपि लिखित में नहीं है, कि उसको भारी मात्रा में रिश्वत दी गयी थी। वास्तव में प्रत्येक वर्ष इन अभियोगों में नया अभियोग जोड़ दिया जाता था। यहां यह ध्यान रखा जाना चाहिये कि तथ्यों की दृष्टि से पेस्कल आसानी से गलत सिद्ध नहीं किया जा सकता। यद्यपि जैसुइटों पर आक्रमण करने की अवस्था में उसकी विचारधारा गलत सिद्ध हो सकती थी, इनमें से अधिकांश व्यक्ति ऐसे थे जिन्होने यदि स्वर्ग प्राप्ति दूसरों के लिये आसान बना दी तो अपने लिये दुलर्भ अवश्य बनायी। वास्तव मे पाप अथवा अनैतिकता में वृद्धि करने में इन लोगों की कोई विशेष अभिरूचि नहीं थी। उन्होंने प्रत्येक वस्तु को चर्च और धार्मिक संघ के अधीन कर दिया। उनका विश्वास था कि यदि उन्होने विशाल आध्यात्मिक औषधि-सग्रह में प्राप्त अनेकानेक विकल्पो मे से कुछ को अपनी इच्छानुसार नैतिक व्याधियों को ठीक करने के लिये संस्तुत किया तो वे अपने जन-समुदाय के धार्मिक विचारों पर पूरा नियन्त्रण प्राप्त कर सकेंगे और तब वे उस विशाल समुदाय पर अथवा प्रभुत्व बनाये रखने की आशा कर सकेंगे जिसे अनेक चर्चो की निराशा में खोना पड़ा था। यह समुदाय था उदासीन, सांसारिक और निश्चिन्त विनोदी व्यक्तियों का। इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि उनका उद्देश्य अवश्य पवित्र था, यद्यपि उनके साधनों को समझना मुश्किल था। "Le gros due chtustianisme a 'ete' de tout temps compose' d'infirmes et dimparfaits"[2] जहां तक पूर्ण पापों का सम्बन्ध है पेस्कल और जैनसेनवादी उससे किसी प्रकार का समझौता नहीं कर सकते थे। केज्युइस्ट और जैसुइट भी इसी प्रकार के विचारों से सहमत थे, परन्तु उन्होंने किसी प्रकार का आक्रमण करना उचित नहीं समझा। उनका विश्वास था कि शक्ति के द्वारा नहीं, अपितु अन्य साधनों से भी समस्या को सुलझाया जा सकता है। इस प्रकार ये दो विभिन्न विचारधारायें दो विभिन्नवर्गो का प्रतिनिधित्व करती थीं। उनके इस विवादास्पद दृष्टिकोण से किसी को भी लाभ पहुंचने वाला नहीं था। जैसुइट और जैनसेनवादी दृष्टिकोण सर्वव्यापक है।

क्या पैस्कल जैनसेनवादी था ?

लैटर्स प्रोविन्सियल्स एक प्रश्न और उत्पन्न करती है जहां तक पेस्कल के

---

1 जब पेस्कल **लेटर्स प्रोविन्सियल्स** की रचना कर रहा था तब वह एक प्रकार से 'मृत्यु शैय्या' पर था। देखिये टी० जे० कैम्पबल, **दि जैसुइटस** 281।

2 ब्रीमोंड द्वारा उदधृत उपर्युक्त पुस्तक, खंड 1, 403। बोंनेल कृत **ल चिरित्यिन द्यू तेम्स** 1655।

द्वारा पोर्ट रायल के 'तथ्य' और 'अधिकार' के अन्तर और पोप की सम्पूर्णता तथा असम्पूर्णता का संबंध है, उसे संकुचित रूप में जैनसेनवादी कहा जा सकता है. परन्तु इसके सभी विचार जीवन के आरम्भिक वर्षों में प्राप्त किये गये अनुभव के परिणाम-स्वरूप किये गये थे। 1662 में मृत्यु से पूर्व उसने एक ईसाई पादरी से दीक्षा ग्रहण की थी जिसने बाद में यह अभिव्यक्त किया कि पेस्कल पक्का अनुदारवादी था तथा उसका यह विचार था कि जैनसेनवादी अनुकम्पा के सिद्धान्त के सम्बन्ध में बहुत आगे तक बढ़ गये थे। 1908 में[1] प्राप्त एक साहित्यिक कृति यह प्रदर्शित करती है कि पेस्कल अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में धार्मिक वादविवादों के कारण बहुत परेशान हो गया और उसने जैज्युइस्ट्री एवं नैतिकता के सम्बन्ध में की गयी आलोचना का पुनः समर्थन किया। इस प्रकार पेस्कल को इस रूप में जैनसेनवादी कहा जा सकता है कि वह एक ऐसा कट्टर कैथोलिक अनुयायी था जो जैसुइटों का विरोधी था।

एस्कोबार एवं पेस्कल

पेस्कल की मृत्यु के सात वर्ष पश्चात एक फ्रांसीसी पर्यटक ने एस्कोबार से भेंट की और उसने देखा कि एस्कोबार थीयोलोजिया मोरेल्स के नवीनतम संस्करण का अध्ययन कर रहा है। जब इस आगन्तुक ने यह संकेत दिया कि जैज्युइस्ट मेनुअल आजकल वादविवाद का मुख्य विषय बना हुआ है तो एस्कोबार ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि क्या उसकी पुस्तक भी वाद-विवाद का विषय बन सकती है, क्योंकि इस पुस्तक में उसने केवल उन्हीं विचारों को व्यक्त किया था जो सामान्यतः सभी के द्वारा स्वीकार किये जाते रहे हैं। उसका कहना था कि उसने लेटर्स प्रोविन्सियल्स को कभी नहीं पढ़ा (सम्भवतः उसने इसके बारे में कभी सुना भी नहीं था) फ्रांसीसी साक्षतकारकर्ता (interviewer) ने उसे पुस्तक की एक प्रति भेजने का वादा किया।[2] वास्तव में कोई और दूसरी घटना इससे और अधिक अच्छे रूप में 17 वीं शताब्दी के स्पेन की मानसिक स्थिति का दिग्दर्शन नहीं करा सकती।

पोर्ट रायल का विरोध

न तो लेटर्स प्रोविन्सियल्स ही और न ही होलीथार्न पोर्ट रायल को बचा

---

1 जोवी कृत पेस्कल इनेदित। जोवी उस समय का भी चित्रण करता है जब कि पेस्कल की मृत्यु से पूर्व एक ईसाई पादरी ने उसे अंतिम उपदेश दिये। जोवी द्वारा की गई इसकी विवेचना खंड 2, पृ० 403 पर प्राप्य है। देखिये स्टीवर्ट पूर्व उद्धृत, टिप्पणी 48 (पृ० 102)।

2 गैज़ियर कृत पेस्कल एत एस्कोबार, 53।

सके। भिक्षुणियों(nuns) ने इस बात पर बल दिया कि अधिकार' और 'तथ्य' में अन्तर किया जाना चाहिये। वे यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थीं कि पांच घोषणायें जेनसेन के ग्रंथों में प्राप्त हैं। उन्होंने उस घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया जिसके अंतर्गत इन घोषणाओं पर सहमति व्यक्त करने के लिये कहा गया था। अनेक बिशपों ने, जिनमें कि पवेलियन आफ एलेट, कोलेट आफ पामियर्स तथा बुजेनवल आफ ब्यूवे इत्यादि थे, भिक्षुणियों का समर्थन किया। परन्तु जैसुइटों के साथ राज दरबार का सहयोग था। अतः 1660 में पोर्ट रायल की शैक्षणिक गतिविधियां नियंत्रित कर दी गई। इसी बीच जेनसेनवादियों की स्थिति खतरे में पड़ गई, इसका मुख्य कारण कार्डिनल आर्क बिशप आव पेरिस द रेज की गतिविधियां थीं जो 1654 से 1661 तक निष्कासित जीवन व्यतीत करता रहा था। फ्रांडे के समय में भी द रेज उग्रवादी कोऐडजुटर पाल द गोन्दी था जो मेजारिन का सबसे कटु और षडयन्त्रकारी शत्रु था। उसके निष्कासन के दिनों में प्रकाशन की देखभाल करने वाले व्यक्तियों ने यह सार्वजनिक रूप से घोषित कर दिया था कि उनकी सहानुभूति पोर्ट रायल और लेटर्स प्रोविन्सियल्स के साथ है। यही कारण है कि जैनसेनवादियों ने अपने लक्ष्यों में एक लक्ष्य यह भी निर्धारित किया कि द रेज को पुनः उसके पद पर आसीन किया जावे। इसका एक कारण यह दिया गया कि द रेज सदाचारी और अत्याचार का मारा था। इस दृष्टिकोण से सम्भवतः पोर्ट रायल और उसकी समस्त कृतियों पर द रेज का अधिकार होना चाहिए था। परन्तु इस प्रकार का कार्य करना जेनसेनवादियों के लिये अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध हुआ क्योंकि इस कारण उन्होंने मेजारिन की शत्रुता मोल ली जो उत्तरोत्तर बढ़ती गई। आर्कविशप और पोर्ट रायल को मिलाने वाली कड़ी एक मिथ्या धारणा पर निर्भर थी, क्योंकि नास्तिक और दुराचारी द रेंज तथा जैनसेनवादियों में कोई समान आधार नहीं था। इसी प्रकार जैनसेनवादियों के लिये मदाम द लोंग विले के धर्म परिवर्तन की घटना को भी अधिक सौभाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। यही कारण है कि मेजारिन और लुई चौदहवें एक दूसरे के विरोधी बन गये।

पोर्ट रायल एव अभिभावक परिवार

जब लुई चौदहवें ने शासन आरम्भ किया तो उसने सर्व प्रथम मेजारिन और तत्पश्चात आत्म दर्शन परिषद के द्वारा दिये गये परामर्श को व्यावहारिक रूप देने की चेष्टा की। अप्रैल 1661 में पोर्ट रायल की दोनों संस्थाओं के सदस्यों को यह विकल्प प्रदान किया गया कि या तो वे औपचारिक रूप से हस्ताक्षर कर दें अन्यथा अपने घरों को वापस लौट जायं। आरनोल्ड के परामर्श पर अनेक भिक्षुणियों ने हस्ताक्षर कर दिये। एंगलिक आरनोल्ड ने प्राणों की आहूती देकर अपने

को अपमानित होने से बचाया। एक मोलनिस्ट को पोर्ट रायल के आत्म दर्शन की विवेचना करने के लिये नियुक्त किया गया, और तीन वर्ष पश्चात आर्कबिशप आव पेरिस ने सभी प्रयत्न किये जिनसे कि भिक्षुणियों द्वारा छोड़े गये प्रभाव को सदैव के लिए समाप्त किया जा सके।[1] इस प्रकार की कार्यवाही को चर्च सिस्टर्स के द्वारा समर्थित नहीं किया जा सका, क्योंकि शिक्षितवर्गीय होने के कारण वे इन अधिकारों का ज्ञान तो रखती ही थीं साथ ही उसके प्रति सम्मान भी था। जिस वर्ग का वे प्रतिनिधित्व करती थीं उस वर्ग में स्वतन्त्रता की भावना व्याप्त थी इसलिये उन्हें ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करने पर गर्व भी था। फ्रांस के जैनसनवादियों के प्रभुत्व के व्यापक होने का एक कारण यह भी कहा जा सकता है कि पोर्ट रायल के विभिन्न वर्गों में भिक्षुणियां अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती थीं और विशेषत: इंगलैण्ड और फ्रांस में ये अभिभाषक (lawyer) परिवार थे जिनमें तानाशाही–विरोधी भावनायें अधिक मात्रा में पाई जाती थीं।

क्लीमेन्ट नवम की शांति संधि (1669)

1667 में अलेक्जेण्डर सप्तम का उत्तराधिकारी क्लीमेण्ट नवम हुआ। दो वर्ष पश्चात एक समझौता हुआ जो क्लीमेण्ट नवम की शांति–संधि के नाम से जाना जाता है। इस समझौते के अन्तर्गत भिक्षुणियों को पुन: उनके सम्मानित वर्ग में सम्मिलित कर लेने का प्रस्ताव था, परन्तु शर्त यह थी कि वे घोषणा-पत्र पर 'प्योर्ली एण्ड सिम्पली' के स्थान पर 'सिसियरली' लिखेंगीं। वास्तव में यह शाब्दिक हेरफेर था और ऊपरी तौर पर यह प्रकट होता था कि भिक्षुणियों द्वारा इस प्रकार हस्ताक्षर करने का यह अर्थ नहीं है कि पांच घोषणायें (Five propositions) जेनसेन की विचारधारा में प्राप्य थीं। इस प्रकार हस्ताक्षर करने का अर्थ यह निकाला जा सकता था कि भिक्षुणियों ने कैंज्युइस्ट विचारधारा के समर्थन करने का निश्चय कर लिया है। परन्तु उनके सामने कोई विकल्प नही था। यहां पर यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि इस प्रकार का शाब्दिक परिवर्तन वेटीकन स्थित राजदूत लियोन के सुझाव पर किया गया था जो पिरेनीज की संधि का मसविदा तैयार करते समय प्रसिद्ध 'मायनेण्ट धारा' का निर्माण कर शब्दावली पर अपने पूर्ण अधिकार प्रदर्शित कर चुका था।[2] कुछ समय के लिये यह शाब्दिक हेर फेर सफल रहा। आरनोल्ड अपने अवकाश से बाहर निकला और उसे पुनः शाही दरबार में सम्मिलित कर लिया गया। इस संधि के कारण अब जेनसेनवादी सर्वसाधारण के सम्मुख निकलने में अपने को सुरक्षित अनुभव कर सकते थे। अनुकम्पा के सम्बन्ध

---

1 गेजियर कृत हिस्तोरे जनरेल द्यू मोवमेंट जेंनसनिस्टे, 1, अध्याय 9।

2 देखिये अध्याय 6।

में दी परस्पर-विरोधी सिद्धान्तों के बीच इस शान्ति-सन्धि की स्मृति में एक 'मेडल' बनवाया गया। यह शान्ति उतनी ही न्यायसंगत और स्थायी रही जितनी कि 17वीं शताब्दी की अधिकांश सधियां।

उत्तरवर्ती जेनसनवादी (the later jensenist)

हार्ले जो कि पैरिफिक्स का उत्तराधिकारी था जेनसेनवादियों का घोर शत्रु था। उसने उत्पीडन की नीति को फिर से अपनाये जाने की चेष्टा की परन्तु उसके प्रयत्नों के बावजूद दोनों पोर्ट रायल ने अपने अस्तित्व को किसी प्रकार बनाये रखा।[1] विरोध और उत्पीडन की धमकियों ने आन्दोलन को और मजबूत बनाने में भी योगदान दिया। परन्तु इसके बावजूद अब आन्दोलन अधिक जोशीला और शक्तिशाली नही रहा था। आरनोल्ड के अतिरिक्त इसके सभी महान व्यक्ति जा चुके थे, और अब इसमें सुधरे पापी और आध्यात्मवादी सम्मिलित हो चुके थे। वे एक ऐसे धार्मिक सम्प्रदाय से सम्बन्ध-स्थापना के लिये उत्सुक थे जिसके आदर्श अति-मानवों द्वारा ही प्राप्त हो सकते थे। यह कथन जेनसेनवाद के साथ अन्याय नहीं करता। जेनसेनवाद एक ऐसी शक्ति था जो नैतिकता को निर्बल बनाने का घोर विरोधी था। यह शिक्षा प्रद प्रभाव भी था जिसने कालान्तर में गेलिकनवाद में निमज्जित होकर अल्ट्रामाण्टेन-परम्पराओं के विरुद्ध अवरोध प्रस्तुत किया। शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जेनसेनवादी सम्प्रदाय में निरन्तर ऐसे शिष्य सम्मिलित होते रहे जो जेनसेनवाद के प्रारम्भिक इतिहास से अनभिज्ञ थे। इनमें से कुछ ऐसे थे जिन्होंने इसमें चर्च अथवा राज्य सत्ता का विरोध करने का नूतन अवसर देखा। ये ऐसे व्यक्ति थे जो इस आशा से तिल का पहाड़ बना सकते थे कि उनका यह कर्म वीर-कर्म समझा जाएगा। जो असम्भव उदात्त आदर्शों के अनुसरण में बहुधा कटुता और लघुता ही प्राप्त करते थे। 1655 मे ऐसे उग्रवादियों के सम्बन्ध में लिखते हुए फ्रान्सिस्कन ने घोषणा की यदि साहस नहीं है तो कुछ भी सदाचार नहीं है। यदि चमत्कारपूर्ण नहीं है तो क्रिश्चियन धर्म नहीं और यदि कुछ अनुपम नहीं है तो वह सहिष्णु नहीं है। ये बाते स्टाइक सम्प्रदाय की कठोरता और फेरिसी सम्प्रदाय की सम्पटता से अधिक सम्बन्धित है और ईसाई-धर्म की उदारता से कम। इनमें भक्ति-उद्रेक में अतिशयता अथवा नैतिक उन्माद हो सकता है। इनसे अपच और आध्यात्मिक निर्बलता उत्पन्न हो सकती है आध्यात्मिक स्वस्थता नहीं।[2] अनेक महान् विधर्मों का यह भाग्य रहा है कि जब उनका मौलिक उत्साह समाप्त हो जाता है तो वे अधःपतित

---

1 'ल लोतमेन द पोर्ट रायल' के सम्बन्ध में आवश्यक विवरण सैंते-बेवे कृत ग्रंथ खड चतुर्थ में प्राप्य है।

2 ब्रीमांड द्वारा उदधृत, पूर्व उद्धृत, 1,403।

होकर निष्प्रयोजन और संकीर्ण सम्प्रदाय बन जाते हैं। यदि वे जीवित रहते हैं तो केवल मानव-स्वभाव के हठ-धर्म के कारण। इस दृष्टि से जैसुइट एक अपवाद प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि वे अपनी पूर्वस्थिति की कठोर एकरूपता से कभी भी विचलित नहीं हुए। परिवर्तनशील संसार में वे स्थायी और अपरिवर्तनीय लक्ष्यों के लिये बने रहे। जब ऐसा प्रकट हो रहा था कि कैथोलिक चर्च में अव्यवस्था और आज्ञोल्लंघन का घुन लग गया तो भी उन्होंने अपना सैनिक अनुशासन और कार्य-कुशलता बनाये रखी जो उन्हें अपने संस्थापक से प्राप्त हुई थी। आज जेनसेनवादी भूले हुए इतिहास के अंग हैं जो एक मात्र उत्सुकता उत्पन्न करते हैं। जैसुइट एक जीवित और विस्तृत रूप से फैलती हुई शक्ति है।

पोर्ट रायल एवं आध्यात्मिक दम्भ: निकोल

जेनसेनवादी नैतिकतावादियों में इस समय पाई जाने वाली एक मुख्य विशेषता यह थी कि वे आध्यात्मिक दम्भ का व्यापक प्रदर्शन करते थे, यद्यपि जेनसेनवादी अनुकम्पा के सिद्धान्त की एकान्तिकता को देखते हुए यह अस्वाभाविक नहीं था। यह एक ऐसा दुर्गुण था जो काल्विनवाद के कुछ सम्प्रदायों में पाया जाता था। अधिकांश अभिव्यक्तियां अस्पष्ट हैं जैसा कि ल मेत्र पिता को लिखता है, "ईश्वर ने आप लोगों का इसलिये उपयोग किया है जिससे कि मैं संसार में आ सकूं।"[1] यह विचारधारा पेस्कल और अधिकांश महान धार्मिक विचारकों की भी विशेषता रही है, जो सीधे ईश्वर से प्रेरणा पाने का दावा करते हैं। आंग्ल-प्यूरिटन्स के लिये यह शक्ति का प्रेरक रहा है, यह सच्ची आस्था पर आधारित है अतः सामान्यतः इसे लम्पटता कहकर अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। कुछ कम स्पष्ट रूप में यह त्रुटि जेनसेनवादी पिएर निकोल (1625–95) के लेखो में भी मिलती है। पोर्ट रायल के महानतम नैतिकतावादियो में निकोले का स्थान पेस्कल और आर्नाल्ड के पश्चात आता है। निकोल ने प्रोवेन्सियल्स का लेटिन अनुवाद प्रकाशित किया। उसने जेन्सनिस्ट शिक्षा–क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वास्तव में वही पोर्ट रायल की लाजिक के लिए उत्तरदायी था। उसके लेखों[2] में से कुछ उद्धरण उस मुख निराशा का आभास देंगे जिसने जैनसेनवादी दृष्टिकोण को अपने आवरण में ढक रखा था। इस प्रकार वह अपनी प्रसिद्ध कृति[3] De le soumission a'la valontede diev में यह घोषित करता है कि विगत घटनाओं का विवरण 'असुर' (devil) और 'पापभोगी' (damned) के इतिहास से कुछ ही अधिक है,

1 ब्रीमांड, पूर्व उद्धृत, 4,251।

2 यूवरेस फिलासोफीस एत मोरेल्स द पी० निकोल (1845)।

3 खंड 2 अध्याय 2।

क्योंकि जिन्होने इतिहास–रूपी रंगमच पर अपना भाग अदा किया है वे सामान्यत: बेबीलोन के नागरिक हैं। अपनी अन्य कृति De la crainte de dieu मे वह और अधिक स्पष्ट करता है, "यह सब राग–द्वेष युक्त ईश्वर की कठोरता और न्याय के प्रमाण है जो उन्हे असुरों के हाथों में सौंप देता है जो उन्हें यन्त्रणाये देते है और जो इस जीवन में उन पर अनेक दुख ढाकर उन्हें नरक में फेंक देता है जहां उन्हें चिरन्तन उत्पीडन सहन करना पड़ता है। यही न्याय असुरो को प्रत्येक विधर्मी राष्ट्र को अपने आधीन रखने की अनुमति देता है और स्वय चर्च मे ध्वस उत्पन्न करता है। हम लोग इस आध्यात्मिक हिंसा में अपने दिन काटते है और एक अर्थ में हम पापियों के रक्त में तैरते है। यह दुनिया रक्त की नदी के समान है, नष्ट होने के लिये, व्यक्ति के सम्मुख केवल यह विकल्प है कि वह अपने आपको समर्पित कर दे[1]।"

निकोल एवं क्वायटिस्ट

क्वायटिस्ट वाद–विवाद के संबंध में अपने विचारों को प्रतिपादित करते हुए निकोल ने उत्तरकालीन जेनसननिस्ट शिक्षाओं की एक अन्य प्रमुख विशेषता भी प्रदर्शित की–यह थी लक्ष्य का विश्लेषण, भावनाओं को तर्क की कसौटी पर कसना और भक्ति के प्रत्येक वाह्य सहायक उपकरण के प्रति अविश्वास। फ़नेलान तथा कुछ जैसुइटों के रहस्यवाद का, जो कि मुख्यत: स्पेनिश प्रभाव का परिणाम था, दुरुपयोग किया जा सकता था। इसकी परिणति अध्यात्मिक निर्वाण में हो सकती थी जिसमें ईश्वर के साथ होने वाली एकरूपता इतनी पूर्ण होती है कि सभी कुछ, चर्च का कर्मकाण्ड भी, गौण हो जाता है। ध्यान मे आत्माहुति का आदर्श प्राचीनतम भारतीय धर्मों में मिलता है। इसका पुनरुत्थान सिकन्दरिया के नव–प्लेटोवादियों ग्नोस्टिक्स और जर्मन रहस्यवादियों तथा 15वी शताब्दी के जर्मन फ्रेटीसेली और जर्मन रहस्यवादियों द्वारा हुआ था। इस सम्बन्ध में 16वीं शताब्दी में स्पेन[2] में उत्पीडन भी हुए। यह वह समय था जब लुई चौदहवें के द्वारा शासन चलाया जाना था। मदाम दा मेन्तेनन क्वेटिस्ट के प्रति गुप्त सहानुभूति रखती थीं। परन्तु दूसरी ओर लुई चौदहवां बहुत बारीकी से इस समूचे घटना चक्र को देख रहा था। तदनुसार फेलेनन को पद मुक्त कर दिया गया तथा मदाम ग्युओन को अपनी गलतियों की सजा भुगतनी पड़ी।

ईसाईयत रहस्यात्मक नहीं

रहस्यवाद का रहस्योद्‌घाटन करने में निकोल को कोई असुविधा नहीं हुई। उसका मस्तिष्क कट्टर विचारधाराओं से पूरित था। उसका धर्म–दर्शन युक्ति संगत

1 अध्याय 4, पृष्ठ 146–147।

2 देखिये मेनदेज य पिलेयो कृत हिस्तोरे द लास हितेरोडोक्सेस एस्पेनोल्स।

था। वह उन लोगों के साथ सहानुभूति नहीं रखता था जो धार्मिक जीवन में भावनात्मकता को स्थान देते थे। किन्तु इन ज्यादतियों की निन्दा करने में उसने स्वयं अपने दृष्टिकोण की सीमाएँ उद्घाटित कर दी। उसने मदाम ग्योन की उपेक्षा की किन्तु यह सिद्ध कर दिया कि जैनसेनवाद ऐसा कोई विकल्प प्रस्तुत नहीं कर सकता जो औसतन मानव के लिए व्यावहारिक हो। अपनी कृति **रेफुटेजन देश प्रिंसिपेल्स एररस दयू क्यूटेसमे** में उसने ईश्वर के प्रति प्रेम और इस प्रेम में विभेद किया और प्रश्न किया कि क्या इस प्रेम के प्रति प्रेम अनुकम्पा प्रदत्त है। उसने तर्क दिया चूंकि हमारी क्षमताएं (फेकल्टीज) पतन के कारण भ्रष्ट हो गई है अतः इनका जितना अधिक उपयोग किया जायगा उतनी ही अधिक भ्रष्ट होती चली जायेगीं, प्रार्थनाएं एवं भक्ति जीवन–क्रियाओं का विकल्प नहीं बन सकतीं। केवल वही कार्य सम्पूर्ण हैं जो चेतन प्रक्रिया (कांशियस अप्लीकेशन) के परिणाम नहीं हैं और जो 'आत्मा को आश्चर्यचकित करते हैं।' मदाम द सेविग्ने[1] ने निकोल एवं उसके सिद्धान्त के विषय में लिखा "jamais le coeur humain n'a mieux e'te' anatomise' que par ces Messieurs–l'a." भावनाओं पर असर डालने वाले उन सब प्रभावों के गहरे परीक्षण पर बल देते हुए, शुद्ध तर्क (रिलेन्टलेस लाजिक) तथा लगभग गणनीय निश्चितता (मेथेमेटिकल) को मानवीय आकांक्षाओं एवं भावनात्मकता पर लागू करते हुए उसने इस सत्य की उपेक्षा कर दी कि यदि ईसाईयत में से रहस्यात्मकता निकाल दी जाय तो उसका प्रभाव भी क्षीण हो जाता है।

शान्ति काल (1669–95)

1669 की शांति असन्तोषजनक समझौतों पर आधारित थी, किन्तु कुछ समय के लिए जैनसेनवादियों ने सम्राट एवं पोप के मध्य कटुता को उत्पन्न न होने दिया। जब रीगेल (regale) एव 1682 की गेलीकन धाराओं के संदर्भ में चर्च एवं राज्य के आपसी सम्बाधों का प्रश्न उठा तो पेमियर्स एवं एलेट के जैनसेनवादी पादरियों ने इन्नोसेंट 11वें के पक्ष में एवं लुई 14वें के विपक्ष में घोषणा की। इस प्रकार की घोषणा द्वारा उन्हें पोप का अस्थाई समर्थन प्राप्त हो गया और फ्रांसीसी दरबार को यह सिद्ध करने लिए बाध्य होना पड़ा कि जैनसेनवाद एक विधर्म है। 1680 में यह चर्चा चली थी कि आरनोल्ड को कार्डिनल बना दिया जाय और जैसुइटों ने इन्नोसेंट 11वें को जैनसनवाद पोप की संज्ञा दे दी। इन्नोसेंट 12वें ने भी इसी नीति का पालन किया। उसने सिद्धान्त संविहृता के स्वीकार करने की आवश्यकता केवल इन अर्थों में अनुभव की कि केवल पांच घोषणाएं (five proposi-

---

1. लेत्रे अ मदाम द ग्रिगनेन, 19 अगस्त, 1671।

tions) विधर्मी थी और इस प्रकार पोप के आर्शीवाद से फ्रांसीसी जैनसेनवादियो के लिए शक्ति परीक्षण का दिन टल गया। इन वर्षों में फ्लेंडर्स एव फ्रांस दोनो ही स्थानों पर वे शिक्षक, धर्मोपदेशक तथा नीतिशास्त्री के रूप में जैसुइटो के एकाधिकार को चुनौती देते रहे। उनके पीछे जनभावना पर्याप्त मात्रा में थी और उनकी सफलता न जैसुइटो को यह अनुभव करा दिया कि उनकी समाप्ति ही इस भारी सघर्ष के अन्त का एकमात्र उपाय है।

क्वेसनेल

लेटर्स प्रोविन्सिएलिस्ट के द्वारा इन दोनो बलो के नेताओ को एक महत्वपूर्ण वाद-विवाद मे उलझा दिया गया 1693 मे आरनोल्ड एव 1695 मे निकाल की मृत्यु के पश्चात् दल का नतृत्व लड़ाकू ओरेटोरियन पेसक्यूवर क्वेसनेल द्वारा सभाल लिया गया। उसके बारे मे यह निश्चय हुआ कि वह जनसनवादी एव जसुइटो के आपसी मतभेदो को चरम स्थिति मे लायगा। इस निश्चय को इस तथ्य द्वारा बल मिला कि पेरिस की आर्चबिशपरिक का पद नोवेलिस को दिया गया जो जैनसेनवाद के प्रति सहानुभूति रखता था। क्वेसनल ने 1678 मे अपनी रचना **रिफलेक्शंस मोरेल्स सुर ल नोव्यो टेस्टामेन्ट** उस समय प्रकाशित की जबकि पोर्ट रायल शांति एव समृद्धि का अनुभव कर रहा था और इसकी साहित्यिक कृतियो को कोई चुनौती नहीं दी जाती थी। किन्तु तत्पश्चात् शताब्दी के अन्तिम वर्षो मे जब जैसुइट सघर्ष (fray) के लिए पुनः तैयारी कर रहे थे, इस पुस्तक ने वही भूमिका अदा की जो आरनोल्ड की रचना **द ला फ्रीक्वेन्ते कम्यूनियन** न 50 वष पूर्व की थी। क्वेसनेल द्वारा की गई समीक्षा मे विशेष ध्यान आकर्षित करने वाली बाते थीं--अनुकम्पा की अदम्य शक्ति पर बल देना, मानवीय प्रयत्नों की सारहीनता, पाप एव स्वप्रेम का तादात्मय, सैबथ (sabbath) के सिद्धांत के पालन की आवश्यकता, सन्मार्ग के अनुसरण में होने वाली पीड़ा की महत्वता, केवल दण्ड के भय से पाप न करने की प्रवृत्ति की सारहीनता तथा प्रत्यक ईसाई के लिए धर्मग्रन्थों के अनुशीलन की आवश्यकता। ये वे सिद्धान्त थे जिनका भारी विरोध हुआ। वे उग्र जैनसेनवाद के प्रतीक थे। इसी स्थान पर फेनेलोन ने जो क्वाइटिस्ट सम्प्रदाय के साथ सबध रखने के कारण अपयश का भाजन बन चुका था, जैनसनवादियों के तथा उनके समर्थक नोयलेस व बौसुए के विरोध में घोषणा की।[1] उसके इस सघर्ष में प्रवेश का मुख्य कारण उसकी स्वयं की आस्थाएं थीं क्योंकि वह प्लेटो तथा रहस्यवादी सिद्धांतों का अनुयायी था। यह भी हो सकता है कि इसमें उसका कुछ स्वार्थ हो क्योंकि वह

---

1 स्थानाभाव के कारण जैनसेनवाद के प्रति बौसुए के विचारों का वर्णन करना संभव नहीं है, इन्गोल्ड कृत **बोसुए एत ला जैनसेनिज्मे** (1897) में प्राप्य है।

जानता था कि लुई 14वां पोर्ट रायल को घृणा करता था और उसे आशा थी कि इस प्रकार उसका कृपा पात्र बन कर वह पुनः अपना प्रभाव प्राप्त कर सकेगा। जब अपने कृपा पात्र (protegee) नोवेयलेस को जिसके साथ संबध त्याग करके मदाम दे मेनतीनो ने अपना प्रभाव जैनसेनवाद के विरोध वाले पलड़े की ओर भुका दिया तो एक महान् धार्मिक संघर्ष के लिए पूरी पृष्टभूमि तैयार थी। जैनसेन–वादियों के द्वारा लुई की नैतिकता पर जो आक्षेप किये गये थे उससे वह भी अप्रसन्न था। इसके अतिरिक्त वह जैनसनवादी धर्मदर्शन को इसलिए भी नापसन्द करता था कि वह उसे समझ नहीं सकता था। और उस समय उसने सत्य ही कहा जब यह घोषणा की कि 'मार्ले तथा पोर्ट रायल सहमत नहीं होते।'[2]

एक सारभूत प्रश्न

अपने संरक्षकों के समर्थन पर बहुत अधिक विश्वास करते हुए जैनसेनवादियों ने मामले को चरम स्थिति पर लाने का निश्चय किया। सन् 1701 में उन्होंने पेरिस के आर्कबिशप को 'केस दे केन्साईन्स' प्रस्तुत किया—क्या पाप स्वीकारोक्तिकारक पादरी एक ऐसे धार्मिक व्यक्ति को पाप मुक्त करार दे सकता है जो पांच घोषणाओं की निन्दा करता हो, किन्तु यह पूछे जाने पर कि क्या ये घोषणाएं जैनसन की कृति में थीं आदर और मौन की मुद्रा धारण कर लेता हो। इस प्रकार एक ऐसी द्वेषपूर्ण भावना पुनः जागृत कर दी गई जिसकी तीक्ष्णता समय बीतने पर भी कम नहीं हुई थी। जब आचार संबंधी यह समस्या सार्वजनिक रूप मे सामने आयी, तो बोसुए एवं नोयले सरीखे व्यक्तियों की शक्ति के भी बाहर हो चुकी थी, क्योंकि फ्रॉसीसी जैसुइट जिनका नेतृत्व पियरेलाशेज कर रहा था, एक बार पुनः सघर्ष के पथिक हो गये थे। क्लीमेन्ट 11वां जो कि इन्नोसेन्ट 12वें का उत्तराधिकारी हुआ ने **चेज द केन्साइन** पर जैनसनवादियो के बिपक्ष में निर्णय दिया। इस पर क्वेसनेल को गिरफ्तार कर लिया गया[3] किन्तु वह बच निकला। नोयलेस को एक सम्प्रदाय का पक्षपात करने के आरोप में लुई 14वें ने रोम (पोप) से एक आज्ञा पत्र (bull) प्राप्त करना चाहा जिसमें जैनसेनवादियों की निन्दा की गई हो और यह वचन दिया गया कि राजकीय शक्ति का उपयोग विधर्म के उन्मूलन में किया जायेगा। एक लम्बे विचार विमर्श के पश्चात् आज्ञा पत्र जारी कर दिया गया। जुलाई 1705 में **विनीअम डोमिनी** आज्ञापत्र ने जैनसेनवादियों की इस बात पर निन्दा की कि उन्होंने जैनसन की कृति में पांच घोषणाओ की विद्यमानता पर

---

1 गेजियर, **पूर्व उद्धृत** 1, अध्याय 11।

2 पोप के अनुरोध पर स्पेन की सरकार द्वारा 30 मई, 1703 को ब्रूसेल्स में गिरफ्तार किया गया था।

आदरसूचक मुद्रा धारण की थी, इसके फलस्वरूप सिद्धांत संविहृता को कड़े रूप में लागू किया जा सका और 1669 की शांति संधि अवैध हो गई । अब जो कुछ भी कराना शेष रह गया था वह यह था कि इस आज्ञा पत्र को फ्रांसीसी पादरियों द्वारा स्वीकार कराया जाय और पेरिस की समद में रजिस्टर करा दिया जाये ।

जैनसेनवाद एवं गेलीकनवाद

चूंकि फ्रांसीसी पादरियों का नेतृत्व नोयलेस के हाथ में था, इन दोनों कार्यवाहियों में से पहली आशातीत कठिनाइयों से पूर्ण साबित हुई । 1682[1] की गेलीकन-धाराओं न फ्रांसीसी चर्च के इस अधिकार को स्वीकार किया था कि पोप के आज्ञा-पत्रों के फ्रांस में लागू किये जाने के पूर्व उससे सलाह ली जाये और ये गेलिकन धाराएं अभी भी प्रभावित थीं । यहीं आकर जैनसनवाद एवं गैलीकनवाद में तुलना की जा सकती है । सिद्धांत के महत्वपूर्ण प्रश्नों पर पोप का निर्णय तब तक अंतिम नहीं माना जाता था जब तक जनरल कौंसिल द्वारा अनुमोदित नहीं कर दिया जाय । इस गैलिकन सिद्धांत का सफल प्रयोग जैनसनवाद को बचा सकता था । इस प्रकार यह वाद विवाद जितना धार्मिक था उतना ही राजनीतिक भी बन गया । और चर्च एवं राज्य के पारस्परिक संबंधों पर इस गैलिकन दृष्टिकोण की आड़ में जैनसनवादियों ने अपनी स्थिति को अधिक सुदृढ बना लिया था । नोयेलेस ने पोप के संविधान को स्वीकार करने हेतु पादरियों को प्रेरित किया । किन्तु इसके साथ ही सिद्धान्त के संबंध में पोप के निर्णयों की न्यायिक समीक्षा करने के अधिकार को उसने सुरक्षित रखा था क्योंकि यह माना गया था कि तथ्यात्मक बातों पर पोप गलती भी कर सकता है । पोर्ट रायल ने इस आरक्षण के बावजूद भी संविधान को स्वीकार नहीं किया और इस विध्वंसात्मक कार्यवाही में नोयेलेस की भी मौन सहमति थी । तदनुसार पोर्ट रायल देस चेम्स सन् 1710 में दबा दिया गया और बड़े भावनात्मक वातावरण के बीच भिक्षुणियां (nuns) अन्य वर्गों में विभाजित हो गईं जहां उन्होंने नारीत्व की सहन शक्ति का परिचय देते हुये भांति भांति का अपमान तथा अन्य प्रकार की यंत्रणाओं को सहन किया । पोर्ट रायल देस चेम्पस में भवन तक नष्ट कर दिये गये और जैसुइटों ने सरकार से यह अधिकार प्राप्त कर लिया कि मुख्य मुख्य जैनसेनवादियों के अवशेषों को भी समाप्त कर दिया जाय । इस प्रकार अन्ततोगत्वा जैसुइटों ने अपना प्रतिशोध ले लिया । उन्होंने अपने शत्रुओं के मुख्यालय को नष्ट कर दिया तथा उनकी समाधियों (tombs) को भग्न कर दिया । परन्तु यह प्रतिशोध व्यर्थ ही सिद्ध हुआ । पोर्ट रायल तो नष्ट हो गया किन्तु जैनसेनवाद एक शिक्षात्मक एवं धार्मिक आन्दोलन

1 देखिये अध्याय 7 ।

बन गया जो अन्ततः प्रत्येक कैथोलिक देश में से जैसुइटों के निष्कासन द्वारा अपने एक प्रमुख लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हुआ।

दि बुल यनीजेनिटस (the bull unigenitus) (1713)

क्लीमेंट 11वें एव शाही दरबार जैनसेनवादियों पर प्रहार कर रहे थे अतः यह असम्भव था कि क्वेसनेल की कृति **'रिफलेक्शंस मोरेल्स'** निन्दित होने से बची रहती। सन् 1711 में लुई ने इसकी निन्दा हेतु पोप को आदेश देने की प्रार्थना की और 8 सितम्बर, 1713 को सुविख्यात **यूनीजेनीट्स** लागू किया गया जिसमें इस कृति से उद्धृत 101 घोषणाओं को अभीशप्त किया। एक बार फिर मोंलिनवाद अल्ट्रा मोंलटिनवाद की शक्तियां जैनसनवाद तथा गैलिकनवाद के विरोध में डट गई। नोयेलेस ने आदेश के विरोध में कट्टर अल्पसंख्यक पादरियोंका नेतृत्व किया। विसंगठन की भी चर्चा हुई और जनरल कौंसिल को भी बुलाने की। नोयेलेस क्वेसनेल की पुस्तक के परीक्षक के रूप में सामने नहीं आया बल्कि फ्रांसीसी धार्मिक स्वायत्तता के सिद्धान्त के महत्वपूर्ण समर्थक के रूप में सामने आया, उदासीन (lukewarm) जैनसेनवादी के स्थान पर अब वह एक उत्साही गैलीकन बन गया था। इस उद्–विकास में अनेकों ने उसका साथ दिया। निचले पादरियों में इस प्रश्न पर मतवैभिन्नय था। जिन्होने स्वीकार नहीं किया वे गैलिकन पादरियों का घोर समर्थन करने लगे और इस विषय पर काफी पैम्फलेट निकलने लगे। पार्लियामेंट संघर्ष के लिए तैयार हो गई और एक जैसुइट विरोधी तथा अल्ट्रा मान्टन विरोधी भावना का उदय हुआ और नोयेलेस राष्ट्रीय महापुरुष के रूप में सामने आया। जैनसनवाद पुनर्नवीकृत शक्ति के रूप में सामने आया, इसकी कट्टरताएं कम कर दी गई थीं. इसके सिद्धान्तों का कार्टिजनवाद के सिद्धान्तों[1] के साथ समन्वय कर दिया गया था और एक युक्ति संगत राष्ट्रीय चर्च के सिद्धान्त के साथ इसका संबध जोड़ दिया गया था। ऐसा लगा कि राजा और पोप का आधिपत्य इस नई विरोधी शक्ति के सम्मुख झुक जायेगा। पोप आज्ञा के विरूद्ध इस भावना के प्रभाव में फैनोलोन तथा जैसुइटों ने अपने हितों को संकट में पाया। लुई 14वें का आचरण ढुलमिल एवं अनिश्चयात्मक दिखाई दिया क्योंकि यद्यपि वह जैनसेनवादियों से घृणा करता था तथापि वह स्वयं गैलीकनवाद के सिद्धान्तों पर चल चुका था। अन्ततः उसने 13 अगस्त, 1715 को निश्चय किया कि वह अपने साम्राज्य और चर्च की ओर से पोप की आज्ञा (bull) को सरकारी तौर पर स्वीकार कर लेगा। तत्पश्चात्

---

1 देखिये ब्रूनतिएरे कृत **एत्यूदस क्रिटीक्स**, चतुर्थ शृंखलामाला (**जैनसनिस्टस एत कारटिजन्स**)।

नोयेलेस तथा तीव्र मतभेद रखने वाले पादरियों को झुकाने के लिए नेशनल कौंसिल बुलाई जायेगी। 30 अगस्त, 1715 को लुई की मृत्यु हो गई।

जैनसेनवाद का परवर्ती इतिहास

बहुत समय तक तो फ्रांस **यूनीजेनिटस**[1] की स्वीकृति या अस्वीकृति के बीच में अनिश्चित स्थिति में रहा। सन् 1720 में पार्लियामेंट को आज्ञा रजिस्टर करनी पड़ी। इसका अनुसरण न करने पर सैलेज के बिशप का निष्कासन और सोरबोन से कतिपय जैनसनिस्टों के बहिष्करण ने इस आन्दोलन को जीवित रखने में सहायता की। 1728 में नोवेलेस इस आन्दोलन से हट गया. नेता के हट जाने से आन्दोलन और भी जनप्रिय और जनतांत्रिक हो गया। इसकी तीव्रता कम होने के स्थान पर अधिक ही हुई क्योंकि रूढ़िवादी पादरियों ने यह परम्परा अपना रखी थी कि जो लोग इस आशय का प्रमाण-पत्र न दिखला दें कि उन्होंने इसका अनुसरण करने वाले पादरी के सम्मुख स्वीकारोक्ति की है तब तक उसके अन्तिम संस्कार नहीं कराये जा सकते। इस प्रकार के 'स्वीकारोक्ति के टिकटों' ने अन्ध-विश्वास पर आधारित सिद्धान्तों की ज्यादतियों पर दार्शनिक दृष्टि से प्रहार करने में काफी सार सिद्ध कर दिया था तथा 18वीं सदी में अधिकृत धर्म दर्शन के प्रति अनास्था को बढ़ाने में मदद की। किन्तु 1762 का यह आन्दोलन जिसने जैसुइटों के बारे में जनमत को शिक्षित करने के विषय में काफी मदद की थी इतना दुर्बल था कि जैसुइटों के बहिष्करण के बाद भी इससे वह कोई लाभ नहीं उठा सका। यद्यपि 19वीं शताब्दी तक जीवित रहने में यह सफल अवश्य हुआ। इसका अपना मुख-पत्र भी निकला यद्यपि इसके समर्थक वे ही लोग थे जो अपनी पारिवारिक परम्परा से जैनसेनवादी थे, चाहे स्वयं के विश्वास के आधार पर न हो। 1909 में पोर्ट रायल देस चेम्पस में इसकी विध्वंस की दूसरी शताब्दी का समारोह मनाने हेतु धार्मिक महोत्सव हुआ। इस अवसर पर बहुत से भाष्य लेख (monographs) प्रकाशित हुए जिनमें इस आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट किया गया था। इसी समय पेरिस पोर्ट रायल कें भवनों में लोक रुचि पुनः जागृत हुई। 1918 में मैगनी के श्मशान घाट में सेन्ट मार्था की एकमात्र जीवित बहिन के दफनाने के साथ ही आरनोल्ड की महान् परम्पराओं के प्रति बफादार भिक्षुणियों के समूह का अन्तिम चिन्ह भी समाप्त हो गया। कुछ ही समय पूर्व पोर्ट रायल के पेरिस निवासी मित्रों ने लुवेन विश्वविद्यालय को एक हजार से अधिक ग्रन्थों को समर्पित करके एक महान् कार्य किया जिसके द्वारा बेयस विश्वविद्यालय तथा जैनसेन के प्रति फ्रांसिसीयों ने आभार व्यक्त किया।

---

1 गेजियर, पूर्व उद्धृत 2, में जैनसेनवाद के परवर्ती इतिहास का विस्तृत विवरण प्राप्य है।

जैंनसेनवाद एवं पोर्ट रायल का भविष्य

इस प्रकार पोर्ट रायल एव जैंनसेनवाद केवल स्मृति की वस्तु ही रह गये हैं, जिनमें अतीत से महानुभूति रखने वाले केवल भावनात्मक रुचि रखते है। जैंनसेनवाद में जो कमियां थी, जैमे अव्यावहारिक आदर्श, कट्टर धर्म दर्शन, तर्क तथा आस्था पर अति–मानुष ढग की प्रत्याशाये करना, उनक कारण यह उन सम्प्रदायों की तुलना मे निर्जीव हो गया जिनमे मानवीय अपूर्णताओ की पर्याप्त गुंजायश दी गई थी और जिनमे समझौते की भावनाए भी परिलक्षित होनी थी।

सेन्ट मीडार्ड को विकृत करने वाले (the convulsionaries of st. medard)

पोर्ट रायल को पैस्कल ने जिस सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा दिया था वहां उसके अधःपतन के कारणों की समीक्षा करते हुए मैं परिवर्ती इतिहास[1] की एक विस्मृति सी घटना की ओर संकेत करने की अनुमति चाहूगा।1 27 में 37 वर्ष की अवस्था में डीकन पेरिस का निधन हो गया जो आरम्भ मे जैंनसेनवादी शिक्षा के प्रति आकर्षित हुआ था और जिसने अपना जीवन पर्याप्त मर्यादा और त्याग के साथ बिताया। उसके सम्पर्क मे आने वाले उसे सन्त समझने लगे थे। उसे सेन्ट मीडार्ड के शमशान घाट में दफनाया गया। उसकी चिर निद्रा के स्थान पर कुछ इस प्रकार के दृश्य दृष्टिगोचर हुए जो धार्मिक चमत्कारों (manifestations) के इतिहास में भी कम ही मिलते हैं। उसके दफनाने के दिन पक्षाघात से पीडित एक स्त्री उसके ताबूत को छूने से ही स्वास्थ्य लाभ कर गई। और इस चमत्कार का कारण वह पवित्र मर्यादा बताया गया जिसमें डीकन ने अपना जीवन अर्पित किया था। 1731 तक तो सेन्ट मीडार्ड की समाधि अगणित अपगों और रोगियों के स्वास्थ्य का तीर्थ स्थल बन गई। लूरडिस के इस छोटे सस्करण (miniature) में अनेकों को स्वास्थ्य लाभ हुआ। स्वास्थ्य लाभ से पूर्व यहां आते ही रोगियों के शरीर से ऐंठन आया करती थी किन्तु उस समय किसी भी प्रकार की पीड़ा का अनुभव नही होता था, अन्त में वे थके हुए होने पर भी स्वस्थ होकर लौटते थे। सेन्ट मीडार्ड की इस ऐंठन विद्या का इतिहासकार केर्टे द मान्थगैरोन था जिसके द्वारा वर्णित व्यक्तिगत अनुभव धार्मिक भावनात्मकता के इतिहास में अभूतपूर्व है। लुई 15वे को जब इस इतिहास की एक प्रति भेंट की गयी तो उसने उसे बेस्टिल मे निष्कासित कर दिया। जैसे जैसे सेन्ट मीडार्ड की कीर्ति फैलती गई उसकी समाधि पर होने वाले दृश्य अधिक से अधिक विचित्र होते गये। भक्तों ने वहा भांति भांति के नृत्य

1 देखिए मैथ्यू कृत लेस कन्वलशनरीज द सेंट मीडार्ड, तथा गेजियर पूर्व उद्धृत 1, 15।

करना आरम्भ कर दिया, भक्तजन ऐंठन के समय अपने आपको भारी हथोडों से पीट कर अपनी आलौकिक दृढ़ता सिद्ध करते थे, कुछ भक्तजन कच्चा मांस लेकर अपने आपको जलती हुई अग्नि पर लटका देते थे तथा कच्चा मांस बड़ी जल्दी भुन जाता था जबकि लटके हुए भक्त को कोई नुकसान नहीं पहुंचता था। यहां तक कि स्वयं वोल्टेयर के भाई ने भी इस आन्दोलन में भाग लिया था और सबसे बड़े आश्चर्य की बात यह है कि उसने भी अपनी अभेयता तथा अदाहयीता को इसी प्रकार प्रमाणित करते हुए प्रमाण-पत्र प्राप्त किया था। अन्त में इस प्रकार की ज्यादतियों को समाप्त करने के लिये पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा। सेन्ट मीडार्ड पोर्ट रायल का एक बहुत ही कारुणिक उपसंहार है।

अध्याय 9

स्पेन, इटली और पेपेसी

स्पेन, इटली और पेपेसी का प्रारम्भिक महत्व

स्पेन और इटली के आन्तरिक इतिहास को एक ही प्रकरण में लिखा जा सकता है। यह इस शताब्दी में हुए इन दोनों देशों के भाग्य परिवर्तन का प्रमाण है। यूरोप के इतिहास के किसी अन्य काल में इस प्रकार का संक्षिप्त वर्णन सम्भव नहीं है। पेपेसी को इनमें सम्मिलित करने से तीन राजनीतिक इकाइयां बन जाती हैं जो 17वीं शताब्दी में अपने भाग्य की निम्नतम दशा में से गुजर रहीं थीं।

फिलिप तृतीय (1598–1621)

फिलिप द्वितीय स्पेन का अन्तिम बड़ा राजा था। उसके तीन उत्तराधिकारी फिलिप तृतीय 1598–1621), फिलिप चतुर्थ (1621–1665) और चार्ल्स द्वितीय (1665–1700) अधिकाधिक मात्रा में स्पेन के हैप्सबर्ग-वंश का निरन्तर पतन प्रकट करते हैं। वास्तव में इसमें से कोई भी राजा शासन करने के योग्य न था, तथा ये सभी अपने मन्त्रियों अथवा स्नेहभाजनों के प्रभाव में थे। फिलिप तृतीय अपने पिता की मृत्यु के समय (सन् 1598 में) बीस वर्ष का था। तब तक वह प्रमुखतया अपनी कार्य-तत्परता में उत्साह और नियमितता के कारण विख्यात हो गया था। उसमें ऐसे गुण थे जो राजा की अपेक्षा मठवासियों के लिए अधिक उपयुक्त थे। उसका जीवन पवित्र अवशेषों और सन्तों के मन्त्रोच्चार के बीच व्यतीत हुआ था। उसके जीवन में स्वतः संचालित नियमितता थी। उसने अपने जीवन को केवल धर्म-प्रतीकों के समक्ष व्यतीत किया था। इन सब बातों ने उसकी स्वतन्त्र विचार-शक्ति का हनन कर दिया था। वेनेशियन राजदूत[1] ने यह रिपोर्ट दी कि "वह अच्छा ईसाई हैं," किन्तु शेष बातों के सम्बन्ध में लोग उसके विषय में जो कुछ कहते हैं उन्हें दोहराने का साहस नहीं कर सकता। फिलिप बहुत जल्दी अपने प्रिय-जन फ्रांसेस्को गोमेज द सांदोवल य रोजस के प्रभाव में आ गया। लर्मा के ड्यूक, जिसने अपनी स्थिति का उपयोग अपव्यय और भ्रष्टाचार की व्यवस्था स्थापित करने में किया। लर्मा और उसके अनेकों पिछलग्गुओं ने राष्ट्रीय आय को अपनी ऊपरी आमदनी के रूप में लिया, फिलिप द्वितीय के सरलतापूर्ण और संयमी दरबार

---

1 एस० कोंतेरिनी (1605) रिलेजिन देगले एम्बासितोरे वेनिते शृंखला। स्पेगना, I 234।

का स्थान प्रदर्शनात्मक व्यसनों ने ले लिया, न्यायिक प्रशासन एक स्वांग बन गया जिसमें खुले आम घूंसखोरी होती थी और लोगों में ईमानदारी अथवा कार्य करने की निरर्थकता में दृढ विश्वास घर कर चुका था। सौभाग्य से स्पेन में यह राज्य अपेक्षाकृत शान्तिपूर्ण रहा। पुर्तगाल अब भी स्पेनिश पराधीनता की उस अवस्था में सन्तुष्ट था जिसमें उसे फिलिप द्वितीय ने बना दिया, इंगलैंड के साथ 1604 में और संयुक्त प्रदेशों के साथ 1607 में शांति-संधि पर हस्ताक्षर हो गये थे तथा संयुक्त प्रदेशों के साथ 1609 में बारह वर्षीय युद्ध-विराम-संधि करली गई थी।

मारिस्को (Moriscos)

फिलिप तृतीय के राज्य में सबसे महत्वपूर्ण घटना मारिस्को (Moriscos) का निष्कासन थी। वे धर्म-परिवर्तित [1] मूरों (Moors) के ईसाई वंशज थे और सदा अमिश्रित रक्त के प्राचीन ईसाइयों (old christians) से पृथक माने जाते थे। बहुत समय तक मोरिस्को-सम्प्रदायों पर राजनैतिक व धार्मिक फूट पैदा करने का संदेह रहा। सन् 1600 में यह आशका थी कि कहीं ऐसा न हो कि हेनरी चतुर्थ, जिसने अभी फ्रांस में अपनी सत्ता स्थापित की थी, इस नये ईसाइयों (new-christians) से हैप्सबर्ग राजा के विरुद्ध सांठ-गांठ करले, किन्तु इसकी जांच के फलस्वरूप यह पता लगा कि मोरिस्को फ्रांस से कोई पत्र-व्यवहार नहीं कर रहे थे बल्कि वे तुर्कों[2] से बातचीत कर रहे थे। सन् 1604 में हेनरी और वेलेंशिया के मारिस्को के बीच षडयन्त्र की बातचीत हो रही थी, किन्तु भेद खुल जाने के कारण यह असफल रही। चार वर्ष बाद मोरक्को में मूले शेख (muley sheikh) और उसके भाई मूले जैदां के साथियों में गृह-युद्ध छिड़ गया। वेलेंशिया के मारिस्को पर मूले जैदां के साथ मिलकर षडयन्त्र रचने का संदेह किया गया, क्योंकि वे स्पेन को फिर जीतना चाहते थे। सन् 1609 में मामला उस समय पराकाष्ठा पर पहुंच गया जब यह ज्ञात हो गया कि फ्रांस का राजा हैप्सबर्गों के विरुद्ध एक बड़े अभियान की तैयारी कर रहा था और फ्रेंच नेवारे (french nawarre) के गवर्नर. लाफोर्स (la force) से इस योजना के सम्बन्ध में बातचीत कर रहा था कि स्पेन के अयूरोपीय तत्वों को स्पेन के राजा के विरुद्ध संतुलन बनाये रखने के लिए प्रयुक्त किया जाये।

---

1 मूर द्वारा 11वीं शताब्दी में स्पेन पर आक्रमण किया गया था तथा ये उन अरबों से सर्वथा भिन्न थे जिन्होंने 756 में खालीफे आव कोर्दबा की स्थापना की थी। मारिस्को मुख्यतः वेलेशिया, केटेलोनिया एवं अरगोन में पाये जाते हैं।

2 एच० सी० ली, दि मारिस्को आव स्पेन, 285।

उनके विरुद्ध आरोप

यद्यपि शत्रु से मिलकर षडयन्त्र करने के आरोप अनिश्चित थे और प्राय. प्रमाण रहित थे तब भी इसमें कोई संदेह नहीं कि स्पेन में कुछ समय से इस विदेशी जनता के विरुद्ध प्राचीन ईसाईयों के एकरूप समाज में राष्ट्रीय द्वेष बढ़ता जा रहा था। मोरिस्को लोगों के विरुद्ध प्रमुख सार्वजनिक आक्षेप इस[1] प्रकार थे-—

1 वे अपनी जाति वालों को धार्मिकवृत्ति के लिये नहीं भेजते थे।

2 सेना में वे गुप्तचरों का काम करते थे।

3 उन्होंने व्यापार और कलाओं पर एकाधिकार कर रखा था।

4 उन्होंने अपनी मितव्ययिता के कारण प्राचीन ईसाइयों को मांस व मदिरा पर अधिकांश कर देने के लिए बाध्य किया।

5 वे भूमि खरीदते नहीं थे किन्तु पट्टे (लीज) पर देते थे।

6 अपने धन से वे न्यायाधीशों को भ्रष्टाचारी बना सकते थे।

इन लांछनों से मोरिस्को के लोगों की अपेक्षा 17वीं शताब्दी के स्पेन की मूर्खता (naivete) अधिक प्रकट होती है।

मारिस्कों का निष्कासन (1609)

मारिस्को सम्प्रदाय के लगभग पांच लाख लोग स्पेनवासी थे जो प्रायः परिश्रमी और नियमानुसार चलने वाले थे। अपनी मेहनत के कारण उन्होने स्पेन में काफी धन भी लगा रखा था। इसलिए उनके क्रान्तिकारी होने की सम्भावना नहीं थी। प्रत्येक बड़े सम्प्रदाय की भांति, उनमे भी कुछ असन्तुष्ट व्यक्ति थे, किन्तु जांच करने के बाद उन्हें निकाला जा सकता था या दण्डित किया जा सकता था परन्तु अरक्षित स्त्रियों और बच्चों को इसमें सम्मिलित नहीं किया जाना था। समस्त जनता का बहिष्कार करने का विचार तात्कालीन आचार-संहिता के सिद्धान्तों के विरुद्ध न था तथा राजनैतिक औचित्य के तर्क को लोगों की धर्मान्धता से और बल मिल गया था। सन् 1609 के सितम्बर में वेलेशिया में उन्हें देश से निकालने की घोषणा प्रकाशित कर दी गई, मोरिस्कों को कुछ निश्चित बन्दरगाहों के मार्ग से चले जाने के लिये तीन दिन की अवधि दी गई। थोड़े से लोगों को चीनी की मिलों, धान की फसल और सिंचाई-व्यवस्था की देखभाल के लिये रहने की छूट दे दी गई।[2] चार वर्ष से छोटे बच्चों को भी, जो रहना चाहें, छूट दे दी गई, किन्तु उनके माता-पिता तभी रह सकते थे यदि पिता प्राचीन ईसाई हो।

---

1 एलतामिरा य क्रीविया, हिस्तोरे द एस्पेना, 3,219।

2 एच० सी० ली, पूर्व उद्धृत, 339 एफ एफ।

बालकों की समस्या ने उस काल की भावनाओं को बहुत ठेस पहुंचाई । यह कठिनाई इसलिए नहीं थी कि छोटे बालकों को उनके माता पिता से अलग करके उनके साथ अन्याय किया जा रहा था, बल्कि भय यह था कि वे बच्चे उस प्रदेश में जाकर जहां निष्कासन के बाद उनके माता पिता उन्हें ले जायें, विधर्मी न हो जायें। इस प्रस्ताव पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया कि सात वर्ष से कम आयु के बालकों को देश में रख लिया जाये और उन्हें पुराने ईसाईयों में दासों के रूप में बांट दिया जाये । इससे यद्यपि उनकी स्वतंत्रता छिन जायेगी किन्तु आत्मा बनी रहेगी । उनको कत्ल करने के विकल्प पर भी विचार किया गया, किन्तु अन्ततोगत्वा उनका दुर्भाग्य इससे भिन्न न हुआ ।

निष्कासन की दुर्घटना

बेलेंशिया के मोरिस्को को निष्कासित करने के पश्चात् 1610 में अरगोन और केटेलोनिया के मोरिस्कों के साथ भी वैसा ही व्यवहार किया गया । सन् 1609 में निष्कासित व्यक्तियों की कुल सख्या के भिन्न भिन्न अनुमान लगाये गये है किन्तु 4 लाख का अनुमान विश्वसनीय माना जा सकता है ।[1] इस कार्यवाही से जो विचित्र अन्याय हुआ वह यह था कि थोड़े से लोगों के अतिरिक्त जो फ्रांस से बच निकले थे अन्य सभी मोरिस्कों को बारबरी कोस्ट (barbary coast) पर ले जाया गया, जहां अधिकांश लोग भूख मे मर गये अथवा ईसाई मत पर शहीद हो गये ।[2] इस प्रकार लगभग दो तिहाई लोग मर गये । इनका निष्कासन सेंट बार्थोलोमियु (St. Bartholomew) के वध से भी बडा अपराध था, क्योंकि यह कार्य निष्कासितों की सम्भावित दुर्दशा का पहले से पूरा ज्ञान होते हुए किया गया और देश में सार्वजनिक उन्माद का भी अभाव था जिसका बहाना बनाकर दण्ड की कठोरता को कम किया जा सकता । किन्तु इस प्रकार के राष्ट्रीय अपराधों का बदला भी प्रायः जल्दी मिल जाता है । मारिस्कों के निष्कासन को स्पेन के पतन के अनेकों कारणों में से अब भी एक कारण माना जा सकता है ।[3]

निष्कासन के आर्थिक परिणाम

इसका पहला परिणाम यह हुआ कि राष्ट्र को सेंसास (censos) या मारिस्कों को दी गई खेती-बाड़ी की भूमि पर जो लगान लिया जाता था उसकी

---

1 ली, पूर्व उद्धृत, 359 ।

2 ली के अनुसार इस दुर्घटना में इस तरह दो तिहाई से लेकर तीन चौथाई लोगों की मृत्यु हो गई थी ।

3 देखिये, नामावली ।

हानि हुई। यह लगान 6 से 8 प्रतिशत तक था। मारिस्को उद्योग के कारण यह पूंजी लगाने का सर्वोत्तम बचाव समझा जाता था। जिन ज़मीदारों पर अब यह बोझ पड़ा वे इसे सहन करने में असमर्थ सिद्ध हुए। अत: उन्हें अपनी भूमियों को रहन रखना पड़ा या बेचना पड़ा। इस प्रकार जिन विधवाओं अथवा मठाधीशों ने अपनी पूंजी को खेती-बाड़ी में लगा रखा था उन्हें अपनी नियमित आय से वञ्चित होना पड़ा। जिन कुलीनों को हानि हुई उनकी पूर्ति सरकार द्वारा कर दी गई किन्तु मध्यम वर्ग को यह हानि सिर झुकाकर उठानी पड़ी। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि आबादी के केवल मात्र साहसिक अंग का बहिष्कार करने से स्पेन के उद्योग खत्म हो गये, केवल विदेशी पूंजीपतियों द्वारा चालित उद्योग शेष रहे जो अपने लाभ को देश से बाहर ले जाते थे। जब तक स्पेन के अधिकार में दक्षिण अमरीकी उपनिवेशों के असीमित साधन थे तब तक उसके लिये यह साधारण बात थी। सोने-चांदी के आयात के कारण वह विपरीत व्यापारिक असंतुलन को ठीक करने की आशा कर सकता था, किन्तु 17वीं शताब्दी के प्रारम्भ होते होते व्यय के ये साधन भी समाप्त होते जा रहे थे। बहुत सी खानें समाप्त होती जा रहीं थीं, सम्पत्ति वाले नौ-सेना के जहाज रक्षित होने पर भी प्राय: फ्रांसीसी, डच और अंग्रेज लुटेरों के हाथ में पड़ने लगे। जो धन उनसे बचकर देश में पहुंच जाता था वह राज-दरबार द्वारा अचिरात व्यय कर दिया जाता था। मोरिस्को के निष्कासन का एक अन्य परिणाम यह हुआ कि सिक्कों में और अधिक मिलावट होने लगीं। मोरिस्कों ने नकली सिक्कों[1] का एक बडा खजाना तैयार कर लिया था जिन्हें सौदा करने वालों ने सस्ते मूल्य पर प्राप्त कर लिया था और उन्होने उन सिक्कों को स्पेन के असली सिक्कों के रूप में चलाया। स्पेन की मुद्रा इस प्रकार की थी कि असली व नकली सिक्कों में पहिचान करने के लिये बहुत चतुराई की आवश्यकता होती थी इसलिये नकली सिक्के सरलतापूर्वक चल जाते थे। एक बड़ी बात यह थी कि मारिस्को मुद्रा-निर्माताओं ने प्राचीन ईसाइयों में से इस कार्य के लिये पटु शिष्य तैयार किये जो दु:साहस और प्रवीणता में अपने गुरुओं को भी मात कर गये। 17वीं शताब्दी के स्पेन में मुद्रा गढ़ना लाभप्रद और काफी सुरक्षित उद्योग था जिससे लोगों में अनिश्चितता व अस्थिरता की भावना बढ़ गई जो राष्ट्रीय उद्योगों के विकास के लिये बहुत हानिकर होती है। ऐसी वस्तुस्थिति के साथ साथ बहुत से लोगों द्वारा देश छोड़ने से जनसंख्या में कमी और अविवाहित धर्मोपदेशकों की संख्या में अत्याधिक वृद्धि, स्पेन की आर्थिक अवनति को समझने में सहायता कर सकती है।

---

1 वही; पृ० 366।

फिलिप तृतीय की मृत्यु (मार्च 1621)

फिलिप तृतीय के राज्य का शेष काल मुख्यत: दरबार के षड्यन्त्रों में लगा रहा। 1618 में लर्मा (lerma) को उसके पुत्र ड्रूक द उकेदा (duc d uceda) ने विस्थापित कर दिया, किन्तु इससे नीति में परिवर्तन नहीं हुआ। इस काल में स्पेन में कोई राजनीतिज्ञ नहीं हुआ। केवल एक महान् कूटनीतिज्ञ गोंडोमार (godomar) उत्पन्न हुआ जिसने इंग्लेण्ड के जेम्स प्रथम को पहले से ही स्पेनिश विवाह के पक्ष में कर लिया। 31 मार्च, 1621 को फिलिप तृतीय एक सोलह वर्षीय पुत्र छोड़कर ज्वर से मर गया।

फिलिप चतुर्थ का चरित्र

वेलास्क्वेज(Velasquez)ने अपने चित्र द्वारा आने वाली पीढ़ियों को फिलिप चतुर्थ की मुखाकृति की विशेषताओं से परिचित करा दिया है। उसकी व्यक्तिगत चारित्रिक विशेषतायें थीं, आलस्य अथवा निश्चलता, शान व विलासिता का शौक और भ्रष्टाचार व दिखावटी पवित्रता में जल्दी जल्दी परिवर्तन। भवन-निर्माण में कुछ रूचि होने के कारण उसने इमारतों पर बहुत धन व्यय किया, सुन्दर मेले और आनन्दोत्सव मनाने मे वह गौरव समझता था, वह वेलास्क्वेज जैसे व्यक्तियो को दरबारी चित्रकार बनाकर संरक्षण देता था तथा दरबार की विलासिता पूर्ण और सुख-लोलुप दरबार के तमाम कार्यों में उसने अपने आपको पारंगत बना लिया। इस प्रकार के शौक, व्यत्तिगत जीवन में चाहे हानिकार न हों, शासक के लिये प्राय: घातक सिद्ध होते है। नियमित प्रशासनिक कार्यक्रम से उसे स्थायी व गहरी अरूचि थी और अपने देश के प्रशासन में वह कोई रूचि नहीं रखता था। राजदूत, जिनका वह दरबार मे स्वागत करता था, उसकी मुख-मुद्रा से कुछ भी नहीं समझ सकते थे, उसकी मुखाकृति में कभी नरमी नहीं आती थी लोगों के सम्मुख आने पर वह अत्याधिक गम्भीर रूप धारण कर लेता था, और ऐसा कहा जाता है कि अपने जीवन में वह केवल तीन बार हंसा[1] गुड फ्राइडे वाले दिन पैदा होने के कारण ऐसी मान्यता थी कि उसे अद्भुत दृष्टि प्राप्त हुई थी जिससे यदि कोई कत्ल हुआ हो तो उसे पृथ्वी पर लाश दिखाई दे जाती थी। समकालीन व्यक्तियों का मत था कि इस असुविधाजनक क्षमता के कारण ही उसकी सदा ऊपर देखने की आदत थी।[2] वह सरलता से चापलूसी के वशीभूत हो जाता था, विलासिता और दुराचार में विशिष्टता प्राप्त होने के कारण उसका दरबार पूर्वी देशों (oriental) के समान बन गया। देवता की भांति उसने लोगों के सम्मुख आना बन्द कर

1 देखिए सर आर० फेश्वे (1702) के मूलपत्र 42।

2 द ऑलनाय, वोयज एल एस्पेगने, 3 195।

दिया क्योंकि देवताओं की तरह वह भी अपने कार्यों के लिए साधारण मनुष्यों के सामने उत्तरदायी नहीं था। लुई चौदहवें का चाचा और श्वसुर होने के कारण उसने फ्रांसीसी राजा के कुछ चारित्रिक गुणों को परिवर्द्धित रूप से उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया, किन्तु उसमें लुई की सार्वजनिक कार्यों में श्रमशीलता और उत्साह का लेश मात्र भी अंश न था। उसकी प्रजा ने उसे 'महान्' की उपाधि से विभूषित किया, क्योंकि पायस (Pious) की उपाधि फिलिप तृतीय को पहले ही दी जा चुकी थी, किन्तु बाद में उत्तराधिकारियों (Posterity) ने इन दोनों उपाधियों को त्याग दिया। फिलिप चतुर्थ चार्ल्स फिलिप का पिता था।

आलिवरेज (Olivarez)

फिलिप अपने एक प्रेम पात्र-डॉन गास्पर द गुजमन, काउन्ट आव आलिवरेज (Don Gaspar de Guzman, Count of olivarez) की सहायता से शासन करता था, जिसने प्रथम मंत्री (first ministers) की सी विशेषतायें धारण कीं। उसका पहला काम पिछले शासन के प्रेम-पात्रों के प्रति क्रूर-कठोरता का व्यावहार करना था। कुछ समय तक कुशासन को रोकने, अनावश्यक अफसरों की संख्या को सीमित रखने, व दरबार के खर्च को घटाने का प्रयास किया गया, परन्तु शीघ्र ही इस सुधार का दुष्परिणाम यह हुआ कि जनता की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगने लगे। विधान अपनी सूक्ष्मता के कारण बदनाम होने लगा और स्पेन में सामाजिक अव्यवस्था और आदर्श कानून-निर्माण आरम्भ हो गया। मेड्रिड यूरोपियन राजधानियों में सबसे अधिक सुख-लोलुप, सबसे अधिक दुराचार-पूर्ण और सबसे अधिक गन्दी राजधानी बन गई। जल्दी ही सुधार का दिखावा मात्र भी समाप्त कर दिया गया और स्पेन अपनी सरकार और दरबार द्वारा पतन की ओर घसीटा जाने लगा। ऑलिवरेज ने अपने और अपने सम्बन्धियों के लिए अपवित्र साधनों द्वारा धन एकत्र करके दूसरों का मार्ग-दर्शन किया। दरबार ने अपव्यय और आलस्य का उदाहरण प्रस्तुत करके मितव्ययिता और परिश्रमशीलता को आलोकप्रिय बना दिया।

उसकी नीति

यद्यपि ऑलिवरेज ने देश में बुराइयों को प्रोत्साहन दिया तथा विदेशों में स्पेन का सम्मान बढ़ाने के लिए कुछ नहीं किया किन्तु उसने दो महत्वपूर्ण बातों में रिशेलू की नकल करने की चेष्टा की यथा-शासन का केन्द्रीकरण करने और राजनैतिक उद्देश्यों के लिये साहित्यिक प्रचार करने में उसने समस्त स्पेन के लिए समान कानून पर बल दिया और स्पेन के पुराने राज्यों में जिनसे मिलकर स्पेन का निर्माण हुआ था बहुत सी सावधानी से रक्षित भिन्नताओं को दूर करने का प्रयास किया। इस उद्देश्य-प्राप्ति के लिए उसने कैटेलनों को केस्टाइल और केस्टाइल

निर्वाचकों को केटोलोनिया में भेजकर प्रशासन की श्रेणियों मे विभिन्न जातीय तत्वों को मिला दिया। उसने स्पेनवासियों और पुर्तगालियों में समन्वय करने की भी कोशिश की और 1730 में पर्नाम्बूकों को फिर से प्राप्त करने के लिए स्पेनियों और पुर्तगालियों की मिश्रित सेना भेजी। यद्यपि स्पेन के सम्मुख वे धार्मिक कठिनाइयां न थीं जिन्होंने रिशेलू के प्रशासन में रुकावट डाली थी, तो भी स्पेन ऐसे राज्यों के मिश्रण से बना था जो स्थानीय भिन्नताओं को सुरक्षित रखने मे व्यक्तिगत सम्मान समझते थे। ऑलिबरेज की नीति यद्यपि अस्थायी रूप से अरगोन, वेलेंशिया और नेवेरे में कुछ अंशों में सफल रही किन्तु इस नीति से बास्क प्रान्तों में और कैटेलनो में विद्रोह की भावना बढ गई। 1740 का केटेलन विद्रोह मुख्यत: केस्टिलियन प्रधान के विरूद्ध ईर्ष्या, अफसरों के प्रति घृणा, और ऑलिवरेज द्वारा केटेओनिया के केर्टिज की खुली घृणा के कारण हुआ। स्पेन के इतिहास में यह विद्रोह सबसे गम्भीर था। वायसराय का वध कर दिया गया और विद्रोही नेताओं ने फ्रांस के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किये जिससे उन्होंने फ्रांस से सहायता का वचन ले लिया। 1652 तक स्पेन से केटेलोनिया वापिस नहीं लिया जा सका। फ्रांस को फ्राडे के कारण इस प्रान्त पर से अपना अधिकार हटाना पड़ा।

स्पेनिश राष्ट्रीय प्रचार

इसलिये अन्तिम रूप से यह कहा जा सकता है कि ऑलिवरेज स्पेन को एकरूपता देने में असफल रहा। यह काम हेनरी पंचम से पूर्व अपूर्ण रहा और वह भी कानून द्वारा नहीं बलिक विदेशी आक्रमण के भय से समन्वित हुआ। इसी प्रकार राजनैतिक प्रचार के उपयोग में भी ऑलिवरेज को सफलता न मिली क्योंकि देश के अन्दर कुशासन इतना स्पष्ट था कि वह भी लोगों को बौद्धिक रूप में विश्वस्त नहीं कर सकता था कि स्पेन की नीति पूर्णतया न्यायसंगत थी। पैम्फलेट लिखने वालों को फ्रांस के विरूद्ध उकसाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता था, इस कार्य सिद्धी के लिए की वे स्पेन पाखण्ड के प्रति घृणा तथा परम्परा और यथार्थता के प्रति आदर की भावना पर विश्वास रख सकते थे। इस प्रकार शिफल्स(chiffles) लिखित **विंडिसिये हिस्पानिके** (vindiciac hispanicae) इसी धारणा पर आधारित है कि शार्लमेन के असली वंशज केपेटियन (capetean) न होकर हैप्सबर्ग थे। सूसा द मेसेडो द्वारा लिखित **लुसिटानिया लिबरेटा** (lusitania liberata) में भी इसी प्रकार की अनैतिहासिक धारणायें हैं। यह सामान्य पुस्तकें थीं। अधिक उन्नत[1]

---

1 इउन द ला पोते, ला कनवीनेसिआ द लास दोस मोनारक्विस केतोलिक्स ला द ला इग्लेसिया रोमाना य ला देल इम्पेरियो एस्पेनोल, य दिकेंस द ला प्रिसीडेंस द लास रेयसं केतोलिक्स द एस्पेना ए तोदस लास रेयस देल मुंदों (1612)।

प्रचार के एक लाक्षणिक नमूने में यह दावा पहले किया जा चुका था कि स्पेन सब राष्ट्रों की मा हैं जो बाढ से 543[1] वर्ष पश्चात् बस गई थी। इसके निवासी ट्यूबल केन[2](tubal cain) के बशज थे और अन्य राष्ट्रों के उत्पादक थे जिनमें आयरलैंण्ड भी सम्मिलित था।

पुर्तगाल की स्वतन्त्रता

फ्रांस के साथ युद्ध (1635-1660) फिलिप चतुर्थ के शासनकाल की प्रमुख राजनैतिक रोचक घटना है जिसमें स्पेन की सम्पूर्ण सैनिक शक्ति व्यय हो गई। पुर्तगाल को (जिसे फिलिप द्वितीय द्वारा अपने राज्य में मिला लिया गया था) स्पेन के विरूद्ध खडा करना रिशेलू की नीति का अंग था। इस नीति को पुर्तगालियों की स्पेनिश शासन के प्रति घृणा तथा शोषण से और अधिक प्रोत्साहन मिला। राष्ट्रीय रोष उग्र होने का यह कारण भी था कि इस काल में पुर्तगाली उपनिवेश डचों की दया पर आश्रित थे। प्रशासन में विभिन्न जातियों को मिलाने की ऑलविरेज की नीति से पुरानी घृणा पुनर्जागृत हो गई। 1637 में इवोरा (evora) में एक विद्रोह हुआ जिसके लिए यह कहा जाता है कि इसे रिशेलू द्वारा पुर्तगाली यहूदियों के साथ व्यवहार करने से उत्तेजना मिली।[3] यह विद्रोह राज्य के एक दावेदार जॉन आव ब्रेगेन्जा (john of briganza) के नेतृत्व में हुआ जो अपनी महत्वाकाक्षी पत्नी लुई द गुजमान (louise de guzman) द्वारा उत्तेजना पाता था, के नेतृत्व में हुआ। लिस्बन का आर्कबिशप और अधिकांश आदि निवासी कुलीन उसमें फसा लिए गये और 1681 में ब्रेगेंजा ड्यूक, जॉन चतुर्थ के नाम से राजा घोषित कर दिया गया. इस प्रकार एक बार फिर पुर्तगाल एक राष्ट्र बन गया। जॉन और उसके उत्तराधिकारी एलफोजो (alphonzo) और पीटर (peter) के शासन-काल में स्पेन के विरुद्ध 26 वर्ष तक युद्ध जारी रखा गया और जब स्पेन फ्रास के साथ छिड़े युद्ध से मुक्त हो गया जिससे कि वह पुर्तगाल से लड़ सकें तब भी पुर्तगाल ने स्पेन की सेनाओं को 1662 में अमेक्सिअल (ameyxial) तथा 1665 में विलाविसियोसा (villaviciosa) पर पराजित करके अपने देश की रक्षा की। विद्रोह की आरम्भिक सफलता ऑलिवरेज (1643) के अपमान का कारण बनी, वह अपनी पराजय के बाद केवल दो वर्ष जीवित रहा। उसका स्थान

---

1 वही, खड 3, अध्याय 13।

2 वही, खड 3, अध्याय 20।

3 देखिए रिलेसन द० मरसिलेनो द फेरिया द लास इंतेलीजेंसिया सेक्टेलस क्ये टेविया एस्ताव्लेसिडो देत्रो य फयरो द एस्पेना (इन कलेक्शन द डोक्यूमेंस इनीडिओनस पेरा ला हिस्तोरिया द एस्पेना, 41, 554।

डोन लुई द हारो (don houis de haro) ने लिया, इस व्यक्ति में कुछ कूटनीतिक योग्यता थी, किन्तु प्रशासनिक नहीं। हारो ने ही उस संधिवार्ता में भाग लिया था जो पिरेनीज की संधि कहलाई। फिलिप के मन पर पुर्तगाल के निकल जाने का बहुत कुप्रभाव पडा और कुछ अंशों में, विलाविसिओसा की पराजय जो कि कुछ दिन बाद हुई 17 सितम्बर, 1765 को उसकी मृत्यु का कारण बनी। उसके शासन काल के 44 वर्षों में राष्ट्रीय साधनो का नियमित ह्रास और स्पेनिश सार्वजनिक जीवन का स्पष्ट पतन होता गया जिसके परिणाम बिल्कुल स्पष्टतया उसके अभागे पुत्र व उत्तराधिकारी चार्ल्स द्वितीय (1665-1700) के शासन में दृष्टिगोचर हुए।

मेरिया अन्ना की रीजेन्सी:निथर्ड (Nithard)

फिलिप की विधवा, आस्ट्रिया की मेरिया अन्ना ने अपने पुत्र की अल्पवयस्कता–काल के 11 वर्षों में उसकी संरक्षिका का काम सम्भाला। वह कर्मठ और अस्थिर थी और अपने आप को स्पेन के वातावरण से कभी समन्वित न कर सकी, उसमें अपने ससुराल के देश के प्रति अनिच्छा और अविश्वास था। वह सलाह के लिये लगभग पूर्णतया अपने जैसुइट कन्फेसर, जर्मन निथर्ड (या नियहर्ट) पर विश्वास करती थी, जो प्रदत्त स्पेनिश नागरिकता प्राप्त इंक्विजिटर जनरल (Inquisitor-General) और देश का प्रथम मन्त्री बन गया था। उसके शासन के स्पष्ट परिणाम, बाध्य होकर पुर्तगाल को स्वतन्त्रता देना और फ्रांसीसियों द्वारा फ्लैडर्स और फ्रैंच कोन्टे की विजय थे। यह सर्वविदित था कि राजमाता अपने अधिकारों का प्रयोग अपने आपको और वियना–स्थित अपने दरिद्र सम्बन्धियों के लिये धन एकत्र करने में करती थी। सार्वजनिक असतोष आस्ट्रिया के डान जॉन[1] (Don john) के नेतृत्व में प्रकट हुआ जो फिलिप चतुर्थ का वैध पुत्र था, जिसने वायसराय और जनरल की हैसियत से सिसली और निचले देशों (low countries) में कुछ प्रसिद्धि प्राप्त करली थी। यद्यपि उसकी प्रसिद्धि और महत्वकांक्षा उसकी योग्यता की तुलना में अधिक थे, किन्तु कुलीन वर्ग का वह भाग तथा वह जनता जो प्रबल शासन द्वारा स्पेन का भाग्य फिर पलटने की आशा करती थी, उसके प्रबल साथी बन गये थे। उसने इस अभियान का आरम्भ रीजेण्ट और प्रेमपात्र को बदनाम करके किया। अन्ततोगत्वा उसने एक सेना एकत्र करके रानी

---

1 **कोमेएदिएन द्वारा**। वह 1629 में उत्पन्न हुआ था तथा उसका अधिकांश जीवन अस्त्र-शस्त्रों के बीच ही बीता, 1676 में वह मुख्य मन्त्री बन गया। 1647 में उसने निआपोल्तिन विद्रोह को दबाने में भी भाग लिया था। देखिये अध्याय, 9।

को निथर्ड को बर्खास्त करने पर बाध्य किया (1669)। उसके कार्यों की यह चरम सीमा थी, सम्भवतः वह राजा घोषित कर दिया जाता, विशेषरूप से ऐसी परिस्थितियों में जब यह अफवाह प्रचलित थी कि वह वास्तव में फिलिप चतुर्थ का वैध बड़ा पुत्र डान बेलथाजार था (जिसकी मृत्यु पिता से पूर्व हो गई थी) परन्तु जान डॉन ने निर्णय शक्ति की कमी दिखाई और ऐसे शोचनीय समय में उसने राज्य को हस्तगत नही किया जिस पर वह आसानी से काबू कर सकता था। उसने विकार-जनरल (Vicar-General) की उपाधि स्वीकार करके और अरगोन में अलग रहकर व अवकाश ग्रहण करके सम्मानपूर्ण सुरक्षा में रहना पसंद किया।

वैलेन्जुअला और ऑस्ट्रिया का डानजॉन (1676)

निथर्ड को हटाने मे और ऑस्ट्रिया के डान जॉन के वापिस हो जाने से एक ऐसे प्रेम-पात्र के लिए मार्ग खुल गया जो 17वीं शताब्दी में स्पेन में सबसे अयोग्य था। फरनेंडों वेलेन्जुअला ने अपना जीवनवृत एक सेवक के रूप में आरम्भ किया था और रानी की शयनगृह की एक प्रिय स्त्री से उसका विवाह हुआ था। केवल सुन्दर दृष्टि के कारण वह शीघ्र ही दरबार का सबसे प्रभुत्वशाली व्यक्ति बन गया। उसकी त्वरित पदोन्नत स्पेनिश कुलीन वर्ग का घोर अपमान था और सार्वजनिक नैतिकता के स्तर के निम्न होने के कारण सार्वजनिक मत इस जन्मजात विदेशी रीजेन्ट रानी और महत्वाकांक्षी बर्तन मांजने वालों के सम्बन्धों पर बुरी तरह से क्रुद्ध था और विशेष रूप से इसलिये भी कि राष्ट्रीय धन का निर्लज्जतापूर्वक खुले तौर से अपव्यय किया जा रहा था। चार्ल्स द्वितीय के 1665 में वयस्कता प्राप्त करने की घोषणा होने के बाद भी वेलेन्जुअला की जीवन-वृत्ति की प्रगति में बाधा न पड़ी। वह शाही घराने के राजकुमार की तरह दरबार में राज्य करता था। उसने रीजेंसी की निर्बल कौंसिल को तोड़ दिया जिसकी नियुक्ति फिलिप ने अपनी मृत्यु से पूर्व रीजेन्ट रानी की सहायता के लिए की थी। 1676 के अन्तिम दिनों मे वेलेन्जुअला के प्रभाव के विरुद्ध दरबार के बाहर इतना व्यापक विरोध उमड़ उठा था कि गृह-युद्ध की आशंका हो गई थी, किन्तु चार्ल्स ने अपनी माता और उसके प्रेमी के संरक्षण से निकल कर और ऑस्ट्रिया के जॉन को सहायता के लिये बुलाकर स्थिति पर अचानक काबू पा लिया। डान जॉन ने प्रथम मंत्री का पद स्वीकार करने के बाद कड़ी कार्यवाही की। वेलेन्जुअला को फिलिपाइन्स में निर्वासन दिया गया, राजमाता को टोलेडो (toledo) में बहिष्कृत किया गया और तमाम प्रेम-पात्र अधिकारियों को अपमानित किया गया। राजा को स्वयं अपने ऊपर कडा नियन्त्रण रखने के लिये बाध्य किया गया। पेन्शने घटा दी गईं और व्यय की सावधानी से छानबीन की गई। किन्तु दुर्भाग्यवश खाद्य सामग्री के भाव चढ़ जाने के कारण जनता नई सरकार से चिढ गई थी और डान जॉन को, स्पेनिश

सेना के दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम, जिनका अन्त निमेजन (nymegen) की सन्धि से हुआ अयोग्यतापूर्ण रवैये से दोषी ठहराया गया। इसके अतिरिक्त जन प्रवाद, जिसने डान जॉन को फिलिप चतुर्थ का वैध पुत्र कहा था, अब यह कहने लगा कि उसमें राजकुमारों का रक्त न था। लोगों की चिल्लाहट से प्रभावित होकर चार्ल्स ने डान जॉन का तिरस्कार करना स्वीकार कर लिया। पुराने प्रेम-पात्र फिर बुला लिये गये और सितम्बर, 1679 में डान जॉन की मृत्यु होने से उसकी नीति पूर्णतया उलट दी गई।

स्पेन का चार्ल्स द्वितीय (1665–1700)

चार्ल्स द्वितीय के व्यक्तित्व का विकास कुण्ठित था। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा उपेक्षित रही। उसने अपने पिता से सामान्य व्यापार में अरुचि उत्तराधिकार में ली थी। अपनी भीरुता और संकल्पहीनता के कारण वह अपने मन्त्रियों के हाथों की कठपुतली बन गया। बचपन में कई पेचीदा रोगों का शिकार होने के कारण उसका जीवन प्राकृतिक पतन का एक उदाहरण था और इसका कारण था कि पूर्वजों की स्वाभाविकता और दरबारी जीवन के प्रतिबन्ध। हमने यह पहले ही दावा किया है कि उसके द्वारा स्पेनिश उत्तराधिकार के प्रश्न को नियमित करना यह प्रदर्शित करता है कि वह मानसिक आध्यात्मिक गुणों से हीन न था और सदा असावधान होकर मशीन की तरह काम नहीं करता था जैसा कि बहुत से इतिहासज्ञों ने उसे बताया है। फिर भी आधुनिक इतिहास में वह सबसे अधिक दयनीय व्यक्ति था। ऐसा लगता है कि मानों प्रकृति ने हंसी (mockery) में एक मनुष्य का शारीरिक ढांचा बनाकर स्पेनिश हैप्सबर्ग की शाखा का अन्त कर दिया जो अत्यन्त दुःखदाई व्याधियों से पीड़ित था और जीवन का मध्यान्ह होने से पूर्व गंजा, लंगड़ा और बूढा हो गया था, जिसमें जोश का अभाव था और अपने विषय में कार्य करने की क्षमता न थी, जिसकी मृत्यु प्रतिक्षण प्रत्याशित थी, और जिसका जीवित रहना एक चमत्कार माना जाता था। उसका जीवन उसके लिये बोझ था, और दूसरों के लिये शरीर सम्बन्धी वस्तु-पाठ था।

सुधार के प्रयास, चार्ल्स का दूसरा विवाह

डान जॉन के बाद मेडीनासेल्ट (medinacelt) का ड्यूक प्रथम मन्त्री बना और अगस्त 1679 में मेरी लुई से विवाह होने के पश्चात चार्ल्स का दरबार में फ्रांसीसी और आस्ट्रियन दलों से भीषण झगड़ा हो गया। इन षडयन्त्रों से दुःखी होकर और अनिवार्य दिवालियापन और विनाश को रोकने में असमर्थ होकर मेडिनासेल्ट ने 1685 में अवकाश ग्रहण कर लिया और ओरोपेसा (oropesa) का काउन्ट उसका उत्तराधिकारी बना जिसने राष्ट्रीय अर्थ में फिर से कुछ नियमितता लाने की और विदेशों में जो यत्किंचित स्पेनिश प्रतिष्ठा शेष थी, उसे फिर से

प्राप्त करने की कोशिश की। ओरोपेसा, जो एक योग्य और महत्वकांक्षी व्यक्ति था, पुर्तगाल के शाही घराने से मेरी लुई को हटाकर और बेगेनजा घराने की एक सदस्या को रानी बनाकर निजी सम्पत्ति बनाने में जुट गया, इसलिए लोग मेरी लुई की मृत्यु पर उसे संदेह से देखने लगे। उसे राजा की दूसरी रानी न्युबर्ग की मैरिआ ने, जो अपने साथ पदाकांक्षी जर्मनों के एक दल को लाई थी, 1691 में हटा दिया। दस वर्ष तक उसने स्पेन की सरकार को पौरुष प्रदान किया और एक दूसरी मेरिया के कार्यों की पूर्व भूमिका बनादी—18वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में चार्ल्स चतुर्थ की स्त्री। यह गृहस्थी का ऐसा संगठन था जिसमें राजा रोता था और रानी क्रोध करती थी। मेरिया अन्ना से सहमति प्रकट करने वाले दो सहायक थे—उसका केपुचिन कन्फेसर (capuchin confessor), फादर गैब्रिएल और उनकी बूढ़ी अध्यापिका-महा लालची—बेरोनस बार्लेप्श (baroness barlepsch), बेरोनस में ठोस व्यावहारिक प्रवृत्ति थी। उसने उन अनियमितताओं को जो नियमित प्रणाली में घुस गई थीं कम करने की कोशिश की किन्तु वह इस बात में सावधान रही कि इसकी अपहृत सम्पत्ति पिरेनीज के पार के बैंकों में पहुँच जाये। इस प्रकार स्पेन पर दो स्त्रियां और एक पुरोहित राज्य करते थे। राज्य के कर्मचारियों को या तो उनके ढग से कार्य करना पड़ता था या देश-निष्कासन का खतरा था। सभी प्रान्तीय वायसराय सत्तारूढ़ गुट के मित्रों और सम्बन्धियों में से चुने जाते थे। ज्यों-ज्यों चार्ल्स की मृत्यु का समय निकट आने लगा त्यों त्यों मेड्रिड में विभिन्न राष्ट्रीय कर्मचारियों में षडयन्त्र फिर से बढ़ने लगे। 1696 में ओरोपेसा को फिर बुलाने की मांग की गई, क्योंकि वही एक ऐसा व्यक्ति समझा जाता था जो देश को सर्वनाश से बचाने की पर्याप्त योग्यता रखता था, किन्तु, यद्यपि उसने सरकार में अपना कर्तव्य निभाना स्वीकार कर लिया, परन्तु मूल्य बढ़ जाने और खाद्य सम्बन्धी झगड़े होने के कारण 1699 में उस के पद की अवधि घटा दी गई। मन्त्रियों के ये प्रयास स्पेन में आर्थिक किफायत करने के लिये अनिवार्य थे। इसके पश्चात कार्डिनल पोर्टि केरेरो (cardinal portocarrero) के नेतृत्व में फ्रांसीसी दल की विजय हुई और मेरिया अन्ना के शासन में पहली बार उसके और उसके साथियों के शासन पर विवाद हुआ। जिस समय पोर्टो केरेरो शक्तिशाली थी उस समय चार्ल्स ने अन्जू के ड्यूक के पक्ष में वसीयत पर हस्ताक्षर किये।

चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु (नवम्बर 1700)

स्पेन के इतिहास का यह अवनत युग 1 नवम्बर 1700 को चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के साथ समाप्त हुआ।[1] संसार में सबसे धनवान् और सबसे अधिक धार्मिक

---

1 देखिये अध्याय 6।

राज्य मृत राजा की आत्मा के लिये प्रार्थना पर व्यय होने वाले खर्च को न चुका सका। स्पेन के पतन का इससे अधिक अच्छा साक्ष्य 17वीं शताब्दी में प्राप्य होना सम्भव नहीं है।

स्पेन की अवनति

यह अवनति स्पेन के राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक विभाग में स्पष्ट दिखाई देती थी। स्पेन जो कभी अपनी सैनिक वीरता के लिये इतना प्रसिद्ध था, कुछ समय के लिये भाड़ेत सेनाओं पर आश्रित हो रहा था, जिसे अपने अवशिष्ट वेतन की पूर्ति के लिये लूट मार करनी पड़ती थी। जो भी थोड़े बहुत सिपाही स्पेन के असली निवासियों में से भर्ती किये जाते थे वे लगभग सभी जनता के बहुत ही अवांछनीय भाग में से लिये जाते थे। उदाहरणतः शाही अंगरक्षकों की तीन कम्पनियां होती थीं जर्मन, वर्गण्डियल और स्पेनिश। चार्ल्स पचम के समय में इस दल के सिपाहियो की भर्ती विशेष रूप से अच्छे परिवारों और प्रसिद्धि-प्राप्त लोगों में से ही की जाती थी। सन् 1700 में यह निकम्मे लोगों का एक दल हो गया, क्योकि इसमें केवल वे लोग, जिन्हें सैनिक अनुभव था, अग्राह्य थे। यद्यपि उसका मुख्य कर्तव्य जनता के सामने पधारते समय राजा की रक्षा करना होता था, किन्तु ऐसे अवसरों पर प्राय. अव्यवस्था और कोलाहल होता था, क्योंकि शाही अंगरक्षक दल इस अवसर पर अपने अवशिष्ट वेतन की मांग करने लगता था।[1] सैनिक परेडे लोकप्रिय न थीं क्योंकि सिपाहियो की उपस्थिति उदासीन स्पेनिश स्वभाव के लिये भी प्रायः स्वांग होती थी और जनरलों की बड़ी सख्या को देख कर विदेशियों को आनन्द आता था। भंडार, तोपखाना, किलाबदी, अस्त्र-शस्त्रागार भी किसी अच्छी दशा में न थे, तथा जहाजी बेड़ा शक्ति और सख्या में नाम मात्र का था। 18 बड़े जहाजों में से, जो मेडिना सेली के प्रशासन में बनाये गये थे, 1700 मे लगभग 8 जहाज शेष रह गये थे। इनमें से 6 इटली के समुद्र मे थे और 7 जहाज जिनोओ से उधार लिये गये थे। यह संख्या भी असगत रूप से अनुकूल प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है, क्योंकि स्पेनिश नौसेना के आगणन में सदा वे जहाज भी सम्मिलित होते थे जो प्रकट कारणों से अपने स्थानों से कभी हिले तक न थे और उनकी गिनती कारगर जहाजों में होती गई जबतक वे गल-सड़ नहीं गये। स्पेन ने जिस नौ सैनिक प्रधानता को 16वीं शताब्दी में खोया था उसे वह फिर कभी प्राप्त नही कर सका।

---

1 इंसट्रक्सस दोनोज में फ्रांसीसी राजदूत मानसिन (1701–2) की रिपोर्ट देखें 2,12।

सुधार की कठिनाई

मोरिस्कों के निष्कासन के बाद कृषि की दशा पूर्णतया उपेक्षित रही तथा विदेशी व्यापार केवल केडिज़ (cadiz) के बन्दरगाह तक सीमित रह गया। जनसंख्या और वार्षिक आय नियमित रूप से कम होती गई। कोर्टेज़ (cortes) के अधिवेशन होना कभी से बन्द हो चुका था। लोगों में उपाधियां पाने की ऐसी सनक सवार थी और राज्य में उन्हें बेचने की आवश्यकता इतनी प्रबल थी कि कुछ समय के लिये ऐसी आंशका हो गई कि संभवत: जनसाधारण की संख्या समाप्त हो जाये। निजी व्यक्तिगत जीवन में ऐसे लोग जो एक दूसरे का अभिवादन 'आपकी कृपा' (your grace) कह कर करते थे, कभी कभी निकृष्टतम सेवायें भी करते थे। दूषित वातावरण में सुधार और प्रतिक्रिया एक दूसरे के बाद बारी बारी से चलते हैं। ज्योंही पेंशनों की अदायगी और लाभदायक नये पद (जिनका कोई काम नहीं होता था) के निर्माण में छटनियां की जातीं त्यों ही उन असंख्य लोगों को, जिनके पास पद और उपाधियां थीं पीड़ा होती थी और इस प्रकार जिस मितव्ययिता से राहत पहुंचती वह क्रांन्ति का कारण बनी। सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धों से चुंगी की आय में सदा कमी होती थी। इस कारण और परिणाम के प्रत्यक्ष अनुक्रम ने इस घातक सिद्धान्त को प्रोत्साहन दिया कि धन व्यय करने का तात्पर्य सम्पत्ति पैदा करना है। स्पेन में विलास सामग्री का व्यापार ही केवल एक समृद्धिशाली व्यवसाय था। सामाजिक प्रभुत्व के एक ओर से मामूली से उखड़ने पर इतनी बड़ी हलचल मच जाती थी और समूची पद्धति में इतनी प्रविष्ट हो जाती थी कि दूसरे किनारे तक पहुंच जाती थी। स्पेन, नई जाति के राजाओं के सत्तारूढ होने के कारण और यूरोपीय वचनबद्धताओं से समय रहते, अलग होकर अपने आपको बचा सका। [1]

बौद्धिक पतन

आर्थिक व राजनैतिक अवनति गहनतया सम्बद्ध थी तथा बौद्धिक अन्धकार समूचे स्पेन पर छाया हुआ था। बहुत समय से स्पेन में धर्म को जादू भरे मन्त्रों से अधिक नहीं माना जाता था। पुरानी भौतिक कपोल-कल्पनाओं का स्थान ऋषि-मुनियों की कथाओं ने ले लिया था। आध्यात्मज्ञान नियमत धर्म-संघों में शेष रह गया था जब कि अन्य सब स्थानों से वह पहले ही लोप हो चुका था। धर्म-निरपेक्ष

1 इस समय का सुन्दर वर्णन जिसमें मेड्रिड स्थित ब्रिटिश राजदूत, स्टैनहोप का पत्र व्यवहार भी सम्मिलित है ए० स्टैनहोप कृत **स्पेन अंडर चार्ल्स** (1840) में उपलब्ध है। फ्रांसीसी राजदूत रेबेनेक (1688–9) द्वारा भेजी गई दिलचस्पपूर्ण रिपोर्ट के लिये देखिये **इसंट्रक्शंस डोनीस** (स्पेन, 1,424, एफ. एफ.)।

पादरी आलस्य और अज्ञानता के लिये प्रसिद्ध थे। ईसाई धर्म पतित होकर अन्ध-विश्वास और भौतिकवाद की स्थापित व्यवस्था के रूप में विकृत हो चुका था। ये सहानुभूतिहीन प्रोटेस्टेन्ट लेखकों के अनिश्चित कथन नहीं हैं, अपितु वे तथ्य हैं जो स्पेनिश और कैथोलिक इतिहासज्ञों[1] द्वारा स्थिर किये गये हैं। देश प्रत्येक बाहरी आध्यात्मिक प्रभाव से पूर्णतया व दृढ़ता पूर्वक बन्द कर दिया गया। स्पेन बहुत पहले से ही दूषित मध्यकालीन रीतियों को उखाड़ फेंकने की इच्छा अथवा बौद्धिक रूचियां रखना बन्द कर चुका था जो अन्य देशों में समाप्त हो चुकी थीं। समूचे देश में 32 विश्वविद्यालय थे, जिनमें सर्व प्रसिद्ध सलमानका (salamanca), बलाडोलिड (valladolid), और अल्काला (alcala) थे। इन्हीं विश्वविद्यालयों के कारण पुनर्जागरण हुआ क्योंकि वे उस समय भी सेंट थॉमस एक्विनास (st. thomas acquinas) और मध्यकालीन अरस्तु से प्रेरणा प्राप्त कर रहे थे। शाही धार्मिक अथवा म्युनिसिपल अधिकार क्षेत्र के अधीन होने के कारण ये संस्थायें बौद्धिक प्रवाहों से, जो समस्त यूरोप में फैल रहे थे, पूर्णतया पृथक हो चुकी थीं और इसमें यह उल्लेख और कर देना चाहिये कि इण्डेक्स (index) और इन्क्विजिशन (inquisition) द्वारा पूर्णतया धर्मानुसार पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य सब प्रकार की पुस्तकों का वितरण बन्द कर दिया गया।

एन आतो द फे (am autoda-fe) (1680)

16वीं शताब्दी में इन्क्विजिशन (inquisition) द्वारा इतना पक्का काम किया गया था कि 17वीं शताब्दी में दमनार्थ विधर्म नहीं के बराबर शेष रहा था। फिर भी इन्क्विजिशन नैतिकता के न्यायालय (court of morals) के रूप में बहुत महत्वपूर्ण कार्य करती रही। वह द्विपत्नीकता, कपट, धार्मिक एवं चिकित्सा-सम्बन्धी ढोंग के मामलों में कड़ा व्यवहार करती थी। यहूदी और मुसलमानों से या ऐसे व्यक्तियों से जिन पर यहूदी अथवा मुसलमान धर्मों में विश्वास रखने का संदेह होता था निर्दयतापूर्वक कठोरता का व्यावहार किया जाता था, किन्तु वास्तविक विधर्म, जैसा उन दिनों पश्चिमी यूरोप में माना जाता था, नहीं के बराबर था। इस काल में सबसे महत्वपूर्ण न्याय सभायें (autos-da-fe) 1627 में कोर्डोवा (cordova), 1669 में टोलेडो और 1680 में मैड्रिड में की गई थीं। अन्तिम पूर्ण और रोचक विवरण इन्क्विशियन के एक अफसर ने जिसका नाम जोसेन्डेल आल्यो (Josedel olmo) था,[2] दिया है। मुकद्दमों की किस्में और उनमें किस

---

1 जैसे, एल्तामिरा।

2 रिलेसिएन हिस्तोरिका देल ओतो जनरल द फे क्ये से सलेब्रा एन मेद्रिद एसते एनी द 1680 (1680)।

प्रकार के दण्ड दिये जाते थे वे नीचे लिखे उदाहरण से समझे जा सकते हैं।[1]

एक व्यक्ति को जो यह दावा करता था कि वह सेन विन्सेन्ट फेर (san vincente ferrer) का अवतार है तीन वर्ष का कारावास दिया गया।

एक व्यक्ति को बिना पवित्र आदेश (holy orders) के कन्फेशन सुनने और 'मास' (mass) पढ़ने के लिए पांच वर्ष तक नाव में चप्पू चलाने और 200 कोड़े खाने का दण्ड दिया गया। यही दण्ड एक व्यक्ति को दो पत्नियां रखने के अपराध में दिया गया।

एक पुर्तगाली को, जो यहूदी कर्मकाण्ड करने का अपराधी था आजीवन कैद और उसकी समस्त सम्पत्ति जब्त करने का दण्ड दिया गया।

1680 की न्याय-सभा के सामने कुल मिलाकर 118 मुकदमों की सुनवाई हुई, और अधिकांश अपराधियों पर यहूदी कर्मकाण्ड करने का अपराध था। कुछ लोग सुनवाई से पूर्व जेल मे मर गए (त्याग की शपथ लेने के बाद), 22 बच गये और उन्हें धर्मनिरपेक्ष पादरियों को सौंप दिया गया, 29 व्यक्तियों को जो हठी थे और फिर पतित होगये थे जलाने का दण्ड दिया गया। इनमें पांच ने पश्चाताप किया और खूंटे से लटका कर उनका गला घोंट दिया गया, तथा शेष अपराधियों को एक बड़े कड़ाहे में डाल कर जला दिया गया, **"कौन नो पोचास सेनास डे इम्पेसिएन्सिया, डेस्पेचोम, डेस्पेरेशन**[2] (con no pochas senas de impaciencia, deepachoy desperacion)।

इन्क्विजिशन का एक अफसर

आल्मो (olmo) की पुस्तक उत्साहपूर्वक लिखी गई थी जो स्पेन मे इन्क्विजिशन पर एक महत्वपूर्ण लेख-पत्र है। वह सूक्ष्म ब्यौरे सहित उस रंग-मञ्च का वर्णन करता है[3] जो विशेष रूप से इस अवसर के लिये तैयार किया गया था और इन्क्विजिशन के चिन्ह के अर्थ की व्याख्या करता है, काले पर्दे पर हरा क्रास जिसके दांई ओर जैतून की टहनी और बांई ओर तलवार[4] है। जैतून उन लोगों पर दया करने का चिन्ह इंगित करती है जो फिर से ईसाई मत को मानने लगते थे और तलवार उन लोगों को दण्ड देने का चिन्ह है जो बार-बार गलतियां करते रहते हैं। "सेम्बेनिटो"-एक प्रकार की पोशाक जिसके आगे और पीछे पीले क्रास का

---

1 वही, खंड 2, 32 एफ० एफ०।

2 वही, खंड, 2, 76।

3 वही, खंड 1, 23-26।

4 वही, खंड 1, 45

चिन्ह होता था, अपराधी द्वारा पहनी जाती थी और कार्यवाई ऐसी गम्भीर क्रिया विधि से व्यवस्थित की जाती थी कि जिससे सहासी से सहासी मनुष्य का मन भय से दहल जाता था। इन्क्विजिशन के धाराप्रवाहिक स्तुति पाठ में आल्यो[1] आध्यात्मिक स्तुति, जो चर्च के प्रति की जाती थी करता है—"मेरे प्यारे, तू देवदार के मण्डप की तरह और सोलोमन के शरीर की तरह सुन्दर है।" ओल्यो प्रत्यक्ष रूप से न्याय–सभा को अपने समय का प्रधान गौरव और विधर्म के विरुद्ध ईसाइयत की विजय का चिन्ह मानता था।

फिलिफ पंचम

स्पेन के पहले बूर्बा राजा ने 1701 के आरम्भ मे राजधानी में प्रवेश किया। फिलिप पचम यद्यपि छोटी अवस्था का और विचारहीन था किन्तु उसने यह प्रदर्शित कर दिया कि वह अपने व्यावसाय को सीखने में अयोग्य नहीं है। राज्यारोहण के कुछ मास पश्चात् वह असंतोष के कारणों को देखने के लिये और अपनी उपस्थिति से विदेशी षड़यन्त्रकारियों द्वारा उत्तेजित अशान्ति को रोकने के लिए, स्वयं नेपल्स और सिसली में पहुँच गया। सेवाय के विक्टर अमेडियस (victor amadeus) की युवती पुत्री मेरी लुई से उसका विवाह राजनैतिक महत्व का था, क्योंकि केवल 14 वर्षीय होते हुए भी वह योग्य और अनुरक्त थी और उसकी सहायता के लिए लुई 14वें ने राजनीति के दाव पेचों में पारगत बूढ़ी उर्सी की राजकुमारी (anne marie de la tremouille) को उसकी सेवा के लिये नियुक्त किया था। एक नई विचारधारा ने स्पेनिश दरबार को शीघ्रतापूर्वक परिवर्तित कर दिया। अब आडम्बर और लम्पटता इसके नेताओं के प्रधान कार्य नही रहे और यद्यपि कोष मे धन नहीं था किन्तु राष्ट्रीय साधनों को सुरक्षित किया गया, व्यय को सावधानी से व्यवस्थित किया गया और चूंकि स्पेन के अधीन अब इटली व बेल्जियम का प्रशासन नहीं था इसलिये देश में जितना धन एकत्रित किया जाता था वह राष्ट्रीय कार्यों में लगाया जाने लगा, स्पेन पुनः आरोग्य होने लगा।

स्पेनिश उत्तराधिकार युद्ध में स्पेन का पुनरुद्धार

इस मितव्ययिता से स्पेन का सैनिक पुनरुद्धार सम्भव हुआ। फिलिप पंचम ने, पदातिसेना को अच्छे हथियार और फ्रांसीसी शिक्षक देकर, सेना का आधुनिकीकरण किया, और उसे प्रत्युत्तर भी अच्छा मिला जिससे यह स्पष्ट होता था कि स्पेनिश जनता के पुराने सैनिक गुण समाप्त नहीं हुए थे। इन विधियों से 40,000 सेना तैयार की गई जिससे फिलिप कई मोर्चों पर सफलतापूर्वक प्रतिरक्षात्मक युद्ध करता रहा। जिनकी पेंशने बन्द की गई उनकी ओर से शिकायत हुई, जनमत ने

---

1 वही, खंड 2, 27।

राजकुमार डेस उर्सिन्स के प्रभुत्व या फ्रांसीसी व्यक्ति ओरी (orry) द्वारा किये गये आर्थिक सुधारों को पूर्णतया कभी स्वीकार नहीं किया, किन्तु चूंकि ऑस्ट्रिया के आक्रमण का खतरा निकट आ गया इसलिये स्पेन के लोग फिलिप के पक्ष में एकत्रित हो गये और जब लुई 14वे को अपने पौत्र को उसके भाग्य पर छोड़ने पर बाध्य होना पड़ा तो स्पेन के लोगों की राजभक्ति फिलिप के प्रति और भी दृढ हो गई। 1706-1707 के वर्षों में फिलिप वास्तव में अपने सिंहासन के लिये लड़ रहा था, किन्तु इस संघर्ष में उसने संवैधानिक महत्ता को त्याग दिया और अपने आचरण से उसने **एल एनीमोसो** (el animoso) की उपाधि प्राप्त की। उसके जनरल वरविक द्वारा एल्मेंजा (25 अप्रेल 1707) में प्राप्त विजय इस रूप मे निर्णायक थी कि इससे स्पेन में मित्र राष्ट्रों की प्रतिष्ठा जाती रही और सिंहासन बूर्बोनों के लिये निश्चित हो गया। यूट्रेक्ट की सँधि से स्पेन में अत्यावश्यक शांति स्थापित हुई, और इस तिथि से फिलिप पचम का वास्तविक शासन आरम्भ हुआ, उसकी रानी की मृत्यु फरवरी 1714 मे हुई। एलिजाबेथ फार्नेस से विवाह और कार्डिनल अल्बरुली के शक्ति ग्रहण करने पर स्पेन ने अपने इतिहास के नये दौर में प्रवेश किया जिसमें उसने अपनी पुरानी यूरोपीय श्रेष्ठता का कुछ अंश पुनः प्राप्त कर लिया।

इटली के स्वतन्त्र राज्य

इटली

इटली सत्रहवी शताब्दी में एक राष्ट्र न था बल्कि राज्यों का एक समूह था जिनमे से जिनोआ, सेवाय, वीनिस, और पेपेसी का अपना इतिहास है। इटली में स्पेन की प्रधानता केटो—केम्ब्रेसिस (cateau canbresis 1559) की सधि से यूट्रेक्ट की सन्धि (1713-1715) तक रही। इस काल में इटली को घोरतम दीनता सहनी पडी क्योंकि व्यावहारिक रूप में वह स्पेन का एक प्रांत मात्र था और शासन करने के स्थान पर उसे लूटा जा रहा था। उन्नीसवीं शताब्दी तक इटली मेकियावली की इच्छा '**इटालिया लिबरेटाडा स्ट्रेनियरी**' पूरी न कर मका और बीसवीं शताब्दी तक वह महान आर्थिक व राजनैतिक पुनर्रचना न कर सका। यद्यपि सत्रहवीं शाताब्दी में इटली का दमन किया गया था किन्तु वह देश पतनोन्मुख न था। सेवाय का प्रबल स्वतन्त्र अस्तित्व बना रहा जो 1713 में एक राज्य बन गया और बाद में राष्ट्रीयता की शक्तियों के एकत्रीकरण का केन्द्र बिन्दु बना। वेनिस ने निष्पक्षता की नीति का चतुराई से पालन करके अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखी। उसके राजदूतों ने अपने गणतन्त्र का, जो उस समय समृद्धिशाली न था, योग्यतापूर्वक सम्मान कायम रखा, पूर्वी भूमध्यसागर में वह तुर्कों के हमलों के विरुद्ध भग्न दुर्ग प्राचीर का कार्य करता था। रोम का तब भी यूरोपीय कैथोलिक मतावलम्बियों में सम्मान का स्थान था यद्यपि उसकी आज्ञा का पालन सदैव नहीं

किया जाता था। टस्कनी और नेपल्स में अब भी कुछ बौद्धिक प्रधानता थी, टस्कनी गेलिलियो के जीवन से सम्बन्धित था और नेपल्स कम्पानेला और विको के सिद्धान्तों से अपने शिक्षा सम्बन्धी यश की वृद्धि कर रहा था। घोर पतन के क्षणों में भी अब तक उनमे जाति गर्व दिखाई देता था। लुई चौदहवें द्वारा[1] जिनोआ पर बम बरसाने के पश्चात् डोजे को वर्साइल[2] ले जाया गया और जब तक उसके पद की अवधि पूरी न हो जाये तब तक उसे पद त्याग देने की स्वीकृति देने से इन्कार करके उसे अपने शहर के लिए क्षमा याचना करने के लिए बाध्य किया गया। यह पूछे जाने पर कि उसे वर्साइय मे कौनसा दृश्य विलक्षण लगा, उसने उत्तर दिया 'अपने आप को यहां पाना'।

उत्तरी इटली पर नियन्त्रण

इटली मे स्पेन का सबसे महत्वपूर्ण अधिकृत प्रदेश मिलानीज था तथा बूर्बो और हैप्सबर्गो के संघर्ष में इसका सामरिक महत्व पूर्णतया समझ लिया गया था। सेवाय मे ड्यूक के षडयन्त्र, मन्टुआ का उत्तराधिकार प्रश्न तथा वल्टेलाइन का विवादग्रस्त अधिकारी आदि कारणों से सत्रहवीं शताब्दी के सम्पूर्ण प्रथम चरण में उत्तरी इटली विदेशियों का रण स्थल बना रहा। उस समय जनता ने जो कष्ट उठाये उनकी कुछ झांकी वर्तमान युग में सर्वोत्तम ऐतिहासिक उपन्यास मैनजोनी के आई प्रोमेसी स्पोसी (i promessi sposi) मे दिखाई देती है। जब तक सेवाय के पूर्वी सीमान्त से लेकर वेनीशिया प्रदेश की सीमा तक फैला हुआ भू-भाग स्पेन के अधीन रहा तब तक उसे साम्राज्य और सिन्धले देशों के साथ आवागमन का सम्बन्ध कायम रखने में कठिनाई न थी। इसके साथ उसका टस्कनी के समुद्री बन्दरगाहो पर नियंत्रण होने से और नेपल्स और सिसली पर अधिकार होने से स्पेन इटली पर विदेशी प्रभाव को समाप्त कर सकता था। किन्तु उत्तरी इटली में जब कि इस अधिकार के लिये आक्रणकारियों से लड़ना पड़ता था दक्षिण मे वहां के निवासियों ने ही कई बार विवाद किया। नेपल्स और सिसली दोनों में गम्भीर विद्रोह हुए और उनमें से एक में पूर्ण सफलता प्राप्त करने मे आंशिक कमी रह गई।

नेपल्स में सार्वजनिक भावना

स्पेनिश कुशासन के लिये सबसे अधिक अवसर नेपल्स में थे, क्योंकि वहां किसी के हस्तक्षेप की आशंका न थी और न ही वहां के आदि निवासियों में स्वतंत्रता की कोई दृढ़ परम्परायें थीं। दूसरी ओर नेपल्स निवासियों के स्वभाव की अस्थिरता

---

1 केलेगरी, प्रीपोंडरेन्स स्त्रेनिएरे, 297। देखिए अध्याय 6।

2 एफ० एम० इम्पीरियले-लेरकारो।

लोक प्रसिद्ध थी, भयंकर उत्तेजना आसानी से उकसायी जा सकती थी, यद्यपि वहा प्रजातांत्रिक संस्थायें नही थीं फिर भी बहुत सी गुप्त सोसाइटियां थीं और फिलिप द्वितीय के राज्यकाल में क्रान्तिकारी लोस बेल्कोस मेड्रिड[1] के लिये अति चिन्ता का कारण बना हुआ था। सन् 1598 में टामस कैम्पेनेला[2] ने एक विद्रोह में भाग लिया था जिसका निश्चित अभिप्राय कैलेब्रिया को नेपल्स मे पृथक करना और उसे स्वतत्र गणराज्य बनाना था जिसकी राजधानी स्टिलो होती। इस षडयंत्र के प्रकट होने पर केम्पेनेला को लम्बा कारावास दिया गया। सन् 1622 में नेपल्स-वासियों के वायसराय कार्डिनल जेपेटा के विरुद्ध असफल उपद्रव हुआ। शताब्दी के आरम्भिक वर्षो में दक्षिणी इटली की पराधीन जनता में असंतोष और षडयंत्र खूब हो रहे थे। कभी कभी विदेशी सहायता भी मांगी जाती थी। 1636 में स्पेनिश लोगों को नेपल्स से निकालने के लिये और सेवाय के विक्टर अमेडियस को फ्रांसीसी सहायता से नेपल्स का राजा बनाने के लिए, एक षड्यन्त्र रचा गया। सैनिक सहायता के बदले राजा को सेवाय और नाइस फ्रांस को अर्पित करना पड़ता। यह षडयन्त्र भी समय से पूर्व खुल गया[3] और 1637 में विक्टर अमेडियस की मृत्यु के कारण यह योजना आगे न बढ सकी। कार्डिनल मेजारिन ने हमेशा अपनी जन्म भूमि के हित को रक्षित रखा। उसे 1644 में प्रलोभन दिया गया कि गुप्त सूचना की सहायता से वह नेपल्स में होने वाले मामलों का पूरे ध्यान से अध्ययन करे। फ्रांसीसी कूटनीति के लिये पहले नेपल्स सेवाय को देने की और फिर बदले में लेने की योजना बहुत आकर्षक थी और इसके लिये वार्ता आरम्भ की गई। इस वार्ता के फलस्वरूप सेवाय–केरिग्नन के टामस ने जो सेवाय परिवार की उच्च शाखा का सदस्य था, यह वचन दिया कि यदि वह नेपल्स का राजा बन गया तो गेयटा (gaeta) और एड्रियाटिक सागर का एक बन्दरगाह फ्रांस को दे देगा। और यदि उसे सेवाय की ड्यूकडम का उत्तराधिकार भी मिल गया तो वह फ्रांस को उत्तरी-इटली में प्रदेशों का परिवर्तन करके ठहरने का स्थान भी दे देगा। 1646 तक यह स्पष्ट हो गया कि नेपल्स में सार्वजनिक भावना पराकाष्ठा पर पहुंच रही थी और मेजारिन ने दक्षिणी ज्वालामुखी इटली में राष्ट्रीय शत्रु के विरुद्ध फ्रांसीसी क्रिया के लिये नया क्षेत्र देखा। सन् 1646 में उसने भूमध्य सागर से एक फ्रांसीसी समुद्री बेड़ा भेजा जिसने टेलामोन (telamone) और औबिटेलो (orbitello) पर अधिकार कर लिया। कुछ मास पश्चात् दूसरे धावे में पिओम्बिनो पर कब्जा कर

---

1 देखिये केलेगेरी कृत प्रिपोंडरेन्स स्ट्रेनिएरे, अध्याय 2।

2 देखिये अध्याय 3 व 13।

3 लेटर्स द मेजेरिन (शेरुएल द्वारा संपादित), 2, 304।

लिया गया। इस प्रकार कार्डिनल को आशा थी कि वह टस्कन प्रिजाइडी (presidi) अथवा अरक्षित बन्दरगाहों पर अधिकार कर लेगा, जिससे वह नेपल्स में राज विद्रोह का लाभ उठाने की स्थिति में हो जायेगा और अन्त: इटली में स्पेनिश प्रधानता को खतरा पैदा कर देगा। किन्तु ये विजये लघुकालीन रही। ऐसी घटनाओं ने जिन पर वह काबू न पा सका, उसकी महत्वकांक्षी योजनाओं को जल्दी ही नष्ट कर दिया।[1] अब उस विद्रोह का वर्णन करना शेष है जिसने नेपल्स में स्पेन के शासन को जड़ से हिला दिया।

मसानीलो का विद्रोह (1647)

जब यह स्पष्ट हो गया कि फ्रांसीसी नेपल्स के असतोष से लाभ उठाना चाहते थे तो गवर्नर ड्यूक आव आर्कोस ने किलाबन्दियो को मजबूत किया और जहाजी बेड़े को तैयार किया। इसके लिये धन की आवश्यकता थी और अशुभ घड़ी में (1 जनवरी, 1947) उसने फलों पर कर लगा दिया। कर ग्रीष्मकाल तक लागू नहीं किया गया क्योंकि उस समय तक यह आशा की जाती थी कि नेपल्स निवासी इसे बिना किसी आपत्ति के स्वीकार कर लेगे। इटली में फलों पर कर लगाना आवश्यक उपभोग की वस्तुओं पर कर लगाना माना जाता है न कि विला-सता की वस्तुओं पर, और जब कर लागू किया जाने लगा तो शहर में लोगों की भावनायें भड़क उठीं। 7 जुलाई, 1607 को जब फलों की गाड़ियां शहर के फाटक पर स्पेनिश चुंगी अफसरों के सामने से गुजर रहीं थीं तो एक क्रोधित जनसमूह ठेलों की ओर लपका और कर–सग्रहकों को फलों से मारा।[2] शहर विद्रोह की स्थिति में था। ऐलेटो डेल पोपोलो ने जब शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न किया तो उस पर भी फलों से आक्रमण किया गया, यहां तक कि स्वयं वायसराय को भी ईसाई मठ में आश्रय लेना पड़ा। इसका नेतृत्व एक अस्सी वर्षीय व्यक्ति जेनोविनो (jenoveno)[3] ने किया जो कुछ शिक्षित भी था तथा ऐसे उपद्रवों का अनुभवी

---

1 इस विषय पर मेजारिन के पत्र व्यवहार शेरुएल कृत **लेटर्स**, खंड 2, में प्राप्य हैं। इन्सट्रक्शन्स **दोनीज** भी देखें। इटालियन नीति के निर्धारण में अस्पष्टता के लिए मेजारिन की आलोचना की जाती रही है। इस सम्बन्ध में मेजारिन दुर्भाग्यशाली था क्योंकि उसकी अधिकांश योजनायें गुइस के हस्तक्षेप के कारण व्यर्थ हो गई थीं और उसके अपने ही शब्दों में निअरपोलितन उपक्रम '**अन फ्रुटो नॉन मेचुरो** था। (लेटर्स, 2,485)।

2 नवीनतम विवरण एम० शिगा (**बारी**, 1926) के द्वारा दिया गया है।

3 एंगेल द सेवेदरा, इन्सुरक्शन **द नेपल्स एन** 1647 (बेरन द सेंट देनीज का फ्रांसीसी अनुवाद, 84)।

था, उसने जल्दी ही जान लिया कि बलवा विद्रोह का रूप धारण कर रहा है और इसलिये उसने नेतृत्व एक मछली बेचने वाले युवक को सौंपना स्वीकार कर लिया जिसका नाम टामस अनीलो था (जिसे मसानीलो कहा जाता था)। वह उसे केवल अपनी सलाह द्वारा सहायता देता था किन्तु अपने आपको बिल्कुल पृष्ठभूमि में रखता था। मसानीलो की पत्नी पर चोरी से शहर में धान लाने के अपराध मे बहुत भारी जुर्माना किया गया था और फलों के इस बलवे में उसने घृणित स्पेनिश अफसरों से बदला लेने का अवसर पाया। जल्दी ही 100,000 व्यक्ति उसके अनुयायी हो गये। यह घोषित करके कि विद्रोह स्पेन के विरुद्ध न होकर पक्षपाती स्पेनिश अफसरों के विरुद्ध है विद्रोहियों ने कर हटाने की और चार्ल्स पंचम के स्वतन्त्रता के चार्टर को पुनर्घोषित करने की मांग की। विद्रोह सलेर्ना, एवर्सी, एपुलिया और कैलेब्रिया में फैल गया। सार्वजनिक ग्रंथ लेखागार को घेरने पर चार्ल्स पंचम का चार्टर मिला और वायसराय को कर हटाने एवं सब दोषों को दूर करने की प्रतिज्ञा करने पर बाध्य होना पड़ा। इन रियायतों वाली घोषणा को कैथेड्रल के द्वार के सामने अपार जनसमूह के समक्ष उस समय पढ़ा गया जब सुनहरी पोशाक पहने मसानीलो ने गोस्पल की और नेपल्स के सन्त संरक्षक सेंट जेनुअरियस (st. jenuarius) के वर्ष में एक बार द्रवीभूत होने वाले रक्त[1] की कसम खाई कि ये सुधार अवश्य लागू किये जायेंगे।

मसानीलो की मृत्यु

जब विद्रोह इस स्थिति में था तो ऐसा लगता है कि उनका संगठन नष्ट होता जा रहा था और विद्रोह गड़बड़-घोटाले का रूप लेने लगा। फल-कर उन्हीं प्रान्तों में बन्द किये गये थे जहां विद्रोह हुआ था, इसलिये अन्य प्रान्त भी इस आन्दोलन में शामिल हो गये और नेपल्स की जनता ने अब यह मांग रखी कि वायसराय की घोषणा मेड्रिड द्वारा स्थिर की जाये। शहर में अफवाहें फैल रही थीं कि सरकार शहर पर आक्रमण करने के लिये दक्षिण इटली के तमाम लुटेरों को एकत्रित करना चाहती थी। इसके अतिरिक्त लोगों में अशांति और आशा की अनिश्चित भावना थी जो शोरगुल और हिंसा में प्रदर्शित हुई। 11 जुलाई, को सड़कों पर रुकावटों के लिये लट्ठे खड़े कर दिये गये और मसानीलोने जो पांच रातों[2] तक नींद न ले सका था, अचानक अपने आपको विप्लवकारी नेता होने की अपेक्षा तानाशाह के रूप में पाया। इस कार्य के लिये उसकी योग्यतायें थीं, जोश और रोष। जेनोविनो की सलाह भी उसे हास्यास्पद और फौजदारी ज्यादतियों से

---

1 देखिये केलेगरी, पूर्व उद्धृत, 181।

2 सवेद्रा, पूर्व उद्धृत 148।

न बचा सकी। मंडी के चौक से जहां उसका घर था वह शहर पर शासन करने लगा और वायसराय को बाध्य किया कि वह उसे और उसकी पत्नी को अपने साथ रखे (ऐसा कहा जाता है कि एक भोज में उसने मसानीलों को विष दिलवाकर पागल बना दिया) और दो हजार आततााइयों की सहायता से वह उपद्रवी शहर के लिये स्वेच्छाचारी आदेश देने लगा। उन लोगों का वध कर दिया गया जो लुटेरों से सांठगांठ कर रहे थे, तथा जिन पर तानाशाह के विरुद्ध षडयन्त्र करने का सन्देह था उनका भी वही हाल किया गया। रोटी का मूल्य कम कर दिया गया और जो बेकर उसकी आज्ञानुसार नहीं चलता था उसे उसी के तंदूर में जीवित भून दिया जाता था। जल्दी ही पियाजा डेल कार्मल (piazza de carmel) पर कटे हुए मस्तिष्कों की पंक्तियां उसकी शक्ति की साक्षी दे रहीं थी किन्तु यह मसानीलो के शासन के न्याय की साक्षियां थीं। कुछ ही दिनों में 1500 व्यक्तियों का वध किया गया और कुछ समय के लिए नेपल्स बलवे और बदले के होहल्ले से भर गया जिसके सर्वोत्तम रिकार्ड साल्वाटोर रोजा के स्वच्छ पदों पर हैं। कुलीनवर्ग व स्पेनिश अफसरों के प्रति घृणा ही केवल एक सुसंगत प्रेरक कारण है जो इस चक्करदार विद्रोह में अपवाद स्वरूप माना जा सकता है। मसानीलो आसपास के सब घरो को गिराकर अब अपने छोटे घर को महल में परिवर्तित करना चाहता था, अपनी शक्ति को निरंकुश और अनुत्तरदायी बनाने की आशा करते हुए उसने जेनोजिनो को पद॰च्युत कर दिया। गलियों में से घोड़ा दौड़ाते हुए वह शत्रु और मित्र को बिना भेद किए मारता था और फिर एक शानदार नाव में बैठकर खाड़ी में घूमता था और अनेक असयंमित व अश्लीलतापूर्ण कार्य करता। शनिवार 13 जुलाई को कैथेड्रल में प्रार्थना के समय उसका पागलपन सबको विदित हो गया और तीन दिन बाद स्पेन से वेतन-प्राप्त लुटेरों ने उसका वध कर डाला। रोटी का मूल्य एकदम बढ़ गया और विद्रोह फिर फूट पड़ा। भीड़ मसानीलो के खण्डित शरीर को कूड़े करकट के ढेर में से निकाल लाई और उसके अंगों को सावधानी से जोड़कर उसके अवशेषों को एक गम्भीर जलूस के साथ ले गई। कहा जाता है कि जलूस में 100,0000 व्यक्ति थे और कम से कम 4,000 पादरियों ने उसकी अन्त्येष्टि की। उसका अन्तिम सस्कार बिना चमत्कार के नहीं हुआ।[2] उसका सिर धड़ से जुड़ गया, आंखें हिलने लगीं, उसके होठों में से एक आवाज आई और **"ओरा प्रो नोबिस, सेन्टो मसानीलो"** की चिल्लाहटों में उसने चुपके से विशाल भीड़ को आशीर्वाद दिया।[3] इस प्रकार

---

1 सवेद्रा, **पूर्व उद्धृत**, 171।

2 केलेगरी, **पूर्व उद्धृत**, 174 एफ एफ।

3 यह तात्कालीन निआपोलितन विद्रोह से संबंधित पांडुलिपि में उपलब्ध है। **(बोदलियन एम०एस०एड० 145 एफ 60 बी)**।

मसानीलो का अंत हुआ। उसका सार्वजनिक जीवन–वृत ठीक दस दिन रहा जिसमें वह जल्दी जल्दी मछली बेचने वाला, प्रजा के अधिकारों के लिए लड़ने वाला, तानाशाह, शहीद और संत, एक के बाद एक होता गया।

गाइज का हस्तक्षेप

नेता के हट जाने से विद्रोह का अन्त नहीं हुआ, जो डान फ्रान्सेस्को टोराटो के नेतृत्व में अब हल्का हो गया। अक्टूबर 1647 में आस्ट्रिया के डान जॉन को एक समुद्री बेड़े के साथ स्पेन से भेजा गया। जिस प्रकार मसानोलो अपनी ज्यादतियों द्वारा नष्ट हुआ उसी प्रकार टोराटो मन्दता के कारण तबाह हो गया, क्योंकि जब उसने समझौता करने का प्रस्ताव रखा तो उसके साथियों ने उसे फौरन त्याग दिया। अब नेपल्स के शासन के लिए दो उम्मीदवार थे–सेवाय–केरिगनन (savoy carignan) का टामस और लारेन का हेनरी, ड्यूक आव गाइज। गाइज के अचानक हस्तक्षेप के कारण इटली में अशान्ति से लाभ उठाने की मेजारिन की योजना नष्ट हो गई। 1647 की ग्रीष्म में गाइज तलाक के मामले में रोम आया हुआ था जब नेपल्स की घटनायें उसके लिए दक्षिण इटली में राज्य प्राप्त करने का जो कभी उसके एन्जेविन पूर्वजों के पास था, अद्वितीय अवसर प्रदान करती हुईं प्रतीत हुईं। नेपल्स–निवासियों ने, जो किसी विदेशी शक्ति के दास रहना नहीं चाहते थे तथा घृणित स्पेन के विरुद्ध कोई हथियार प्रयोग में लाना चाहते थे, गाइज को नेपल्स आने के लिये आमंत्रित किया। नवम्बर, 1647 में आकर वह कुछ समय के लिये जेनारो एलेसे नामक बन्दूक बनाने वाले के पास ठहरा जो टोराटो के बाद लोकप्रिय नेता था। दिसम्बर में एक फ्रांसीसी समुद्री बेड़ा खाड़ी में आया, यद्यपि कुछ फ्रांसीसी सैनिक वहां उतरे किन्तु उन्होंने जो घटनायें हुईं उनमें भाग नहीं लिया क्योंकि गाइज सरकारी फ्रांसीसी उम्मीदवार न था और स्पेन में उसकी उपस्थिति मेजारिन[1] के लिए बड़ी घबरानेवाली थी। फिर इस बेड़े की उपस्थिति ने स्पेनिश नौसैनिक हस्तक्षेप की सम्भावना को रोक दिया और 23 दिसम्बर, 1647 को गाइज नियापोलिटन गणतंत्र का ड्यूक और राज्य का अधिरक्षक घोषित कर दिया गया। एक तूफान के कारण फ्रांसीसी बेड़ा तितर–बितर हो गया। इस पर फ्रांसीसी नर्तकों से छुटकारा पाकर प्रसन्न, गाइज विलासिता और शूरता में फस गया जिससे वह कुछ समय के लिए लोकप्रिय हो गया।[2] किन्तु जब इस बात का

---

1 देखिये इन्ट्रवशन्स दोर्नोज (नेपल्स एंड पामा, 8)। ऐन आव ऑस्ट्रिया ने इस बात को गोपनीय नहीं रखा था कि वह गाइस की अपेक्षा नेपल्स को अपने भाई के हाथों में देखना अधिक पसन्द करेगी। आरस्जीवो स्टोरिया नेपोलितेना, 9,3,488 एफ एफ तथा सेवेद्रा, पूर्व उद्धृत 17, भी देखिये।

2 सेवेद्रा, पूर्व उद्धृत, 180।

पता लगा कि उसके पास न धन है और न प्रभाव तो उसे अपने साधन स्वयं जुटाने के लिए छोड़ दिया गया । अप्रैल, 1648 में स्पेन की सेना ने बिना कठिनाई के नेपल्स पर फिर अधिकार कर लिया और अपमानित आरकोस के ड्यूक के स्थान पर आस्ट्रिया के डान जॉन को नियुक्त किया । उस वर्ष के अन्तिम महीनों में फ्रांडे की लडाई छिड़ जाने के कारण मेजारिन नेपल्स के उपद्रवों से लाभ न उठा सका । फ्रांसिसियों ने सेवाय केरिग्नन के ड्यूक का साथ छोड़ दिया और गाइज के ड्यूक को स्पेनवालों ने जेल मे डाल दिया ।

मेसीना का विद्रोह 1675–76

स्पेनिश शासन के विरुद्ध इटली मे केवल एक और बड़ा विद्रोह मेसीना[1] मे (1675) हुआ । राजद्रोहियों को लुई 14वे ने सहायता की आशा दिलाई गई थी, और भूमध्यसागर के फ्रांसीसी नौसेना के सेनापति को बेडे सहित सहायता करने का आदेश दिया गया था, 1676 में लुई ने मेसीना की सीनेट को वचन दिया कि वह उसके तमाम विशेषाधिकार[2] उन को लौटा देगा किन्तु वास्तव में विजय का प्रयास करने की उसकी इच्छा न थी, वह विद्रोह को केवल प्रोत्साहन देने में सन्तुष्ट था जिससे उसका शत्रु और अधिक उलझा रहे । जब फ्रांस और स्पेन में सन्धि–वार्ता आरम्भ हुई तो लुई ने इन वायदों पर ध्यान नहीं दिया और निमेजन की सन्धि में अभागे शहर को उसकी किस्मत पर छोड़ दिया । स्पेन ने मेसीना के साथ ऐसी मूर्खता व निर्दयता का व्यवहार किया जिससे सिसली की आदि निवासी समस्त जनसंख्या के लिए स्पेन का नाम पहले से भी अधिक घृणित हो गया । अधिकांश विप्लवी मार दिये गये, स्थानीय स्वशासन के तमाम चिन्ह समाप्त कर दिये गये, तथा लेखकारिस द्वारा 15वीं शताब्दी में मेसीना में लाए हुए बहुमूल्य हस्तलेख स्पेन भेज दिये गये जहां लापरवाही के कारण उनमे से अधिकांश खो गये । इस प्रकार इटली के दो सबसे महत्वपूर्ण विद्रोह, 1647 में नेपल्स का और 1676–77 में मेसीना का असफल रहे । शेष शताब्दी में इस प्रायद्वीप में स्पेन का निर्विघ्न शासन रहा ।

टस्कनी

स्वतन्त्र राज्यों में केवल चार टस्कनी, जिनोआ, वेनिस और सेवाय पर कुछ ध्यान देने की आवश्यकता है । मेडिसी ड्यूकों के अधीन टस्कनी का इतिहास कोई विशेष महत्व नहीं रखता था । कोस्मिनों द्वितीय (1608–1621) के बाद

---

1 विस्तृत विवरण के लिये देखिये केलेगरी, 185 एफ एफ ।

2 मेसीना सीनेट के विशेषाधिकारों को कुचलने के लिये स्पेनिश नीति के विरोध में एक तात्कालीन संस्करण उपलब्ध है । (ब्रिटिश संग्रहालय, हारले एम. एस. 3548) ।

फर्डिनेन्ड द्वितीय (1621–1670) हुआ जो गेलिलियो का आश्रयदाता और कला प्रेमी होने के कारण प्रसिद्ध है। उसने अकेडेमिया डेल सिमेन्टो को प्रोत्साहन दिया जो 1657 में स्थापित की गई थी और वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए पहली संस्था थी। गैलिलियो और टारिसेली की सफलताओं से प्रेरित होकर अकेडेमिया डेल सिमेन्टो ने पदार्थ–विज्ञान के अनुसंधान पर विशेष कार्य किया। मेडिली की राजनैतिक निर्बलता के प्रमाणस्वरूप फर्डिनेन्ड गैलिलियो को इन्क्विजिशन से न बचा सका। उसके बाद कोसिमो तृतीय गद्दी पर बैठा जो निर्बल और हठी था। उसने नवजागरण के विरुद्ध प्रतिक्रियावादी आंदोलन चलाया जिसको प्रोत्साहन देने के लिए उसके पूर्वजों ने बहुत कुछ किया था। 1723 में उसकी मृत्यु हो गई और उसके लम्बे राज्य में फ्लोरेन्स जो किसी समय महान् शहर था, प्रान्तीयता के गर्त में डूब गया जिससे 18वीं शताब्दी से काफी पहले दांते और मेकियावेली का शहर निस्तेज तुकबन्दी करने वालों और सुन्दर आलसियों का गढ बन गया।

जिनोआ

17वीं शताब्दी में जिनोआ, अपने देश की रहन रखी हुई भारी आय से लाभ उठाकर स्पेन के वित्तीय एजेन्ट का काम करता रहा। फ्रांस के लिए गणतन्त्र से घृणा करने का अन्य कोई कारण न था, किन्तु लुई 14वें ने इसे नीचा दिखाने का संकल्प कर लिया। मई, 1684 में एक फ्रांसीसी बेड़े ने यह तुच्छ बहाना बनाकर, कि उसने एक सशस्त्र डच जहाज को अपने हारबर मे शरण दी समुद्र से शहर पर गोलाबारी की। 1685 में संधि पर हस्ताक्षर हुए और जिनोआ पर अपमानजनक शर्तें थोपी गईं। इसके अतिरिक्त यद्यपि जिनोआ का इतिहास 17वीं शताब्दी में घटना–विहीन रहा, किन्तु इसने गणतन्त्रीय स्वतन्त्रता की परम्पराओं की रक्षा की जो 19वीं शताब्दी में इटली के एकीकरण के साथ समाप्त हुई।

वेनिस

सेन्ट मार्क के गणतन्त्र के फ्लोरेन्स से अलग हो जाने के बाद भी उसमें पिछली महानता के कुछ अंश बने रहे। वेनिस का अस्तित्व मुख्यतया इस बात पर निर्भर करता था कि वह अपने आपको अनेकों महाद्वीपी उलझनों से, जिनमें भाग लेन के लिए उसे आमन्त्रित किया जाता था, मुक्त रखे। यह यूरोप के यत्किञ्चित स्वतन्त्र राज्यों मे एक ऐसा गणतन्त्र था जिसने अपनी छिछली झीलों के आश्रय में शान्ति और सभ्यता कायम रखी[1]। वेनिस की अवनति के दिनों में भी वहां निवास

---

1 बोतेरो ने अपनी रचना रिलेसन द ला रिपब्लिका वेनेतिएना (1605) में वेनिस की स्थायित्वता के कुछ कारण बताये हैं। उनके अनुसार इस स्थायित्वता के मुख्य कारण न्यायधीशो की नियुक्ति, सरकार में क्षयग्रस्त व्यक्तियों का न होना तथा सीनेट के बाहर प्रतिरोध का न फैलाना था।

करने का आकर्षण कितना मनमोहक था, यह मोलमेंटी[1] के पृष्ठों मे पढ़ा जा सकता है किन्तु वेनिस ने वह कोमल सौम्य 18वीं शताब्दी से पूर्व प्राप्त नही किया था जिसे कपड़े पर चित्रित करना केनेलेटो को इतना अच्छा लगता था। 17वी शताब्दी मे वेनिस को एक महत्वपूर्ण विवाद का सामना करना पड़ा जो 16वी शताब्दी से चला आ रहा था, जबकि पूर्व में तुर्कों से लगातार थकाने वाला संघर्ष चलता रहा। इस काल में शायद वेनिस ही एक ऐसा राज्य था जो अपना आन्तरिक इतिहास न रखते हुए भी कुछ राजनैतिक और कूटनीतिक महत्व जोड़ने में सफल रहा।

पॉल पंचम से झगड़ा (1605–6): पाओलो सार्पी (paolo sarpi)

शताब्दी के पूर्व वर्षों में पोप द्वारा बलपूर्वक कब्जा करने के विरुद्ध होने वाले झगड़ों मे सिग्निओरी ने इटली के इतिहास मे कुछ भाग लिया। वेनेशियन कैथोलिकवाद सदा उदार रहा था और सिग्निओरी (seigniory) ने ट्रेन्ट की कौंसिल के सभी आदेश कभी भी स्वीकार नहीं किये थे, किन्तु सेंट मार्क और सेंट पीटर के शहरों में गम्भीर मतभेद थे। 16वीं शताब्दी में वेनिस में मुद्रण और प्रकाशन का महत्वपूर्ण उद्योग था। एल्डाइन (aldine) प्रेस ने वेनिस के प्रकाशनों को प्रसिद्ध कर दिया, किन्तु जब इन्डेक्स (index) सेंसर का एक अधिक प्रबल अस्त्र बन गया तो धर्म–परायणता–सम्बन्धी पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य व्यापार को धक्का लगा, और पोप के अधिकार के अन्तर्गत मास सम्बन्धी व दैनिक प्रार्थना-सम्बन्धी रोमन कैथोलिक पुस्तकों का मुद्रण रोम में स्थानान्तरित कर दिया गया। इतना ही नहीं, फेरैरा (जो 1597 में एस्ट का परिवार समाप्त होने पर पोप की जागीर मे ले लिया गया था) के निकट होने का कारण लगातार सीमा-सम्बन्धी विवाद चलते थे, सिग्निओरी द्वारा रोम से पूछे बिना टाइट (tithes) कर वसूल करने के दावे सम्बन्धी झगड़े भी थे और जल्दी ही एक ऐसे नगर ने पेपल अधिपत्य का समूचा प्रश्न उठाया जो निर्धन और अप्रतिरक्षित होते हुए भी स्वतन्त्रता का पोषक था। इन झगड़ों को तीव्र बनाने के लिए आवश्यकता थी पोप पंचम जैसे युक्तिहीन और हठीले व्यक्ति के गद्दी पर बैठने की। वेनिस ने धर्मनिरपेक्ष अपराधों के दोषी पुरोहितों को दंड देने के अधिकार का दावा किया, पेपेसी ने पादरियों की मुक्ति के अधिकारों पर और चर्च के न्यायालयों के क्षेत्राधिकार पर बल दिया। गणतन्त्र वेनिस में पेपेसी वृत्तियों (benefices) को मनोनीत करना अपना अधिकार समझती थी, पोप उस पर संरक्षकता का अपना अधिकार मानता था। साथ ही उसने रोम को रुपया भेजना मना करने वाले तथा अज्ञव्यक्तियों द्वारा धार्मिक

---

1 रिस्तोरी दि वेनेजिया ने ला विता प्राइवेता।

सभाओं का सभापतित्व करने वाले वेनिस के कानूनों का विरोध किया। जनवरी, 1606 में पोप विरोधी आन्दोलन का नेता लिओनार्डो डोनाटो, डोजे बन गया और इन झगड़े को निपटाने के लिये फ्रां पाओली सार्पी (fra paolo sarpri) की नियुक्ति की गई। सार्पी वेनिस में अपने समय का सर्वश्रेष्ठ विद्वान और पूर्ण बौद्धिक-स्वतन्त्रता वाला व्यक्ति था जो न केवल वैज्ञानिक अनुसंधानो के कारण बल्कि अपनी हिस्ट्री आव दी कौंसिल आव ट्रेन्ट नामक पुस्तक से यूरोप में ख्याति प्राप्त था। इसमें उसने निर्भयता से अल्ट्रामौंटेनवाद (utramontanism) के सिद्धान्तों की कटु आलोचना की। उसका विश्वास था कि पेपेसी द्वारा ऐहिक मामलों में अधिकार रखने का दावा करना उसकी आध्यात्मिक स्थिति को बहुत कमजोर करने वाला है। किन्तु इस तर्क के कारण उसे छद्मवेष मे प्रोटेस्टैन्ट कहना तर्कसंगत नहीं होगा। जैसा कि कुछ कैथोलिक इतिहास लेखकों ने कहा है। वेनिस के जनमत को यह विश्वास दिलाना उसका कर्तव्य था कि अल्ट्रामोटेन के धर्म-निरपेक्ष क्षेत्राधिकार से पादरियों को मुक्त रखने के दावे निराधार हैं। इस कार्य को उसने इतना अधिक सफलतापूर्वक सम्पन्न किया कि एक बार उसे कत्ल करने तक का प्रयास किया गया।

झगड़े का निपटारा

जब मतभेद सब के सामने बिलकुल स्पष्ट हो गये तो पॉल पचम ने जाति बहिष्कृत की घोषणा (bull of ex communication) कर दी (अप्रैल, 1606)। इससे गम्भीर राजनैतिक स्थिति उत्पन्न हो गई क्योंकि इस निषेधआज्ञा को लागू करने से लड़ाई की सम्भावना हो सकती थी। वेनिस के इस झगड़े में फ्रांस सहायता देने को तैयार था तो पेपेसी को स्पेन का भरोसा था। किन्तु बूर्बा और हैप्सबर्ग दोनों में से कोई भी झगड़े के लिये तैयार न था और चूंकि वेनिस के बहुत से पादरियों ने निषेधाज्ञा के बावजूद भी धार्मिक कृत्य जारी रखे तो पॉल ने इस बाद को समझा कि वह सीमा से आगे बढ़ गया था, इसलिये उसे अपनी स्थिति को बनाये रखने के लिये समझौता करने के लिए बाध्य होना पड़ा, तथा हेनरी चतुर्थ की मध्यस्थता को स्वीकार किया गया। वेनिस ने अपराधी पुरोहितों को, जिन पर वह मुकदमा चलाना चाहता था, पेपेल क्षेत्राधिकार के हवाले कर दिया, किन्तु साथ ही यह सिद्धान्त भी अभिलिखित किया गया कि उसे अपने प्रदेशों में सामान्य जन और पादरी वृत्ति वाले सभी लोगों पर सर्वोच्च क्षेत्राधिकार होगा। इस प्रकार यद्यपि दोनों ने अपनी अपनी बात रखी किन्तु वास्तविक विजय गणतन्त्र की हुई और इस विषय से उसका भविष्य के लिए क्षेत्राधिकारी स्वातन्त्र्य निश्चित हो गया परन्तु गणतन्त्र एक बात पर नहीं झुका, निषेधाज्ञा की घोषणा पर जैसुइट नगर

छोड़ कर चले गये थे, वेनिस ने उन्हें 1657 तक वापिस आने की स्वीकृति देने से से इन्कार कर दिया ।[1]

युस्कोच्ची (the uscocchi)

दूसरी कठिनाई जिसका सामाने डोजे और सीनेट को करना पड़ा, (वह) थी एड्रियाटिक सागर में समुद्री डाकुओं का प्रश्न । तुर्की आक्रमणों से अपने प्रदेशों की रक्षा करने के लिए सम्राट् फर्डिनेन्ड प्रथम ने बहुत से भाग कर आये हुए बोस्नियनों और सर्वो को डाल्मेशिया[2] और कार्नियोला मे बसा लिया था । इन्हें **युस्कोच्चो** कहते थे । ये लोग समुद्री डाकू बन गये । ये लोग पूर्ण निष्पक्षता से तुर्क और ईसाई दोनों पर आक्रमण किया करते थे किन्तु चूंकि वे आस्ट्रिया के हैप्सबर्गों की रक्षा में थे यद्यपि वह नाममात्र को ही थी, इसलिये उन्हें हैप्सबर्गो से शत्रुता का खतरा लिये लिए बिना दबाया नहीं जा सकता था । 1613 में **युस्कोचियों के** हमलों ने इतना गम्भीर रूप धारण कर लिया कि वेनिस को इस खतरे का सामना करने के लिए बाध्य होना पडा, इसलिये पहले ट्री अस्ट (trieste) और गोरिजिया (gorizia) पर आक्रमण किया गया और उनके मदर मुकाम जारा (zara) पर अधिकार कर लिया गया । हैप्सबर्गो ने हस्तक्षेप किया, किन्तु 1617 में उन्हें एक समझौता स्वीकार करने के लिये राजी कर लिया गया । इसके अनुसार इस्ट्रिया का कुछ भाग समपर्ण करने के बदले में वेनिस को विश्वास दिलाया गया कि हैप्सबर्ग, भविष्य में **युस्कोचियों** को डकैती (piracy) की अनुमति नहीं देंगे । किन्तु यह दोष जड़ से न उखाडा जा सका और इस प्रकार एड्रियाटिक सागर मे होने वाला वेनिस का व्यापार घटता गया ।

बडमार का षड्यन्त्र (the conspiracy of bedmar) (1618)

अपने उपजीवी एड्रियाटिक निवासियों को नियन्त्रित रखने में हैप्सबर्गों की असफलता और वेनेशियन व्यापारियों पर आक्रमण करने में आस्ट्रिया द्वारा गुप्त रूप से इन आक्रमणकारियों को प्रोत्साहन देने के संदेह के कारण वीनिस और वियना की पुरानी शत्रुता और अधिक बढ़ गई । इसके परिणामस्वरूप सिनिओरी (seigniory) को अपनी तटस्थता की नीति त्यागने पर बाध्य होना पड़ा और सेवाय के साथ मित्रता करने के बाद उसने एक विशाल भाड़ेत सेना भर्ती की । यह सम्भव है कि इन घटनाओं का 1618 में हुई उस घटना से कुछ सम्बन्ध हो जिसके विषय में अब

---

1 यह मुख्यतः पोप अलेक्जंडर सप्तम के प्रयासों का परिणाम था ।

2 जिनकेशन गसचीतेल देस आसमेनीचन रीक, 3, 450–52 ।

भी पूर्ण विवरण प्राप्य नहीं[1]। यह घटना थी बेडमार (bedmar) (वेनिस में स्पेन का राजदूत) का षड़यन्त्र, जिसके अनुसार शस्त्रागार को जलाकर शहर पर आक्रमण करने और उसे स्पेन के हवाले करने की चाल थी। एक फ्रांसीसी डाकू, जीन पीयर (jean pierre) और एक साहसी अंगरेज, रॉबर्ट इलियट (robert elliot) इसके अगुआ थे। स्पेन का दूतावास उनके षड़यन्त्र का मुख्य स्थान था। एक स्पेनिश बेड़ा जो इधर भेजा गया था तूफान के कारण न पहुँच सका। ट्यूरिन में ऐसा विश्वास किया जाता था कि इस षड़यन्त्र मे फ्रांस का भी हाथ था। इस कारण अथवा वेनेशियन राजनीति के स्वाभाविक गोपनीय तरीकों के कारण इस षड़यन्त्र के असली रूप का भेद कभी नहीं खुला और सम्भवत: कभी खुलेगा भी नहीं। इस षड़यन्त्र का पता ठीक समय पर ही लग गया। पांच मनुष्यों को फांसी दी गई थी कि किन्तु वास्तविक संख्या सम्भवत: इससे बहुत बड़ी थी। लोगों ने बेडमार षड़यन्त्र के सम्बन्ध में कई अटकलबाजियां लगाईं। एक कहानी तो यह थी कि वास्तव में यह षड़यन्त्र पहले वेनिस और ओसुना के ड्यूक में उसे नेपल्स का राजा बनाने के लिए रचा गया और जब इसकी संभावना दिखाई न दी तो वेनिस के विरुद्ध षड़यन्त्र की कहानी गढ़ी गई। इससे भी असंगत सुझाव एक यह है कि डोजे और सीनेट ने शहर के अन्दर चार हजार भाड़ैत डचों की उपस्थिति से डर कर, डच नेताओं को षड़यन्त्र करने का आरोप लगाकर कत्ल कर दिया और फिर अपराध स्पेन के माथे[2] मढ़ने की कोशिश की। बेडमार को वापिस मेड्रिड बुला लिया गया। वेल्टैलाइन (valtelline) प्रश्न पर सेवाय और फ्रांस से सम्बन्ध रखने के अतिरिक्त, वेनिस ने इसके बाद अपने आप को यूरोपियन राजनीति से अलग रखा।

वेनिस और तुर्की

केन्डिया पर तुर्की आक्रमण के कारण, जो 1645 में आरम्भ हुआ था, वेनिस को कई वर्ष तक युद्ध में लगे रहना पड़ा। इसे जो बीच बीच में मुक्ति मिली उसका कारण था वेनेशियनों के वीरता पूर्ण कार्य और सिनियोरी द्वारा वेनिस के पुराने पूर्वी[3] साम्राज्य के अवशेषों से दृढ़तापूर्वक चिपके रहना। वेनेशियन बेड़े ने

---

1 देखिये जेम्बलर कृत कन्त्रीब्यूत एला स्तोरिया देलो कोग्यूरा स्पेगनूला कोत्रा वेनेजिया इन न्यूवो अर्वियो वेनेतो (1896) II, 15–121, रोलिच, ला कोग्यूरे स्पेगनोला कोत्रा वेनेजिया (1896), और केलेगरी। पूर्व उद्धृत, 352 एफ० एफ०।

2 केलेगरी, पूर्व उद्धृत, 354।

3 जिंकसन कृत गेसचीतेत देस आसमेनीचन रीक 4, अध्याय 3 व 4 में विस्तृत विवरण उपलब्ध है।

26 जून 1656 को दरे दानियाल से परे महान् विजय प्राप्त की जिसमें मोरीसिनी ने वेनिस की वीरता और जहाजरानी की उच्चतम परम्पराओं को पुनर्जीवित कर दिया। 1667 में तुर्की ने केन्द्रिया पर घेरा डाल लिया और वेनिस की सेना को फ्रांस की सहायता मिलने पर भी, वीरतापूर्ण संघर्ष के पश्चात् आत्म समर्पण करने पर बाध्य होना पड़ा (सितम्बर 1669)।[1] इससे भूमध्यसागर की उन दो शक्तियों के विवाद का अन्त हो गया जिनकी समुद्री श्रेष्टता उस समय अवनत होती जा रही थी। यह सघर्ष 25 वर्ष तक चलता रहा और इसमे मृतको की सख्या 1,50000 तक पहुँच गई। 1687 में मोरोमिनी ने मोरिया पर अधिकार कर लिया और एथेन्स पर घेरा डाल लिया। ये ऐसे वीरतापूर्ण कार्य थे जिनके उपलक्ष में उसे गणतन्त्र से सरकारी रूप में धन्यवाद मिला। कार्लोविज की सन्धि द्वारा वेनिस को डालमेशिया का बड़ा भाग, समस्त मोरिया (कोरिन्थ के अतिरिक्त) और एजियन द्वीप मिले। यद्यपि ये परिणाम भयंकर कुर्बानियों के बाद प्राप्त हुए किन्तु ये महत्वपूर्ण थे और यह सिद्ध करते थे कि अपने वतन के 200 वर्षों बाद भी वेनिस मे पुरानी वीरता और सहनशीलता के गुण अभी विद्यमान थे।

सेवाय : चार्ल्स इमान्युएल

जिस प्रकार 17वीं शताब्दी मे वेनिस अपना उज्ज्वल अतीत प्रतिबिम्बित करता था उसी प्रकार सेवाय[2] की ऊची महान् भविष्य को प्रतिलक्षित कर रही थी। यह था सेवाय का चार्ल्स इमान्युएल (1580–1630) जिसने सेवाय को प्रसिद्धि दिलाई और अपने व्यक्तित्व और योग्यता से एक महान् राष्ट्र का बीजारोपण किया। उसका प्रदेश नाइस से लेकर सेन्टबरनर्ड तक फैला हुआ था और नाममात्र के लिए शाही जागीर था। इस में कम से कम पिनेरोलो का एक प्रसिद्ध गढ़ था (जो 1631 से 1696 तक फ्रांसीसी अधिकार में रहा) जो इटली से उत्तर को जाने वाले दो महत्वपूर्ण मार्गों को नियंत्रण में रखता था—एक किनारे की ओर से और दूसरा डोरा रिपेरिया[3] की ओर से। चार्ल्स इमान्युएल ने 50 वर्ष तक राज्य किया। यद्यपि उसने यूरोपीय राजनीति में कभी निर्णायक भाग नही लिया तथापि उसके कार्यों का लीग के युद्धों, तीसवर्षीय युद्ध और सामान्यतया उत्तर इटली में फ्रांस और स्पेन के निवास से घनिष्ट सम्बन्ध रहा। प्राचीन तथा विशिष्ट वंश में उत्पन्न होने के कारण उसका मौट फराट, फाइनेल, जेनेवा, बरगण्डी, ब्रिटेनीपर

---

1 वही, 4, 940।

2 17वीं शताब्दी से पूर्व के सेवाय का रोचक विवरण ड'स्कूदांस होनीज अक्स एम्बासडर्स द फ्रांस (सेवाय सारडिनिया) में प्राप्य है।

3 जिसे अब मोंट सेनिस मार्ग कहा जाता है।

और फ्रास और स्पेन के राज्यो[1] पर पैतृक दावा था यद्यपि इस पर गम्भीरतापूर्वक कभी जोर नहीं दिया गया, साम्राज्य के लिए, बवेरिया के ड्यूक के पश्चात उसकी उम्मीद असम्भव नहीं थी। 1601 में उसे उत्पीड़ित ईसाइयों ने साइप्रस पर अधिकार करने के लिये आमन्त्रित किया, उसे आशा थी कि अल्बानिया और मेसेडोनिया के विद्रोह उसके लिए लाभप्रद होगे। वह जरूसलम के राज्य का उम्मीदवार था। फ्रांस और स्पेन के प्रभाव के मध्य में स्थित होने के कारण उसके लिये दीर्घकाल तक किसी स्थिर नीति का अनुसरण करना कठिन था, और इसीलिये एक वेनेशियन राजदूत ने[2] उसे 'दो शक्तिशाली पडौसियों के बीच में लगातार धड़कते हृदय से उड़ने वाला बताया।' मेड्रिड इस खतरे से स्पष्टतया अनभिज्ञ था कि सेवाय भी किसी दिन इतना शक्तिशाली हो सकता है कि वह इटली में स्पेन के साम्राज्य की जड़ों को हिला दें। इसलिये जब कभी ड्यूक को सन्तुष्ट करने के लिये घूंस दी जाती थी तो सदा इटली से बाहर के प्रदेश दिये जाते थे। यही कारण था कि वह स्पेन से अपना मनचाहा बारी का बन्दरगाह जो अपुलिया में था, प्राप्त न कर सका।[3]

सेवाय और फ्रास

शताब्दी के आरम्भ में चार्ल्स इमान्युएल हेनरी चतुर्थ से युद्ध कर रहा था, वह बूर्बोनो का पुराना शत्रु था और लीग के युद्धों में प्रोवेस पर अधिकार करने की आशा से हेनरी के विरुद्ध लड़ा था, किन्तु जब फ्रास के राजा की स्थिति सुदृढ़ हो गई तो उसने अपनी महत्वाकांक्षी योजनायें छोड़ दीं और अब वह सालुजो को फ्रांसीसी हाथों मे पड़ने से बचाने के सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिये लड़ रहा था। पोप द्वारा बीच बचाव करने पर यह झगड़ा लियन्स की सन्धि द्वारा समाप्त हुआ, जिस पर 17 जनवरी 1681 को हस्ताक्षर हुए। इसके अनुसार सालुजो सेवाय के अधिकार में रहा किन्तु उसे ब्रेस, बुगे और वालरोमे के छोटे प्रदेश फ्रांस को देने पड़े। इस समझौते का यह प्रभाव पड़ा कि सेवाय को अपने बाहरी और अलग-अलग पड़े प्रान्तों से हाथ धोना पड़ा किन्तु उसने आल्प्स का महत्वपूर्ण गढ़ अपने अधिकार मे रखा। इससे अब वह स्पष्ट रूप से इटली का प्रदेश बन गया। राजधानी का स्थान चेम्बेरी की जगह ट्यूरिन ने ले लिया, इटैलियन राष्ट्र भाषा हो

---

1 केलेगरी, पूर्व उद्धृत, 421।

2 प्रिउली (1601–1604) कृत **रिलेजिओनी देगली एम्बेसेतोरे वेनिती**, शृंखला माला 3, (इटली), 1,46। हेनरी चतुर्थ उसे 'अन रेमांत एत एन ब्रूलोन' के नाम से वर्णित करता है। (रोट, **हेनरी चतुर्थ**, लेस सुइसेस **एत ला हॉते इतेली**, 78)।

3 **रिलाजिओनी देगली एम्बासितोरे वेनिती**, 1,49।

गई, और 1602 में जेनेवा पर रात्रि में किये गये आक्रमण के विफल होने पर चार्ल्स इमान्युएल ने, जो अब फ्रांसीसी मित्रता के कारण सुरक्षित था, अपनी उत्तर की ओर की बहुत सी महत्वाकांक्षाओं को त्याग दिया और अपनी डची को ठोस और कुशल सैनिक राज्य बनाने के काम में जुट गया[1]। उसके शासन से उसकी प्रबलता और दूरदर्शिता का पता चलता है[2]। धर्म-गुरुओं को दी हुई उन्मुक्तियां कम कर दी गई, पादरियों पर भी कर लगा दिये गये, देश रक्षक सेना प्रशिक्षित की गई और ट्यूरिन प्रतिभाशाली दरबारियों का स्थायी निवास-स्थान बन गया जहां विभिन्न समय में टासो (tasso), टासोनी (tassoni), चियाबरेरा (chiabrera) और मेरिनी (marini) नामक व्यक्ति हुए। ड्यूक ने अपनी टेस्टामेन्ट पोलिटिक में अपने उत्तराधिकारियों के हित के लिये अपनी कठिनाइयो और महत्वाकाक्षाओ की कहानी लिखी, जबकि उसके द्वारा साहित्य को प्रोत्साहन देने से स्पष्ट हो जाता है कि वह प्रचार के महत्व को अच्छी तरह जानता था यदि उसका निर्देशन योग्य व्यक्तियों के हाथ में हो। उसके शासन-काल में केवल सेवाय ही एक शक्तिशाली स्वतन्त्र इटेलियन राज्य बना, और इसके शासक के हृदय मे विदेशी राज्य के विरुद्ध समस्त इटली निवासियों की घृणा केन्द्रित हो उठी। टोसोनी के फिलिपिचे (filippiche), जिन्हें चार्ल्स इमान्युएल के उदाहरण और प्रेरणा से बहुत बल मिला था, ने इतने गम्भीर अभियोग लगाये गये हैं जो स्पेनिश शासन के विरुद्ध कदाचित ही कभी लगाये गये हों।

वाल्टेलाइन

1620 में वाल्टेलाइन प्रश्न का सकट पैदा होने और रिशेलु को सत्ता प्राप्त होने से चार्ल्स इमान्युएल को आशा हो गई कि उसे अब फ्रास की सक्रिय सहायता मिल सकेगी और इसलिये उसने स्पेन से लोम्बार्डी छीनने की अपनी इच्छा को गुप्त नहीं रखा। वेनिस ने सहायता देने का वचन दिया, फ्रांस ने सैनिक भेज दिये और फ्रांस व पीडमॉट की सेनाएं जिनोआ के फाटक तक पहुंच गई किन्तु यह सूचना मिलने पर, कि स्पेन की सेना सेवाय प्रदेश में घुस आई है, उन्हें वापिस जाना पड़ा। तत्पश्चात फ्रांस ने अपने साथियों को छोड दिया और सेवाय या वेनिस से बिना सलाह लिये उसने मार्च, 1626 में मोन्जोन की संधि पर हस्ताक्षर कर दिये।[3] इस सधि के अनुसार वाल्टैलाइन में पुनः कैथोलिक धर्म लागू कर दिया

---

1 केलेवरी, पूर्व उद्धृत, 384 एफ एफ।

2 सेवोयार्ड संस्थाओ के लिये देखिये सिब्रेरिओ कृत ओरिजन ए प्रोगरेस देली इस्तितजिओनी द ला मोनार्किया दि सेवोय (1805)।

3 देखिये अध्याय 4।

गया और जो दुर्ग इस घाटी में बनाये गये थे वे पोप के प्रतिनिधियों को अपनी इच्छानुसार नष्ट करने के लिए सौंप दिये गये। मण्डल के अन्य सदस्यों को यह पंच निर्णय मानने के लिए बाध्य होना पड़ा और यदि स्वेच्छा से नहीं तो शक्ति से यह मानना पड़ता। इससे चार्ल्स इमान्युएल की सब आशाओं पर पानी फिर गया और ह्यूरिनवालियों ने इसके लिये रिशेलू को कभी क्षमा नहीं किया।

मृत्यु (जुलाई 1630)

सन् 1627 में मान्टुआ के उत्तराधिकार के प्रश्न पर संकट उत्पन्न हो गया और विरोध बढ़ गया। मान्टुआ के ड्यूक कार्डिनल फर्डिनेन्ड गोंजागा की 1626 में मृत्यु हो गई। उसके पीछे कोई पुरुष उत्तराधिकारी न था। मान्टुआ और मोंट-फेएट दोनों जो अब तक लोम्बार्ड़ी की राजनीति में व्यवस्थित रूप से संतुलन बनाये हुए थे, इस झगड़े में पड़ गये। चार्ल्स इमान्युएल का दावा था कि मोंटफएट उसे मिलना चाहिये और मान्टुआ उसकी दोहती को, जिसकी माता ने 1608 में तात्कालीन ड्यूक फ्रांसिस गोंजागा से विवाह किया था। दूसरे उम्मीदवारों में एक गोंजागा का चार्ल्स, नेवर्स का ड्यूक था जिसका दावा स्त्री संबंध के आधार पर था, उसके पक्ष में फ्रांस था और दूसरा दावेदार, स्पेन का उम्मीदवार गोंजागा का फेरेन्ट गुआस्टाला का ड्यूक था। इनमें झगड़ा आरम्भ हो गया। केसेल को घेर लिया गया और सेवाय के सैनिक मोंटफेएट में घुस गये। अक्टूबर, 1628 में, ला रोशेल के पतन के पश्चात्, फ्रांस इस झगड़े में अधिक सक्रिय भाग लेने योग्य हो गया और रिशेलू स्वयं सेना लेकर फरवरी 1629 में इटली में प्रविष्ट कर गया। जब सम्राट् (फर्डिनेन्ड द्वितीय) ने इन विवादग्रस्त प्रदेशों पर निर्णय देने के अधिकार का दावा किया और वहां सेना भेज दी तो यह युद्ध व्यापक हो गया और विस्तृत भू-खण्ड में बसे गांव लगातार स्पेन, सेवाय, फ्रांस और साम्राज्य की सेवाओं द्वारा तबाही के क्षेत्र बन गये। पिनेरोलो और सालुजो पर फ्रांसीसी सैनिकों ने अधिकार कर लिया मान्टुआ पर घेरा डाल लिया गया और दोनों ओर के सैनिकों ने एक दूसरे से बढ़कर निर्दयता दिखाई। वहां के निवासियों की दुर्दशा में जो थोड़ी बहुत कमी थी वह महामारी फैलने से पूरी हो गई। इससे दोनों दलों को समझौता करने पर बाध्य होना पड़ा। विक्टर अमेडियस, जो अपने पिता की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा था, चरास्को की सन्धि (जुलाई, 1631) द्वारा अपना प्रदेश और मोंटफेएट का भी कुछ भाग लेने में सफल हुआ, उसने पिनेरोलो फ्रांसीसी अधिकार में छोड़ दिया, नेवर्स को मान्टुआ दिया गया और केसेल में फ्रांसीसी सेना बनी रही।

सेवाय का उत्तरोत्तर इतिहास (1613–1713)

विक्टर अमेडियस केवल 7 वर्ष तक जीवित रहा, तथा इस काल में वह

अपने बहनोई लुई 13वें का मित्र बना रहा। रिवोली की संधि द्वारा 1635 में उसने 30 वर्षीय युद्ध में स्पेन के विरुद्ध फ्रांस का साथ देने का वायदा किया किन्तु दो वर्ष बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् मेरी क्रिस्टीन की रीजेंसी में शासन चला और उसके शासन में भूतपूर्व ड्यूक के भाइयों के षड़यन्त्रों के कारण अशांति बनी रही। फ्रांसीसी सैनिकों की सहायता से उन्होंने 1639 में ट्यूरिन पर अधिकार कर लिया किन्तु अगले वर्ष शहर रीजेन्ट को वापिस दे दिया गया।

स्पेनिश उत्तराधिकार युद्ध में सेवाय

सेवाय के इतिहास में स्पेनिश उत्तराधिकार युद्ध छिड़ने तक कोई विशेष घटनायें नहीं हुई, चार्ल्स इमान्युअल द्वितीय (1648–1675) के पश्चात् विक्टर इमान्युअल द्वितीय उत्तराधिकारी बना जिसे फिलिप आव ओर्लियंस की पुत्री एने से विवाह करके फ्रांसीसी प्रभाव क्षेत्र में ले लिया गया। 1684 में अपनी मां के प्रभाव से अपने आपको मुक्त करके उसने दिखा दिया कि उसकी विदेश नीति पूर्णतया उसके विवाह द्वारा नियंत्रित न थी,[1] किन्तु फ्रांस के विरुद्ध ऑग्सबर्ग लीग में सम्मिलित होने के बाद उसके सैनिकों को 1690 में स्टेफर्ड के स्थान पर और 1693 में मार्सलिया के स्थान पर केटिनट से हार खानी पड़ी। ट्यूरिन की संधि (1696) द्वारा उसे पिनेरोलो सहित उसके समस्त प्रदेश वापिस कर दिये गये। स्पेनिश उत्तराधिकार युद्ध में विक्टर अमेडियस ने महत्वपूर्ण भाग लिया, पहिले फ्रांस के पक्ष में और बाद में मित्र देशों की ओर से। युट्रेक्ट की संधि से उसे सिसली और राजा का ताज मिल गया। बाद में सिसली को सार्डीनिया से बदल लिया गया। सम्भवतः 19वीं शताब्दी में सेवाय के राजघराने को स्वतन्त्रता के संग्राम में महानतम् ख्याति प्राप्त करनी थी।

17वीं शताब्दी में पोप

रोम और पेपेसी

17वीं शताब्दी में पेपेसी का इतिहास शीघ्र ही वर्णित किया जा सकता है एक लम्बे इतिहास में पहली बार यह संस्था यूरोपीय मामलों में महत्व की दृष्टि से गौण स्थिति में रह गई और यद्यपि इस काल में पोप ने कभी कभी मध्यस्थता का काम किया है किन्तु मुख्यतया वे अपने प्रदेशों के प्रशासन और रोम शहर की नगरपालिका के कार्यों में रूचि लेते रहे। डचमैन उड्रियन छटा (1522–23) अन्तिम पोप था जो इटली–निवासी न था। जब पोप के चुनाव के लिए राष्ट्रीयता की रोक लगा दी गई तो यह आवश्यक ही था कि पेपेसी के व्यापक चरित्र का

---

1 कामते द रेवनक के संस्मरण के लिए इंस्ट्रक्शंस दोनीज अक्स एंम्बास्डर्स द फांस (सेवाय–सारडिनिया), 136 एफ० एफ० देखिए।

अन्त हो जाय, परिणामतः वह इटली का केवल एक प्रदेश मात्र रह गई। परिवर्तित काल गति के प्रभाव से पेपेसी की विशिष्टता के दावे लोगों को उस समय तक स्वीकार्य न थे जब तक उनको मनवाने के लिए सैनिक अथवा प्रादेशिक शक्ति न हो। परिणामस्वरूप 17वीं शताब्दी के पोप प्रायः सामान्य व्यक्ति रह गये किन्तु, यदि उन्होंने ग्रेगरी सप्तम या इन्नोसेन्ट तृतीय के समान ख्याति प्राप्त नहीं की तो उनमें ऐसे प्रख्यात दुर्गुण भी न थे जिनके लिए 15वीं और 16वीं शताब्दियों के पोप कुख्यात थे और यह बात असंदिग्ध है कि इस परिवर्तन के कारण ही यह संस्था बची रह गई।

क्लीमेन्ट अष्टम (1592–1605)

प्रति सुधार काल के महान् सुधारक पोप में से अन्तिम सिक्सटस (sixtus) पंचम की मृत्यु पेपेसी में वित्तसम्बन्धी व्यवस्था और क्युरिया में फैले हुए बहुत से प्रशासनिक दोषों का सुधार करके 27 अगस्त, 1590 को हो गई। इसके पश्चात् अर्बन सप्तम और ग्रेगरी 14वें के अल्पकालीन शासन रहे। जनवरी, 1592 में एक स्पेनिश मनोनीत कार्डिनल एल्डोब्राडिनी, क्लीमेन्ट अष्टम, के नाम से सेन्ट पीटर की गद्दी के लिए निर्वाचित हुआ। कठोर नैतिकता और अडिग धर्म-परायण होते हुए भी क्लीमेन्ट ने बूर्बा लोगों के प्रति स्वतन्त्र नीति का प्रयोग किया और हेनरी चतुर्थ की निरकुशता का अधिकार (17 दिसम्बर, 1595) प्रदान करके उसकी स्थिति को अत्यन्त दृढ़ कर दिया। उसका शासनकाल फरेरा पर अधिकार करके पोप की जागीर बनाने के कारण भी स्मरणीय है। ऐस्ट के अलफोजों द्वितीय की सितम्बर, 1597 में बिना पुरुष उत्तराधिकारी छोड़े मृत्यु हो जाने पर उसने पेपेसी को स्पेन की चिरकाल से जकड़ने वाली बेड़ियों से पूर्णतया मुक्त कर दिया था और फ्रांस की प्रतिस्पर्धी शक्ति को खड़ा कर दिया था।

पाल पंचम (1605–1621)

क्लीमेंन्ट का उत्तराधिकारी लियो 11वें जो फ्रांसीसी मनोनीत के रूप में चुना गया था कुछ ही दिन जीवित रहा। तत्पश्चात् कार्डिनल बोर्गीज चुना गया जिसने पॉल पंचम की उपाधि धारण की। पॉल के चुने जाने का कारण यह था कि फ्रांस, स्पेन अथवा अल्डोब्रेन्डिनी दलों में किसी को भी वह अस्वीकार्य न था, किन्तु उसने आरम्भ से ही यह प्रदर्शित कर दिया कि वह स्वतन्त्र व्यक्ति था और अपनी मान मर्यादा सम्बन्धी सब परमाधिकारों की रक्षा के लिये दृढ़ संकल्प था। बिशपों को अपने पादरी प्रदेश में रहना पड़ता था, ट्रेन्ट कौंसिल के अनुशासनात्मक आदेशों को कठोरता पूर्वक लागू किया गया और प्रायः इटली का हर एक राज्य प्रधान पादरी के इस मध्यकालीन उद्धत व्यवहार से चिढ़ गया। ऊपर लिखित

वेनिस का विवाद सबसे गम्भीर था और शायद वह युद्ध का रूप धारण कर लेता यदि दोनों दल समझौते को स्वीकार न कर लेते। पॉल 30 वर्षीय युद्ध आरम्भ होने तक जीवित रहा और जनवरी, 1621 में मिर्गी की बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई।

ग्रेगरी 15वें (1621–1623)

इस काल में पेपल भतीजे अपने चाचाओं के उत्तराधिकार के चुनाव में विशेष प्रभावशाली रहे और वास्तव में इस प्रकार के व्यक्तिगत प्रभाव ने ऐलेसेन्ड्रो लुडोविसियो (ग्रेगरी 15वें) का चुनाव निश्चित कर दिया। वृद्ध होने के कारण उसकी अपनी अभिलाषायें कुछ न थीं, इसलिए ग्रेगरी अपने भतीजे लुडोविको के शासन को मान्यता दे देता था, जो अति लोभी तो था, किन्तु धार्मिक हितों को प्रोत्साहन देने का बहुत इच्छुक था। यह उसी के प्रयासों का फल था कि समस्त विश्व में कैथोलिक मिशन के प्रोत्साहन और निर्देशन के लिए **कोंग्रिगेशन आफ प्रोपेगेण्ड** की स्थापना की गई। इस मिशनरी उत्साह के पक्ष में यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि इस समय इग्नेशस लोयला और फ्रांसीसजेवियर को धार्मिक वैधता प्राप्त हुई। ये घटनायें उसी समय हुई जब तीस वर्षीय युद्ध (1622–23) में हैप्सबर्ग भाग्य अपने शिखर पर था। जब ग्रेगरी जुलाई, 1623 में परलोक सिधारा तो ऐसा लगता था मानो कैथोलिकवाद फिर से जर्मनी में अपने खोये हुए प्रदेशों को प्राप्त करने वाला है।

अर्बन अष्टम (1623–44)

मैफियो बार्बेरिनी, जो 1623 से 1644 तक अर्बन अष्टम पोप रहा, ही 17वीं शताब्दी का श्रेष्ठ पोप था। अपने चुनाव से पूर्व उसने अपना आचरण इस प्रकार का रखा कि वेटिकन के विभिन्न दलों में से प्रत्येक उसे अन्य दलों का शत्रु समझें। निर्वाचन के समय यद्यपि उसकी आयु पचास वर्ष से अधिक थी, किन्तु फिर भी वह कर्मठ और चतुर था और ये गुण उसमें बहुत समय तक रहे। अपने निकट पूर्वजों की तुलना में वह इस तथ्य को समझने में आधुनिक व्यक्ति था कि परिवर्तित स्थितियों में पेपेसी को अपना भौतिक और आध्यात्मिक आधार रखना चाहिये। आध्यात्मिक हितों को धर्मनिरपेक्ष हितों से गौण रखने में और पेपल प्रदेश की रक्षा के लिये, समादेशों की अपेक्षा हथियारों का प्रयोग करने की योग्यता में वह 16वी शताब्दी के जुलियस द्वितीय के समान था। ट्रिवोली में एक शस्त्रागार स्थापित किया गया, सेन्ट सेञ्जेलो की किलेबन्दी की गई, और जब रोम को समुद्री मार्ग की आवश्यकता हुई तो स्वास्थ्य के लिए हानिकर होने पर भी सिविटा वेचिया को बन्दरगाह में परिवर्तित कर दिया गया। प्रशासनिक व राजनैतिक मामलों पर

विचार करने के लिये 'कांग्रिगेशन आव स्टेट' (congregation of state) नामक सस्था स्थापित की गई, और इस प्रकार पोप को सैद्धान्तिक नीति सम्बन्धी मामलों पर निर्णय देने के लिये स्वतन्त्रता मिल गई, किन्तु इस संस्था ने अलेग्जेण्डर सप्तम (1655–1667) के शासन से पूर्व पोप के परमाधिकारों का अतिक्रमण आरम्भ नहीं किया। अर्बन का शासन आध्यात्मिक एवं निर्वाचित मुखिया के समान न होकर एक धर्म निरपेक्ष व धनरहित राजकुमार के समान था, उसके बहुत से कार्य स्वेच्छाचारी व अवैध थे। वह बहुत अस्थिर और हठी स्वभाव का व्यक्ति था और जब उससे किसी बात पर अनुमति मांगी जाती तो वह हमेशा उससे बिल्कुल विपरीत कार्य करने पर बल देता था, अपने इस व्यवहार का वह इतनी स्थिरता से पालन करता था, कि चतुर प्रार्थी प्राय: जो कुछ चाहते थे उससे उल्टा प्रस्ताव रख कर अपनी लक्ष्य सिद्धि प्राप्त कर लेते थे। उसके सम्बन्ध में यह कहना भी आवश्यक है कि वह साधारण कवि भी था। रोम में नये भवन बनवाते समय उसने बहुत प्राचीन स्मारकों को नष्ट कर दिया। उसने यह घोषणा की कि एक जीवित पोप का मत सौ मृत पोपों के मत से अधिक महत्व रखता था। उसने अपने जीवन-काल में ही अपनी यादगार भी बनवादी।

इटली में अर्बन नीति

तीस वर्षीय युद्ध में अर्बन द्वारा किए गये कार्यों का वर्णन अभी किया जा चुका है।[1] इटली में उसका शासन इसलिये महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसने पेपल प्रदेश का विस्तार किया। डेला रोवेर परिवार का अन्त हो जाने पर, 1631 में अर्बिनो को हस्तगत कर लिया गया। दूरस्थ प्रदेशों की सुरक्षा के लिये उसने बड़े बड़े कर्ज लिये और पेपल जागीर एक ठोस सुरक्षित राज्य बन गया। केस्ट्रा के दिवालिया राज्य के विरुद्ध महाजनों के दावों का लाभ उठाकर, और केस्ट्रो के एक फार्नेस ड्यूक द्वारा किये गये उसके भतीजे के अपमान को निजी अपमान मानकर, अर्बन ने अधिपति की हैसियत से 1641 में, कस्बे पर अधिकार कर लिया। अगले वर्ष उसके भूतपूर्व शासक को जाति बहिष्कृत कर दिया, परिणाम युद्ध हुआ। फार्नेस को वेनिस और टस्कनी के ग्रांड ड्यूक की सहायता मिल गई, इसलिए आगामी वर्षों में अर्बन द्वारा की गई प्रतिरक्षा सम्बन्धी तैयारियों की पूर्णतया जांच की गई। रण क्षेत्र में असफलता और अपने प्रदेशों के विलग हो जाने की आशंका के कारण उसे फ्रांसीसी मध्यस्थता स्वीकार करने पर बाध्य होना पड़ा। 1644 में उसने परमा के ड्यूक को केस्ट्रो वापिस करना और अपने आदेश को रद्द करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार वह इटली में एक महान शक्तिशाली राज्य बनाने की अपनी

1 देखिये अध्याय 4।

योजनाओं का अन्त देखने के बाद जल्दी ही (29 जुलाई, 1644) को परलोक सिधार गया। कैस्ट्रो को त्यागने से उसे इतना बडा आघात पहुंचा कि वह बीमार हो गया और उसी बीमारी में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी अन्तिम इच्छा यह थी कि परमा के ड्यूक से प्रतिशोध लिया जाय। अर्बन योग्य और साधन सम्पन्न व्यक्ति था। जब तीसवर्षीय युद्ध ने धार्मिक न रहकर राजवंशीय युद्ध का रूप धारण कर लिया उस समय वह अपनी शक्तियों का अधिक अच्छा सदुपयोग कर सकता था, किन्तु फिर भी उसको यह गौरव प्राप्त है कि 1634 में उसने विवादों का पंच-निर्णय द्वारा फैसला करने के लिए यूरोपीय शासकों की एक विशाल सभा का आयोजन करने का प्रस्ताव रखा। वेस्टफेलिया की कांग्रेस, कुछ अंशों में, उसकी अभिलाषा की पूरक थी।

इन्नोसेन्ट दशम (1644–1645)

पेपल इतिहास में यह कोई असाधारण बात न थी कि नया पोप अपने पूर्व-वर्ती शत्रुओं के मत से निर्वाचित होता था। सितम्बर, 1644 में कार्डिनल पेम्फिली (cardinal pamphili) के चुनाव में ऐसा ही हुआ। नये पोप ने अपना नाम इन्नोसेन्ट दसवां रखा, वह अपने शासन के अधिकांश काल में मेजारिन का घोर शत्रु और स्पेन का मित्र[1] रहा। बार्बेरीनी को रोम छोड़ना पडा तथा अर्बन की नीति उलट दी गई। इन्नोसेन्ट गुणहीन अथवा योग्यताहीन न था, वह अपने वित्त सम्बन्धी प्रबन्ध में चतुर था। दुष्ट व्यवहार को दबाने के लिये वह बहुत चिन्तित था किन्तु वह अपनी भाभी डोना ओलम्पिया मैड्चिनी के सिवाय अन्य किसी पर भी विश्वास नहीं करता था. उसने अपने सभी अधिकार उसी को दे दिये थे। इस स्त्री का इतना गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त करना अपवाद का कारण बन गया।[2] उसने इन अवसरों का उपयोग अपने और अपने सम्बन्धियो

---

1 यह जानते हुए कि कॉर्डिनल पेम्फिली मेजारिन और फ्रांस के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण रूख रखता है, उसने हर सम्भव प्रयास द्वारा कॉर्डिनल को चुनाव लड़ने से रोकने की चेष्टा की। एक फ्रांसीसी एजेन्ट को कुछ हस्ताक्षर युक्त पत्रों के साथ वेटिकन भेजा गया, जिनमें से **वोस एवाज क्यूवयेस बोन्स डेजर्स वांस पेरिज वोस एन एक्सपलीकर एन तोत कनफाइन्स एवेक मौन** एम्बासदर लिखा हुआ था। कुछ कार्डिनलों ने पत्र मिलने पर कहा, "चुनाव के पश्चात्" (रिश्वत का उन्मूलन करना आदि) परन्तु अनेक स्पेनिश हितों की रक्षा के लिये पहले ही वचनबद्ध हो गये थे। (देखिये काविले कृत **एत्युद सुर मेजारिन एत सेस द मेल्स एवक ल पोप इन्नोसेन्ट दशम**, 12।

2 **"एगली (इन्नोसेन्ट X) नॉन फ्यु इन्नोसेन्ट परके दोना ओलमपिया फ्यु इनोसेन्तियो।"** (गॉलदी कृत **विता द दोना ओलिमपिया**, 435)।

को धनवान बनाने में किया और इन्नोसेंट उसके हाथों की कठपुतली बन गया। डोना ओलम्बिया के विरुद्ध मुख्य आरोप ये थे कि उसने इन्नोसेन्ट को यूरोप की राजनीति में और नेपल्स के विद्रोह (1647) मे भी तटस्थता का रवैया अपनाने के लिये उकसाया तथा 1649 में केस्ट्रो[1] के विनाश के लिए वही उत्तरदायी है. उसी ने फ्रांस के विरुद्ध लड़ाई बन्द करने के लिए फुसलाने की कोशिश की और जैसुइटों द्वारा घूंस दिये जाने पर उसने अपने देवर को जेन्सेनिस्टो[2] को बुरा-भला कहने के लिए उत्तेजित किया। ये तमाम आरोप इसके विरुद्ध ही नही जाते। नारी होने के नाते वह अपने वयोवृद्ध सम्बन्धी की मानसिक शान्ति बनाये रखने की कोशिश करती थी। लालच उसका सबसे बड़ा दोष था। यद्यपि उसका उद्देश्य वेटिकन को यूरोपीय झगडो से अलग रखना था फिर भी कुछ अंशों में पेपल नीति पर उसका प्रभाव इस सस्था की बदनामी का कारण हुआ। इन्नोसेन्ट का शासन-काल घटना विहीन रहा, उसने[3] जेलोडोमिनी (zelo domini) समादेश (नवम्बर 1648) में वेस्टफेलिया की संधि के विरुद्ध विरोध प्रकट किया क्योंकि इसके द्वारा चर्च की भूमियाँ धर्म-निरपेक्ष राजकुमारों को दे दी गई, किन्तु उसके विरोध की कैथोलिकों या प्रोटेस्टेन्टों में से किसी ने भी परवाह न की।

अलेग्जेंडर सप्तम (1655-1667)

इन्नोसेन्ट के कोई भतीजा नहीं था। इसलिये 1655 में उसके उत्तराधिकारी का निर्वाचन नया ही था, क्योंकि कार्डिनलों को अपने अनुभव में पहली बार अपने मत का प्रयोग करना पडा। सब मिला-जुला कर देखा जाय तो उनका चुनाव बुरा न था। फेबिओ चिगी (fabiochigi) ने अपनी उपाधि अलेग्जेंडर सप्तम रखी। वह कुछ कूटनीतिक योग्यता वाला व्यक्ति था जो पेपेसी का नैतिक सम्मान जो उसके पूर्ववर्ती के शासन मे कम हो गया था, पुनः प्राप्त करने की आशा रखता था। पेपलनन्सियो (papal nuncio) के रूप में तथा बाद में वेस्टफेलिया की कांग्रेस के मध्यस्थ होने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अलेग्जेंडर मे परिश्रम करने और मेल कराने के गुण थे[4] किन्तु कार्डिनल द रेज ने जो उसके चुनाव के समय षड़यन्त्र कर रहा था, उसे यह गर्वोक्ति करते हुए सुना कि उसने दो वर्ष तक उसी एक कलम का प्रयोग किया, जिसका तात्पर्य उसने यह निकाला कि उसमें न बुद्धि

1 इसके लिये देखिये सिएम्पी कृत इन्नोसेन्जो X, 62 एफ एफ।

2 वही, 324 एफ एफ।

3 बुलेरिएम रोमैनन, 6,269 ।

4 अलेक्जेण्डर के चरित्र का असहानुभूति पूर्ण चित्रण फ्रांसीसी राजदूत ड्यूक द चॉलनेस (1666) द्वारा इन्सट्रक्शंस दोनीज (रोम, 1, 194) में प्राप्य है।

थी न हृदय[1] । नये पोप ने पेपल ऋण का वह भाग, जिस पर सबसे अधिक ब्याज लगता था, चुका कर आर्थिक मितव्ययिता का प्रमाण दिया । वह शेष ऋण पर ब्याज कम करके 4 प्रतिशत पर लाने में सफल रहा । मेलशिसेडेक की भांति, यह घोषणा करके कि उसके कोई रिश्तेदार नहीं है, उसने पहले अपने भतीजों को रोम से दूर रखा, किन्तु धीरे-धीरे उसे उन्हें नौकरी देने के लिये मना लिया गया । इसके साथ ज्यों-ज्यों उसकी अवस्था अधिक होती गई त्यों-त्यों वह ऐसे काम भी जिन पर उसे स्वयं ध्यान देना चाहिये था, प्रायः कांग्रिगेशन आव स्टेट पर छोड़ने लगा । वह प्रायः देहात में एकान्तवास के लिए जाने लगा, यहां तक कि राजदूतो को भी उससे मिलने में कठिनाई का सामना करना पड़ता था । इस काल में पेपेसी को अपदस्थ करके उसके स्थान पर धर्म-निरपेक्ष राजतन्त्र की स्थापना की जा सकती थी । सम्भवतः अलेग्जेंडर जैसे पोपो की शान्त विलगता के कारण यह सस्था उसके उत्तराधिकारियों के लिए सुरक्षित रह गई ।

अलेग्जेण्डर सप्तम के उत्तराधिकारी

अलेग्जेण्डर की मृत्यु 1667 में हो गई और उसका उत्तराधिकार क्लीमेन्ट नवम, (रासपिग्लियोसी) (1667–1670) आमीन हुआ, उसके बाद क्लीमेन्ट दशम (अल्वेरी) 1670 से 1676 तक रहा । क्लीमेंट दशम ने लुई 14वें के विरुद्ध **रिगेल** (regale) के प्रश्न पर, वाद-विवाद में भाग लेने से प्रसिद्धी प्राप्त की थी । इन्नोसेन्ट 11वें जिसे 1676 में उत्तराधिकार प्राप्त हुआ, के शासनकाल में फ्रांस के साथ कई बार मतभेद हुए 17वीं शती के पोपों में इन्नोसेन्ट 11वां ही केवल ऐसा पोप था जो पारिवारिक पक्षपात से पूर्णतया मुक्त था । इस शती का केवल एक यही पोप था जिसकी सच्चाई और ईमानदारी पर किसी भी दल को कोई संदेह न था ।[2] उसने कई वित्तीय सुधार किये और चूंकि अब रिश्तेदारों पर अनाप-शनाप धन व्यय नही किया जाता था इसलिये उसने काफी बचत दिखाई । 1652 की गेलिकन धाराओं के सम्बन्ध में पोप ने स्थिरता और दृढता का परिचय

---

1 द रेटज कृत **मैमायर्स** (फिलेट, गोरदेल्त एत केटेलॉज द्वारा सम्पादित, 4, 235,) ।

2 एक और दृष्टिकोण (संभवतः पूर्व दूषित विचार) के लिए देखिये **इन्सट्रक्शंस दोनीज** (रोम), 1,360 में लेवारडिन की रिपोर्ट (1687) देखिये । "वह अपना अधिकांश समय बिस्तरे पर ही बिताता था तथा तभी उठता था जब कि मौसम बहुत अच्छा हो । हठीला होने के कारण वह अपने नागरिकों के प्रति अच्छे विचार नहीं रखता था तथा भविष्यवाणी एव साधुओं में विश्वास करता था ।"

दिया, यद्यपि कुछ पोप ऐसी परिस्थिति में ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार करने की अपेक्षा लुई से मित्रता रखना श्रेयस्कर समझते, जिनके कारण कैथोलिक राजाओं में सबसे शक्तिशाली व्यक्ति नाराज हो गया। जिन पादरियों ने 1682 की सभा में भाग लिया था और जिन्हें बाद में पादरी वृत्तियों पर मनोनीत कर दिया गया उन्हें नियमानुकूलता प्रदान करने से इन्कार करके पोप ने लुई की स्थिति बहुत खराब कर दी। फ्रांस के साथ चल रहे विवाद में अपनी स्थिति स्वतन्त्र बनाए रखने में पोप ने तुर्की आक्रमण के खतरे का अनुभव किया। परिणामतः उसने जॉन सोबीस्की को उसके 1683 के महान अभियान में आर्थिक सहायता दी। सब मिला कर इन्नोसेन्ट की नीति के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि उसकी नीति छोटी दलबन्दी की भावना से नहीं बल्कि कैथोलिक हितों की रक्षा की इच्छा से और यूरोप को तुर्की के खतरे से मुक्त रखने की भावना से प्रेरित हुई थी।

पेपेसी का पतन

इन्नोसेंट 11वें के उत्तराधिकारी थे अलेग्जेण्डर अष्टम (1689–1691), इन्नोसेन्ट 12वें (1691–1700), और क्लीमेंट 11वें (1700–1721)। इनके शासन कालों में कोई विशेष घटना नहीं हुई किन्तु क्लीमेन्ट 11वें अपने युनिजेनिटस (unigenitus) बुल के लिये प्रसिद्ध है जिससे फ्रांसीसी चर्च में ही विभाजन हो गया तथा इसने ऐसा झगडा खड़ा कर दिया जो समस्त 18वीं शताब्दी में बार–बार उठता रहा। स्पेनिश उत्तराधिकार युद्ध में क्लीमेन्ट फ्रांस के पक्ष में था और उसमें फ्रास की ओर अपना झुकाव घोषित करके उसके कम से कम एक अभियान ने तो पेपल राज्यों को खतरे में डाल दिया था। 1709 में, हमले की धमकी से डरकर पोप को आर्कड्यूक चार्ल्स को स्पेन का राजा मानने के लिए बाध्य होना पड़ा और इस तरह पेपेसी, को जो इस महान संघर्ष में मध्यस्थ बन सकती थी मजबूरी तौर पर एक से दूसरे के पक्ष में जाना पड़ा और अनिच्छा होते हुए भी स्पेन का साथी बनना पड़ा। परिवर्तित परिस्थितियों का इससे अच्छा कोई अन्य उदाहरण नहीं दिया जा सकता। आध्यात्मिक अनुमोदन की आवश्यकता का काल लद चुका था और गुप्त कूटनीति, विभागीकरण सन्धियां, और औपनिवेशिक युद्धों की नई शताब्दी में, पेपेसी पूर्णतया क्षीण भूतकाल की प्रतापी किन्तु कारुणिक स्मारक चिह्न मात्र रह गई थी।

17वीं शताब्दी का रोम : स्वीडन की क्रिस्टीना

वह संस्था जो कभी समस्त यूरोप का नेतृत्व करती थी, 17वीं शताब्दी में अपने निवास–नगर रोम द्वारा ही प्रभावित थी। इस काल में रोम की जनसंख्या धीरे–धीरे बढ़ती गई। पेम्फिली, चिगी और कोलोना के विशाल प्रासाद बनवाये

गये, बार्बेरिनी और चिगी मे पुस्तकालयों की स्थापना की गई और उन्नत सुवि-धायें मिलने के कारण यह शहर संसार में सबसे अच्छा निवासस्थान बन गया। दो महती महिलायें स्वीडन की ओलिम्पियों मेडलचिनी और क्रिस्टीना बारी–बारी से छोटा सा दरबार लगाया करती थीं जिसमें भक्तों और कलानुरागियों के समूह आते थे। 1655 में क्रिस्टीना का जो स्वागत किया गया व उसके लूथरन धर्म से कैथोलिक धर्म में परिवर्तित होने को जो महत्व दिया गया था, और उसके द्वारा स्वीडन के राज त्याग से जो विश्वव्यापी रूचि उत्पन्न हुई थी वह उनके आकार के तुल्य था। गेट आव द पीपल (gate way of the people) पर अंकित **'फेलिसी फास्टोक इन्ग्रेसुई'** (felice favstoque ingressue) शिलालेख अब भी वेटिकन के उस समय के गर्व और हर्ष की याद दिलाता है जब क्रिस्टीना धर्म परिवर्तन करके और स्वीडन के मुकुट का त्याग करके परमभक्त के रूप में रोम में निवास करने आई थी। कुछ समय के लिए क्रिस्टीना ने रोम को यूरोप में सबसे देदीप्यमान सामाजिक आश्रम बना दिया।[1] उसके उत्सव, छद्मवेषी नृत्य, नाटक पुस्तकालय और अन्त्येष्टि क्रिया अपूर्व वैभवशाली होते थे, परिणामस्वरूप सर्वाधिक आत्मसयमी कार्डिनल भी उसकी प्रफुल्लता और उत्साह से आकर्षित हो जाते थे। वह प्रत्येक विषय में असीम रूचि लेती थी, उसकी मानसिक चपलता बौद्धिक शक्तियो के लगा-तार प्रयोग से अलग नही की जा सकती थी। दार्शनिकों की आश्रयदाता होने के कारण वह डेस्कोर्ट की मृत्यु का अप्रत्यक्ष कारण बन गई थी क्योंकि उसने स्टॉक-होम की शीत ऋतु में प्रात: पांच बजे उसे शिक्षा देने का हठ किया था, कविता की भक्त होने कारण वह छोटे छोटे कवियों से घिरी रहती थी, विज्ञान में रूचि लेने के कारण उसके अनुयायी नीम हकीम और रासायनिक भी थे, नाटक को लोकप्रिय बनाने की उत्सुकता में उसने इसे अरोचक और सस्ता बना दिया।[2] उसके कार्य सदा उस धर्म के हित में नहीं होते थे जिसे उसने अंगीकार किया था।

---

1 रोम में क्रिस्टीना के निवास काल के संदर्भ में देखिए ल विता इतालिआना नेल सिएतो, 78 एफ० एफ०। उसके शासन के लिए देखें अध्याय 11।

2 वास्तव में यह क्रिस्टीना के विवेकशील गुणों का सही चित्रण नहीं है। निस्वेत बेन अपनी रचना स्कंडिनेविया, 218 में लिखते हैं, "वास्तव में वह वाक-पटु, चतुर, साहसी तथा विज्ञान एवं कला की प्रेमी थी। इस प्रकार वह अपने पिता से भी अधिक विद्वत कही जा सकती है। उसकी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी थी तथा ज्ञान के प्रति उसका असीम प्रेम था। "अपने समकालीन शासको में क्रिस्टीना सर्वाधिक श्रेष्ठ थी यद्यपि उसे अधिक अच्छी तरह जानने वालों के अनुसार उसको समझना आसान न था।"

उसके षड़यन्त्र कलह और अपवाद के कारण बने, अधिक आयु होने पर वह स्वयं धार्मिक विषयों में सनकी हो गई। मैकियावेली की पुस्तक प्रिंस की अपनी प्रतिलिपि में उसने लिखा, "कौन अब पोप से डरता है।" उसने कहा, "यहां मूर्तियां हैं, स्तम्भ और प्रासाद हैं, किन्तु वह मानव नहीं है।" वह अब भी राजा के परमाधिकारों का दावा करती थी तथा अपने सचिव मोनाल्डेस्वी की स्वामिभक्ति पर संदेह होने पर उसने उसे कत्ल करवा दिया। रोम में अपने अनौपचारिक शासन से असंतुष्ट होकर उसने कई बार स्वीडन का राज्य प्राप्त करने की चेष्टा की। उसकी राजधानी में दीर्घ निवास काल का वही समय था जब पेपेसी नगण्यता और भौतिकवाद के युग में से गुजर रही थी। अब कार्डिनलों के कॉलेज ने द्वितीय श्रेणी के दरबार का रूप धारण कर लिया और संसार में सर्वोच्च आध्यात्मिक परमाधिकारों का प्रयोग करने वाले अपने आश्रित भतीजों और स्वतन्त्र महिलाओं द्वारा हतप्रभ हो गये थे। ऐसी अवनति रोम की भवन-निर्माण-कला में भी पाई जाती है। आज का यात्री बर्नीनी (bernini) की महान् स्तम्भ-पंक्तियों (colonade) में 17वीं शताब्दी की रूचि का सबसे साकार रूप देखेगा। पहले पहल यद्यपि वह इन विशाल खम्भों के वृहत् समूह को देखकर प्रभावित हो सकता है तथापि कदाचित् वह अनुभव करेगा कि सेन्ट पीटर्स के मौलिक सौंदर्य को (pristine beauty) को एक प्रभावशाली किन्तु निरर्थक अलंकरण (superfluous adornment) ने दूषित कर दिया है।

अध्याय 10

डच गणतंत्र

मछुओं, कलाकारों और दार्शनिकों का देश

संयुक्त प्रान्तों के इस गणतंत्र में अपूर्व राजनैतिक, व्यापारिक और बौद्धिक मिश्रण था। इस देश ने लुई के विरुद्ध समस्त यूरोप को एक किया। विश्व के अधिकांश भाग का व्यापार इसके अधिकार में था, नमक लगी मछलियों का सर्वाधिक धन्धा यही देश करता था, रेम्ब्रैण्ट (rembrandt) और फ्रांज हाल्स (franz hals) इस देश के निवासी थे, डेकार्ट और स्पिनोज़ा ने इसे अपना देश बना लिया था। 17वीं शताब्दी में डच अपनी सभ्यता और राजनीतिक शक्ति के शिखर पर थे। उनकी राजनीतिक अवनति क्रमिक और अनिवार्य थी।

फिलिप द्वितीय के विरुद्ध होने वाले संघर्ष ने नीदरलैंड को यदि दो भागों में विभाजित नहीं किया तो कम से कम उसके दो प्रान्त समुदायों की असमता को अवश्य प्रकट किया। ये थे उत्तरी और दक्षिणी प्रान्त। यह भिन्नता आजकल कुछ–कुछ हालैंड और बेल्जियम में विद्यमान है। पहले यह समझा जाता था कि यह विभाजन जाति, भाषा व धर्म के आधार पर हुआ था, किन्तु हाल ही में एक डच विद्वान[1] ने यह कहा है कि ऐसी बात नहीं थी। इसका उत्तर 16वीं शताब्दी के विद्रोह की प्रगति से उत्पन्न हुए अधिक आकस्मिक कारणों में ढूंढना चाहिये। ऐसा कहा गया है कि 17वीं शताब्दी की प्रारम्भिक दशाब्दियों में भी काल्विनवादी उत्तरी प्रान्तों में अल्पमत में थे और उस समय तक सशोधित धर्म का दक्षिण में उतना ही अधिक प्रभाव था जितना कि उत्तर में, इसलिये भी इन दोनों क्षेत्रों में कोई स्पष्ट जातिभेद न था। किन्तु 1572 के विद्रोह के बाद काल्विनवाद के तड़ित्प्रहारकों, सी बेगर (sea beggars) ने स्पेन के विरुद्ध अभियानों के लिये उत्तरी प्रान्तों में अपने अड्डे स्थापित किये, इनका सैनिक दृष्टि से बहुत अधिक महत्व था और इस प्रकार उत्तरी प्रदेशों में, विशेष रूप से हालैंड और जीलैंड में, प्रभावकारी नेतृत्व नवीन धर्म के व्याख्याताओं के हाथ में चला गया। दक्षिणी प्रान्तों के कस्बों में भी कुछ समय के लिये शासक अल्पमतों में काल्विन मतानुयायियों की प्रधानता रही और कैथोलिकवाद केवल गेल्डरलैंड, ग्रोनिंजेन और ओवरीसेल में उनके अतिक्रमण की प्रगति को रोकने में सफल हुआ।

---

1 पी० गेल कृत दि रिवोल्ट आव नीदरलैंड 16 व 131, दि नीदरलैन्ड डिवाइडेड पृ० 16, 56 और 57 भी देखें।

इसके विरुद्ध पुराना विचार भी विवेकशून्य नहीं कहा जा सकता जैसा कि आजकल माना जाता है, कि ट्यूटोनिक उत्तरी प्रान्त (teutonic north) तथा दक्षिणी रोमन–केल्टिक दक्षिणी प्रान्त (romano-celtic south) में विशेष अन्तर था यदि इस बात को ध्यान में रखा जाये कि शताब्दियों तक, बिशप-क्षेत्रों की सीमाओं द्वारा उत्तरी प्रान्त जर्मेनिक साम्राज्य से और दक्षिण प्रान्त कैथोलिक फ्रांस से जुड़े हुए थे।

डच पार्थक्य

समुद्रतटीय हालैंड और जीलैंड के प्रान्त संयुक्त नीदरलैंड की आत्मा थे। इनके अनेकों कस्बों में ही ऐसा धनी, अभिजात वर्ग रहता था जो प्रभुसत्ता प्राप्त करने के लिये औरेन्ज घराने से झगड़ता था। इन सत्ता–प्राप्त लोगों का प्रजातन्त्र की अपेक्षा कुलीनतंत्र की और अधिक झुकाव था। नगरपालिकाओं की सदस्यता कुछ ही परिवारों तक सीमित थी जिनमें से ही सभी मजिस्ट्रेट और बर्गोमास्टर (burgomaster) निर्वाचित होते थे। इसी श्रेणी में से स्थानीय और केन्द्रीय स्टेटों के[1] प्रतिनिधि चुने जाते थे। डच स्वयं अच्छी तरह जानते थे कि यह सरकार जनतांत्रिक नहीं है वरन् पार्थक्यपूर्ण सोमेलसडिक ने 1640 में चार्ल्स प्रथम के कथन का कि निचले प्रदेशों की सरकार लोकप्रिय और भेदभावहीन थी, खण्डन करते हुए यह मत प्रकट किया था कि वास्तव में यह कुलीनों (aristocracy) की सरकार थी जिसमें "जनता की कोई कद्र न थी और समानता के लिए कोई स्थान न था।[2]" उस छोटी सी श्रेणी का, जिसमें से स्टेट्स जनरल के सदस्य चुने जाते थे, वर्णन करते हुए सर विलियम टैम्पल ने डच राजनैतिक प्रणाली को एक प्रकार की एक गुट की अल्पमतवाली तथा लोकप्रिय सरकार से बहुत भिन्न सरकार कहा है।

गणतंत्रवादी तथा औरेन्ज दल

दूसरे प्रान्तों में युट्रेक्ट पुराने बिशप–क्षेत्रों (bishopric) के अवशेषों का प्रतिनिधित्व करती थी और उसके अधीन अब भी कुछ प्राचीन धार्मिक संस्थायें (ecclesiastical institutions) रह गई थीं। फ्रिशिया (frisia) मुख्यतः समुद्रीय (maritime) प्रदेश था, उसके निवासी मूलतः कुलीनवर्ग के न थे और इसकी

---

1 देखिए गेडेस लिखित **एडमिन्सट्रेशन आव जान डे विट**, खंड 1,145 एफ एफ। ब्लाकः **हिस्ट्री आव दि पीपुल आव दि नीदरलैंड** (अनुवाद) खड 3, अध्याय, 13 और वेडिंगटन लिखित **ल रिपब्लिका देस प्रोंविसेज यूनीज**, 1630-1650, अध्याय 1।

2 **वेडिंगटन, पूर्व उद्धृत**, खंड 1,8।

राजधानी ल्यूवार्डेन (leeuwarden) में प्रजातान्त्रिक और प्रतिनिधि सभा स्थापित थी। ओवर-यसल और ग्रोनिजन समुद्रीय न होकर महाद्वपीय दो छोटे प्रान्त थे जबकि ग्जेल्ड्रेस में स्थानीय कुलीन वर्ग का प्रभाव था। इस प्रकार संयुक्त प्रदेशों में हालैंड़ और जीलैंड, कुलीन वर्गीय सभासद, युट्रेक्ट के प्रोटेस्टेन्ट नियामक, फ्रिशिया के स्वतंत्र किसान तथा अन्य प्रान्तों के प्रादेशिक कुलीनवर्ग सम्मिलित थे। इसके साथ ही यदि यह और जोड़ दिया जाये कि मध्य 17वीं शताब्दी तक फ्रांस से सन्धि करने के प्रश्न पर हॉलैंड और जीलैंड के बिल्कुल भिन्न विचार थे, तथा डच जनता को युद्ध से उतना ही लाभ था जितना दूसरे भाग को सन्धि से, और स्टेट्स जनरल के सदस्य राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी न होकर प्रान्तों के प्रति उत्तरदायी थे, तो यह ज्ञात होगा कि एकता को भग करने वाली शक्तियां प्रबल थीं और 17वीं शताब्दी के डच इतिहास के सम्बन्ध में वास्तविक रूची उस झगड़े में है जो सात प्रान्तों द्वारा पृथक होने और दूसरी ओर आरेन्ज वंश द्वारा सबको केन्द्रित करने के लिये चल रहा था। 1622 के संकट काल में डचों को अपना भाग्य राजघराने के विश्वास पर छोड़ने के लिए वाध्य होना पड़ा। किन्तु वाह्य रूप में गणतंत्रीय राज्य होने के कारण वह पश्चिमी यूरोप में प्रचलित इस सामान्य नियम का, कि राजतंत्रीय व निरंकुशतावादी सरकार अच्छी होती है, अपवाद था।

आरेंज वंश के शासन का औचित्य

स्टेट्स जनरल जिसकी बैठक हेग में होती थी, वास्तव में प्रभुसत्ता-सम्पन्न राज्यों के दूतों की सभा थी। डिप्युटी (deputies) तीन या छः वर्ष तक के लिये निर्वाचित किये जाते थे और राज्य परिषद् द्वारा बुलाये जाते थे। वे स्वतंत्र एजेण्ट न थे अपितु केवल अपने क्षेत्रों के निर्वाचकों की प्रतिध्वनि मात्र थे। दूसरे शब्दों मे प्रत्येक राज्य किसी विषय पर असहमत होने पर निषेधाधिकार **लिबरम वीटो** (liberum veto) का प्रयोग करने के लिये पूर्ण स्वतंत्र था और यह तो कुछ संयोग की बात थी कि डचों की दशा पोलों जैसी होने से बच गई। आरम्भ में समस्त सभा विदेशी नीति सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार विमर्श करती थी, किन्तु 1619 में बर्नेवेल्ड (barneveld) की हत्या के बाद नॉसौ के मारिस (maurice of nassau) ने इस विभाग के कार्य में रूची ली और धीरे-धीरे आरेंज परिवार विदेशी मामलों के निर्देशन को प्रभावित करने लगा। सेना का वेतन, जिसमें प्रधानतया भाड़ैत सिपाही थे, प्रान्तों द्वारा अपने भाग के अनुपात से अदा किया जाता था और प्रत्येक 'स्टैडधारियों' (stadtholder) अपने प्रान्त के सैनिकों का मुखिया होता था[1]। अनेक अवसरों पर इस प्रकार के विभक्त खण्ड नियत्रण के

1 संघ की सैनिक शक्ति के विस्तृत विवरण के लिये देखें गेडेस कृत **एडमिस्ट्रेशन आव जान डे विट** खंड 1,109 एफ. एफ.।

कारण अराजकता और विनाश की आशंका हुई किन्तु ऐसे समय भी आरेंज के राजघराने ने डचों को विनाश से बचा लिया, क्योंकि स्टैंडधारियों को अपनी पारिवारिक श्रृंखला की एकता में बांध कर प्रान्तों के सैनिक साधनों पर वह नियंत्रण कर लेता था। जॉन डे विट के जीवन–वृत में उस झगड़े का तीव्र रूप दिखाई देता है जो प्रान्तीय पार्थक्यवाद और शक्तियों के केन्द्रीयकरण में चल रहा था। प्रान्तीय पार्थक्यवाद डचों ने 16वीं शताब्दी के स्पेन के विरुद्ध संघर्ष से विरासत के रूप में पाया था और शक्तियों का केन्द्रीयकरण घटनाओं के परिणाम–स्वरूप आरेंज परिवार के हाथ में आ गया था।

राज्य परिषद और प्रान्तीय स्टेटें

स्टेट्स-जनरल के साथ-साथ 1584 में राज्य परिषद का निर्माण भी किया गया। इसमें प्रान्तों के बारह डिप्युटी होते थे और स्टेट्स–जनरल की भांति इसकी अध्यक्षता केवल एक सप्ताह तक होती थी[1]। इस परिषद में स्टेड्धारियों के लिये स्थान थे तथा आरेंज राजपरिवार को कम से कम एक मत प्राप्त था। पृथक प्रान्तों में प्रत्येक स्टैड्धारी शान्ति और संशोधित धर्म बनाये रखने तथा न्याय व्यवस्था करने के लिए उत्तरदायी था। प्रान्त की स्टेटों में दो वर्ग थे कुलीन वर्ग (Nobility) और मध्यम वर्ग (Bourgeoisie), जो वर्ष में लगभग छः बार सभा करते थे। संघ के सात अंगों की सरकार एक सदृश होती थी। अन्तर केवल इतना था कि इसमें हालैंड का एक विशेष और उच्च अफसर अधिवक्ता या ग्रांड पेंशनरी (जो आरेंज दल के विरूद्ध अपने प्रान्त का नेतृत्व करता था) होता था।

डच–श्रेष्ठता के कारण

डच बहुत सी बुराइयों का, जो अब भी उनके प्रतिस्पर्धियों के मार्ग में बाधक थीं, त्याग कर चुके थे। इसके अतिरिक्त उनकी विशिष्ट व लगभग आधुनिक नीति और उनकी शानदार संस्कृति इस कारण बन सकी कि वहां की जनता में व्यापारी, शिल्पी और मल्लाह बहुसंख्या में थे और बहुत थोड़े लोग दरिद्र और अनपढ़ थे।[2] इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध में डच प्रदेश तेजी से वैभवशाली बन गये और ऐसे समय में जब फ्रांस और स्पेन जैसे देश अपनी जनता में से उद्योगी तत्वों को बडी संख्या में

---

1 वेडिंगटन, पूर्व उदधृत, खंड 1, 18।

2 द ला कोर अपनी रचना मैमायर्स द जीन डे विट में यह दर्शाने का प्रयास करता है कि इस समय की आधी डच जनसंख्या व्यापारी एवं कृषक वर्ग की थी (वेंडिगटन, पूर्व उदधृत, खंड 1, 34)। 17वीं शताब्दी में डच समाज के सामान्य वर्णन के लिये देखिये ए० लेफ़वरे पोतेल्स कृत जीन डे विट, खंड 1, अध्याय 1,।

निकाल रहे थे उस समय संयुक्त प्रदेश स्पेन के यहूदियों और फ्रांस के ह्यूजनों के लिये अपने द्वार खोलकर अपने धर्मान्ध पडोसियों को यह दिखा रहे थे कि धार्मिक सहिष्णुता से लाभ होता है।

द्वादशवर्षीय अस्थायी युद्ध–विराम (अप्रैल 1609)

सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में संयुक्त प्रदेशों के आर्क ड्यूक स्पेन से लम्बा संघर्ष करते हुए अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने में समर्थ रहे। सितम्बर, 1604 में स्पेन के जनरल स्पिनोला ने आस्टेंड के त्रिवर्षीय घेरे की समाप्ति कर दी, किन्तु इससे हैप्सबर्ग पक्ष को कोई लाभ न हुआ, क्योंकि वह कस्बा खण्डहरों का ढेर बन गया था। इससे पूर्व इसी वर्ष में नासौ के मारिस ने जो एक स्टेट्स जनरल द्वारा संगठित सेना का अफसर था, स्लुइस पर अधिकार कर लिया। इसके तीन वर्ष बाद (अप्रैल, 1607) डचों ने जिब्राल्टर से परे एक महत्वपूर्ण नौसैनिक विजय प्राप्त की, जहां एक बड़े स्पेनिश बेड़े को पूर्वी द्वीपों के लिये तैयार किया जा रहा था। संभवत: किसी भी अन्य घटना की अपेक्षा इस सफलता से संधि–वार्ता, जिसके प्रस्ताव कई वर्ष पूर्व से चल रहे थे, आवश्यक हो गई। ऐसी बात न थी कि संयुक्त प्रान्तों में सभी लोग शान्ति के इच्छुक हों क्योंकि वहां एक ऐसा बड़ा दल था, विशेषतया समुद्र तटीय राज्यों में, जिसे युद्ध से लाभ हो रहा था। इसके अतिरिक्त बहुत से लोगों का यह विश्वास था और कुछ हद तक यह समृद्धि युद्ध के चालू रहने पर भी अवलम्बित थी। दूसरी और इस संघर्ष के कारण डचों के सब साधन समाप्त से हो चुके थे। बहुत भारी कर लगाये जा चुके थे। शान्ति–दल का नेतृत्व हालैंड के महान् और देश भक्त ऐडवोकेट, जॉन वान ओल्डेन बर्नेवेल्डट (John van oldenbarneveldt) ने किया जिसमें डच गणतन्त्रवाद के गुण कूट-कूट कर भरे हुए थे। संधि-वार्ता हेग में 1608 में आरम्भ हुई, किन्तु स्पेन ने पूर्वी द्वीपों में व्यापार-स्वातन्त्र्य के महत्वपूर्ण प्रश्न पर झुकने में अनिच्छा प्रकट की। युद्ध पुन: आरम्भ होने की आशंका बनी हुई थी, परन्तु इंगलैण्ड और फ्रांस ने हस्तक्षेप करके इस स्थिति को सम्भाल लिया। उन्होंने दोनों दलों को बारह वर्षीय अस्थायी युद्ध–विराम सन्धि करने के लिये मना लिया, इस अवधि के लिये डचों को पूर्वी द्वीप–समूहों से व्यापार करने की स्वतन्त्रता मिली और संयुक्त प्रान्तों को स्वतन्त्र समझा जाने लगा। इस समझौते पर 9 अप्रैल, 1609 को हस्ताक्षर हुए। दोनों में से कोई भी दल इसे स्थायी नहीं समझता था, किन्तु इससे कम से कम शान्ति अवश्य स्थापित हो गई, इसका कुछ श्रेय हेनरी चतुर्थ की चतुर और सफल कूटनीति को है।[1]

---

1 वेडिंगटन, पूर्व उद्धृत, खंड 1, 68।

आरेंज वंश

इस प्रकार बारह वर्षीय अस्थायी संधि डच राष्ट्र के क्रमिक विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस संधि से डचों को राष्ट्रीय अस्तित्व के लिये लड़ी जा रही लम्बी लड़ाई में स्वांस लेने का प्रथम अवसर प्राप्त हुआ। स्पेनवालों के लिये यह अपनी सैनिक अवनति की प्रथम स्वीकृति थी। इसके पश्चात् संयुक्त प्रान्त अपनी आर्थिक उन्नति करने में जुट गये और इस काल में आरेंज परिवार की प्रसिद्धि धीरे धीरे बढ़ती गई। इस ने धीरे धीरे स्टटैडारियों की जायदादों पर एकाधिकार स्थापित कर लिया। विलियम दी साइलेंट[1] के पास जबकि तीन जागीरें थीं तो उसके पुत्र मारिस के पास छः हो गई तथा उसके साथ ही वह संघ की सेना का कैप्टन जनरल और एडमिरल जनरल भी था। विलियम के अधिकांश उत्तराधिकारी सैनिक अथवा राजनैतिक योग्यता से सम्पन्न थे। मारिस (1586–1625), फ्रेडरिक हेनरी (1625–1647), विलियम द्वितीय (1647–1650), और विलियम तृतीय (1672–1702) 17वीं शताब्दी के इस वंश के सम्भवतः सबसे अधिक समान रूप से योग्य वशज थे।

प्रतिवादक तथा पुनःप्रतिवादक (remonstrants and counter-remonstrants)

हॉलैंड इस संघ का सबसे धनी और सबसे अधिक शक्ति सम्पन्न सदस्य था और इसके पास काफी अनुभवी एडवोकेट या पेंशनरी कार्यकर्ता थे जो आरेंज परिवार का अतिक्रमण का विरोध करने में समर्थ थे। अब पेंशनरी के असैनिक व प्रतिनिधि पद और स्टेडथारी के सैनिक और व्यक्तिगत पद में अन्तर्निहित प्रतिक्रिया (anti-thesis) के लिए 12 वर्षीय अस्थायी सधि द्वारा स्थापित की गई शांति की आवश्यकता थी। ज्यों ही स्पेन का दबाव घटा कि एक परिवार में निहित सैनिक व राजनैतिक स्वायत्तता का आदर्श, उन गणतंत्रीय और पार्थक्यवादी आकांक्षाओं के विरुद्ध खड़ा किया गया जो उस प्रान्त के मताधिकार द्वारा प्राप्त किये गये महान् असैनिक कार्यकर्ता के पद में मूर्तिमान थीं। यह प्रान्त अपनी सम्पत्ति और जनसख्या के कारण संघ की नीति का निर्देशन करने में सबसे अधिक हिस्सा चाहता था। दोनों में प्राथमिक संघर्ष का फल पृथक्त्व सिद्धान्त के भविष्य के लिये अशुभ रहा। सदा की भांति यह प्रश्न भी धर्म से उलझा हुआ था। जेकब हार्मेन्ज 1602 में लीडन (leyden) में आध्यात्मवाद का प्रोफेसर नियुक्त किया गया। अपने आरम्भिक जीवन में आर्मीनियस (arminius) ने कैथोलिक देशों की यात्रा की थी, और अब उसने अपने देशवासियों के कठोर काल्विन-वाद को नरम बनाने का प्रयत्न किया। उसने अपने चर्च के केवल कुछ मौलिक

---

1 1533–1584।

सिद्धान्तों, जैसे पूर्व निश्चित भाग्य (predestination), में सुधार करने का ही विचार नहीं किया अपितु डच चर्च में वेदियों (altars) का समावेश किया और उनकी दीवालों को सुन्दर बनाने का सुझाव भी रखा। लूथर के लेख पढ़ने से उसके राज्य और चर्च के सम्बन्ध-विषयक विचारों में सुधार हो गया जिससे वह चर्च को राज्य के अधीन रखने के पक्ष पर बल देने लगा। अपने क्रमिक मासिक विकासकाल मे आर्मीनियस सदैव काल्विनवादी रहा, किन्तु उसके विचारों का उसके मत के अधिक उदार और प्रबुद्ध सदस्यों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। उसके विचारों के फलस्वरूप, राष्ट्रीय विभाजन से पूर्व, आर्मीनियस की 1610 में मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद जॉन उट्टेनबोगेर्ट (John wyttenbogaert) ने नेतृत्व ग्रहण किया और औल्डेनबार्नेवेल्ड की स्वीकृति से जून, 1610 मे गौंडा (Gonda) में एक सभा बुलाई। गौंडा में विचार–विमर्श के परिणामस्वरूप सिद्धान्तों का वक्तव्य तैयार किया गया जिसे 'प्रतिवादन' (remonstrants) कहते हैं। इसमें मुख्यतया 'ग्रेस' और 'प्रिडेस्टिनेशन' के सिद्धान्तों का विवरण है। इस घोषणा–पत्र का उत्तर जल्दी ही दृढ़ काल्विनवादी फ्रांसिस गोमार नामक लेडन के एक प्रोफेसर ने पुनःप्रतिवादन (counter-remonstrants) के रूप में दिया। इस प्रकार आर्मीनिअनों का नाम प्रतिवादक पड़ा जबकि अधिक दृढ काल्विनवादियों को पुनः-प्रतिवादक अथवा गोमारवादी कहा जाने लगा। काल्विनवादी देशों में निरन्तर नरक–दण्ड का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न लोगों को एकत्रित करने में कई बार सफल नारा रहा है और जब कभी इस सिद्धान्त के समावेश करने में कमी की गई तो इसके विनाशकारी परिणाम भी निकले। आलडेन–बार्नेवेल्ड व हालैंड का अधिकांश जनमत अधिक लचीले सिद्धान्तों के पक्ष में था। मारिस और स्टेट्स जनरल का एक बड़ा भाग दृढ़ और पक्के काल्विनवाद का उत्साही समर्थक था।

ओल्डेनवार्नेवेल्ड को फांसी (मई, 1619)

यह विभाजन राजनीतिक विभाजन के साथ–साथ हुआ और इस प्रकार मारिस को गणतंत्रीय, पृथक्तावादी और आरेंज विरोधी दल को विधर्मी कहकर कलंकित करने का अवसर मिल गया। यह विवाद 1616 में उस समय चरम सीमा पर पहुंच गया जब एडवोकेट ने केवल प्रान्त की स्वतन्त्रता की गारंटी के लिये हॉलैंड की स्टेट्स को सैनिक भर्ती के लिये राजी किया। उसके प्रत्युत्तर में स्टेट्स जनरल ने पुनः-प्रतिवादन करने के लिये और काल्विनवाद को स्थिर राज–धर्म बनाने के लिये एक राष्ट्रीय धार्मिक सभा का आयोजन किया। इस पर ओल्डेनवार्नेवेल्ड ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव के भरोसे स्टेट्स से इस प्रभावित राष्ट्रीय सभा में भाग लेना अस्वीकार करा दिया। इस प्रकार के आचरण ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह अलग होने के सिद्धान्त पर और अपने प्रान्त की स्वतन्त्रता स्थापित करने के

लिये दृढ़-प्रतिज्ञ था। निःसन्देह डच जनमत स्पष्ट रूप से इतना बटा हुआ था कि हॉलैण्ड के संघ से बिल्कुल हटने की आशंका थी। इस धमकी का सामना करने के लिये मारिस और स्टेट्स जनरल द्वारा दृढ़ कदम उठाये गये। हॉलैंड द्वारा भर्ती किये गये सैनिकों की पदच्युति की मांग की गई और 29 अगस्त, 1618 को ओल्डेनबार्नेवेल्ड को उसके साथियों सहित, जिनमें विधिज्ञ ग्रोटियस भी था, गिरफ्तार कर लिया गया। इन अपराधी व्यक्तियों की जांच के लिये स्टेट्स जनरल ने एक विशेष न्यायाधिकरण की नियुक्ति की। इस न्यायाधिकरण में वे ही व्यक्ति लिये गये जो एडवोकेट के व्यक्तिगत शत्रु थे। इसलिये इसका निर्णय पूर्व निश्चित था। मई 1619 में उसे मृत्यु-दण्ड की आज्ञा दी गई और इस वृद्ध राजनीतिज्ञ के विरुद्ध उसका पालन किया गया। इस प्रकार वह राजनीतिज्ञ जो अपने देश की सेवा करने में विलियम द साइलेंट से दूसरे नम्बर पर था आरेंज परिवार की आकांक्षाओं की वेदी पर अब पहला बलिदान बना। लोगों को दण्ड की आज्ञा से कुछ आश्चर्य न हुआ, किन्तु जब इसका पालन भी हो गया तो बहुत से लोगों को ठेस लगी और उन्होंने इसका कारण मारिस और सोमेल्सडिज्क (sommeldijk) फ्रांसिस वान एरसेन्स (francis van aerssens) की उससे व्यक्तिगत शत्रुता बताया। ग्रोटियस को आजीवन कारावास मिला और उसे लोवेस्टीन के दुर्ग मे बन्दी रखा गया, जहां से वह 1621 में बड़े नाटकीय ढंग से निकल भागा। अपनी पत्नि और नौकरानी की सहायता से उसने अपने आप को एक ट्रंक में छिपा लिया जिसमें आर्मीनियन पुस्तकें होने की सम्भावना थी और जिसे संतरियों ने बिना संदेह किये मुख्य भूमि पर पहुँचा दिया। (उनकी शिकायत यह थी कि ट्रंक इतना भारी था कि उसमें आर्मीनियन स्वयं भी आ सकता था) और अन्त में अपने मित्रों की सहायता से वह फ्रांस पहुंच गया। इस प्रकार पुराने डच गणतंत्रवाद का अन्त हो गया जिसने स्पेन के विरुद्ध बहुत कुछ किया था, किन्तु जिसने शान्तिकाल मे उस एकता को नष्ट करने की धमकी दी थी जिस पर आरेंज परिवार अपनी राजतंत्रीय आकांक्षाओं की नींव रखना चाहता था। ग्रोटियस के लेख उन लोगों के आदर्शवाद और प्रबोधन की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति सिद्ध हुए जिनके नेता को न्यायालय द्वारा दिये गये प्राण दण्ड से समाप्त कर दिया गया।

डोर्ट की स्वीकारोक्ति

राष्ट्रीय साइनोड का अधिवेशन 1618 के उत्तरकाल में डोड्रेक्ट में हुआ और यह सभी का प्रतिनिधित्व करती थी जिसमें विदेशी संशोधित चर्चों ने अपने प्रतिनिधि भेजे। इसमे जो विचार-विमर्ष हुए उनका परिणाम निकला-डच काल्विनवाद के सिद्धान्तों की घोषणा और आर्मीनियन तथा प्रतिवादकों की निन्दा तथा इसके पश्चात् सपीडन जिसके कारण बहुत से प्रमुख अल्पसंख्यकों को देश से

चले जाने के लिये बाध्य होना पड़ा। डोर्ट के साइनोड ने, जिस नाम से इसे सम्बोधित किया जाता था, डच लोगों को एक सरकारी स्वीकारोक्ति (confession) प्रदान की जैसी कि आग्सबर्ग या हीडेलबर्ग के लोगों को प्राप्त थी। क्रमिक राष्ट्रीय विकास में यह महत्वपूर्ण घटना ऐसे समय हुई जबकि जाति और भाषा से भी अधिक धर्म एक ऐसी शक्ति थी जो राज्य में एकता स्थापित करती थी। आर्मीनियन वहां सपीड़ित किन्तु प्रभावपूर्ण अल्पमत में रहे। यह उनके प्रयासों का फल था कि डेकार्ट के सिद्धान्तों को संयुक्त प्रान्तों के अनुरूप बना लिया गया और दृढ़ कालिवनवाद का कोई विकल्प सम्भव हो सका।

फ्रेडरिक हेनरी (1625–1647)

बारहवर्षीय युद्ध-विराम-संधि 1621 में समाप्त हो गई और यद्यपि सुलह सम्बन्धी प्रस्ताव चल रहे थे फिर भी लड़ाई आरम्भ हो गई। प्रारम्भिक लड़ाइयां डच हितों के पक्ष में न गई और घेरे के पश्चात् जो 1623 में आरम्भ हुआ बेड़े का समर्पण करना पड़ा। बुढ़ापे और पराजयों के कारण मारिस में निर्णय शक्ति की कमी दिखाई देने लगी। यही कारण है कि अप्रैल 1625 में उसकी मृत्यु से किसी को विशेष विस्मय अथवा दुख नहीं हुआ। उसके पश्चात उसका सौतेला भाई फ्रेडरिक हेनरी को जो 1584 में उत्पन्न हुआ था, उत्तराधिकार मिला। वह विलियम द साइलेंट के चतुर्थ विवाह (लुइस द कोलिग्नी) से उत्पन्न पुत्र था। हेनरी फ्रेडरिक उसी प्रकार फ्रांसीसी प्रवृत्ति का व्यक्ति था जिस प्रकार मारिस जर्मन चरित्र का। सैनिक निपुणता और बहिर्जीवन के अनुराग के साथ साथ उसमें तीव्र प्रतिज्ञान और शिष्ट आचरण भी थे जो उसने अपनी माता से प्राप्त किये थे।[1] 1640 में ग्रोनिजन का स्टैंडधारी (stadtholder of groningen) निर्वाचित हो जाने के बाद सात पट्टों का मालिक होने के लिये उसे अब केवल फ्रीसिया की सातवीं स्टेड की आवश्यकता थी। सन् 1637 में स्टेट्स जनरल ने उसे 'हाइनेस' की उपाधि से विभूषित किया और इस नाम के अतिरिक्त वह सब प्रकार से शासक बन गया। उसके पुत्र और पुत्री के विवाहों का ऐतिहासिक महत्व है। उसके पुत्र का विवाह, जो बाद में विलियम द्वितीय के नाम से प्रसिद्ध हुआ, राजा चार्ल्स प्रथम की पुत्री-मेरी से हुआ। उसकी पुत्री लुईस हैनरीटा 1646 में फ्रेडरिक विलियम, महान् इलेक्टर को ब्याही गई। इन सम्बन्धों से फ्रेडरिक को राजा का सा पद पाने में महत्वपूर्ण योगदान मिला। इसके साथ ही उसका सेना पर अधिकार निर्विवाद था और इस प्रकार वह शिशु-राज्य की

1 देखिये एडमुंडसन इगलिश हिस्टोरिकल रिव्यू (1890), 264।

प्रतिष्ठा बनाये रखने में सफल हुआ। तत्पश्चात सवाइवेंस के अधिनियम (1631) द्वारा उसके पद को वंशानुगत घोषित कर दिया गया।

डाउन्स की लड़ाई (अक्तूबर 1639)

1635 के ग्रीष्मारम्भ में फ्रांस और संयुक्त प्रान्तों के बीच का समझौता आक्रामक और प्रतिरक्षात्मक संधि में परिणत हो गया और इस प्रकार रिशेलू ने डच स्वतंत्रता–युद्ध को तीसवर्षीय युद्ध में परिणित कर दिया, तो भी 1636 के ग्रीष्म में फ्रेडरिक डंकर्क जीतने में असफल रहा, यद्यपि उसने फ्रांसीसी सैनिक टुकड़ी और बेडे पर अधिकार करके स्मरणीय सफलता प्राप्त की। जैसा कि एक समुद्रतटीय जाति के योग्य है, डचों ने अपने शत्रुओं को समुद्र में निर्णायक रूप से हराया। 1639 में चैनल में दूसरा आर्मेडा दिखाई दिया, 20,000 सैनिकों तथा 77 जहाजों के साथ उसे निश्चित निर्णय के लिये आमन्त्रित किया गया। इसका परिणाम स्पेन के लिये उतना ही विनाशकारी निकाला जितनी कि 1588 की विफलता थी। 16 सितम्बर को ट्रोम्प 13 जहाज लेकर लड़ाई में शामिल हुआ। यद्यपि अनेक परिस्थितियां उसके विरुद्ध थीं फिर भी उसने स्पेन के एडमिरल ओक्वेंडो (oquendo) को अंग्रेज–अधिकृत समुद्र में शरण लेने के लिये बाध्य कर दिया, शत्रु के जहाजों को वहीं रोक रखा और इस प्रकार उसे और डच सैनिक सहायता मंगवाने के लिये समय मिल गया। 10 अक्तूबर, 1699 को कुहरे के बीच डाउन्स का युद्ध हुआ और स्पेन के शानदार आर्मेडा के केवल थोड़े से जहाज बचकर भाग निकलने में समर्थ रहे। यहां आकर स्पेन की जल–शक्ति के इतिहास का अन्त हो जाता है। इसकी तुलना में, इसके तुरन्त बाद घटित सैनिक घटनायें तुच्छ हैं। डाउन्स के युद्ध के पश्चात इस युद्ध में डचों को विजयश्री प्राप्त होना निश्चित था।

संधि की समस्या

प्रत्येक अन्य युद्धरत देश की तरह संयुक्त प्रदेश भी इसकी सामान्य शिथिलता और निरर्थकता से सहमत था जो तीसवर्षीय युद्ध के अन्तिम चरणों में स्पष्ट दिखाई देती थी। फ्रेडरिक के जीवन के अन्तिम वर्ष उसकी गम्भीर बीमारी के कारण कलुषित हो गये और उसकी पत्नी ने धीरे धीरे उसके मन पर पूरा प्रभाव जमा लिया। वह मार्च, 1647 में परलोक सिधारा, किन्तु यदि वह जीवित रहता तो सम्भवतः वह स्पेन के साथ अलग संधि (जनवरी, 1648) न करता। लम्बे समय की सन्धि–वार्ता ने गणतंत्रीय व्यवसायी पृथकतावादी शान्ति–दल जो हालैंड में सबसे मजबूत था, और लोकप्रिय आरेंज–पक्षी युद्ध–दल जो जीलैंड में सबसे दृढ़ था के बीच पुरानी दरार फिर से खोल दी। एक ओर जीलैंड तथा आरेंज दल

द्वारा यह तर्क दिया जाता था कि स्पेन उनका शत्रु है और डचों की समृद्धि उस काल में हुई जब स्पेन से युद्ध लड़ा जा रहा था तथा फ्रांस को वे अपना राष्ट्रीय मित्र समझते थे, स्पेन की बाहरी चौकियां डच (अर्थात् जीलैंड) प्रदेश का सीमांत समानान्तर होने के कारण उसे निरन्तर भयभीत रहना पडता था। यह दल विधान को इन अर्थों में लेता था कि संघ में साधनों का वास्तविक एकत्रीकरण होना चाहिये तथा सयुक्त जल व स्थल सेनाओं पर कैप्टन जनरल का अधिकार होना चाहिये जिसके लिए सातों राज्य सानुपातिक रूप से अपना अपना योगदान दें। श्रमिक वर्गों और काल्विनवादी मत्रियों ने इन विचारों का समर्थन किया। दूसरी ओर हालैंड के कुलीन व्यापारियों का यह मंतव्य था कि 1579 के संघ की ठीक व्याख्या की जाय और सातों प्रान्तों में से प्रत्येक को अपनी सेनाओं पर जो वह भर्ती करे, पूरा अधिकार होना चाहिये। इस प्रकार वहां उतनी ही सेनायें होंगी जितने स्वतत्र राज्य, फिर स्टेट्स जनरल केवल मात्र राजदूतों की एक सभा होगी, कैप्टन जनरल एक स्थायी कार्यकर्ता नहीं होगा और केवल युद्ध के समय यह पद ग्रहण करेगा। चूंकि हॉलैंड का संघ की सेनाओं में आधे से अधिक भाग था, इसलिये स्टेट्स और भी अधिक दृढता से अपने निजी व्यय को नियमित करने और स्वयं भर्ती किये हुए लोगों पर नियंत्रण रखने के दावे पर अड़े हुए थे।

हॉलैंड में जनमत

विदेशी नीति में भी हालैंड अन्य प्रान्तों के विरुद्ध था। उसकी ऐसी धारणा थी कि अब फ्रांस एक महान सैनिक शक्ति थी और सम्भवतः वह स्पेन द्वारा रिक्त स्थानों में पैर जमाता जाये, इसलिए उससे मैत्री करना वांछनीय था किन्तु अत्याधिक निकट होना भी खतरनाक और दुखदायी हो सकता था। "गेलस एमिकस सेड नान विशस" (gallous amicus sed non vicious) सधि संयुक्त प्रान्तों (या हालैंड ही) के व्यापार की वृद्धि में विशेषरूप से लाभप्रद होगी और तानाशाही गणतत्र स्वतंत्रता से, जिस पर संघ आधारित था, बिल्कुल असंगत होगी। इन विचारों का विशेषकर व्यापारी वर्ग और[1] सघ के अधिक उदार मत पर विशेष प्रभाव पड़ा। ऐसे मौलिक विचार-भेद इंगलैण्ड के इतिहास में भी पाये जाते हैं। हॉलैंड के बर्गरों (burghers) में सब प्रकार के राजनैतिक अन्ध विश्वास थे, धार्मिक स्वतंत्रता के विचार, स्थायी सेना का भय और व्यापारिक विकास के लिये प्राथमिकता चाहे वह शान्ति से प्राप्त हो या युद्ध से जो बिल्कुल 18वीं शताब्दी के इंगलैंड के पुराने व्हिगों के सदृश थे, जबकि उसी काल के टोरियों में राजघराने के प्रति भक्ति के कारण, परम्परा या राजनैतिक सफलता में अभाव के

---

1 गेडेस कृत एडमिस्ट्रेशन आव जॉन डे विट खंड 63, एफ एफ।

कारण, मौलिकता में अग्रसर होने के लिये तैयार रहने के कारण, और अपनी अटल धार्मिक निष्ठा के कारण, 17वी शताब्दी के सयुक्त प्रान्तों के औरेंज–जीलैंड दल में कुछ साम्यता थी[1]।

मुन्स्टर की संधि (जनवरी 1648)

स्पेन और डच गणतन्त्र में 30 जनवरी, 1648 को मुन्स्टर में संधि पर हस्ताक्षर हुए। यह पहले वर्णन किया जा चुका है कि फ्रांस से बदला लेने के लिए और डचों से मुक्त होकर अकेले फ्रांस से युद्ध करने के लिये स्पेन ने डचों की प्रत्येक बात मानली (1648–49)। संयुक्त प्रान्तों को मुक्त और स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया। डचों द्वारा की गई विजयों को स्वीकार कर लिया गया, पूर्वी और पश्चिमी द्वीप–समूहों से व्यापार करने की शर्त भी स्वीकार कर ली गई और शेल्ट (schelt) को बन्द रखा गया। यद्यपि मुख्यतः हालैंड के दबाव के कारण लाभ–दायक सन्धि तो कर ली गई परन्तु उसकी धाराओं का समस्त प्रान्तों द्वारा पुष्टी–करण (ratified) कभी नहीं हुआ। ऐसे बुरे लक्षण भी दिखाई देते थे कि औरेंज दल के मन में अपने गणतन्त्रीय प्रतिस्पर्धियों के प्रति ईर्ष्या की भावना थी। कुछ वर्ष बाद यह विवाद फिर उठाया जाने वाला था, यद्यपि भिन्न परिस्थितियों में 1648 में गणतन्त्रीय पृथकतावादी दल एक विजयपूर्ण सधि कर चुका था, 1672 में सारा देश आक्रमक के पंजे में था, फ्रांस की धमकी को समझ लिया गया था और डच गणतन्त्रवाद एक बार फिर झुक गया।

विलियम द्वितीय (1647-1650) एम्सटर्डम पर आक्रमण

फ्रेडरिक हेनरी के पुत्र विलियम द्वितीय (1647–1650) ने ओरेंज वंश की प्रतिष्ठा को बढाया। 1640 में उसने चार्ल्स प्रथम की पुत्री मेरी से विवाह किया। सिंहासनारोहण के समय वह युवक था और लोकप्रिय था। उसने गुप्त रूप से स्पेन के साथ अलग संधि के पुष्टीकरण को रोकने की चेष्टा की, क्योंकि वह जानता था कि उसके वंश का भाग्य अविच्छेद्य रूप से युद्ध के साथ जुड़ा हुआ था, किन्तु वह उसी प्रकार असफल रहा जिस प्रकार मारिस 12 वर्षीय युद्ध विराम सधि को रोकने में असमर्थ रहा था। संधि के तुरन्त बाद भाड़ेत सेना में कमी कर दी गई। 1648–1650 में 1618–19 वाले सघर्ष का पुनरावर्तन हुआ, किन्तु इस बार धार्मिक बहाने की अपेक्षा सैनिक बहाना लिया गया। बचत करने की इच्छुक हालैंड की स्टेट्स ने सेनाओं में और कमी करने पर बल दिया।[2] विलियम

---

1 औरेंज और गणतन्त्रवादियों के आपसी भेदभाव के लिये देखिये लेफेवरे पोंतेल्स, जीन डे विट खंड 1,209–220।

2 एडमंडसन, हॉलेण्ड, 905।

ने घोषित किया कि उनमें पर्याप्त कमी की जा चुकी है अथवा राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा हो जायेगा। स्टेट्स-जनरल के बार-बार विरोध करने पर भी हॉलैंड का प्रान्त अपनी सेना का भाग घटाता रहा। विलियम की व्यक्तिगत प्रार्थना को एम्सटर्डम की कौंसिल ने सुनने से भी इन्कार कर दिया। इस विवाद के जटिल और कटु होने का यह कारण भी था कि एक ओर स्पेन का धन और कूटनीति जबर्दस्त काम कर रहे थे तो दूसरी ओर विलियम फ्रांस से मिलकर स्पेन से पुनः युद्ध छेड़ने को उत्सुक था तथा स्टुअर्टों को भी गद्दी दिलाना चाहता था। 1650 में में उसने शक्ति-प्रयोग करने का निश्चय कर लिया। हॉलैंड के 6 डिप्युटियों को बन्दी बना लिया गया, किन्तु एम्सटर्डम पर कब्जा करने का प्रयत्न विफल रहा, क्योंकि शहर को ठीक समय पर चेतावनी दे दी गई थी जिससे सुरक्षा का समुचित प्रबन्ध हो गया था। हॉलेंड की स्टैट्स इस शक्ति-प्रदर्शन के सामने झुक गई और उन्होंने सैनिक कटौती के कार्यक्रम में सुधार करना स्वीकार कर लिया। बन्दी डिप्युटियों को छोड़ दिया गया, और हॉलेंड में यद्यपि बहुत से लोग विलियम को विदेशी शत्रु से भी अधिक खतरनाक समझने लगे थे तो भी स्टैट्स जनरल ने इस राजकुमार को व्यावहारिक रूप में तानाशाह स्वीकार कर लिया। नवम्बर, 1650 में उसकी अचानक मृत्यु होने से वास्तविक विवादग्रस्त प्रश्न के हल होने में देर हो गई। विलियम का शरीर कभी भी पुष्ट न था। मृगया के अतिव्यसन से उसे ज्वर रहने लगा और वह 24 वर्ष की आयु में ही मर गया।

महान् सभा (the great assembly) (1651)

विलियम की मृत्यु के बाद औरेंज परिवार के भाग्य को अस्थायी धक्का लगा, उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके एक पुत्र हुआ जो बाद में विलियम तृतीय कहलाया। उसके पालन-पोषण के प्रश्न पर उसकी माता मैरी स्टुअर्ट और उसकी दादी अमेलिया वान सोल्म्स में बहुत भारी संघर्ष हुआ। अन्त में राज्य परिषद ने शिशु राजकुमार का संरक्षण दोनों महिलाओं और ब्रेन्डेन्बर्ग के एलेक्टर को सौंप दिया। इससे भी अधिक गम्भीर बात यह कि औरेंज परिवार के पुरुष-सदस्यों में से कोई भी नेतृत्व ग्रहण करने के लिए तैयार अथवा योग्य न था और इसके साथ ही यूरोप में हुई घटनाओं से ऐसा प्रतीत होता था कि राजतन्त्रीय संस्था परीक्षा के समय में से गुजर रही है। चार्ल्स प्रथम का 1649 में वध कर दिया गया, फ्रांसीसी राजा अवयस्क था और व्यावहारिक दृष्टि से पैरिस में बन्दी था, स्वीडन पर एक अनुत्तरदायी स्त्री का शासन था जो राज्य त्याग करने के लिए कहती थी, ब्रिटिश साम्राज्य का उत्तराधिकारी वोरसेस्टर के युद्ध में पूर्णतया पराजित हो चुका था और भाग गया था। इन स्थितियों में कोई आश्चर्य न था कि एम्स्टर्डम के बर्गोमास्टर, वृद्ध एड्रियन पॉ और डोर्ड्रेक्ट के बर्गोमास्टर जेकब द विट के जो

1650 में बन्दी बनाया गया था, अधिपतित्व में स्टेट्स दल पुनर्जीवित हो उठे। हॉलैंड ने पहल करते हुए जनवरी, 1651 में एक महान् सभा का आयोजन किया जबकि हॉलैंड, जीलैंड, यूट्रेक्ट, ग्वेल्ड्रेस, तथा ओवरीसल द्वारा केप्टेन जनरल और एडमिरल जनरल के पद तोड़ दिये गये। कुछ प्रान्तों में तो स्टैंडधारियों के पद भी समाप्त कर दिये गये। अब व्यवहारत: स्टैंडधारी विहीन सरकार और प्रत्येक प्रान्त की स्वायत्तता की स्वीकृति के मिलने से यह आशा की जाती थी कि 1650 की क्रान्ति जैसी घटना भविष्य में असम्भव हो जायेगी। अब विजयी स्टेट्स दल की शक्ति परीक्षा युद्ध द्वारा होने वाली थी। यह ऐसा आपत्कार्य था जिसके लिए हॉलेन्ड का अव्यावहारिक गणतन्त्रवाद तैयार न था तथा जिसमें ओरेन्ज दल को अपनी मुक्ति दिखाई देती थी।

इंगलैंड से विवाद

जनवरी, 1649 में चार्ल्स प्रथम के वध ने [illegible] प्रान्तों में सनसनी पैदा कर दी जहां कुछ समय से स्टुअर्टों के पक्ष में प्रबल भावना थी। ब्रिटिश पार्लियामेंट ने डोरिस्लेयर नामक व्यक्ति को हेग में अपना एजेन्ट बना कर भेजा जहां पहुंचने के कुछ दिनों बाद अंग्रेजी राजपक्षीय गुप्तचरों ने उसका वध कर डाला (12 मई, 1649) इसने इंगलैंड में दुर्भावना उत्पन्न करदी। जब स्टेट्स जनरल ने दूसरे एजेन्ट (स्ट्रिकलैंड) को, जिसे पार्लियामेंट ने भेजा, लेने से इन्कार कर दिया तो भी स्थिति में कुछ सुधार न हुआ। लदन से डच एजेन्ट को वापिस बुला लिया गया और इस प्रकार दो गणराज्यों के कूटनीतिक सम्बन्ध समाप्त हो गये। इस तनाव के समय दोनों समुद्रतटीय शक्तियों के पुराने मतभेद फिर ताजा हो उठे—ग्रीनलैंड के मत्स्य[1] क्षेत्रों के पुराने विवाद, डाउन्स की लड़ाई में ब्रिटेन द्वारा तटस्थता का उल्लंघन,[2] ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया तथा मस्कोवी कम्पनियों के हितों को हानि पहुंचने के हर्जाने की पूर्ति,[3] 1623 का अम्बोयना हत्याकाण्ड,[4] पुलारून को[5] वापिस लौटाना, और समस्त पूर्वी तथा पश्चिमी द्वीपों में जिन्हें डचों ने अभी अधिकार में नही लिया था, अंगरेजों को व्यापार करने की स्वीकृति देना। इस झगड़े को उभाड़ने के लिए अक्टूबर, 1651 में केवल इंगलिश नेविगेशन एक्ट[6] पास होने की

1 गार्डिनर, हिस्ट्री आव इंग्लैंड, खंड 2, पृ. 309।

2 देखिए अध्याय 10।

3 गार्डिनर, पूर्व उद्धृत, खड 3, अध्याय 26।

4 वही, पृ. 242।

5 वही, 3, 407।

6 अक्टूबर, 1950 के अधिनियम द्वारा ऐसे सभी उपनिवेशो के साथ व्यापार करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था जो राष्ट्रमण्डल के विरुद्ध चार्ल्स द्वितीय के

की आवश्यकता थी जबकि अंगरेजों की इस मांग ने कि डच जहाज चैनल में ब्रिटिश झण्डे को सलाम करें, निश्चित रूप से समुद्री प्रभुत्व का प्रश्न खड़ा कर दिया।[1] नेविगेशन एक्ट द्वारा इंगलैंड में माल के आयात के लिए ब्रिटिश जहाजों था उस देश के जहाजों के अतिरिक्त जिनका माल निर्यात हुआ है, अन्य जहाजों की मनाही कर दी गई। यह डचों के व्यापार को, जिस पर उनकी समृद्धि मुख्यतः आधारित थी, सीधी चुनौती थी। विचार विनिमय से किसी परिणाम पर न पहुंचा जा सका। अतः इस प्रश्न का केवल युद्ध द्वारा ही निर्णय किया जा सकता था।

प्रथम एंग्लो–डच युद्ध (1652–1654)

इतना होने पर भी युद्ध टल सकता था यदि ट्राम्प की जल्दबाजी दोनों के मतभेद को दूर करना असम्भव न कर देती क्योंकि दोनो पक्षों की पूरी तैयारी न थी। मई, 1652 में वह डोवर से परे ब्लेक की एक नौ सैनिक टुकड़ी से मिला जहां उनमें इस मांग पर विवाद हो गया कि डच झंडे को झुका दे, इसने लड़ाई का रूप धारण कर लिया जिसमें ट्रोम्प को कुछ हानि उठा कर पीछे हटना पड़ा। इसके बाद युद्ध की घोषणा कर दी गई। डचों ने अब अनुभव किया कि विभक्त नियंत्रण से कितना खतरा होता है। उस समय वहां पांच से कम ऐडमिरल न थे और स्टेट्स जनरल प्रभावहीन थी। प्रत्येक प्रान्त को अलग-अलग कितनी सेना और सामान देना है, इस प्रश्न पर ईर्ष्या और विवाद था, समुद्र में धोखा-धडी की कई घटनायें भी हुईं। मछली पकड़ने वाला डच बेड़ा अपने रक्षक जहाजों सहित स्कॉट-लैंड[2] के तट के पास नष्ट कर दिया गया, एक डच व्यापारिक बेड़ा कैले (calais) के पास पकड़ लिया गया। सामने की हवाओं के कारण ट्राम्प न तो ब्लेक तक और न ही एस क्यू तक पहुंच सका और अक्तूबर में डेविथ तथा डे रुइटर की संयुक्त सेनाओं को केंटिश नौक के तट पर, विथ द्वारा साथ छोड़ने के कारण, पराजित होना पड़ा। डच दुर्भाग्य की अबाध श्रृंखला में केवल दिसम्बर, 1652 में कुछ सुधार हुआ जब ट्रोम्प ने ब्लेक के अधीनस्थ एक अंगरेजी बेड़े को उजनेस के पास पराजित किया।[3] इसी बीच में डचों का एडमिरल वान गैलन द्वारा लेगहॉर्न

दावे का समर्थन करते हों। नेवीगेशन एक्ट ने डचों के प्रथम युद्ध में किस सीमा तक योगदान दिया इसके लिए देखिए गार्डिनर कृत **लेटर्स एण्ड पेपर्स रिलेटिंग टू दि फर्स्ट डच वार**, खड, 1, पृ. 48, एफ. एफ.।

1 गार्डिनर पूर्व उद्धृत, खंड 1, पृ० 170 एफ. एफ.।

2 वही, 1, खड 4।

3 गार्डिनर पूर्व उद्धृत, 3,4–6।

के पास अंग्रेजी बेड़े पर विजय प्राप्त करने से, भूमध्यसागर पर अधिकार स्थापित हो गया (23 मार्च 1653) साथ ही डेनिश लोगों से मित्रता के कारण वे अंग्रेजों को बाल्टिक सागर से निकालने में भी सफल हुए।

जॉन डे विट का उत्कर्ष

चूंकि किसी निश्चित निर्णय पर पहुंचने की सम्भावना बहुत कम थी, इसलिये दोनों दल जल्दी ही युद्ध से उदासीन हो गये। हॉलैंड में डार्ड्रेट के बर्गोमास्टर के योग्य व युवक पुत्र जॉन डे विट ने प्रबल शान्ति दल का नेतृत्व किया। जॉन डे विट हॉलैंड का पेंशनरी नियुक्त किया गया था और उसने लंदन में अपने गुप्त दूत भेज कर गणराज्य को संधि वार्ता के लिये वचन बद्ध करने का जिम्मा अपने ऊपर लिया। जून, 1653 में गैबर्ड के पास ट्रोम्प की पराजय, तथा कुछ समय पश्चात उसकी मृत्यु और डच समुद्र तट का दृढ़ घेरा, इन सब परिस्थितियों के कारण संयुक्त-प्रान्तों के लिये शान्ति स्थापित करना अत्यावश्यक हो गया और इस वार्ता के प्रबल प्रयत्नों को न्याय-संगत सिद्ध कर दिया। इस संधि वार्ता में पहले क्राम्वेल की यह आशा बाधक रही कि संयुक्त प्रान्त महान् प्रोटेस्टेन्ट मैत्री-संघ (great protestant-alliance) के सदस्य बन जायेंगे, जिसकी स्थापना करना क्राम्वेल की विदेशी नीति का मुख्य उद्देश्य था। इस मैत्री में स्विट्ज़रलैंड, स्वतन्त्र साम्राज्यीय शहर, जर्मन प्रोटेस्टेंट राजकुमार, डेन्मार्क, और स्वीडन को सम्मिलित करना था। यह वह इसलिये चाहता था कि यूरोप में आत्मा की स्वतन्त्रता को स्थिर रखा जाये और ऐसे सब देशों के विरूद्ध एक प्राचीर खड़ी कर दी जाये जो या तो अभी तक इंक्विजिशन को मानते थे या पेपेसी पर भरोसा रखते थे। किन्तु डच जिनके हित धर्म में न होकर समुद्री व्यापार में थे, अपने पुराने जोश को पार कर चुके थे तथा इन योजनाओं के आदर्शवादी तत्वों से उन्हें कोई सहानुभूति न थी, इसलिये क्रॉम्वेल ने इसके बदले में व्यावहारिक रूप में पूर्ण आत्मसमर्पण के लिये दबाव डाला। अन्त में संधि की पूर्व भूमिका में संयुक्त प्रान्त लगभग प्रत्येक प्रश्न पर रियायतें देने के लिये तैयार हो गये—चैनल में ब्रिटिश झंडे को सलामी देनी होगी, ब्रिटिश समुद्र में मछली पकड़ने की कीमत अदा करनी होगी, समुद्र में तलाशी लेने का अधिकार स्वीकार कर लिया गया, और डचों द्वारा अम्बोयना के हत्या-काण्ड का मुआवजा देने का वचन दिया गया। गणराज्य की यह पहली वास्तविक पराजय थी और इसी घटना से इसके पतन की कहानी जानी जा सकती है। इतना ही नहीं, विजयी होने के कारण क्रॉम्वैल ने और अधिक कठोर मांगे रखीं। उसने एक ऐसी धारा सम्मिलित की जिसका तात्पर्य संयुक्त प्रान्तों के **औरेंज-विरोधी गणतन्त्रवाद को पदस्थ करके मान्यता देना था।** डच एजेन्ट को कहा गया कि वह स्टेट्स जनरल से यह वचन प्राप्त करे कि औरेंज का राजकुमार अपने पूर्वजों द्वारा धारण की हुई उपाधियों का उपयोग न करे।

जॉन डेविट का जीवन वृत

जॉन डे विट ने संधि वार्ता में जो भाग लिया उसके कारण उसने प्रमुखता प्राप्त करली। डार्डेक्ट में 1625 में एक पुराने बर्गर-परिवार में उत्पन्न होकर उसने अपने पिता से, जो बर्गोमास्टर और राज्य परिषद् का सदस्य था, सार्वजनिक स्थान के लिये, जिनकी पूर्ति करना उसके भाग्य में लिखा था, विस्तारपूर्वक शिक्षा ग्रहण की[1]। लेडन विश्वविद्यालय में अध्ययन के साथ-साथ उसने फ्रांस और इंग्लैंड की यात्रा भी की और जब 1650 में उसके पिता की गिरफ्तारी के कारण उसका ध्यान कानून से हट कर राजनीति की ओर लग गया तो उसने यह प्रदर्शित कर दिया कि ओल्डेनबर्नवेल्ट की भूमिका उसे निभानी है। उसी समय से वह राजवंश के अतिक्रमणों के विरुद्ध संघ की पवित्रता को अक्षुण्ण रखने में तत्पर रहते हुए उत्कट गणतन्त्रवाद के सिद्धान्तों का अनुसरण करता रहा। अपने बुद्धि-वैभव और वाक्-शक्ति के कारण वह फरवरी, 1651 में ग्रांड पेन्शनरी के पद पर पहुंच गया। इसके बाद यह पूर्णतया उसी की शक्ति का फल था कि हॉलैंड अपनी प्रधानता रख सका और जबकि प्रान्तीय स्वतन्त्रता के नियत के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जाता था तो भी उसने शासन सम्भाव्य बना दिया। डेविट गणतन्त्र की अनौपचारिक अध्यक्षता को सर्वत्र बिना शंका के स्वीकार नहीं किया गया। जीलेंड में अंग्रेज दल प्रबल था और वहां अनेक विद्रोह हुए।

वेस्टमिन्स्टर की संधि

इस युवक राजनीतिज्ञ के विवेक का प्रथम प्रदर्शन वेस्टमिन्स्टर की संधि में क्राम्वेल द्वारा निषेध सम्बन्धी धारा पर बल देने पर हुआ। डेविट अच्छी तरह जानता था कि स्टेट्स-जनरल ऐसे प्रस्ताव को कभी स्वीकार नहीं करेगी। किन्तु उस धारा को स्वीकार करने के अतिरिक्त जिसे वह स्वयं स्वीकार करना नहीं चाहता था[2] तथा जिसका बहुत से डच राजा पालन नहीं करेंगे, सन्धि करने के अतिरिक्त उसके पास कोई विकल्प न था। इसलिए इंगलैंड को संतुष्ट करने के लिए और अपने देश में संदेह न होने देने के लिये उसने गुप्त तरीके अपनाये। वह अपने एजेन्ट वान बेवरनिंघ (van beverningh) द्वारा क्रॉम्वेल के निकट सम्पर्क में रहा और अप्रेल, 1654 में स्टेट्स जनरल को संधि स्वीकार करने के लिए

---

1 विस्तृत वर्णन के लिये देखिये, लेफेवरे पोंतेल्स कृत **जौन द वित**, खंड 1, अध्याय 2।

2 "स्वातन्त्र्य प्रेम के रूप इस तर्क को स्वीकार नहीं किया जा सकता कि केवल जन्म लेने के आधार पर ही राष्ट्रमण्डल का सर्वोच्च पद किसी को प्रदान किया जाय" (द विट) गेडेस, पूर्व उद्धृत, खड 1, 442।

जिसमें से निषेध सम्बन्धी धारा कुछ समय के लिये निकाल दी गई थी, मना लिया। केवल एक धारा जिसका कुछ विरोध हुआ 'टेम्परामेन्ट' धारा थी जिसमें यह विधान था कि जो कोई भी केप्टेन जनरल या स्टैंडधारी निर्वाचित हो वह इस संधि को मानने की शपथ ग्रहण करे, इसके बावजूद 23 अप्रैल को संधि की पुष्टि कर दी गई व उस पर हस्ताक्षर हो गये।

डे विट और निषेध-सम्बन्धी धारा

इस बीच में क्रॉम्वेल निषेध सम्बन्धी धारा पर अड़ा रहा, किन्तु उसने यह कह दिया कि यदि हालैण्ड की स्टेट्स ही इसे स्वीकार कर लें तो वह संतोष कर लेगा। हॉलेण्ड की स्टेट्स एकत्रित हुई और उन्हें इस निवेदन पर, कि वे अब इस गुप्तधारा की पुष्टि कर दें, बहुत आश्चर्य हुआ। किन्तु पेंशनरी की वक्तृत्व-शक्ति और लन्दन की दृढ़ मांग के कारण, अन्त में इस धारा को अल्प बहुमत से स्वीकार कर लिया गया। अल्पमत के विरोध के बावजूद विधेयक लन्दन भेज दिया गया जहां सरकारी रूप से संधि की घोषणा कर दी गई। जल्दी ही गुप्तधारा का सबको पता लग गया और क्षुब्ध स्टेट्स जनरल ने तमाम गुप्त लेख पत्रों की वापिसी का आदेश दिया। डे विट ने छल द्वारा, अपने आपको बीच में फंसाये बिना, पूरी की हुई संधि को डच एजेन्ट द्वारा क्रॉम्वेल के पास पहुंचा दिया और इस प्रकार जब स्टेट्स जनरल का आदेश प्राप्त हुआ तब तक बहुत देर हो चुकी थी। इस प्रकार स्टेट्स जनरल का लगभग सर्व सम्मत विरोध होते हुए और हालेण्ड की स्टेट्स के केवल सामान्य बहुमत से डे विट[1] ने एक विदेशी देश से ऐसी शर्तों पर संधि-वार्ता पूरी की जिसने औरेन्ज वंश को अधिकार रहित कर दिया। इस प्रकार उसके तरीके पूर्णतया वैध न थे और इसके लिए उसे कभी क्षमा नहीं किया जा सका।

डेविट का प्रशासन

बर्गर-गुट की सहायता और अपने विवाह से उपलब्ध पारिवारिक प्रभाव ने एम्सटर्डम में जान डे विट की स्थिति बड़ी सुदृढ़ कर दी थी। उसने अब देश के प्रशासन की ओर ध्यान दिया जिस पर नाम के अतिरिक्त वह सब प्रकार से शासन करता था। आर्थिक समस्या सबसे अधिक गम्भीर थी, क्योंकि पिछले युद्ध में बहुत बड़ा ऋण हो गया था। सार्वजनिक लेखा की ध्यान से जांच की गई ताकि अपव्यय को रोका जा सके और गोपनीयता की प्रतिष्ठा की जा सके तथा सरकारी ब्याज 5 से 4 प्रतिशत कर दिया गया। ब्रिटिश युद्ध से प्राप्त अनुभव के आधार पर जहाजी बेड़े का सुधार किया गया व एक उन्नत प्रकार का जहाज तैयार किया गया। नौसैनिक

---

1 विस्तृत विवरण के लिए देखिए, गेडेस, पूर्व उद्धृत, खंड 1, 379–407 तथा लेफेवेरे पोंतेलस, पूर्व उद्धृत, खंड 1, अध्याय 3।

कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण का पुनर्गठन करके कुशल नाविक प्राप्त करने के लिए कदम उठाये गये। यद्यपि वह विदेशी नीति में पेन्शरी युद्ध से बचने का इच्छुक था किन्तु यदि कभी आवश्यकता आजाय तो वह गणतन्त्र की मान-मर्यादा के प्रतिपादन के लिये दृढ़प्रतिज्ञ था। फ्रांसीसी समुद्र तट पर घेरा डालने की धमकी देकर उसने डच व्यापारिक जहाजों को भू-मध्यसागर में फ्रांसीसी आक्रमणों से मुक्त कराया और 1657 में डच शासन के विरुद्ध ब्राजील में पुर्तगालियों द्वारा विद्रोह भडकाने का बदला लेने के लिए पुर्तगाल के समुद्र-तट को घेर लिया। स्वीडन के चार्ल्स दशम की[1] आकांक्षाओं के कारण डेविट को बाल्टिक सागर में हस्तक्षेप करना पड़ा क्योंकि आवागमन के लिए उसका खुला रहना डच व्यापार के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। जब 1656 की ग्रीष्म में स्वीडन के राजा ने पोलेन्ड पर धावा किया तो स्टेट्स जनरल ने एक बेडा डेंजिग पर से घेरा उठाने के लिए भेजा। इस अभियान में उसे सफलता मिली। डेंजिग मुक्त हो गया और उसे तटस्थ बंदरगाह घोषित किया गया। किन्तु 1656 तक डेन्मार्क को अपना साउन्ड पर अधिकार स्वीडन को अर्पित करना पड़ा, और जब तक स्वीडन शक्तिशली था डचो का बाल्टिक व्यापार सुरक्षित न था। स्वीडन का कोपेनहेगन पर नौसेनिक घेरा डच सहायता से 1658 के उत्तर काल में उठाया गया, किन्तु उसमें दो एडमिरलो की मृत्यु हो गई और अगले वर्ष संघर्ष को फिर चालू करना पड़ा। ओलिवा की संधि (1660) द्वारा डचों को साउन्ड में से आने-जाने की पूर्ण स्वतन्त्रता मिल गई, और इस प्रकार डेविट ने गणतन्त्र के नौसैनिक साधनों के दृढ़ उपयोग से, बिना किसी से नई शत्रुता बढ़ाए, बाल्टिक में स्वतन्त्र व्यापार करने के दावे की रक्षा की।

इंगलेण्ड से पुनः विवाद

डेविट के शत्रु तो थे, किन्तु वे उत्तर में न होकर पश्चिम यूरोप में थे। 1660 में आरेन्ज वंश के भाग्य ने पलटा खाया जब चार्ल्स स्टुअर्ट को फिर ब्रिटिश सिंहासन पर आरुढ़ किया गया और अगले वर्ष मेजारिन की मृत्यु के बाद युवक लुई चौदहवें ने प्रथम मंत्री के बिना शासन करने की इच्छा घोषित की। अब यूरोप में राजतन्त्री पक्ष पुनः स्थापित हो गया इसलिए यह स्वाभाविक था कि ओरेन्ज वंश के मित्रों की आंखे युवक विलियम पर लगी हुई हों जो बचपन से ही उन गुणों

---

1 देखिए अध्याय 11। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि 1640 से जब से कि स्टेट्स जनरल और स्वीडिश रीजेन्सी के मध्य संधि पर हस्ताक्षर हुये तभी से बाल्टिक क्षेत्र के सम्बन्ध में स्वीडन और डच के आपसी संबंध बहुत मधुर रहे थे, स्वीडन बाल्टिक व्यापार को और डच स्वीडन को समुद्री दृष्टि से बहुत महत्व देते रहे थे। (ड्यूमेंट) कोर्प्स डिप्लमेटिक 6, 1, 193–5।

का प्रदर्शन कर रहा था जो उसके प्रौढ़ जीवन में प्रसिद्धि देने वाले थे। डेविट के प्रशासन की अब फिर युद्ध द्वारा परीक्षा होने वाली थी और वह भी पुनः इंगलैंड से। वेस्टामिस्टर की संधि के विषय में जिनके द्वारा डच युद्ध का अन्त हुआ था, संयुक्त प्रान्त कभी एक मत नहीं हुए। कुछ समकालिनों को ऐसा प्रतीत होता था कि इन दो प्रबल समुद्री और औपनिवेशिक शक्तियों के लिए संसार में पर्याप्त स्थान न था। कुछ वर्षों तक दोनों में झुंझलाहट और स्पर्धा रही। दावानल के लिए केवल एक चिनगारी की आवश्यकता थी।[1] 1664 के उत्तरकाल में एक ब्रिटिश बेड़े ने डचों के न्यू-नीदरलैंड्स के उपनिवेश पर अधिकार कर लिया और उसी समय पश्चिम अमरीका में डच उपनिवेशों को भी खतरा उत्पन्न हुआ। मार्च, 1665 में युद्ध-घोषणा कर दी गई।

द्वितीय ऐंग्लो-डच युद्ध (1665-1667)

विशेष रूप से डे रुइटर (de ruyter) की अनुपस्थिति के कारण भू-मध्यसागर में डचों के लिए विनाशकारी ढंग से युद्ध आरम्भ हुआ। 13 जून को डच सेना आब्डम (obdam) के अधीन, साउथवोल्ड की खाड़ी में पूरी तरह पराजित हो गई। इस लड़ाई में यार्क के ड्यूक, जेम्स ने अपने कौशल और साधनों से एक अच्छे मल्लाह होने का प्रमाण दिया। अपनी पूर्वी सीमा पर डचों को चार्ल्स के मित्र उपद्रवी मुन्स्टर के विशप की आक्रामक सेना का सामना करना पड़ा जो छोटे से सीमावर्ती प्रदेश पर झगड़े का बहाना करके ड्रेन्थे और ओवरीसल में घुस गया। फ्रांसीसी सहायता आने पर विशप के सैनिकों को वापिस हटाना पड़ा और 1666 में उसने स्टेट्स जनरल से संधि कर ली। इस समय डेविट की फ्रांस से मित्रता का यह कारण हो सकता था कि लुई अभी स्पेनिश नीदरलेन्ड पर अपना दावा रखने ही वाला था और इस समय डच मित्रता बनाये रखना कूटनीतिक चाल थी।

टेम्स में डच बेड़ा (जून 1667) : ब्रेडा की संधि

1666 के ग्रीष्म में नौ-सैनिक गतिविधियाँ फिर आरम्भ हो गईं। जून में नॉर्थ फोरलैंड के पास एक युद्ध हुआ यद्यपि यह अनिर्णित रहा तथापि सामान्यतः इसे डच विजय माना गया। आगामी मास में रूपर्ट और मोंक के मिले हुए बेड़ों ने डेरूपीटर की सेना को डच किनारे के पास पराजित किया, इस विजय के बाद डच व्यापारिक जहाजों पर धावे बोले गये और जल्दी ही डेविट संधि वार्ता आरम्भ करने के लिये उत्सुक हो गया। जब यह संधि वार्ता धीरे-धीरे चल रही थी तो पेंशनरी ने इस बात से प्रेरित होकर, कि पार्लियामेन्ट ने ब्रिटिश सामुद्रिक श्रेष्ठता

1 लेफेवरे पोतेलस पूर्व उद्धृत, 1, 319 एफ. एफ.।

बनाये रखने के लिए धन की स्वीकृति देने से इन्कार कर दिया है, नाटकीय ढंग से चोट करने का फैसला किया। 80 जहाजों का एक बेड़ा लेकर डे रूपीटर टेम्स नदी में घुस गया और 19 जून, 1667 को शीरनेस (sheerness) पर अधिकार कर लिया। कुछ दिनों पश्चात मडवे से आगे बढ कर उसने बहुत से जहाज पकड़ लिये। यह प्रदर्शन सैनिक दबाव की अपेक्षा नैतिक प्रभाव डालने के लिये किया गया था और इसमें उसे सफलता भी मिली, क्योंकि तोपों की आवाज लंदन तक सुनी जाती थी, जहां कुछ काल के लिये अव्यवस्था और आतंक फैल गया। जब वे आगे कुछ हानि न पहुंचा सके तो डच जहाज, शत्रु को राष्ट्रीय अपमान से मुक्त होने के लिये छोड़ कर, वापिस चले गये। थोड़े दिनों पश्चात (26 जुलाई) संधि करली गई। डचों के पास न्यू-नीदरलैंडस के बदले सुरिनम (surinam) रहा जिस पर उन्होंने अधिकार किया था। नेविगेशन एक्ट में डच पक्ष में कुछ सुधार किये गये, किन्तु ब्रिटिश झंडे को सलामी देने के सम्बन्ध में कोई रियायत नहीं दी गई।[1] 1667 की ब्रेडा-संधि जॉन डे विट के जीवन की सर्वाधिक सफल उपलब्धि थी।

फ्रांस की धमकी

अभी संधि पर हस्ताक्षर भी नहीं हो पाये थे कि दूसरी ओर से इससे भी अधिक गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया। लुई चौदहवें ने 1667 के ग्रीष्मारम्भ में डेवोल्यूशन (devolution) का युद्ध आरम्भ कर दिया। फ्रांस द्वारा स्पेनिश निचले प्रदेशों पर आक्रमण से डचों ने यह अनुभव किया कि उनकी स्वतंत्रता को, स्पेन या इंगलैंड से भी अधिक प्रबल सैनिक शक्ति से खतरा है। नीदरलैंड्स समुद्र तटीय देश होने के कारण (उसके पास केवल थोड़ी सी भाड़ैत सैना थी जिस पर किसी एक व्यक्ति का नियंत्रण न था), किसी भी बड़ी महाद्वीपीय शक्ति की जो उसकी सीमा पर स्थित हो, दया पर आश्रित था। अतः डे विट के लिये कुछ देशों को अपना मित्र बनाना नितान्त आवश्यक था। चार्लस द्वितीय को अपनी ओर मिलाने की सम्भावना न थी, किन्तु दूसरी ओर ब्रिटिश राष्ट्र फ्रांसीसी आक्रमण के विरुद्ध था। पिछले दिनों डेरूपीटर द्वारा किया गया अपमान भी उसकी इस भावना पर विजय नही पा सका था कि दो प्रोटेस्टेन्ट देशों को कैथोलिक और युद्ध प्रिय फ्रांस के विरुद्ध मिल जाना चाहिये। सर विलियम टेम्पल को हेग में राजदूत बनाकर भेजा गया और जनवरी, 1668 के अन्त में, युद्ध बन्द होने के केवल 5 मास पश्चात ब्रिटिश प्रतिनिधि और स्टेट्स-जनरल मे प्रतिरक्षात्मक संधि पर हस्ताक्षर हो गये। कुछ समय बाद स्वीडन भी मिल गया और इस प्रकार 1688 में त्रिदलीय

---

1 देखिए टी. डब्लू. फुलटन कृत दि सोवरन्टी आव दि सी, 466 एफ. एफ.।

सन्धि (triple alliance) की स्थापना हो गई। इससे पूर्व लुई ने झुकने का बहाना किया।[1] और कुछ समय के लिये ऐसा लगा कि डेविट ने एक बार फिर डच स्वतन्त्रता पर से विदेशी खतरे को दूर कर दिया है।

डेविट की पदावनति संकटमय

यद्यपि पेंशनरी (pensionary) प्रकट रूप में अपनी शक्ति के शिखर पर था परन्तु जो कुछ दिखाई देता था वह भ्रमपूर्ण था और उसकी स्थिति धीरे-धीरे गिरती जा रही थी। बहुत से प्रजातंत्रीय आदर्शवादियों की तरह वह प्रायः उद्धत और स्वेच्छाचारी हो जाता था और जब तक उसकी इच्छा पूरी होती रहती तब तक वह इस बात की परवाह नहीं करता था कि उसने किसी को व्यक्तिगत ठेस पहुंचाई है, उसकी व्यक्तिगत तानाशाही तभी तक सम्भव थी जब तक वह सफलता द्वारा सिद्ध होती थी। अवस्था बढ़ने और अपने अधिकारों की पूर्ति, के साथ उसके व्यक्तिगत लक्षण अच्छी तरह प्रकट होने लगे। कभी-कभी वह अपने सम्बन्धियों को[2] ऊंचे पद देकर अपने मित्रों को भी नाराज कर लेता था। इसके अतिरिक्त जब आरेंज के राजकुमार ने अपनी लड़कपन की अवस्था पार की तो आरेंज दल का आत्मविश्वास बढ़ गया। यह विश्वास किया जाने लगा कि राजकुमार जल्दी ही अब अपनी न्यायसंगत पैत्रिकता का पेंशनरी पर दावा करेगा। हालैंड की स्टेट्स ने 1667 में स्टेडधारी (stadtholder) का पद समाप्त कर अपने मन की आशंकाओं को प्रकट भी कर दिया। यूट्रेक्ट, जल्डरलैंड और आवरीसल ने भी उनका अनुसरण किया, किन्तु ग्रोनिजन, फ्रीजलैंड और जीलैंड में उत्कृष्ट आरेंज भावना थी। कुछ भी हो जब यह स्पष्ट हो गया कि आरेंज का राजकुमार अब वयस्क होने वाला था और उसके साथ बड़ा जनमत था तो कागजी सधियों का कुछ महत्व न था। डे विट का शासन वास्तव मे उसी समय तक था जब तक राजा न था, अब उसने यह देख लिया होगा कि कुछ वर्ष पश्चात उसे यह अधिकार छोड़ना पड़ेगा।

संयुक्त प्रान्तों की एकाकिता

इस बीच लुई नीदरलैंड्स को कूटनीतिक क्षेत्र में एकाकी करने में व्यस्त था। डोवर की गुप्त संधि (दिसम्बर 1670) द्वारा चार्ल्स द्वितीय को जल्दी से खरीद लिया गया और त्रिदलीय सधि के शेष एक सदस्य-स्वीडन को डचों का साथ छोड़ने के लिये मना लिया गया। लुई द्वारा आक्रमण करने की योजना संबधी अनेक चेतावनियां मिली, किन्तु चूंकि डावर की सन्धि अभी तक गुप्त रखी गई थी इसलिये डेविट का ब्रिटिश सहायता में अन्ध विश्वास था। स्टेट्स जनरल और प्रान्तीय स्टेट

1 इसके कारणों के लिये देखिये, अध्याय 6।

2 लेफेवरे पोंतेल्स, पूर्व उद्धृत, 2,235 एफ. एफ.।

सैनिक वचनबद्धता से व्यस्त होने की अपेक्षा व्यय घटाने की अधिक इच्छुक थी, इसलिये 1672 में जब आकमरण हुआ तो डच वास्तव में असहाय थे। चार्ल्स ने दूसरी अथवा प्रकट डोवर की सन्धि (1671) के अनुसार 28 मार्च, 1672 को युद्ध घोषणा कर दी। फ्रांस के दूसरे मित्र मुन्स्टर का बिशप जो 1667 के झगड़े का बदला लेने के लिये उत्सुक था, और कोलोन का एलेक्टर था, विटेल्सबैख तथा फ्रांसीसी हितों के पक्ष में था। तुरन्त ही अभागे नीदरलैड्स पर सेनाओं का सामूहिक आक्रमण हुआ और लुई स्वयं १००००० से अधिक सेना साथ लेकर बढ़ आया।

विलियम तृतीय का केप्टेन जनरल बनना

परिस्थिति बड़ी निराशाजनक थी, क्योंकि जॉन डे विट के साधन भी परिस्थितियों का सामना करने के लिए अपर्याप्त थे। इस अपूर्व खतरे के सामने तमाम पृथककरण की भावनायें और कुछ ही वर्ष पूर्व हुई कागजी सन्धियां परे फैंक दी गई और ऑरेंज का बाइस वर्षीय कुमार स्टेट्स जनरल द्वारा एक वर्ष के लिये केप्टेन जनरल नियुक्त किया गया। विलियम तृतीय इतिहास में ऐसे अवसर पर प्रकट हुआ जब उसका देश फ्रांसीसी आक्रमण के भय से त्रस्त था।

विलियम तृतीय का चरित्र

विलियम तृतीय में बहुत से ऐसे विशेष गुण थे जिनके कारण उसका वंश इतना प्रसिद्ध हुआ। सन्यासी, दुरभिमानी तथा दुर्बोध होने के साथ ही उसमें दृढ़-निश्चय, स्फूर्ति युक्त और दुर्जय आत्मा थी जिन्होंने उसके निर्बल शरीर को, जो उन्हें अन्दर रखे थे, थका दिया। दरिद्रता में पलने के कारण वह पराजय में भी स्थिर रहने वाला था। अपने समकालीनों की अपेक्षा सम्भवतः वह किसी आदर्श के निमित्त अधिक धैर्य और निर्दयता से लग सकता था। देखने में वह दोष-रहित प्रतीत होता था परन्तु उसके चिर आत्म–संयम के भीतर कामुकता भी अन्तर्निहित थी। दल द्वारा नहीं बरन् एक महान् विचार द्वारा प्रेरित होकर विलियम अपने देश की गणतंत्रीय परम्पराओं को कुचलने में सफल हुआ। उसके पुरखों ने अपनी स्थिति को अस्त्रों के बल पर बनाया था, उसके परिवार की बहुत सी उपलब्धियां, अविच्छेद्य रूप से शिशु राज्य की आकांक्षाओं में विद्यमान सभी देश भक्ति के तत्वों से जुड़ी हुई थीं। यूरोप में हर जगह संवैधानिक सिद्धान्त निरकुशतावादी नरेशों की चोटों के सम्मुख नतमस्तक हो रहे थे और यदि संयुक्त प्रान्तों को सर्वनाश से बचना था तो उन्हें राजवंश की प्रभुता बिना तर्क–वितर्क के स्वीकार करनी थी, क्योंकि उसने पहले ही दिखा दिया था कि राष्ट्र के भाग्य का निर्माण करने में वह कितना योग्य था। विलियम सम्भवतः यही तर्क उपस्थित करता। किन्तु ये महत्वाकांक्षायें बिना एक बलि लिये और बिना संघर्ष के पूरी नहीं हो सकती थीं।

1672 का आक्रमण और जॉन तथा कौर्नलियस डे विट का वध

लुई के नीदरलैंड्स के आक्रमण में एक प्रबल नाटकीय तत्व था। मई 1672 में दोनों सेनाएं, एक राजा और ट्यूरन के अधीन और दूसरी कोंडे के नेतृत्व में, मेसट्रिट में सेनाओं से जा मिली, राइन नदी को पार करने का निश्चय किया गया और यह वीरतापूर्ण कार्य टोल्हूइस (tolhuis) सीमा पर 12 जून को महान् प्रदर्शन के साथ सम्पन्न हुआ, जहां कोंडे और उसका भतीजा लॉग्वे डच प्रतिरक्षकों पर 'इन कीडों के लिये कोई स्थान नहीं' का नारा लगाते हुए टूट पड़े। विलियम को यीसल (yssel) का मोर्चा छोड़ कर यूट्रेक्ट लौटना पड़ा, जबकि कोलोन और मुन्स्टर के सैनिकों ने आवरीसल के प्रान्त को रौंद डाला। 20 जून को यूट्रेक्ट ने आत्म समर्पण कर दिया और एम्सटर्डम को खतरा हो गया। जब लुई गर्व से अधिकृत नगरों की लम्बी सूची में और नगर जोड़ता जा रहा था तो यीमुयिडन (ymuiden) में पानी बाहर निकालने के फाटक खोल दिये गये[1] और कुछ दिनों में एम्सटर्डम एक छोटा सा टापू बन गया। इससे डचों में पुनः साहस आ गया। विलियम और उसकी प्रजा ने राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के संगठन कार्य में सहयोग से काम लिया, किन्तु फिर भी स्थिति निराशाजनक लगती थी। डेविट को कत्ल करने के प्रयत्न किये गये। हॉलैंड में भी गणतन्त्रवादियों की प्रतिष्ठा पूरी तरह जाती रही और आरेंज दल हर जगह प्रगति पर था, कुछ प्रान्तों में स्टैड्धारी पद को पुनः अपनाया गया। जब फिर संधि वार्ता आरम्भ हुई तो इंगलैंड व फ्रांस के राजाओं की मागें इतनी अपमानजनक थीं कि यदि उन्हें स्वीकार कर लिया जाता तो डच स्वतन्त्रता का अन्त हो जाता। 24 जुलाई को कार्नलियस डेविट को बन्दी बनाया गया। कुछ दिन बाद जॉन ने पेंशनरी के पद से स्तीफा दे दिया। कार्नलियस पर आरेंज के राजकुमार के विरूद्ध षडयन्त्र करने का आरोप लगाकर उसे देश से निर्वासित कर दिया गया। एक दिन जब उसका भाई उससे मिलने आया तो भीड़ हेग की जेल में घुस गई, और दोनों भाइयों को बाहर घसीट कर गली में मार डाला।[2] डच भीड़ की प्रतिशोधपूर्ण भावना और निर्दयतापूर्ण पाशविकता से कठोरतम हृदय वाले समकालीनों को भी धक्का लगा। डूमा ने अपनी पुस्तक ला तुलिप न्वार (la tulipe noire) में इस साहसिक कथा के चारों ओर एक प्रभामण्डल बना दिया। इस व्यक्ति के जीवन वृत्त की समाप्ति के साथ ही यूरोपीय महाद्वीप में (17वीं शताब्दी में) प्रजातांत्रिक प्रयोगों की इतिश्री हो गई।

---

1 देखिये ब्लाक कृत, हिस्ट्री आव दि डच पीपुल, 4,380।

2 देखिये लेफेवरे पोंतेल्स, पूर्व उद्धृत, 2, 520 एफ एफ।

फ्रांसीसी आक्रमणकारियों की कठिनाइयां

इस वध में विलियम तृतीय का कोई हाथ न था,[1] किन्तु उसने उसमें भाग लेने वालों को पुरस्कृत किया। अब चूंकि वह स्वयं अधिपति बन गया था इसलिये उसने अपना समूचा ध्यान आक्रामक को बाहर निकालने में लगा दिया। वह गणराज्य का स्टेडधारी होने के साथ साथ केप्टेन और ऐडमिरल जनरल भी था। सबसे पहिले उसका ध्यान सेना और अवशिष्ट डच प्रदेशों की किलेबन्दी पर गया। बाढ़ ने फ्रांसीसियों के लिये बड़ी रुकावटें पैदा कर दी, दिसम्बर में उन्होंने बर्फ के ऊपर से आगे बढ़ने और हेग तथा अस्टडंम दोनों को घेरने का प्रयत्न किया, किन्तु बर्फ के अचानक पिघलने से यह असम्भव हो गया।

विलियम तृतीय के अभियान

1673 का धावा मेसट्रिच्ट के घेरे से आरम्भ हुआ क्योंकि लुई व्यक्तिगत रूप से इस युद्ध प्रणाली को दूसरों से उत्तम समझता था। नगर फ्रांसीसी राजा की इस प्रकार की आधुनिक ढंग की चालों को रोके रखता किन्तु वॉब्रेन के कौशल के आगे उसे पराजित होना पड़ा। इसी बीच विलियम को अप्रत्याशित रूप में सहायता मिल गई, क्योंकि अगस्त मे स्पेन की रीजेन्सी सरकार ने सम्राट से मिलकर सेना भेजने का वचन दिया और 30 अगस्त, 1673 को स्पेन और सम्राट में एक समझौता हो गया जिसके द्वारा डचों को सैनिक सहायता देने का वचन दिया गया। लॉरेन के मिल जाने से यह हेग की ग्रांड अलायेन्स (1674) बन गई। इस प्रकार इंगलैंड और फ्रांसीसी असाधारण मैत्री ने उससे भी अधिक असाधारण मैत्री को जन्म दिया और यूरोपियन कूटनीति एक ऐसे नाटक से, जिसमें वही स्थितियां लगभग उसी धीमी नियमितता से दुबारा प्रकट हो गई, तुरन्त परिवर्तित हो गई जिसके सम्बन्ध में कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकता था कि कल इनमे क्या परिवर्तन हो जाये। 7 सितम्बर, 1673 को विलियम ने नॉरडन विजय किया जहां फ्रांस की सबसे अग्रिम चौकी थी और मोंटे कुकुली (montecuculi) के अधीन साम्राज्ययी सेना से मिल कर उसने बोन पर अधिकार कर लिया (12 नवम्बर)। उस समय फ्रांसीसी जनरल सैनिक गतिविधियों की सर्वोच्च कमान लुई और लुवोयस के नियंत्रण मे रहने से असतुष्ट थे। 1673 के अन्तिम चरण मे मार्बल लक्सम्बर्ग को हॉलेन्ड से वापिस बुला लिया गया और सेना ऐसे प्रदेश में रह गई जो लुई के अनुसार अब भी फ्रांसीसी सीमा में होनें चाहिये थे। फ्रांसीसी अधिकृत प्रदेशों में कई घटनायें हुईं और विशेष

---

1 इस दुर्घटना में विलियम ने किस सीमा तक भाग अदा किया इसके विस्तृत विवरण के लिए देखिए वही, अध्याय 14।

रूप से हेग के निकट स्वेमरडेम (swammerdam) और बोडग्रेव (bodegrave) के गांवों में, डचों ने आक्रमणकारियों द्वारा किये गये दुर्व्यवहार की स्पष्ट स्मृतियां दीर्घ काल तक याद रखीं और इन घटनाओं का वर्णन करने वाला पेम्फलेट जिसमें स्पष्ट चित्र थे बहुत दूर-दूर तक विशेष रूप से जर्मनी में घुमाया गया। यही कारण है कि यह क्रूरता सम्बन्धी साहित्य के सबसे पहले प्रकाशनों में सम्मिलित किया जाता है।

नीदरलेन्ड के शत्रुओं से इंगलेन्ड को अलग करना (फरवरी, 1674)

धन की आवश्यकता ने चार्ल्स को इंगलेन्ड में प्रबल फ्रांस विरोधी दल से मित्रता करने पर बाध्य कर दिया और फरवरी, 1674 में उसने लुई से संधिवार्ता करने की प्रार्थना की। उसी मास की 19 तारीख को इंगलेण्ड और संयुक्त प्रान्तों में ब्रेडा की संधि के आधार पर संधि हो गई, इसमें एक धारा यह जोड़ी गई कि डचों को क्षतिपूर्ति के लिए बहुत मूल्य अदा करना पड़ा है। मुन्स्टर और कोलोन के लड़ाकू धर्माध्यक्षों को आसानी से तोड़ लिया गया क्योंकि फ्रांसीसी अब पराजित होते जा रहे थे। फ्रांस को पृथक् करके अब विलियम का काम केवल शत्रु को दूर रखना रह गया और एक बार फिर डच स्वतन्त्रता सुरक्षित हो गई। यद्यपि वह एक बार हेनाल्ट में सेनफ (seneff) के स्थान पर कोंडे द्वारा पराजित किया गया था (11 अगस्त 1676) तो भी ग्रीष्म में वह अपने स्थानों में डटा रहा, और अक्टूबर के अन्तिम दिनों में डचों ने मियूस (meuse) के किनारे स्थित ग्रेव (grave) का दुर्ग जीत लिया। फ्रांसीसी आक्रमण संयुक्त प्रदेशों के स्थान पर स्पेनिश नीदरलेण्ड्स, अल्सेस, फ्रेंचकोम्टे, और राइन सीमा की ओर मोड़ लिया गया। इस सैनिक लम्पटता से विलियम के लिए बिखरे हुए अधिकृत प्रदेशों को पूर्वावस्था में लाने का काम सम्भव हो गया।

निमेजन की संधियां (1678)

विलियम ने, निमेजन में सामान्य शान्ति की शर्तों पर विचार विमर्श होने से पूर्व, अपनी लक्ष्य सिद्धि प्रायः पूरी करली थी। उसका विश्वास था कि लुई 14वें की महत्वाकांक्षाओं को सैनिक क्षति से ही समाप्त किया जा सकता था, इसलिए समस्त युद्धोन्मोदित देशों में विलियम युद्ध जारी रखने के सबसे अधिक पक्ष में था। उसकी इच्छा न होते हुए भी स्टेट्स जनरल और फ्रांस में 10 अगस्त 1678 को संधि पर हस्ताक्षर हो गये। यह संधि भी अन्य संधियों के साथ रखी गई जो स्पेन और फ्रांस तथा फ्रांस और सम्राट के मध्य निमेजन की सामान्य संधि के अन्तर्गत थी। फ्रांस ने माएस्ट्रिख्ट और वह सारा डच प्रदेश जो उसके पास था वापिस कर दिया, इसके साथ ही डच व्यापार पर लगाई पाबन्दियों को तोड़ दिया गया। औरेन्ज के

राजकुमार द्वारा अधिकृत प्रदेक जो फ्रेंचे कोम्टे, शैरोलेज, और फ्लेंडर्स में स्थित थे वापिस कर दिये गये, किन्तु माएस्ट्रिख्ट में कैथोलिक धर्म की स्वतन्त्रता रखने पर बल दिया गया। जब इस संधि पर हस्ताक्षर किए जा रहे थे तो लक्जेम्बर्ग मोंस (mons) पर घेरा डाल रहा था और उधर निश्चित सैनिक सफलता प्राप्त करने की आशा से विलियम नगर की रक्षा के लिए चल पड़ा था। यद्यपि विलियम को संधि पर हस्ताक्षर होने की सूचना मिल गई थी फिर भी वह आक्रमण करता रहा 14 अगस्त, 1678 को मोंस के बाहरी भाग सेन्ट डेनिस में युद्ध की सबसे भयंकर लड़ाई लड़ी गई। लडाई निर्णायक नही हुई, किन्तु विलियम ने अपने इस मत को गुप्त नहीं रखा कि वह संधि द्वारा धोखे में आ गया। उसका यह कथन क्षति पूर्ति के लिए खेला जाने वाला कोई दाव-पेच न था, (यद्यपि लोग हमेशा ऐसा किया करते हैं) अपितु फ्रांस के प्रति अति घृणा और केवल युद्ध के लिए उसकी रूचि का परिचायक था।

विलियम तृतीय और आंग्ल-क्रांति

1678 से 1688 तक विलियम नाम के अतिरिक्त अन्य सब प्रकार से निरंकुश राजा था। वह अधिक महत्व वाले शहरों की कौसिलो के सदस्यों को मनोनीत करता था, वह मजिस्ट्रेटों की नियुक्ति करता था, और सेना में कर्नल के दर्जे तक सब अफसरों की नियुक्ति करता था। फेजल और तत्पश्चात् हेनसियस जैसे ग्रांड पेन्शनरियों की सहायता से वह ऐसा शासन करता था जिसे पहले से अधिक खुशी से स्वीकारा गया क्योकि यह भली प्रकार समझा जा रहा था कि लुई 14वें के काल में छोटे राज्यों की स्थिति कितनी सकटपूर्ण थी। किन्तु इतना होते हुए भी हॉलेण्ड में फ्रांस का अब भी बहुत प्रभाव था और डचों को अपने राजकुमार से तोड़ने के प्रयत्नों में कोई कमी नहीं आई थी। बहुत से अवसरों पर आमस्टडर्म की नगरपालिका ने स्वतन्त्रा की भावना प्रदर्शित की क्योंकि उन्हें 1650 का अपमान अब भी याद था। 1684 में जब नगर पर फ्रांसीसीयों के साथ पत्र व्यवहार करने का संदेह हुआ तो विलियम ने म्युनिसिपल ग्रन्थ रक्षा गृह की जांच करने का आदेश जारी किया, किन्तु जब 1688 में जेम्स को उसके देश से निकाल दिया गया और उसके जामाता[1] को रिक्त राजगद्दी पर बैठने के लिए आमन्त्रित किया गया तो ओरेन्ज के राजकुमार को समस्त देश का सर्वसम्मत समर्थन प्राप्त हुआ।

विलियम तृतीय के अधीन नीदरलेन्डस् और इंगलेन्ड (1689–1702)

तत्पश्चात् विलियम का जीवन वृत्त डच की अपेक्षा ब्रिटिश इतिहास से

---

1 विलियम ने ड्यूक आव यार्क की पुत्री मेरी स्टुअर्ट से 1677 में विवाह कर लिया था।

अधिक सम्बन्धित था । संयुक्त प्रदेशों का अपना कुछ पृथक रूप फ्रांस के विरुद्ध प्रबल मेल में आत्मसात हो गया । विलियम का संयुक्त प्रदेशों में आना जाना बहुत घट गया । उसकी अनुपस्थिति में हेनसियस ने जो फेजल के बाद 1688 में हॉलेन्ड का ग्रान्ड पेन्शनरी बना, योग्यता पूर्वक सरकार का संचालन किया । ओरेन्ज के प्रदेश पर विलियम के अधिकार सम्बन्धी विषय पर बातचीत करने के लिए 1681 में भेजे गये राजदूत की असफलता से हेनसियस का फ्रांस के प्रति कटु दृष्टिकोण हो गया, इसलिये विलियम अपनी इच्छा पूर्ति के लिए कुछ और बात सोच रहा था किन्तु पहले जोश के बाद अंगरेज और डचों का एक शासक के अधीन मिल जाना लोकप्रिय न रहा । राजतन्त्रीय इंगलैंड में विलियम संसदीय राजा था और उसके परमाधिकार स्पष्टतया विवेचित और सीमित थे, गणतन्त्री हॉलेन्ड में वह निरकुंश था, किन्तु वहां उसका शासन राजा को सजाने और सुशोभित करने वाले दरबार की उपस्थिति से मृदुल नहीं था । इसके अतिरिक्त दोनों देश लम्बे समय तक प्रति-स्पर्धी और प्रायः शत्रु भी रहे थे । क्रान्ति के समझौते में दोनों देश एक दूसरे के निकट सम्पर्क में तो आये किन्तु कुछ बातों में इसने डच व अंगरेज जनता के पुराने द्वेष को भी पुष्ट किया । वह डच जाति वालों पर विश्वास करता था । लम्बे राज्य की समाप्ति से बहुत पहिले विलियम यह समझ गया था कि वह अपने नये देश की जनता से सम्मान तो प्राप्त कर सकता था किन्तु उनका प्रेम प्राप्त करना मुशकिल होगा ।

डच 'घेरा' (रोक) (the dutch 'barrier')

रिजविक की संधि (20 सितम्बर, 1697) लम्बे संघर्ष में कुछ देर सुस्ताने मात्र के लिए थी, और सामान्यतया ऐसा सोचा जाता था कि स्पेन के राजा की मृत्यु एक विशाल यूरोपियन युद्ध का अवसर प्रदान करेगी । स्पेन के उत्तरा-धिकार युद्ध में डच नीति का एक मुख्य उद्देश्य यह था कि दक्षिणी व पूर्वी सीमान्तों पर एक प्रबल 'रोक' लगाई जाये ताकि स्पेनिश नीदरलेण्डस् की ओर से सब आशंका दूर हो जाय और 1672 वाले आक्रमण की पुनरावृत्ति असम्भव हो जाये । अक्टूबर, 1709 में ब्रिटिश सरकार और स्टेट्स जनरल में पहली 'रोक' संधि पर हस्ताक्षर हुए जिसके द्वारा डचों को अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए कुछ निर्दिष्ट सीमान्त नगरों में सेना रखने का अधिकार दिया गया और फ्लेन्डर्स और ब्रेबेन्ट में कुछ जगह दी गई । दूसरी 'रोक' संधि पर 1713 में हस्ताक्षर हुए और तीसरी संधि द्वारा जो नवम्बर, 1715 में सम्राट से की गई, डचों को फर्न्स, यायप्रस, नोक, टूर्नाय, मेनिन, नामूर, और वार्नेटन में सेना रखने का अधिकार मिल गया और इस अभिप्राय के लिये सैनिक व्यय का कुछ अंश सम्राट् की सर-कार ने देने का वचन दिया । इस प्रकार स्पेन के उत्तराधिकार युद्ध में संयुक्त प्रदेशों

ने अपना एक लक्ष्य प्राप्त कर लिया–किसी महान् यूरोपियन शक्ति से, जिसके भी अधिकार में स्पेनिश नीदरलेण्ड्स हों, सैनिक सुरक्षा और जब तक दुर्ग सीमान्तों की दृढ़ सुरक्षा करने वाले समझे जाते थे तब तक डच शान्तिपूर्वक रह सकते थे। रैस्टैड् (rastadt) की संधि द्वारा (सितम्बर, 1714) स्पेनिश नीदरलेण्ड के साथ ही नेपल्स और मिलानीज सम्राट् चार्ल्स छठे के अधिकार में चले गये, और इस प्रकार बेल्जियम में हैप्सबर्ग शासन का युग आरम्भ हुआ।

डचों की अवनति के कारण

विलियम तृतीय की मार्च, 1702 में बिना कोई उत्तराधिकारी छोड़े मृत्यु हो गई। उसके भाई युवक जॉन विलियम फ्रिसो (friso) को स्टेट्स जनरल ने औरेन्ज का राजकुमार मान लिया, किन्तु वह 1711 में परलोक सिधार गया। उसका एक मरणोपरान्त पुत्र था जो बाद में विलियम चतुर्थ हुआ। इस लम्बी अवधि में जब कि गणतन्त्र स्टेड्टधारी के बिना रहा पुराने राजनीतिक गुट फिर खड़े हो गये, इसके साथ, इंगलेण्ड की बढ़ती हुई शक्ति से और वित्तीय अनुमान व निजी भोगविलास के प्रसार से डच धीरे-धीरे 17वीं शताब्दी वाले उच्च स्थान से अवनत होने लगे। कुछ समय तक ओरेन्ज वंश ने डचों को योग्य शासक प्रदान किये, किन्तु तक वह श्रृंखला असफल हो गई तो देश में विभेदवादी प्रवृतियां फिर से दृढ़ हो गईं और डचों का राष्ट्रीय भाग्य फिर से खतरे में पड़ गया। इतिहास लेखक डचों की व्यापारिक अवनति का बहुधा कोई एक कारण बताते हैं जैसे इंगलिश नेविगेशन एक्ट, किन्तु वास्तविकता यह है कि राष्ट्रीय अवनति के सामान्यतया कई कारण होते हैं जो लम्बे समय तक बने रहते हैं। जब तक संसार मे ब्रिटिश साम्राज्य के लिए स्थान चाहिये था तब तक व्यापारिक और समुद्री शक्ति के क्षेत्र में डचों को अपने से अधिक शक्तिशाली स्पर्धी से मुकाबला करने में हानि उठानी ही पड़ती फिर वह स्पर्धी चाहे नेविगेशन ऐक्ट का प्रयोग करता या न करता।

अध्याय 11

बाल्टिक प्रभुत्व के लिये संघर्ष : स्वीडन, डेन्मार्क, और प्रशा

बाल्टिक राज्य

17वीं शताब्दी के पांच राज्यों—स्वीडन, डेन्मार्क, रूस, ब्रैंडेनबर्ग और पोलेंड का बाल्टिक सागर में विशेष रूप से आना जाना था। स्थल से घिरे हुए इस समुद्र पर प्रभुत्व रखने के लिये जो संघर्ष हुआ, इस अध्याय में उसी का वर्णन है। इसमें यह स्पष्ट किया जायेगा कि इस होड़ का स्वीडन, डेन्मार्क और प्रशा के आन्तरिक इतिहास पर किस प्रकार प्रभाव पड़ा। प्रभुत्व के लिये इस संघर्ष का परिणाम संक्षेप में इस प्रकार हो सकता है, ब्रैन्डनबर्ग (बाद में प्रशा) ने प्रशन-समुद्रतट पर पोलेंड का स्थान ले लिया, मध्य शताब्दी तक स्वीडन ने डेन्मार्क से बाल्टिक का अधिकार प्राप्त कर लिया जो धीरे-धीरे उससे छिन गया और रूस एवं प्रशा द्वारा आपस में विभाजित कर लिया गया। इस विषय में एकता का एक मात्र तत्व स्वीडन के महान् नरेशों के नाटकीय इतिहास में पाया जाता है।

स्वीडन में वासा

स्वीडन में राष्ट्रीयता का विचार डेन्मार्क के साथ लम्बे संघर्ष के समय विकसित हुआ और वासा के लूथरन वंश के अधीन वह एक बड़ी शक्ति बन गया। राजसिंहासन उस समय भी वंशानुगत और निर्वाचन-गत दोनों था। 17वीं शताब्दी की प्रगति के साथ स्वीडन में राज्य सिंहासन की प्राप्ति के लिये निर्वाचन-प्रणाली धीरे धीरे कम होती गई, किन्तु बिल्कुल समाप्त नहीं हुई। इसके चिन्ह डायट और सेनेट की शक्तियों की व्याख्या करने वाले समझौते की धाराओं में जिन पर राजा राज्यारोहण के समय हस्ताक्षर करता था, पाये जाते हैं। किन्तु स्वीडन में राजत्व का बहुत आदर था और यदि नृप स्वयं घोड़े पर चढ़ कर सेना का नेतृत्व करता था तो वैधानिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में किसी को विशेष चिन्ता न होती थी, इस-लिये डायट और सेनेट के निर्दिष्ट कार्यों की स्पष्ट व्याख्या कभी नहीं हुई थी। राजकीय शक्ति कुलपति में रही और 1682 में वह अबाधित हो गई। गस्टवस अडोल्फस प्रथम नरेश था जो स्वीडन के प्राकृतिक साधनों का विकास करने में तत्परता से लगा। उसने राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था में कुछ सुधार किया, डचों की सहायता से कुछ नये उद्योगों का प्राकृतिककरण किया गया, शीशा, कागज, चीनी और मैदा की फैक्टरियों का निर्माण किया गया, लोहे, ताँबे और गंधक का निर्यात किया गया तथा साइलेंट्ज (silentz) नामक एक डच व्यक्ति ने तांबा ढालने की

उत्तम विधियों का प्रयोग किया । 1629 में जहाज बनाने, समुद्रतटीय व्यापार करने और लड़ाकू जहाज तैयार करने के लिये जहाजी कम्पनी बनाई गई । तीन वर्ष पूर्व एक युसेलिंक्स[1] (usselinx) नामक डच कम्पनी को प्रोत्साहित करने वाले एक व्यक्ति ने अफ्रीका, एशिया और दक्षिण अमरीका से व्यापार करने के लिये, एक साउथ सी कम्पनी (south sea company) की नींव रखी। महान् चांसलर ऐक्सल औग्जेस्टीर्ना (axel oxenstierna) की चान्सलरी सरकार मे सबसे प्रबल संस्था बन गई और गस्टवस की मृत्यु के बाद आवश्यकता–काल मे भी यह चान्स-लरी स्वर्गीय राजा की उत्कृष्ट विदेशी नीति का योग्यता से अनुसरण करती रही ।

डेन्मार्क

डेन्मार्क के समक्ष भी इसी प्रकार की समस्यायें थीं। ओल्डनबर्ग वंश के निर्वाचित राजतंत्र के अधीन उसे साउंड (sound) पर अधिकार बनाये रखना था, परन्तु सैनिक असफलता के कारण वह द्वितीय श्रेणी का शक्ति राष्ट्र रह गया । इस समस्त काल म उसने स्वीडन क शत्रुओं को अपना स्वाभाविक मित्र समझा, जैसे ब्रेन्डेनबर्ग का एलेक्टर और पौलेंड का राजा । 1661 की क्रान्ति, जिससे डेनिश राज्य निरंकुश और वंशानुगत बन गया, सरकार को बाध्य होकर माननी पड़ी, क्योंकि राज्य के अन्दर से कुलीन वर्गों और बाहर से बहुत से प्रबल शत्रुओं के खतरे म बचने के लिय केवल मात्र यही एक विकल्प था। कोंजेलोव (kongelov) या राजकीय कानून द्वारा, जिसमें इस क्रान्ति की धारायें समाविष्ट थीं, यह घोषित किया गया था कि राजतत्र की उत्पत्ति स्टेट द्वारा अपने अधिकारो के समर्पण से हुई और राजा का कर्तव्य राज्य की एकता बनाये रखना, लूथरन कनफेशन की गारंटी देना और स्वयं कोंजेलोव का पालन करना था । यदि यह कठोर कदम न उठाया जाता तो डेन्मार्क की हालत भी पौलैंड जैसी ही होती। डेनिश राजा का नाम जो लगभग गस्टवस अडोल्फस का समकालीन था, क्रिश्चियन चतुर्थ था जिसने व्यापारिक कम्पनियों की स्थापना करके, अन्वेषणों को प्रोत्साहन देकर और शिक्षा की राष्ट्रीय योजना का संगठन करके देश के व्यापारिक साधनों का थोड़ा विकास किया। डेन्मार्क के पास सुप्रशिक्षित समुद्री बेड़ा था और एक छोटी सी, किन्तु कुशल सेना थी । इसकी राजनीतिक दुर्बलताओं का कारण मध्यम-वर्ग का अभाव, किसान वर्ग की निरन्तर अवनति और आधिपत्यगत प्रदेशों में पारस्परिक सहयोग का नितान्त अभाव था ।[2]

---

1 देखें हेलेंड्रोर्फ एवं शुष्क कृत हिस्ट्री आव स्वीडन ।

2 इसमें नॉरवे ((1814 तक), आॅइसलैंड (1874 तक), स्केनिया, ब्लीकिंग और हालैंड (1660 तक) सम्मिलित थे ।

तीस वर्षीय युद्ध में स्वीडन और डेन्मार्क : स्वीडन की महत्वाकांक्षायें

स्वीडन और डेनमार्क दोनों ने तीस वर्षीय युद्ध में भाग लिया, किन्तु परिणाम दोनों के लिये भिन्न निकले। डेन्मार्क को कुछ लाभ न हुआ और लुबेक की सन्धि के अनुसार (1609) उसे जर्मन प्रदेश पर अपने दावों को छोडने के लिए बाध्य होना पड़ा, जबकि ब्रोमसेब्रो की सन्धि (1645) द्वारा उसे स्वीडन को कुछ रियायतें देनी पड़ी जिनसे स्वीडन को साउन्ड पर अधिकार करने में सहायता मिली। क्रिश्चियन चतुर्थ के पश्चात (1596–1648) उसका पुत्र फ्रेडरिक तृतीय (1648–1670) गद्दी पर बैठा जिसे स्वीडन के विरुद्ध दो बार संघर्षरत होना पड़ा एक 1657–58 में जो रोसकिल्डे (roskilde) की सन्धि के साथ समाप्त हुआ और दूसरा 1758–1760 में जिसका ओलिवा की सन्धि के साथ अन्त हुआ। शताब्दी के उत्तर काल में डेन्मार्क अपना प्रदेश ही बचा सका। स्वीडन के लिये दूसरा परिणाम निकला। ओसेल और गोथलैंड टापुओं पर कब्जा होने से बाल्टिक के सैनिक महत्व के स्थानों पर उसे अधिकार मिल गया। फिनलैंड, रेबल, एस्थोनिया, करेलिया, इंग्रिया ओर लिवोनिया पहले से ही उसके अधिकार में थे। उसके हस्तक्षेप का तीसवर्षीय युद्ध की गतिविधि पर निश्चित प्रभाव पड़ा। वेस्टफेलिया की सन्धि के परिणामस्वरूप स्वीडन प्रमुख जर्मन शक्ति बन गया। किन्तु तो भी उसकी वास्तविक कठिनाइयां उस सन्धि से ही आरम्भ हुईं। वेस्टफेलिया-सन्धिवार्ता के एक मध्यस्थ के अनुसार[1] स्वीडन जितना युद्ध से प्राप्त कर सकता था उसने उससे दस गुणा अधिक लाभ सन्धि–वार्ता से उठाया। प्रकट रूप में स्वीडन द्वारा हस्तक्षेप करने का अभिप्राय जर्मनी में धार्मिक संतुलन को फिर से ठीक करना था परन्तु स्वीडिश जनता यह समझती थी कि उसे जो कुछ प्राप्त हुआ था वह उसके सैनिक कार्यों की तुलना में बहुत कम था। यह बात महत्वपूर्ण है, क्योंकि उत्तरी राष्ट्र अभी तक उसी मत से चिपके बैठे थे कि 'विजय ही केवल अधिकार की पुष्टी करती है,' जबकि पश्चिमी यूरोप में इस सिद्धान्त की आलोचना होने लगी थी, क्योंकि शक्ति–संतुलन के सिद्धान्त को अधिक महत्व दिया जाने लगा था। जर्मन प्रदेश अधिकृत करना खतरे से खाली न था। परिणामस्वरूप तीसवर्षीय युद्ध के बाद स्वीडन ने यूरोप में ऐसा स्थान प्राप्त कर लिया जिसे बनाये रखने में वह बिल्कुल असमर्थ था। उसे नव–विजित प्रदेशों पर अधिकार बनाये रखने के लिये सेना पर बहुत व्यय करना पड़ता था और उसकी आय बहुत निराशाजनक थी। स्टेटिन और स्ट्रालसंड जैसे अधिकृत बन्दरगाहों के गवर्नरों ने बन्दरगाहों से करों द्वारा इतना अधिक धन एकत्रित करने का प्रयत्न किया कि वहां

---

1 दि पेपेल ननसिओ चिगी, देखिये अध्याय 4।

व्यापार बन्द होने लगा। परन्तु स्वीडन ने समय रहते इससे कोई शिक्षा प्राप्त न की। सैनिक विजय के साथ आर्थिक आवश्यकता के कारण उसके शासकों ने बाल्टिक सागर को स्वीडिश झील बनाने की इच्छा की। 1648 के पश्चात इस महत्वाकांक्षा पूर्ति के लिये डेंजिग, ऐल्विग, पिलाय सहित केवल कोरलैंड और प्रशा, और मेमल के महत्वपूर्ण बन्दरगाहों की विजय की आवश्यकता थी, क्योंकि पश्चिमी पोमरेनिया स्वीडन को (वेस्टफेलिया की सन्धि द्वारा) पहले ही मिल चुका था। प्रशा निवासी लूथरन थे तथा अपने शासक, ब्रैंडेनवर्ग के काल्विनवादी एलेक्टर से जो अपनी डची पोलिश जागीर के रूप में अपने पास रखे हुए था, घृणा करते थे। इससे अधिक स्वाभाविक और क्या हो सकता था कि स्वीडन निर्बल पोलैंड और उपेक्षित ब्रैंडेनबर्ग से प्रशा को तोड़ कर अपनी ओर करले।[1]

ब्रैंडेनबर्ग

इस पूर्व गणना में केवल ब्रैन्डेनबर्ग के सम्बन्ध में अनुमान असत्य निकला। होहेनजोलर्न एक नगण्य स्थिति से आरम्भ करके एक ऐसी महान् जर्मन शक्ति का निर्माण करने में व्यस्त थे जो राईन से नीमन (niemen) तक फैली हुई हो। 1618 में अपने चचेरे भाई की मृत्यु पर एलैक्टर जॉन सिगिसमंड प्रशा की पोलिश जागीर का उत्तराधिकारी बना और उसके वंशज फ्रेडरिक विलियम, लेक्टर महान्, ने 1657 में इस प्रदेश की पूर्ण प्रभुसत्ता प्राप्त करली। एलेक्टर के प्रदेशों में, पश्चिम की ओर क्लीव सम्मिलित था जो ग्जेंटन (xanten) (1614) की सन्धि द्वारा प्राप्त हुआ था और मध्य में एल्ब (elbe) नदी के एक ओर से दूसरी ओर ओडर (oder) तक फैला हुआ ब्रेडन्वर्ग का विशाल मार्च (march) था। जॉन सिगिसमंड के बाद (1608 से 1619) जार्ज विलियम (1619–1640) को उसका उत्तराधिकार मिला जिसने अपनी परिस्थितियों के कारण तीसवर्षीय युद्ध में कोई महत्वपूर्ण भाग नहीं लिया। वह इतना निर्बल था कि वह अपनी तटस्थता का सम्मान भी नहीं करवा सका। काल्विनवाद और व्यक्तिगत ईर्ष्या के कारण वह सेक्सनी के एलेक्टर से मित्रता नहीं कर सकता था, उसके प्रदेश स्वीडनवालों, साम्राज्यवादियों और स्पेन-निवासियों सबने रौंदे और कभी कभी कभी तो उसे अपनी रक्षा के लिये इधर उधर भागना भी पड़ा। उसका उत्तराधिकारी फ्रेडरिक विलियम, महान एलेक्टर, (1640–1688) इन कठिनाइयों को भली प्रकार

---

1 स्वीडन के लिये प्रशा का महत्व तथा ब्रैंडेनबर्ग की शक्तिहीनता के संदर्भ में स्वीडन के विचारों के लिये देखिये ह्यूमट लिखित **लेस गुरेल द्यू नार्ड, 30 एफ. एफ.।**

समझता था जो आन्तरिक ओर वार्स दोनों दृष्टियों से राष्ट्र के लिए खतरनाक थीं। पश्चिम में स्पेनिश नीदरलैंड्स की ओर से आक्रमण किया जा सकता था, मध्य में महान् प्रादेशिक रईस उसके अधिकारों पर झगड़ा खड़ा कर रहे थे जबकि पूर्व की ओर से उसे उद्दण्ड प्रजा और दुराभिमानी पोलिश अधिपति द्वारा बार-बार अपमानित किया जा सकता था। इसलिये यह स्वाभाविक था कि उसका झुकाव फ्रांस की ओर होता और उसके साथ मैडेमोयसल द मान्त के विवाह का प्रस्ताव हुआ।[1] एक ओर जर्मनी को मित्र बनाने के उद्देश्य से फ्रांसीसी एजेन्ट द' वॉउ (d' avaux) को वेस्टफेलिया की कांग्रेस में एलेक्टर के हितों का ध्यान रखने का काम सौंपा गया जहां उसे इतने प्रदेश मिले जो उसकी सैनिक कार्यविधियों के अनुपात में बहुत अधिक थे। इसे न्यायसगत केवल यह कहकर कहा जा सकता है कि युद्ध में उसके राज्य के बहुत व्यक्ति मारे गये। इस प्रकार फ्रेडरिक विलियम ने कोलबर्ग के बन्दरगाह सहित पूर्वी पोमेरेनिया प्राप्त कर लिया, स्वीडन को पश्चिमी पोमरेनिया देने के प्रतिफल में उसे तीन धर्मनिरपेक्ष बिशप क्षेत्र मिल गये और मेजबर्ग की बिशपरिक भी उसे वापिस कर दी गई। लगभग बिना किसी का ध्यान आकर्षित किये और बिना विशेष प्रयास किये सन् 1648 के अंत तक होहनजोर्लेन जर्मनी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रादेशिक अंग बन गया।

एलेक्टर महान्

विलियम फ्रेडरिक अपने बिखरे प्रदेशों को एक संगठित सैनिक राज्य बनाने के काम में जुट गया। निष्कलंक नैतिकता और उत्कट पारायणता से पीड़ित होने के कारण वह युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिये भगवान से प्रार्थना किया करता था, उसने अपने वंश में यह परम्परा रखी कि ईश्वर के हस्तक्षेप से सैनिक सफलता प्राप्त होती थी।[2] उसकी पत्नी, औरेंज के फ्रेडरिक हेनरी की पुत्री, हेनरीता लुई आव औरेंज उसके लिये उत्साही और योग्य साथी सिद्ध हुई। उसके पति ने राज्य में जो सुधार किये उनमें कुछ उन शिक्षाओं को समाविष्ट करने की चेष्टा की जो उसने संयुक्त प्रदेशों में अपने आरम्भिक भ्रमण के दौरान प्राप्त की थीं। एक डच जहाजी शिल्पकार की सहायता से उसने एक छोटा सा समुद्री बेड़ा भी तैयार किया और उपनिवेश स्थापित करने के स्वप्न देखने लगा, किन्तु उसे नौ सैनिक और साम्राज्यवादी महत्वकांक्षाओं को त्यागना पड़ा। उसके सिक्कों पर 'प्रोदिओ ए पोपुलो' (pro deo et populo) खुदा हुआ था, उसके

---

1. इन्सट्रक्शंस डोनीज (प्रशा), 20।

2 वेडिंगटन, ल ग्रांड एलेक्टर फ्रेडरिक ग्यूलेमे द ब्रेडेनबर्ग, 1,46।

और उपद्रवी प्रान्तों में उसका प्रबुद्ध शासन 18वीं शताब्दी[1] की उदार स्वेच्छाचारिता की पूर्व भूमिका थी। उसने पहले प्रान्तीय सभाओं के अधिकारों को कम करना आरम्भ किया। उनके पास करों पर निषेधाधिकार (वीटो) का प्रयोग करने का नाम मात्रिक अधिकार छोड़ा और 1648 के बाद उसने मार्च को अनुशासनविहीन सैनिकों से मुक्त कर दिया। उसने केन्द्रीय राज्य-परिषद बनाई और विदेशी नीति के परामर्श के लिये उनमें से सभासद छांटकर चान्सरी संगठित की। उसने वित्त-मण्डल, युद्ध-आयोग और न्याय की सर्वोच्च कौंसिल की भी स्थापना की।[2] विशिष्टता यह रही कि युद्ध आयोग के सदस्य जल्दी ही वित्तीय प्रशासन का अतिक्रमण करने लगे, क्योंकि वह अपने उत्तराधिकारी फ्रेडरिक महान् की भांति इस बात के लिये चिन्तित रहता था कि कोष में सदैव पर्याप्त धन होना चाहिये जिससे कि वह कभी भी युद्ध छेड़ सके। फ्रेडरिक विलियम ने उद्योग और व्यापार को विशेष रूप से प्रोत्साहन दिया, इस अभिप्राय: से उसने विदेशी कारीगर और डच किसान काम में लगाये जबकि पोट्सडम की राजघोषणा (1686) द्वारा उसने ह्यूजनों शरणार्थियों को विशेष सुविधायें दीं जिनमें से 20000 उसकी जागीरों में बस गये। इसके अतिरिक्त विस्तृत क्षेत्र में शहतूत (mulberry) के पेड़ लगा कर उसने समृद्धिशाली रेशम का उद्योग देश में सम्भव बना दिया। यद्यपि वह स्वयं दृढ़ काल्विनवादी था, किन्तु उसने भिन्न मतानुयायियों को परेशान नहीं किया, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि दरिद्रियों की बिखरी हुई जनसंख्या की अपेक्षा (जिसके पास धार्मिक समानता के अतिरिक्त खुश होने के लिये कुछ नहीं) एक समृद्धिशाली जनसंख्या चाहे वह मिश्रित ही क्यों न हों, कर वसूल करने के लिए अधिक श्रेयस्कर है। इसलिये यहूदियों को बर्लिन मे प्रवेश करने दिया गया। रोमन केथोलिकों तक को प्रशा में सहन किया जाता था, जहां फ्रेडरिक विलियम को सबसे अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। विचार-स्वातन्त्र्य की अनुमति उसी सीमा तक थी जहां तक वह राज्य के हितों से मेल खाती हो। कठोरता का उपयोग अन्तिम उपाय था जैसा कि उसने प्रशा विद्रोही काल्कस्टीन (kalkstein) के वध का आदेश देकर किया था। यदि अपने समय की पक्षपातपूर्ण भावनाओं से ऊपर उठना महानता का प्रमाण है तो फ्रेडरिक विलियम महान् था।

---

1 देखिये इंगलिश हिस्टोरिकल रिव्यू 25 (1950) पृ० 175–202 में एफ. एल. कॉस्टर्न लिखित दि ग्रेट इलेक्टर एंड दि फाउन्डेशन आव दि होहेन-जोलेर्न डेसपोटिज्म।

2 वेडिंगटन, पूर्व उद्धृत, 1,79 एफ० एफ०।

उसके सुधार

स्थानीय संस्थाओं का पुनर्गठन पृथकता की भावना को समाप्त करने के अभिप्राय से किया गया। उसने प्रत्येक प्रान्त में स्थानीय सरकार की स्थापना की जिसका अध्यक्ष गवर्नर और चांसलर होता था। गवर्नर को एलक्टर की अनुपस्थिति में कार्यकारिणी के सब अधिकार सौंपे गये, और वह उन सब स्थानीय कर्मचारियों को जिनकी नियुक्ति प्रान्तीय स्टेट्स द्वारा की जाती थी, हटा देता था और उनकी जगह ऐसे अफसरों की नियुक्ति करता था जो केवल बर्लिन के प्रति उत्तरदायी हों। इन अधिकारियों को वस्तुओं में वेतन देने की पुरानी प्रथा के स्थान पर नियमित वेतन दिया जाने लगा और इस प्रकार कदाचार पर रोक लगाई गई। न्याय और वित्त सम्बन्धी स्थानीय न्यायाधिकरण नियुक्त किये गये। डाक–पद्धति का आरम्भ किया गया और धीरे धीरे कुशल सिविल सर्विस स्थापित की गई। मन्त्रियों के चुनाव में वह कुलीनवर्गों की अपेक्षा बूर्जुआ और पुराने अधिकारियों को अधिक अच्छा समझता था। यद्यपि उसका योग्य परामर्शदाता वाल्डेक (waldeck) उसकी सहायता करता था। तथापि प्रथम मन्त्री और सेनाध्यक्ष वह स्वय ही था। इन प्रशासनिक सुधारों का मुख्य अभिप्राय जर्मनी के लिये जो नवीनता थी धन इकट्ठा करना था–एक स्थायी सेना जो ब्रैण्डेनबर्ग में स्वीडिश भगोड़ों से संगठित की गई थी जनरल स्पार (general sparr) और डर्फलिगर (derfflinger) द्वारा पूर्णतया सुसज्जित एवं अनुशासित थी। एलेक्टर के विचार में माइल्स परपीच्युअस (miles perpetwus) और परिपूर्ण कोप सबसे प्रबल राष्ट्रीय जमानतें थीं, उसका धन और उसकी 27000 सेना उसके सर्वोत्तम कूटनीतिक सहायक थे। यह सब कुशाग्र और पुष्ट मस्तिष्क का प्रकटीकरण करता है। फ्रेडरिक विलियम को ऐसा व्यक्तित्व मिला था जिसमें सावधानी और धूर्तता के मिश्रित गुण थे और जिसमें नैतिकता का लगभग पूर्ण अभाव था। आलोचक उसे इस बात का अपराधी कहते हैं कि वह अपने मित्रों को संकट के समय पर ही याद करता था, और एक फ्रेंच प्रेक्षक[3] ने उसे 'लप्लू कीं रेनार्द द ल योरोप'

---

1 1651 तक ग्रेट एलेक्टर ने 17000 सैनिकों की एक सुदृढ़ सेना तैयार कर ली थी। (ह्यूमेंट, लेस ग्यूरेस द्यू नार्ड, 34)।

2 इंसट्रक्शन्स डोनीज में गीमॉनविले। वेनिस के राजदूत नैनी (nani) स्थिति को संक्षिप्त में निम्न प्रकार प्रस्तुत करते हैं: "एलेक्टर के पास अनेक राज्य, धन प्रशिक्षित सैनिक, महान महत्वाकांक्षाएं हैं और वह अपने उद्देश्य प्राप्ति में संलग्न है।" (फानेटस रेरम आस्ट्रिया केरम, द्वितीय श्रृंखला माला, 27,19)।

कहा। इन गुणों का उत्तरी युद्धों (northern wars) की उलझी हुई राजनीति मे अनेक बार उपयोग हुआ था।

ये तीन राज्य बाल्टिक पर प्रभुत्व के प्रश्न से स्पष्टतया सम्बन्धित थे जिसके कारण उत्तर के दो महायुद्ध (1655–1660 और 1700–1721) लड़े गये।

औक्सनस्टीर्ना (oxenstierna) का शासन (1632–1648)

1632 में (लुटजेन में) गस्टवस अडोल्फस की मृत्यु के पश्चात स्वीडन एजेन्सी द्वारा प्रशासित रहा और बारह वर्ष तक चांसलर औक्सनस्टीर्ना वस्तुतः शासक रहा।[1] उसमें गस्टवस अडोल्फस का जैसा आदर्शवाद न था, किन्तु चांसलर देशभक्त, दूरदर्शी और विशेष रूप से व्यावहारिक था। उसने अपनी सारी शक्ति जर्मनी में स्वीडन का प्रभाव जमाये रखने और देश के अत्याधिक बलिदानों के बदले क्षतिपूर्ति में पर्याप्त प्रदेश प्राप्त करने में लगाई। जब 1644 में गस्टवस की पुत्री वयस्क हो गई तो उसने चांसलर की शक्ति और प्रतिष्ठा से ईर्ष्या करके युद्ध को बन्द करने के लिये दबाव डाला। औक्सनस्टीर्ना का प्रभाव और प्रसिद्धि इस युद्ध के कारण ही हुई थी। वेस्टफेलिया की संधि के साथ ही स्वीडन एक यूरोपियन शक्ति बन गया और औक्सनस्टीर्ना का जीवनवृत्त समाप्त हो गया।

क्रिस्टीना आव स्वीडन (1648–1654)

क्रिस्टीना ने, प्रत्येक प्रकार की बौद्धिक क्रियाओं को संरक्षण देने और पुरुषोचित खेलों में निपुण होने के कारण अपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त करली, क्योंकि ये दोनों गुण एक ही व्यक्ति में बहुत कम पाये जाते हैं। उसके राज्यारोहण से स्वीडन की अवनति का श्रीगणेश होता है। उसमें रानी एलिजाबेथ की भांति शोखी, चंचलता और धृष्टता थी, किन्तु ब्रिटिश साम्राज्ञी के विपरीत उसमें उत्तरदायित्व की भावना का अभाव था, तथा देश-भक्ति और सामान्य बुद्धि न थी। विवाह करने से इन्कार करके उसने अपना उत्तराधिकार अपने चचेरे भाई चार्ल्स गस्टवस को देने का निश्चय किया जो बाद में चार्ल्स दशम कहलाया। कुछ वर्षों के शासन के पश्चात् उसने राजत्याग का इस आशा से दृढ़ निश्चय कर लिया कि उसे अपने कार्यों के लिए अन्य कहीं और अधिक विस्तृत क्षेत्र मिलेगा। जब तक यह याद न रखा जाये कि वह यह समझती थी कि उसकी इतनी अधिक प्रसंशा उसकी व्यक्तिगत प्राप्तियों के कारण होती थी,[2] तब तक यह बताना कठिन है कि क्रिस्टीना ने यह असाधारण निर्णय क्यों लिया। सम्भवतः उसने यह सोचा हो कि इतने बड़े

1 देखिये निसबेत वेन लिखित **स्केंडिनेविया**, 209 एफ० एफ०।

2 उसकी प्रशंसा उन सभी गुणों के कारण की जाती थी जो प्रत्येक स्त्री-पुरुष में पाये जाते हैं।

राज्य को स्वेच्छा से समर्पित करने से वह विश्व को केवल आश्चर्यचकित (startle) ही नहीं करेगी अपितु स्टाक-होम में प्रातः से सायं तक कोल्हू के बैल की तरह सरकारी कार्यों में व्यस्त रहने के बाद इस प्रकार मरणोपरान्त अपनी प्रसिद्धि की निश्चित नीव रख सकेगी। इस विचार से किया गया राजत्याग तभी सुसंगत हो सकता था यदि वह राज्य छोड़ने क बाद फिर से उसे पाने की चेष्टा न करती, किन्तु वह इतनी महान् न थी कि वह स्वेच्छा से गृहण किए हुए वैयक्तित्व जीवन के मार्ग से संतुष्ट रहे। 1660 और 1667 में वह अपना पहला गौरव प्राप्त करने की आशा से स्वीडन लौटी। उसकी अत्यन्त जल्दबाजी और फिजूल खर्ची के साथ-साथ उसका राजकीय भूमियों का लापरवाही से विक्रय करना तथा सबसे घृणित चापलूसों को उन्नत करना ऐसे कारण थे जिनसे 1651 में लोगों में विद्रोह की बातें होने लगीं, किन्तु इस आन्दोलन के नेताओ का शीघ्र ही वध कर दिया गया।[1] क्रिस्टीना ने 1654 में राजत्याग किया, इसके बाद वह रोमन कैथोलिक चर्च में प्रविष्ट हो गई और रोम चली गई। अपने असाधारण व्यवहार द्वारा संसार को 'चकाचौंध' करने की इच्छा बाद के एक वासा, (vasa) चार्ल्स 12वें में भी हुई थी, किन्तु उसके परिणाम स्वीडन क लिए अतिविनाशकारी हुए।

चार्ल्स दशम (1654–1660)

क्रिस्टीना का अपने भाई और उत्तराधिकारी चर्ल्स गुस्टवस के प्रति अरुचि का कारण समझना कठिन नहीं है। उसने उससे विवाह करने से इन्कार कर दिया किन्तु वह असन्तुष्ट न था, वह अपना जीवन चरित्र अपने ही अनुरूप बनाने की आशा रखता था। चार्ल्स स्वस्थ्य और शक्तिशाली था, किन्तु रणक्षेत्र में काम करने की विशेष योग्यता न थी और यु–उसका शौक–उसके लिए नेतृत्व नहीं, अपितु सिपाहीगीरी था। जून, 1654 में सिंहासनारूढ़ होने पर उसने उन विभिन्न उपायों पर पुनः विचार किया जिससे वह युद्ध करने की अपनी इच्छा को न्यायोचित ठहरा सके। वह बोहेमिया और साइलेशिया के त्रस्त प्रोटेस्टेन्टों की अभ्यर्थना पर युद्ध छोड़ सकता था, अपने परम्परागत शत्रु डेनमार्क पर आक्रमण कर सकता था, क्लीव-जूलिच प्रश्न पर अब भी कोई व्यक्ति लड़ाई छेड़ सकता था, किन्तु युद्ध केलिए उत्सुक होने के मूल कारण कुलीनो को लाभदायक नौकरियां देने की आवश्यकता और चार्ल्स के उत्कट युद्ध प्रेम को संतुष्ट करना था। यह दिखाने के लिए विशेष विचार करने की आवश्यकता नही है कि सबसे स्पष्ट साहसिक कार्य जिसमे स्वीडिश हथियारों का प्रयोग किया जा सकता था, डेन्मार्क से साउन्ड का अधिकार छीन कर बाल्टिक सागर पर पूर्ण रूप में स्वीडिश प्रभुत्व स्थापित करना था, और ब्रन्डेनबर्ग और पोलेन्ड की कीमत पर दक्षिण-पूर्वी किनारों पर स्वीडन के अधिकार को

1 निसबेत बेन स्केनडिनेविया, 226।

मजबूत बनाना था। पोलेंड पर बड़ी शाखा का शासन था जिससे छोटी और स्वीडिश शाखा 17वी शताब्दी में सविराम युद्ध करती रही। ब्रन्डेनबर्ग के एलेक्टर को, जिससे चार्ल्स अकारण डरता अथवा घृणा करता था, पोलिश प्रदेशों को देकर क्षतिपूर्ति की जा सकती थी।

स्वीडन और ब्रन्डनबर्ग

पोलिश राजा जॉन कैसिमिर (casimir) ने वासा की छोटी और प्रोटेस्टैन्ट शाखा के पास स्वीडन का राज्य बने रहने का विरोध किया था और यह विरोध पोलेन्ड पर स्वीडन के आक्रमण का आवश्यक बहाना मान लिया गया। इस आक्रमण में चार्ल्स को विरोध का सामना ही नहीं अपितु एक और आक्रामक रूस का सामना भी करना पड़ा जो यूक्रेन को समाप्त करने में लगा हुआ था। जार अलेक्सिस (tsar alexis) के कारलेन्ड और बाल्टिक बन्दरगाहों के सम्बन्ध में महत्वाकांक्षा पूर्ण उद्देश्य स्वीडन और रूस के सहयोग में केवल बाधक ही नही हुए बल्कि स्वीडन को अपने पीछे से आक्रमण होने की आशंका हो गई। स्वीडन के सम्भावित मित्रों में ब्रन्डेनबर्ग का एलेक्टर था जो दोनों ओर सलाह देता था। एलेक्टर महान् का केवल मित्र संयुक्त–प्रान्त था, और चूंकि डच बाल्टिक में स्वीडिश प्रभुत्व से भयभीत थे इसलिए स्टेट्स जनरल से मैत्री बनाये रखना और स्वीडन से भी मिल जाना, ये दोनों बातें कठिन थीं। इसके अतिरिक्त उसे अपने अधिपति जॉन अलेक्सिस के विरुद्ध आक्रमण के लिए कोई लालच न था, क्योंकि विस्तृत पोलेन्ड पर आक्रमण करना सरल था, किन्तु विजय करना कठिन था। एलेक्टर के पुराने और अधिक सावधान मित्रो ने स्वीडन की अपेक्षा पोलेन्ड से मित्रता रखने की सलाह दी। वाल्डेक का प्रस्ताव था कि जूलिख और बर्ग हथियाने के लिए न्यूबर्ग के हमले में फ्रांस से मिला जाए। ऐसी घबराने वाली स्थिति में एलेक्टर ने इस समस्या का समाधान स्वीडन और पोलेन्ड दोनों से संधि वार्ता करके किया और वह भी इस हताश आशा से कि दोनों सधियां गुप्त[2] रखी जायेंगी। किन्तु जब 1655 में बाल्टिक सागर में डच बेड़ा घुस गया तो स्वीडन ने ब्रन्डनबर्ग से सुसगत नीति की मांग की। अगले वर्ष जनवरी में फ्रेडरिक विलियम को स्वीडिश सेनाओं ने कोनिग्सबर्ग (konigsberg) में घेर लिया और कोनिग्सबर्ग की संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया जिससे प्रशा का शासक स्वीडन के अधिकृत हो गया। पोलेन्ड और स्टेट्सजनरल ने एलेक्टर के इस

1 ह्यूमेंट, लेस गुरेस द्यूनार्ड, 37।

2 इस समय की सधि अत्याधिक जटिलताओं से भरी हुई थी। देखिए ह्यूमेंट, पूर्व उद्धृत, अध्याय 3।

व्यवहार को विश्वासघात माना। :मेरिन्बर्ग की संधि मई 1656 द्वारा ब्रेन्डनबर्ग और स्वीडन ने पोलेन्ड का गुप्त बटवारा करना स्वीकार कर लिया।[1]

पोलैंड पर स्वीडन का आक्रमण (1655–57)

जब सन्धि वार्ता चल रही थी तो स्वीडिश राजा पोलैंड को विजय करने में व्यस्त था। उसने जुलाई 1655 में पोलिश लिवोनिया (polish livonia) में सेनाएं उतार कर लड़ाई आरम्भ की थी और कुछ सप्ताहों में ही वह वारसा में जम गया। लेम्बर्ग को कोसेक्स (cossacks) ने घेर लिया और युद्ध में रूचि न रखने वाले जॉन केसिमिर ने भाग कर अपना बचाव किया। शरद ऋतु में स्वीडन ने क्रॅको (cracow) पर अधिकार कर लिया और जल्दी ही समूचा राज्य स्वीडनों कोसेकों, तातारियों और रूसियों की दया पर आश्रित हो गया। चार्ल्स ने पोलिशों की भावनाओं को समझने का कोई प्रयास नहीं किया और वर्ष के अन्त तक पोल लोग आक्रामकों को निकाल बाहर करने के लिये अपने सगठन बनाने लगे। 1656 की बसन्त में जॉन केमिमिर निर्वासित अवधि समाप्त कर वापिस लौटा और राष्ट्र की प्रतिरक्षा का बोझ स्टीफन जारनिक (stephen czarniecki) ने अपने ऊपर ले लिया जिसके सैनिकों ने स्वीडिश सैनिकों को इतना परेशान किया कि चार्ल्स ने जल्दी ही यह अनुभव कर लिया कि उसकी स्थिति बहुत तेजी से बिगडती जा रही है। जून में वारसा अपने पहले राजा के पक्ष में हो गया और स्वीडिश का डेन्जिग का घेरा डच बेड़े के आगमन से टूट गया। इसी कारण चार्ल्स को तुरन्त एक मित्र की आवश्यकता अनुभव हुई और इसलिये मेरिनबर्ग[2] की संधि द्वारा, जिस पर मई 1656 में हस्ताक्षर हुए, उसने एलेक्टर की सैनिक सहायता प्राप्त की। उनकी संयुक्त सेनाओं ने दूसरी बार (20 जुलाई) वारसा पर फिर अधिकार कर लिया। किन्तु इस विजय से स्थिति में कोई सुधार नही हुआ क्योंकि समूचा पौलेंड अब आक्रामकों के विरुद्ध खड़ा हो गया था। पहले पोलिश कुलीनवर्ग यह सोचते हुए कि युद्ध उनके देश के विरुद्ध न होकर उनके राजा के विरुद्ध था, उदासीन रहा परन्तु उनका यह भ्रम तब दूर हुआ जब आक्रामक का क्रूर और अयुक्त व्यवहार स्पष्ट हो गया। उसके सैनिकों द्वारा धार्मिक स्थानों को क्रमपूर्वक अपवित्र करने से पोलिश इतिहास में एक अपूर्व बात हुई-शत्रु का संयुक्त और राष्ट्रीय स्तर पर विरोध। वारसा पर दूसरी बार अधिकार करने पर भी चार्ल्स को प्रतिरक्षात्मक विधि अपनानी पड़ी जबकि उसकी सेना बीमारी और भगोड़ों के कारण क्रमशः कम होती गई।

---

1 जनवरी 1656 में आक्सनस्टिरिना (लघु) ने पौलैंड के विभाजन के लिये एक वृहत् योजना तैयार की (ड्यूमेंट 110)।

2 वही, 120।

ब्रेन्डेनबर्ग और स्वीडन के झगड़े : वेहलौ की संधि (treaty of wehlav) (**सितम्बर,** 1657)

यदि स्वीडन का राजा पौलेंड में दास प्रथा (serfdom) को हटा देता तो सम्भव था कि किसानवर्ग उसके साथ मिल जाता, किन्तु घटनायें इतनी तेजी से बदलती गई कि 1657 के ग्रीष्मकाल तक उसकी सकटपूर्ण स्थिति को पुष्ट करने हेतु प्रभावपूर्ण कदम उठाने के लिये बहुत देर हो गई। ऑस्ट्रिया की सहायता से जॉन केसिमिर को पुनः सिंहासनारूढ़ किया गया और स्वीडन को बाल्टिक में खदेड़ दिया गया। स्वीडन व ब्रेन्डेनबर्ग, दोनों मित्र एक दूसरे पर दोषारोपण करते रहे, किन्तु चार्ल्स के लिये एलेक्टर की सहायता की पहले से भी अब अधिक आवश्यकता थी, उन्होंने लेबिया की सन्धि (नवम्बर 1656) द्वारा अपने संविदा में और सुधार कर लिये। एलेक्टर ने क्षतिपूर्ति की और इसके बदले में चार्ल्स ने प्रशा के विरुद्ध सब प्रदेशों के दावे छोड़ दिये (जिन्हें स्वीडन विजय नहीं कर सका था)। शर्त केवल यह थी कि यदि एलेक्टर वंश में पुरुष न होने के परिणामस्वरूप वंश की समाप्ति होगी तो वह डची पुनः स्वीडन में मिल जायेगी। एलेक्टर का प्रशा पर अपना अधिकार दृढ करने के लिये एलेक्टर को अब केवल पोलेंड से निबटना शेष रहा। लेबिया की संधि पर हस्ताक्षर होने के कुछ ही दिन बाद उसने जॉन केसिमिर की विनय करना आरम्भ किया। इस पर साहसी आस्ट्रियन एजेन्ट लिसोला, पोलैंड और ब्रेन्डेनबर्ग के मध्य एक संविदा-पत्र तैयार किया गया। यह वेहलौ की संधि (26 सितम्बर, 1657) द्वारा पूर्ण हुआ जिसके अनुसार पोलैंड के राजा ने सैनिक सहायता देने के फलस्वरूप एलेक्टर को प्रशा की प्रभुसत्ता प्रदान की। इस प्रकार अपने तीनों पड़ौसियों की लड़ाई में लाभ केवल फ्रेडरिक विलियम ने उठाया। उसने अपनी सेना को किसी लम्बी या कठिन लड़ाई के खतरे में डाले बिना सबसे महत्वपूर्ण विजय प्राप्त कर ली। इस विषय में वह अपने आपको बधाई दे सकता था, क्योंकि वह जानता था कि उसकी नवनिर्मित सेना का अनुशासन बुरा था।

चार्ल्स का डेन्मार्क पर आक्रमण (1657-58) : **रोसकिल्डे की सन्धि (मार्च,** 1658)

इस पोलिश प्रयास की असफलता के पश्चात् चार्ल्स दशम ने अपनी दृष्टि डेन्मार्क की ओर फेरी। 1654 से युद्धोन्मुख राजा (फ्रेडरिक तृतीय) और डेन्मार्क का कुलीनवर्ग नये स्वीडिश राजा के साथ शक्ति-परीक्षण करने के लिये उत्सुक थे, 1657 में युद्ध करने का फैसला कर लिया गया, किन्तु घोषित नहीं किया गया। प्रशा-विजय में असफल होकर और पौलैंड में अपनी सब आशायें मिट्टी में मिलने पर चार्ल्स दशम ने पोमेरेनिया में से होकर होल्स्टीन पर चढ़ाई कर दी और इस तरह डेनिश सेनाओं को आतंक से भयभीत करके इधर-उधर भगा दिया। किन्तु

अब डेनिश राजा पौलैंड से मिल गया जो आस्ट्रिया की सहायता से फिर सैनिक शक्ति बन गया था। इसके साथ वेहेलौ की सन्धि के अनुसार (सितम्बर 1657) ब्रन्डेनबर्ग के पौलैंड के साथ मिल जाने से चार्ल्स को डेन्मार्क की प्रस्तावित विजय के विचार को छोड़ना पड़ा। अचानक रेंगेल द्वारा फ्रेडरिक्सोड के डेनिश दुर्ग पर अधिकार कर लेने से (अक्टूबर, 1657) स्थिति में परिवर्तन हो गया।[1] दिसम्बर में बहुत पाला गिरना आरम्भ होने से चार्ल्स अपने सैनिकों को फनन (funen) के पार भेजने में सफल हो गया। छोटी और बड़ी बेल्टों (little and great belt) को 1658 की फरवरी में पार करके (बर्फ के कारण उसके कुछ सिपाही नष्ट हो गये) उसने इतनी जल्दी अपने परम्परागत शत्रु पर धावा पूरा कर दिया जितनी जल्दी उसने दूसरे पर किया था। किन्तु फ्रांसीसी, इंगलिश और डच कूटनीति इस झगड़े को समाप्त करने के लिये बीच में पड़ गई जिसकी प्रतिक्रिया पश्चिमी यूरोप की बहुत कोमलता से टिकी हुई तुल्य भारता पर हो सकती थी। रोसकिल्डे की सन्धि द्वारा (मार्च, 1658) स्केनियां, हालैंड और ब्लेकिंग सहित बोर्नहोम के टापू के बदले में चार्ल्स ने डेन्मार्क खाली कर दिया, इन पर अधिकार होने से स्वीडन को साउन्ड (sound) पर अधिकार मिल गया।

चार्ल्स का डेनमार्क पर दूसरा आक्रमण (1658–1659)

किन्तु चार्ल्स को इससे संतोष न हुआ, अपनी नवीकृत मांगों के फैसले मे देरी से अधीर होकर जून 1658 में उसने डेन्मार्क पर दूसरी बार आक्रमण करने का निश्चय किया। बिना युद्ध-घोषणा किये उसने अपनी सेना डेनिश प्रदेश में उतार दी और अगस्त, 1658 में कोपनहेगेन[2] का घेरा आरम्भ हो गया। फ्रेडरिक तृतीय ने प्रबल अवरोध संगठित किया, क्योंकि अब उसके देश का अस्तित्व खतरे में था। अक्तूबर में डच बेड़े के आगमन से स्थिति सम्भाली गई जिसकी सहायता से घिरे हुए शहर में सामान उतारा गया। चार्ल्स को घेरा उठाना पड़ा जिसका उसे बहुत धक्का लगा, इसके तत्काल बाद उसके नवविजित प्रदेश बोर्नहोम में विद्रोह हो गया, किन्तु पोलैंड, ब्रन्डेनबर्ग, आस्ट्रिया और डेन्मार्क के विरुद्ध होते हुए भी चार्ल्स ने (नवम्बर में) हठधर्मी से डेनिश राजधानी को लेने के प्रयत्न जारी रखे। इस बीच इंगलैंड, फ्रांस और निचले प्रदेश अपने हितों के कारण उत्तर के युद्धों का अन्त चाहते थे। इस कारण मई 1659 में उनके प्रतिनिधियों ने हेग में एक मत होकर प्रयत्न करना स्वीकार किया। स्वीडिश सेना को फूनन में हालैंड, पौलैंड, आस्ट्रिया और डेनमार्क की संयुक्त सेना के सम्मुख झुकना पड़ा। इस पर

---

1 निसबेतबेन, पूर्व उद्धृत, 244।

2 वही, 25 एफ. एफ.।

चार्ल्स ने स्टैट्स से और अधिक सैनिक जल्दी भेजने की मांग की, क्योंकि पराजय ने उसे श्रान्त नहीं वरन् हठी बना दिया था। यह स्थिति फरवरी 1660 में अड़तीस वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो जाने के बाद सम्भली। इन युद्धों में चार्ल्स ने स्केनियन प्रान्त लेकर स्वीडन को उसकी प्राकृतिक सीमाओं तक पहुंचा दिया था, किन्तु उसने अपने समकालीनों और उत्तराधिकारियों के सामने एक बहुत अप्रिय उदाहरण रखा क्योंकि वह युद्ध को 'युद्ध के लिये ही' प्यार करता था। वह यह नहीं जानता था कि रियायतें कब देनी चाहियें, वह अपने देश को अपने युद्धों मे काम आने वाली जनशक्ति के प्रदायक साधन से अधिक कुछ नहीं मानता था। उसकी मृत्यु से उत्तर यूरोप की शांति की एक मात्र बाधा दूर हो गई। चार्ल्स दशम चमत्कारविहीन चार्ल्स बारहवाँ था।

ओलिवा और कोपनहेगन की संधियां (1660)

प्रायः ओलिवा (मई, 1660) और कोपनहेगन (जून, 1660) की दोनों संधियां मिलकर ओलिवा की संधि कहलाती हैं जिनसे निम्नलिखित शर्तों पर शांति स्थापित की गई।

(1) जॉन के सिमिर ने स्वीडन की गद्दी पर अपना दावा त्याग दिया और पूर्वी प्रशा में फ्रेडरिक विलियम की स्वतन्त्रता को मान्यता दे दी।

(2) ब्रैन्डेनबर्ग के एलेक्टर ने पश्चिमी पोमरेनिया से अपने सैनिक वापिस बुला लिए।

(3) डेन्मार्क को वोर्नहोम और ड्रोन्थीम पुनः मिल गये और उसने स्केनिया ब्लेकिंग, और हॉलेन्ड स्वीडन को दे दिये।

1661 के जुलाई मास में स्वीडिश सरकार ने रूस के साथ कार्डिस की संधि की जिसके अनुसार स्वीडन के लिवोनिया पर अधिकार को पुष्ट कर दिया गया। इन सन्धियों से यथासम्भव बाल्टिक में फिर से शक्ति-संतुलन स्थापित हो गया और डेन्मार्क के मूल्य पर स्वीडन ने लाभ उठाया। परन्तु यदि सब देशों के कुल हानि-लाभ का अनुमान लगाया जाये तो यह दिखाई देगा कि उत्तर के प्रथम महायुद्ध में ब्रेन्डेनबर्ग के एलेक्टर से अधिक किसी को लाभ नहीं हुआ, क्योंकि उसने इस युद्ध में अपनी डची[1] (प्रशा) की समूची प्रभुसत्ता प्राप्त करली जो जल्दी ही एक प्रबल और महत्वाकांक्षी राजतन्त्र बनने वाली थी।

चार्ल्स ग्यारहवें की अवयस्कता : फेहरबेलिन की लड़ाई (1675)

चार्ल्स दशम गस्टवस के अल्पकालीन राज्य के बाद उसके पुत्र चार्ल्स 11वें

---

1 देखिये अध्याय 11।

की अवपश्कला का युग आया और इस प्रकार 1697 में चार्ल्स 12वें के राज्यारोहण के समय तक उत्तर यूरोप में अपेक्षाकृत शान्ति का युग रहा। रीजेन्सी कौंसिल ने जिसने 1660 में सरकार का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया, पुनर्निर्माण के लिये कुछ बुद्धिमत्तापूर्ण कदम उठाये, जिनमें राष्ट्रीय बैंक की स्थापना और डेन्मार्क से जीते हुए प्रान्तों के लिए लुंड मे एक विश्वविद्यालय की स्थापना, सम्मिलित थे। किन्तु रीजेन्सी कौंसिल सीनेट के विरुद्ध अपनी स्थिति बनाये रखने मे अशक्त रही और अततः यह चांसलर डे–ला–गार्डी के पूर्ण नियन्त्रण में आगई। अपव्यय और पक्षपात राज्य का सामान्य नियम बन गया। देश की बढ़ती हुई आर्थिक कठिनाई प्रबल विदेशी नीति अपनाने मे बाधक बनी जिससे यूरोप में स्वीडन का सम्मान धीरे–धीरे घटता गया। उसे फोन्टेनब्लू की सन्धि 1661 द्वारा फांसीसी मित्रता के जाल में फंसा लिया गया। परिणामतः उसने पोलेन्ड के राज्य पर मनोनीत फांसीसी युवक ऐंघिएं के ड्यूक का पक्ष लेने का वचन दिया। जब लुई ने डेवोल्यूशन का युद्ध आरम्भ किया तो स्वीडन त्रिदलीय मैत्री–सत्र (ट्रिपल अलायंस) का अ–ला–शपल की सन्धि पर हस्ताक्षर होने के बाद तक, सदस्य नहीं बना। ये ऐसे तथ्य हैं जो प्रदर्शित करते हैं कि उसकी विदेशी नीति असंगत और दीर्घसूत्री थी। उत्तरी राज्य के लिए यह दुर्भाग्यपूर्ण बात थी कि उसे अप्रेल 1672 में लुई द्वारा हॉलेन्ड के विरुद्ध युद्ध करने से पूर्व सन्धि में फसा लिया गया। इस सन्धि के अनुसार स्वीडिश सैनिक ब्रेमेन में स्थित थे जो डच सीमा के निकट था। डेनमार्क से मिलकर (उसे भी फ्रांस ने मित्र बना लिया था) डच जहाजों का बाल्टिक सागर में आना बंद कर दिया गया था। जब हॉलेन्ड पर आक्रमण के के बाद अवश्यम्भावी प्रतिक्रिया हुई और हेग में ग्रांड अलायंस बनाई गई तो स्वीडन ने फिर इस परिवर्तित समय से लाभ उठाने में देर करदी और इस प्रकार फ्रांस का एकाकी मित्र रह गया। लुई के हठ से उत्तेजित शत्रुओं में ब्रेन्डेनबर्ग का एलेक्टर था और जब कोंडें के सैनिकों ने पैलेटिनेट को रौंद डाला तो फेहरबेलिन के स्थान पर (18 जून, 1675) एलेक्टर की सेनाओं ने स्वीडन की सेनाओं को बुरी तरह से पराजित किया। इस पराजय से, जो वास्तव मे एक मामूली झड़प थी, स्वीडन की अजेयता की परम्परा बिलकुल समाप्त हो गई। यह एलेक्टर की सेना के पक्ष मे पहली विजय थी और यहीं से स्वीडन की सैनिक अवनति का श्रीगणेश होता है।

सेन्ट जर्मन की सन्धि (जून 1679)

फेहरबेलिन की पराजय के तत्काल बाद स्वीडन निवासियों को जर्मनी से निष्कासित करने का खतरा उस समय खड़ा हो गया जब ब्रेन्डेनबर्ग के सैनिकों ने पोमरेनिया पर धावा करके स्टेटिन, रूजेन, स्ट्रालसुंड और ओडर के मुहाने पर अधिकार कर लिया। डेनिश सैनिकों ने स्केनिया पर धावा बोल दिया और स्वीडन

को फिर ब्रेन्डेनबर्ग, डेन्मार्क और ऑस्ट्रिया के आक्रमणों का सामना करना पड़ा। युवक चार्ल्स 11 वें को, जिसे सक्रिय सेना में रहने का प्रथम अवसर प्राप्त हुआ था, लगभग तीन वर्ष तक इन विशिष्ट सेनाओ के विरुद्ध थका देने वाला मोर्चा लेना पड़ा था। किन्तु निमेजन की सामान्य शान्ति–वार्ता में फ्रांस[1] ने स्वीडिश हितों की एक बार फिर रक्षा की। जर्मन की सन्धि(जून,1679) द्वारा ब्रेन्डेनबर्ग को ओडर के दायें किनारे की भूमि के छोटे से टुकड़े के अतिरिक्त समस्त स्वीडिश पोमरेनिया को वापिस लौटाने के लिए मना लिया गया। सितम्बर 1679 में हुई फोंटेनब्लू की सन्धि द्वारा डेन्मार्क ने स्केनिया में की गई सब विजय स्वीडन को वापिस लौटा दीं। स्वीडन का प्रबल होना फ्रांस के हित में था और इस प्रकार फ्रांसीसी कूटनीति एक ऐसे भवन का निर्माण कर रही थी जिसकी नींव की दृढ़ता वेस्टफेलिया की सन्धि के अतिरिक्त और कहीं नहीं थी।

स्वीडिश विदेशी नीति (1679–1696)

इस प्रकार अपमानित होते हुए भी स्वीडन ने बाल्टिक पर अपना अधिकार बनाये रखा जो उसे ओलिवा की सन्धि द्वारा प्राप्त हुआ था। 17वीं शताब्दी के पिछले चरण तक वास्तव में उसकी प्रभुता के विरुद्ध कोई गम्भीर विवाद हुआ ही नहीं। ये शान्ति के वर्ष थे और यद्यपि वह फ्रांस का साथ छोड़कर आग्जवर्ग की[2] लीग में सम्मिलित हो गया (1686), किन्तु बाद के झगड़ों में उसने इतना कम भाग लिया कि उन सन्धि–वार्ताओं में, जो र्‍यूरिन और रिज्विक की सन्धियों (1696–97) में परिणित हुईं, उसने मध्यस्थता करने का प्रस्ताव रखा। स्वीडन के लिए असली खतरा दक्षिण से नहीं बल्कि पूर्व से आने वाला था, और शताब्दी का अन्त होने से पूर्व यह स्पष्ट हो गया था कि इस तुच्छ घटना ने ऐसी शक्तियों को गतिमान कर दिया है जो स्वीडन को बर्बाद करने वाली थीं। स्वीडिश राजकोष की स्थायी रिक्तता के कारण सरकार को लिबोनिया के स्थानीय कुलीनवर्ग को दी हुई कुछ आर्थिक रियायतें बन्द करने के लिए बाध्य होना पड़ा। 1692 में लिबोनिया के रिटर ने सामूहिक रूप से विरोध किया। उनमें से एक व्यक्ति जॉन रीनहोल्ड पट्कुल ने उनका विरोध पत्र स्टॉकहोम पहुंचाया। इस व्यक्ति की भाषा ऐसी धमकी भरी थी कि उसके सकुशल पहुंचने के बावजूद उसे जेल में डाल दिया गया जहां से वह भाग निकला और शेष जीवनपर्यन्त स्वीडन से बदला लेने में लगा रहा। लिवोनियन पट्कुल को राष्ट्रीय वीर कहते थे और यह माना जाता था कि उसके साथी स्वीडिश राज्य के प्रति वफादार न थे।

---

1 देखिये इन्सट्रक्शंस डोनीज (प्रशा), 205 एफ. एफ.।

2 देखिये इन्सट्रक्शंस डोनीज (स्वीडन), 30, अध्याय 6 भी देखें।

पट्कुल और सैक्सनी का एलेक्टर

पट्कुल ने सैक्सनी के एलेक्टर फ्रेडरिक ऑगस्टस की महत्वाकांक्षा को उकसाया और 1698 की ग्रीष्म में रावा के पीटर महान् से उसकी भेंट का प्रबन्ध किया। पोलेन्ड के राजा जॉन सोबीस्की की मृत्यु के उपरान्त 1696 में, सैक्सनी के एलेक्टर ने जो इस अभिप्राय से रोमन कैथोलिक धर्म में परिवर्तित हो गया था, फ्रांसीसी उम्मीदवार कोंटी (conti) के राजकुमार के विरुद्ध, चतुराई से पोलिश राज्य के लिए अपना निर्वाचन करवा लिया और अपने स्वीडन विरोधी विचारों के पक्ष में ऑस्ट्रिया, रूस, और ब्रेन्डेनबर्ग की सहायता चाही, इनमें से अन्तिम दो स्वीडन के स्थायी शत्रु थे और पहला फ्रांस के साथ मैत्री–सम्बन्ध रखने के कारण सम्भाव्य शत्रु था। इस समय स्वीडन की गद्दी पर उस दाहक सामग्री को जो पट्कुल ने उत्साहपूर्वक इकट्ठी की थी, दियासलाई दिखाने वाले जोशीले व्यक्ति की आवश्यकता थी।

स्वीडन का चार्ल्स ग्यारहवां एवं उसकी 'छटनी-नीति' (reduction policy)

जब चार्ल्स ग्यारहवां स्वय शासन करने लगा तो उसने यह प्रदर्शित किया कि उसके स्वभाव में नियमानुकूल कार्यशीलता और परिश्रमशीलता के गुण है और वह अपने देश के सर्वोच्च हितों की रक्षा में अनुरक्त है। यह उसके कठोर शासन का फल था कि देश दिवालिया होने से बच गया। सभी उतावले सैनिक साहसिक कार्य बन्द कर दिये गये।[1] शीघ्र उठने वाले इस राजा के व्यक्तित्व में पवित्रता और परिश्रम का समिश्रण था। उसके दरबार मे कठोर गृहोपयोगी गुण (domestic virtues) विशेष रूप से दृष्टिगत होते थे, स्त्रियों का दमन किया जाता था और कभी कभी उन्हें धमकाया भी जाता था। 1682 के सवैधानिक विद्रोह से स्वीडिश राजतंत्र निरकुश हो गया। अनियंत्रित कुलीन वर्ग के खतरे इस परिवर्तन से पूर्व के शान्तिकाल में बिल्कुल स्पष्ट हो गये थे जबकि चार्ल्स ने राज-भूमियों के विस्तृत विक्रय होने में अपने आप को बिल्कुल दिवालिया पाया। यह अनुभव करके, कि इस स्थिति का विकल्प केवल राज–त्याग था, उसने ऐसे तीव्र उपायों का उपयोग किया जिनमे यह ज्ञात होता था कि वह राजनीतिक गुणों से हीन न था। 1682 के 'लेश्म रिजिया' कानून की सहायता से बहुत सी आर्थिक रियायतें बन्द करके, दुष्कार्यों के मूलस्थानों का पता लगा कर और अपराधियों को कानून के हवाले करके, उसने देश के प्रशासन को सुधारा। वह अपनी जांच के क्षेत्र में पिछली रीजेन्सी कौंसिल के सदस्यों को लेने से भी नहीं झिझका। छटनी या

---

1 चार्ल्स ग्यारहवें के शासन के लिए देखें, निसबेतबेन पूर्व उद्धृत, अध्याय 11।

राजकीय जागीरों और अधिकारों को वापिस लेने की नीति का आकस्मिक और कभी कभी इनसे होने वाले अनावश्यक कष्टों की पूरी उपेक्षा करके, पालन किया गया। इन उपायों से राजकोष में अत्यन्त वृद्धि हुई। बढ़ती आय से उसने समुद्री बेड़े और सेना का पुनः सगठन किया। यदि चार्ल्स के बाद भी इसी मनोवृति का व्यक्ति राजा होता तो सम्भव था कि स्वीडन अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाये रखता क्योंकि अन्य किसी भी देश में राष्ट्र का भाग्य शासक के व्यक्तित्व से इतने अधिक घनिष्ट रूप में जुड़ा हुआ नहीं था। किन्तु उसके पुत्र और उत्तराधिकारी में अपने पिता के समान कठोरता और सयम तो था पर उतनी दक्षता न थी। स्वीडन के पास जिसके सम्बन्ध में यह कहा गया है कि उसका इतिहास उसके राजाओं का इतिहास है, इतनी ही संचित पूंजी थी जो चार्ल्स-बारहवें के शासन तक चलती रही।

शताब्दी के अन्तिम वर्षों में संकटपूर्ण शान्ति

1699 के वर्ष में ऐसा लगता था, जैसा कि 1660 में प्रतीत होता होगा कि अनेकों लड़ाइयों के पश्चात् यूरोप को अब शन्ति के युग का अनुभव होगा। रिज्विक की सन्धि पर 1697 में हस्ताक्षर हुए थे और कार्लोविट्ज की सन्धि पर दो वर्ष बाद। लन्डनडरी से लेकर कस्तुन्तुनिया तक युद्ध बन्द थे। फ्रांस को भी यह स्वीकार करना पड़ा कि वह थक गया है और उसे विश्राम की आवश्यकता है। किन्तु समस्त क्रिस्तान की शान्ति (peace of christendom) दो व्यक्तियों पर निर्भर थी। स्वीडन का चार्ल्स ग्यारहवां और स्पेन का चार्ल्स द्वितीय। 1697 में पहले की मृत्यु ने उत्तर के दूसरे महायुद्ध का सूत्रपात कर दिया और 1700 में दूसरे की मृत्यु के साथ स्पेन का उत्तराधिकार-युद्ध आरम्भ हो गया। इन दोनों युद्धों में से किसी में भी राष्ट्रीय आकांक्षायें अथवा जातीय घृणा लेशमात्र को भी न थी। उनका उद्गम स्थान अनिवार्य रूप से निरंकुश व्यक्तिगत शासन का ढांचा था जिससे प्रत्येक राजा अपनी निजी ईर्ष्या और आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये राज्य के समस्त साधनों का उपयोग कर सकता था।

स्वीडन का चार्ल्स बारहवां

स्वीडन के चार्ल्स बारहवें का चरित्र वाल्टेयर द्वारा लिखित उसकी शानदार 'जीवनी' के पाठक अच्छी तरह जानते हैं। ऐसे राजाओं के वंशानुक्रम में उत्पन्न, जिन्होंने युद्ध के द्वारा समृद्धि प्राप्त की थी, चार्ल्स पन्द्रह वर्ष का था जब उसके पिता की मृत्यु हुई। स्त्री वर्ग के नियन्त्रण से ऊब कर उसे अपने परामर्शदाता पाइपर (piper) की सहायता से, अपनी दादी के सरक्षण को त्याग कर अपना उत्तरदायी शासन आरम्भ करना पड़ा। उसके पिता के दरबार का वातावरण ऐसा न था जहां अधिक दयापूर्ण मानव-गुणों को प्रोत्साहन मिले (जो शायद कमजोरी के

निशाना समझे जावें) और यद्यपि उसे अपनी छोटी बहन से अनुराग था, फिर भी उसे अपने सीमित परिवार-मंडल के बाहर प्रत्येक व्यक्ति के हितों की पूर्ण उपेक्षा करने के लिये प्रोत्साहित किया गया। उसकी युवावस्था के मनोविनोद अधिकतर हिंसात्मक थे-घोड़ों पर सवार होकर इतना दौड़ना कि वे मर जायें और तलवार की धार की जांच भेड़ों और कुत्तों के गलों पर करना-किन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि 17वीं शताब्दी में ऐसे खेल पौरुषपूर्ण समझे जाते थे और ऐसे व्यक्ति के लिए जिसे मनुष्यों पर शासन करना हो, विशेष उपयुक्त माने जाते थे। उसकी शिक्षा उत्तम किन्तु संकुचित थी। उच्च कोटि के ग्रंथों में उसने कोर्नेलियस नेपोस (cornelius nepos) और क्विन्टस कर्टियस (quintus curtuis) पढ़े थे जिनमें से दूसरे ग्रंथ ने उसमें सिकन्दर महान् के समान बनने की अभिलाषा जागृत की। गणित का अध्ययन उसने सैनिक विज्ञान के साथ गौण विषय के रूप में किया। चार्ल्स में नेपोलियन के समान सैनिक यश प्राप्त करने की पिपासा और दृढ़ता थी। वह लम्बे-कद, क्रूर नेत्रों और लम्बी नाक वाला था, उसकी मुद्रा से धृष्ठता और दुराग्रह, साहस और वीरता, शिष्टाचार और निर्दयता का बोध होता था, उत्कृष्ट आसक्ति के होते हुए भी उसने इस छोटी अवस्था में ही उस पर नियंत्रण रखना और उसका दमन भी सीख लिया था। स्वयं के लिये खतरे और थकावट का प्रभाव न जानने वाला वह अपने सैनिकों की अति गहन असुविधाओं और और दुखों के प्रति लापरवाह रहता था। उसमें कोई दुर्गुण न थे क्योंकि उसके समस्त विचार सैनिक वीरता की एक संकुचित धारा में केन्द्रित थे। नेपोलियन के समान उसमें कल्पना शक्ति न थी, क्योंकि वह अपने लक्ष्य पर विचार किये बिना ही अभियान आरम्भ कर देता था और जब वह विजय प्राप्त कर लेता था तो उसे मालूम नहीं होता था कि इस विजय का क्या करे। वह हृदय से धार्मिक था और वह संसार को इतनी अधिक हानि न पहुंचाता यदि उसे प्रार्थना करने से दृढ़ता और धैर्य मिलने का आभास न होता-ऐसा बल दुराचारी व्यक्तियों को नहीं मिलता। यदि वह भाग्यवादी होता तो अपनी गलतियों से लाभ उठा सकता था। उसकी वीरता ध्वंसात्मक ढग की थी। इस प्रकार उसकी मृत्यु ही उसके देश के लिये उसकी एक मात्र अच्छी सेवा थी।

चार्ल्स का मुकुट धारण करना

राजा बनने के बाद चार्ल्स का पहला काम सीनेट और डायट से अपनी निरंकुशतावादिता के सम्बन्ध में आश्वासन लेना था, राजतिलक के समय उसने स्वयं राजमुकुट धारण कर लिया। उसने राजतिलक की शपथ लेना भुला दिया और इस प्रकार स्पष्ट कर दिया कि वह किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं होगा। युवक और अननुभूत राजा के राजतिलक की खुशी के जोश में यह घटना बिना टीका टिप्पणी

के निकल गई। विरोधी आवाज एक अनजाने कस्बे के पादरी के मुख से निकली जिसमें एक पन्द्रह वर्षीय लड़के को पूर्ण निरकुश शक्ति के प्रयोग का अधिकार देने का साहसपूर्वक विरोध किया गया था। इस विवेकहीन व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया और उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया, यद्यपि विशेष राजदया के दान के कारण यह दण्ड आजीवन कारावास में बदल दिया गया।[1] 1682 के सवैधानिक विद्रोह के सच्चे परिणाम उस समय समझे जा सकते थे जब चार्ल्स बारहवें का अनुत्तरदायी शासन आरम्भ हुआ।

युद्ध के बहाने

उसका सैनिक जोश पहली बार उस समय भड़क उठा जब चार्ल्स की प्रिय बहन के विवाह के लिये गोटोर्प का ड्यूक (duke of gottorp) स्टॉकहोम में आया। ड्यूक को केवल दुलहिन ही नहीं मिली अपितु उसके वशानुगत शत्रु डेन्मार्क के विरुद्ध एक उत्साही मित्र भी मिला जिसके साथ काफी समय से स्वीडन के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। जब फ्रेडरिक चतुर्थ 1699 में डेनिश गद्दी का उत्तराधिकारी बना तो उत्तर के भड़कीले लोगों का दल पूर्ण हो गया और स्वेडेन एक शत्रु-शृंखला से घिर गया। स्वेडन में इस समय एक बालक का शासन था। इसलिये ये शत्रु पुरातन वैर के प्रतिशोध के लिये उत्सुक हो उठे। इन शत्रुओं से पट्कुल ने बड़ी उत्सुकता के साथ स्वामिनी के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाने की विनय की। डेन्मार्क के फ्रेडरिक चतुर्थ ने होलस्टीन में एक विशाल सेना एकत्र करके गोटार्प पर धावा बोल दिया और अपने नौसैनिक बेड़े को समुद्र मे भेज दिया। अगला कदम चार्ल्स ने स्वयं 1699 में उठाया जब उसने अपने बहनोई की सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिये 20000 सैनिक गोटार्प भेजे और जनवरी, 1700 में उसने लम्बे युद्ध के लिये तैयारी शुरू कर दी। फरवरी में सैक्सनी ने लिवोनिया पर धावा बोल दिया और रीगा पर घेरा डाल दिया जबकि डेन्स ने गोटोर्प को रौंद डाला। इन घटनाओं ने चार्ल्स द्वारा किये गये सशस्त्र हस्तक्षेप को न्यायोचित सिद्ध कर दिया। उसने 24 अप्रैल, 1700 को स्टॉकहोम छोड़ा जिसे पुनः देखना उसके भाग्य में कभी नहीं लिखा था। इसके बाद उसके जीवन-वृत का समस्त यूरोप ने बड़ी रूचि से अनुसरण किया। उसके जीवन की बहुत सी घटनायें यदि उपन्यास लेखकों द्वारा लिखी जायें तो काल्पनिक मालूम होगीं, किन्तु दुर्भाग्यवश ये उसके देश के ऐतिहासिक तथ्य थे।

नर्वा की लड़ाई (नवम्बर, 1700)

उसका पहला लक्ष्य डेन्मार्क था। जिस गति और शक्ति से 1700 की ग्रीष्म के पूर्व पक्ष में चार्ल्स ने डेनिश भूमि पर सेनायें उतारीं तथा कोपनहेगन पर

---

1 निसबेतबेन, चार्ल्स 12,44।

चढ़ाई की उससे फ्रेडरिक चतुर्थ को सन्धि की प्रार्थना करने पर बाध्य होना पड़ा। अगस्त, 1700 में ट्रेवेंडल की सन्धि (treaty of travendal) द्वारा डेनिश राजा को गोटोर्प के ड्यूक की स्वतन्त्रता स्वीकार करनी पड़ी और उसने स्वीडन के शत्रुओं की सहायता न करने का वचन दिया। इस प्रकार चार्ल्स का पहला अभियान पूर्णतया सफल रहा। अब उसे अधिक प्रबल विरोधियों का सामना करना था। पटकुल ने अपना कार्य सुचारू रूप से किया था। पौलैंड का ऑगस्टस और पीटर महान् लिबोनिया में लड़ रहे थे, जबकि पहला रीगा को घेरे में ले रहा था तो दूसरा जर्मन अफसरों के अधीन 40000 अनाड़ी सैनिकों (raw troops) के साथ नर्वा पर घेरा डाल रहा था। चार्ल्स ने पहले नर्वा को घेरने वालों के साथ फैसला करने का निश्चय किया और नवम्बर, 1700 के अन्तिम दिनों में कस्बे के पास पहुंच गया। पीटर ने और सेनायें लाने के दिखावटी अभिप्राय से अचानक अपना पड़ाव उठा लिया। यद्यपि रूसी संख्या में स्वीडों से बहुत अधिक थे, किन्तु चार्ल्स को आक्रमण करने में कोई झिझक न हुई, क्योंकि वह जानता था कि नेतृत्व और प्रशिक्षण संख्या की कमी की पूर्ति कर देते हैं। पूर्णतया सुरक्षित मोर्चों में उठी हुई शत्रु सेना पर आक्रमण करने की योजना स्वीडन के सर्वोत्कृष्ट जनरल–रैंस्कजोल्ड (rehnskjold) ने तैयार की थी। नवम्बर, 1700 के अन्तिम दिन बर्फानी तूफान में धावा बोल दिया गया। अनुशासनहीन घेरा डालने वाले इस अचानक हमले से भयभीत होकर खाइयां छोड़ कर भागे और उनमे से बहुत से नर्वा को पार करने का प्रयत्न करते हुए नष्ट हो गये। ड्यूक द क्राय (duke de croy) जिसके अनिच्छुक कन्धों पर उन्मत्त पीटर ने रूसी प्रतिरक्षा का बोझ डाला था, स्वीडिश के दल में जाकर शरण ली और विजेताओं ने जनरलों के अतिरिक्त उनके सब बन्दियों के हथियार ले लिए और उन्हें निकाल दिया। उन्होने यह इस कारण किया कि उनके पास स्वीडिश सेना से अधिक रूसी बन्दी हो गये थे। इस प्रकार आधुनिक रूस का सैनिक इतिहास एक 18 वर्षीय युवक के हाथों बहुत बुरी पराजय से आरम्भ होता है।

रूस की अभियान–योजना (Russian plan of campaign)

नर्वा के युद्ध ने चार्ल्स को अचानक प्रसिद्ध कर दिया, क्योंकि समस्त यूरोप में इस विजय की प्रशंसा पाशविक शक्ति के विरुद्ध युक्ति और विज्ञान की विजय के रूप में की गई। पीटर पर इसका यह प्रभाव पड़ा कि उसने शक्तिशाली राष्ट्रीय सेना के संगठन की आशा से अपने प्रयास दुगने कर दिये। दूसरे, इस अपमानजनक पराजय ने उसे सैक्सनी के ऑगस्टस से अधिक घनिष्टतापूर्वक मेल करने के लिये प्रेरित किया। इन दोनों ने अभियान की एक योजना बनाई जिसके अनुसार रूस ने स्वीडिश इंग्रिया पर आक्रमण करना स्वीकार किया जबकि जर्मनी ने चार्ल्स की

सेना को जर्मनी में पूरी तरह व्यस्त रखने का उत्तरदायित्व लिया। लूट के विभाजन में ऑगस्टस को एस्थोनिया और लिवोनिया और रूसी सेना की सहायता प्राप्त होगी जबकि पीटर को आर्थिक सहायता मिलेगी। इस प्रकार स्वीडन को दो मोर्चों पर युद्ध लड़ना पड़ेगा और इससे पीटर को अपनी सेना संगठित करने का अवसर मिल जायेगा। इसी वर्ष नवम्बर, में स्पेन के चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु ने स्वीडिश चांसलर बेंग्ट ऑक्सनस्टीर्ना (bengt oxensteerna) को इस प्रकार का प्रस्ताव करने के लिए प्रोत्साहित किया कि स्वीडन का राजा रूस और सैक्सनी से कुछ व्यवस्था कर ले और फिर नर्वा की महान् सफलता स्पेन के उत्तराधिकार के प्रतिस्पर्धी दावेदारों में मध्यस्थता का काम करने के औचित्य के रूप में प्रयुक्त की जाये। स्वीडन के पास धन का अभाव था और विदेशों में युद्ध करने के लिए जन शक्ति की कमी थी, मध्यस्थता की स्थिति से बिना किसी प्रकार का बलिदान किये राष्ट्रीय सम्मान बढ़ने की सम्भावना थी। किन्तु चार्ल्स अपने मन्त्रियों के पत्रों का उत्तर शायद ही कभी देता था और कूटनीतिक आगन्तुकों से, उन्हें स्टॉकहोम जाने के लिए कह कर छुट्टी पा लेता था। इसलिये जो कुछ बाद में हुआ उसके लिए वह स्वयं उत्तरदायी था, क्योंकि अपनी दीर्घ अनुपस्थिति के समय वह राज्य में स्वीडिश विदेशी नीति का कार्यभार किसी को नहीं सौंपता था।

चार्ल्स का पौलेन्ड पर आक्रमण (1702)

चार्ल्स ने अपनी प्रथम सफलता के बाद रीगा से सैक्सन सैनिकों को निकाल कर (जुलाई, 1707) कोर्लेन्ड (courland) पर कब्जा कर लिया और उसकी राजधानी मिटाऊ (mittau) में एक स्वीडिश गवर्नर जनरल की नियुक्ति कर दी, फिर वह पोलेन्ड की ओर बढ़ा जिसने अपने राजा ऑगस्टस की महत्वाकांक्षाओं के अनुरूप कार्य करने से अस्वीकार कर दिया था। उसने इस बात को स्पष्ट करते हुए, कि उसकी लड़ाई पोलिश जनता के विरुद्ध न होकर उसके राजा के विरुद्ध है, मई, 1702 में वारसा में पदार्पण किया और एक महीने पश्चात् ऑगस्टस को क्लिसो के स्थान पर पराजित किया। विजेता की धृष्टता और उसके सैनिकों की ज्यादतियों से वहां कुछ राष्ट्रीय रोष फैला। किन्तु न तो सैक्सन और न ही पोल आक्रामक के समक्ष टिक सकते थे जिसने तब तक पोलेन्ड मे रहने की अपनी इच्छा प्रकट कर दी थी जब तक कि वह ऑगस्टस को गद्दी से न उतार ले। इसके बाद पोसेन और क्रेको पर भी अधिकार कर लिया गया और अभागे गणतन्त्र को एक बार फिर अधिकार करने वाली सेना की विभीषिका से दुःखी होना पड़ा। चार्ल्स ने जनता की सद्भावनाओं को अपनी ओर करने के स्थान पर सेपीहा दल (sapieha faction) के विस्थापित मुखिया और षड़यन्त्रकारी नेसन

के कार्डिनल रेड्गीजोस्की आर्कविशप और पोलेन्ड के प्राइमेट (primate of poland) से मित्रता करके अपनी स्थिति को दृढ़ कर लिया।

चार्ल्स की इच्छायें

इस समय स्वीडिश राजा के मन में केवल एक ही प्रबल लक्ष्य था-आगस्टस के प्रति घृणा और किसी सेक्सन को पोलेन्ड का राजा कभी न बनने देने का दृढ़ संकल्प। यदि उसका उद्देश्य पोलेन्ड का राजमुकुट स्वयं धारण करने का होता तो उसके पोलेन्ड में ठहरने वाली बात समझ में आ सकती थी। किन्तु वह एक ओर इस उद्देश्य से बहुत ऊंचा था, दूसरी ओर वह इतना सकुचित हृदय था कि वह अपने और अपने देश के साधनों को एक तुच्छ व्यक्तिगत-से झगड़े पर व्यय कर रहा था। 12 जुलाई, 1704 को डायट के कुछ सदस्यों ने चार्ल्स द्वारा मनोनीत स्टेनिस्लास लेसजिस्की को पोलिश गद्दी के लिए निर्वाचित कर दिया और स्वीडिश तोपखाने से जो इस उत्साह को विशिष्टता प्रदान करने के लिये एकत्र किया गया था, तोपें चला कर इस चुनाव का स्वागत किया गया। किन्तु स्टेनिस्लास केवल उतने प्रदेश का राजा था जहां तक स्वीडिश तोपों का निशाना पहुंच सकता था, और जब चार्ल्स लेम्बर्ग पर अधिकार करने चला (केवल इसलिए कि वहां का दुर्ग अजेय समझा जाता था), तो ऑगस्टस को वारसा पर पुन: अधिकार करने में कोई कठिनाई नहीं हुई (अगस्त, 1704) और स्टेनिस्लास को बाध्य होकर रैंस्कजोल्ड की सेना मे शरण लेनी पड़ी। चार्ल्स के लेम्बर्ग से वापिस लौटने पर भाग्य ने फिर पलटा खाया जिससे ऑगस्टस को सैक्सनी मे शरण लेनी पड़ी जबकि स्टेनिस्लास को, जिसे अभी राजमुकुट नहीं पहनाया गया, फिर निर्वाचित राजा के अस्थिर स्थान पर बैठा दिया गया। 1705 के ग्रीष्म तक स्वीडन द्वारा पोलेन्ड पूरी तरह से जीत लिया गया।

बाल्टिक प्रांतों में रूस को लाभ

पोलेंड में चार्ल्स के लम्बे अर्से तक ठहरने से पीटर को अपनी सेनाओं का पुन: संगठन करने का पर्याप्त अवसर मिल गया। बाल्टिक प्रान्तों में मुट्ठी भर स्वीडिश सैनिक अब भी रूसियों को समीप नहीं आने देते थे, किन्तु स्वीडिश राजा और मुख्य सेना की देर तक अनुपस्थिति से पीटर को अवसर मिल गया। उसने विजय करने मे पूर्व लिवोनिया और एस्थोनिया का सर्वनाश कर दिया। वीर किन्तु अपर्याप्त स्वीडिश सेना द्वारा बचाव करने पर भी जल्दी ही करेलिया और इंग्रिया दूसरे के हाथों में चले गये। बन्दरगाह, जो बाद में क्रान्सटाड के नाम से प्रख्यात हुआ, जीत लिया गया और नेवा के किनारे पर उस विशाल नगर का समारम्भ किया जो भावी सतति के लिये सेन्ट पीटर्सबर्ग बनने वाला था। 1704

के अन्त तक वह तमाम प्रदेश जो पीटर को बाल्टिक में आने के लिये आवश्यक था जीत लिया गया और वह सब लाभ जो वह उठाना चाहता था उसने स्वीडन के मूल्य पर पूरी तरह प्राप्त कर लिया। उसका काम कठिन न था। नर्वा की लड़ाई के बाद चार्ल्स पीटर को इतना छोटा समझता था कि उसे पूरा करने की जरूरत नहीं थी। स्वीडिश राजा के पोलैंड में अधिक समय तक रुके रहने से पीटर की इच्छा पूरी हो गई–वह थी हस्तक्षेप से मुक्ति। जब जार ने शत्रु प्रदेश में अपने आपको दृढ़ कर लिया तो चार्ल्स ने स्वीडिश सीनेट को बाल्टिक प्रान्तों की रक्षा दृढ़ करने के अधिकार दिये।

चार्ल्स अल्ट्रॉस्टाड में (1706-1707)

पीटर समान रूप से सफल रहा और उसका साथी ऑगस्टस वैसा ही भाग्यहीन रहा। सेक्सन को उस विनाशकारी नीति का जिस पर वह चला था अब पूरा प्रतिकार लेना था। उसका जनरल स्कूलनबर्ग जर्मन और रूसी सैनिकों सहित रैंस्कजोल्ड द्वारा फरवरी 1706 में ओडर नदी के किनारे पर फ्रास्टेड्ट में पराजित हुआ, इस विजय से चार्ल्स ने सेक्सनी पर धावा बोलने का फैसला कर लिया। सितम्बर, 1706 में साइलेशिया में घुसकर और अपने आपको नाममात्र के लिये प्रोटेस्टेन्टो का रक्षक कहकर उसने लिपजिग के निकट अल्ट्रॉस्टाड में जर्मनी का मुक्तिदाता बनकर अपना झण्डा गाढ़ दिया। सन्धि की प्रार्थना करने वाला पहला व्यक्ति ऑगस्टस था जो अब तक दो राज्य खो चुका था। उसने अपने सब मित्रों को त्यागकर, पोलिश गद्दी पर अपने अधिकार का पूर्ण समर्पण करके, और पट्कुल का पक्ष न लेने का वचन देकर (सितम्बर, 1707) तब सन्धि प्राप्त की। **लिवोनिया का देशभक्त लड़ता लड़ता मर गया।** अब सम्राट (जोजफ प्रथम) की बारी आई। उस पर ऑगस्टस को सैनिक सहायता देने और साइलेशिया के प्रोटेस्टैन्टो का दमन करने के अपराध लगाये गये, जो कि ओस्नाब्रुक की सन्धि की शर्तों के विरुद्ध थे और जिसमें स्वीडन गारन्टी बना था। चार्ल्स ने मांग की कि उसके सम–धर्मानुयायियों के प्रति पूरी सहिष्णुता बरती जाये और इस विषय पर सम्राट झुक गया, यद्यपि इससे उसे अपमान का अनुभव हुआ होगा, क्योंकि हैप्सबर्ग अन्य किसी बात पर इतना गर्व करते थे जितना अपने राज्यों में से विधर्मियों का बहिष्कार करने पर। इस रियायत का उल्लेख अल्ट्रॉस्टाड की सन्धि (सितम्बर 1707) में किया गया जिसकी गारन्टी इंगलैण्ड और हालैंड ने दी। अब चार्ल्स अपने आपको यूरोप का पंच कह सकता था।

चार्ल्स और रूस का आक्रमण

चार्ल्स ने अल्ट्रॉस्टाड में क्या किया होता, यह अनुमान के लिये अच्छा आकर्षक विषय है। उसका वहां ठहरना, (सितम्बर, 1706–सितम्बर 1707) और

स्पेन के उत्तराधिकार-युद्ध में विराम, का वही समय था जब मार्लबरो की सफलताओं के बावजूद भी यह संदिग्ध था कि विजय किसकी होगी। चार्ल्स की मित्रता दोनों पक्ष चाहते थे। मार्लबरो अप्रैल 1707 में उसकी योजना जानने के लिये उसके पास गया। दोनों प्रसिद्ध व्यक्तियों की बातचीत सौजन्यतापूर्ण न थी। चार्ल्स कुछ बता नहीं रहा था तथा मार्लबरो अपने समकालीनों की तरह, चार्ल्स पर बहुत गहरे इरादे रखने का सदेह करता था, जो वास्तव में उसके वश की बात न थी, किन्तु उसने स्वीडिश राजा के मेज पर पड़े रूस के मानचित्रो से यह अनुमान लगा लिया कि उसकी आकांक्षायें पश्चिम के सम्बन्ध मे न थीं। सत्य तो यह था कि चार्ल्स अब पीटर से बदला लेने के लिये आतुर था जैसा कि उसने अभी ऑगस्टस से लिया था। पश्चिमी यूरोप की राजनीति में उसको कुछ रूचि न थी, फिर भी युद्ध में सम्मिलित होने वाले सभी लोगों ने उस समय कुछ सुख की स्वांस ली जब उसने जर्मनी को खाली कर दिया। दूसरी ओर उसने रूस के विरुद्ध एकाग्री युद्ध नहीं किया। पोलैण्ड में अधिक समय तक ठहरने की मूर्खता करके उसने पीटर को बाल्टिक प्रान्तों में स्थापित होने दिया। अब वह पीटर को गद्दी से उतार कर मास्को विजय करना चाहता था—एक ऐसी यूरोपीय राजधानी जिसे आक्रमणकारी से रक्षित करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। चार्ल्स अपने देश मे सात वर्ष तक अनुपस्थित रहा और स्वीडिश अत्यधिक कठिनाई से उसे लगातार धन और सेना पहुंचाते रहे। जबकि आधा यूरोप उत्तराधिकार के लिये लड़ रहा था उस समय दूसरा आधा भाग एक युवक राजा की व्यक्तिगत अरूचियो के कारण युद्धरत था। यह 18वीं शताब्दी का अशकुनी (inauspicious) आरम्भ था।

रूस पर धावा (1707-1709)

1707 की पतझड़ मे, जब चार्ल्स ने अपना पूर्वी अभियान आरम्भ किया उस समय रीगा में जनरल लबनहाप्ट (general levenhaupt) की सेना सहित स्वीडन की सेना 46000 से अधिक न थी। पीटर के पास 70000 हजार प्रशिक्षित विशाल सेना थी किन्तु वह नर्वा का अनुभव भूला नहीं था, वह अधिक संख्या में विश्वास नही रखता था। सेक्सन प्रदेश छोड़कर चार्ल्स कोलेन्ड में घुस सकता था और बाल्टिक का तटवर्ती प्रदेश अपने अधिकार में ले सकता था किन्तु भाग्य में उसके लिए मास्को की सड़क पकड़ना लिखा था। 1707 के दिसम्बर मास के मध्य में उसने विस्चुला नदी पार करली थी और जनवरी, 1708 में ग्रोडनो पर अधिकार करके वह विल्ना में पीटर के पास पहुंच गया जो छल से इधर उधर फिसल जाता था। जार युद्ध से बचना चाहता था और चार्ल्स को पूर्व में दूर तक बढ़ते जाने का प्रलोभन देकर उसकी संचार व्यवस्था को तोड़ देना चाहता था। चार्ल्स के जनरल आशा के विपरीत भी आशा करते थे कि उनका

नेता उत्तर की ओर मुड़ जायगा और बाल्टिक प्रान्तों को अपना प्रधान लक्ष्य बनायेगा, किन्तु राजा, जो अपना सलाहकार स्वयं ही था मिसक (minsk) की ओर आगे बढ़ा। जून 1708 में उसने बेरेसिना नदी पार की और 3 जुलाई को हॅलोविजिन की घुड़सवार सेना की लड़ाई में रूसी सेना की टुकड़ी को पराजित किया, इस विजय से स्वीडिश सेना नीपर तक जाने में समर्थ हो गई। पतझड़ के अन्तिम दिनों में स्वीडिश सेना 17वीं शताब्दी के पोलेन्ड और रूस के सीमान्त पर स्थित तातर्स्क पहुंच गई जहां से उसे अपने कठोर अभियान के कष्टों का अनुभव होने लगा। तातारी घुड़सवार उन पर लगातार धावे बोलते रहे, सामग्री क्षीण होने लगीं, बहुत सी तोपें दलदलों में फसने के कारण छोड़ दी गईं, अधिकांश बारूद भीग गया, साथ ही रोग और बीमारी ने सैनिकों में तबाही मचादी और उनके पास अब साहस और श्रद्धा के अतिरिक्त और कुछ भी न था। तातर्स्क, जो स्मोलेन्स्क से 50 मील के अन्दर है, वह स्थान था जहां चार्ल्स ने अपने जनरलों को अचानक यह पूछकर आश्चर्यचकित कर दिया कि उनके विचार से उसे आगे क्या करना चाहिए और वह आश्चर्य तब और भी बढ़ गया जब उनके नेता ने उन्हें कहा कि उसके पास कोई योजना नहीं है। उसे सर्दी से बचाव वाले स्थान पर जाने और लेवनहाप्ट की सेना की प्रतीक्षा करने की सलाह दी गई–ऐसी सलाह उसने अपने स्वभावानुसार मानने से इन्कार कर दिया। दक्षिण की ओर युक्राइन में घुसने का आदेश देकर जहां उसे पर्याप्त खाद्य सामग्री और विद्रोही कोसेज मजेपा जो उस समय पोलिश और रूस विरोधी दल का मित्र था, से सहायता मिलने की आशा थी—चार्ल्स ने इस प्रकार का मार्ग अपनाने से धृष्टतापूर्वक इन्कार कर दिया जिसका अर्थ पीछे हटना लगाया जाये और इसके लिए उसने न अपनी और न ही अपने सैनिकों की परवाह की, किन्तु दक्षिण की ओर जाने में वह झूठी आशाओं पर भरोसा किये बैठा था, क्योंकि मजेपा (mazeppa) की सेना कोसेकों द्वारा जार के विरुद्ध शस्त्र उठाने से इन्कार करने के कारण बहुत थोड़ी रह गई थी और पीटर को मजेपा की धोखेबाजी का समय पर पता चल गया था। लेवन-हाप्ट के आगमन की बहुत आतुरता से प्रतीक्षा की जा रही थी, किन्तु जब वह मुख्य स्वीडिश सेना से जाकर मिला तो उसके पास केवल 7000 सैनिक थे, जिसका कारण उन्हें रूसी अनियमित सैनिकों द्वारा हठतापूर्वक तंग किया जाना था। मजेपा के आने से उन्हें इससे भी अधिक निराशा हुई, क्योंकि 50000 सैनिकों का वायदा करके वह केवल 3000 सैनिक लाया। केवल इतनी सी सेना के साथ चार्ल्स 1708-1709 के रूसी जाड़े का सामना करना चाहता था। रूसी रिकार्ड में यह सबसे कठोर सर्दी का वर्ष था। इतना उग्र जाड़ा पड़ा कि पक्षी मरकर आकाश से गिरते थे, और इसका सामना करने के लिये आर्कटिक जलवायु की पूरी सामग्री की

आवश्यकता थी। स्वीडिश सिपाहियों के कपड़े फटे हुए थे, बूटों के स्थान पर उन्हें जंगली पशुओं की खाल का प्रयोग करना पड़ता था, भोजन की प्रायः कमी होती थी और इसका अधिकांश भाग बर्फीले थपेड़ों (frostbits) से नष्ट हो गया। विप्रेक (viprek) में कुछ विश्राम करने के अतिरिक्त, जहां वे जनवरी, 1709 में पहुंच गये, वे बिना विराम किये सारी सर्दियों में दक्षिण और पूर्वी की ओर बढ़ते गये। 1709 के वसंत तक, जब पुल्टावा दिखाई दे रहा था, चार्ल्स की कुल सेना 22,000 से भी कम थी जिनमें 5000 बीमार या अयोग्य थे। अब तक 20,000 जीवन इस अभियान में निरर्थक नष्ट हो चुके थे।

और सैनिक सहायता मंगवाने के प्रयत्न

1708 के ग्रीष्म काल से ही चार्ल्स और अधिक सेना मंगवाने के लिए चिन्तित था और बिना पर्याप्त तैयारी किये इतना अधिक आगे बढ़ने की मूर्खता का अनुभव करने लगा था। उसने जर्मन दुर्गों में स्थित स्वीडिश सैनिकों को पोलेन्ड में जनरल क्रासा की सेना के साथ मिलकर वोलहीना में से होते हुए कीव पहुंचने के आदेश दिये। उसने कस्तुन्तनिया के एक एजेन्ट को रूस के विरुद्ध तुर्की की सहायता मांगने के लिए भेजा। ये कार्यवाहियों पुलटावा के दुर्ग की ओर दृढ़तापूर्वक बढ़ने का कुछ समाधान निकाल सकती थीं, क्योंकि उसे यह आशा हो सकती थी कि इनमें से कोई भी सेना कीव की ओर आकर उससे मिल सकती थी या तुर्की के सीमान्त को पार करके आ सकती थीं। सब कुछ सोच विचार कर हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यदि अतिरिक्त सेना नहीं आई तो यह सौभाग्य ही था, क्योंकि वे भी दोषपूर्ण उन्मत्तता और मानव–जीवन के प्रति उपेक्षा के कारण नष्ट-भ्रष्ट हो जाती क्योंकि यह चार्ल्स द्वारा अभियान संचालन करने की उसकी विशेषता थी।

पुलटावा की लड़ाई (जून, 1709)

पुलटावा का घेरा 1709 में आरम्भ हुआ। इस घेरे में स्वीडन को भयंकर गर्मी से उतनी ही हानि उठानी पड़ी जितनी पहले उसने भयंकर सर्दी के कारण उठाई थी जबकि उसकी सेना अवसाद की बीमारी से उसी प्रकार घटती रही थी जिस प्रकार पहले बर्फ के धावों से। 17 जून को चार्ल्स के पैर में गोली लगी जिसे उसने शान्तिपूर्वक चाकू से निकाल दिया किन्तु घाव गम्भीर था और कई सप्ताह तक उसे पालकी में ले जाना पड़ा तथा सर्वोच्च कमान रेंस्कजोल्ड को दे दी गई। सम्भवतः इस घटना के कारण पीटर ने 80000 सैनिकों को लड़ाई में झोंकने का खतरा लिया। 27 जून को लड़ाई आरम्भ हुई, चार्ल्स ने 2000 सैनिकों को घेरा डाले रखने के लिए पुलटावा की दीवालों के नीचे छोड़ दिया, यद्यपि दोनों सेनाओं

में इतनी असमानता थी कि एक भी स्वीडन नहीं बच सकता था। इस पर भी स्थिति को और बिगाड़ने के लिए यद्यपि रेंस्कजोल्ड प्रधान सेनापति था और बहुत योग्य जनरल था, चार्ल्स स्वीडिश सेनाओं[1] की नियुक्ति में हस्तक्षेप करता था। सम्भवत शायद ही कभी इतनी हास्यास्पद कठि–नाइयो के होते हुए कोई लड़ाई लड़ी गई हो। 80000 पूर्णतया सुसज्जित और बड़े तोपखाने सहित सेना के विरुद्ध 20000 से कम अर्ध-भूखे स्वीडन चार तोपों के बल पर लड़े। फिर भी स्वीडों ने आश्चर्यजनक साहस से आक्रमण किया किन्तु इनमें से बहुत कम शत्रु की श्रेणियों तक पहुंचे क्योंकि उन्हें रूसी तोपखाने का शिकार बनना पड़ा। परिणामस्वरूप आंतक छा गया। इस घबराहट में चार्ल्स और रेन्स्कजोल्ड ने परस्पर विरोधी आदेश दिये और युद्ध पूर्ण विनाश के साथ समाप्त हुआ। स्वीडों के लगभग 500 व्यक्ति खेत रहे। जनरल रेन्स्कजोल्ड और स्लिपेन बेख, पाइपर और वर्टेम्बर्ग के ड्यूक सहित बन्दी बना लिये गये। कुछ दिन पश्चात् उस सारी सेना को जिसे लेवेनहाप्ट शीघ्रता में चार्ल्स के साथ मिलने की आशा से लाया था, आत्मसमर्पण करना पड़ा। इस प्रकार आधुनिक इतिहास के सबके अधिक विनाशकारी अभियान का अन्त हुआ। स्वीडिश राजा चार्ल्स को, उसकी इच्छा के विरुद्ध, एक पालकी में वहां से शीघ्र ही दूर ले जाया गया तथापि भगदड़ में बहुत से पालकी ले जाने वाले मारे गये, परन्तु चार्ल्स के कोई चोट न लगी। इस आश्चर्यजनक बचाव से शायद भाग्यवादी चार्ल्स को यह विश्वास हो गया हो कि अभी उसका अन्त निकट नहीं आया था।

चार्ल्स के उन्माद का साक्ष्य

अपने भक्त मनुष्यो के एक छोटे जत्थे के साथ चार्ल्स ने नीस्टर (dniester) पर बेन्दर (bender) के तुर्की दुर्ग में पहुंचने का प्रबन्ध कर लिया। रूसियों के विरुद्ध उसकी वीरता के कार्यों की तुर्की द्वारा प्रशंसा करने से यह निश्चित था कि उसका अच्छा स्वागत किया जायेगा। बेन्दर मे उसने एक छोटे से दरबार का सभापतित्व किया। जब उसने पुल्टावा की पराजय के परिणाम सुने तो उसमें भावुकता के कोई चिन्ह न थे। उसके इस समय के पत्र व्यवहार से ऐसी किसी बात का बोध नही होता कि वह उस विनाश की विशालता का अनुमान लगा चुका था जिसने उसकी सेनाओं को दबा लिया। अब भी उसके मस्तिष्क में बहुत खर्चीली महत्वाकाक्षायें थीं। वह स्वीडन के धन व जन के साधनो को कभी समाप्त न होने वाला समझता था। यह एक कारण है कि जिसकी वजह से चार्ल्स बारहवें को ठीक वैधक अर्थों (medical sense) में विकृत मस्तिष्क वाला (insane) समझना

---

1 निसबेत बेन, चार्ल्स 12, 187।

चाहिये । स्वीडिश शक्ति व उसके सम्मान का अकस्मात क्षय एक साधारण प्रेक्षक को भी बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देता था । बाल्टिक अधिकृत स्थान सदा के लिये छिन गये, ट्रावेन्डल और अल्ट्रान्स्टॉड की सन्धियां समाप्त हो गईं । ऑगस्टस पोलैंड में फिर स्थापित हो गया, डेनिश सेना ने स्केनिया पर आक्रमण कर दिया । यह उसका सौभाग्य था कि राजा की अनुपस्थिति में भी स्वीडिश प्रसिद्धि के अवशेष, उसके योग्य जनरलों, उसके भक्त सैनिकों और समस्त राष्ट्र ने, जिसने अपने सम्मान और अस्तित्व को खतरे में पाकर किसी बलिदान से मुंह नहीं मोड़ा, दृढता से बनाये रखे । चार्ल्स के सर्वोत्तम जनरलो में से एक स्टेनबोक ने डेनों (danes) को 1710 के आरम्भ में पराजित करके स्केनिया को खाली करने पर बाध्य किया । क्रेसा जो चार्ल्स के आदेशानुसार युक्राइन में मिलने में असमर्थ रहा पोमरेनिया में घुस गया और वहां अपनी सेना को जमाकर, स्वीडिश फौजों की वास्तविक कमजोरी को छिपाने में सहायक हुआ । जर्मन प्रदेश में इस सेना की उपस्थिति से स्पेन के उत्तराधिकार युद्ध में लगे हुए मित्र देश चौंक उठे और मार्च, 1710 के न्यूट्रेलिटी कम्पैक्ट (neutrality compect) मे इंगलैंड और हालैंड ने स्वीडन के जर्मन अधिकृत प्रदेश को बनाये रखने का उत्तरदायित्व लिया किन्तु इस शर्त पर कि क्रेसा की सेना जटलैण्ड (jut land) पर आक्रमण न करे । इस सधि को सुनकर चार्ल्स ने इसे अस्वीकार कर दिया, उसका विचार था कि वह स्वीडन के लिये, समुद्री शक्तियों से सहायता न लेकर तुर्की से सहायता ले लेगा । यह आशा एक धोखा (delusion) सिद्ध हुआ ।

बेन्डर में चार्ल्स की गतिविधियां : प्रुथ (Pruth) की संधि (जुलाई 1711)

अपने तुर्की के लम्बे आवासकाल में चार्ल्स की मुख्य क्रियायें शतरंज खेलना, फ्रांसीसी दुखांत और मध्यकालीन साहसिक कार्यो सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन तथा अपने छोटे से अंगरक्षक दल[1] का पुनरावलोकन और उसे प्रशिक्षित करना था । बेन्डर में उच्च दर्जे का कोई अफसर न था और पोलिश शरणार्थी स्टैनिस्लास पोनियाटोवस्की[2] के अतिरिक्त अन्य कोई विशेष ख्याति का व्यक्ति न था जो इस प्रख्यात देश से निकले हुए व्यक्ति को सलाह देने योग्य हो । किसी भी प्रकार के दुर्गणों से पूर्णतया मुक्त होने व प्रसिद्ध पराक्रमी कार्यों के कारण तुर्क उसे देवता

1 इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण एमीरा लिखित स्तोरिया देल सोगीरनो द कारलो 12, इन ट्रूबिया (1905) में उपलब्ध है ।

2 पोनियाटोवस्की (1678–1762) स्टेलिसलास लेकजिकसी का समर्थक था एवं चार्ल्स 12 वें का व्यक्तिगत मित्र था ।

समान समझते थे । जब उसके निजी साधन समाप्त हो गये तो उसने सुल्तान अहमद तृतीय का आतिथ्य स्वीकार कर लिया । 1700 में रूस द्वारा तुर्की से अजोव छीन लेने के कारण उत्पन्न रोष का लाभ उठाकर और यह जानकर कि तुर्की से कुछ राजनीतिज्ञ, प्रमुख रूप से ग्रांड वजीर नउमैन क्रियुप्रिली (nouman kiuprili) रूस से शांति बनाये रहने के लिये उत्सुक थे, चार्ल्स ने तुर्कों को फिर लड़ाई के लिये उकसाने का प्रयत्न किया । ये षडयन्त्र सफल हुए । सुल्तान ने अपने ग्रांड वजीर की सेवाओं को प्रशसा योग्य नहीं समझा और जून 1710 में नउमैन क्रियुप्रिली को अपदस्थ कर नवम्बर में युद्ध घोषणा कर दी । पीटर ने वालेचियन और मोल्डेवियन मैत्री पर भरोसा रखा, उधर तुर्की ने प्रुथ पर 200000 सेना भेज दी जिसकी लड़ाई की योजना चार्ल्स ने स्वयं बनाई थी । पीटर के साथियों ने शीघ्रतापूर्वक साथ छोड़ दिया और जुलाई 1710 में जार ने अपने आपको (प्रुथ पर स्टैंडर्सी में) अपने से बड़ी शत्रु सेना का सामना करने की असामान्य स्थिति मे पाया, किन्तु स्वीडिश राजा से भिन्न वह यह जानता था कि कब झुक जाना चाहिये और इसलिये बिना एक भी वार किये उसने अजोव के समर्पण, लिवोनिया और एस्थोनिया स्वीडन को वापिस लौटाने और चार्ल्स को बिना किसी बाधा के अपने राज्य में लौट जाने देने के आधार पर सन्धि प्रस्ताव रखे । तुर्की का ग्रांड बाल्टाड्जी भी पीटर की भांति लड़ाई का शौकीन न था और उसने ये शर्तें उत्सुकता पूर्वक स्वीकार कर लीं । प्रुथ की सन्धि पर 11 जुलाई, 1711 को हस्ताक्षर हुए और जार ने अपने क्षुधा—पीड़ित रूसियों के साथ इस खतरनाक स्थिति से मुक्ति पाई ।

उसके षडयन्त्र

चार्ल्स अपने पुराने शत्रु को पराजित करने में भाग लेने के लिये स्वयं प्रुथ पहुंचा किन्तु यह ज्ञात होने पर, कि सन्धि पहले ही हो चुकी है, उसे बहुत दुख हुआ । तत्पश्चात उसने ग्रांड वज़ीर के विरुद्ध जिसने इतनी जल्दी सन्धि की शर्तें मान लीं और सन्धि की शर्तों की पूर्ति करने में जार की अनिच्छा से कुछ लाभ प्राप्त किया, युद्धपक्षी दल के साथ षडयन्त्र रचा । 1 नवम्बर, 1711 को, बाल्टाड्जी को हटाने और उसके स्थान पर जूसुफपाशा की नियुक्ति के साथ रूस के विरुद्ध फिर युद्ध घोषित कर दिया गया । चार्ल्स को यह आशा थी कि स्वीडन की सेना पौलैंड में से होकर उसके पास पहुँच जायेगी । पोनियाटोस्की स्वीडन और फ्रांसीसी एजेण्टों से मिलकर संयुक्त कार्यवाही की योजना बनाने के लिये इस्तम्बूल भेजा गया । इस पर इंगलैंड और हालैंड ने प्रुथ की सन्धि को इतनी शीघ्रता से भंग करने का विरोध किया । दोनों शक्तियों ने चार्ल्स को तुर्की से बहिष्कृत करने का आग्रह किया । विरोध का प्रभाव पड़ा । पहली सन्धि दृढ़ करली गई और सुल्तान

द्वारा चार्ल्स के लिये प्रार्थना की गई कि वह चला जाय। एक बड़ा रक्षा दल और बड़ी धनराशि उसके लिये रखी गई। किन्तु चार्ल्स ने यह विचारते हुए कि तुर्की में ठहरने से वह ग्रांड वजीर बालताड्जी से उसी प्रकार बदला ले सकेगा जिस प्रकार उसने पहले उसके पूर्वाधिकारी ग्रांड वजीर से लिया था, बाहर जाने से इन्कार कर दिया। चार्ल्स के सभी उतावले और सभी अबोध्य कार्य सदैव उससे हीन शत्रुओं पर विजय पाने के दृढ़तापूर्ण संकल्प और तुच्छ वैयक्तिक अरुचियों के कारण हुए थे, फिर भले ही उनके लिये कुछ भी मूल्य क्यों न चुकाना पड़े।

स्टेनबोर्क की सेना का आत्मसमर्पण

रूस-तुर्की युद्ध की समाप्ति से स्वीडन के अनेक शत्रुओं को चार्ल्स बारहवें के अभागे देश पर पुनः आक्रमण करने का साहस हो गया। डेनिश सैनिकों ने 1712 मे ब्रेमेन पर आक्रमण किया और देश से बाहर अपने राजा की बार-बार मांग पर स्वीडन ने बड़ी कुर्बानी के बाद आखिरकार जर्मनी को एक सेना और समुद्री बेड़ा भेजा, सेना को पौलैंड या डेन्मार्क में जैसी भी स्थिति हो, आक्रमण करने के लिये तैयार रखना था। इस सेना की स्थिति जो पूर्व में सेक्सन और रूसियों और पश्चिम में डेनों के बीच थी जल्दी ही चिन्ताजनक हो गई, परन्तु इसके सेनापति स्टेन्बोक के एक निर्णायक धावे से पुल्टावा जैसी हालत होने से बच गई। पहले वह डेनों से निपटा और उन को गेडेबुश के स्थान पर पहुंच कर एक घमासान लड़ाई में हराया, तत्पश्चात अल्तोना को नष्ट किया गया (28 दिसम्बर 1712), किन्तु टोनिंग के स्थान पर उसे 16 मई, 1713 को अपने 11000 सैनिकों के साथ अपने से उत्तम सैनिकों के आगे आत्म समर्पण करना पड़ा। इस पराजय के फलस्वरूप प्रशा ने स्टेटिन ले लिया और रूस ने फिनलैंड पर धावा बोल दिया। उस दिन से स्वीडन एक बड़ी जर्मन शक्ति नहीं रहा, वह अब बाल्टिक का प्रभुत्व खो चुका था।

चार्ल्स विश्व को 'चकाचौंध' करना चाहता है

यूट्रेक्ट संधि वार्ता के दौरान चार्ल्स को ग्रेटब्रिटेन की मध्यस्थता स्वीकार करने के लिए कहा गया था, किन्तु ब्रिटेन द्वारा तुर्की में उसका विरोध करने और अल्ट्रास्टेड्ट तथा ट्रेवेंडल की सन्धियों के प्रतिपादन में जिसके लिए वह वचन बद्ध था ब्रिटेन की असफलता के कारण चार्ल्स की उसके प्रति इतनी कटु भावनायें हो गई थी कि फ्रांस की हर वस्तु के प्रति गहरी घृणा होते भी उसे फ्रांस से निवेदन करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसके साथ उसने स्टेनिस्लास लेक्जिस्की को मुकुट त्याग की अनुमति देने से इन्कार करके स्थिति को और भी जटिल बना दिया, यद्यपि स्टनिस्लास स्वयं पोलिश राज्य के उत्तरदायित्व से मुक्त होने के लिए बहुत आतुर था, और इस प्रकार चार्ल्स ने अपने शत्रुओं की आपसी फूट से लाभ उठाने

का अवसर खो दिया। यदि उसमें कुछ राजनीतिक दूरदर्शिता होती तो वह पोलिश मामले को छोड़ देता, पोलिश गद्दी पर ऑगस्टस को बैठाने की अनुमति देकर सैक्सनी को कम से कम तटस्थ बना लेता, बेन्डर को छोड़ देता और अपनी प्रजा का राजा बन कर अपना भाग्य फिर सुधार लेता तथा विभिन्न लड़ाकू और लालची शत्रुओं से बाल्टिक प्रान्त वापस छीन लेता। यह कहना तो आसान है कि चार्ल्स को क्या करना चाहिए था किन्तु उसकी हठधर्मी को, उसका स्वीडन को वापिस लौटने या अपने मंत्रियों को लड़ाई में स्वतन्त्रता देने से इन्कार, रूस के विरुद्ध तुर्की के अतिरिक्त अन्य किसी से मैत्री करने की अनिच्छा, ऐसे युद्धों स्थलों पर, जो घर में और नाम-मात्रिक सेनापति के सदर मुकाम से समान दूरी पर थे, और अधिक स्वीडिश सैनिक भेजने का अलघनीय आदेश, उसका देश के सर्वोत्तम हितों सहित हर एक चीज को अपने महाविवेक शून्य विचारों की तुलना से गौणता और अन्त में, उसका अद्भुत अभिप्राय कि अपने तुर्क आतिथ्य करने वालों और हितकारियों की आज्ञा का उलघन करके यह समझना कि वह विश्व को चकाचौंध कर देगा, को क्षमा नहीं किया जा सकता।

कालीबलिक (फरवरी 1713)

सन् 1713 के पूर्वकाल में तुर्की की प्रमुख समस्या यह थी कि बेन्डर के इस प्रख्यात अतिथि से, जो अपने स्वागत काल से बहुत अधिक समय तक रुका हुआ था, किस तरह छुटकारा पाया जाये। जल्दी ही यह ज्ञात हुआ कि छोड़ने के लिए सूचना देना और निकाल बाहर करना दो भिन्न बातें हैं। उसे मार्ग व्यय के लिए 10000 पौंड दिये गये, यह राशि उसने समाप्त कर दी तथा और धन मांगा। 1713 के आरम्भ में वह और उसके अंगरक्षक वहां पूरी तरह जमने लगे। वह ऐसा बहाना भी नहीं कर सकता था कि तुर्की छोड़ने से उसकी जान को कोई खतरा था, न ही उसके पास अपने अतिथ्यकारों की सदिच्छा पर सदेह करने का कोई कारण था। वह ठहरने का आग्रह इसलिए नहीं कर रहा था कि उसे जाने में भय था क्योंकि व्यक्तिगत खतरे से बचने की अपेक्षा वह उसका स्वागत करता था। बेन्डर में रहने का सकल्प चार्ल्स पर हावी हो गया। मालूम होता है जो तुर्की की व्यग्रता और उसे हटाने के नये प्रयत्नों के अनुपात से अधिक दृढ़ होता गया। 1 फरवरी सन् 1713 को एक असाधारण संघर्ष आरम्भ हुआ जो कालीबलिक या बेन्ट के नाम से जाना जाता है। 50 व्यक्तियों की सहायता से चार्ल्स ने 10000 व्यक्तियों[1] के विरुद्ध आठ घंटे तक अपने भवन की रक्षा की। तुर्की के पास 12 तोपें थीं तो भी वे उसे निकालने में सफल न होते यदि शिकार का पता लगाने वाले

---

1 देखिए सेराओ कृत दाइ फील्डजुग चार्ल्स 12, 305।

पीटर्स धुंआ फैलाकर उसे बाहर न निकालते। जब इमारत उसके सिर पर जलने लगी तब भी चार्ल्स ने यह कहकर कि जब तक उसके कपडों[1] में आग न लगे तब तक वास्तविक खतरा नहीं है, आत्मसमर्पण करने से इन्कार कर दिया। अन्त में, मानो नरक में से तेजी से निकाल कर चार्ल्स ने घेरा डालने वालों पर आक्रमण किया किन्तु वह अपनी एडियों पर से गिर पड़ा और तुरन्त बन्दी बना लिया गया। इस 'लड़ाई' से तुर्कों को 200 व्यक्तियों की हानि हुई। स्वीडनों की मृत्यु संख्या 15 थी और जेनिसरी, जिन्होंने राजा को हिरासत में लिया उसके साहस का इतना आदर करते थे कि उन्होंने उसके जीवन का अन्त नहीं किया।

चार्ल्स का तुर्की से पलायन (सितम्बर 1714)

चार्ल्स को बन्दी बना कर प्रथ स्थिति तिमुरताश (timurtash) लाया गया। जून, 1713 में एड्रियानोपल की सन्धि द्वारा तुर्की और रूस का युद्ध बन्द हो गया और चार्ल्स षड़यन्त्र के अन्य अवसरों से वञ्चित हो गया। फिर भी उसने तुर्की छोडने से इन्कार कर दिया। उसने बीमार होने का बहाना किया और डमोटिका स्थान पर उसने बिस्तर में ही लगभग एक वर्ष व्यतीत किया। मार्च 1714 में स्वीडन से एक विशेष दूत चार्ल्स को अपने व्याकुल और बर्बाद देश में वापिस बुलाने की आशा से डमोटिका आया किन्तु सितम्बर, 1714 से पहले उसने तुर्की छोड़ने का निश्चय नहीं किया। वालेचिया, ट्रांसिल्वेनिया और ऑस्ट्रिया से होता हुआ वह 11 नवम्बर, 1714 को स्ट्रालसण्ड पहुंचा और इस प्रकार अन्त हुआ उस सबसे प्रसिद्ध देश निर्वासन का जो कभी किसी शासक राजा ने अपने ऊपर स्वय प्रयुक्त किया हो।

स्वीडन का त्याग

जब चार्ल्स जर्मनी में वापिस लौटा, तो तीन स्वीडिश सेनायें–उसकी निजी, क्रासा, और स्टेनबोक की–पहले ही बिखर चुकी थीं और स्वीडन के उपनिवेशों में से केवल स्ट्रालसुण्ड और विस्मार उसके पास शेष रह गये थे। कुछ समय तक चार्ल्स के सम्बन्ध में स्वीडन में ऐसा विश्वास किया जाता था कि या तो वह मर गया है अन्यथा पागल हो गया है, राष्ट्रीय वित्त की दशा निराशाजनक थी और वार्षिक घाटा कुल आय से दुगुना था। दिवालियापन और आक्रमण सन्निकट दिखाई देते थे, 14 वर्ष तक देश बिना शासक के रहा तो भी उसे शासन करने की मनाही थी। यह उस भावना की अत्यधिक प्रबलता थी जिससे राजतन्त्र की संस्था लोगों को प्रेरणा दे सकती थी, जिस कारण इस समूची अवधि में स्वीडन ने कभी गिला नहीं किया। उन्होंने राष्ट्रीय जीवन के ततुओं को इकट्ठा रखने के प्रयत्नों में अपने

1 निसबेतबेन, चार्ल्स 12 एफ. एफ.।

आपको ऐसी मर्यादा में रखा जैसी पहले कभी सुनी न थी। शासक वर्ग ने अनिवार्य भर्ती आरम्भ कर दी जिससे किसान जगलों में भाग गये या अपने आपको निश्चित कठिनाइयों और लगभग उतनी ही निश्चित मृत्यु से बचाने के लिये जो राजा की सेवा में जाने से उनके लिये हो सकती थीं, उन्होंने अपने अंग काट लिये। चार्ल्स के युद्धों से स्वीडन के युवकों की संख्या में इतनी कमी हो गई जितने नेपोलियन के युद्धों से फ्रांस में भी न हुई थी और उसके सर्वोत्तम युवकों की संख्या में वार्षिक कमी होने के फलस्वरूप स्वीडन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़े बिना न रह सका। इन वर्षों में स्वीडन की 30 प्रतिशत पुरुष जन संख्या का या अठारह वर्षों के समय में औसतन लगभग 8000 पुरुषों का वार्षिक ह्रास हुआ। चूंकि वहां की कुल जनसख्या लगभग दस लाख थी यह स्पष्ट था कि यदि युद्ध जारी रहते तो क्या परिणाम निकलते। स्वीडन सीनेट में यथेष्ट रूप से राजनीतिक बुद्धि सम्पन्न व्यक्ति थे और स्वीडिश जनरलों में और भी अधिक सैनिक बुद्धिमता थी जिससे उन्होने उत्तर के युद्ध का स्वीडन के अनुकूल शर्तों पर अन्त किया, किन्तु सीनेट अशक्त थी, उनकी सर्वाधिक गम्भीर शिकायतों का कोई परिणाम नहीं होता था। जिस राष्ट्र ने पन्द्रहवर्षीय युवक के हाथों में निरकुश सत्ता सौंप दी वह स्वयं उसका फल भोग रहा था। अब तक चार्ल्स जीवित था, स्वीडन के पास अपने राजा की आज्ञा के उलघन या पुरुषत्व के क्षय के अतिरिक्त और कोई विकल्प न था। पहले विकल्प पर कभी विचार भी नहीं किया गया और दूसरा केवल चार्ल्स की मृत्यु से टला।

स्ट्रालसण्ड का घेरा (जुलाई–दिसम्बर 1715)

चार्ल्स के स्ट्रालसण्ड के आगमन के समाचार से समस्त स्वीडन में विशाल प्रदर्शन हुआ जो उस समय बहुत कम हो गया जब उसने यह कहला भेजा कि उसे 20000 आदमियों की सेना की तुरन्त आवश्यकता थी, यह सत्य है कि सेना की शीघ्र आवश्यकता थी, क्योंकि प्रशा जो स्टेटिन ले चुका था, द्रुतगति से अपने अधिकार स्वीडिश पोमरेनिया में बढ़ा रहा था। प्रशा के फ्रेडरिक ने स्वीडन के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी, होवर का एलेक्टर जो अब इंगलैण्ड का राजा हो गया था, स्वीडन के लूट के माल में हिस्सा लेने के लिये प्रशा, रूस और डेन्मार्क से मिल गया। 1715 के मध्य में श्रान्त स्वीडन, रूस, प्रशा, पोलैंड, सेक्सनी, हनोवर और डेन्मार्क से युद्ध की स्थिति में था, किन्तु स्ट्रालसण्ड में चार्ल्स को अपने 17000 सैनिकों सहित पहले की भांति पूर्ण विश्वास था और उसने सन्धि के किसी प्रकार के सुझाव सुनने से बिल्कुल इन्कार कर दिया। जुलाई 1715 में स्ट्रालसुण्ड का घेरा आरम्भ हुआ और दिसम्बर में शहर का, जो कुछ शेष रहा वह शत्रु के अधीन हो गया। 13 दिसम्बर को चार्ल्स

स्वीडन में उतरा और सम्भव था कि यदि वह स्वीडिश प्रदेश में से एक इंचभूमि भी छोड़ने से इन्कार करने परदृढ़ प्रतिज्ञ न होता तो उस समय भी वह होने वाली बर्बादी में से कुछ बचा सकता था। ग्रांड वजीर गोर्ट्ज के रूप में उसने एक चतुर, यद्यपि संदिग्ध सलाहकार पाया जिसने देखा कि स्वीडन के लिये यदि कोई आशामय किरण है तो वह शत्रुओं की पारस्परिक ईर्ष्या में है जो उनमें फूट डाल देगी, किन्तु चार्ल्स की हठधर्मी ने यह अवसर भी खो दिया।

चार्ल्स की मृत्यु (1719)

उसका शेष जीवन दूसरे काल से सम्बन्ध रखता है। 1719 में उसने नार्वे पर आक्रमण किया और 30 नवम्बर को जब वह फ्रेडरिक शाल्ड का घेरा डाले हुए था, उसे किसी छिपे व्यक्ति द्वारा धोखे से मार दिया गया। उस समय वह 38वें वर्ष में था। उसके परामर्शदाता गोर्ट्ज को, जिसे चार्ल्स के जीवन के अन्तिम कार्यों के लिये अनुचित रूप से दोषी ठहराया गया, बन्दी बना लिया गया और उसका वध कर दिया गया। उत्तर के दूसरे महायुद्ध का अन्त 1721 में नीस्टाड की सधि (treaty of nystadt) द्वारा हुआ। स्वीडन ने लिवोनिया, एस्थोनिया, इंग्रिया और कोलिया रूस को दे दिये। जर्मनी में उसके अधिकृत प्रदेश पहले ही प्रशा[1] के कब्जे में आ चुके थे और इस प्रकार उसने अपनी महत्ता के दावे छोड़ दिये।

---

1 पश्चिम पोमेरेनिया के अतिरिक्त।

अध्याय 12

ऑटोमन और स्लाव : पोलैंड, रूस और तुर्की

स्लाव जाति

17 वीं शताब्दी के देशभक्त क्रिजानिच (Kvijanitch)[1] ने जार अलेक्सिस मिखेलोविच को समर्पित एक पुस्तक में लिखा था : "स्लाव जाति छः शाखाओं में बटी हुई है—रूसी, पोल, चैक, बल्गार, सर्वियन, और क्रोट। पहले सभी राष्ट्रीय राजा थे, अब केवल रूस का ही एक ऐसा राजा है जो अपनी भाषा बोलता है। शेष तमाम स्लाव विदेशियों के अधीन हैं। स्लावों का कोई इतिहास लेखक नहीं हैं।" यह पुस्तक स्लावों की सारभूत एकता सिद्ध करने के अभिप्रायः से लिखी गई थी और इसमें उनकी सामान्य भाषा और संस्कृति बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत की गई थी। स्लाव उस समय, जैसा अब भी है, यूरोपियनों में सबसे अधिक बटे हुए लोग थे। यह एक महान् असमुद्रतटीय जाति थी जिसकी प्रगति उसके चहुं-ओर स्थित बाल्टिक, एड्रियाटिक, कालासागर और कैस्पियन समुद्रों से सीमित थी। भौगोलिक दृष्टि से प्राचीन काल में रोम और बाइजेण्टिअम में विभक्त पुरातन स्लोवानिया कभी भी एक सम्बद्ध राज्य नहीं बनाया गया था। चरवाहों और सैनिक तत्वों से मिश्रित इस जाति ने रोम साम्राज्य के विघटन में कोई भाग नही लिया था। स्वतंत्रता-प्रेमी स्लाव इतने शक्ति-शाली नहीं रहे कि वे सदा स्वतत्र रह सकें अथवा उसका आनन्द ले सकें।

पोलैंड की भूमिका

प्रस्तुत अध्याय में पोलैंड और रूस का कुछ विस्तार से वर्णन अपेक्षित है। इन राज्यों का इतिहास स्लाव जाति के परम्परागत शत्रु तुर्की के इतिहास के सदर्भ में वर्णित किया जायेगा। ऐसा लग सकता है कि ऐसे तीन देशों का इतिहास एक ही अध्याय में लिखने से ऐक्य बनाये रखना असम्भव है किन्तु पोलैंड के गणतन्त्र के भाग्य का फैसला करने में—जिसका अपना कोई इतिहास नहीं रहा है ऑटोमन और स्लावों के संघर्षों ने मुख्य भूमिका अभिनीत की है। अतः 17वीं शताब्दी के इतिहास में पोलैंड और पोलों द्वारा जो योगदान दिया गया वही विचार का मुख्य विषय है। 17 वीं शताब्दी के अन्त तक रूस पूर्णतया अपने मस्कोवाइट अन्धकार से निकल आया और पीटर महान् के अधीन एक बड़ी शक्ति बन गया। फलतः

---

1 ल लेगर कृत ल मोंदे स्लेव 308।

इस अध्याय की समाप्ति इस राजा के प्रशासनिक सुधारों के वर्णन के साथ की जावेगी जिसने रूस का नवीनीकरण करने की चेष्टा की ।

सितवा तोरोक की संधि (1606)

उन युद्धों और विजयों का, जिनमें ये तीनों राज्य संघर्षरत थे, वर्णन करने से पूर्व प्रसंग के केवल उस भाग का संक्षेप में वर्णन करना उपयुक्त होगा जो प्रधान विषय से सरलतापूर्वक अलग किया जा सकता है, अर्थात् यूरोप मे तुर्की का आन्तरिक इतिहास । तुर्की के इस काल का आन्तरिक इतिहास शीघ्र ही सुलभ किया जा सकता है । प्रतापवान सुलेमान के राज्य (1520–1566) के बाद दुर्बल और स्त्रैणभाव सुल्तानों का क्रम बन गया सम्भवतः यह क्रम मुराद चतुर्थ जैसे प्रबल शासको द्वारा कभी-कभी ही तोड़ा गया । सुलेमान के प्रपौत्र मुहम्मद तृतीय ने 1595 से 1603 तक राज्य किया और उसके बाद उसका 14 वर्षीय पुत्र अहमद प्रथम उत्तराधिकारी बना । उसका राज्यारोहण इसलिये स्मरणीय है कि उसके भाई को जीवित रहने दिया गया । अपने बड़े वजीर मुराद के संरक्षण में अहमद का कुशल शासन सामान्यतया सफल कहा जा सकता है । एशिया और यूरोप के सीमान्तों की कुशलतापूर्वक रक्षा की गई तथा नवम्बर 1606 मे हैप्सबर्गों के साथ सीमा-सम्बन्धी युद्ध का सितवा तोरोक की संधि द्वारा अन्त किया गया । इस संधि द्वारा सुल्तान ने कनिस्चा और ग्रीन ले लिये, उसने एकत्रित की गई रकम को स्वीकार करके वार्षिक कर का अपना दावा छोड़ दिया और तुर्की द्वारा रक्षित बोकसे को हैप्सबर्गो के अधीन ट्रांसिल्वेनिया का राजकुमार [1] मान लिया गया । इस संधि का महत्व इसलिये है कि अब तुर्की यूरोप की कूटनीतिक व्यवस्था मे सम्मिलित हो गया । वार्षिक कर के दावे को त्याग कर उसने इस तथ्य को मान लिया कि सब विदेशी उसके अधीनस्थ राज्य को स्वीकार नहीं करेंगे, और यद्यपि उसको कुछ और प्रदेश मिल गया था तथापि उसने कुछ समय के लिये साम्राज्य के विरुद्ध अपनी महत्वाकांक्षी योजनायें छोड़ दी । संधि द्वारा यद्यपि ट्रांसिल्वेनिया की मगयार जनसंख्या को आंशिक स्वतंत्रता दे दी गई किन्तु व्यावहार मे उन पर यह निर्णय करने की आवश्यकता आ पड़ी, कि तुर्कों या हैप्सबर्गों में से वे किसकी मित्रता पसन्द करेंगे । इस प्रकार ईसाई और ऑटोमन साम्राज्यों की सीमा निर्धारण की मुख्य समस्या अनिश्चित छोड़ दी गयी ।

उस्मान द्वितीय (1618–1622) और मुराद चतुर्थ (1623–1640)

अहमद प्रथम की 1617 में मृत्यु के पश्चात उसके भाई मुस्तफा का (जिसे नितांत मूर्ख होने के कारण 1618 में गद्दी से उतारा गया) और उसके चाचा

1 जिनकेसन कृत **गेसचीएत देस आससेनीचन रीचस**, 3, 620 ।

उस्मान द्वितीय (1618–1622) का 5 वर्ष तक कुशासन रहा । उस्मान मुख्यतया अपने लालच और निर्दयता के लिये प्रसिद्ध था । उसने नीस्टर के किनारे विवादग्रस्त कोसेक भूमि के अधिकार के लिये पोलैंड से युद्ध किया, किन्तु 1621 में खोजिम के प्रचारों के सम्मुख उसकी असफलता सर्वनाशकारी हुई । इसे राष्ट्रीय दुर्विपाक समझा गया । जब उस पर यह सन्देह हुआ कि वह मिस्र के भाड़ैतों को कुस्तुन्तुनिया[1] में असंतुष्ट लोगों के विरुद्ध प्रयुक्त करना चाहता है तो 28 मई, 1622 को जेनिसरियो द्वारा उसका वध कर दिया गया । अल्पबुद्धि मुस्तफा को दूसरी बार फिर शासक बना दिया गया और 15 मास के नाम मात्र के शासन के पश्चात उसे फिर गद्दी से उतार दिया गया । उसका पुत्र मुराद चतुर्थ ऐसे वर्ष (1623) गद्दी पर बैठा जो तुर्की गाथाओं में फारस के राजा, अब्बास महान् द्वारा बगदाद पर अधिकार करने के कारण प्रसिद्ध है । नये सुल्तान ने, जिसने 1632 में व्यस्कता प्राप्त की, अपनी क्रूरता से, जिससे ग्रीक धर्म-कुलपति[2], और विदेशी निवासी भी नहीं बच सके, तुर्की को भी भयभीत कर दिया । उसके चार भाइयों में से दूसरे दोनों को भयभीत करने के लिये दो भाइयों का वध कर दिया गया और अन्त में केवल एक बचा । वह अयोग्य न होते हुए भी अस्थिर और रक्त-पिपासु था, किन्तु उसने कम से कम अराजकता और भ्रष्टाचार को, जो पिछले कई वर्षों से शासन में स्थायी बन गये थे, रोक दिया । इसके साथ उसने पर्शियनों के विरुद्ध सफल युद्ध करके और उनकी 30000 सेना को तलवार के घाट उतार कर 1638 में पुनः बगदाद ले लिया । स्पाही और जेनिसरी उससे डर गये और उन्होंने उसकी आज्ञाकारिता की शपथ ली । सामन्ती कानून की एक नई संहिता चलाई गई, राजस्व का पुनर्गठन किया गया और 200000 सेना तैयार की गई। इसके साथ ही प्युरिटन राज्य चलाया गया, कॉफी के होटल बन्द कर दिये गये, और तम्बाकू की मनाही कर दी गई । कुस्तुन्तुनिया की गलियों में अर्ध-रात्रि में भ्रमण के दौरान सुल्तान यदि किसी को भी अपनी घोषणाओं की अवहेलना करने का अपराधी पाता तो उसका अपने हाथों से वध कर देता था । यह संहारक नैतिक निरीक्षक फरवरी, 1640 में 29 वर्ष की आयु में परलोक सिधारा ।

इब्राहिम प्रथम (1644–1648)

मुराद के पश्चात उसका एक जीवित भाई इब्राहिम प्रथम गद्दी पर बैठा ।

---

1 जिनकेसन, पूर्व उद्धृत, 3,742 ।

2 वही, 4,372–8 । जैसुइटों पर इस बात के लिये संदेह किया जाता था कि कुलपति पादरी की हत्या कराने के लिये सुल्तान को रिश्वत दे रहे थे तथा अपने इच्छित व्यक्ति को पदासीन कराना चाहते थे ।

उसका जीवन इसलिये बचा था कि वह उतना ही स्त्रैणपूर्ण था जितना मुराद पुरुषार्थ पूर्ण[1]। उसने अपने चरित्र में निर्दयतालाने में देर नहीं की। बड़े वजीर का वध केवल इसलिये करवा दिया गया कि अन्तःपुर उसे नहीं चाहता था। साम्राज्य के सब ईसाइयों के वध के आदेश भी दिये गये (सौभाग्य से वे कार्यान्वित नहीं हुए)। 1645 में कैण्डिया (क्रीट) पर अधिकार के सम्बन्ध में वेनिस से बहुत विवाद हुआ। राज्य के अन्दर 'महामूर्ख' मुस्तफा के राज्य का निकृष्टतम समय फिर आ गया, एक बार फिर नारी–प्रभाव सर्वोपरि बन गया। अन्त में कोसेक और वेनेशियनों ने साम्राज्य पर धावा बोल दिया। जब यह देखा गया कि अराजकता का विकल्प केवल विद्रोह हो सकता था तो इब्राहिम को राज्यच्युत कर उसका वध कर दिया गया तथा उसके स्थान पर उसका एक सात वर्षीय पुत्र गद्दी पर बैठाया गया।

मुहम्मद चतुर्थ (1648–1687) : क्यूप्रिली

बालक मुहम्मद चतुर्थ (1648–1687) ने अपना राज्य अपनी दादी के सरक्षण में आरम्भ किया और उसकी लम्बी अवस्यकता तक देश का शासन सेना की दया पर रहा, यहां तक कि बड़े वजीर भी उनके हाथों की कठपुतली थे। इसके अतिरिक्त बालक सुल्तान की रूसी माता और यूनानी दादी की लगातार स्पर्धा से राष्ट्रीय अव्यवस्था और अधिक बढ़ गई। युवा होने पर मुहम्मद मे अपने दादा की कठोरता वाली विशेषतायें दृष्टिगोचर होने लगीं। राजधानी में रात्रि के जलूस निकालने में वह दादा की नकल करता था और विक्षिप्तों की तरह अपने शिकार का पीछा करता था। किन्तु उसका राज्य बड़े वजीरों के एक प्रसिद्ध वंश द्वारा प्रबल और कुशल शासन का सूत्रपात करने के कारण स्मरणीय है। इस वंश क्यूप्रिली[2] का संस्थापक सत्तर वर्षीय मुहम्मद क्यूप्रिली, एक अल्बानियन था। वह सुल्तान की माता द्वारा अधिकारारूढ़ किया गया। इससे पूर्ववर्ती राज्यों में बड़े वजीरों की विशेषता जल्दी–जल्दी एक के बाद दूसरे के उत्तराधिकारी होने की थी, किन्तु क्यूप्रिली ने नियुक्ति के समय अपनी शर्तें रखी और उसके बाद वह व्यावहारिक रूप में निरकुश हो गया। इस क्रूरतापूर्ण कुशल राज्य में, किसी को नहीं छोड़ा गया। ऐसा कहा जाता है, कि 1656 और 1661 के बीच, 30000 व्यक्तियों का वध किया गया, जेनिसरी, स्पाही (spahis), लुटेरो, प्रान्तीय गवर्नरों, शेख, असैनिक कर्मचारियो और एक धर्म कुलपति पादरी के साथ कठोर व्यवहार किया गया। उसकी मृत्यु के पश्चात 1661 में उसका पुत्र अहमद द्वितीय

1 वही 4,530।

2 वही, 5,261 एफ एफ।

क्यूप्रिली (1661–1676) उत्तराधिकारी बना। उसमें प्रशासनिक कुशलता के साथ–साथ पाण्डित्य और साहित्य के लिये संरक्षकता के गुण भी थे। उसका शासन उतना ही मानवीय था जितना कि उसके पिता का निर्दयी। 1676 में उसका उत्तराधिकार करा मुस्तफा को, जो पहले क्यूप्रिली का दामाद और बाद में सुल्तान का भी दामाद हो गया था प्राप्त हुआ। उसके चरित्र में तृष्णा एवं अपव्ययिता दोनों मिश्रित थीं। उनका दरबार शान में सुल्तान के दरबार से मामूली हल्का था। उसमें कल्पना और सैनिक रूचि थी। वह नई ऑटोमन विजय के स्वप्न देखता था। वह वियना पर घेरा डालने वाले के नाम से प्रसिद्ध है तथा इसमें उसकी असफलता उसकी मृत्यु का कारण बनी।

मुस्तफा द्वितीय (1689–1703)

1689 में पहले क्यूप्रिली के पुत्र मुस्तफा जैदे[1] को बड़े वजीर का पद दिया गया। वह दो वर्ष पश्चात् सलंकेमन के युद्ध मे मारा गया, किन्तु उसका अल्पशासन न्याय, दृढता और ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध था। उसने मृत्यु–कर के स्थान पर धूम्रपान कर (smoking tax) लगाकर आधुनिकता के विचारों का परिचय दिया। उसने कुस्तुन्तुनिया और अलप्पो स्थित विदेशी व्यापारियों के पक्ष में प्रबुद्ध आर्थिक नीति का प्रतिपादन किया, इसके अतिरिक्त उसने स्वेच्छाचारितापूर्ण शोषण की अस्थिर नीति की अपेक्षा समान कर लगाकर राज्य की आय बढ़ाई। उसकी मृत्यु होना तुर्की के लिए दुर्भाग्यपूर्ण था। इस बीच सुलतान मुहम्मद चतुर्थ के बाद 1695 में उसका पुत्र मुस्तफा द्वितीय (1695–1703) गद्दी पर बैठा जिसने पोल, साम्राज्यवादी, और हंगरी में वेनेशियन मित्रराष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध छेड़े रखा। 1697 में जेन्ता में अपनी पराजय से निराश होकर उसने क्यूप्रिली प्रथम के भतीजे हुसेन अमूहजा–जैदे[2] (1697–1702) को बडा बजीर नियुक्त करके क्यूप्रिली वंश को पुनःस्थापित कर दिया। यह हुसेन था जिसने कार्लोविट्ज की सधि करके तुर्की को शान्ति प्रदान की और करों की वसूली स्थगित करके व आपसी सहयोग के नियम बनाकर सीमान्त जनता को तुर्की शासन से मेल बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। नौउमेन क्यूप्रिली को छोड़कर (जो 1710 में कुछ महिनों के लिए पदासीन था) हुसेन उन महान् क्यूप्रिली प्रशासकों में से अन्तिम था जिनमें से सब ने तुर्की के राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में फैली हुई दूषित प्रवृत्तियों को दूर करने के लिये कुछ योग दिया था। इसका श्रेय मुख्यतः इन्हीं लोगों को हैं जिनके कारण 17वी शती में आटोमन साम्राज्य यूरोप में अपने पैर जमाये रहा और 18वीं शती में उसने

1 वही, 5,288।

2 वही, 5,302।

पूर्वी समस्या (eastern question) उत्पन्न की। सुल्तान मुस्तफा द्वितीय के पश्चात् उसका भाई अहमद तृतीय (1703–30) उत्तराधिकारी बना जिसके राज्य में ग्रांड वजीरों का प्रभाव उसी अनुपात में घटता गया जिससे रनवास का प्रभाव बढ़ता गया।

पोलेन्ड के वासा राजा .

पोलेन्ड

17वीं शती के पोलेण्ड के गणतन्त्र का विप्लव पूर्ण इतिहास तुर्की के घरेलू मामलों के अपेक्षाकृत घटना–शून्य इतिवृत्त की तुलना में भिन्नता उपस्थित करता है। टर्की के गर्भस्थ इतिहास का बहुत–कुछ भाग बधिक द्वारा समाप्त कर दिया गया था। शती के प्रारम्भिक वर्षों में पोलेन्ड, वासावंश की बड़ी अथवा कैथोलिक शाखा के, जिसका प्रतिनिधित्व पोलेन्ड का राजा सिगिसमण्ड तृतीय (1587–1631) करता था, और छोटी अथवा प्रोटेस्टेन्ट शाखा जिसका प्रतिनिधि स्वीडन का राजा चार्ल्स नवम था, पारस्परिक झगड़ों में व्यस्त रहा। सिगिसमण्ड, जो जैसुइट पंथ में श्रद्धा रखता था, कुछ शिक्षित और आकर्षक व्यक्तित्व का मनुष्य था। सम्भव था वह पोलेण्ड के लिये बहुत से कल्याणकारी कार्य करता यदि वह अपने साधनों को व्यर्थ के विदेशी धन्धों में नष्ट न करके घरेलू कार्यों के लिये जुटाता। यह उसके उत्तेजना प्रधान स्वभाव के अनुकल ही था कि उसने 'झूंठे डेमेट्रिअस,' और मस्कोवी राज्य के लिए अपनी उम्मीदवारी, के पहले स्वयं अपने लिये और फिर अपने पुत्र लेडिस्लास के लिये, दावों का समर्थन किया और इन दावों के कारण यह चार वर्ष तक (1609–1613) रूस से युद्ध करता रहा। स्वीडन के साथ मुख्यतया पोलेन्ड के बाल्टिक क्षेत्र में रुक–रुक कर लड़ाई चलती रही (1617–1629), और इसका सबसे महत्वपूर्ण परिणाम निकला स्वीडन द्वारा लिवोनिया पर अधिकार जो अल्टमार्क (altmark) के (सितम्बर, 1629) युद्ध विराम द्वारा दृढ़ हो गया। इस प्रकार सिगिसमुंड की नीति ने प्रतिस्पर्धियों को शक्तिशाली बना दिया और तीस वर्षीय युद्ध में प्रोटेस्टेन्टों के पक्ष में स्वीडन द्वारा हस्तक्षेप करना सभव हो गया।

सिगिसमण्ड तृतीय (1587–1631)

सिगिसमण्ड ने सम्राट् रुडोल्फ द्वितीय की, एक के बाद दूसरी, दो भतीजियों से विवाह किया और इस प्रकार पोलिश आस्ट्रियन मित्रता की परम्परा आरम्भ हुई। तीस वर्षीय युद्ध में उसने सम्राट के पक्ष में भाग लिया, किन्तु यह द्विपक्षीय भाग था क्योंकि यदि एक ओर उसकी सम्राट से मित्रता और स्वीडन से निरन्तर शत्रुता कैथोलिक पक्ष के लिए लाभदायक थी, तो दूसरी ओर उसके प्रदेश अति-

विस्तृत होने के कारण बाह्य आक्रमण के लिए आमन्त्रण थे और यह धमकी ऐसी थी कि इसके विरुद्ध पोल राष्ट्रीय साधन बिल्कुल अपर्याप्त थे। इसके अतिरिक्त जर्मन मामलों में हस्तक्षेप करने से पूर्व की ओर से भी चिन्ता बढ़ गई। सिगिसमंड ने सम्राट् की बेथलन गेबर (be'hlen gabor) के विरुद्ध सहायता की, इसके बदले में उन्होंने पोलेण्ड के विरुद्ध तुर्की की सहायता मांगी। तुर्की उस समय डेन्यूब के किनारे के छोटे-छोटे प्रदेशों का दमन करने में व्यस्त था, उसने अभी मोल्डेविया पर प्रभुमता प्राप्त की थी तथा इस सफलता के बाद खोजिम पर अधिकार किया गया जो वोल्हानिया में जाने वाले मार्ग पर नियन्त्रण रखता था। पोल सैनिकों ने खोजिम पर तुर्की का वीरता से सामना किया और 1621 में इसे सुल्तान उसमान से फिर वापिस लेने पर पोलेन्ड ने तुर्की को खोजिम की सन्धि करने पर बाध्य किया फलत: मोल्डेविया फिर ईसाई शासन में आगया तथा तुर्की और पोलेन्ड के राज्यों के बीच अवरोधक के रूप में स्थापित किया गया। सिगिसमण्ड के भाग्य से सुलतान उसमान के उत्तराधिकारियों में पहले एक प्रज्ञा दुर्बल मुस्तफा था और उसके बाद मुराद चतुर्थ था जिसने यूरोपियन की अपेक्षा एशियाई सीमान्तों की ओर अधिक ध्यान दिया। उसी समय (1622) गुस्टवस अडोल्फस रीगा और कोर्लेण्ड का एक भाग जीतने के बाद युद्ध विराम स्वीकार करने के लिए मान गया। माइकेल रोमानोफ को आन्तरिक कठिनाइयों के कारण स्मोलेन्स्क (1611 में विजित) को पोलेन्ड के अधिकार में छोड़ना पड़ा और इस प्रकार 1623 में पोलेण्ड ने अपनी समस्त सीमाओं पर शांति के असाधारण सुख का अनुभव किया।

अल्टामार्क की युद्ध-विराम सन्धि (1629)

यह मध्यान्तर उस समय समाप्त हो गया जब 1625 में स्वीडन के साथ युद्ध फिर आरम्भ हो गया। गुस्टवस के सैनिकों ने लिवोनिया, कोर्लेण्ड और रायल प्रशा पर धावा बोल दिया। तीन वर्ष के भीतर ब्रून्सबर्ग, अल्बिग, मेरियनबर्ग और वार्मिया के बिशप-क्षेत्र पर अधिकार कर लिया गया। इसी बीच तातारों ने यूक्रेन और लिटिल पोलेण्ड पर धावा बोला और इस प्रकार वारसा तक को खतरा उत्पन्न हो गया। इस संकटपूर्ण समय मे फ्रांसीसी कूटनीति ने हस्तक्षेप करके सिगिसमण्ड की स्थिति को बचा लिया तथा चरनेसे की सहायता से अल्टमार्क में सितम्बर 1629 को छ: वर्ष की युद्ध-विराम-सन्धि पर हस्ताक्षर हो गये। इस विराम-संधि द्वारा सिगिसमण्ड ने गुस्टवस को स्वीडन का राजा मान लिया और उसको अल्बिंग, पिलाओ और मेमेल के प्रशन बन्दरगाह सहित लिवोनिया दे दिया तथा साथ में डेन्जिग का चुंगी-धन भी दिया। वरीय वासा के साथ झगड़े से मुक्ति पाकर तथा प्रशन टापू की बृहत आय हाथ में आ जाने के पश्चात् गुस्टसवस अब अपनी समूची शक्ति जर्मनी की लड़ाइयों में लगाने योग्य बन गया।

इस प्रकार 1631 में समाप्त होने वाले सिगिसमण्ड के राज्य में लगभग निरन्तर युद्ध चलता रहा। यद्यपि ये युद्ध जोश व सफलता के साथ लड़े गए, किन्तु उनका कोई ठोस परिणाम न निकला। अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पोलेन्ड में उसके राज्य में जैसुइटों की निश्चित विजय हुई और दरबार इसके अधीनस्थ हो गया। जैसुइटो द्वारा यह प्रभाव बिना विरोध प्राप्त नहीं हुआ था, 1605 में कुलीनों की एक बडी सख्या ने जैसुइटों को निकाल बाहर करने और सीनेटरों की एक छोटी स्थायी कौंसिल स्थापित करने की माग की थी, किन्तु युद्ध-क्षेत्र में उनकी पराजय ने पोलिश राज्य पर धर्मिक प्रभाव को दूर करने की सब आशाओं पर पानी फेर दिया। सिगिसमण्ड दो पुत्र छोडकर मरा था, लडिसलास और जॉन केसिमिर, जो क्रमश: उसके उत्तराधिकारी बने।

रूस पर पोलैंड का आक्रमण (1634)

लडिसलास चतुर्थ का राज्य (1631-1648) रूस पर आक्रमण से आरम्भ हुआ, किन्तु वह मस्कोवी राज्य को न हथिया सका। इसलिए लडिसलास मास्को पहुंचने पर वार्ता के लिये तैयार हो गया। विआज्मा की संधि[1] (1634) द्वारा पोल राजा ने मास्को के राज्य पर अपने सब दावे त्याग दिये इसके बदले में जार ने पोलिश बाल्टिक प्रान्तों और व्हाइट रूस और सेवेरिया के सब दावे त्याग दिये। सम्राट् फार्डिनेण्ड द्वितीय की बहिन से विवाहित लडिसलास की रूचि वस्तु-कला में अधिक थी। उसने अनेक पाश्चात्य सुन्दरता की विशिष्टतायें प्रारम्भ कीं, सड़कें और पुल बनाये और वारसा को वास्तविक राजधानी बनाया। अपने **पेक्टा कन्वेटा** (pacta conventa) में उसने सहिष्णुता की नीति अपनाने की कुछ गारंटिया दीं जो पुराने ग्रीक चर्च के अनुयाइयों के लिये विशेष लाभप्रद थीं। उसने रिशेलू के मित्र-मण्डल में फंसने से इन्कार कर दिया, किन्तु उसकी ऑस्ट्रियन पत्नी ने उसे उन सब लोगों में जो हैप्सबर्गों के प्रति अविश्वासी थे, अलोकप्रिय बना दिया। इसलिये कुलीनवर्ग जो उसकी इसलिये सबसे अधिक प्रशंसा करता था क्यों कि उसने देश को विदेशी बचनबद्धताओं से मुक्त रखा, दिन प्रतिदिन उसके आचरण पर कड़ी नज़र रखने लगा। परिणामस्वरूप राजा की स्थिति नाम-मात्रिक अध्यक्ष के समान रह गई। लडिसलास ने 1646 में अपना दूसरा विवाह नेवर्स के ड्यूक की लड़की मेरी लुई से किया। यह सबंध होने से पाश्चात्य संस्थायें स्थापित करने की गति और बढ़ गई और गणतन्त्र मदाम द मोतविल द्वारा लगाये आरोप से मुक्त हो गया कि पोलैंड के कुलीनवर्ग के पास 'रत्न बहुत हैं किन्तु कपड़ा

1 इसे कभी-कभी पोलेनकोवा की संधि भी कहा जाता है।

नहीं ।'[1] उसकी मृत्यु 1648 के पूर्वकाल में हुई, उसकी मृत्यु से वेस्टफेलिया की कांग्रेस मे जाने वाला पोलिश प्रतिनिधि–मंडल रूक गया । इस प्रकार पोलैंड को तीस वर्षीय युद्ध के फलस्वरूप कुछ लाभ न मिला, तथा वह उन थोड़े से राष्ट्रों में से था जिनका प्रतिनिधित्व संधि वार्ता में नहीं हुआ था ।

जॉन केसिमिर

पोलैण्ड के इतिहास में जॉन केसिमिर का लम्बा राज्य (1648–1668) सबसे अधिक विनाशकारी सिद्ध हुआ । वह सिगिसमुण्ड तृतीय का छोटा पुत्र था, कुछ वर्ष तक वह जैसुइट रहा और अभी उसे कार्डिनल का पद मिला ही था कि उसके भाई की अचानक मृत्यु से पोलैण्ड की गद्दी रिक्त हो गई । गद्दी के लिये अपना निर्वाचन हो जाने पर उसने भाई की विधवा से विवाह करने के लिये धार्मिक पद को एक तरफ रख दिया । उसकी प्रजा की सम्मति मे यह शासन का अशुभ आरम्भ था, उसका राज्यारोहण और समस्त यूरोप मे महान् अशान्ति का आरम्भ एक ही समय हुआ और इस व्यापक हलचल से पोलैण्ड बच नहीं सकता था । अतः यह आवश्यक है कि पहले इस व्याधि के स्त्रोत को जाना जाये ।

नीपर के कोसेक ।

17वीं शती मे यूक्रेन के विशाल घास के मैदान (steppes) पर कुछ कोसेक सम्प्रदायो का अधिकार था जिनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण बोरिस्थीन (नीपर) ओर डोन के निवासी थे । डौन–निवासी जार की नाममात्रिक अधीनता में थे और नीपर–निवासी जो पोलैण्ड के मित्र थे, मिश्रित जाति के थे जिनमें प्रधानतया बोस्नियन और तातार थे । उनमें भागकर आये हुये और साहसिक व्यक्ति भी सम्मिलित थे जो सैनिक वीरता के कारण एकता की डोर में बंधे हुए थे और वास्तव में वे ही इसे सिपाहियों ओर मजदूरों का गणतंत्र बनाते थे । इन नीपर या जपोरोजियन (zaporogean) कोसेकों का प्रधान निवास–स्थान इस बड़ी नदी के मुहाने वाली चट्टानों (पौरोजी) में था । वे समुद्री डाकू और लुटेरे थे[2] और जनमत से निर्वाचित अपने 'हेटमेन' के अधीन पड़ोसी जातियों में आतंक फैलाये रखते थे । कीव के पास स्थित अपने नगर ट्रेचीमिरोव में वे अपनी असंख्य लूट में प्राप्त माल संचित करते थे, वहाँ उनका शस्त्रागार, भाण्डागार और प्राचीन ग्रंथ थे । वे अपने अधिपति पोलैण्ड के अमूल्य मित्र हो सकते थे, किन्तु ऐसी युद्धकर्मा जाति की शत्रुता के खतरे पर ध्यान न देकर कुलीनवर्ग ने उन्हें भी उसी प्रकार सताना आरम्भ कर दिया जिस

---

1 एन. ए. द सालवेन्दी कृत **हिस्तौरे द्यू रोए जीन सोबिएसकी, 1, 175 ।**

2 जिनकेसन, **पूर्व उद्धृत**, 4, 493–7 ।

प्रकार वे किसानों को सताया करते थे। कोसेक पुराने ग्रीक चर्च के सदस्य थे और पोलेण्ड के प्रदेशों में जो उनके अधिकार में थे, उन्हे अपने मत का पालन करने की स्वीकृति प्राप्त करने के लिये मध्यस्थों को बहुत बड़ी धनराशि देनी पड़ती थी किन्तु पौलिश किसानों से भिन्न वे अप्रतिरक्षित न थे। इस समय बारूद के ढेर को जलाने के लिये केवल एक चिनगारी की आवश्कता थी जो पौलिस ज्लेस्टा(szlachta) ने पूरी तरह तैयार करदी थी।[1]

बोग्डन शमिएलनिस्की

बोग्डन शमिएलनिस्की कोसेक नेता था जिसमें सैनिक व राजनैतिक गुण थे और जिसने लेडिसलास के राज्य में ही अपने नेतृत्व में एकजहाजी बेडा कुस्तुनतुनिया ले जाने का प्रस्ताव रखा था क्योंकि यह सभव था कि कही पोल स्थल की ओर से तुर्की पर आक्रमण न करे, किन्तु यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया गया। पोलिश इन्टेन्डेन्ट द्वारा किसी सरकारी बहाने मे उनकी एक मिल (mill) जब्त कर ली गई, यह घटना उन उत्पीड़नों की पराकाष्टा बनी जो बहुत समय से उसे और उसके आश्रितों को सहने पड़ रहे थे। जब बोग्डन ने स्वयं आकर यह शिकायत की तो उसे कत्ल करने की कोशिश की गई और उसकी अनुपस्थिति में इन्टेडेण्ट (जेपलिस्की) ने कोसेक नेता की पत्नी से बलात्कार कर उसके पुत्र का वध कर दिया। जोगेरोजियन कोसेकों का एक एक आदमी इसके विरोध मे खड़ा हो गया, 'हेटमेन' की कमान में अब 300000 व्यक्ति इकट्ठे हो गये। जोल्टे वोडी पर पोलिश सेना को पराजित करके बोग्डन ने, 1648 के उत्तर काल में, रूसी और तातारी सहायक सेनाओं की सहायता से लम्बर्ग को घेर लिया। लम्बर्ग के पतन के पश्चात् इस विशाल सेना ने पोलैण्ड को रौंद डाला और जॉन केसिमिर को संधि के लिये प्रार्थना करनी पड़ी। कोसेकों ने यहूदी और जैसुइटों को देश से निकालने देने और जेपलिस्की को दण्डित करने की मांग की। पोलैण्ड ने यहूदियों को निकले का वचन दिया, किन्तु जैसुइटों को निष्कासित करना स्वीकार नही किया। अन्त में इसी प्रतिज्ञा के आधार पर और इन्टेन्डेंट के वध के बाद शान्ति स्थापित हुई।

पोलिश कुलीनों की कोसेकों के प्रति भावना

पोलिश कुलीन वर्ग यह बिल्कुल नहीं समझ सका कि वह बहुत सस्ते में छूट गया। उसने बोग्डन की सरल शर्तों को कमजोरी की निशानी समझा। 1650 में डायट ने विद्रोहियों को दंड देने पर विचार किया, कोसेक जान गये कि उनका लड़ाई करना व्यर्थ सिद्ध हुआ। इस बार झगड़े ने धार्मिक रूप धारण किया।

---

1 देखिये निसबेत बेन कृत स्लावोनिक यूरोप, अध्याय 10 एवं 11।

वोग्डन के मस्तिष्क में केथोलिकों के विरूद्ध आर्थोडोक्सों की लड़ाई छेड़ने की कल्पना हुई जिसमें विजेता, व्हाइट रूस, लिटवानिया और लिटिलपोलैन्ड, पारितोषक के रूप में पायेगा। इसी तरह जांन केसिमिर विद्रोहियों को विधर्मी समझता था। उसने साम्राज्य की सेना को बुलाकर अपनी शक्ति दृढ़ कर ली, उसने पोप इन्नोसेण्ट दशम से लोहे का टोप और खड्ग प्राप्त किया। जून 1651में शती की सबसे बड़ी लड़ाई वररंटेस्को में लड़ी गई जिसमें योद्धाओं की सख्या लगभग 5000000 थी। क्रीमिया के खाँन के विश्वासघात और तातारों के भाग जाने से वोग्डन की संख्यात्मक श्रेष्ठता का पासा पलट गया और विद्रोहियों की निर्णायक पराजय हुई। युद्ध विराम सघि की गई और दोनों ही पक्ष प्रत्याक्रमण के लिये फिर तैयार होने लगे।

बोग्डन श्मिएलनिस्की का चरित्र

कोसेकों को मस्कोवी से, जो उस समय शक्तिशाली अलेक्सिस माइखेलोविच द्वारा शसित था, सहायता मिलने की पूरी आशा थी। 1654 में उसने नियमपूर्वक अलेक्सिस से विनय की। उसने अपने ही स्वार्थों से प्रेरित होकर उस जाति की रक्षा का बोझ अपने ऊपर लिया जो उसकी जाति से कदाचित ही भिन्न थी और विधर्मियों द्वारा उत्पीड़ित थी। इसके साथ की अलेक्सिस को याद था कि पिछले दिनों एक अवसर पर असावधान पोलिश कूटनीतिज्ञ उसकी एक उपाधि लिखना भूल गये थे। परिणामस्वरूप पोलैण्ड पर रूसी एवं कोसेक द्वारा सामूहिक आक्रमण किया गया, जिसमें स्मोलंस्क, विलना और समूचा सेवेरिया रूस के लिये जीत लिये गये। 1657 में जब महान् 'हेटमेन' की मृत्यु हुई तो उसने पोलैण्ड का स्थान रूस को ग्रहण करते हुए देखा। बोग्डन और ओलिवर क्रामवेल के चरित्रों में विलक्षण साम्य है। दोनों लगभग बिल्कुल समकालीन थे, दोनों निर्माण की अपेक्षा विध्वंस करने में अधिक उपयुक्त थे तथा उन दोनों में हिंसा को जनमत से जोड़ने की शक्ति थी। परिणामतः दोनों के बाद एक राज्य नहीं बल्कि एक अयोग्य पुत्र बचा।

स्वीडन द्वारा पोलैण्ड पर आक्रमण (1655–1657)

1556–57 के वर्षों में कोसेक, तातार और रूस द्वारा आक्रमण किये जाने से इस समय पोलैण्ड सम्भवतः पश्चिमी यूक्रेन खो बैठता, फिर भी उसे मुक्ति मिल गई परन्तु आक्रामक के संगठित प्रतिरोध के कारण नहीं, और न ही कुशल नेतृत्व के कारण, अपितु एक चौथा आक्रामण और जुड़ जाने से–स्वीडन। ज्यों ही स्वीडन और मस्कोवाइट लगभग एक निराश्रित देश का बंटवारा करने के समान लक्ष्य के लिये एक दूसरे से मिले त्योंही उनमें विरोध होने लगा और कम से कम कुछ समय

के लिये गणतंत्र को, शत्रुओं की कमी से नहीं बल्कि अधिकता से, सुरक्षा मिली। 1655 की ग्रीष्म में स्वीडन का चार्ल्स दशम् जॉन केसिमिर को साइलेशिया में शरण लेने के लिए बाध्य करके वारसा में घुसा। कोनिसवर्ग की संधि[1], जिस पर जनवरी 1656 में स्वीडन और ब्रेन्डेनवर्ग के हस्ताक्षर हुए, पोलैण्ड के विभागीकरण की सन्धियों में प्रथम थी। केवल जब जातीय भावना और धार्मिक घृणाओं को उभाड़ा गया तो पोलैण्ड के नागरिकों ने आक्रमण का सामना किया। वास्तव में यह सुलगती हुई राष्ट्रीयता थी जिसे जैसुइटों ने हवा करके लपटों में बदल दिया और स्वीडों को रक्षात्मक युद्ध लड़ना पड़ा। रूस द्वारा स्वीडन के बाल्टिक प्रान्तों पर आक्रमण ने स्वीडिश राजा को यह पाठ पढ़ाया कि उसे अपने प्रदेश के निकट रहना चाहिये। दो वर्ष के सैनिक अधिकार के बाद, अन्त में जॉन केसिमिर का देश जुलाई 1657 में उसे वापिस कर दिया गया।

एँड्रुसोवो की संधि (1667)

आक्रामक युद्धों के तत्काल बाद गृह-युद्ध आरम्भ हो गया और बेरोजगार सिपाहियों के हर जगह घूमते हुए दस्तों द्वारा लूटपाट करने से फैली हुई अराजकता तथा उस सुगमता से, जिससे कुलीनवर्ग में असंतुष्ट तत्व सदा सशस्त्र संघटन बना सकते थे, लाभ उठा कर, एक लुबोमर्स्की नामक कुलीन ने आस्ट्रिया और ब्रेन्डेनबर्ग से मित्रता करके राजा के विरुद्ध 1663 में युद्ध घोषणा कर दी और उसके बाद कई भयंकर लड़ाइयां हुई। लुबोमर्स्की की 1667 में मृत्यु होने से जॉन केसिमिर का पीछा छूटा। पोलेण्ड के सौभाग्य से तुर्की केन्डिया की लड़ाई में संलग्न था तथा रूस का झुकाव मेल जोल की ओर था। एँड्रुसोवो की संधि द्वारा जिस पर जनवरी 1667 में हस्ताक्षर हुए, पोलैण्ड ने व्हाइट रूस का एक बड़ा भाग, सेवेरिया और नीपर से पूर्व का समस्त युक्राइन रूस को देकर शान्ति प्राप्त की। अन्तिम प्रदेश सम्भवतः पोलैंड के लिये ही सुरक्षित रख लिया जाता यदि वह अपने हितों में कोसेकों को लगा लेता। व्यावहारिक रूप में एँड्रुसोवो की संधि द्वारा पोलैण्ड का सीमान्त नीपर नदी के साथ-साथ हो गया। पराजय का प्रभाव राजा पर पड़े बिना न रहा। 1668 में केसिमिर ने राज त्याग कर दिया और पेरिस चला गया जहां उसे सेंट जर्मन देस प्रेस के पादरी की भूमि (abbacy) दी गई।

माइकेल विस्नोवस्की का निर्वाचन

जॉन केसिमिर के क्राउन के तीन उम्मीदवार थे न्युवर्ग का फ्रेडरिक विलियम, अंजीन का ड्यूक, और लॉरेन का ड्यूक। पहले दो फ्रांसीसी हितो के पक्षपाती थे और तीसरा हैप्सबर्गों द्वारा मनोनीत था। डायट के मत इन तीनों को बराबर मिले, इस

---

1 देखिये अध्याय 11।

प्रकार एक चौथे उम्मीदवार को अवसर मिला जो वहीं का कुलीन माइकेल विस्नोवस्की था, और जो 1669 में निर्वाचित हुआ था। उसने सम्राट लियोपोल्ड की बहन से विवाह किया और इस प्रकार आस्ट्रिया के साथ परम्परागत मैत्री बनी रही। अन्य बातों मे उसका राज्य अपने पूर्ववर्ती से भिन्न न था क्योंकि यह समय देश मे व्याप्त कलह और फूट का अटूट रिकार्ड था। सीमावर्ती प्रान्त कोसेक हैटमेन डोरोस्जेंस्को द्वारा लगातार बर्बाद किया जाता था, तातार मडियों में पोलिश कैदियों की इतनी अधिक भरमार थी कि तम्बाकू की एक चुटकी के बदले पुरानों के स्थान पर नये बदले जा सकते थे।[1] पोलैंड की इस अराजकता और असहायता का अनिवार्य परिणाम यह था कि राजा के विरुद्ध शीघ्रतापूर्वक षडयंत्र रचे जाने लगे। उसके प्रस्तावित उत्तराधिकारी विदेशी सहायता मांगकर भी षडयंत्र रचने लगे।[2] इसी बीच ऑटोमनों ने फिर धावा बोल दिया। 1669 में केण्डिया जीत लेने के बाद तुर्क सेना यूरोपीय प्रदेशों पर आक्रमण करने के लिये स्वतंत्र हो गई और नीपर वाले कोसेक डोरोस्जेंस्की के नेतृत्व में क्रियाशील हो गये। पोलेण्ड को अब तुर्कों की गम्भीर मारकाट का सामना करना पड़ा। जब तुर्की आक्रमणकारी लम्बर्ग पहुंचे तो भयभीत माइकेल इस खतरे को दूर करने के लिये हर शर्त स्वीकार करने के लिये तैयार था। बुकजेक की गुप्त सन्धि द्वारा (अक्तूबर 1672) उसने पोलिश यूक्रेन और पोडोलिया तुर्की को दे दिये तथा साथ में वार्षिक कर देना भी स्वीकार किया।[3]

लोकजिम की लड़ाई (1673)

पोलैण्ड में इस समय केवल एक ही सैनिक योग्यतावाला नेता जॉन सोवीस्की, राज्य का ग्रांड मार्शल था जो राजा को हटाकर एक फ्रांसीसी उम्मीदवार, लोंगुविले के ड्यूक को राजा बनाने के लिये षडयंत्र कर रहा था। कुछ अंशों में इन षडयंत्रों के कारण भी सोवीस्की तुर्कों की प्रगति को रोकने में सफल न हुआ। जब बुकजेक की सन्धि का पता चल गया तो सभी कुलीनों में भी क्रोध की भावना उमड़ पड़ी और इसके फलस्वरूप माइकेल का शत्रु के सम्मुख अपमानजनक समर्पण स्वीकार नहीं किया गया। सोवीस्की ने 40000 सैनिक लेकर[4] और

---

1 सालवेंदी, पूर्व उद्धृत, 1,349।

2 फ्रांसीसी षडयन्त्रों के लिये देखिये **इन्सट्रक्शन्स दोनीज**........(पोलैंण्ड), 46 एफ. एफ.।

3 जिनकेसन, पूर्व उद्धृत, 5,71।

4 सोबिसकी ने लुई चौदहवें के प्रति षडयन्त्रकारी योजनाओं का त्याग क्यों कर दिया? इस संदर्भ में **इन्सट्रक्शन्स दोनीज**........(पोलैंड), 33, देखिये।

वसर्विया में खोकजिम के स्थान पर शत्रु को बुरी तरह पराजित करके (11 नवम्बर, 1673) अपना और अपने देश का सम्मान पुनः प्राप्त किया। कम से कम इस बार पोलैण्ड ने अनुभव किया कि सुरक्षा ऐसे आदमी के शासन में मिल सकती है जो अपने देश की प्रतिरक्षा करने के योग्य हो। परिणामतः 1673 में माइकेल की मृत्यु के बाद 17 उम्मीदवारों में से जॉन सोबीस्की राजा निर्वाचित हुआ।

हंगरी और ट्राँसिल्वेनिया

पोलैण्ड के इतिहास के इस महत्वपूर्ण समय में, जबकि उसका सबसे महान् राजा गद्दी पर बैठा था, यह उचित ही है कि उन दो सीमान्त राज्यों के सम्बन्ध में कुछ बताया जाये जिन्हें पूर्व और पश्चिम के महान् संघर्ष में प्रमुख भाग लेना था और जिस संघर्ष ने सोबीस्की के शासन में यूरोप की रुचि उत्पन्न कर दी। ये दो राज्य हंगरी और ट्रांसिल्वेनिवा थे, और ये दोनों राज्य 17वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में ऑटोमन और हैप्सबर्ग दोनों की पराधीनता के खतरे से बचते हुए किसी न किसी प्रकार से अपनी कष्टपूर्ण स्वायत्तता की रक्षा करते थे। सन् 1604 में अपर हंगरी और ट्रांसिल्वेनिया में एक विद्रोही नेता स्टीफन बोक्से के पक्ष में मतैक्य था, जो शस्त्र-बल पर दोनो प्रदेशों को वंशानुगत राजकुमार होने का तथा बिना किसी उत्तराधिकारी के मृत्यु होने पर हैप्सबर्गों के उत्तराधिकार का दावा करता था। यह अवस्था 1608 में फलीभूत हो गई। बोक्से कोई उत्तराधिकारी छोड़े बिना मर गया और जब सम्राट रूडोल्फ को बोहेमिया भेज दिया गया तो उसके भाई मेथिआस ने हंगरी और ट्रांसिल्वेनिया पर अधिकार कर लिया। आर्क ड्यूक फर्डिनेन्ड जो बाद में सम्राट बना, की केन्द्रीयकरण और धर्म के नाम पर पीड़ित करने की नीति ने पूर्वी प्रान्तों की भावनाओं को फिर उभाड़ दिया तथा बेथलेन गेबर (1613–1629)[1] एवं जार्ज रेकोक्जी (1629–1648)[2] के नेतृत्व में, एक ओर ऑस्ट्रिया और दूसरी ओर तुर्की के विरुद्ध, एक स्वतंत्र मगयार राज्य बनाया गया। रेकाक्जी के पुत्र जार्ज द्वितीय को तुर्की के मनोनीत अचेटियम बर्कजे ने गद्दी से उतार दिया तथा जब पहले क्यूप्रिली ने वेलेचिया और मोल्डेविया दोनों में कठपुतली शासकों को स्थापित किया तो पूर्वी यूरोप में ऑटोमन प्रभाव और अधिक विस्तृत हो गया। बर्कजे की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी माइकेल अपेफी के शासनकाल में भी मगयारों पर तुर्की आधिपत्य बना रहा, किन्तु 1661 में जब लियोपोल्ड ने उन प्रदेशों पर जो नाममात्र के लिये हैप्सबर्गों के अधीन माने जाते थे और जो अब तुर्कों के प्रभुत्व में थे, विवाद करना आरम्भ किया, तो दोनों साम्राज्यों में लम्बे समय तक रुक-रुक कर युद्ध होता रहा।

---

1 जिनकेसन, पूर्व उद्धृत, 4,379, एफ. एफ.।

2 वही, खंड, 4, 467–472।

सेन्ट गोथर्ड की लड़ाई (1664)

1663 में दूसरे क्यूप्रिली ने 2,00000 से ऊपर सैनिक लेकर डेन्यूब पार की और हंगरी, मोरेविया, और साइलेशिया पर धावे करने के बाद हजारों ईसाइयों को दास बना लिया। इस तरह के भय के कारण ही पोप अलेक्जेन्डर सप्तम के तत्वावधान में पवित्र-सन्धि (holy league) बनाई गई थी जिसमें लुई 14वां भी सम्मिलित था जिसके राजदूत को 1660 में एक मनगढन्त अभियोग लगाकर कुस्तुन्तुनिया में बन्दी बना लिया गया था। यह 6000 फांसीसी सैनिकों की टुकड़ी ही थी जिसकी सहायता से साम्राज्यीय सैनिक रुआव के किनारे सेन्ट गोथर्ड में तुर्की को करारी हार दे सके थे। वसवार की सन्धि[1] द्वारा (अगस्त, 1664) हंगरी को दो भागों में विभाजित किया गया। पहला (बडा भाग) पश्चिमी और ऑस्ट्रियन, दूसरा पूर्वी और तुर्की। अपँफी को ट्रांसिल्वेनिया का शासक इस शर्त पर स्वीकार किया गया कि वह पोर्टे को कर अदा करता रहे। इस प्रकार इस सन्धि द्वारा हंगरी को आस्ट्रिया पर और ट्रांसिल्वेनिया को तुर्की पर बलिदान कर दिया गया। इसके परिपालन मे जनता में, जो स्वतन्त्रता और धार्मिक स्वाधीनता का आनन्द ले चुकी थी, बहुत रोष फैला, क्योंकि लियोपोल्ड ने, जिसका हंगरी के बड़े भाग पर अधिकार था, अपने शासन का उद्घाटन हंगरी के बहुत से देश-भक्तों का कानूनी वध करवा कर किया। यदि हैप्सबर्ग तुर्की को आगे बढ़ने से रोके रखते तो वे मगयार प्रदेशों को आत्मसात कर लेते, दूसरी और यदि वे अपने प्रदेश की रक्षा करने में असफल होते तो उनका हंगरी से वापिस चले जाना आवश्यक था। यह पोलेण्ड के इतिहास की बहुत सी विडम्बनाओं में से एक है कि उसके महानतम राजा ने अपना समस्त जीवन उस खतरे को मिटाने में लगा दिया जो पोलेण्ड के राज्य की अपेक्षा हैप्सबर्ग साम्राज्य के लिये अधिक खतरनाक था। इस प्रकार परोक्ष रूप में, पोलिश सैनिकों की सहायता से आस्ट्रियन और तुर्की–हंगरी को ट्रांसिल्वेनिया में मिल कर, अधीनस्थ हंगरी राज्य बनाने की हैप्सबर्ग नीति सफल हो सकी।

सोबीस्की के उद्देश्य

यहां ट्रांसिल्वेनिया और हंगरी का प्रसंग यह प्रदर्शित करने के लिये दिया गया है कि ऑटोमन आक्रमण के विरूद्ध किए जाने वाले संघर्ष में दो बातें अन्त–

1 जिनकेसन, पूर्व उदधृत, 4,932 एफ. एफ.। इस संदर्भ में यह ध्यान रखा जाना चाहिये कि यह सन्धि 20 वर्ष के लिए की गई थी, परन्तु 1683 में सन्धि का उल्लंघन करके कारा मुस्तफा ने हंगरी पर आक्रमण कर दिया। देखिये अध्याय 12।

ग्रस्त थीं—हैप्सबर्गों की प्रादेशिक विजय–सम्बन्धी आकाक्षांये और मगयारो को की राष्ट्रीय अभिलाषायें। पोलेन्ड के नवनिर्वाचित राजा की हैप्सबर्ग षड़यन्त्र के प्रति कोई सहानुभूति न थी और वह एक स्वायत्त मगयार राज्य की स्थापना को अधिक अच्छा समझता था। किन्तु उसने विस्तृत दृष्टिकोण अपनाया और उसने देखा कि यूरोप को पूर्व की ओर से इतनी बडी आशका है कि वह प्रत्येक स्थानीय अथवा राष्ट्रीय विचारों से ऊपर है। सोबीस्की समझता था कि पश्चिमी साम्राज्य की वही दशा होने की सम्भावना है जो पूर्वी की अभी हुई है और यदि क्यूप्रिलियों द्वारा पुनर्गठित और पुनर्जीवित तुर्की का दीर्घकालीन विरोध न किया गया तो ईसाई धर्म को ही खतरा उत्पन्न हो जाएगा। तुर्की की यह इच्छा थी कि हैप्सबर्ग देशों पर विजय प्राप्त करना एक महान् यूरोपीय संघर्ष और धर्म–परिवर्तन की भूमिका–मात्र होना चाहिए। कुस्तुन्तुनिया में यह गर्वपूर्वक कहा जाता था कि जिस प्रकार 15वी शताब्दी में सेन्ट सोफिया के स्थान पर मस्जिद खड़ी कर दी गई थी उसी प्रकार 17वीं शती में ऑटोमन विजय का तब तक अन्त नहीं होगा जब तक सुल्तान के घोड़े सेन्ट पीटर्स में नहीं बांधे जायेंगे। इस खतरे के विरुद्ध पोलेन्ड ही एक मात्र अड़चन था, परन्तु इसका राजा पहले से ही पूर्णतया जागरुक था कि उसे और उसके देश को यूरोप को इस खतरे से मुक्त करने के लिये क्या काम करने के लिए तत्पर रहना होगा जो वीरतापूर्वक रोके जाने पर भी कम गम्भीर नहीं था। सोबीस्की की अभिलाषा थी कि मगयार को पोर्ट के षडयन्त्र से अलग कर लिया जाये, तुर्की को यूरोप से बाहर निकाल दिया जाये और एक पेलोपोनेशियन गणतंत्र स्थापित किया जाये जिसकी राजधानी एथेन्स हो। इस कार्य में साथी बनाने के लिये वह रूस, वेनिस, फारस, जेपोरोजियन कोसेक, स्वीडन और फ्रांस से सहयोग करने के लिए तैयार था।

सोबीस्की का चरित्र

यह समझना कठिन नही है कि उसने समकालीन उसके विचारों को गलत क्यों समझे। जॉन सोबीस्की मे कुछ ऐसे गुणों का मिश्रण था जो एक ही व्यक्ति में प्रायः नहीं पाये जाते। उसने अपने पिता से साहित्य और युद्धविद्या का उत्तम अनुशासन सीखा था। उसकी माता और पत्नि स्वाभाविक और सुन्दर वीरता की मूर्तियां थीं। अपने आश्रित के साथ वह न्यायकारी व स्पष्टवादी था। उस समय जबकि धार्मिक कट्टरता का समाज में सम्मान था वह हृदय से धार्मिक था। प्रजा के रूप में वह सदा अपने राजा का स्वामिभक्त नहीं रहा, पोलेन्ड के अतिरिक्त अन्य किसी भी देश में उसका विदेशी शक्तियों से मिल कर षड़यन्त्र करना देश–द्रोह समझा जाता, किन्तु राजा के रूप में उसका आचरण साहसपूर्ण और एक रूप रहा। वह कोमलहृदय था किन्तु, उसमें कठोरता के गुण भी थे जो एक नेता में

होने चाहिये। खोकजिम की लडाई से पूर्व उसने अपनी उपस्थिति और वाणी से अपनी सेना में धधकते हुए विद्रोह को शांत कर कर दिया। चार्ल्स 12वें मे प्रतिकूल वह एक जनरल था जो अपनी युद्ध-योजना का सदैव सावधानीपूर्वक प्रबन्ध करके और परिवर्तन की आवश्यकता पर परिवर्तन करके, एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिये लड़ता था और यथासम्भव अपनी सेना की कम से कम क्षति होने देता था ट्यूरेन और कोंडे के विपरीत, वह एक सिपाही भी था जो अपने सैनिकों की पीडा और कठिनाइयों में भागी रहता था वह 17वीं शती के उन थोड़े से नेताओं में से था जिन पर वास्तव में 'महान' का विशेषण चरितार्थ होता है। वह ऐसा व्यक्ति था जो अपने में शान्ति, शक्ति और दृढ़ विश्वास के समन्वय के कारणरेम्ब्राण्ट द्वारा लिखित **मेन इन आर्मर** का स्मरण करता है। उसकी गणना उन थोड़े से ऐतिहासिक व्यक्तियों में है जिन्होंने पूर्णतया सफलतापूर्वक, मानवता युक्त और न्योयाचित युद्ध लड़ा।

जुरानो की संधि (1676)

अपने राजतिलक के तुरन्त बाद उसने सेना संगठित की, धन एकत्र किया और इब्राहिमपाशा के सैनिकों को निकाला। बुकजेक्स की अपमानपूर्ण संधि का जुरानो की संधि द्वारा (16 अक्तूबर, 1676) निराकरण किया गया जिसके अनुसार समस्त पोल बन्दी और दास मुक्त कर दिये गये, पोलिश यूक्रेन पुन: लौटा दिया गया और कर का दावा छोड़ दिया गया। जेरूसलम के पवित्र स्थानों का अधिकार पुन: ईसाइयों को सौंप दिया गया। किसी पक्ष ने भी इस सन्धि को युद्ध-विराम से अधिक नहीं माना। तुर्की में जोर-शोर से सैनिक तैयारियां होने लगीं और यद्यपि पोलेन्ड को कुछ वर्ष शान्तिपूर्ण मिल गये किन्तु यह असदिग्ध था कि निर्णायक सघर्ष अभी शेष है।

ऑटोमन खतरे के प्रति पश्चिमी यूरोप का रूख

जॉन सोबीस्की के राज्य के आरम्भिक वर्ष केवल सांस लेने मात्र एव 1683 की महान् घटनाओं की तैयारी के थे। इससे एक वर्ष पूर्व पूर्वी और पश्चिमी यूरोप के मामले इतने अधिक उलझे हुए थे कि वे सुलझ नहीं सकते थे। हगरी के धर्मयुद्धकारियों (crusaders) ने हैप्सबर्गों के उत्पीड़न से दुखी होकर टोयकेली के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। टोयकेली एक देशभक्त व्यक्ति का पौत्र था जिसे 1671 में मृत्यु-दण्ड दिया गया था। उसने तुर्कों से मित्रता करके और ट्रांसिल्वेनिया के विद्रोहियों[1] को एक ऐसे युद्ध में घसीट कर, जिसका सम्बन्ध ईसाई धर्म और मगयार स्वतन्त्रता दोनों से था, अपने पक्ष का सर्वनाश कर लिया।

---

1 जिनकेसन, पूर्व उद्धृत, खंड 5, 87 एफ. एफ.।

पश्चिम में फ्रांस पर विश्वास नहीं रखा जा सकता था। फ्रांसीसी सेना ने सम्राट की तुर्कों के विरुद्ध सेन्ट गोथर्ड (1664) की लडाई में सहायता की थी। किन्तु लौटते समय जर्मन भूमि में उनके साथ जो शत्रुतापूर्ण व्यावहार किया गया उससे लुई को यह विश्वास हो गया कि उसने आस्ट्रिया को सहायता देकर गलती की और अपने शत्रुओं को सहायता देना खतरनाक होता है।[1] 1682 के आरम्भ में लुई ने अपनी सेनाये फ्लैंडर्स से वापिस बुला लीं। प्रकट रूप में, उसने लियोपोल्ड और यूरोप को, जबकि वे पूर्व में तुर्कों के खतरे का मुकाबला कर रहे थे, पश्चिम के झझटों से मुक्त करने के लिये बुलाया। वाल्टेयर तथा उसके बाद के इतिहास–सम्बन्धी लेखकों ने लुई द्वारा पक्ष–परिवर्तन के इस सरकारी स्पष्टीकरण को स्वीकार किया है, किन्तु हगरी में फ्रांसीसी एजेण्ट के साथ हुआ पत्र–व्यवहार यह सिद्ध करता है कि इस समय लुई वहां विद्रोहियों को सम्राट के विरुद्ध तुर्कों से मिलने के लिये आर्थिक सहायता दे रहा था, चाहे सम्राट उन्हें कितनी भी रियायतें क्यो न दे।[2] चर्च का सबसे बडा पुत्र (लुई) पश्चिमी यूरोप में धार्मिक एकरूपता लाने के लिये कितना भी उत्साही क्यो न हो, किन्तु वह, अपने चचेरे भाई और समान धर्मानुयायी लियोपोल्ड के मन के विधर्मी तुर्कों के आक्रमणों से उत्पन्न उलझनों से लाभ उठाने के लिये अनिच्छुक न था। फ्रांस का अन्तर्निहित बैर ही लियोपोल्ड की एक मात्र कठिनाई न थी जिसका कि उसे सामना करना था। जब उसने डायट से सहायता मांगी तो आरम्भ में वह उससे इस सिफारिश से अधिक कुछ प्राप्त न कर सका कि सार्वजनिक प्रार्थना होनी चाहिये,[3] पेपेसी से उसे सहायता की आशा न थी, क्योंकि वह उस समय गेलिकन विवाद में व्यस्त थी।[4] वेनिस, जो कैण्डिया के लम्बे युद्ध के बाद पुनः संभल रहा था, फिर लड़ाई में नहीं उलझना चाहता था, ब्रेन्डेनबर्ग सशकित था और वह यह नही समझ सका कि उसे सम्राट की मित्रता से किस प्रकार लाभ हो सकता था जबकि रूस, फिओडोर की मृत्यु के बाद, एक नववर्षीय बालक के शासन में था और उसके अधिकार अभी विवादग्रस्त थे।[5] केवल

---

1 लीग आव राइन के सदस्य के रूप में फ्रांस ने अपनी सेनायें भेजी थीं। इसी समय (1664) लुई 14वें ने एरफर्ट की स्वतंत्रता को नष्ट करने के लिये एलेक्टर आव सेक्सोनी की सहायता की। यही कारण है कि फ्रांसीसी सेनाओं का जर्मनी में स्वागत नहीं किया गया। देखिये आरवेच लिखित **ला डिप्लोमेन्ट फ्रँकेस एत ला कोर द सेक्से।**

2 सालवेंडी, **पूर्व उद्धृत**, 2,122 तथा **इन्सट्रक्शन्स डोनीज** (आस्ट्रिया) 93 एफ एफ।

3 आरवेच, **ला फ्रांस एत ल सेन्ट एम्पायर रोमेन**, 77।

4 देखिये अध्याय 8।

5 देखिये अध्याय 12।

पोलैण्ड शेष रहा। वहां आस्ट्रिया के षडयन्त्रों के होते हुए भी सोबीस्की का निर्वाचन हुआ था। और चूंकि उसकी अपनी पत्नी थी इसलिये पोलिश राजाओं द्वारा आस्ट्रिया की आर्क डचेस से विवाह करने की प्रथा भंग हो गई। इसी कारण उसे 'मेजेस्टी' (majesty) की पदवी नहीं दी गई। इससे अधिक और यह बात थी कि सम्राट के विरुद्ध होने पर कुछ प्रलोभन भी दिखाये गये थे। फ्रांस और ब्रेन्डेनबर्ग दोनों ने उसकी मित्रता के बदले उसे साइलेशिया (सम्राट के मूल्य पर) और हंगरी तक देने का प्रस्ताव रखा (यदि टोयकिली से किसी प्रकार निबटारा हो जाये)। इसके साथ ही, सुल्तान मुहम्मद चतुर्थ ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसकी तैयारियां पोलैण्ड के विरुद्ध न थी और वह गणतंत्र की मित्रता का स्वागत करेगा।[1] जब लिओपोल्ड पूर्णतया संकटापन्न था तो उसने सोबीस्की से सहायता पाने के लिये प्रस्ताव किया कि उसके पुत्र का विवाह एक आर्क डचेस से कर दिया जायेगा, और उसे कुछ देने की गारन्टी दी जिस पर उसका अपना अधिकार न था। सोबीस्की के वंशजों को पोलिश राज्य का उत्तराधिकार। यह सोबीस्की की सूक्ष्म दृष्टि का उदाहरण है कि वह ऐसे सुन्दर वायदों के जाल में नहीं फंसा, और उसकी महानता का यह प्रमाण है कि झूठे मित्रों और कट्टर शत्रुओं द्वारा घिरा हुआ होने पर भी उसने सम्भावित खतरे का और संदिग्ध लाभ वाला मार्ग अपनाया—तुर्कों से शत्रुता।

तुर्की आक्रमण से पूर्व यूरोप की दशा

1682 में यूरोप में शान्ति थी किन्तु इस प्रकार की शान्ति थी कि पूर्वी सेनानायकों की इच्छा उसे समाप्त करने के लिये प्रेरित करती थी। वासवार में हस्ताक्षारित युद्ध विराम संधि के समाप्त होने में अभी दो वर्ष शेष थे किन्तु आस्ट्रियन साम्राज्य के बाहरी प्रदेश तुर्कों द्वारा लगातार खण्डित तथा ध्वस्त किये जा रहे थे और उसके बाद हजारों ईसाइयों को दास बनाया जाता था। लुई 14 जिसने पिछले वर्ष शान्तिपूर्वक स्ट्रासबर्ग ले लिया था, निचले प्रदेशों में स्पेन के विरुद्ध बदला लेने को प्रोत्साहन दे रहा था और हंगरी के विद्रोहियों को अन्दर ही अन्दर प्रोत्साहित कर रहा था जबकि नान्ते की घोषणा की कठोर व्यवस्था के अनुसार वह अपनी अधिकांश प्रजा को विद्रोह करने अथवा देश से चले जाने पर बाध्य कर रहा था। बूर्बों और हैप्सबर्गों में तीव्र झगड़ा इस बात की गारन्टी थी कि यूरोप पूर्वी खतरे के सामने कभी एक नहीं होगा। तुर्की के कूटनीतिज्ञ इनकी पारस्परिक ईर्ष्या और घृणा को भली प्रकार जानते थे, जबकि, होली रोमन साम्राज्य व्यावहारिक रूप में विलग और निर्बल हो गया था, फ्रांस स्वार्थवश अपना प्रसार करने में संलग्न था, निर्लज्ज विलासता द्वारा इंगलैंड का शोषण किया जा रहा था, स्पेन और

---

1 सालवेंडी, पूर्व उद्धृत, 2,126।

इटली लगभग नगण्य थे, व ईसाई लोग आपस में लड़ रहे थे। इस्लामी आक्रमण ऐसे समय में इतना उपयुक्त था कि वह 15वीं शती के आक्रमण को इसकी पूर्व भूमिका मात्र ही बना दे। बड़े वजीर करा मुस्तफा एक महत्वाकांक्षी और कर्मशील व्यक्ति था जो तुर्कों, तातारों, कुर्दों, अल्बानियनों और ममलूकों के अनियंत्रित झुंडों पर नियंत्रण करने में समर्थ था और मुहम्मद द्वितीय तथा महाप्रतापी सुलेमान के आक्रमणों को भी मात देना चाहता था।

तुर्कों का वियना में प्रवेश (1683)

कुछ वर्षों तक बहुत विस्तृत तैयारियां की जाती रहीं [1] और इनमें एशियाटिक तुर्की के असीम साधनों का उपयोग किया गया। फ्रांसीसी–तुर्की के बन्दरगाहों पर स्थित जहाजों (फ्रांसीसी जहाज छोड़कर) को जब्त कर लिया गया ताकि उनको अलेग्जेंड्रिया स्मार्ना और अलेप्पों में परिवहन के लिये प्रयोग में लाया जा सके। हजारों ऊंटों और रथों द्वारा टोयकली के गढ़ों तथा फरात और नील के बीच में सम्पर्क स्थापित किया गया, और 1683 के आरम्भ में एक विशाल सेना हंगरी पर टूट पड़ी। बेलग्रेड और वर्तमान बुडापेस्ट के मध्य में स्थित असेक के स्थान पर मुहम्मद चतुर्थ और बड़े वजीर की सेनायें टोयकली के सैनिकों से जा मिलीं जहां पहुंच कर करा मुस्तफा को विधिपूर्वक मुहम्मद के ध्वज और सोने की पोशाक से विभूषित किया गया और इस प्रकार उसे इस्लाम और ईसाई धर्म का नेता नियुक्त किया गया। इस पवित्र कार्य को सम्पन्न करके सुल्तान ने फिर डेन्यूब नदी पार की और विनाशकारी धावे आरम्भ किये जिनके सम्बन्ध में कहा जाता है कि उनमें 40,000 शिकारियों के सब साधन खत्म हो जाते और एक पूरे प्रायद्वीप को शिकार का भोजन दिया जा सकता था। हंगरी से आगे बढ़ते हुए करा मुस्तफा ने लोरेन के अधीन साम्राज्य की सेना को पीछे धकेल दिया और ड्यूक को पेट्रोनल के स्थान पर पराजित करके (5 जुलाई, 1683) उसने वियना का मार्ग साफ कर लिया। 7 जुलाई को तातारों का अग्रिम दल उसके फाटक पर पहुंच गया। सम्राट लगभग 60000 निवासियों सहित शहर छोड़ कर भाग गया। सात दिन पश्चात उनकी मुख्य सेना दीवालों पर से दिखाई देती थी और वियना का 60 दिन का घेरा आरम्भ हो गया।

वियना से पलायन

वियना[2] स्थिति सेना 14000 से अधिक न थी। घेरा डालने वाले करीब 200000 व्यक्ति होंगे, जिनमें ग्रांड वजीर का विशाल रनवास, उसके हिजड़े

---

1 देखिये सालवेंडी, पूर्व उद्धृत 2,132 एफ. एफ.।

2 घेराबन्दी के रोचक वर्णन के लिए देखिये जिनकेसन पूर्व उद्धृत, 5, 97–112।

(eunuchs) और उसका बृहत् बधिक कर्मचारीवर्ग भी सम्मिलित था। लारेन का चार्ल्स जिसके पास शाही सेनाओं की कमान थी, एक योग्य और अनुभवी नेता था, किन्तु सहायता के बिना वह कुछ न कर सका। 16 जुलाई तक शहर पूरी तरह घिर गया। उसका लकड़ी का बना क्रीडाग्रह गिरा दिया गया और दीवालों को दृढ़ करने वाली कड़ियां तोड़ दी गईं, तुर्की तोपखाने ने शास्त्रागार उड़ा दिया, किन्तु नगर–निवासियों के भाग्य से शहर पर फैके गये बम फटे नहीं। इस प्रकार सर्वाधिक मनोरजन प्रिय वियना सैनिक डेरे में परिवर्तित हो गया जो उत्सुकता से सहायता की प्रतीक्षा कर रहा था। उस नगर के अंगरेज निवासी ने देखा, वियना-वासी चर्चों में भर गये, "आंतक ने उनकी भक्ति को और भी परिवर्द्धित कर दिया था।"[1] इस शती की किसी अन्य घटना की ओर समस्त यूरोप का इतना ध्यान नहीं गया था जितना वियना के घेरे पर। कैथोलिक देशों में इस प्रकार धन इकट्ठा किया जाने लगा जैसे धर्मयुद्ध की तैयारी के लिए आवश्यक हो। सम्राट् ने सहायता के लिए अपील की और पोप इन्नोसेन्ट 11वें ने चर्च के सबसे बड़े पुत्र लुई 14वें को ईसाई धर्म की रक्षा के लिये हथियार उठाने के लिए कहा। इस पर फ्रांसीसी राजा ने लिओपोल्ड के पश्चिमी सामान्तो को परेशान न करने का उदारतापूर्वक वचन दिया, परन्तु शर्त यह थी कि डाफिन को साम्राज्य के उत्तराधिकार में सम्मि-लित कर लिया जाये।

सोबीस्की द्वारा वियना पर आक्रमण

पोप और सम्राट् की अपील का पोलेण्ड की ओर से भिन्न उत्तर आया। मार्च 1683 में सोबीस्की ने 60,000 साम्राज्यीय सेना मे 40,000 पोल सैनिक और मिलाने का वचन दिया यदि तुर्की आक्रमण करे, तथा इस कार्य में उसे अपने देश की अनिश्चित आय में पोप द्वारा आर्थिक सहायता दिये जाने का भरोसा था। 1683 के 'अजम्पशन डे' पर उसने घिरे हुए शहर की ओर प्रस्थान करने के लिए अपनी राजधानी को छोड़ा। उसके द्वारा स्वयं सेना की कमान सम्भालने के कारण हताश कैथोलिकों में आशा का संचार हुआ यद्यपि आशका थी कि उसे पहुंचने में देर न हो जाये, क्योंकि वियना का घेरा पड़े हुए छः सप्ताह हो गये थे और शहर के साधन समाप्त प्रायः होते जा रहे थे जबकि तुर्क दीवालों का ध्वस करने में व्यस्त थे। 5 सितम्बर को वह डेन्यूब के किनारे पहुंचकर साम्राज्यीय सेना में जा मिला, तीन दिन बाद दो एलैक्टरों के अधीन सेक्सनी और बवेरिया की सैनिक टुकड़ियां भी इस सहायक सेना में मिल गईं। अब इस सहायता पहुंचाने वाली सेना में 80,000 साम्राज्यीय, 10,000 सेक्सन 12,000 बवेरियन और 18,000 पोल

---

1 हारलिएन पान्डुलिपि, 2282, एफ–57।

थे।[1] नदी द्वारा सीधा किन्तु खतरनाक मार्ग छोड़कर सोबीस्की ने कहलम्बर्ग (kahlemberg) पहाड़ पर चढ़कर और उसके सीधी ढलान वाले तग मार्गों से उतरकर तुर्कों पर आक्रमण करने का निश्चय किया। जब वह शहर के निकट पहुंचा तो स्काउटों द्वारा दिए गये वहां के विवरण से मित्र सैनिकों में आंतक फैल गया और पोलिश राजा के समस्त साधन और साहस उन लोगों को प्रोत्साहन देने में लग गये जिनके धैर्य की परीक्षा के हलम्बर्ग की कठिन चढ़ाई अच्छी तरह ले चुकी थी, इस चढ़ाई में प्रत्येक व्यक्ति को अपना भोजन स्वय जुटाना पड़ा, घोड़ों को ओक की पत्तियों पर निर्वाह करना पड़ा और तोपखाने की भारी चीजो को वही छोड़ना हड़ा। सोबीस्की ने तुर्क शक्ति या कौशल को कम नहीं आँका। वह जानता था कि उनमें यूरोप के कुछ सर्वोत्तम इन्जीनियर थे और उन्होंने घेरे की स्थिति का चुनाव प्रशसनीय ढंग से किया था। 11 सितम्बर को वह पर्वत के शिखर पर पहुंच गया जहां से उन्होंने यह बताने के लिए कि वियना के मुक्तिदाता निकट आ पहुंचे हैं, रॉकेट छोड़े।

घेरा डालने वाले तुर्क

इस बीच में करा मुस्तफा की दीर्घ निष्क्रियता के कारण सैनिकों में कुछ अव्यवस्था फैल गई। ग्रीक अब कुरान के विषय में मानसिक दुःख का अनुभव कर रहे थे, कट्टर मुसलमानों को यह भय था, कि चूंकि इस लड़ाई द्वारा युद्ध विराम सन्धि (वासवार) का उल्लघन हुआ है, इसलिए इसका अन्त अच्छा न होगा, विशाल लूट की आशा ही केवल इन अनियंत्रित झुण्डों को एकता में बांधे थी, बड़ा वजीर धावा बोलने से इसलिये हिचकता था कि कहीं उस कोष का मूल्य न घट जाये जिसकी उसे अपने हाथों में पड़ने की आशा थी। ज्यों ज्यों घेरा प्रगति करता गया त्यों त्यो तुर्क जमते गये[2] उनकी खाइयां लम्बी चौड़ी और टेढ़ी मेढ़ी थी, उनके वरीय अफसरों के छिपने के गड्ढों में टाइलें और मोटे कपड़े (टेंपेस्ट्री) लगे हुए थे, उन्होंने अपनी पक्तियों को घिरी हुई सेना के तोपखाने से बचाने के लिए रेत के बोरों के बड़े बड़े अम्बार लगा रखे थे। परन्तु घिरे हुए और घेरा डाले हुए सैनिकों में कुछ भ्रातृभाव भी था। एक बार घिरे हुए नगर-निवासियों को यहां तक उकसाने का भी प्रयत्न किया गया कि सैनिक अपने तीरों की नोक पर इस प्रकार के घोषणा-पत्र लगा कर नगर में छोड़ें की 'ओर अवरोध निरर्थक है,' जिससे वे आत्म-समर्पण

---

1 सालवेन्डी, पूर्व उद्धृत, 2, 169।

2 इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण घेरे के समय वियना में उपस्थित एक ब्रिटिश नागरिक की डायरी में प्राप्य है जो ब्रिटिश सग्राहालय में सुरक्षित है। (हारलिएन पान्डुलिपि, 2282)।

कर दें । इस विलम्ब का तुर्कों पर उतना ही बुरा प्रभाव हुआ जितना ईसाइयों पर। बड़े वज़ीर के विलासितापूर्ण जीवन ने ऐसे अनुचित उदाहरण प्रस्तुत किये कि अनेकों का वध करने पर भी वह नष्ट न हुई । इसलिये कहलम्बर्ग पर शत्रुओं का दिखाई देना इतना बड़ा अपशकुन था जितना अप्रत्याशित था और कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्होंने वापिस लौटने की सलाह दी । अनेक सैनिकों के भाग जाने तथा वध कर दिये जाने पर भी करा मुस्तफ को एक के मुकाबले अपनी तिगुनी सेना की श्रेष्ठता पर भरोसा था, इसलिए हर ओर सफलता मिलने की आशा से, उसने 12 सितम्बर, (इतवार की सुबह) को सोबीस्की के आक्रमण का सामना किया। यही वह दिन था जब संसार के इतिहास की एक निर्णायक लड़ाई लड़ी गई। चार पंक्तियों में बढ़ते हुए ईसाई सैनिकों ने शत्रु की बाहरी चौकियों को नष्ट कर दिया और मध्याह्न तक उन्होंने अर्ध-चन्द्र बनाकर तुर्कों की घनी भीड़ को घेर लिया, खाई में पूर्णतया सुरक्षित कारा मुस्तफा पतझड़ की गर्मी और लम्बी यात्रा से थके हुए सैनिकों के घावों की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा, किन्तु अपने प्रधान कार्यालय पर भारी बमबारी से उसे अपनी सेना की स्थिति में परिवर्तन करना पड़ा, और परिणाम यह हुआ कि सायंकाल तक उसके सैनिक प्रत्येक स्थान से खाइयों में से भगाये जा रहे थे। इस समय बादल ने अर्ध-चन्द्र को आकाश में धुंधला कर दिया । यह एक ऐसा लक्षण था जिससे तुर्क सेना में व्याकुलता छा गई। जब मुस्तफा ने अपनी सेना में बाढ़ की भांति व्याप्त मनोबलहीनता को रोकने का प्रयत्न किया तो सेना का अव्यवस्थापूर्ण प्रत्यावर्तन अपने साथ स्वयं उसे भी ले गया। रात्रि होने तक तुर्क तेज़ी से भाग रहे थे, किन्तु जाते-जाते वे अन्तपुर की स्त्रियों ओर हजारों ईसाई बच्चों को, जिन्हें उन्होंने अपने डेरे में इकट्ठा कर रखा था, तलवार के घाट उतार गये और इस प्रकार वे यह बता गये कि यदि वे वियना ले लेते तो वे और भी व्यापक रूप में क्या करते । उनकी मृत्यु-संख्या के सम्बन्ध में परस्पर-विरोधी अनुमान हैं, किन्तु ऐसा कहा जाता है कि उनके 10,000 सैनिक खेत रहे और मित्र देशों की मृत-संख्या इसकी एक तिहाई थी। इस विजय ने पूर्वी यूरोप में ईसाई-धर्म को बचा लिया। यह विजय आलस्य से उत्पन्न दीर्घ निष्क्रियता और संख्या की अधिकता के विरुद्ध धार्मिक निष्ठा और व्यूह-रचना की थी । यह विजय कठोर एवं पुराने वीरों को थकाने वाले ओजस्वी युवक की नहीं थी, बल्कि एक ऐसे साठ वर्षीय बूढ़े वीर की थी जो बिना सहायता के घोड़े पर भी नहीं चढ़ सकता था।

सोबीस्की द्वारा तुर्कों का पीछा करना

वियना में विजय-प्रवेश के पश्चात् सेन्ट स्टीफन के केथेड्रल में टे डिअम (te deum) हुआ और इस मूल सूत्र में यूरोप का मत प्रकट किया गया कि,

"एक मनुष्य ईश्वर द्वारा भेजा गया जिसका नाम जॉन था।" किन्तु ज्यों ही जोश का कोलाहल ठण्डा हुआ कि सोबीस्की को मालूम हुआ कि उसकी उपस्थिति उन लोगों की घबराहट का कारण बन गई जिन्हें उसने बचाया था।[1] सम्राट तुरन्त वियना वापिस लौट आया किन्तु पोलिश राजा का जो स्वागत हुआ वह औपचारिक और उदासीन था। फ्रांस में इस विजय के महत्व को न्यूनतम करने और इसका श्रेय सोबीस्की की अपेक्षा दूसरों को देने का प्रत्येक सम्भव प्रयास किया गया। पोलों के घोड़ों को चारा देने से इन्कार किया गया, यहां तक कि उन्हें अपने मृतकों को सम्मानपूर्वक दफनाने में भी बडी कठिनाई का सामना करना पड़ा। सोबीस्की ने लिखा, "यहां हम डेन्यूब के किनारे पर हैं, जिस प्रकार इजराइल फरात के किनारे पर, और अपने घोड़ों की मृत्यु पर और उन लोगों की कृतघ्नता पर, जिनकी हमने रक्षा की है, दुःख मना रहे हैं।" इसके साथ-साथ मित्र राष्ट्रों में एकता न थी और पोलिश टुकड़ी में मतैक्य न था। जॉन की इच्छा थी कि हंगरी से भागते हुए तुर्कों का पीछा किया जाये किन्तु उसके कुछ साथी वापिस घर जाने के लिए आतुर थे। इसके अतिरिक्त सम्राट् ने वही अभिलाषायें जिन्होंने उसके व्यवहार को प्रेरित किया था दूसरों के गले में डालदीं और यह मान लिया कि हंगरी की लड़ाई का कारण यह था कि सोबीस्की अपने लिए एक अलग राज्य बनाना चाहता था। इन मतभेदों और संशयों के फलस्वरूप देर हो गई और इस प्रकार तुर्कों का पीछा करने में उतनी सफलता प्राप्त नहीं हुई जितनी आरंभ होने पर आशा थी। अक्टूबर में सोबीस्की ने तुर्कों को जब वे पार्कनी पर डेन्यूब पार कर रहे थे, करारी हार दी, किन्तु इन दिनों पोल सेना में पेचिश की बीमारी हो गई, इसलिए उनका पीछा करना छोड़ दिया गया। करा मुस्तफा ने अपने जनरलों का वध करवा डाला ताकि इस प्रकार सुल्तान का क्रोध ढल जाये। उसे क्रिस्मस के दिन मार दिया गया और इसी दिन सोबीस्की ने विजयी होकर क्रेको में प्रवेश किया।

मोहक्स की लड़ाई (1687)

तुर्कों को यूरोप से निकालने का यह उपयुक्त अवसर समझ कर पोलेन्ड का राजा पवित्र सन्धि (होली लीग) में सम्मिलित हो गया, जिसका इन्नोसेन्ट 11वें ने 1684 में पुनर्गठन किया था तथा जिसमें आस्ट्रिया, वेनिस, माल्टा और रूस (1686) सम्मिलित थे[2]। किन्तु लियोपोल्ड के कपट और उसके अपने राज्य में अव्यवस्था होने के कारण सोबीस्की बाद की लड़ाइयों में सक्रिय भाग न ले सका।

---

1 सालवेन्डी, पूर्व उद्धृत, 2,221।

2 जिनकेसन, पूर्व उद्धृत, 5, 116 एफ. एफ.।

जून 1684 में लारेंस के ड्यूक ने बीचग्राड पर अधिकार कर लिया और टायकेली व उसके तुर्क मित्रों को हंगरी के दुर्गों से निकाल बाहर किया, उस समय वेनेशियन बोस्निया और अल्बानिया पर धावा बोल रहे थे। 12 सितम्बर, 1686 को बुडा पर घेरा डालने के बाद अधिकार कर लिया गया और इस पराजय के साथ हंगरी में तुर्की का सबसे प्रबल दुर्ग हाथ से जाता रहा। अगले वर्ष मोहक्स की लडाई मे (12 अगस्त) बड़े वजीर को पराजित किया गया, इस सफलता के बाद माल्डे-विया, बेलेचिया और क्रोशिया पर धावे बोले गये जिनमें ऑस्ट्रिया और पोलेण्ड के सैनिकों ने मिलकर काम किया, जबकि ट्रांसिल्बेनिया के राजकुमार अपेफी को सम्राट् का आधिपत्य स्वीकार करने पर बाध्य होना पड़ा। इस घटनाओं के बाद हंगरी में आतंक का राज्य आरम्भ हुआ और इसी कार्य के लिए नियुक्त विशेष न्यायाधिकरण ने मगयार राष्ट्रीय दल के अवशिष्ट व्यक्तियों को दिखावटी न्याय के सहारे मृत्यु–दण्ड दिया। हंगरी का मुकुट अब हैप्सबर्ग परिवार में वंशानुगत घोषित कर दिया गया, शीघ्र ही ट्रांसिल्वेनिया का भी यही हाल हुआ क्योंकि अपेफी के पुत्र का पालपोषण वियना में हुआ था। 1690 में उसके प्रदेश आस्ट्रियन साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये गये। 17वीं शती के दौरान हजारों सर्बो ने दक्षिण हंगरी में आवास कर लिया था, इसलिये हैप्सबर्ग के उत्तरदायित्व में सर्बो और मगयारो की मिश्रित जनता का प्रशासन और सम्मिलित हो गया। परन्तु 20वी शती से पूर्व ये जातियां अपनी स्वतन्त्रता पुनः स्थापित न कर सकीं।

जेन्टा की लड़ाई (1697)

तुर्की के विरुद्ध चहुंओर से जबरदस्त युद्ध चलता रहा। वेनेशियनों ने 1686 मे मोरोसिनी के नेतृत्व मे मोरिया विजय कर लिया और जर्मन भाड़ेन सैनिकों की सहायता से नेवेरिनों, मोडोन, सेर्गोस और कौरिन्थ पर अधिकार कर लिया। इसके बाद एथेन्स पर घेरा डाला गया। (यही घेरा था जिसमे पार्थेनान नष्ट हुआ), एथेन्स विजय के बाद कृतज्ञ वेनिस निवासियों ने मोरोसिनी को डोज (doge) निर्वाचित किया। वेनेशिया को विजयों में डालमेशिया और मिला दिया गया। तीसरे क्यूप्रिली, मुस्तफा जैदी के 1689में बड़े वजीर बनने के बाद पोर्ट के ध्वस्थ भाग्य ने कुछ समय के लिये फिर पलटा खाया[1]। उसने पुनः निश और बेल–ग्रेड पर अधिकार कर लिया और टोडकेली को, जो अपनी पराजयों के कारण तुर्की की कैद में था, मुक्त करके ट्रांसिल्वेनियां में बुझती हुई राजद्रोह की ज्वाला को भड़काने के लिए भेजा।किन्तु यह तुर्की का दुर्भाग्य था कि इस ओजस्वी बड़ा ग्राड वजीर का जीवन-काल बहुत अल्प रहा। 1691 मे उसने सेव (save) नदी को पार

1 जिनकेसन, पूर्व उद्धृत, 5. 145 एफ. एफ.।

किया परन्तु पराजित होकर 19 अगस्त को सलकेमन (salankeman) की लड़ाई में मारा गया परिणामस्वरूप तुर्कों को पुन: प्रतिरक्षात्मक युद्ध लडना पडा। इसी मध्य मोरिया के ग्रीकों ने वेनेशियन शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और 1695 से पूर्व तक वेनिश अपनी इस विजय को सुदृढ़ न बना सका। अब तुर्की सेना का मनोबल खो चुका था। उनके अवरोध को समाप्त करने के लिये युद्ध-क्षेत्र में केवल निर्णायक पराजय की आवश्यकता थी और यह कार्य थीस के किनारे जेण्टा में 11 अगस्त 1697 को सम्पन्न हुआ,[1] जहां बड़े वजीर एल्मास मुहम्मद और लगभग 30,000 तुर्क मारे गये। इस लड़ाई के परिणामस्वरूप ऑटोमनों को सर्विया और वोस्निया से निष्कासित कर दिया गया और अन्त में पोर्ट को सन्धि के लिए अनुरोध करना पड़ा।

कार्लोविज की सन्धि

तुर्की ने चतुर्थ क्यूप्रिली के शासन काल में सन्धि की। इंगलिश लिवेन्ट कम्पनी के एजेन्ट और तुर्की स्थित इंगलेन्ड के राजदूत, पेजट को अनौपचारिक रूप में मध्यस्थ बनाना स्वीकार किया गया और सामान्य समझौते की धाराओं पर कार्लोविज में विचार-विमर्श हुआ[2]। 26 जनवरी, 1698 को कार्लोविज की सन्धि पर हस्ताक्षर हुए। इसकी मुख्य धारायें निम्नलिखित थीं :

1 तुर्की ने ट्रांसिल्वेनिया और हंगरी (तेमेस्वर के अतिरिक्त) के अपने तमाम दावे त्याग दिये। आस्ट्रिया और तुर्की की सीमा उन्ना, सेव, ड्रेव और डेंन्यूब के थीस से संगम स्थान द्वारा नियत की गई।

2 पोलेन्ड को कामिनिक, पोडोलिया, पश्चिमी यूक्रेन वापिस दे दिये गये। वेनिस को कर्का और नरेन्टा के बीच का डाल्मेशिया, कोरिन्थ को छोड़ कर समस्त पलोपोनीस, एजियन द्वीप-समूह और सेन्ट मॉर मिले।

4 रूस को अजोव मिला।

तुर्की का यूरोप में बने रहना

इस प्रकार तुर्की के विजय स्वप्न का अन्त हुआ। यदि फ्रांस तुर्की के विरुद्ध आस्ट्रिया से मिल जाता, और यदि सोबीस्की को इन दोनो ईसाई शक्तियों का पूरा सहयोग मिलता तो, निसदेह तुर्की को यूरोप से निकाला जा सकता था। इसलिये इस्लामी शक्ति का ईसाई महाद्वीप में बना रहना जिसके फलस्वरूप कई जटिल समस्यायें उठीं, बूर्बो और हैप्सबर्गों के पारस्परिक झगड़ों के बहुत से अप्रत्यक्ष परिणामों में से एक कहा जा सकता है।

---

1 जिनकेसन, पूर्व उद्धृत, 5, 154।

2 वही, 5, 200, एफ. एफ.।

सोबीस्की की मृत्यु (1696)

वास्तव में तुर्की के बाल्कन प्रायद्वीप में से खदेड़े जाने का मुख्य कारण उनका वियना में प्रारम्भिक दुर्भाग्य था। इस साहसिक विजय से सोबीस्की को दीर्घकालीन प्रसिद्धि प्राप्त हुई, किन्तु उसने देखा कि पोलैण्ड के राजा के रूप में उसकी कठिनाइयां घटी नहीं। विगत वर्षों में रचे गये षडयन्त्रों और ईर्ष्याओं से, जिनमें उसकी पत्नी भी सम्मिलित हो गई, वह दुःखी हो गया। पोलैण्ड जो पूर्व की ओर से दबाव के कारण एक राष्ट्र में समन्वित हो गया था, तुर्कों को अपनी सीमाओं से निकालने के पश्चात पुनः दलबन्दियों और गुटबाजियों में विभक्त हो गया। सोबीस्की जानता था कि शांति बनाये रखने की समस्या युद्ध की समस्या से कम जटिल नहीं होती, इसलिये उसने पोलैण्ड के उद्योग और व्यापार को बढाने का, और डेन्यूब और कालेसागर का बड़े जलमार्गों के रूप में उपयोग करने का प्रयत्न किया।[1] इस उद्देश्य से उसने हालैण्ड से व्यापारिक संधि की। 1686 में मास्को-सन्धि द्वारा उसने धन के बदले में कीव और स्मोलस्क पर अपने दावे छोड दिये और इस प्रकार पोलैण्ड को पूर्व में उसकी प्राकृतिक सीमा नीपर तक सीमित कर दिया। किन्तु वह अपनी पत्नी और डायट के सामने अशक्त था। वह एक अभागे स्वतंत्र विचारक को नृशंस वध से न बचा सका[2] जिसे डायट के अस्तित्व के सम्बन्ध में अरक्षित मत प्रकट करने के अपराध में दण्डित किया गया था। उसे अपने पुत्रों पर थोपी जाने वाली पत्नियों के चुनाव में बोलने का अधिकार न था, जिनके लिए उत्तराधिकार निश्चित कराने में वह असमर्थ था, यहां तक कि अंतिम वर्षों में उसकी स्वेच्छाचारी पत्नी की बकवासी आदत ने उसे और भी क्षुब्ध कर दिया था। जगेलनों (jagellons) ने पोलिश राजतंत्र में वंशानुगत परम्परा आरम्भ की। 17वीं शती में केवल माकेल विस्नोवीस्की (michael wisnowieski) के पश्चात् ही उसका भाई अथवा पुत्र उत्तराधिकारी नहीं बना, इसलिए सोबीस्की को यह आशा हो सकती थी कि संभवतः उसके तीन पुत्रों में से ही किसी न किसी को उसका उत्तराधिकार मिल जाये, किन्तु इसमें भी उसे निराशा हुई क्योंकि पोलैंड की गद्दी का अधिकार अब पश्चिम यूरोप के प्रत्येक सफल साहसिक व्यक्ति, की वैध आकांक्षा मानी जाने लगी थी और गद्दी का प्रत्येक निर्वाचनकर्ता अपना मूल्य चाहता था। बिना सेना, आय और कानून के पोलैण्ड अब राज्य न रहकर एक प्रकार का जुआ (gambel) हो गया था। उसके महानतम राजा ने अपने अन्तिम वर्ष साहित्य और विज्ञान के प्रोत्साहन में लगाये। भ्रष्ट दरबार से अलग होकर वह

---

1 सालवेन्डी, **पूर्व उद्धृत**, 2, 324।

2 **वही**, 2,371, (1689)।

अध्ययन और बागवानी में सुख अनुभव करता था, और इन प्रवृत्तियों के कारण वह पोलिश कुलीनवर्ग की सर्वसम्मत घृणा और संदेह का पात्र बन गया। वह भ्रम जाल से मुक्त हो गया था परन्तु दुखी नहीं था, इस अवस्था में भी उसने शान्ति और सहनशीलता नहीं छोड़ी तथा जब जॉनसोबीस्की अपने जन्म दिन के अवसर पर (17 जून, 1696) परलोक सिधारा तो "उसने मुकुट धारण करने की अपेक्षा स्वेच्छा से मृत्यु का आलिंगन किया। इस प्रकार उसने सिंहासन से उतना सम्मान प्राप्त नहीं किया जितना कि सिंहासन को प्रदान किया।"

ऑगस्टस आव सेक्सनी

इस राज्य के लिये दो उम्मीदवार थे, कोंटी का राजकुमार और सेक्सनी का फ्रेडरिक ऑगस्टस। ऑगस्टस निर्वाचित हो गया। वह इस अखाड़े में पहले उतरा और अपने धन का खूब सदुपयोग किया। वर्षों तक यह अभागा देश ऑगस्टस और कठपुतली स्टेनिस्लासलसिस्की, जो उस सिंहासन पर बैठा हुआ था जिस पर स्वीडन का चार्ल्स बारहवां बैठा करता था—के झगड़ों में बंटा रहा, किन्तु पुलटाना (1709) की लड़ाई के बाद ऑगस्टस पुनः आरूढ़ हो गया और रूस व प्रशा द्वारा दी गई सहायता के बदले में उसने प्रशा को पोलिश प्रशा और रूस को समोगिशी और व्हाइट रूस दे दिया। तदुपरान्त उसने अपनी प्रजा के विरुद्ध जोरदार लड़ाई चलाई जिसके लिये उसने कुलीनवर्ग के विरुद्ध फ्रेडरिक महान की सहायता मांगी, कुलीनवर्ग ने भी उसी से सहायता की प्रार्थना की थी। पोलैण्ड का भाग्य उसके पड़ोसियों से सम्बद्ध रहा। इस प्रकार 18वीं शती का उसका इतिहास वियना, सेंट पीटर्सबर्ग, पेरिस और बर्लिन के दरबारों में प्राप्य है। आश्चर्य है कि पोलैन्ड का विभाजन इतने समय पश्चात हुआ, क्योंकि 17वीं शती के अन्त तक राजनीति में से आदर्शवाद कभी का समाप्त हो चुका था। यूरोपियन राज्यों के पास इतना बड़ा प्रदेश होता था जितना वे तलवार के बल पर अपने अधिकार में ले सकते थे। और एक प्रतिरक्षाहीन राज्य शीघ्रता पूर्वक विरोधाभासी बनता जा रहा था। पोलैण्ड का उत्तरवर्ती इतिहास यह सिद्ध करता है कि जातीय भावना देशभक्ति का स्थान धारण नहीं कर सकती।

बोरिस और डमट्रियस

रूस

इस काल का रूसी आन्तरिक इतिहास ज़ार फियोडोर की मृत्यु और उसके सौतेले भाई डमिट्री के वध से आरम्भ होता है, ये दोनों घटनायें 1598 में हुई। आइवन 'भयकर' के इन अन्तिम पुरुष वंशजों के हट जाने पर रुरिक (rurik)

1 जालुस्की, सालवेन्डी द्वारा उद्धृत, 2,395।

का वंश समाप्त हो गया और रोमानोफ वंश के लिये मार्ग प्रशस्त हुआ। कुछ समय तक शक्ति महान् बोइयर बोरिस (boiar boris) गोडूनोफ के हाथ में रही जिसने अपनी जारशाही को नाममात्रिक व वास्तविक बनाने के लिए डूमिट्री का वध किया था। कृत्रिम हिचकिचाहट दर्शन के बाद उसने मुकुट स्वीकार किया और रोमानोफ और नगोई पर कठोरतापूर्वक अपना शासन आरम्भ किया। ये लोग क्रमश: दिवंगत फिओडोर (feodor) और डूमिट्री (dmitri) के सम्बन्धी थे। उसकी निर्दयता, जिसने उसकी पहली नम्रता का स्थान ले लिया था, न तो उसके साथी बोइयरों और न ही सर्फो को पसन्द थी। जैसे ही वह अधिकाधिक अलोकप्रिय हुआ वैसे ही उसकी शक्ति के स्त्रोतों की अधिक ध्यान से जांच की जाने लगी। डूमिट्री का वध रहस्यमय स्थिति में हुआ था और इस तथ्य से प्रेरित होकर एक अनजाने व्यक्ति ने अपने आपको डमट्रियु (demetrius) कहते हुए यह कहा कि वह डूमिटी है। वह अपने को आइवन 'भयकर' का अन्तिम शेष पुत्र कहकर सामने आया। उसने सबसे पहले एक लिथुआनियन व्यापारी ऐडमविचनेवस्की (adamvictchnevski) को अपने दावे की सूचना दी। उसने पोलिश राजा लिजिसमुण्ड वामा को उसका पक्ष लेने के लिये प्रभावित किया, 1604 में पेपेसी को डमट्रियस का दावा स्वीकार करने के लिए इस शर्त पर राजी कर लिया गया कि वह पूर्वी और पश्चिमी चर्चों को एक करने का वचन दे। यह सदेहास्पद है कि किसी भी पोल को उसके दावों में विश्वास था, किन्तु इस कपटी की अनुनय विनय से गणतन्त्र को कम से कम अपने पूर्वी पड़ौसी के मामलो में हस्तक्षेप करने का अवसर मिल गया। अक्टूबर, 1604 में डमट्रियस ने, रोमन केथोलिक धर्म स्वीकार करके, तथा पोलिश और कोसेकों की संयुक्त सेना की कमान लेकर सीमा पार की, सवेरिया और युक्राइन में वह निर्विरोध बढ़ गया। सेनेरियन नोवगोरोड के निकट बोरिस के सैनिक पराजित हुए (21 दिसम्बर, 1604), और प्रत्येक स्थान पर वह एक अच्छा विश्वासी और दुःखी जनता द्वारा वास्तविक जार मान लिया गया। अप्रैल, 1605 में बोरिस की मृत्यु से डेमेट्रियस की सफलता पूर्ण हो गई, परिणामतः राजकीय प्रवेश के पश्चात् उसे मास्को में राजमुकुट पहनाया गया। (30 जुलाई, 1605)[1]।

डेमेट्रियस का शासन (1604–1606)

कपटी डेमेट्रियस' का शासन उतना ही दयापूर्ण था जितना क्रूर उसके पूर्ववर्ती शासकों का था। रोमानोफो को देशनिकाले से वापिस बुला लिया गया और भूतपूर्व बोरिस के सम्बन्धियों को कोई दण्ड नहीं दिया गया। दान द्वारा

---

1 देखिये वेलिजस्की लिखित ला क्राइसे रिवोल्यूशनरे (1584–1614) अध्याय 2 एवं 3 तथा निसबेतबेन लिखित स्लावोनिक यरोप, अध्याय 9।

और बुद्धिमतापूर्ण प्रशासन करके उसने किसानों और सिपाहियों में लोकप्रियता प्राप्त करली तथा अपने कुशल प्रबन्ध से वह बोइयरों को मनाने मे सफल हुआ। उद्योगों पर लगे हुए बहुत से प्रतिबन्ध हटा दिये गये, सैनिक शिक्षा में कपट प्रयोग-रीतियों का आरम्भ हुआ पोलेन्ड और पेडोसी से रूसी स्वतन्त्रता को किसी प्रकार की हानि पहुंचाये बिना, मित्रता बनाये रखी गई, इस प्रकार• यह राष्ट्र एक ऐसे राजकीय शासन का अभ्यस्त था जिसकी जड़ता या क्रूरता अभिन्न विशेषतायें होती थीं। ये लोग उस व्यक्ति की, जो असली डमट्रियस होने का दावा करता था, लगातार काम करने की शक्ति और अदम्य कार्यकुशलता मे आश्चर्य चकित हो गये[1]। किन्तु नये राजा को उसके गुणों ने तबाह कर दिया। देश मे नई पोलिश सैनिक टुकड़ियों के आगमन और एक पोलिश महिला से विवाह करने से राष्ट्र मे उसके प्रति अरुचि उत्पन्न हो गई यद्यपि उसका कैथोलिकवाद गुप्त था तथापि कट्टर-पथी जैसुइटों के वहां आजाने से वे घबरा गये। उसका सहानुभूतिपूर्ण शासन उन्हें उसके छद्मवेषी होने का प्रमाण लगता था। तीन बोइयरों ने वासिलीचोइस्की (vossili chousiki) के नेतृत्व में (जो डूमिट्री के वध में गोडूनोफ का एजेन्ट रहा था) एक सेना सगठित की और 17 मई, 1606 की रात्रि को अनेक पोलों का तथा डेमेट्रियस का वध करके मास्को पर अधिकार कर लिया। उसके शरीर का दाह-कर्म करने के पश्चात् उन्होंने उसकी भस्मी को तोप मे भर कर लिथुआ-निया की तरफ चला दिया जिधर से वह आया था। इस प्रकार रूस के इतिहास का एक सुशासनकाल समाप्त हुआ।

एक अन्य 'कपटी डेमेट्रियस'

इस आन्दोलन के नेता वासिलीचौइस्की (शुइस्की) को तुरन्त जार घोषित कर दिया गया, किन्तु उसका शासन प्रत्येक जगह विवादग्रस्त था। उसके दाह-कर्म से पूर्व डेमट्रियस जब फांसी के तख्ते पर लटका हुआ था, तो उसका चेहरा नकाब से ढक दिया गया था। इससे किसी अन्य व्यक्ति को 'डमट्रियस का कपटी वेश' धारण करने का बहाना मिला और यह था पोलिश मनोनीत एक अनिच्छुक व्यक्ति जिसे 'टुचीनो का लुटेरा'[2] (the brigand of touchino) कहते थे। कुछ समय तक चौइस्की को मास्को में प्रायः उपेक्षित ही रखा गया, जबकि कठपुतली राजा का शासन एक भाड़ेत पोलिश सेना बनाये हुए थी और जार केवल स्वीडिश सैनिकों की सहायता से अपनी रक्षा करता था जो

1 वेलिजवस्की, पूर्व उद्धृत, 182–247।

2 इसका वास्तविक नाम सम्भवतः गेबरेल वेरेवकिन था। इस सदर्भ में देखिए वेलिजवस्की, पूर्व उद्धृत, अध्याय 9।

उसने चार्ल्स नवम को करेलिया (karelia) देकर प्राप्त की थी। इस मित्रता के कारण पोलेन्ड के वासा राजा ने स्वयं और सार्वजनिक रूप से इस विषय में हस्त- क्षेप करने का निश्चय किया। अपने पुत्र के पक्ष में राज्य का दावा करते हुए उसने स्मोलेन्स्क पर घेरा डाल लिया। चोइस्की का जार बने रहना अब पूर्णतया उसके पुत्र स्कोपाइन की सैनिक योग्यता पर निर्भर करता था। चौइस्की के एक महत्वा- कांक्षी भाई ने स्कोपाइन को विष देकर मार दिया और तत्पश्चात् साम्राज्यीय सेनाओं को पोलिश सेना से पराजित कर दिया (23 जून, 1610)। इस पराजय के कुछ दिन बाद ही चौइस्की ने त्यागपत्र दे दिया और एक मठ(monastery) में चला गया।

कठिनाइयों का युग (1610-1613)

चूंकि मस्कोवाइटों (muscovites) द्वारा किसी ऐसे व्यक्ति के जार निर्वाचित करने की बहुत कम सम्भावना थी जिसे समस्त रूसी साम्राज्य स्वीकार करले, इसलिए बोइअरों ने एक रीजेन्सी कौसिल द्वारा शासन करना आरम्भ किया। अब सिगिसमण्ड (sigismund) ने अपने लिए राज्य का दावा किया और इस प्रकार पोलों और बोइअरों के मध्य मास्को में विकट संघर्ष चल पड़ा। सिगिस- मण्ड द्वारा 1611 में स्मोलेन्स्क पर अधिकार, स्वीडन द्वारा रूस पर आक्रमण और बहुत से नये छद्मावेषियों का खड़ा होना आदि ने रूस में पूर्ण अराजकता फैलादी। इन वर्षों को, जिनमें तातारों, स्वीडों, कोसकों और पोलों के लुटेरे जत्थे रूसी किसानों को नोच लेते थे और वध करते थे[1], 'दुखद काल के नाम से सम्बोधित किया जाता है।' अन्ततोगत्वा एकता के सूत्र में बांधने वाली एक मात्र शक्ति धर्म ने उनकी भावना को जागृत किया। निजनी नोवगोरोड (nijnivovgorod) के हत्यारे मिनाइन (minine) के नेतृत्व में विदेशियों को निकालने, निर्विवाद जारशाही को पुन: स्थापित करने, और कट्टर कैथोलिककवाद को फिर लाने का आन्दोलन चलाया गया। पोलो से मास्को छीन लेना राष्ट्रवादियों की पहली सफ- लता थी, दूसरी सफलता थी माइकेल रोमानोफ को जनवरी, 1613 में राष्ट्रीय जार निर्वाचित करना। यह निर्वाचन एक ऐसी सभा द्वारा किया गया जिसमें बोयअरों (boiars), पादरियों (clergy), व्यापारियों, शिल्पियों, स्ट्रेल्टसी (streltsi) और कोसेको[2] के प्रतिनिधि सम्मिलित हुये। सबका निर्णय माइकेल रोमानोफ के पक्ष में हुआ क्योंकि वह आइवन 'भयकर' के देश का प्रतिनिधि था तथा उसके परिवार का गोडूनोफ (godounof) और विदेशी आक्रमणकारियों

1 वेलिजवस्की, पूर्व उद्धृत, अध्याय 12।

2 वही, अध्याय 14।

दोनों ने दमन किया था राजतिलक के तुरन्त बाद माइकेल ने डान कोसेको (doncossacks) की सहायता से व्यवस्था स्थापित की और अपने साम्राज्य को दृढ़ करने के लिए विदेशी सहायता मांगी । 1617 मे स्टोलबोवो की शान्ति सन्धि (peace of stolbovo) द्वारा स्वीडन ने इवान्गोरोड (ivangorod) के अतिरिक्त सभी विजित प्रदेश रूस को लौटा दिये, परिणामतः 1618 में पोलों के साथ युद्ध विराम–सधि पर हस्तक्षर हो गये ।[1]

माइकेल रोमानोफ (1618–1645)

अपने पिता पेट्रिआर्क फिलेरटे की सहायता से युवक माइकेल ने ऐसी सरकार बनाई जो कुछ अंशों में वैधानिक तथा कुछ अंशों में धार्मिक थी । विदेशियों को किसी भी प्रकार का वचन नहीं दिया गया । मेल करने की नीतियों से शांति स्थापित की गई और जार ने पवित्रता, कट्टरता और सनातनवाद को अपनाकर अपनी प्रजा में इसके प्रति स्वामिभक्ति बनाये रखी । अलगाव की पुरानी मस्कोवाइट नीति अपनाने का प्रमाण इस घटना से स्पष्ट होता है कि इंगलैण्ड और फ्रांस दोनों ने ही रूस को प्रशा से व्यापारिक सम्पर्क का माध्यम बनाने की अनुमति नहीं दी । 1637 में डानकोसेको ने रूस के लिये अजोव पर अधिकार कर लिया किन्तु उन्हें इसे वापिस लौटाने का आदेश देकर तुर्की से लड़ाई को टाला गया । दो वर्ष पूर्व पोलेण्ड का लेडिस्लास ज़ार की गद्दी का अपना दावा त्याग चुका था और इस प्रकार माइकेल का शासन शान्तिपूर्ण ही रहा ।

अलेक्सिस माइखेलोविच (1645–1676)

माइकेल के पश्चात् 1645 में उसका पुत्र अलेक्सिस माइखेलोविच (1645–1676) उत्तराधिकारी बना जिसने अपने पूर्वजों की राजधर्म सम्बन्धी परम्पराओं को जारी रखा और अपनी सादगी और ऐश्वर्य के कारण प्रसिद्धी पाई ।[2] वह अपने पिता की तरह शान्ति प्रिय और पुरोहित राजा था, जिसने अपने चर्च की अत्युत्तम रीतियों को दरबार के धार्मिक शिष्टाचार में मिला दिया था । प्रशासन का निर्देशन पहले उसने अपने शिक्षक बोरिस मोरोजोफ को सौंप रखा था जिसने अपने युवक राजा पर कड़ा संरक्षण रखा और करदाताओं पर कठोर नियंत्रण रखा । उसकी विदेशी नीति मुख्यतया युक्राइन में रूसी प्रभाव का प्रसार करने की थी, जिसका उद्देश्य स्वीडन और पोलेण्ड के पारस्परिक विरोध से लाभ उठाना था । रूस ने चमील्निकी (bogdan chemielnicki) द्वारा पोलिश शासन के विरुद्ध किये गये विद्रोह से भी लाभ उठाया । इसका परिणाम यह निकला कि 1667 के

---

1 देऊलिना की शांति संधि ।

2 निस्बेतबेन, स्लावोनिक यूरोप, अध्याय 10 ।

ऐंड्रुसोवो की संधि द्वारा अलेक्सिस ने लिथुआनिया पर अपने सब दावे छोड़ दिये किन्तु स्मोलस्क और कीव पुनः प्राप्त कर लिये और इस प्रकार रूस की सीमा नीपर तक बढ़ा दी। इस संधि ने यूक्राइन का दो भागों में विभाजन स्थाई कर दिया, प्रथम नीपर से परे का पश्चिमी भाग जिसके सम्बन्ध में पोलैण्ड व तुर्की मे विवाद था और दूसरा पूर्वी भाग जो रूसी आधिपत्य में आ गया। जब द्वितीय विभाजन (1793) में पश्चिमी यूक्रेन पोलैण्ड के हाथ से निकल गया तो समूचा यूक्राइन रूस का हो गया। उधर अलेक्सिस तलवार के बल पर स्वीडन मे लिवोनिया न ले सका, इसलिये कार्डिस की संधि (treaty of kardis) (1661) के अनुसार उसे वह छोड़ना पड़ा।

निकोन के सुधार

अलेक्सिस के राज्य का महत्व, उसकी विदेशी नीति में न होकर पेट्रिआर्क निकोन द्वारा चलाये गये सुधार के विरुद्ध असंतोष में था। रूसी चर्च की प्रार्थना–पुस्तकें प्राचीन तथा अपूर्ण स्लाव-मूल पुस्तक (slav texts) पर आधारित थी, इस कारण उसमें कई त्रुटियां आ गई थीं। दीर्घकाल तक प्रचलित रहने के कारण ये विधियां प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी थीं इसलिये रूसी धर्म पुस्तकों को पूर्वी चर्चों की विधियों के अनुकूल करने के सब प्रयास विफल हो गये। रूस में क्रास का चिन्ह तीन की अपेक्षा दो अंगुलियों से बनाया जाता था, जीजस के नाम का उच्चारण 'ईजस' (iisous) की अपेक्षा 'इजस' (isous) किया जाता था[1]। इन बातों में परिवर्तन करने का अर्थ विधर्मी (heresy) कहलाने का खतरा लेना था। इंगलैण्ड के हेनरी अष्टम को भी इसी प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ा था जब उसने पारिश के अबोध पादरियों को 'सम्पसीमस' (sumpsimus) के स्थान पर 'मम्पसीमस' (mumpsimus) पढ़ते देखा जबकि यह अशुद्धि प्रतिलिपिकार की त्रुटि से हो गई थी। अपनी सुधार सम्बन्धी योजनाओं को लागू करने में निकोन ने देखा, उसे रूस की तमाम अज्ञात व अन्धविश्वासी शक्तियों का सामना करना पड़ेगा, किन्तु यह चुनौती 1653 मे दी गई थी जबकि एक धार्मिक सभा (ecclesiastical synod) ने मास्को में एकत्रित होकर, कुस्तुन्तुनिया के पेट्रियार्क से पत्र व्यावहार करके, प्रार्थना पुस्तक (service books) का संशोधन करने का निर्णय दिया। प्राचीन प्रथाओं के प्रति दृढ़ मस्कोवाइट इन नये विधर्मियों के विरुद्ध संगठित हो गये। उनका मन्तव्य था कि इस प्रकार की नवीनतायें लिटिल रूस और ग्रीस से आरम्भ होती थीं जहां से रूस को प्रभावित करने वाले सारे दोष आते थे।

---

1 रेमबॉड कृत हिस्तोरे द ला रूसिये, अध्याय 21।

इन लोगों के मतानुसार निकोन क्राइस्ट-विरोधी था। परिणामतः सरकारी सुधारों तथा सार्वजनिक परम्पराओं में यह विवाद अलेक्सिस के राज्य शासन के अधिकांश भाग में लगातार चलता रहा। चूंकि धार्मिक सिद्धान्त सम्बन्धी बातों पर सदेह किया जाता था इसलिये अनेक पथ बन गये और धार्मिक भावुकता के कारण अनेक दोष उत्पन्न हो गये। अनेकों को मृत्युदण्ड दिया गया तथा बहुत से इन शहीदों का मुकुट धारण करने के इच्छुक खड़े हो गये, कुछ भाग गये, और कुछ ने धार्मिक मतवालेपन मे, इस आस्था से कि आत्मदाह मुक्ति का निश्चित तरीका है अपने शरीर मे आग लगा ली। 1658 में सम्राट द्वारा निकोन को त्याग दिया गया और उसे अपमानित किया। 1666 में जब उसकी सम्पति को जब्त करने का दण्ड दिया गया तो उसे श्वेत सागर पर एक मठ में भेज दिया गया, किन्तु यह स्पष्ट है कि उसे बलि का बकरा बनाया गया था। अलेक्सिस ने कई बार गुप्त रूप मे उससे पुनः मेल करने का प्रयत्न किया, यद्यपि यह व्यर्थ सिद्ध हुआ। निकोन सदभिप्रायी था किन्तु चतुर न था। उसके प्रस्तावित सुधारों ने रूसी रूढिवादिता को हिला दिया और इस प्रकार पीटर महान् का कार्य सरल कर दिया।

जार फियोडोर (1676–1682)

अपनी पहली पत्नी मेरी मिलोस्लाव्स्की (marie miloslavski) की 1669 में मृत्यु हो जाने के पश्चात अलेक्सिस ने नाटाली नारीच्काइन (natalie nariy-chkine) से विवाह किया जो बोइअर माटवीफ (boier matveef) की भतीजी थी और माता की ओर से स्काटिश वंश की थी। माटवीफ का गृह–प्रबन्ध पश्चिमी ढंग का था। नाटाली रूसी प्रथाओं द्वारा स्त्रियों पर लगाई गई मूर्खतापूर्ण प्रतिबन्धों से पूर्णतया अनभिज्ञ थी। इस विवाह का कारण था पीटर महान्। अलेक्सिस के पश्चात उसकी पहली पत्नी से उत्पन्न पुत्र फियोडोर उत्तराधिकारी हुआ (1676–1682)। नये जार में शारीरिक व मानसिक निर्बलता होने के कारण मिलोस्लाव्स्की और नारीच्काइन के प्रतिस्पर्धी दलों को पूरा अवसर मिल गया, जबकि वास्तविक शक्ति फियोडोर की बहन सोफिया[1] के हाथ में थी। फियोडोर की मृत्यु के उपरान्त (1682) मेरी मिलोस्लाव्स्की से उत्पन्न अलेक्सिस का दूसरा पुत्र आइवन गद्दी पर बैठा, किन्तु चूंकि व्यावहारिक रूप में वह निपट मूर्ख था। इसलिये पेट्रियार्क और बोइअरों ने पीटर को अपना शासक घोषित कर दिया। इससे मिलोस्लाव्स्की की पुत्रियां, भूतपूर्व जार अलेक्सिस की बहनों से मिलकर, नौवर्षीय पीटर और उसके नारीच्काइन सम्बन्धियों के विरुद्ध हो गई। स्ट्रेल्टसी लोगों को माटवीफ तथा कई नारीच्काइनों का वध करने के लिये उत्प्रेरित किया गया, जिसका परिणाम यह निकला कि 1682 में रूस के तीन

शासक थे—आइवन, पीटर और सोफिया, पहला निपट मूर्ख, दूसरा बालक और तीसरी स्त्री।

सोफिया का शासन (1682-1689)

सोफिया की शक्ति के कारण स्थिति सम्भल गई।[1] उसने दोनों भाइयों के नाम पर शासन आरम्भ किया। किन्तु उसने एक ऐसी विचार विनिमय मण्डली (colloquy) की अध्यक्षता ग्रहण करके रूस का अपमान किया जिसमें खूनी स्ट्रेल्टसियों (streltsi) ने 'पुरातन' (old Faith) को पुन: लागू करने तथा सुधारपक्षी अथवा निकोनियन दल का दमन करने की मांग की जबकि स्वयं सोफिया अलेक्सिस की पुत्री होने के कारण इस दल में सम्मिलित थी। संसार के सबसे अधिक पाशविक स्वभाव के सिपाहियों में धर्म परायणता के इस जोश ने साम्राज्यी-वंश का लगभग नाम ही मिटा दिया जिनमें मिलोस्लाव्स्की और नारीच्काइन आदि सभी थे। केवल सोफिया के साहस ने राज्य को अपने वंश के लिये बचाया। एक बार स्ट्रेल्टसियों को मनाने के बाद, सोफिया एक योग्य और बुद्धिमान शासक सिद्ध हुई, वह यूरोपियन राजनीति की धाराओं के निकट सम्पर्क में रही। जब उसने देखा कि अब पोलेण्ड की अपेक्षा तुर्की से भय है तो वह 1686 में होली लीग (holy league) में सम्मिलित हो गई और जॉन सोबीस्की से वार्ता करके, पोलैण्ड के स्मालंस्क और कीव के समस्त दावे खत्म करके उन्हें रूसी साम्राज्य में मिला लिया। किन्तु फ्रांस द्वारा तुर्की के विरुद्ध साथ न देने के कारण रूस ने फ्रांसीसी जैसुइटों को निकाल दिया। पोल, जर्मन, और साम्राज्यवादी सेना के साथ रूसी सेनाओं ने भी तुर्की के विरूद्ध अभियानों में भाग लिया किन्तु परिणाम उनकी संख्या के अनुरूप न निकले 1689 के बाद रूस ने होली लीग को सहायता देना बन्द कर दिया।

पीटर महान्

1696 में ज़ार आइवन की मृत्यु हो गई, तथा 1686 में पीटर का राज्य आरम्भ हुआ। रूस अभी तक किसी साम्राज्ञी के शासन में रहने के लिये तैयार न था और वहाँ की राष्ट्रीय भावना 'स्त्रियों की विकराल पलटन' (the monstrous regiment of women) के विरूद्ध थी चाहे वह कितनी ही कुशल क्यों न हो। एक रनिवास विद्रोह द्वारा पीटर ने सोफिया से मुक्ति पाई। स्ट्रेल्टसियों को, जो राजगद्दी के उद्धत युवक दावेदार के सामने चींचीं करते थे एक तर्क से ही, जिसे जंगली जनिसरी समझ सकते थे, सीधे मार्ग पर आ गये और वह था बल प्रयोग

---

1 रेमबॉड, पूर्व उद्धृत, 22।

व पाशविक व्यावहार । 1672 में उत्पन्न होने के पश्चात् पीटर अलेक्जेविच में कुछ ऐसी विशेषतायें देखी गईं जो उसे केवल रूस में ही नहीं प्रत्युत विश्व के इतिहास में एक विलक्षण व्यक्ति बनाने वाली थी । प्रारंम्भिक अनुभवों में उसे स्ट्रेलटसी से इतनी घृणा हो गई जितनी लुई चौदहवे को पेरिस की भीड़ से थी । उसमें और पेरिस के राजा में एक सामान्य बात यह थी कि वह भी अपने परमाधिकारों में कमी करना सहन नहीं कर सकता था । लड़कपन में वह मातृ नियंत्रण और सरकारी संरक्षण से निकल कर मास्को की मंडी के लोगों के निर्जातीय जीवन में घुलना मिलना पसन्द करता था । वहां उसने सर्व प्रथम जर्मन और डच का ज्ञान प्राप्त किया । टिमरमैन नामक जर्मन से, उसने गणित के सिद्धान्त और किलेबन्दी का कुछ ज्ञान अर्जित किया । पहले उसने अपने मनोरंजन के लिये विदेशी सहायता से सिपाहियों का एक छोटा सा दस्ता तैयार किया जिनकी व्यूह रचना करने और झूठी लड़ाई करने में उसे आनन्द मिलता था और ये कार्य विधियां इतनी गम्भीरता-पूर्वक की जातीं थीं कि कई व्यक्तियों की मृत्यु तक हो जाती थी। उन विशेषज्ञों में, जिनकी वह इन यौवनपूर्ण प्रयोगों में सहायता लेता था, एक स्काट्समैन पेट्रिक गोर्डन (Patrick Gordon) था, और दूसरा जिनेवा निवासी फ्रेंकोयस लेफर्ट (Francois lefort) था । इनमें से दूसरे सज्जन ने पीटर के मन में पश्चिमी यूरोप की यांत्रिक उपलब्धियों में घनिष्ट रूचि और रूसी सीमाओं से बाहर यात्रा करने की विशेष इच्छा बढ़ाने में अत्यधिक योग दिया । इक्कीस वर्ष की आयु होने तक उसने आर्केंजल (Arkhangel) में जहाज बनाने का कारखाना स्थापित कर दिया था और वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार एक राष्ट्रीय सेना संगठन की नीव रखी ।

अजोव पर अधिकार (1696)

सोफिया को हटाने से विदेशी नीति में कोई अन्तर नहीं आया था। पीटर के मन में तुर्कों के विरुद्ध लड़ने की बड़ी अभिलाषा थी, जो उसके प्रतिस्पर्धी थे । पीटर की अभिलाषा का तात्कालिक लक्ष्य अजोव पर अधिकार करना था, जिसके लिए दो बार सेनायें भेजी गई, पहले प्रयत्न में 30000 सेना भेजी गई जो असफल रही । किन्तु पीटर ने अपने प्रयास दुगुने कर दिये, फ्रांस को छोड़कर लगभग प्रत्येक यूरोपीय देश से सहायता मांगी, डैन (don) में बड़े बड़े जहाज बनाने के कारखाने स्थापित किये, और 1696 में दूसरी बार फिर सेना भेजी जिसने अजोव ले लिया । इस सफलता का अतिश्योक्तिपूर्ण मूल्यांकन किया गया किन्तु इससे पीटर को अपने समाज और सरकार में पश्चिमी प्रणालियों का समावेश करके, और अपनी स्थल और नौ सेना का पुनर्गठन करके, रूस को शक्तिशाली बनाने के निरन्तर कार्य

में, प्रोत्साहन मिला।[1] अजोव पर रूस का अधिकार कार्लोविज की सन्धि द्वारा दृढ़ हो गया।

पीटर की यात्रायें: स्ट्रेल्टसी के विद्रोह (1698)

1697 में पीटर ने अपने पीछे बोइअर शासनकारिणी पर उत्तरदायित्व छोड़ कर पश्चिमी यूरोप की प्रथम यात्रा की, जिसमें वह उत्तरी जर्मनी, हॉलेन्ड इंगलेण्ड और ऑस्ट्रिया गया। जार और उसके अमले[2] (snite) के ऐश्वर्य और विचित्र तरीकों से जो लोगों में सनसनी (sensation) फैली उसके अनेक समकालीन विवरण उपलब्ध हैं। हॉलेन्ड में उसने जहाज बनाने से लेकर नक्काशी तक बहुत से शिल्पों का कुछ ज्ञान प्राप्त किया तथा किसी भी विधि को स्वय करने पर जोर दिया। जब उसका ध्यान किसी यान्त्रिक विधि अथवा युक्ति की ओर आकर्षित किया जाता तो वह प्रत्येक को जानने के लिये कभी-कभी क्षणिक ही क्यों न हो, उत्सुक होता था। उसने अपनी परिपूर्तियों में दांत निकालने का तरीका (the art of extracting teeth) भी सीखा जिसका अभ्यास उसने अपने विशाल अमले के लोगों पर किया। इगलेण्ड जाकर उसने डेप्टफोर्ड के जहाज बनाने के कारखाने में काम किया और विलियम तृतीय के काल का लन्दन देखने में रूचि ली। शाही कारीगर को कार-खाने में काम करते देखने की अन-अभ्यस्त जनता को यह मनोरंजक और आश्चर्य-जनक लगा। जनवरी, 1698 में वह हॉलेण्ड वापिस आ गया और वियना के लिए प्रस्थान किया जहां उसने सम्राट् के सम्मुख तुर्की के विरूद्ध युद्ध सम्बन्धी विचार रखे। पीटर की अनुपस्थिति में स्ट्रेल्टसियों द्वारा विद्रोह करने के समाचार सुनकर उसे शीघ्र वापिस जाना पड़ा, यद्यपि इससे उसे अपनी योजनाओं को छोड़ना पड़ा। उसकी यात्रा के दौरान रूस की तमाम प्रतिक्रियावादी शक्तियां उसके विरोध में एकत्र हो गई थीं। उसके नाविक प्रयोग, उसके विदेशी सलाहकार, उसकी मुंड़ी हुई दाढ़ी, इन सब बातों से प्राचीन या 'रस्कोल्निक' (raskolnik) मत उसके विरुद्ध हो गया। तम्बाकू पीने की अनुमति देना भी उसके विरुद्ध एक आरोप था क्योंकि धर्म-ग्रन्थ, में तम्बाकू पीने के सम्बन्ध में एक सूत्र था, "जो कुछ मानव के भीतर जाता है वह नहीं, जो उसके अन्दर से बाहर आता है वह उसे गन्दा करता है," पीटर की यात्राओं ने उसके अपराधों की सूची सम्पूर्ण कर दी थी। स्ट्रेल्टसी ने इस चिल्लाहट से और ज़ार की अनुपस्थिति में जो स्वतन्त्रता मिली थी उससे लाभ उठाने में देर नहीं की। उन्होंने ज़ारीना सोफिया से, जो उस समय एक मठ में बन्दी

---

1 जिनकेसन, पूर्व उद्धृत, 5,186–200।

2 देखिए मिट्ज़लोक लिखित पियरे ल ग्रोंद दास ला लितरेचर एट्रंगरे (1872)।

थे, बातचीत की और यद्यपि स्वामिभक्त सैनिकों द्वारा वे पराजित कर दिये गये, तथापि वे पीटर के स्थान पर सोफिया का शासन लाने के दृढ़ उद्देश्य से, सामने डटे रहे।

विद्रोह का दमन (1698–1699)

अपनी वापिसी पर पीटर ने पहले अपने अंगरक्षक (body guard) दल से छुट्टी पाने का दृढ़ निश्चय किया जो कातिलों की मण्डली (corporation of assassians) के अतिरिक्त और कुछ नहीं था और जिन्होंने राज-विश्वासघात (high treason) को अपने पापों (Sins) में और जोड़ लिया। 1698–99 की शरद ऋतु में साम्राज्यीय वधिकों पर इतना बोझ पड़ चुका था कि पीटर को स्वयं उनकी सहायता करनी पड़ी, जल्दी ही थोड़े बहुत स्ट्रेल्टसी शेष रह गये। क्रेमलिन की दीवारें कभी कोर द इलाइट (corpsd' e'lite) कहलाने वालों के मृतक शरीरों से सजाई गई और जिस मठ में सोफिया नजरबन्द थी उसके बाहर स्ट्रेल्ट-सियों के जमे हुए शरीर लटकाये गये, उनमें से एक के मुंह में वह प्रार्थना पत्र लटक रहा था जिसमें उन्होंने सोफिया को गद्दी ग्रहण करने के लिए आमन्त्रित किया था[1]।

पीटर के सुधार : उसके सहायक

अपना शासन दृढ़तापूर्वक स्थापित होने के बाद पीटर द्रुतगति से सुधार करने लगा।[2] 1702 में उसने एक साम्राज्यीय घोषणा प्रकाशित की जिससे उसने विदेशियों को धार्मिक और कानूनी स्वतन्त्रता का आश्वासन देते हुए और इंजी-नियरों, शिल्पियों, शिक्षकों तथा डाक्टरों को विशेष लाभ का आश्वासन देकर रूस में आमन्त्रित किया। साथ ही रूसी युवकों को शिक्षा प्राप्त करने के लिये पश्चिमी यूरोप भेजा गया, वीनिस और हालेन्ड में जहाज निर्माण के सम्बन्ध में, इंगलेण्ड में शिल्प और उद्योग की शिक्षा के लिए, फ्रांस और ऑस्ट्रिया में सैनिक विज्ञान के लिए, तथा जर्मनी में औषधि के लिये। अपने विदेशी सलाहकारों के चुनाव मे पीटर की सर्वोत्तम व्यक्ति चुनने की भावना का बोध होता है। मोर्डन और ब्रूस स्कॉट एवं सैनिक थे. नौ सेनापति लैफर्ट जिनेवा से आया था, ऑस्टैरमैन जो कि एक जर्मन था, एक कुशल कूटनीतिज्ञ और विदेश विभाग का अनोपचारिक राज्य सचिव था। मॉटवीफ, चरमटीफ, अप्रेक्साइन, गोलोविन, गैलिप्साइन, डालगो, रूकी और करा-काइन परिवारों में से देशी प्रशासक लिये गये। पीटर के सुधार धीरे-धीरे प्रारम्भ

---

1 लेविसी एत रेमबॉड, हिस्तोरे जनरेल, 6,694।

2 इस सम्बन्ध में सर्वोत्तम विवरण रेमबॉड कृत हिस्तोरे द ल रूसिये, अध्याय 24 में उपलब्ध है। निस्बेतबेत कृत दि प्यूपिल्स आव पीटर दी ग्रेट तथा स्लावोनिक यूरोप, अध्याय 14 भी देखें।

किये गये। वे शिक्षा के आधार पर तैयार किये गये थे और उनको लागू करने के लिए कठोर कानून बनाये गये थे। उसने पारस्परिक रूसी पोशाक (russian dress) पर रोक लगादी. दाढ़ी (beasts) के तो वह विशेष रूप से विरुद्ध (vindicative) था। दाढ़ी के साथ दो अंगुलियों से धन्यवाद देना पुराने प्रतिक्रियावादी और अर्ध-एशियाटिक रूस का चिन्ह था। उसने अपने अनुचर-मण्डल के सबसे प्रतिष्ठित सदस्यों (most venerable members) को दाढ़िया स्वयं साफ कीं और चुंगीघरों को व्यापारियों की दाढ़िया साफ करने के लिए केंचियां (scissors) भेजी। पीटर ने पश्चिमी सभ्यता का बाह्य रूप धारण करने पर बल दिया।

चान्सरी और कालेज

पहले बोइअरों की डूमा (douma) की सहायता से शासन करने के पश्चात् पीटर ने 1700 में इस संस्था को समाप्त कर दिया और उसके बाद चैंसरी की सहायता से शासन करने लगा। सर्वोच्च न्याय और वित्तीय प्रशासन का नियन्त्रण एक छोटी सी सीनेट के सुपुर्द किया गया था जो 1711 में स्थापित की गई थी। यह एक ऐसा निकाय था जो बाद में सैनिकों को भर्ती और साधनों को अधिकार में रखने लगा और बाद में पीटर के निरंकुश शासन का मुख्य माध्यम बना। 1715 में कालेजिया (Collegia) द्वारा शासन करने की प्रणाली का समावेश किया जिसके लिए सबसे पहले मुख्यतया स्वीडिश युद्ध बन्दियों में से रंगरूट लिये गये थे। ये कालेजिया मन्त्रियों के विभागों का कार्य करते थे, प्रत्येक का कार्य क्षेत्र निर्धारित था। प्रान्तीय प्रशासन के लिए रूस गवर्नरों के अधीन 12 प्रान्तों में और वोइवोडों (Voievodes) के अधीन 43 प्रान्तों में विभक्त किया गया था। गवर्नरों की नियुक्ति सेन्ट पीटर्सवर्ग से होती थी, किन्तु वे प्रान्तीय लेण्डरथों (landraths) के प्रति भी उत्तरदायी होते थे। लेन्डरथों के सदस्य स्थानीय जमीदारों द्वारा निर्वाचित किये जाते थे। नागरिक कार्यों में भी स्पष्ट जर्मन प्रभाव दिखाई देता था। विभिन्न निगम (corporations) स्थापित किए गए, बरगोमास्टर (burgomasters) और सभासद निर्वाचित किये जाते थे और राथौस (rathans) नगरपालिका के कार्यों का केन्द्र बन गई।

पीटर की धार्मिक कार्यों सम्बन्धी नीति

इसी प्रकार धार्मिक पद्धति (ecclesiastical system) में भी सुधार किया गया। 1700 के पश्चात् पैट्रियार्क का पद समाप्त कर दिया गया और 1721 में पैट्रियार्क के अधिकार पादरियों की पवित्र सभा 'होली साइनाड' (holy synod) को हस्तांतरित कर दिये गये, जिसे छोटे पादरियों (lower clergy) में सुधार करने

और मुख्य-मुख्य अन्ध-विश्वासों का दमन करने का कार्य सौंपा गया। पीटर का ध्यान अपने शासन के आरम्भिक वर्षों में मठों की बृहत् आय पर भी गया और उसने यह निश्चय किया कि वह उसे राज्य के नियन्त्रण में कर लेगा। 1703 में उसने सब मठों की सम्पत्ति की जांच करवाई। आय के बचे हुए अतिरिक्त भाग को जमा कर लिया गया, और उस धन को शिक्षा और बीमार सैनिकों पर व्यय किया जाने लगा। उसी काल में मठों में प्रविष्ट होने वाले व्यक्तियों, स्त्री-पुरुष दोनों की संख्या पर नियन्त्रण करने का प्रयास भी किया गया। इसके अतिरिक्त इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिये कि पीटर की कुशल कारीगरों तथा व्यावसायिकों के आप्रवास की नीति (policy of immigration) केवल धार्मिक सहिष्णुता के कारण ही सम्भव हो सकी, किन्तु यहूदियों और जैसुइटों पर यह बात लागू नहीं होती थी, उनके लिए धार्मिक प्रचार का कार्य निषिद्ध था। 'रास्कोल्निकों' (raskolniks) का तभी दमन किया जाता था जब वे धार्मिक सहिष्णुता के साथ राजनीतिक गतिविधियों में लिप्त होते थे।

पीटर और जमींदार

पीटर के सबसे महत्वपूर्ण सुधारों में एक यह भी था कि उसने रूसी कुलीनवर्ग को सहकारी और अधीनस्थ बना लिया जो पहले रईस और स्वतन्त्र थे। जमींदारी (land holding) को एक बार फिर राजकीय सेवा से सम्बद्ध कर दिया गया चाहे वह सैनिक सेवा हो या असैनिक। वहां कोई अलौडियल भूमि (allodial land) न रही, और जैसा कि लुई 14वें के समय में फ्रांस में प्रथा थी, रूस में भी सारी जायदाद राजा से पट्टे पर (on lease) ली हुई मानी जाने लगी और इसलिये उन्हें अब अधिकारों के साथ कर्तव्यों की पालन करना पड़ता था। उसने जर्मन नमूने पर आधारित 'सरकारी पदों का क्रमबद्ध सूची' (table of ranks) द्वारा अलग अलग सामाजिक क्रमबद्धता (civil ranks) स्थापित करदी जिसमें सब असैनिक पदों के समकक्ष स्थल और नौ सैनिक पदों की व्याख्या की गई थी। ज्येष्ठ पुत्र को जागीर मिलने का नियम इस अभिप्राय से लागू किया कि भूमिदारी का उत्तराधिकार एक को देने से समृद्धिशाली भूमिदार वर्ग बना रहेगा और शेष भूमिहीन रईस सदस्यों को साम्राज्यीय सेवा में आने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

किसान

पीटर ने किसान वर्ग के लिये कुछ नहीं किया। उनका जिन नियमों के अनुसार भूमि पर अधिकार था वे विभिन्न प्रकार के और बेमेल थे, उसने धीरे-धीरे सबको मिलाकर सामान्य सर्फ पद्धति (serfdom) चालू कर दी और यह घोषित कर दिया कि उन पर प्रति व्यक्ति कर लगाया जा सकेगा और वे अपने मालिक की

नौकरी नहीं छोड सकेंगे । इनमें ऐसे सर्फ भी थे जो आरम्भ में स्वतन्त्र थे, उनमें से कुछ तो अपने प्रतिष्ठित वंश का अनुरेखण (descent) भी कर सकते थे। पीटर ने घोषणा प्रकाशित की कि जब सर्फो को बेचा जाये तो यथासम्भव उन्हें परिवारों में बेचा जाये न कि पशुओं की भाँति । यह घोषणा उसने मानवता के नाते की, किन्तु इससे इस बात का पता चलता है कि रूसी किसान का कितना गहरा पतन हो चुका था और ऐसे काल में जो हम से बहुत पीछे नहीं था । चर्च के अतिरिक्त उसके पास अपने को स्वतंत्र करने का अन्य कोई तरीका न था । इसके साथ ही भूमिहीन व अधिकार हीन किसान को करों का अधिकांश बड़ा भाग अदा करना पड़ता था ।

औद्योगिक और वित्तीय सुधार

इस साहसिक राज्य में रूस की वित्तीय पद्धति को पूर्णतया नया रूप दे दिया गया । कदाचार के अभियुक्त अधिकारियों से पीटर निर्दयता का व्यवहार करता था और गबन होने की स्थिति में पद का कोई ध्यान न रखते हुए कभी-कभी मृत्यु दण्ड भी दे देता था । बहुत से नये कर लगाये गये और सब रियायतें समाप्त कर दी गईं । नमक, तम्बाकू, मुद्राङ्कित कागज, सार्वजनिक व निजी स्नानगृह, किराये की गाडी चलाने वाले और गाड़ियां, इन सबसे राष्ट्रीय आय के लिये अर्थसग्रह किया जाता था । सराय, मत्स्य स्थान और स्थानीय चुंगी पर जार का एकाधिकार था किन्तु धन के अधिक प्राकृतिक साधनों की उपेक्षा नहीं की गई, क्योंकि भेड़ पालन आरम्भ किया गया और उसके साथ कपड़ा उद्योग भी चालू किया गया । दरिया और चमड़ा तैयार किये जाते थे (विदेशी सहायता से) । जमींदारों को अपनी जागीर में प्राकृतिक साधनों का विकास करने के लिये प्रोत्साहित किया गया । खेती के औजारों को सुधारा गया । दक्षिण पूर्व में अंगूर, शहतूत और तम्बाकू के पौधों का उत्पादन आरम्भ किया गया और पशुओं की नस्ल सुधारने का प्रयास किये गये । इन सब सुधारों का उद्देश्य रूस को आत्म निर्भर बनाना था । आयात को वह उतने ही अनिवार्य कच्चे माल तक सीमित रखना चाहता था जो रूस में उत्पादित नहीं होता था । जहाज निर्माण उद्योग पर विशेष ध्यान दिया जाता था । आर्खेंजल और सेंट पीटर्स बड़े-बड़े बन्दरगाह हो गये । एक नहर योजना द्वारा जो वोल्गा और नेवा को लडोगा झील में मिलाती थी, काले सागर और बाल्टिक को जोड़ दिया गया । पुराने व भद्दे सिक्कों के स्थान पर एक नई मुद्रा चलाई गई । इन सुधारों के परिणामस्वरूप पीटर ने 200000 राष्ट्रीय सेना तैयार की और लगभग 50 जहाजों का एक बेड़ा, जिसके साथ 800 छोटे जहाज और 20,000 कर्मचारी थे, तैयार किया ।

सेन्ट पीटर्सबर्ग की नींव

चूंकि बाल्टिक सागर का तट रूस के लिये अत्यावश्यक था, इसलिये स्वीडन, और चार्ल्स 12वें पर बड़े प्रबल आक्रमण किये गये। 1703 में उसने नेवा नदी के मुहाने पर सेन्ट पीटर्सबर्ग का निर्माण करना आरम्भ किया। रूस में अन्यत्र सब जगह भवन निर्माण का निषेध करके उसने श्रमिक और सामान (building material) सुरक्षित कर लिया। ज्यों–ज्यों नगर बनता गया जनता को आवासित किया जाने लगा। बड़े बड़े जमींदारों को वहां एक–एक घर बनवाना आवश्यक था। साम्राज्य की सरकार की राजधानी होने के कारण अन्दर बसे हुए मास्को का स्थान सेन्ट पीटर्सबर्ग ने ले लिया और वहां से उन सब पश्चिमी प्रभावों का प्रसार रूस में किया गया जिनका पीटर स्वयं बड़ा उत्साही व्याख्याता था। कपड़े जर्मन फैशन से सिलाये जाने लगे और महिलाओं को उनके 'एकाकी' जीवन से निकाल कर सभा–समाज में अपना योग देने के लिये तैयार किया गया। कैलेन्डर (calender) को फिर से सुधारा गया तथा आधुनिक रूसी अक्षरों में पुस्तकें छापी गई। एक चित्रकारी का स्कूल स्थापित किया गया और एक प्राकृतिक इतिहास 'नेच्युरल हिस्टरी कलेक्शन' (natural history collection) आरम्भ किया गया। अस्पताल और प्रयोगशालायें बन गई, खोज करने वालों को आर्थिक सहायता मिलने लगी और 1724 में **विज्ञान की रूसी अकादमी** (russian academy of sciences) की स्थापना की गई। पीटर ने रूस को अर्ध–सभ्य, अर्ध–एशियायी देश के रूप में पाया था, उसने इसे निरन्तर आक्रमणों के भय से मुक्त कर दिया और इसका मुंह पूर्व की ओर से हटाकर पश्चिम की ओर फेर दिया। स्वीडन की भांति रूस में भी इस काल में जनसंख्या में कमी हुई[1] किन्तु रूस के पास विशाल प्राकृतिक साधन थे जिनसे उसने इस हानि को शीघ्र ही पूरा कर लिया।

पीटर महान और रूस

पीटर के सुधार किसी समन्वित नीति के परिणाम न थे, जिन्हें एकदम लागू कर दिया गया हो बल्कि जल्दबाजी में बनाये नियमों की एक श्रृंखला थी, जो कभी अपने उद्देश्य को ही विफल करते थे, किन्तु अन्ततोगत्वा वे रूस को यूरोपीय ढंग का शक्तिशाली सैनिक राज्य बनाने में सफल रहे। इन परिवर्तनों का प्रभाव जनता के एक छोटे से वर्ग पर पड़ा क्योंकि वह प्रायः प्रशासनिक वर्गों तक सीमित रहा। ये प्रभाव संक्षेप में इस प्रकार हैं–प्रथमतः एक विशेषाधिकार युक्त प्रतिष्ठित वर्ग तैयार किया गया जिनमें असैनिक पद क्रमबद्ध रूप से सैनिक पदों के सदृश रखे गये। दूसरे, राजकोषीय प्रशासन में स्थानीय निकायों का सहयोग प्राप्त करने

---

1 मिलिकोव, हिस्तोरे द रूसिये, खंड 1, 315–17।

के लिये नगर-विकास की आवश्यकता हुई जिन्हें वह अपनी आर्थिक योजनाओं में भागी समझता था। तीसरे, युवकों को शिक्षा प्राप्त करने के लिये विदेशों में भेजने की प्रथा से एक उदार जातीयता-विहीन और कभी कभी तेजस्वी व बुद्धिमान व्यक्तियों (brilliant intelligentsia) का अविभार्व हुआ यद्यपि एक राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली का आविभाव करने के लिये मठो के स्कूलों के कार्यों की अनुपूर्ति नहीं की गई। अन्त में, किसानों को दासों की स्थिति में गिरा दिया गया, यद्यपि ऐसा करना पीटर का मन्तव्य नहीं था। प्रमुखतया ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि राज्य ने जमीदार और किसान के सम्बन्धों में हस्तक्षेप करना बन्द कर दिया। यद्यपि इसका पीटर के सुधारों से केवल अप्रत्यक्ष और आंशिक रूप से सम्बन्ध था, किन्तु फिर भी रूस के भावी इतिहास में यह सबसे अधिक दुःखद तत्व सिद्ध हुआ।

अध्याय 13

इतिहास में सत्रहवीं शताब्दी का स्थान

शास्त्रीय पांडित्य की परम्परागत सत्ता

17वीं शताब्दी की रचनात्मक विचारधारा और उसके यूरोपीय सभ्यता के विकास में महत्व का निरुपण करने से पूर्व उस काल के मिथ्या शास्त्रीय पांडित्य तथा अप्रचलित और नवीन आदर्शों में समन्वय के प्रयासों पर विचार करना होगा। किसी भी युग की विचारधारा का अच्छा अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उस काल के लोगों ने महान् साहित्यकारों के साहित्य का कहां तक सदुपयोग अथवा दुरुपयोग किया है। मध्यकालीन युग के लोगों का अपना मसियानिक वर्जिल तथा अपना ही पूर्वीकृत अरस्तू था। जागृति-काल में लोगों ने प्लेटो को नवीन प्लेटोनिज्म में परिवर्तित किया और सिसरो की लेखन-शैली का अनुसरण किया। काल्विनवाद की शिक्षाओं पर स्टॉइक दर्शन और सेनेका का कुछ प्रभाव पड़ा। मॉण्टेन विचारधारा का डिमॉक्रिट्स तथा एपिक्यूरियन विचारधाराओं से घनिष्ठ सम्बन्ध था। 16वीं शती के गणतन्त्रवादियों ने अपने सर्वप्रिय आदर्श 'लिवी' के उल्लेखों से प्राप्त किए। 17वीं शती में अरस्तु की प्रामाणिकता घटती जा रही थी और लोगों की रुचि टैसीटस तथा लुक्रेटियस में बढ़ती जा रही थी।

अरस्तू की प्रामाणिकता का ह्रास

इस काल में साहित्य सम्बन्धी अभिरुचि व वैज्ञानिक तथ्य सम्बन्धी समस्त विषयों में अरस्तू के सिद्धान्तों को प्रामाणिक माना जाता था। यह बात पश्चिमी यूरोप के नाट्य-साहित्य में समय व स्थान की दवाइयों को दिये जाने वाले महत्व से स्पष्ट हो जाती है। इसका ज्ञान गेलिलियो और कोपर्निकस सिद्धान्तों के समर्थकों के साथ किये गये व्यावहार से भी हो सकता है। इस अन्तिम बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इस शती का आरम्भ जियोर्डानो ब्रूनो (giordano bruno) के दाह-संस्कार से होता है जो उन दिनों अप्रचलित अरस्तुवाद पर, जिसे राजकीय स्तर पर चर्च द्वारा मान्यता प्राप्त थी, शहीद हो गया। दूसरी घटना थी गेलिलियो द्वारा अरस्तु की ध्रुव सत्यता और वैज्ञानिक अनुसंधान में विवाद खड़ा करना।[1] यह महान् इटेलियन इस द्वंद को समझता था और उसने

---

[1] देखिये रोच लिखित देर प्रोसेस गेलिलियास एण्ड दाइ जेसुटेन।

पेरिपेटेटिक (peripatetic) दार्शनिकों के उन प्रयासों को कभी मान्यता नहीं दी जो वे अरस्तु के पदार्थ–विज्ञान और प्रकृति के तथ्यों में साम्य लाने के लिए कर रहे थे। जब उसने दूरबीन द्वारा यह दिखा दिया कि जिन्हें आकाश-गंगा (milky way) कहा जाता है वे असख्य तारों की पक्तियाँ हैं न कि उल्का (meteors) जैसा कि अरस्तू की मान्यता थी, तब भी फ्लोरेन्स के पेरिपेटेटिक फ्रांसेस्को सिज़ी (peripatetic francesco sizi) ने इस तथ्य की पुष्टि करने से इन्कार कर दिया क्योंकि, उनके विचार में आकाश–गंगा में तारे हो ही नहीं सकते थे। उसका कहना था कि यदि गेलिलियो ने दूरबीन से तारे देखे हैं तो निश्चय ही दूरबीन के शीशों में कोई दोष होगा। जब गेलिलियो के सामने यह तर्क रखा गया कि बाइबिल के आधार पर उसके सिद्धान्तों की पुष्टि नहीं होती तो उसने उत्तर दिया, "पावन धर्म-ग्रन्थ में त्रुटि नहीं हो सकती, उसके आदेश पूर्णतया सत्य हैं, किन्तु उसके अर्थ का व्याख्याता व्याख्या करने में कई प्रकार की गलती कर सकता है।"[1] एक अन्य स्थान पर उसने लिखा, "चर्च की ध्रुव सत्यता केवल आस्था व आत्मा–सम्बन्धी बातों तक ही सीमित है, किन्तु वह ऐसे व्यावहारिक निर्णयों और दार्शनिक अनुमानों में जिनका सम्बन्ध आत्मा की सुरक्षा से नहीं है, गलती कर सकता है।" 1632 में वेटिकन की एक विशेष सभा ने गेलिलियो के लहरों–सम्बन्धी सिद्धान्त (theory of tides) को[2] निम्नलिखित कारणों से दोषपूर्ण ठहराया।

(1) वह अपने विरोधियों का गलत अनुमान लगाता है और विशेषकर अरस्तु जैसे लेखकों का जिनके विचारों में और चर्च में सबसे अधिक साम्य है।

(2) वह मानव व दैवी बुद्धि में, और विशेषतया रेखागणित सम्बन्धी ज्ञान के समझने में, समानता का प्रतिपादन करता है।

(3) वह सूर्य की अचलता और पृथ्वी की गति का जो दोनों यथार्थ नहीं हैं, समुद्र के उतार–चढ़ाव का कारण मानता है, जो यथार्थ हैं।

कोपर्निकस की पद्धति की निन्दा

25 फरवरी, 1616 को कोपर्निकस की पद्धति का सरकारी रूप से खण्डन किया गया, और तीन वर्ष बाद 1618 में केप्लर की ऐपीटोम अस्टोनोमिये (epitome astronomiae) इण्डेक्स में सम्मिलित कर ली गई। किन्तु अब अरस्तु की अकाट्य प्रामाणिकता असामयिक हो चुकी थी और कुछ ही वर्षों में स्वतन्त्र अनुसंधान पर लगी हुई निषेधाज्ञा समाप्त होने वाली थी। 1634 के

---

1 रोच, वही 60।

2 वही, 230, एफ. एफ.।

बाद कोई कोपर्निकन पुस्तकें इण्डेक्स (index) में सम्मिलित नहीं की गईं, यद्यपि इटली और जर्मनी में इस पद्धति की कुछ व्याख्यायें अवश्य प्रकाशित हुईं। 1699 में लिबनिज ने जब वह रोम में था, ऐसी पुस्तकों को निन्दनीय नहीं पाया। चर्च पक्षवालों का मन्तव्य था कि पोप पॉल पन्चम ने कोपर्निकन पद्धति (copernican system) की निन्दा नहीं की थी,[1] न ही कभी वैज्ञानिक प्रश्न-सम्बन्धी अपने मतों की ध्रुव सत्यता का दावा दिया था, गेलिलियो (galileo) के विरुद्ध भी यही आक्षेप था कि वह अपने विचारों को वैज्ञानिक अनुमान न कहकर ध्रुव सत्य मानता था। 17वीं शताब्दी के पूर्व भाग में यद्यपि इस प्रकार की व्याख्यायें दी जा रही थीं किन्तु वास्तविकता यह थी कि इंक्विजिशन (inquistion) तथा जैसुइट किसी विश्व-सम्बन्धी ऐसे सिद्धान्त का जो टोलमिक पद्धति (ptolemaic system) से मेल नहीं खाता था, घोर विरोध करते थे और अपनी इस प्रकार की असहिष्णु प्रवृति के पक्ष में अरस्तू को प्रस्तुत करते थे।

टस्कनी में वैज्ञानिक अनुसंधान

ज्यों-ज्यों इस प्रकार की भावना कम होती गई त्यों-त्यों वैज्ञानिक, और विशेषतः पदार्थ-सम्बन्धी जांच, कैथोलिक देशों के विद्यालयों तथा विद्वानों में लोकप्रिय व सुरक्षित होने लगे। टस्कनी के फर्डिनेन्ड द्वितीय और उसके भाई लियोपोल्ड ने अपने राज्यकाल में शान्ति का लाभ उठाया और अपनी शक्ति गेलि-लियो के शिष्य विवियानी (viviani) के निर्देशन में चल रहे वैज्ञानिक कार्यों में लगाई। वहां तरल पदार्थों के घनत्व और पानी के माध्यम से रोशनी (propaga-tion of light) उत्पन्न करने के प्रयोग किये गये। ऐसे अनुसंधानों में क्रमबद्धता लाने के लिए ही लियोपोल्ड ने 1657 में सिमेंटो की अकादमी (academy of cimento) की स्थापना की। 1665 में पेरिस से एक वैज्ञानिक पत्र, जूर्नल दे सवांत (journal des savants) प्रकाशित होने लगा, तीन वर्ष बाद इटली में जिओर्नेल दि लेतराती (giornale di letterati) की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य पेरिपटेटिक (peripatetics) सिद्धान्तों के विरूद्ध अन्वेषण जारी रखना तथा पुरानी प्रचलित पद्धति की भर्त्सना करना था। फिर नियोपोलिटन अकादमिया दी इन्वेस्तीगान्ती (academia dei investiganti) की स्थापना स्पष्टतया इस उद्देश्य से की गई कि ऐसे तमाम प्रमाणों का खण्डन किया जाये जो केवल परम्पागत होने के कारण माने जाते हैं।[2] ये सब अकादमियां 1660 में स्थापित

---

1 रोच, उपर्युक्त पुस्तक, 445। विशेष विवरण के लिए देखिए, कांतो कृत गिली हेरेतिकी द इतालिया, 3,283। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि रोच जैसुइट विरोधी है।

2 देखिये मॉगने, ल इवोल्यूशन इन्टेलेक्च्यूले द ल इतालिये।

इंगलिश रॉयल सोसायटी (engish royal society) की प्रतिरूप थी। इस शताब्दी के अन्त से पूर्व फोन्टेनेल (fontenelle) पैरिस में ज्योतिष-विद्या को लोकप्रिय विषय बना रहा था। फ्रांस में गुई पाती (gui patin) [1] और इटली मे केपुआ का लियोनार्ड (leonard of capua) चिकित्सा-प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर रहे थे। वे उस प्रचलित खतरनाक औषधियों (dangerous drugs) के स्थान पर विशेष प्रभावकारी कुछ सरल औषधियां निकाल रहे थे।

इटली में लुक्रेटियस की लोकप्रियता

अरस्तू का प्रथम प्रभाव घटने के साथ-साथ लुक्रेटियस की पुस्तक दे रेरम **नेचुरा** (de rerum natura) का प्रचार बढ़ता जा रहा था। शती के उत्तर काल में इटली में ब्रह्माण्ड का परमाणु-दर्शन-सिद्धान्त (the atomistic theory of the universe) लोकप्रिय था। किन्तु इस विषय मे पादरी (clergical) तथा पादरी-विरोधियों (anti-clergical) में मतभेद था। पादरी विरोधियों को परमाणु-दर्शन-सबंधी सिद्धान्त का अपवित्र समर्थक (impious advocates) कहा जाता था। पीसा (pisa) के एक मारकेटी (marchetti) नामक प्रोफेसर ने लुक्रेटियस (lucretius) का अनुवाद प्रकाशित किया, वह इटली में प्रायोगिक विधि के समर्थन और पेरिपेटेटिक्स के विरोध के लिए प्रसिद्ध था। यद्यपि उन दिनों यूरोप में विरोधियों में भी कई प्रकार के मतमतान्तर थे, किन्तु इटली में केवल दो विकल्प थे, अन्धविश्वासी (orthodoxy) और उग्र नास्तिकतावादी (militant atheism)। साल्वाटोर रोजा[2] (salvator rosa) ने इसका कारण इस युग में फैली हुई व्यापक अनैतिकता बताया है, किन्तु 17वीं शताब्दी में यह विशेष महत्वपूर्ण कारण न था। यहां यह संकेत करना आवश्यक है कि प्रायोगिक विज्ञान (experimental science) की लोकप्रियता बढ़ने से लोग ब्रह्माण्ड के भौतिकवादी सिद्धान्त (materialistic theory of the universe) पर अधिक मनन करने लगे। इस सिद्धान्त के प्राचीन व्याख्याताओं में महान् रोमन एटोमिस्ट लुक्रेटियस की व्याख्या सबसे अच्छी मानी जाने लगी। उसका एक प्रिय तर्क यह था,[3] "मैं प्रकृति को देखता हूं, ईश्वर को नहीं। मुझे ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण दो और मैं उसे स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ।" केवल मूर्त जगत् ही वास्तविक है—यह सिद्धान्त

---

1 देखिये एफ. लेरो, गुई पाटन (1601–1672), सेबे सानेकोर, साथेरा-पेतीक।

2 मॉर्गेन द्वारा उद्धृत, पूर्व उद्धृत, 145।

3 इसका अनेक बार उपयोग मेगालोती द्वारा लेटर फेमिलियरी में किया गया है।

सम्भवत: लुक्रेटियस द्वारा ही प्रतिपादित किया गया था। फ्रांस में भी नास्तिकता के प्रचार सबधी ऐसी शिकायतें थीं और इसका कारण लोगों का धनवान् होना और चर्च की उपेक्षा करना बताया जाता था। कार्टेशियन दर्शन (cartesian philosophy) की लोकप्रियता द्वारा इस प्रवृति का कुछ निराकरण हुआ, क्योंकि कार्टेशियनवाद कुछ ऐसे नौसिखिये तत्व-ज्ञानी (amateur metaphysicians) तैयार करने मे सहायक हुआ जो ब्रह्माण्ड संबधी सरल तार्किक सिद्धान्त (simple rationalist theory of the universe) को मानने के लिए तैयार न थे। जेन्सेनिस्ट आन्दोलन ने भी, जो नैतिक शिथिलता (laxity of morals) के विरुद्ध चलाया गया था, लोगों में आध्यात्मिक आस्था (spiritual beliefs) बनाये रखने में सहायता की, क्योंकि 17वी शताब्दी में यह सिद्धान्त प्राय: माना जाता था कि अविश्वास और अनैतिकता दोनों साथ–साथ चलते हैं। बेयल (bayle) पहला व्यक्ति था जिसने इस मान्यता का विरोध किया।[1]

टेसिटस की असंगत व्याख्या

17वी शताब्दी में टेसिटस का पुनः प्रचार इस बात का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार एक शास्त्रीय पण्डित (classical author) को गलत समझ कर बदनाम (abused) किया जा सकता है। मेकियावेली को, जिसने लिवी का गहन अध्ययन किया था, उसके उत्तराधिकारियों ने कठोर निरंकुशवाद का समर्थक (advocate of ruthless absolutism) और शासन–व्यवस्था मे हिंसक और गुप्त विधियों का प्रयोग करने वालों में विश्वास रखने वाला बताया। रूसो से पूर्व इस महान् फ्लोरेंटाइन के गणतन्त्रवाद पर बल दिया ही नहीं गया। उसे केवल सीज़र बोर्जिया का समर्थक (apologist for cesare borgia) कहने का फैशन–सा हो गया था। उसे इस सिद्धान्त का आविष्कर्ता माना जाता था कि राजनीति में पाप (sin) से समझौता करना पड़ता है। इसी प्रकार टेसिटस को भी गलत (misconstrued) समझा गया। 17वीं शताब्दी में उसके साहित्य के अध्ययन का बहुत प्रचार था तथा कुछ लोगों ने तो उसकी शैली का अनुसरण करने की भी चेष्टा की। उसकी पुस्तक एनल्स (annals) के कई संस्करण प्रकाशित हुए।[2] टेसिटस के प्रशंसक उसे केवल इतिहासज्ञ ही नहीं अपितु राजनीति-सिद्धान्त–शास्त्री भी मानते थे। उनकी धारणा थी कि जिस प्रकार मेकियावली बोर्जिया का समर्थक था उसी प्रकार टेसिटस

---

1 देखिये अध्याय 13।

2 इस सम्बन्ध में अत्यन्त रोचक वर्णन तोफोनिन लिखित मेकियावेलेते सिटसिमो में प्राप्य है।

टिबेरियस (tiberius) का समर्थक था और इस प्रकार वे उसे ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति (raisond' etat) का कारण बनाने वाला पहला व्याख्याता (first exposition) मानते थे। राजनीति विज्ञान में नौसिखयों (tyro) के लिए तो सीजर, सेलस्ट और लिवी का अध्ययन पर्याप्त हो सकता था किन्तु ज्ञानी व्यक्ति के लिए टेसिटस ही शिक्षक था।[1] फ्रांस, स्पेन और इटली में विशाल साहित्य इस बात की व्याख्या करने के लिए लिखा गया कि राजनीति-विधि का एक मात्र सिद्धान्त अवसरवादिता (expediency) है। किसी देश का शासन हाथ में माला लेकर नहीं चलाया जा सकता, रजनीति वैयक्तिक नैतिकता (Private morality) के बन्धनों से मुक्त है। सबसे अधिक कुशल ऐसे शासक रहे हैं जिन्होने टिबेरियस जैसे निरकुश व्यक्तियों का अनुसरण किया है। इस अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य मे इसी प्रकार की सामान्य उक्तियां भरी पड़ी हैं और ऐसे साहित्य के प्रकाशन में वेनिस का प्रमुख भाग है। एक लेखक[2] ने तो यह प्रतिपादित किया है कि गणतन्त्र इतना महान् इसीलिए बना, क्योकि उसने पहले दो सीजरो की शासन-विधियां अपनाई। उसका कहना था कि डोज (doge) और सीनेट (senate) ने ऑगस्टस सीज़र की भांति लोगों की नैतिकता को भ्रष्ट करके शक्ति हस्तगत कर ली। इसमे यदि ईसाई धर्म की आज्ञाकारिता और सहनशीलता की शिक्षाओं का प्रभाव और सम्मिलित कर दिया जाये तो निरंकुश शासन का आदर्श आधार (ideal basis) बन जाता है।

अवसरवादिता का दर्शन

इस प्रकार 17वीं शती में न तो टेसिटस और न ही मेकियावेली को ठीक प्रकार से समझा गया। टेसिटस कटु निष्पक्षता, तथा मेकियावेली के सूक्ष्म व्यंग (subtle irony) की किसी ने आशंका तक नहीं की, अपितु उनके प्रति ऐसी भावना बन गई कि उन्होंने निकृष्ट चरित्र वाले घोरतम अपराधियों को क्षमा किया और देवतुल्य बना दिया। इन दोनों को राज्य के नये दर्शन का प्राख्याता माना जाने लगा, दोनों ने शासन-व्यवस्था के अतिविकसित तथा खतरनाक व्यवसाय मे सफलता प्राप्त करने के सिद्धान्तों का विशद विश्लेषण किया। अरस्तू की शिक्षा थी, "मानव स्वभाव से ही समाज के व्यवस्थित जीवन के उपयुक्त है और उसका उच्चतम नैतिक व बौद्धिक विकास केवल राज्य में ही हो सकता है।" किन्तु 17वीं शताब्दी के अधिकांश सिद्धान्त-शास्त्रियों ने इसके बिल्कुल विपरीत शिक्षा दी तथा टेसिटस व मेकियावेली को शासन-व्यवस्था में अवसरवादिता (expediency), चुप्पी (silence), कपट (subterfuge) और बल-प्रयोग करने का पक्षपाती

---

1 तोफेनिन, पूर्व उद्धृत, 124।

2 बोतेरो, तोफेनिन द्वारा उद्धृत, 166।

ठहराया। इस पुस्तक में इस बात को मान्यता दी गई कि 17वीं शती में राज्य और चर्च दोनों में निरंकुशता का बोलबाला था। इस सिद्धान्त के समर्थकों ने टैमिटस को भी अपने पक्षपातियों में सम्मिलित करने के लिए उसकी निकृष्ट व्याख्या करने में संकोच नहीं किया।

केम्पेनेला

मध्यकालीन विकृत परम्पराओं में पतनोन्मुख मानववाद (degenerate humanism) का मिश्रण उस युग की विशेषता थी, तथा इस विशेषता का प्रतीक हुआ नियोपोलिटन टामस केम्पेनेला।[1] यह डोमिनिकन स्वतन्त्र विचारक और प्रबुद्ध हठधर्मी (enlightened bigot) 1568 में केलेब्रिया (calabria) में उत्पन्न हुआ। 1599 में स्पेनिश शासन के विरुद्ध असफल विद्रोह करने के कारण 27 वर्ष के दीर्घ कारावास में उसे एक नियापोलिटन कालकोठरी में रखना पड़ा। वह कवि, दार्शनिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मवादी अपने चरित्र विचारों में प्राचीन व अर्वाचीन आदर्शों में चल रहे संघर्ष का प्रतीक था। पेरिपेटेटिक्स का विरोधी और नवीन वैज्ञानिक विचारधारा का पक्षपाती होने के कारण एक ओर तो उसने जेल में से गेलिलियो के दण्ड के विरुद्ध एकाकी आवाज उठाई,[2] किन्तु दूसरी ओर **सिटी आव दी सन** (city of the sun) और **द मोर्नाकिया हिस्पानिका** (de monarchia hispanica) में उसने मध्य-कालीन नीति और सुधार-विरोधी भावना के प्रति उग्र रूप को पुनःस्थापित करने का प्रयास किया। एक ओर तो वह लूथर और काल्विन का कटु शत्रु था दूसरी ओर परम्पराओं का घोर विरोधी भी। मानवतावादी (humanist) और विद्याभ्यासी, अनुसन्धानकर्ता और ज्योतिषी, रहस्यमय सूक्ष्मताओं और क्रान्तिकारी षड्यंत्रों का रचयिता, कपटी और आदर्शवादी, कवि[3] और विक्षिप्त केम्पेनेला वैज्ञानिक परीक्षण के प्रचण्ड पवन द्वारा चालित उन विरोधी-धाराओं का शीर्ष बिन्दु था जो प्राचीन पांडित्य और नवीन ज्ञान की लहरों को काटता था। उसके लेखों के आधार पर किसी सुसंगत सिद्धान्तों (consistent theory) पर पहुंचना बहुत कठिन है, क्योंकि उसके विचारों में स्वच्छन्दता थी और उनमें समन्वय स्थापित करने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। उसका विश्वास था कि ईश्वर ने अपने आपको विभिन्न युगों में विभिन्न रूपों में प्रकट किया है। उसने असीरियावासीयों

---

1 देखिये एल. ब्लेनचेट एवं सी. डेनटाइस द एकेदिया के विद्वतापूर्ण ग्रन्थ।

2 एमोलोजिया प्रो गेलिलियो (1616)।1632 में केम्पेनेला ने गेलिलियो को रक्षित करने का प्रयास किया था।

3 देखिये ब्लेनचेट, केम्पेनेला, 224।

के लिये नक्षत्रों (stars) के रूप में, ग्रीस-वासियों के सामने आकाशवाणी (oracles) के रूप में, रोमन्स के लिये शकुन-वाणी (angusies) के रूप में, हिब्रुओं (hebreus) में भविष्यवाणी (prophets) के रूप में, ईसाईयों में समितियों के रूप में तथा कैथोलिकों के लिये पोप के रूप में अपने आपको प्रकट किया।[1] उसका विश्वास था कि विश्व की इस विकासोन्मुख योजना में आधुनिक वैज्ञानिक खोजें अन्तिम कड़ी हैं और इनकी चरम परिणति एक विश्व व्यापी धर्म की स्थापना से होगी। प्रोटेस्टैन्ट धर्म सुधार आन्दोलन ने मानव को स्वतन्त्र इच्छा का अधिकार न देकर विकास की प्रगति में अवरोध किया है और उसकी गति धीमी कर दी है। जिस रूप में अरस्तू के विचारों को पुन: प्रचारित किया गया है, उससे वैज्ञानिक जांच के विषय में प्रतिक्रिया होने लगी है, मेकियावेली के सिद्धान्तों ने राजनीति को अनाचार और नास्तिकता के निम्न स्तर तक गिरा दिया है और इसलिये समस्त यूरोप के ईसाई बनने की गति धीमी हो गई है। जहां मुहम्मद और लूथर की मान्यता नहीं वहां मेकियावेली और पोलिटिसी (politici) को प्रमाण माना जाता है।[2]

उसका प्राकृतिक धर्म

केम्पेनेला ने अपनी पुस्तक द मोनर्किया हिस्पानिका में यह विश्वास प्रकट किया है कि स्पेनिश राजतत्र का भविष्य उज्जवल होगा, किन्तु सिटी आव दी सन में वह यूरोप के पुनरुत्थान के लिये, अपना विश्वास पोप द्वारा निर्दिष्ट सर्वशक्तिमान् धर्म–शासन (omnipotent theocracy) में प्रकट करता है। उसका मन्तव्य था कि प्रत्येक प्राणी की धार्मिक प्रवृत्ति उसे ऐसे पंथ में विश्वास करने के लिये बाध्य करती है जो उसके अपने अस्तित्व-रक्षक के सिद्धान्त द्वारा उत्प्रेरित हुआ हो। निम्न कोटि के जीवों के लिये यह पंथ पृथ्वी व सूर्य हैं, जड़ पदार्थों के लिये केवल पृथ्वी है, मानव का झुकाव पृथ्वी की ओर शरीर द्वारा होता है, सूर्य की ओर प्रमुख प्रवृत्ति द्वारा, तथा ईश्वर की ओर अमर आत्मा द्वारा होता है।[3] केम्पेनेला के मतानुसार मानव कष्टों अथवा निराशाओं के कारण धार्मिक जीवन में प्रवेश नहीं करता, वह नरक (disaster of the fall) से भयभीत होकर धर्म की शरण में नहीं जाता, अपितु वह धर्म में अपने अस्तित्व के वास्तविक लक्ष्य को देखता है तथा ईश्वर और अपने में एक प्रकार की पूर्ण एकरूपता पाता है। यह मत जेनसेनवाद तथा उसके भगवान् की कृपा द्वारा भाग्य के पूर्व-निर्धारण-सम्बन्धी

---

1 कांतो, गेली हेरेतिकी द इतालिया, 3, 64 एफ एफ।

2 वही, 3, 67।

3 ब्लेनचेट, पूर्व उद्धृत, 460।

समस्त सिद्धान्तों की तार्किक विपरीतता को स्पष्ट करता है। इसलिये सकुंचित पेपल सिद्धान्तों को मान्यता देते हुए भी केम्पेनेला ऐसे प्राकृतिक धर्म में विश्वास रखता हुआ प्रतीत होता है जो देववाणी द्वारा प्रकाशित (revelation) धर्म के विपरीत था। "संसार में एक प्राकृतिक कानून है जो सब मानवों के हृदयों पर अंकित है और जिसे कोई विषमता नहीं मिटा सकती।"[1]

उसका ज्ञान सम्बन्धी सिद्धान्त

केम्पेनेला के विचारों में यद्यपि कई प्रकार की असंगतियां और अस्पष्टतायें हैं, तो भी विचारों के इतिहास (history of thought) में उसका महत्व है, उसने इस प्रकार के दृष्टिकोण का खण्डन करने में सहायता दी है कि ज्ञान परिमित है, धर्म देवी-ज्ञान तक ही सीमित है, और इस कारण बाइबल अथवा अरस्तू से आगे ज्ञान में प्रगति नहीं हो सकती। 17वीं शती में इस दृष्टिकोण का धीरे-धीरे ह्रास होता गया और उसका स्थान यह दृष्टिकोण लेता गया कि, सम्भवतः प्रकृति में ऐसे असंख्य रहस्य भरे पड़े हैं जिनका अभी तक उद्घाटन नहीं हुआ, ज्ञान को पुस्तक की एक परिधि मे नहीं बांधा जा सकता और ज्यों ज्यों हमारा ब्रह्माण्ड सम्बन्धी ज्ञान विकसित होता जायगा त्यों त्यों धर्म के अर्थ में पूर्णता और गहनता आती जायेगी।[2] "विवेक की शिक्षा अखिल ब्रह्माण्ड से प्राप्त होती है जो ईश्वर की पुस्तक है और इससे हमारे ज्ञान में अधिकाधिक वृद्धि होगी।" अपने पूर्ववर्ती बुनो (bruno) तथा उत्तरवर्ती पास्कल और डेकार्ट की भांति उसका विश्वास था कि विज्ञान, प्रगतिशील है स्वतन्त्र परीक्षण की इच्छा के दमन से समाज में एकरूपता की अपेक्षा विधर्म की वृद्धि होगी, ऐसे युग में जबकि टोर्कयेमेडा (torquemada) की लेखनी अत्यन्त निर्दयतापूर्ण भाव से काम कर रही होगी, उस युग में इस केलेब्रियन दार्शनिक ने उदारता व सहिष्णुता का प्रतिपादन समय से बहुत पहिले किया। इसके लगभग एक सौ वर्ष बाद तक आदेश, अटलता और कठोरता ही धार्मिक सत्यता की एकमात्र कसौटी बनी रहे, इसकी मान्यता तब तक बनी रही जब तक कि ऐन्साइक्लोपीडिस्ट (encyclopaedists) ने ज्ञान की प्राप्ति स्वान्तः सुखाय नहीं बना दी। केम्पेनेला का कहना था कि ज्ञान द्वारा ही जीवन के अस्तित्व का पता लगता है। उसका विचार समस्त ज्ञान-पवित्र और दूषित का एक बृहत् विश्व-कोष तैयार करने का था। इस प्रकार यह प्रतिक्रियावादी भिक्षु 18वी शती के प्रमाणवादी दार्शनिकों (rationalist philosophers) से बहुत कुछ सादृश्य रखता था।

---

1 एथिसमस ट्रटमफेट्स (1636), अध्याय 10।

2 ब्लेनचेट, 339।

उसकी मृत्यु (1639)

केम्पेनेला ने अपनी मृत्यु के समय पुनर्जागृति–काल (renaissance) की विधियों का पूर्णतया पालन किया। उसका विश्वास था कि 1639 के ग्रीष्मकाल में उस पर घातक ग्रह–दशा आने वाली थी, इसलिए वह अपने अन्त के लिए तैयार हो गया। वह पुष्पों और संगीत का प्रेमी था। कारावास के 27 वर्षों में वह प्रायः चर्च की वाद्यध्वनि सुनने की अभिलाषा प्रकट करता रहा और अब जब उसे विश्वास था कि वह मृत्यु के निकट है तो उसने अन्तिम संस्कार-विधियों (solemn rites) का पालन करने का निश्चय किया। उसने अपनी कोठरी को, जो पैरिस में एक डोमिनिकन मठ में थी, रंगीनपर्दों और पौधों से सजाया, सात नक्षत्रों के स्थान पर सात मशालें जलाईं, सुगंधि फैलाने के लिए सुगन्धित समिधा जलाईं, तथा उसके द्वार पर उसकी प्रिय वाद्य–ध्वनि चलती रही। ऐसे वातावरण में 21 मई, 1639 को उसकी मृत्यु हो गई।

डेकार्ट

"मेरे विचार में वे लोग जो स्वनिर्धारित मार्ग पर चलते हुए गलती करते हैं उतने क्षमा के पात्र नहीं जितने कि पारम्परिक निर्दिष्ट मार्गों पर चलने में गलती करने वाले होते हैं।"[1] डेकार्ट का केम्पेनेला के प्रति यह लिखित मत है। इस आधुनिक महान् सुसंगत दार्शनिक की संकुचित असहिष्णु मनोवृत्ति उस सूक्ष्मदर्शी डोमिनिकन की प्रचुर उर्वरता और अनेकरूपता के बिल्कुल प्रतिकूल थी। केम्पेनेला के मत को, कि 'ज्ञान स्थिर न होकर प्रगतिशील है' 17वीं शती के विचारकों ने धीरे-धीरे एक सिद्धान्त मान लिया, इसकी प्रगति में फ्रांसीसी दार्शनिक डेकार्ट का भी महत्वपूर्ण योग था। डेकार्ट और पास्कल फ्रांस के दो महानतम प्रतिभाशाली विचारक हुए हैं। अब हम यहां विवेकी, तार्किक तथा सुसंगत दर्शन-शास्त्री डेकार्ट का वर्णन करेंगे।

उसका जीवन

रेने डेकार्ट[2] (rene'descartes) 1596 फ्लीश में तूरेन में एक उच्च परिवार में उत्पन्न हुआ था। उसने लॉ के एक जैसुइट कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की, कुछ समय तक नासां के मॉरिस तथा बवेरिया के ड्यूक के अधीन सैनिक सेवा की, किन्तु 1620 में सैनिक जीवन त्यागने का निश्चय किया। कुछ समय भ्रमण करने के पश्चात्, जिसमें वह तत्कालीन गण्यमान्य विद्वानों से मिला, वह 1629 में

1 बोलियर कृत हिस्तोरे द ला फिलासोफे कारटिसेने, 1, 19 से पूर्व उद्धृत,।

2 डेकार्ट के जीवन एवं उसके दर्शन के सम्बन्ध में संक्षिप्त विवरण ए० फोले द्वारा दिया गया है (लेस ग्राड्स इकरीवेन्स फ्रेंकेस)।

हालेण्ड में शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए बस गया। वहां उसके आसपास व्यस्त व्यापारिक जीवन के अतिरिक्त कोई बाधक तत्व न था और उसे आशा थी कि ऐसे एकान्त वातावरण में रहकर वह अपने विचारों में एकाग्रता ला सकेगा जिसे दार्शनिक अनुसधान करने के लिए वह बहुत आवश्यक समझता था। सन् 1637 में उसने डिस्कोर्स ग्राव मेथड (discourse of method) नामक पुस्तक प्रकाशित की, 1641 में उसकी अधिक प्रसिद्ध पुस्तक मेडिटेशन्स (meditations) प्रकाशित हुई जिसमें उसने कोजिटो एर्गोसम (cogit ergo sum) सिद्धान्त की व्याख्या की तथा मानव चेतना और ईश्वर के अस्तित्व-सम्बन्धी विचार के आधार पर एक देवता की कल्पना की। 1650 में जब वह क्रिस्टीना आव स्वीडन की सेवा में था तब उसकी मृत्यु हो गई।

उसके उद्देश्य

17वीं शती के अन्य दार्शनिकों की भांति डेकार्ट गणितज्ञ था। वह पदार्थ विज्ञानी (physicist) तथा खगोल–ज्योतिषी, और जीवशास्त्री (biologist) तथा शरीरशास्त्री (anatomist) भी था। वह प्रायोगिक विधि का समर्थक था। वह अध्यात्म विद्या का ज्ञान प्राप्त करने के लिये ऐसी समस्त पूर्व धारणाओं को त्यागने पर बल देता था जिनके आधार पर निगमनात्मक (deductive) विधि द्वारा सशय पूर्णता से निश्चय पूर्णता की ओर जाया जाता है। डेकार्ट ऐसी प्रत्येक बात से घृणा करता था जो प्रयोग–सिद्ध प्रणाली द्वारा सिद्ध हुई हो। हाब्स के समान डेकार्ट का तर्क अनिवार्य अन्तिम परिणाम पर पहुंचता था जिस प्रकार कि ज्यामिति–प्रस्थापना में यथार्थता होती है। हाब्स की भांति उसकी तर्क–शृंखला में से भी यदि एक कड़ी टूट जाये तो उसका समस्त तर्क वितर्क असफल रहता था। वह दर्शन–शास्त्र मे पूर्ण सुधार करना चाहता था। उसकी मान्यता थी कि दर्शन–शास्त्र स्पष्ट और प्रत्यक्ष प्रथम सिद्धान्तों के आधार पर चलना चाहिए और यह प्रयोग में लाने योग्य होना चाहिये, क्योंकि पदार्थ-विज्ञान, औषधि-विज्ञान तथा आचार शास्त्र का मूल यही है। इन सब का लक्ष्य मानव जीवन की कठिनाइयों को दूर करने का होता है, पदार्थ-विज्ञान द्वारा मानव-श्रम को कम करने के लिये आविष्कार किये जाते हैं, औषधियों का उद्देश्य मानव-स्वास्थ्य की रक्षा करना होता है तथा आचारशास्त्र ऐसा विज्ञान है जो इस पृथ्वी पर मानव को आध्यात्मिक कल्याण के लिए है। इस प्रकार क्रमबद्धता, नियमसूक्ष्मता तथा परिभाषा डेकार्ट के विचारों के विशेष गुण हैं। उसके दर्शन में शारीरिक व बौद्धिक क्रियाओं को सावधानी से क्रमबद्ध और समन्वित किया जाता है। डेकार्ट का आदर्श मानव असंगति (solecism) या तर्कविहीन निष्कर्ष (non–sequitur) से इस प्रकार दूर रहने की चेष्टा करता है जिस प्रकार व्यक्ति शीत अथवा सूखे से बचना चाहता है।

कार्टेशियनवाद की विशेषतायें

डेकार्ट का कोजिटो एर्गो सम (cogito ergo sum) का सिद्धान्त व्यक्तिगत अनुभव से निकाले गये निष्कर्ष पर आधारित था। उसका मत था कि आत्मा का सार विचारों में निहित होता है तथा भौतिक द्रव्यों का सार उनकी वृद्धि में होता है। दोनो में कोई सामान्य वस्तु नही होती। इसलिए मानव अमर है और पशु-कष्ट व पीड़ा के प्रति जिस प्रकार मानव इनका अनुभव करते हैं उस प्रकार कम से कम अचेतन है। किन्तु एक ओर तो डेकार्ट मानव चेतनता (human consciousness) की निश्चितता से दर्शन का प्रारम्भ करता है तथा दूसरी ओर यह विश्वास अभिव्यक्त करता है कि अनादि सत्य मानव की बुद्धि पर आश्रित नहीं अपितु भगवान् की इच्छा पर निर्भर करता है। फलत: सत्य व सच्चरित्रता स्वत: ही स्थायित्व में नही आते अपितु देवी आदेश के फलस्वरूप होते है। इससे उसके दर्शन के कुछ दोषों का पता चलता है। वह इच्छा (will) और निर्णय (judgment) को गड़बड़ा देता है। उसके मतानुसार मानव आत्मा में किसी कार्य के समारम्भ की किञ्चिन्मात्र भी शक्ति नही है, केवल सर्वशक्तिमान् द्वारा जितनी शक्ति प्रदत्त होती है उसके अनुसार घटती-बढ़ती है। वह द्रव्य (matter) की स्थिरता और सृजन-कार्य की निरन्तर आवृति को एक ही समझता है। सम्भवत: इन्ही विशेषताओं के कारण कर्टेशियनवाद और जेनसेनवाद में स्वाभाविक मेल हो गया। ये दोनों मत इन बातो मे समान थे—दोनों अन्तर्मुखी ज्ञान-विधि (intropective processes) पर आधारित थे, दोनो प्रायोगिक तत्त्वों (empiriocal elements) के विरुद्ध थे, आधिभौतिक व भौतिक ज्ञान बेमेल हैं, उन्होने भाग्यवादिता (fatalist conception) को मानव-अस्तित्व का कारण बताया और आत्मा को केवल दैवी इच्छा का साधन-मात्र माना। कार्टेशियनवाद के सम्बन्ध मे विशेष बात यह है कि इसका सबसे अधिक प्रचार हालेण्ड और स्पेनिश नीदरलेण्ड में हुआ, जहां ला वेन विश्वविद्यालय (university of louvain) मे इसके सबसे प्रबल व्याख्याता हुए।[1]

अध्यात्मज्ञान और शिक्षा

डेकार्ट को एक प्रकार वर्तमान दर्शन-शास्त्र का जन्मदाता कहा जाता है, क्योंकि वह पहला व्यक्ति था जिसने पाण्डित्य पूर्ण परम्पराओ (scholastic traditions) का पूर्णतया त्याग किया और मन से समस्त चेतन राग-द्वेषो (conscious prejudice) को दूर करके शुद्ध हृदय से जांच करने की परिपाटी डाली वह अपने इस प्रकार के दृष्टिकोण के कारण जागृति-काल के ऐसे विचारको

---

1 देखिए बोलियर, पूर्व उद्धृत, 1, 256 एफ. एफ.।

में मित्र था जो तर्क की अपेक्षा मानवीय विषयों (humanities) को प्रमुखता देते थे। डेकार्ट का विश्वास था कि मानवीय विषयों की शिक्षा से मानव की विवेक-शक्ति (reason) का विकास कुण्ठित हो सकता है, इस मत के पक्षपातियों का मिलना कठिन न था, क्योंकि अधिक लोग ऐसे होते हैं जिनमें व्यावहारिक ज्ञान व तर्क के गुण तो विद्यमान होते हैं, किन्तु पाण्डित्य प्राप्त करना प्रत्यक के बस की बात नहीं। अपनी पुस्तक (racherche de la ve'rite' par la lumie're naturelle) में उसने इतिहास व भाषाओं के अध्ययन के प्रति घृणा प्रकट की है। उसने लिखा, "लेटिन के ज्ञान का महत्व इससे अधिक नही कि सिसरो की पुत्री ने नर्सरी से निकल कर क्या किया" इस प्रकार कार्टेशियनवाद भूतकाल की विचार-धाराओं से नितान्त पृथक था। बिना कठिन श्रम किये अध्यात्मवाद सीखना, दर्शनशास्त्र के सिद्धान्तो को लुप्त ग्रन्थों में से ढूढने की अपेक्षा अन्तश्चेतना द्वारा निकालना, जीवन के विज्ञान को तीन शब्दों के फार्मूले से समझना कार्टेशियनवाद की वाह्य विशेषतायें थीं जिनके कारण यह दर्शन लोकप्रिय बन गया।[1] जो लोग भाषाओं का अध्ययन करने के योग्य न थे अथवा जिनमे इतिहास का निरन्तर अध्ययन करने के लिए समुचित धैर्य और अध्यवसाय का सामर्थ्य न था वे अब कोजिटो एर्गो सम के न्यायिक सिद्धान्तों का अध्ययन इस संतोष से कर सकते थे कि उसकी सूक्ष्म गहनतायें कभी सामान्य ज्ञान नहीं मानी जायेंगी यदि उन्हें परिष्कृत भाषा में प्रकट किया जाये। हमने मध्यकालीन दर्शन के 'सारभूत रूपों' (substential forms) को छोड़ दिया है, किन्तु उनका ध्यान हमने सारगर्भित (pregnant) व महत्वपूर्ण पदों को दिया है, यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार की धारणा के लिए डेस्कोर्ट उत्तरदायी न था।

स्पिनोजा

बेनेडिक्ट स्पिनोजा अपने सिद्धान्तों का आरम्भ कार्टेशियनवाद से करता है। उसके पुर्तगाली-यहूदी माता-पिता ने हालैण्ड में शरण ली थी और वहीं अम्सटर्डम में 1632 में उसका जन्म हुआ था। ईश्वर के सम्बन्ध में उसका मत था कि न वह अभी तक जाना गया और न ही जाना जा सकता है। इस मत का होने के कारण उसे यहूदी धर्म से बहिष्कृत कर दिया गया और यहूदी पड़ौसियों ने भी उसे त्याग दिया। इसलिये स्पिनोजा निकट के ही किसी अज्ञात स्थान में रहने लगा। यहां वह दार्शनिक जांच व चिन्तन में लीन हो गया और अपना निर्वाह नेत्र–

1 अपनी पुत्री के कारण मदाम सेविग्ने कार्टेशियनवाद में रूचि रखती थी। मोलिरेज कृत लेस प्रिसेस रिडिक्यूलेस में कार्टेशियन टरबिलंस की विवेचना उपलब्ध है।

चिकित्सक के रूप में बड़ी कठिनाई से करने लगा। 45 वर्ष की अवस्था में क्षयरोग के कारण उसकी मृत्यु हो गई। उसके अतिविदित ग्रंथों में एक नीतिशास्त्र सम्बन्धी पद्धति (a system of ethics), कार्टेशियनवाद की व्याख्या तथा tractatus theologico–politicus हैं। स्पिनोजा का सम्पूर्ण जीवन तत्वज्ञान-चिन्तन में व्यतीत हुआ और निर्धन व उपेक्षित रूप में समाप्त हो गया।

उसका विश्वदेवतावाद

डेकार्ट की भांति स्पिनोजा[1] भी प्रत्येक वस्तु को विचार तथा उसके विस्तार में परिवर्तित करता था। उसके मतानुसार 'अपनी प्रकृति के नियमानुसार कार्य करना ही मुक्त होना है।" इसका तात्पर्य यह है कि वह आरम्भ से ही कार्टेशियन-वाद में सन्निहित भाग्यवादिता को विकसित करता है। उसने इस विचार का विरोध किया कि ईश्वर अस्थिर और परिवर्तनशील है। उसका कहना है कि ऐसी धारणा उन लोगों की है जो ईश्वर को मनुष्य के आकार (anthropomorphism) का मानते हैं। उसने अमरता-सम्बन्धी प्रचलित विचारधारा की भर्त्सना की। उसका मत था कि यह भ्रान्ति नित्यता के समय के साथ गड़बड़ाने से उत्पन्न होती है। यह गड़बड़ाहट स्मृति और कल्पना का परिणाम है। उसके विचार मे ये दोनों बातें शरीर के नष्ट हो जाने पर समाप्त हो जाती हैं। स्पिनोजा की अमरता की कल्पना में स्मृति (memory) का कोई स्थान नहीं, वह पृथक व्यक्तिगत अस्तित्व-की चेतना से भी परे हैं, उसमें अपने अस्तित्व के ज्ञान का अन्त हो जाता है और वह उसी अनुपात से घटती बढ़ती रहती है जिस अनुपात से आत्मा सांसारिक पदार्थों को त्यागकर नित्य वस्तुओं की ओर बढ़ती है। वह अज्ञान को अद्‌भुत बातों का आधार मानता था। ब्रह्माण्ड की व्याख्या वह एक विश्वदेवता के रूप में करता है, केवल एक ही अनादि (infinct) तत्व है और वह ईश्वर है जिसमें विचार और विस्तार के सब गुण सम्मिलित है, सभी मर्यादित वस्तुएं उस अनादि तत्व के प्रकट रूप मे तथा समस्त मानव-विचार दैवी विचार से उत्पन्न होते हैं। इसलिये ईश्वर अथवा मनुष्य दोनों मे ही स्वाधीनता नहीं है, क्योकि वे एक दूसरे के रूप मात्र हैं, और दोनों ही अपनी प्रकृति के अटूट नियमों के वशीभूत हैं। इन अटूट नियमों को समझना ही आध्यात्मवाद कहलाता है। सच्चे धर्म की जड़ यही है कि भगवान् के

---

1 देखिये एस. हेम्पशायर (पेलिकन सीरीज, 1951)। ए. वोल्फ द्वारा अनूदित एवं सम्पादित स्पिनोजा का पत्र व्यवहार भी देखिये। ए जिग्ग दी लिविंग थॉट ऑव स्पिनोजा, 1939 एच. एल. रोथ: स्पिनोजा, 1929, सर एफ. पोलक: स्पिनोजा, 1935। उसके ग्रन्थों का प्रामाणिक सम्पादन सी० गेबहार्ट. 4 जिल्द, हेडलबर्ग, 1926 में प्राप्य है।

स्वभाव को इतना अधिकाधिक समझा जा सके जितना उसके आदेशों के आज्ञा-पालन के लिये आवश्यक है। यह जानने की कोई आवश्यकता नही कि कौन सा सिद्धान्त ठीक है और कौन सा गलत है। इस तर्क से उसने एक विश्वव्यापी धर्म (universal religion) की कल्पना की जिसका आधार एक अपूर्व और सर्व-व्यापक देवता (unique and omnipresent diety) था। उसने दान और न्याय के गुणों को भगवान की आज्ञाओं के पालन का रूप दिया। इस विश्वव्यापी धर्म में ईसाई मत अनेक मतों में से केवल एक है।

उसके नीति शास्त्र एवं राजनीति सम्बन्धी विचार

इस प्रकार स्पिनोजा के दर्शन का मुख्य उद्देश्य प्रकृति के साथ हमारी एकता सिद्ध करना था। इसी से उसने एक ऐसी नीति–शास्त्र पद्धति का सृजन किया जिसमें मलिनतम प्रयोगवाद (grossest empiricism) और उच्चतम आदर्श-वाद (highest idealism) को मिला दिया गया था। हाब्स की भांति वह उसी को उत्तम मानता था जो हमारे लिये लाभदायक (beneficial) सिद्ध हो, जिसमे अपनी भलाई हो वही गुण virtue) है, व्यक्ति को अपने आपसे प्रेम करना चाहिये तथा अपने स्वार्थों की पूर्ति करनी चाहिये। इस दर्शन के परिणाम–स्वरूप वह आनन्ददायक समस्त वासनाओं की पूर्ति का समर्थन करता है तथा दुःख (sadness) देने वाली समस्त भावनाओं का निरस्कार करता है, करुणा (pity) नम्रता व पश्चाताप का वास्तव में कोई महत्व नहीं है और दार्शनिकों को चाहिए कि वे इन्हें त्याग दें। हां, राजनीतिक कार्यों में इनका लाभ हो सकता है, क्योंकि जनसमूह को यदि भय न रहे तो भीड़ विस्फोटक स्थिति पैदा कर देती है।[1] ये है उसके नीतिशास्त्र व राजनीति सम्बन्धी विचार[2]। मानव–समाज का अस्तित्व तभी रह सकता है जब मानव के हितों (interests) और वासनाओं (passions) को भय व तर्क से व्यवस्थित रखा जाये। प्रत्येक व्यक्ति का यह अधिकार है कि वह अपनी प्रकृति के आदेशानुसार कार्य करे, चाहे वह कार्य औचित्यपूर्ण हो या न हो, यदि इस सिद्धान्त को व्यक्ति की अपेक्षा वृहत् समूहों पर लागू किया जाये तो इसका अर्थ यह हो सकता है कि जब बहुत से व्यक्ति स्वेच्छा से अपनी इच्छाओं को एकता में संगठित कर लेते हैं तो यह एकीकृत इच्छा (united-will) अधिक शक्तिशाली हो जाती है और इसलिये उसका अधिकार भी बढ़ जाता है। यह एकीकृत इच्छा ही सरकार होती है। प्रकृति के वातावरण में कोई पाप

1 इथिक्स, 4,54।

2 ये सभी विचार ट्रैक्टेट्स थियोलौजिको–पोलिटिक्स, अध्याय 16–20 में वर्णित है।

हो ही नहीं सकता। कोई बात उचित अथवा अनुचित नहीं मानी जा सकती जब तक सरकार द्वारा उसकी परिभाषा न की गई हो। सम्पत्ति का प्रारम्भ विधि-निर्माण से आरम्भ होता है। समस्त राज्य प्राकृतिक रूप में एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और उनकी मित्रतायें तभी तक बन्धनकारी होती हैं जब तक प्राकृतिक दशाओ में स्थिरता रहती है। इसलिये प्रत्येक राज्य का यह अधिकार है कि वह अपने स्वार्थो के अनुकूल किसी सन्धि को स्वीकार भी कर सकता है और टाल भी सकता ह (यह 17वीं शताब्दी की राजनीतिक मान्यता (political truism) थी)। देश की भूमि पर सबका सामान्य अधिकार होना चाहिये, राज्य की सैनिक शक्ति का संयोजन नागरिक सेवा द्वारा किया जाना चाहिये और सैनिक पदाधिकारियों में बहुदा परिवर्तन होता रहना चाहिये। देशभक्ति सर्वोच्च गुण है। धार्मिक सत्य तभी तक बन्धनकारी है जब तक सरकार उन्हें अपने आदेशों द्वारा लागू करती है। राज्य की सुरक्षा सर्वोच्च आवश्यकता है, अधिकार प्राप्त करने का एक आधार बल है।[1] धर्म-परायणता का निर्धारण किसी दैवी शक्ति द्वारा नहीं किया जाता अपितु राज्य द्वारा किया जाता है, 'विधि का निर्माण विवेक द्वारा नहीं अपितु अधिकार द्वारा किया जाता है।'

स्पिनोजा और हाब्स

हाब्स के पाठक यह जान गये होंगे कि पिछला उद्धरण कहां से लिया गया है।[2] माल्म्सबरी (malmesbury) के महात्मा और अम्सटर्डम के दार्शनिक में बहुत सी समानतायें हैं। दोनों गणितज्ञ थे, दोनों का विश्वास था कि ईश्वर अज्ञेय है, दोनों राज्य को मानव-कामनाओं (human passion) एक कृत्रिम नियन्त्रण के रूप में मानते थे, धर्म के सम्बन्ध में दोनों का विश्वास था कि यह विधि-निर्माता (law giver) के पास लाभदायक अस्त्र का काम करता है, उन दोनों का मत था कि राजनीतिक लोगों पर कोई भी ऐसा धर्म लागू कर सकता है जिसे चाहे वे स्वय न मानता हो। यह सिद्धान्त बहुत मलिन है। गेटे (goethe) ने इसे मेकियावेलीवाद का पुनरावर्तन कहा, किन्तु वास्तव में यह उनका स्वतन्त्र सिद्धान्त था, और महात्मा पास्कल ने यह पहले ही घोषित कर दिया था कि 'विश्व की रानी जनमत नहीं, शक्ति है।' बाद में कुछ स्पष्टीकरण से यह सिद्धान्त कुछ सनकी सा दिखाई देता है। नेपोलियन का विश्वास था कि धर्म का मुख्य अभिप्राय 'अमीरों को गरीबों के हाथों से मारे जाने से बचाना था।' ट्रीस्ट्सके ने नृशसता से यह घोषणा की कि 'निम्न जाति के मनुष्यों के लिए धर्म अत्यावश्यक है।' धर्म

1 इन विचारों की विवेचना मुख्यतः अध्याय 19-20 में की गई है।

2 **ए डायलाग ऑव द कॉमन लॉ।**

का सच्ची राजनीति में, चाहे वह 17वी शताब्दी हो अथवा 19वी, यही कार्य है। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि बाल्शविक रूस में धार्मिक–शिक्षा व चर्च का जो घोर विरोध किया गया वह इस आशका से किया गया कि विगत काल मे एकसारिता और आज्ञाकारिता उत्पन्न करने के लिये धर्म का मनमाना उपयोग किया गया।

स्पिनोजा और रोमांटिक स्कूल

यह समझना कठिन नहीं है कि स्पिनोजा को उसके जीवन व आगामी काल में नास्तिक क्यों कहा जाता था। 18वीं शती के अन्त तक भी लोगों को लेसिंग (lessing) द्वारा उसकी पुस्तकों का श्रद्धा से अध्ययन करना अपमानजनक लगता था, किन्तु रोमांटिक पुनरुद्धार होने पर उसकी शिक्षा के काव्यात्मक तथा आदर्श वादी तत्वों को समझा जाने लगा। नोवलिस (novalis) जैसे कवि उसकी ओर इसीलिये आकर्षित हुए, क्योंकि उसके लिये प्रकृति ही परमात्मा थी। गेटे ने उसके नीति दर्शन की प्रशंसा की, क्योंकि इसमें गणित की भांति सूक्ष्मता थी और राज-द्वेष विहीन विचार थे और इनसे वह अपने उद्वेगों को शान्त करने में सफल हुआ।[1] उसके सम्पूर्ण ग्रंथों का प्रथम प्रकाशन 1802 में हुआ। 19वीं शती में स्पिनोजा के प्रति लोगों में रुचि बनी रही, शेलिंग (schelling) पर उसका भारी प्रभाव पड़ा, हीगेल[2] ने वह स्पष्ट किया कि उसने संसार के अस्तित्व को नाशवान माना, क्योंकि वह मर्यादित वस्तुओं का समूह मात्र था, केवल ईश्वर को नाशवान नही माना, इस प्रकार गेटेने स्पिनोजा की उसके प्रति लगाये गये नास्तिकता के आरोप से रक्षा की। श्लीअरमेकर[3] (schleiermacher) ने उसके लिये सबसे सुन्दर शब्दों में कहा "उसमें विश्व भावना (spirit of the universe) प्रवेश कर गई थी, वह अनन्त को ही विश्व का आदि और अन्त समझता था, विश्व से ही केवल मात्र उसका प्रेम था। वह न तो किसी एक नगर का था और न ही उसके कोई शिष्य थे। वह इन बातों में अकेला और सबसे भिन्न था।"

पास्कल

स्पिनोजा की तरह पास्कल[4] भी 18वी शती में उपेक्षित व्यक्ति ही रहा,

---

1 **दि चुंग एवं वेहरेत** का प्रारम्भिक भाग देखें।

2 **गेसचीचेत देर फिलासोफे**, 3,373।

3 बोलियर द्वारा उदघृत, 1,404

4 पास्कल पर भारी मात्रा में साहित्य उपलब्ध है। आंग्ल भाषा में एच. एफ. स्टीवर्ट एवं विसकाउन्ट सेन्ट सायरस के विद्वतापूर्ण ग्रन्थ प्राप्य हैं। फ्रांसीसी भाषा में ई. बॉटरॉक्स एव एफ. स्ट्रोवस्की देखिये। ब्रून शेविग कृत **पेनसीज** सुन्दर ग्रन्थ है। सेन्ते बेवे कृत **पोर्ट रायल**, खंड 2, भी देखिये।

या फिर उसे भली प्रकार समझा नही जा सका । 19वीं शती मे उस पर पुन: ध्यान दिया गया । पास्कल का मूल्यांकन करने लिए लिये लिब्निज, वाल्टेयर और कान्दर्से (condorcet) में उपयुक्त सूक्ष्मदर्शिता का अभाव था । आस्तिकता (deism) और हेतुवाद (rationalist) के उस युग में पोर्ट रायल के इस महान् व्यक्ति को कोई स्थान नही मिल सकता था । जब रूसो ने कहा कि 'हृदय के भी कुछ अपने विचार होते हैं जिन्हें मस्तिष्क नहीं समझ सकता',[1] तब से यह अनुभव किया जाने लगा कि पास्कल सम्भवत: फ्रांस का सबसे महान् पुरुष था । सर्वप्रथम शैत्यूब्रियां[2] (chateaubriand) ने पांसे (pans'ees) के अध्ययन में उत्साह दिखाया । तत्पश्चात् पास्कल की प्रसिद्धि केवल फ्रांस में ही नही अपितु समस्त यूरोप में फैलती गई । ज्यों–ज्यों वेदान्तिक कट्टरता और औपचारिकता का ह्रास होता जायेगा त्यों–त्यों लोगों की अभिरुचि पांसे में अधिक होगी, क्योंकि उनसे यह प्रकट होता है कि किस प्रकार 17वी शती मे एक अत्यन्त सूक्ष्म विचारक ने बौद्धिक जिज्ञासा की शका का दमन करके अथवा शक्ति के समक्ष आत्म–समर्पण करके अधीन नहीं किया वरन् निजी अनुभवों से उपलब्ध तत्वों पर नियोजक विधियो (deductive processes) के प्रयोग द्वारा समाधान किया ।

उसके पांसे

पास्कल के महानतम ग्रन्थ के कुछ अंशों का चयन करके अथवा उनका वर्णन करके हम उसके प्रति उचित धारणा बनाने में असमर्थ रहेंगे, क्योंकि उसमे एक ही केन्द्र–बिन्दु की ओर अग्रसर करने वाले अनेकों प्रमाण भरे पड़े[3] हैं और इसलिये उसमें से कुछ अन्श उद्धृत करना न तो सरल है और न न्याय–सगत ही । कुछ समय पूर्व तक तो पांसे को क्रमपूर्वक रखने तक का प्रयास भी नहीं किया गया था । वे सावधानी से लिखे गये ग्रन्थ के रूप में नहीं हैं अपितु ग्रंथ का ढांचा–मात्र हैं, किन्तु फिर भी ये इस प्रकार के समस्त साहित्य में रचनात्मक कार्य के सबसे महत्वपूर्ण अंग माने जाते हैं । उनका प्रचार तब तक बना रहेगा जब तक संसार में ऐसे बुद्धिमान लोग निवास करेंगे जिनके मन में शकायें उत्पन्न होती हैं और जिनमें इतनी आध्यात्मिक भावना होती है कि वे अपनी आस्था को कहीं स्थिर करने के इच्छुक हों । पांसे में अनेकों सम्भाव्यताओं का सञ्चय है । ये सम्भाव्यतायें एक दूसरे से बिल्कुल स्वतन्त्र हैं और वे वस्तु स्थितियों और परिस्थितियों के अनुकूल उत्पन्न होती हैं । अति सूक्ष्म होने के कारण उन्हें किसी तर्क–पद्धति (syllogism)

1 बॉटरॉक्स, पास्कल, 197 ।

2 उसकी कृति जेनी द्यू क्रिश्चियननेसने ।

3 एच. एफ. स्टीवार्ट लिखित दी होलीनेस ऑव पास्कल, 53 ।

का रूप भी नहीं दिया जा सकता और यदि ऐसा प्रयास भी किया जाये तो उनकी सख्या और प्रकार इतने हैं कि वे तर्क–पद्धति में परिवर्तित नहीं की जा सकती।[1] पास्कल की विचारधारा इस प्रकार के सरल आशावादी (facile optimism) और विश्वासपूर्ण धारा प्रवाह (confident fluency) के बिल्कुल विपरीत है जिसकी सहायता से बहुत से लोग प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं और उसे बनाये रखते हैं।

लीब्निज

यदि पास्कल 17वीं शताब्दी में फ्रांस का महानतम बुद्धिमान व्यक्ति था तो लीब्निज[2] उस युग को जर्मनी की महानतम देन थी। वह लिपजिग के एक दर्शन-शास्त्र के प्रोफेसर का पुत्र था। उसका जन्म 1696 में हुआ था। 20 वर्ष की आयु में उसने कानून में डाक्टरेट प्राप्त की और बोयनबर्ग (boyneburg) के अधीन नौकरी करली। बोयनबर्ग मेंज के एलेक्टर (elector of mainz) का चांसलर था। उसके पुत्र का सरक्षक होने के कारण उसे कुछ समय तक (1672–1676) पेरिस में पड़ा जहां उसने गणित–सम्बन्धी अध्ययन किया और इतनी विशिष्टता प्राप्त करली कि वह फ्रेंच अकादमी और इंगलिश रायल सोसाइटी का सदस्य निर्वाचित कर लिया गया। मेज के एलेक्टर की मृत्यु के पश्चात् वह ब्रन्जविक के ड्यूक (duke of brunswic) के पास पुस्तकाध्यक्ष बन गया और हेनोवर में रहने लगा। वहां उसके मुख्य अध्ययन-विषय दर्शन, विज्ञान और इतिहास थे। 1683 में उसने एक्टा इरुडिटोनियम (acta eruditorum) नामक पत्रिका की स्थापना की ताकि जर्मनी को इस आरोप से मुक्त किया जा सके कि वहां से कोई पत्रिका प्रकाशित नहीं होती। 1687 के कुछ वर्ष बाद यह ब्रन्जविक परिवार का इतिहास लिखने लगा जो लाभदायक अधिक था किन्तु हितकर नहीं था, किन्तु उसे यह कार्य बीच में ही छोड़ देना पड़ा। सौभाग्यवश उसे अन्य देशों में भ्रमण जारी रखने का अवसर मिल गया तथा उसने यूरोप के प्रमुख विद्वानों के साथ पत्र-व्यवहार द्वारा सम्पर्क बनाये रखा, जिनमें बोसुए (bossuet) भी था और स्वयं केथोलिक प्रोटेस्टैन्ट मतानुयाइयों मे एकता स्थापित करने के प्रयत्नों में जुटा रहा। 1700 से उसने ब्रेन्डेनबर्ग के एलेक्टर को बर्लिन की अकादमी की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया और स्वयं उसका निर्वाचित अध्यक्ष बना। किन्तु वह इस प्रकार की संस्थाये ड्रेस्डन (dresden) या वियना में स्थापित न कर सका।

---

1 न्यूमेन लिखित ग्रामर ऑव असेन्ट। स्टीवार्ट द्वारा उदधृत, पूर्व उद्धृत 53।

2 बर्टेंड रसल द्वारा लिब्निज का एक महान दार्शनिक एवं गणितशास्त्री के रूप में व्यापक अध्ययन किया गया है। उसके महत्वपूर्ण ग्रन्थ चेवरेस का सम्पादन फॉउचर द केरेल एवं ओन्नो क्लोप द्वारा किया गया है।

लीब्निज अपने समस्त जीवनकाल मे विज्ञान, गणित, वेदान्त, इतिहास और विधि-शास्त्र में महत्वपूर्ण योग देता रहा उसमे बहुमुखी प्रतिभा थी। उसकी विद्वता प्रायोगिक व मानव हित की क्रियाओं में लगी हुई थी। 1716 में 70 वर्ष की अवस्था में हेनोवर में उसका देहान्त हो गया।

उसकी बहुमुखी अभिरुचियां

लीब्निज ने विभिन्न क्षेत्रो में कई दिशाओं मे कार्य किए जिनका इस पुस्तक में पूर्ण विवेचन करना स्थानाभाव के कारण सम्भव नही। उसमें कुछ ऐसे गुणों का सयोजन था जो एक ही व्यक्ति मे प्राय: नहीं मिलते। जैसे, वह विचारक भी था और व्यावहारिक पुरुष भी, एक और निगम (induction) व नियमन (generalization) विधियों में श्रेष्ठ था तो दूसरी ओर पाण्डित्यपूर्ण व धैर्यशील विद्वान भी था, पुरानी परम्पराओं में आस्था न होते हुए भी उसने नवीन बातें चलाने का साहसपूर्ण कार्य किया, न्यूटन के साथ सूक्ष्मतम कैल्कुलस के अविष्कर्ता होने का श्रेय उसे भी प्राप्त है, कानून का अध्ययन करने के लिए उसने एक नई योजना बनाई, उसे आशा थी कि वेस्टफेलिया की सन्धि के आधार पर एक नया अन्तर्राष्ट्रीय विधिशास्त्र तैयार किया जा सकेगा। उसने लुई 14वे की लड़ाकू प्रवृतियों को यूरोप की ओर से हटाकर मिश्र की दिशा में लगाने की चेष्टा की जिसे वह पूर्व का हालेण्ड (holland of the east) कहता था [1]। नेपोलियन ने यह प्रस्ताव अपने मिश्र के अभियान के बाद पढ़ा। उसका सम्बन्ध राइन की लीग से भी था और वह कुछ समय तक यूरोप में निरन्तर शान्ति स्थापित करने के स्वप्न देखता रहा, किन्तु जब उसकी आंखों से पर्दा हटा तो उसने स्वयं स्वीकार किया कि निरन्तर शांति के शब्द केवल शमशान- द्वार पर ही लिखे जा सकते थे[2]। उसने लुई की आक्रामक गतिविधियों के विरुद्ध जर्मन जनता को जागृत किया तथा उनका नेतृत्व किया, और यदि उसके सवेदनो पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता तो फ्रांस यूट्रेक्ट की सन्धि[3] से इतनी आसानी से न छूट जाता। देश-भक्त दार्शनिक गणितज्ञ तथा इतिहासज्ञ के रूप में लीब्निज अपने समय का प्रतिभासम्पन्न सार्वभौम पुरुष (universal genius) था। उसमें दो ऐसी बातें थी जो प्रमुख व्यक्ति में नहीं होनी चाहिये थी-वह फौजदारी के अपराधियों को यातना देने के पक्ष में था तथा उसकी ज्योतिष में भी कुछ आस्था थी।

---

1 देखिये चेवरेस खण्ड 5 में दी प्रोजेट द कोनक्वेटे द ल इजिप्ते।

2 शांति स्थापित करने सम्बन्धी उसके विचारो के लिए देखिये चेवरेस, 4, 325।

3 पेक्स द यूट्रेचट इनएक्सक्यूसेबिल·······अन लेत्रे अ अन मिलार्ड टोरी इन चेवरेस, खण्ड, 4।

उसका आदर्शवाद और आशावाद

लीब्निज एक प्रकार से आदर्शवादी था, क्योंकि वह दर्शनशास्त्र में दैवी विचार की व्याख्या का अनुभव करता था. उसकी मान्यता थी कि मानवीय विवेक (human reason) ईश्वर के न्यायदर्शन की अनुकृति-मात्र है। इसलिए विवेक अनुभव पर आधारित नहीं हैं। वह स्पिनोजा के एक विश्वदेवतावाद (pantheism) तथा लॉक के प्रयोगवाद, दोनों के विरुद्ध था, उसने पदार्थ के सिद्धान्त पर, जिसे वह 'मोनडोलोजी' (monadology) कहता था. विश्व की नई व्याख्या की। वह इस आधार पर आरम्भ करता है कि मोनड (monad) वस्तु और विचार के बीच की वस्तु है, वे ऐसे अणु है जो क्रियाशील हैं और दृष्टिगोचर होते है। आत्मा भी एक मोनड है जो स्वय के प्रति चेतन होती है। लीब्निज की धारणा थी कि मानव-शरीर और आत्मा की क्रियाओं में एक प्रकार की पूर्व निश्चित अनुरूपता होती है। उसने अपने थियाडाइसी (theodicee) में से आशावादी हेतुवाद का वर्णन किया है जिसमें उसने अनेक विश्वों की कल्पना की है और ईश्वर द्वारा बनाये गये विश्व को सर्वोत्तम कहा है। इस सिद्धान्त के आधार पर वह इस परिणाम पर पहुंचता है कि आत्मा बाहरी रूकावटों से पूर्णरूपेण मुक्त है और स्वतन्त्र तथा अविनाशी होने के कारण यह अमर है। उसने कहा. "प्रत्येक आत्मा, अपने आप में एक ससार है, जो इतना ही चिरस्थायी तथा पूर्ण है जितना कि यह ब्राह्मण्ड, जिसे यह अपने ही दृष्टिकोण से प्रकट करता है। इसका अस्तित्व भगवान् के अस्तित्व का प्रमाण हैं, क्योंकि इस प्रकार का पूर्ण सामञ्जस्य किसी महान् तथा बुद्धिमतापूर्ण प्रथम हेतु (first cause) के फलस्वरूप ही हो सकता है।" अध्यात्म-ज्ञान में लीब्निज यह तर्क देता था कि देव-वाणी और अदभुत बातों का होना तर्क की कसौटी पर सम्भव सिद्ध किया जा सकता था,[1] वह यूकेरिस्ट (eucharist) के सिद्धान्त को ही उसे गुप्त रूप से कैथोलिक सिद्धान्तों में विश्वास रखने वाला मानता था।[2] किन्तु वास्तविक अध्यात्म-सम्बन्धी मत निश्चत रूप से बताना कठिन है। नीति शास्त्र शिक्षक के बनाने की ओर लगाना चाहिये। धर्मनिष्ठा में विकृत व निराशावादी तत्व नहीं होते, उसमें तो आशा और सौम्यता की भावना होनी चाहिए। उसके मतानुसार नैतिकता के प्राचीन महान् शिक्षकों को सत्य का कुछ न कुछ ज्ञान प्राप्त था। उनमें से यदि सर्वोत्तम व्यक्तियों को चुन लिया जाय तो दर्शनशास्त्र में उनके सर्वोच्च विचार आ जायेंगे और वह जीवन की संतोषजनक और स्थायी व्याख्या करने की ओर प्रगति करता रहेगा।

---

1 देखिये जे० डपरोक्स कृत रेसन एत फोई द एपरेस लिबनीज।

2 प्रोटेस्टैन्ट एवं कैथोलिकों को पुन: आपस में मिलाने के लिये उसने बोसुए एवं पेलीसन से पत्र व्यावहार किया था।

पूर्वी देशों की ओर उसका दृष्टिकोण

इस प्रकार लीब्निज का जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण था। यद्यपि उसने दर्शन-शास्त्र को कोई विशेष नवीन देन नहीं दी, किन्तु उसने मोंटेन और उसके अनुयाइयों के सुसंस्कृत, किन्तु कभी कभी सनकी, विषयासक्तिवाद का विकल्प अवश्य प्रस्तुत किया तथा स्पिनोज़ा के शान्त एवं विश्वदेवतावाद या डेकार्ट के नीरस आस्तिक हेतुवाद की अपेक्षा अधिक मानवी और आकर्षक वस्तु अवश्य प्रदान की। मुख्यतः गणितज्ञ के ढंग से सोचने वाला होते हुए भी वह केवल विश्लेषक मात्र ही न था, उसके काल्पनिक सिद्धान्तों का व्यावहारिक व लाभदायक लक्ष्य होता था। उसकी दृष्टि भूत व भविष्य दोनों पर जाती थी [1] और सम्भवतः वही इस मत का एक व्यक्ति था कि पूर्व और पश्चिम में विचारों के आदान-प्रदान से बहुत लाभ हो सकता था। [2] उसका विचार था कि सम्भवतः दर्शन, गणित, और औषधियों के क्षेत्र में चीन ने महत्वपूर्ण आविष्कार किये हों जिनका पश्चिमी यूरोप को कुछ भी ज्ञान न हो, इसलिये पूर्व से सम्पर्क स्थापित करने में वह रूस को महत्वपूर्ण कड़ी मानता था। उसका विचार था कि पश्चिमी यूरोप की रूसी साहित्य मे पुनः रूचि होने से भाषा-विज्ञान और नृवंशविद्या (ethnography) के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है जिससे पूर्वी स्टैट्स से यूरोपीय जातियों के आगमन के सम्बन्ध में ज्ञान मिल सकता है। [3] उसे आशा थी स्पेनिश उत्तराधिकार युद्ध मे पीटर महान् फ्रांस के विरुद्ध जर्मनी की सहायता करेगा। उसके विचार में रूस ही तुर्की बर्बरता को रोकने की प्राचीर बन सकता था। उसकी सदा यह धारणा बनी रही कि रूस का कर्मठ शासक सभ्यता के विकास में नेतृत्व करने योग्य है। वह इंगलैण्ड को दोषी ठहराता था, क्योंकि ये दोनों देश आदर्शों को ताक में रख अपने व्यापारिक धंधो में तल्लीन थे। जीवन पर्यन्त लीब्निज एक ऐसे महान् शासक की खोज में रहा जो उसके समान उत्साही हो और उसके प्रस्तावों को कार्य रूप में परिवर्तित कर सके, क्योंकि उसका विश्वास

---

1 उसका विश्वास था कि यूरोप क्रांति के द्वार पर खड़ा है। उसने अपने एक निबंध में इस ओर संकेत भी दिया था। 'ल रिवेल्युशन जनेरेल दोन्ट ल यूरोंप एस्ट मीनेस' (**चेवरेस**, 2,37)।

2 देखिये डब्लू० ग्यूरियर कृत **लिबनीज इन सीनेन वेजिनह्यूगैन ज्यू रसलैंड अंड पीटर देम ग्रोसेन**, लिबनीज़ का विश्वास था कि विज्ञान का प्रसार ईसाई प्रसार से सबंधित हैं। उसने प्राक्कथन में अपना यह मत प्रकट किया था कि चीन एवं यूरोप में विश्व की महत्वपूर्ण घटनायें घटित होंगी।

3 ग्यूरियर, 149।

था कि स्वार्थरत सामान्य जनमत की अपेक्षा प्रबुद्ध शासक के प्रयत्नों से ही समाज की दशा में सुधार सम्भव हो सकता था और ऐसी ही धारणा उसके अनुगामी दार्शनिकों की थी । यदि सम्राट और जार अपनी शक्ति का एकीकरण करलें[1] तो केवल यूरोप की शांति के निमित्त ही नहीं अपितु समस्त संसार की सभ्यता के लिए क्या नहीं किया जा सकता था । हैप्सबर्ग और रोमेनोफ दोनों ने इसके प्रस्तावों में रुचि तो ली, किन्तु वे स्वयं परिस्थितियों के शिकार थे, इसलिये वे प्रगति में योग न दे सके ।

17वीं शताब्दी के दर्शनशास्त्री और गणित

डेकार्ट, स्पिनोजा, पास्कल और लीब्निज सब गणितशास्त्री थे और यह विशेषता उनके प्रत्येक विचार में पाई जाती है । वाइको 17वी शताब्दी का केवल एक महान विचारक था, गणितज्ञ नहीं था । समकालीनों ने उसे अच्छी तरह नहीं समझा, 18वीं शती में तो वह पूर्णतया उपेक्षित रहा और आज भी लोग केवल उसका नाम ही जानते हैं । ज्यों ज्यों लोगो का ज्ञान विकसित होता जायेगा त्यो-त्यों पास्कल और वाइको के ग्रंथ अधिक ध्यान से पढ़े जायेंगे और अच्छी तरह समझे जायेंगे ।

वाइको

वाइको[2] नेपल्स में एक निर्धन पुस्तक-विक्रेता के घर सन् 1868 में उत्पन्न हुआ था, और कुछ वर्षों को छोड़कर वह जीवन-पर्यन्त उस शहर में, जहा मोनेला लम्बी जेल-यातना भोग रहा था, निर्धनता से सघर्ष करता रहा । वह नौ वर्ष तक वाल्टोला में (1685-1694) इस्चिया के बिशप (bishop of ischia) के भतीजों का संरक्षक रहा और इस समय से उसने अच्छा लाभ उठाया, क्योंकि इन दिनों में विधिशास्त्र, भाषाशास्त्र तथा इतिहास का गहन अध्ययन किया । वाल्टोला के एकाकी जीवन से बाहर निकलकर जब उसने नेपल्स के बौद्धिक क्षेत्र में कदम रखा तो उसे उस समय की प्रवृत्तियों को देखकर बड़ी निराशा हुई, क्योंकि उन दिनों इटली में कार्टेशियनवाद की खूब धाक थी, शास्त्रों की उपेक्षा की जा रही थी, अनुसंधान और पाण्डित्य लोकप्रिय न रहे थे, गणित और पदार्थ-विज्ञान का बोलबाला था, अनुवाद और संक्षिप्त सस्करणों का प्रचलन था, और लोग जनता को शब्दाडम्बर की कलाबाजियों से प्रभावित करके प्रसिद्धि प्राप्त कर रहे थे ।

---

1 ग्यूरियर 158 तथा चेवरेस, 4 ।

2 ओपेरे दी गेम्बतिस्ता वाइको (फिरेरी द्वारा सम्पादित), 6 जिल्द, 1837 । आर० फिलिट द्वारा वाइको का रोचक वर्णन किया गया है ।

जनप्रिय वाइको की संस्कृति–सम्बन्धी सरल बातों से किसी को कोई सहानुभूति न थी, क्योंकि, उसका कहना था कि ऐसी बातें तभी की जाती हैं जब वास्तविक पाण्डित्य का अनुशासन समाप्त हो जाता है। 1697 में उसे नेपल्स के विश्वविद्यालय मे अलकार शास्त्र के प्राध्यापक का पद मिल गया जिससे उसे केवल निर्वाह के लिये कुछ अर्थ–प्राप्ति होने लगी। इसके बाद वह अपने बड़े परिवार के पालन–पोषण और पुस्तकों के प्रकाशन में, जिनमें उसने मानव–प्रगति की व्याख्या की, समय व्यतीत करने लगा। उसके ग्रंथों में सबसे प्रसिद्ध (principi d'una scienza nuova) प्रिंसिपल द'उना साइज. नौवा[1] 1725 में प्रकाशित हुई जो कुछ कर्कश शैली में होने के कारण पढ़ने में कठिन हो गई थी, किन्तु प्रतिवर्ष उसकी ओर अधिकाधिक पाठक आकर्षित होते जा रहे थे। वाइको को इटली में आज जो ख्याति प्राप्त है उसका मुख्य कारण क्रोस (croce) द्वारा प्रोत्साहन है।

उसका पाण्डित्य

प्राचीन काल के महान पुरुषों का विवेचनापूर्ण प्रशंसक, इतिहास–सम्बन्धी विधिशास्त्र और दर्शन–शास्त्र का गहनकर्ता तथा अति–सुन्दर अपूर्व असाधारण योग्यता से अभिभूषित, वाइको इतिहास का नवीन दर्शन तैयार करने के कार्य में जुट गया। उसने मध्यकालीन रूढ़ियों की बेड़ियों से जकड़े हुए मानव को उनसे मुक्त करने के डेकार्ट के प्रयासों की पूरी प्रशंसा की, किन्तु उसकी मान्यता थी कि एक दार्शनिक इतिहास के सामाजिक अनुभवों और परम्पराओं की उपेक्षा नहीं कर सकता तथा मानव–विचार की प्रगति का अध्ययन करने में ज्यामिति विधि के सीमित क्षेत्र पर निर्भर नहीं रह सकता। वह समय की गणित की भांति नियमीकरण–विधि को पाण्डित्यवादी विधि (scholasticism) से अच्छा नहीं समझता था जो वास्तव में, इस विधि के विरुद्ध प्रक्रियास्वरूप चलाई गई थी। इसलिये वाइको ने प्लेटो, टेसिटस और बेकन के ग्रंथों से मार्गदर्शन प्राप्त किया। प्लेटो ने मनुष्य का वह रूप दिखाया है जैसा उसे होना चाहिये, टेसिटस ने मनुष्य का यथावत रूप दिखाया है और बेकन ने दोनों दशाओं को मिला दिया है। वह देखता भी है और मनन भी करता है। किन्तु निश्चित बिन्दु तक पहुंचने के बाद तीनों ही संतोषजनक नहीं रहते। प्लेटो एतिहासिक आधार नहीं दे सका, टेसिटस सामान्यीकरण में कमजोर था और बेकन दूरदर्शिता–पूर्ण अनुमान लगाने में असफल रहा। वाइको ग्रोटियस से भी मार्ग–दर्शन प्राप्त न कर सका, यद्यपि उसे दर्शन–शास्त्र को भाषा विज्ञान से सम्बन्धित करने की दिशा में उससे कुछ संकेत अवश्य मिला।

---

1 ओपेरे, खंड 4।

उसकी साइजानोवा

प्राचीन व अर्वाचीन सभ्यता के क्रम का अध्ययन करने पर वाइको के मन में यह प्रश्न उठा कि क्या विभिन्न रीति–रिवाजों, भाषाओं, विचारों तथा क्रियाओं को किसी एक पद्धति में बांधना सम्भव है, क्या इतिहास के विकास के सामान्य नियम निकाले जा सकते हैं, क्या सभ्यता के इतिहास के लिये वैसा ही कार्य किया जा सकता है जैसा बेकन ने पदार्थ–विज्ञान और शरीर–विज्ञान में करने का प्रयास किया। यदि विकास के चक्र को, जिसके अनुसार सभ्यताओं और राष्ट्रों का उत्थान–पतन होता था, समझ लिया जाय तो मानव–समाज के अनश्वर सार को भी समझा जा सकेगा और इससे दार्शनिक यह निश्चित कर सकेंगे कि विधाता किस प्रकार मानव प्रारब्ध का विधान करता है। इसका हल विभिन्न राष्ट्रों के विचार, भाषा व इतिहास में सामान्य तत्व ढूंढने से मिल सकता है।[1] उसकी मान्यता थी कि इस भ्रामक विभिन्नताओं में भी कोई सामान्य तत्व अवश्य है और नवीन विज्ञान को इसका पता लगाना चाहिए। वाइको इसी दिशा में अध्ययन करता रहा। उसने सबसे पहले रोमन कानून और लेटिन शब्द व्युत्पत्ति का अध्ययन किया तथा अनुभव किया कि वाणी अमूर्त धारणाओं का बाह्य रूप है, 'वेरम' (verum), 'एकअम' (aequum) और 'कॉजा' (causa) जैसे शब्द केवल चिन्ह हैं जिनके अन्तर्गत मानव–विचार का अनन्त क्षेत्र निहित है। इस प्रकार की सामग्री थी उसके विशाल भवन की जिसके निर्माण की वह कल्पना कर रहा था। उसने अपना यह लक्ष्य आंशिक रूप में साइजानोवा में प्राप्त किया जब उसने यह स्पष्ट किया, कि किसी भी राष्ट्र की संस्कृति उसके पूर्व वृत के आधार ही समझी जा सकती है, कि पुरातन ज्ञान को वृहत रूप दिया जा सकता है तथा मूर्ति–पूजकों के बहुत से दैवी–देवता काल्पनिक वस्तुये न होकर चिन्ह थे (प्रसगवश उसने यहां यह प्रदर्शित किया कि इलियड और ओडिसी एतिहासिक होमर के ग्रंथ न थे)। इन प्रारम्भिक बातों के उल्लेख के बाद उसने सभ्यता की प्रगति को तीन अवस्थाओं में बांटा है– पहली देवी या ईश्वर–सम्बन्धी अवस्था है जो गूढ़ है और जिसकी व्याख्या पुरोहितों की भाषा या गूढ़ाक्षरों में की गई है, दूसरी अवस्था वीरता या कल्पना की है जिसका वर्णन कविता के रूपकों में किया गया है तथा जिसे महावीरो और महान् कवियों का युग कहा गया है, तीसरी अवस्था मानव या एतिहासिक युग की है जिसके लिये निश्चित साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया गया है और जिस अवस्था में हम आजकल रह रहे हैं। अपनी पुस्तक के अन्तिम भाग मे वाइको उन

---

1 देखिये जी. डेलबेको कृत ला **कम्युनिकेबिलिता देल दिरीतोए ल इदी देल वाइको।**

तरीकों पर विचार व्यक्त करता है जिनसे राष्ट्र अपने ससृष्ट अस्तित्व की रक्षा करते हैं अथवा विनाश करते हैं, राष्ट्रीय विनाश के दो कारण, स्वतन्त्रता का नाश और आन्तरिक भ्रष्टाचार है और इनसे छुटकारा तभी पाया जा सकता है जबकि शासक प्रबल हो। जब विजय द्वारा किसी राष्ट्र को नष्ट किया जाता है तो विजेता भी विकास के उसी क्रम में से गुजरेगा और अन्त में उसके सामने वही विकल्प आयेंगे। इस प्रकार इतिहास का विश्वव्यापी चक्र चलता है। किसी एक राष्ट्र के इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने से प्रत्येक राष्ट्र के इतिहास का बोध हो जाता है, राष्ट्रीय कानूनों और रीति रिवाजों की क्रियाओं और पूर्व वृत के अध्ययन करने का तात्पर्य विश्व–व्यापी विधिशास्त्र को हृदयंगम करना है जिसके कि वे अग हैं।

उसका प्रगति सम्बन्धी दृष्टिकोण

साइजानोवा मे कई त्रुटियां हैं और उसका ग्रन्थ, जो एक महान् स्मारक होता, केवल धड़ (torso) ही रह गया। रोमन कानून और रोमन इतिहास को उसने आवश्यकता से अधिक महत्व दिया, पूर्व के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसने कानून और भाषा के भेदों में निहित समानान्तर तत्वों पर तो काफी प्रकाश डाला है, किन्तु मानवता की सामूहिक सामान्य प्रगति के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा। अतः पाठक पर यह प्रभाव पड़ता है कि समाज जिस बिन्दु से प्रगति की ओर आगे बढना है वही पर वापस पहुंच जाता है। जिसे हम प्रगति कहते हैं क्या वास्तव में ऐसी कोई चीज है ? क्या विकास का परिणाम, कभी कभी पीछे की ओर खिसकते हुए भी, आगे की ओर बढ़ता ही रहा है ? ये प्रश्न है जिनका वाइको कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दे सका है, यद्यपि उसके पूर्वज केम्पेनेला ने इन प्रश्नों का हल बताया था।

राजनीति में निरंकुशवाद : अमूर्त विचारधारा में क्रान्ति

यूरोपियन विचारधारा अभी तक अधिकारपूर्ण पाण्डित्य और अनुकरण–शील मानववाद के बन्धनों में बधी हुई थी, 17वीं शती के दर्शनशास्त्रियों ने रचनात्मक विचार प्रस्तुत करके उन बन्धनों को तोड़ दिया, और इस प्रकार 18वीं शती के विचारकों के लिए विचार–स्वातन्त्रय सम्भव बना दिया। इसके परिणामस्वरूप प्रमुख लोगों ने उस सामाजिक व्यवस्था के मौलिक सिद्धान्तों में जिसे पुरातन व्यवस्था (ancien regime) के नाम से सम्बोधित किया जाता था, संदेह करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार दार्शनिक विद्रोह राजनीतिक विप्लव का अग्रगामी था, और यह नेतृत्व राजनीतिज्ञों ने नहीं, विचारकों ने दिया। राजनीति के क्षेत्र में प्राचीन व्यवस्था पर कोई उंगली तक नहीं उठी थी कि अमूर्त और वैज्ञानिक विचारधारा से इसे निकाल दिया गया था। 17वीं शती में दो बातें दृष्टिगोचर होती थीं। इंगलैण्ड और पोलेण्ड के अतिरिक्त समस्त यूरोप में निकुंशवादी सिद्धान्तों

का दृढ़ होना और लोगों के मन में महान् क्रान्ति की उत्पत्ति। पहला तत्व तो इस पुस्तक का मुख्य विषय रहा ही है, इस प्रकरण में दूसरी बात पर प्रकाश डाला गया है। गेलिलियो, डेकार्ट, स्पिनोजा, पास्कल, लीब्निज, और वाइको ने प्राचीन व सर्वमान्य आदर्शों का त्याग करने की भूमिका तैयार कर दी। दो अन्य महत्वपूर्ण विवादों में भी भूतकाल से मुक्ति प्रतिलक्षित होती है, ये विवाद प्राचीन एवं अर्वाचीन तथा प्रोटेस्टेन्टों और कैथोलिकों में चल रहे थे। दोनों विवादों में, पहली बार, प्रगति-सम्बन्धी सुसंगत सिद्धान्त (a consistent theory of progress) प्रतिपादित किया जा रहा था।

प्राचीन और अर्वाचीन

कार्नील (corneille) ने अपनी पुस्तक क्लिटेन्डर (clitandre) की भूमिका में पहले ही लिखा था कि प्राचीन लोग (ancients) प्रत्येक बात के ज्ञाता नहीं थे। टासोनी (tassoni) ने अपनी पुस्तक **सेचियारेपिटा** (secchia rapita) में केवल पेट्रार्क (petrarch) का ही नहीं, होमर और अरस्तु का भी विरोध किया। 1687 में प्रकाशित चार्ल्स पराल्ट (charles perrault) कृत **सिएक्ल द लुई ल ग्रांद** (siecle de louis grand) में प्रचीन व अर्वाचीन सभ्यताओं के गुण-दोषों पर वादविवाद उठाया गया था जिससे उसने प्राचीन कवियों की तुलना उस समय के कवियों से की थी और तत्काल कवियों के पक्ष में निर्णय दिया था।[1] उसने अपनी पुस्तक **पारलेल दे आंशिएं ए मार्दन** (paralleles des anciens et modernes) में अधिक स्पष्ट रूप से लिखा और बायलो (boileau) से उसका उत्तर मांगा। पराल्ट ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि पुरातन लोगों को केवल वर्तमान से बहुत पूर्व जन्म लेने के कारण महान् माना जाता था, तथा विज्ञान के ज्ञान में हम उनसे बहुत उच्च हैं तथा दूसरी कलाओं में भी भूतकालीन ज्ञान से लाभ उठाकर कल्पना की अधिक अच्छी उड़ान कर सकते हैं। इस प्रकार हमारे पास शिल्प-कला के ऐसे उत्कृष्ट नमूने हैं जिनका प्राचीन लोगों ने स्वप्न भी नहीं लिया होगा, हमारे पास, सानेट जैसे, साहित्य में कई रूप हैं जिनसे अरस्तु अनभिज्ञ था, कागज पर चित्र बनाने और चित्रों में प्रकाश-अन्धकार दिखाने की कलायें, जो आधुनिक चित्रकारों की परिचित वस्तुयें हैं, बहुत लम्बे क्रम के फलस्वरूप विकसित हुई हैं। बेकन की भांति पराल्ट भी मानव-जाति की तुलना एक व्यक्ति से करता था जो प्राचीनकाल में अपनी किशोरावस्था में था और अब वृद्धावस्था में है। उसके मतानुसार प्रगति में निरन्तरता नहीं रही है, क्योंकि सम्भव है कि युद्धों और क्रूरताओं के युगों में

---

1 इस सम्बन्ध में रोचक विवरण बरी लिखित **दी आइडिया ऑव प्रॉग्रेस** अध्याय 4 व 5 में उपलब्ध है।

इसका अवरोध होता रहा हो, किन्तु यदि भूतकाल को सामने रखा जाये तो औसत रूप में प्रगति हुई प्रतीत होती है क्योंकि मनुष्य भूतकाल का उत्तराधिकारी है। यही तर्क देमारे द सेंत सार्ली (desmarets de saint-sorlin) ने पहले कुछ भिन्न रूप में दिया भी था। उसका दावा था कि प्राचीन पांडित्यपूर्ण पौराणिक कथाओं की अपेक्षा ईसाई–धर्म अधिक प्रेरणादायक प्रसंग प्रस्तुत करता है इसलिये ईसाई–काव्य दोनों में श्रेष्ठ है। यही बात सिद्ध करने के लिये कि वह होमर से अच्छा कवि था। क्लोविस (clovis) और मेरी मैग्डालीन (mary magdal-ene) नामक पुस्तकें लिखी। आजकल इनके पाठक बहुत कम हैं।

वर्तमान और वार्साय

यह अस्वाभाविक न था कि वर्तमान की श्रेष्ठता के पक्षपातियों के काफी अनुयायी हो गये थे क्योंकि बहुत से समकालीनों को ऐसा लगता था कि लुई 14वें का राज्य राजनीतिक और सैनिक विजय में उच्चतम शिखर पर पहुंच चुका था जैसा विश्व में कभी नहीं देखा गया था। राजा का सम्बन्ध, जो ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में शासन करता था और जिसके राज्य ने ऐसा लगता था मानों शताब्दियों की तैयारी के बाद पूर्णता प्राप्त की हो, उस समय की उच्चतम कला और कविता से रहा हो। इस दृष्टिकोण की सबसे स्वस्थ व्याख्या करने वाला था फोटेंनेल (fontenelle) जिसने 1688 में एक पेम्फलेट **डाइग्रेशन आन दी एन्शेन्ट्स एण्ड माडर्न्स** ((digression on the ancients and moderns) प्रकाशित किया। वह इस विवाद को वैज्ञानिक रूप देकर और ऊंचे स्तर पर ले गया—क्या जीव-शास्त्री दृष्टि से मानव पुरातनकाल से अधिक पतित हो गया है ? क्या होमर के समय के पेड़ आजकल के पेड़ों से बड़े थे ? फोन्टेनेल के मन में ये दोनों प्रश्न अन्तर्सम्बन्धित थे क्योंकि वास्तविक श्रेष्ठता का दावा वही युग कर सकता था जिस पर प्रकृति ने पूर्ण उदारता दिखाई हो।

फॉन्तेनेल

यह पुरुष जिसने इस विवाद में एक नये और महत्पूर्ण तत्व का प्रवेश कर दिया था अपने युग के सबसे विलक्षण मनुष्यों में से था। रोएन (rouen) में 1657 में जन्म लेकर वह 100 वर्ष जीवित रहा। चालीस वर्ष तक वह अकादमी द साइन्स (academie des sciences) का सेक्रेटरी रहा। उस पर घरेलू कठिनाइयों का कोई बोझ न था। साधारण व संयत, शिष्ट व अहंकारी, फॉन्तेनेल 17वीं और 18वीं दोनों शताब्दियों का व्यक्ति था। उसने जिस चीज को भी छुआ, पद्य हो या नाटक, पदार्थ–विज्ञान हो या ज्योतिष, प्रत्येक में पर्याप्त सफलता प्राप्त की उसकी पुस्तक **ऑत्रेशिएं सूर लाप्लूरलिती दे मॉन्द** (entretiens sur la pluralite des

mondes) ज्योतिष के अध्ययन का प्रचार करने का प्रथम प्रयास था। इसमें एक ज्योतिषी और एक स्त्री में नक्षत्रों पर वार्तालाप है और स्त्री ने इस शिक्षा का परिणाम इस प्रकार व्यक्त किया, 'la terre est si effroyable ment petite' प्राचीन व अर्वाचीन के इस झगड़े मे फॉन्तेनेल की देन इस युग के किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक सावधानी से सोची हुई और अधिक सुसगत प्रगति का सिद्धान्त था।

भूतकाल के सम्बन्ध में उसका दृष्टिकोण

फॉन्तेनेल यह तर्क देता था[1] कि पुरातन लोगों (ancients) के पक्ष में समय था और प्राचीन काल में होने के कारण वे आविष्कार भी पहले कर सके, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि इस कारण वे श्रेष्ठ होने का दावा कर सकते हैं। कार्टेशियन काल को दर्शन इतिहास की उच्चतम अवस्था मानते हुए उसने यह मत प्रकट किया कि यदि पुरातन लोगो के अनेको दोषपूर्ण अनुमानों का भंडार समाप्त न हो गया होता और इस प्रकार उन्होने बाद के अनुसधानों का श्रम न बचाया होता तो कार्टेशियनवाद सम्भव ही न हो पाता। भावी सतान भी अपने पूर्वजों से उसी प्रकार लाभ उठायेगी जिस प्रकार हमने अपने पूर्वजों से उठाया है। प्रगति की की कोई सीमा नहीं। मानव उस क्रम का लाभ उठाने में उस समय असफल होगा जब उसका भौतिक व मानसिक पतन हो जायेगा। फॉन्तेल प्राचीन व अर्वाचीन की तुलना करते हुए उन कलाओ की गणना नहीं करता जो कल्पना–शक्ति पर आश्रित हों। पुरातन लोगों ने कल्पनात्मक साहित्य में सम्भवत: पूर्णता प्राप्त करली हो, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उनके बराबर हुआ ही नहीं जा सकता।

उसकी प्रगति का सिद्धान्त

फॉन्तेल पराल्ट (perrault) के इस विचार से सहमत है कि प्रगति होने में देर हो सकती है, महान व्यक्ति जन्म तो लेते हैं, किन्तु जिस युग में वे जन्म लेते हैं, सम्भव है उसमें उन्हें अनुकूल वातावरण न मिले। यह भी आवश्यक नहीं कि वास्तव में पतन होता ही हो, क्योंकि यह सम्भव है कि बहुत से प्लेटो और सिसरो के समान व्यक्तियों को संघर्षों, रोगों, धार्मिक अत्याचारों अथवा सरकार के दमन ने परिपक्वावस्था प्राप्त करने से पूर्व ही उठा लिया हो। किन्तु वह पराल्ट से इस बात में सहमत न था कि वर्तमान युग मनुष्य जाति की वृद्धावस्था है। मन भूतकाल का व्यापक उत्तराधिकारी है, किन्तु मानव जाति, व्यक्ति की तरह कभी बूढ़ी नहीं होती क्योंकि इसका सदैव कायाकल्प होता रहता है। अनेकों वर्ष बाद ईसा ने पाचवीं शताब्दी पूर्व और ईसा से 17वी शताब्दी पश्चात् कोई समयान्तर मालूम

1 बरी पूर्व उद्धृत, 102।

ही नही होगा, एक दिन किसी दूरस्थ भावी युग में प्राचीन व अर्वाचीन कालों को एक समूह में सम्मिलित कर दिया जायेगा, क्योंकि दूरस्थ होने के कारण उन्हें यथोचित स्वरूप में नहीं देखा जा सकेगा। प्राचीन की अधिक प्रशंसा मूल्यों का केवल मिथ्या अनुमान प्रदर्शित करना ही नहीं अपितु प्रगति के चक्र मे खूंटा लगाने के समान है। यदि इस खूंटे को हटाया नहीं जाता तो यह टूट जायेगा, क्योंकि प्रगति केवल आधार ही नहीं, आवश्यक और अनिवार्य भी है इसे रोका नहीं जा सकता। इस प्रकार प्रगति के सिद्धान्त की प्रथम व्याख्या हमें फॉन्तेनेल के पैम्फलेट में मिलती है जिसमे ज्ञान की प्रगति को अवसर के प्रभाव पर आश्रित नही बल्कि इसे निश्चित और परिभाषा-सुलभ तत्वों पर आधारित माना है।

ज्ञान की लोकप्रियता

फॉन्तेनेल के उदासीन हेतुवाद की यह विशेषता है कि वह मानव-ज्ञान की भावी महानता मे तो विश्वास करता है, किन्तु समाज की प्रगति के प्रति निराशावादी है। मनुष्य की वासनाये और प्राकृतिक प्रवृत्तियां अपरिवर्तनीय हैं, सरकार को अन्ततोगत्वा, सदैव बल का सहारा लेना पड़ेगा, मूर्खो की सख्या सदा अपरिमित रहेगी। ज्ञान से प्रकृति की शक्तियों को बांधा जा सकता है, किन्तु आत्मा की समर्थता पर ऐसा कोई नियंत्रण नहीं लगाया जा सकता तथापि फॉन्तेनेल ज्ञान का और विशेषतया वैज्ञानिक ज्ञान का प्रचार करने में विश्वास रखता था।[1] उसका विचार था कि वैज्ञानिक अनुसधानो के परिणामों को छिपा कर नहीं रखना चाहिये, अपितु तुरन्त बुद्धिमान लोगों के समक्ष रखना चाहिये जो इनके महत्व को समझ सकें। यह दृष्टिकोण इस शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों के धार्मिक गुरूओं के सिद्धान्त के विपरीत था, क्योंकि उनका विश्वास था कि वैज्ञानिक खोजें, चाहे कितनी भी महत्वपूर्ण अथवा निश्चित क्यो न हों, इने-गिने सुसंस्कृत व्यक्तियों तक ही सीमित रहनी चाहिये, क्योंकि यदि उनका ज्ञान जनसाधारण को भी हो जायेगा तो इससे उनकी आस्था में अन्तर पड़ जायेगा। ऐसा दृष्टिकोण उस समय तक न्याय-सगत था जब तक यह विश्वास किया जाता था कि बाइबल मे अखिल ज्ञातव्य ज्ञान संगृहीत है। फॉन्तेनेल ऐसे युग में हुआ था जब लोगों में वैज्ञानिक खोजों को खतरनाक मानने की भावना समाप्त हो गई थी। उसकी मान्यता थी कि अन्ततोगत्वा ज्ञान का प्रसार जनसाधारण तक अवश्य पहुंचना चाहिये, इससे लोगों की अपनी बहुत सी प्रिय धारणाओं और अविश्वास में आस्था नहीं रहेगी। सम्भवत: यही कारण था कि उसके समकालीन वैज्ञानिक अध्यात्म-ज्ञान में और अध्यात्मज्ञानी वैज्ञानिक विषयों में रुचि लेने लगे। रसायन-शास्त्री बेयल (bayle)

---

1 बरी, पूर्व उद्धृत, 113 एफ एफ।

ने पवित्र धार्मिक ग्रंथों[1] की साहित्यक शैली के सम्बन्ध में लिखा, गणितज्ञ व ऐतिहासज्ञ लीब्निज ने थियोडाइसी[2] (theodicee) नामक ग्रंथ लिखा, न्यूटन ने अवतारों[3] के सम्बन्ध में अपने विचार लिखे लॉक ने ईसाई धर्म[4] को युक्ति संगत सिद्ध किया, फॉन्तेनेल ने नवीन वैज्ञानिक आधार पर दैववाणियों[5] का इतिहास लिखा और यह सब उस शताब्दी में प्रकाशित हुआ जिसका समारम्भ जियोर्डानो ब्रूनो (giordano bruno) के दाह से हुआ था तथा जिसमें गेलिलियो और कोपर्टिकन सिद्धान्त का घोर तिरस्कार किया गया था।

बेयल (bayle)

फॉन्तेनेल और बेयल दोनों 17वी और 18वीं शताब्दियों को जोड़ने वाले बौद्धिक पुल के दो स्तम्भ हैं। प्रोटेस्टेन्ट–कैथोलिक विवाद पर विचार करने से पूर्व पिएर बेयल (pierre bayle)के विचारों का अध्ययन कर लेना चाहिए, क्योंकि यद्यपि उसका पहले विवाद से कोई सीधा सम्बन्ध न था, परन्तु दूसरे विवाद के सम्बन्ध में अप्रत्यक्ष रूप से उसने महत्वपूर्ण देन दी।[6] उसका जन्म 1647 में फ्रांस के फ्वा (foix) प्रान्त में हुआ था। उसने एक जैसुइट स्कूल में शिक्षा पाई थी, किन्तु उसके अध्यापकों द्वारा कैथोलिक मत की व्याख्याओं ने उसे प्रोटेस्टेन्ट बना दिया और उसे राज्य छोड़ना पड़ा। जिनेवा में जाकर उसने कार्टेशियनवाद का अध्ययन किया और 1675 में सेडन (sedan) की अकादमी में दर्शन–शास्त्र का प्रोफेसर बन गया। पांच वर्ष बाद वह पहली बार धार्मिक शास्त्रार्थ के अखाड़े में उतर आया जब उसने डेकार्ट पर जेसुइटों द्वारा किये गये प्रहार का उत्तर लिखा। एक जैसुइट (लुई द ला विल) ने यह मान्यता प्रकट की कि युकारिस्ट (eucharist) का कैथोलिक सिद्धान्त यह मान कर चलता है कि द्रव्य प्रविष्टशील है और कार्टेशियनवाद इस सिद्धान्त से मेल नहीं खाता, क्योंकि यह द्रव्य का मुख्य गुण उसकी विकासशीलता में मानता है। बेयल ने इसके उत्तर में द्रव्यशीलता को असम्भव सिद्ध किया। 1681 में, जब सेडून की प्रोटेस्टैन्ट अकादमियों का दमन किया गया

---

1 सम कन्सीडिरेशन्स टचिंग दी स्टाइल आव दी होली स्क्रिपचर्स (1661)।

2 देखिये अध्याय 13।

3 ऑबजरवेशन्स ऑन दी प्रोफेसीज ऑव होली रिट (आपेरा, सं० 1785) 5।

4 दी रीजनेबिलनेस ऑव क्रिश्चेनिटी (1695)।

5 हिस्तोरे देस आरेकल्स।

6 ल्यूसियन ड्यूबोइस कृत बेयल एत ला टोलेरेन्स में 'सहिष्णुता के इतिहास में उसके स्थान' की व्यापक विवेचना की गई है।

तो बेयल अपने मित्र जुरियु (jurieu) के साथ राटर्डम चला गया जहां उसे अकादमी–सम्बन्धी नौकरी मिल गई। इन्हीं दिनों 1680 में आकाश में एक नया नक्षत्र उदित हुआ था जिसके सम्बन्ध में उग्र वाद विवाद चल रहा था, क्योंकि इसे विपत्ति-सूचक समझा जाता था। इस सम्बन्ध में बेयल ने 1682 में कई पांसी (pensees) लिखी जिनमें उसने इस बात पर बल दिया कि इस भूखण्ड के मानवों के कार्यों से इन नक्षत्रों का कोई सम्बन्ध नहीं है। फान्तेनेल की भांति वह स्वयं अन्वेषक न होकर ज्ञान का प्रचारक था। वह यह कार्य व्यावहारिक रूप में करता रहा, क्योंकि 1684 से उसने एक मासिक पत्र **नोवेल द ला रिपब्लीक दे लेत्र** (nouvelles de la ripublique des lettres) प्रकाशित करना आरम्भ किया जो दो भागों में विभक्त था। एक में लेखकों के उद्धृतांश होते थे तथा दूसरे में पुस्तकों की टिप्पणी सहित सूचियां होती थी। बेयल द्वारा जेसुइट काल्विनवाद के इतिहास की कटु आलोचना करने के कारण रियु (rieux) के बिशप ने उसके भाई को कैद कर लिया। पांच महीने के कारावास के बाद उसके[1] भाई की जेल में मृत्यु हो गई और तब से बेयल धार्मिक हठधर्मी का कट्टर शत्रु बन गया।

उसका सहिष्णुता सम्बन्धी दृष्टिकोण

बेयल का सर्वप्रमुख ग्रंथ[2] उस समय प्रकाशित हुआ जब कि नांते की राजघोषणा (edict of nantes) को निरस्त किया गया। उसने अपने घोषणा–पत्र में यह सिद्ध किया कि ईसा के प्रवचनों का शाब्दिक अर्थ ग्रहण करने से इतनी हानि नहीं हुई जितनी ऐसी स्थितियों में उनका अनुसरण करने से हुई है जिनमें उन्हें व्यावहारिक रूप देने का अभिप्राय ईसा का कभी न था। इस ग्रंथ का महत्व इस कारण और अधिक हो जाता है क्योंकि इसमें विश्वव्यापी सहिष्णुता का पोषण किया गया था। इसीलिये इसकी प्रकाशन–तिथि (1686) आधुनिक सभ्यता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। ह्यूजनों जुरियु ने विश्वव्यापी सहिष्णुता में विश्वास रखने पर आपत्ति की। उसने अपने पूर्व मित्र के विरुद्ध यह सिद्ध करने के लिये एक पत्रिका लिखी कि बेयल का दृष्टिकोण आस्तिकतावादी (deism) था।[3] बेयल पर इसका यह प्रभाव हुआ कि वह प्रोटेस्टेन्टों से भी अलग हो गया, क्योंकि सहिष्णुता के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण भी कैथोलिकों के समान था। इस विश्वास की पुष्टि 16वीं शती में सर्वेटस[4] और 17वीं शती में निकोलस

1 नवम्बर 1685।,
2 अमस्टर्डम, 1686।
3 ड्यबोइस, पूर्व उद्धृत, 33।
4 देखिये अध्याय 3।

एन्थोनी[1] के साथ किये गये व्यवहार से होती थी। उस समय जुरियु को आशा थी कि ह्यूजनों को फ्रांस में पुनःस्थापित कर लिया जायेगा, उसने एपोकेलिप्स (apocalypse) के आधार पर इस प्रकार की भविष्यवाणियां भी प्रकाशित कीं। बेयल ने इसके प्रत्युत्तर में **एविस इम्पोर्टेन्ट आक्स रिफ्यूजीज** (avis important aux refugies) (1690) पुस्तक लिखकर महाद्वीप के समस्त प्रोटेस्टेन्टों को हतप्रद कर दिया। उसने लिखा "प्रोटेस्टेन्टों में दो कमियां थीं, एक तो उदारता की कमी और दूसरे बाइबल की शाब्दिक व्याख्या में अत्याधिक विश्वास।" अब जुरियु ने उस पर नास्तिकता का आरोप लगाया। इस पर दोनों में विरोध हो गया। बेयल पर नास्तिकता का संदेह होने पर विलियम तृतीय ने उसकी पेंशन बन्द कर दी।

उसका विश्व-कोश

ज्ञान का प्रसार करने मे योग देने की अभिलाषा से बेयल ने 1695 में अपनी पुस्तक **डिक्शनेयर हिस्तारीक ए क्रितीक** (dictionnaire historique et critique) का पहला अङ्क प्रकाशित किया। इसके प्रकाशन करने का मुख्य अभिप्राय यह था कि लोगों को दोषपूर्ण विश्व-कोशों के स्थान पर अच्छा विश्व-कोश उपलब्ध हो सके। इस प्रयास में उसे पूर्णतः सफलता मिली, क्योंकि यह ग्रन्थ निष्पक्ष और विद्वत्तापूर्ण था। इसमें उसने अपने शत्रुओं के साथ भी समान व्यवहार किया। परिणामतः कैथोलिक व प्रोटेस्टेन्ट दोनों ने इसका स्वागत किया। बेयल के इस कोश से, जो प्रथम आधुनिक विश्वकोश था, उसके पौराणिक, प्राचीन भूगोल व इतिहास, विभिन्न धर्मों के इतिहास, अध्यात्म और 16वीं व 17वीं शताब्दियों के इतिहास-सम्बन्धी ज्ञान का पता चलता है। इससे उसके मध्ययुग, साहित्य अथवा विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान की न्यूनता भी प्रकट होती है। वाल्टैयर, दिदरो तथा अन्य विश्वकोशों के लेखक बेयल के प्रति ऋणी होना स्वीकार करते हैं। फॉन्तेनेल की भांति उसे भी सम्मान प्राप्त है कि उसने व्यावहारिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्टेशियन विधियों को अपनाया। यद्यपि इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव यह हुआ कि ईश्वरवाद के युग में निरर्थक संस्कृति और तुच्छ प्रवचन का विकास होने लगा फिर भी इससे यह सिद्ध हो गया कि यूरोप की बौद्धिक प्रगति सकुचित असहिष्णुता से ऊपर उठकर ऐसे विस्तृत दृष्किोण की ओर अग्रसर हो रही है जिसमें मानव-ज्ञान अविभाज्य रूप से बौद्धिक स्वतन्त्रता से सलग्न है।

कैथोलिक व प्रोटेस्टेन्ट विवाद

प्रोटेस्टेन्टवाद के विभिन्न रूपों में तथा प्रोटेस्टेन्ट और कैथोलिक धर्मों में कई प्रकार के मतभेद थे और ये मतभेद स्वभाव, राष्ट्रीयता तथा बुद्धि द्वारा जनित

---

1 निकोलस एन्थोनी को 1632 में जिनेवा में दफनाया गया था।

थे। किन्तु फिर भी इनमें पुनः एकता लाने के लिये कई सुझाव दिये गये, किन्तु इन सुझावों के परिणाम निराशाजनक रहे। 30 वर्षीय युद्ध और नान्ते की राज-घोषणा के लोप होने से धार्मिक मतभेदों का हटना तो दूर रहा, वे और भी जटिल और कटु हो गये। 16वीं शताब्दी में कुछ पहलुओं पर समझौता होना सम्भव प्रतीत होने लगा। फिर भी कुछ ऐसे लेखक हुए जो समझौते के इच्छुक थे। लूथर-वादी केलिक्सटस ने अपनी पुस्तकों द रिलिजियोसा एडोरेशन (1623) (de religiosa adoratione) और द कोंजुगियो क्लोरिकोरम (de conjugio clericorum) में कैथोलिकों को कार्यों की आवश्यकता, धर्म समाज-सगठन मृतात्माओं के लिये प्रार्थना और सतों के आह्वान सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण रियायतें दीं।[1] ऐरैस्मस और 16वीं शताब्दी के अधिकांश मानवतावादियों की भांति प्रोटेस्टैन्ट सुधार-सम्बन्धी अनियमितताओं पर खेद प्रकट करते थे। ग्रोटियस और केसॉबां (casaubon) भी इसी मत के थे। दोनों दलों के बहुत से सर्वोच्च विचारकों ने सेन्ट ऑगस्टाइन के इस मत पर पुनः बल दिया कि चर्च की एकता भग करने की अपेक्षा सब प्रकार के कष्ट सहन कर लेना श्रेयस्कर है। उदाहरणतः केलिक्सटस पोप की अधीनता स्वीकार करने के लिये तैयार था, यद्यपि वह यह नहीं मानता था कि पोप कभी गलती नहीं कर सकता। वह यह मानने के लिये तैयार था कि बाइबल ही प्रेरणा देने वाला केवल मात्र श्रोत नहीं है, और वह पांचवीं शती मे प्रचलित धार्मिक परम्परा की प्रामाणिकता को भी स्वीकार करता था। इसी प्रकार बहुत से एँग्लिकन लोग भी कैथोलिक चर्च की अलिखित परम्पराओं को मानने के लिए तैयार थे, यदि उन परम्पराओं को सर्वत्र मान्यता प्राप्त हो। तथ्य की बात यह थी कि अधिक प्रबुद्ध प्रोटैस्टेन्टो में यह परम्परा थी कि यदि कैथोलिक मतानुयायी यह सिद्ध करदें कि उनके चर्च की परम्पराएं सदैव वही रही है जो उनकी स्थापना के समय डाली गई थीं तो वे उसे अंगीकार करने को तैयार थे। काल्विनवादियों ने इस तर्क पर और बल दिया। प्रामाणिकता के पक्षपाती होने की इच्छा प्रकट करने के लिये उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि युकारिस्ट (eucharist) का कैथोलिक सिद्धान्त आधुनिक दृष्टिकोण का है और काल्विनवादियों की संस्कार-विधि-सम्बन्धी शिक्षा फादर्स की शिक्षा के अनुकूल थीं। उनकी एक पुस्तक दुमोलिन कृत न्यूव्यूती द पेपिस्मे (nouveaute de papisme) (1626) भी उनकी इस विचारधारा का एक प्रमाण माना जा सकता है।

सत्य की स्थिरता : धार्मिक कट्टरता

17वीं शती में इस प्रकार का दृष्टिकोण अपनाया जाना उस युग की सबसे

---

1 देखिये रिबेल्यु कृत **बोसेट, हिस्तोरियन द प्रोटेस्टेंटिजम**, 27 एफ. एफ.।

महान् विशेषता थी, क्योंकि इससे सर्वोच्च कल्पनात्मक कला के अतिरिक्त अन्य प्रत्येक कार्य-क्षेत्र में लोगों में प्रामाणिकता के प्रति सम्मान की भावना प्रकट होती है। यह स्मरणीय है कि बहुत से विचारक मौंटेन की उस विचारधारा के विरुद्ध होने वाली प्रतिक्रिया से प्रभावित हुए थे जिसके अनुसार पाइरोनवाद (pyrrho-nism) वाला दृष्टिकोण व्यावहारिक बन गया था, लोगों में कट्टरता के प्रति अनादर, भगवद्‌वाणी में सदेह, मानव-तर्क में अविश्वास और सुसंस्कृत ऐपिक्यु-रियनवाद में विश्वास हो गया था। इस विचारधारा का सामना करने के लिये पूर्व 17वीं शती के प्रोटेस्टेन्ट अथवा कैथोलिक अध्यात्मवादियों ने धर्म को मानव-बुद्धि के क्षेत्र से यह कहकर, परे बताया कि धर्म देव वाणी और परम्परा के प्रमाण पर आधारित था। इस प्रकार अध्यात्म-ज्ञान मानव-ज्ञान के साथ-साथ प्रगति करने की अपेक्षा सीमाबद्ध और विशेषाधिकार-पात्र रह गया जिसमें बुद्धि कुछ हस्तक्षेप नहीं कर सकती थी। इस प्रकार धर्म को धर्म-निरपेक्ष विषयों की विरोधताओं और संशयों से ऊपर उठाया गया, इसकी सत्यता का प्रमाण इसकी निरन्तरता से दिया गया, इसकी प्रामाणिकता इस बात में नहीं मानी गई कि यह प्रगतिशील हो अपितु रूपान्तरों से पूर्ण स्वतन्त्रता में इसकी प्रमाणिकता मानी गई। भगवान् द्वारा उद्घोषित सत्य में कभी परिवर्तन नहीं हो सकता। इसलिये सच्चा धर्म वही है जो अनन्त काल से निरन्तर चला आ रहा है। यह मानसिक दृष्टिकोण इन शब्दों में व्यक्त होता है 'विटा डी नॉन फ्लूट, स्टाट' [1] (vita dei non fluit, state) बोसुए की अपनी पुस्तक हिस्त्वार दे वारिएशिआं (histoire des variations) में भी यही मान्यता है। उसका कहना था कि प्रोटेस्टेन्ट छोटे-छोटे पन्थों में विभक्त हो गये थे और यदि उनमें कुछ एकता अथवा सुसंगति थी भी, तो इससे वह समाप्त हो गई। उनके रूपान्तरण आत्मा की शक्ति के प्रमाण न होकर आध्यात्मिक त्रुटि के परिणाम थे। किन्तु इस प्रकार बोसुए अपने विरोधियों द्वारा स्वीकृत सिद्धान्त की ही पुष्टि कर रहा था। बहुत से प्रोटेस्टेन्ट यह तर्क देकर अपनी स्थिति को न्याय-संगत सिद्ध करने लगे कि वे ऐतिहासिक चर्च के सच्चे अनुयायी थे और उनमें से कैथोलिक स्वयं बाहर निकल गये थे। इसके परिणामस्वरूप ईसाई धर्म की दो विरोधी व्याख्याओं का विवाद इतिहास और विद्वत्ता के आधार पर होने लगा और जब तक वाद-विवाद इन दोनों आधारों तक सीमित था तब तक समझौते की कोई सम्भावना न थी।

बौधिक क्रान्ति

किन्तु शताब्दी के समाप्त होने से पूर्व एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। लोग यह शंका करने लगे कि क्या सत्य को जांचने की केवल मात्र कसौटी उसका

---

1 रिबेल्यु द्वारा उदधृत, पूर्व उद्धृत, 547।

रूपान्तरण न होना ही है। वे ऐसा अनुभव करने लगे कि कभी-कभी परिवर्तन प्रगति के साथ ही होता है। मानव-चिन्तन के इतिहास में यह सबसे महत्वपूर्ण क्रान्ति थी। बेयल[1] ने इसको इन शब्दों में व्यक्त किया, "इस बात में कौन सदेह कर सकता है कि चर्च कभी न्यून, कभी अधिक प्रबुद्ध रहा है और ज्ञान व प्रकाश की विभिन्नता के अनुसार उन्हीं वस्तुओं के सम्बन्ध मे विभिन्न मतों का होना बिल्कुल न्यायसम्मत है।" यही विचार बिशप बर्नेट[2] ने व्यक्त किया, "आखिर हम मनुष्य ही तो हैं और हमें यह स्वीकार करने में लज्जा नहीं होनी चाहिये कि हम ज्ञान में प्रगति करते जाते हैं।" इस विचारधारा से यह स्पष्ट है कि 17वीं शताब्दी में बौद्धिक प्रगति का विकास हुआ।

युद्ध से बचने के उपाय

17वीं शताब्दी ने एक दूसरे क्षेत्र में भी सभ्यता को महत्वपूर्ण देन दी है। युद्ध-जनित विनाश व कष्ट इस शताब्दी में जारी रहे और अधिक विचारशील व्यक्ति मानव-समाज के शरीर से इस कैन्सर को निकालने के उपायों की खोज करने लगे। यह अनुभव किया जाता था कि धार्मिक संस्कार के सम्बन्ध में मतभेद होने पर अथवा किसी शक्तिशाली राजा के व्यक्तिगत झगड़े के कारण या किसी ऐसी जटिल ससस्या के कारण जिसे सम्भवत, बहुत कम व्यक्ति समझ सके हों, लाखों व्यक्तियों की बेपरवाही से बलि चढ़ा दी जाती थी। तीस वर्षीय युद्ध बिना किसी उद्देश्य के भी हो सकता है तथा भविष्य में मानव अन्य पशुओं के समान बन सकता है तथा उसकी क्रूरताओं की तीव्रता एवं भयंकरता में वृद्धि हो सकती है। स्पेनिश उत्तराधिकार युद्ध में विनाश और संहार का नग्न नृत्य इसलिए हुआ ताकि डच और अंग्रेज व्यापारियों का लाभ घट न जाये। धर्म की अपेक्षा व्यापार युद्ध का कारण बन गया, किन्तु मानवता को इससे कुछ लाभ न हुआ। साम्राज्य और पेपेसी जैसी संस्थाओं के, जिनके प्रति यूरोपीय राष्ट्र आज्ञाकारी थे और उनका आदर करते थे, अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच से अदृश्य हो जाने पर विभिन्न राष्ट्र प्राचीन प्राकृतिक स्थिति में पहुंच गये, राष्ट्रीयता के पर्दे में उनके मतभेद और उनकी ईर्ष्यायें प्रतिदिन उग्र होने लगीं, कूटनीति अधिकाधिक कपटपूर्ण बन गई और अस्त्र-शस्त्रों के इतने अम्बार लगते गये कि उनका प्रयोग करना आवश्यक हो गया। युद्धों को रोकने के लिए कई उपाय प्रस्तावित किये गये[3] उनके संदर्भ के साथ ही इस अध्याय की इतिश्री होगी।

---

1 रिबेल्यु द्वारा उदधृत, 546।

2 देखिये एम. थेवोनॉट को लिखित पत्र, 1689।

3 इन सभी उपायों का वर्णन तेर मुलेन कृत गेडेन्के देर इन्टरनेशनेल आर्गेनाइजेशन, 140,—179 में उपलब्ध है। यद्यपि यह वर्णन संक्षिप्त है तथापि उपयोगी है।

एमेरिक क्रूस

निरन्तर शान्ति रखने के लिए इस शती में जो भी सिद्धान्त निकाले गये उनमें सर्वप्रमुख देन सली का 'ग्राण्ड डिजाइन' है[1]। दूसरी योजना इससे बिल्कुल स्वतन्त्र एमेरि कृत (nouveau cyne'eou discours d'etat repre'sentan tles occasions et moyens d'etablir une paix ge'ne'rale,et la liberte de commerce par tout le monde) में प्रतिपादित राष्ट्रसंघ (league of nations) की योजना है (1623)। यह पुस्तक विश्व के सब राजाओं व राजकुमारों को सम्बोधित कर लिखी गई थी। युद्ध के कारणों की जांच करने के बाद क्रूस यह तर्क देता है कि सम्भव है कि राज्यों की स्थापना करने के लिये युद्ध करना आवश्यक हुआ हो, किन्तु अब जबकि यूरोप की राज्य-पद्धति में स्थायित्व आ गया है और विभिन्न जातियों के सीमायें निश्चितरूप से स्थापित हो चुकी हैं तो युद्ध अनावश्यक है। क्रूस के मतानुसार बहुत से विवाद जो नर-संहार के कारण बनते हैं मध्यस्थ नियुक्त करके तय किये जा सकते हैं, यदि राजालोग यह समझ लें कि इस विधि से उनकी प्रतिष्ठा को कोई वास्तविक हानि नहीं होती। "मैं फ्रांसनिवासी हूं, मेरे मन में एक अंग्रेज, स्पेनवासी या किसी भारतीय के प्रति घृणा क्यों हो ? जब-जब मैं यह विचार करता हूं कि मै भी उन्ही की तरह एक मनुष्य हूं और मुझ से भी गलती या पाप हो सकता है, और जब मैं यह सोचता हूं कि समस्त राष्ट्र प्राकृतिक और इसलिये अटूट सम्बन्धों में बंधे हुए हैं तो मेरे मन मे घृणा की भावना उत्पन्न नही हो सकती।"उसकी मान्यता है कि धर्म युद्ध का कारण नही हो सकता, क्योकि समस्त धार्मिक पन्थ पारस्परिक मतभेद रखते हुए भी एक ही लक्ष्य को प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं और वह है भगवान की अराधना। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए उसने यह सुझाव दिया कि शासकों के प्रतिनिधि राजदूतों की एक कौंसिल संगठित की जाये जो पारस्परिक समझौते द्वारा यह अधिकार प्राप्त करे कि तमाम अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को इसकी मध्यस्थता के सुपुर्द किया जाये और इसमें सम्मिलित होने वाला प्रत्येक राज्य इस कौंसिल के समस्त निर्णय को स्वीकार करे। इस कौंसिल के मिलने का कोई स्थायी तटस्थ स्थान होना चाहिये, क्रूस इसके लिए वेनिस का सुझाव देता है। उसका सुझाव है कि पोप को अधिकार होना चाहिये कि वह ईसाई राज्यों के पारस्परिक विवादों को न्यायाधिकरण के सम्मुख रखे और यदि झगड़ों में इस्लामी देश फंसे हुए हों तो फ्रांस के राजा का यह कर्तव्य है कि वह विभिन्न विरोधी दलों को एकत्रित करने की प्राथ-

---

1 देखिये अध्याय 2।

मिक कार्यवाही करे। इस प्रकार युद्धो का स्थान मध्यस्थता ले लेगी और भ्रातृभाव का आदर्श स्थापित हो जायेगा।

ग्रोटियस

ग्रोटियस के युद्ध-सम्बन्धी विचार क्रूस से भिन्न थे। वह यह नहीं मानता था कि युद्ध निश्चित रूप से बुरा होता है। इस महान् डच विद्वान् ने अपनी पुस्तक दे जुरे बेली अक पेसिस (de jure belli ac pacis) में निरन्तर शान्ति की योजना की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक उद्देश्य अपने सामने रखा जो उसके अधिक प्रभावकारी होने का एक कारण है। वह सली, अग्रेज क्वेकर्स, या सेंट पिएर या काण्ट जैसा आदर्शवादी न था। उसका दृष्टिकोण कानूनी था व उसका जीवन भी चमत्कारी था, जिसके कारण लोग उसकी पुस्तकें पढ़ते थे। राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों में प्राकृतिक न्याय (jus naturale) को उपयोग में लाने के प्रस्ताव उसने पूर्व स्पेनिश डोमिनिकन विटोरिया[1] और इटली के जेन्टिलिस ने भी किया था, किन्तु ग्रोटियस पहला व्यक्ति था जिसने इस धारणा के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय विधिशास्त्र की ठोस पद्धति प्रस्तुत की। इसे अन्तर्राष्ट्रीय कानून के नाम से इसलिए सम्बोधित नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसके आदेशों का पालन करने के लिये इसके पीछे कोई अनुज्ञा न थी। इसे अशासकीय अन्तर्राष्ट्रीय कानून से नहीं मिलना चाहिये जो पहले भी विभिन्न राष्ट्रों के व्यापार व जहाजरानी-सम्बन्धी विवादों पर लागू किया जाता था और अब भी प्रयोग में लाया जाता है इस पद्धति का आरम्भ प्राकृतिक न्याय की किसी दार्शनिक धारणा के आधार पर न होकर अन्तर्राष्ट्रीय प्रयोग में आने से हुआ जैसा कि कोंसोलेटो डेल मेयर (consolato del mare) में वर्णित किया गया है। जिस प्राकृतिक न्याय को (jus naturale) ग्रोटियस ने पुनर्जीवित किया वह एक प्रकार का नीति सिद्धान्त (ethical maxim) था जिसे ईसाई धर्म में इस प्रकार कहा गया है, "जो कुछ आप अपेक्षा करते हैं कि दूसरे आपके लिये करें वही आप दूसरों के लिये स्वय करें।" ग्रोटियस ने इस सर्व-स्वीकृत सिद्धान्त का कानून की ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय पद्धति का निर्माण करने में प्रयोग किया जो युद्ध के औचित्य व अनौचित्य में भेद कर सके तथा युद्ध प्रारम्भ होने पर युद्ध-रत दलों पर कुछ नैतिक बधन लगाये जिससे युद्ध की भीषणता कम हो जायेगी और इसका विस्तार सीमित रहेगा। ग्रोटियस के मतानुसार युद्ध मानव के मनोवेगों का स्वभाविक और अनिवार्य परिणाम है और जब तक राष्ट्र अपने पृथक् अस्तित्व को बनाये रखने के, लिए दृढ़प्रतिज्ञ हैं तब तक केवल युद्ध उनके मनोविकारों के

---

1 देखिये ई. नीस लिखित ल ड्रोइत देस जेंस एत लेस एनसियन्स ज्यूरीकन्सल्ट्स एस्पेगनोल्स।

विकास की विधि है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में युद्ध वही भूमिका निभाता है जो सामाजिक क्षेत्र में दण्ड–विधान। अतः युद्ध में न्यायाधीश और दण्डनायक दोनों के कार्य निहित हैं। युद्ध की प्रकृति एक मैजिस्ट्रेट के समान हैं। महत्वाकांक्षी, प्रसारात्मक तथा विजयों या प्रचार के उद्देश्य से किये जाने वाले युद्ध निश्चित रूप से अन्यायपूर्ण हैं। उत्तेजनापूर्ण उपनिवेशवाद और अधीनस्थ जनता पर विजय के सम्बन्ध में भी उसका यही मत है। वह व्यवसाय के रूप में युद्ध की निन्दा करता है।

युद्ध के प्रति उसका दृष्टिकोण

ग्रोटियस के सिद्धान्तों को मान लेने से युद्धों की संख्या कम हो जायेगी, क्योंकि विजय या बदले की भावना से प्रेरित युद्धों को वह न्याय-संगत नहीं मानता यदि युद्ध आरम्भ भी हो जाये तो वह ऐसे बचावों का सुझाव देता है जिससे युद्ध की विभिषिका कम की जा सके। बच्चों. स्त्रियों और वृद्धों को नहीं मारना चाहिये। इसी प्रकार किसानों, शिल्पियों, साहित्यकारों तथा अन्य ऐसे सब व्यक्तियों पर प्रहार नहीं करना चाहिये जो राज्य को प्रकाश व जीवनदायिनी शक्ति प्रदान करते हैं। दोनों दलों द्वारा सच्चाई से इनका पालन करना चाहिये तथा तटस्थ राज्यों के अधिकारों का सम्मान करना चाहिये। इस प्रकार ग्रोटियस के सिद्धान्त के अनुसार युद्ध केवल किसी न्यायपूर्ण लक्ष्य के लिए ही लड़ा जाना चाहिये, उदाहरणतः बचाव के लिए। ऐसी लड़ाई में उन व्यक्तियों को भेजना चाहिये जिन्हें राज्य बिना कोई हानि उठाये भेज सके। शान्तिपूर्ण अधिकार की स्थिति में कम से कम हस्तक्षेप होना चाहिये और असैनिक लोगों की उनकी सुविधा विषयक सम्मति लेनी चाहिये। यद्यपि ग्रोटियस के बहुत से सुझावों को हेग सभाओं द्वारा स्वीकृत कर लिया गया है, किन्तु वास्तव में उसकी योजनाएं भी उतनी ही आदर्शवादी हैं जितनी सली और क्रूस की, क्योंकि जब वह युद्ध की स्वीकृति देता भी है तो वह इसके क्रूरता, पीड़ा, अपव्यय जैसे आवश्यक तत्वों को इससे निकाल देता है। किन्तु यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि इस प्रकार की अति दुखःद योजनायें 17वीं शताब्दी की देन हैं, क्योंकि वे लोगों को भ्रम में डालने वाली हैं और भ्रम-विनाश का प्रथम सामान्य कारण है।

इंगलैंड एवं महाद्वीप

इसलिये यह मानना पड़ेगा कि 17वीं शताब्दी के अनुभवों से निकाले गये व्यावहारिक निष्कर्ष नकारात्मक हैं। इसके अतिरिक्त यह स्मरण रखना चाहिये कि जो राजनीतिज्ञ मार्ग-दर्शन के लिये प्रायः भूतकाल की ओर दृष्टिपात करते हैं उन्हें वहां वही कुछ मिलता है जो वे ढूँढना चाहते हैं। अंग्रेजी भाषा-भाषी लोगों ने

दूसरी जातियों को रक्त-रंजित किये बिना अपनी सरकार की आन्तरिक समस्याओं को समझने में सफलता प्राप्त की है और उन्होंने मुख्यतः सहिष्णुता और आदर्शवाद पर आधारित अपनी राज्य-पद्धति को समझाने के लिये 'प्रजातन्त्र' एक ऐसा शब्द गढ लिया है जिसका प्रतिरूप महाद्वीपीय देशों में नहीं है जहां लोगों की झुंझलाहट को इस प्रकार के आदर्शवादी पारिभाषिक शब्द के मीठे शर्बत से शान्त नहीं किया जा सकता। अंग्रेज और अमरीकनों ने अपने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में जहां तक उनका यूरोप पर प्रभाव पड़ता है, इस तथ्य की अवहेलना की है और सर्वदा जल्दबाजी में यह समझ लिया कि हमारे प्रिय शब्दों का अन्य देशों में भी वही महत्व होगा जो हमारे देश में है। यह भुला दिया जाता है कि हमारी शक्ति का आधार आकर्षक शब्द नहीं अपितु सहनशीलता है जो इनके प्रवचन को सहन करती है और जो विकास की लम्बी प्रक्रिया के फलस्वरूप हमें मिली है, यद्यपि यूरोप के कुछ भागों में इसे हमारी दुर्बलता समझा जाता है और यह मुख्यतया ब्रिटिश राष्ट्रमंडल, संयुक्त राज्य अमरीका, स्कैंडिनेवियन देश और चीन की विशेषता है। 17वीं शताब्दी से वे कम से कम इतना तो सीख सकते हैं कि शान्ति-प्रिय देशों पर ही यूरोप के पुनर्निर्माण का उत्तरदायित्व होगा और महाद्वीपीय राज्यों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करने में नैतिकता, कानून या आदर्शवाद के लिये कोई स्थान नहीं है।

इतिहास एवं प्रतिशोध

अन्त में, अंग्रेजी भाषा–भाषी लोगों को 17वीं शताब्दी से यह पाठ सीख लेना चाहिये कि भूतकालीन घटनाओं के विस्मरण के लिये जिस प्रकार वे उद्यत हैं उसी तरह दूसरी जातियां इस विस्मृति में विश्वास नहीं रखती। समस्त इतिहास मे ऐसी सामग्री मिल सकती है जिसे प्रचारक लोग विकृत रूप दे सकते हैं, किन्तु 17वीं शताब्दी ऐसे लोगों के लिये जो युद्ध को न्यायसंगत सिद्ध करने के लिये महान् ऐतिहासिक आन्दोलनों का प्रमाण देते हैं और ऐसे शासक के लिये जो घोर क्रूरताओं के समर्थन के लिए सदा इतिहास का साक्ष्य देते हैं, पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करती हैं। लुई 14वें का दावा था कि भगवान् ने उसे फ्रांस के अथवा स्वय के विरुद्ध किए गए अत्याचारों की क्षति-पूर्ति करने के लिये भेजा है और इसी प्रकार उसकी क्रूरताओं से त्रस्त उत्तराधिकारी, उसी प्रकार से देव द्वारा दिये गये कार्य का सम्पादन करने के लिये प्रयुक्त, यह कहते हैं कि उस राजा द्वारा किये गये अन्यायों का बदला लेना पूर्णतया न्याय–संगत है जिसका प्रमाण जर्मन इतिहासज्ञ रांके का 1870 में दिया गया इस प्रश्न का उत्तर है कि प्रशा किसके विरुद्ध लड़ रहा है—लुई काटोर्ज के विरुद्ध (againt Luis Quatorze)। भूतकाल में हुए छल-कपट लुटेरेपन को तो आंका जा सकता है किन्तु उस अभिशाप का जो वह

अपने पीछे छोड़ जाता है, मूल्यांकन किस प्रकार किया जाये ? इस प्रकार यूरोप को वर्तमान के दोषों से सम्भवतः इतनी हानि न हो जितनी भूतकाल से होने का भय है।

जो लोग प्राचीन पीड़ाओं का बदला लेना अपना राष्ट्रीय कर्तव्य नहीं समझते वे इस प्रकार का अनुमान लगाकर कि वह किसी का भी दृष्टिकोण नहीं है, गलती करते हैं, और इसलिये वे महाद्वीपीय जनमत की इस प्रकार की विचारधारा को समझने में असमर्थ रहे, जिसमें बहुत सी पराजयों को उलट देने की इच्छा हो, अपनी पुरानी विजयों का पुनरावर्तन करने की आकांक्षा हो, पुराने से पुराने अन्यायों का बदला लेने की अभिलाषा हो, यहां तक कि यह भावना यूरोप के इतिहास को एक दूषित रक्त-रंजित चक्र बना देने की आशंका उत्पन्न कर दे जिसमें शांति-काल युद्ध की घोर तैयारी-मात्र का समय रह जाये और विजय–पराजय से से कुछ कम हानिकर हो। यह भूत-चिन्तन-मनोवृति जो असंख्य स्मरण पत्रों में और उत्सवों पर व्यक्त की जाती है सभ्यता के सम्मुख वास्तविक या तथाकथित आर्थिक कष्टों अथवा असमानताओं की अपेक्षा एक अत्यन्त गम्भीर खतरा है। यह चिन्तन का त्रुटिपूर्ण और दूषित तरीका है जिसे न शिक्षण द्वारा और न ही उपदेशों द्वारा सुधारा जा सकता है। अन्य समस्त वास्तविक बुराइयों की भांति यह भी असाध्य है। यह उसी विधि से नियन्त्रित की जा सकती है जिसका यह आदर करती है और वह है बल-प्रयोग। ऐसे समय में जबकि अंगरेजी-भाषी लोग भावी 'यूटोपिया' की योजनायें व्यवस्थापित करने में एक दूसरे से होड़ ले रहे हैं इस कठोर और अरुचिकर तथ्य को हृदयंगम करने की आवश्यकता है, क्योंकि इस खतरे को समझ कर ही स्थायी यूरोपियन व्यवस्था का आधार सुरक्षित रखा जा सकता है और केवल तभी 17वीं शताब्दी का अनुभव आधुनिक काल में महत्वपूर्ण हो सकता है।

पुस्तक-सूची

[प्रस्तुत पुस्तक सूची न तो अपने आप में पूर्ण ही है और न ही व्यापक। प्रस्तुत सूची में केवल कुछ चुने हुए ग्रन्थों को ही सम्मिलित किया गया है ताकि वे व्यापक विवेचन के लिये मार्ग-दर्शन कर सके—लेखक]

1. मुद्रित ग्रन्थों की पुस्तक सूची

ई. केलवी — बिबलीओतिका द बिबलियोग्राफिया स्तोरिका इतालियाना, (रोम, 1903–1907)।

ई. बूरजिमोम एत एल. अन्द्रे — लेस सोर्सेज द ल हिस्तोरे द फ्रांस, दिक्स सेपतीमे सीकेल, 8 खण्ड (1913-1935)।

देहमन-वेट्ज — केम्ब्रिज मॉडर्न हिस्ट्री
क्यूलेनकूंदे देर दयूशन गेसचीचेट (स. ई. ब्रेंडेनबर्ग, 1905-1931)।

निजोफ, एम — बिबलोयेका हिस्तोरिका-नीदरलेन्डसिया (1898-1899)।

फिकेल, एल — बिबलोग्राफिया हिस्तोरे पोलसकेज (1891-1904)।

बी. एस. एलोंसो — फ्यून्तेस द ला हिस्तोरिआ एस्पेनोला (इन जुनटा पेरा एम्पलीएसन द एस्तयूद्स ए इन्वेस्तीगेशंस सिन्तीफिकेस, मेड्रिड, 1919)।
1474-1700 तक के स्पेनिश इतिहास के लिये, अभी हाल ही में प्रकाशित रिव्यू हिस्तोरिके, खड 203 (1950), पृ० 90-114 देखें।

लेविसो एत रेमबॉड — हिस्तोरे जनरेल।

स्टेरवाल, के — स्वेनस्क हिस्तोरिस्क बिबलोग्राफी (1875-1900)।

हार्न, एफ. डब्लू — हिस्ट्री आफ दि लिटरेचर आफ दि स्केन्डिनेवियन नार्थ (आर. बी. एडरसन द्वारा अनूदित 1884)।

2. मानक एवं सहायक ग्रन्थ

इन्सट्रक्शंस दोनीज अक्स, एम्बासेड्यॉस एत मिनिस्त्रेस द फ्रांस दे प्यूज लेस ट्रीटीज द वेस्टफिले, पेसि ।

इंग्लैंड — स. जे. जे. जुसेरेंड

एम. मेरिअन — डिक्शनेर देस इन्सटीव्यूशंस द ला फ्रांस, 1923 ।

क्यूवेलियर, जे एण्ड लेफेवरे, जे — कारसपोन्डेंस द ला क्योर द एस्पेग्ने सुर लेस अफेयर्स देस पेज-बेस, 5 खड (1293-1935) ।

क्लोप, ओनो — देर फाल देस होसेस स्टुआर्ट……इम जुसामेनहेंगे देर यूरोपेसचेन एंगलिगेनहितेन, (1660-1714), 14 खड, वियना, 1875-1888 ।

कलेक्सन द दोक्यूमेंट्स इनेदिओत्स पेरा ला हिस्तोरिये द एस्पेने, III खड, मेड्रिड (1842–1895) ।

गिलेनी, एफ. डब्लू — दिप्लोमेतिशे हेंडबुच, 18:5 ।

गोल्डास्ट — पोलितिका इम्पेरिएलिये, मिवे डिस्कोंसेज पोलितिकी …… इम्पेरेतोरिस एत रेजिस रोमेनारम (फ्रेन्कफोर्ट, 1614) ।

ग्रोइन वान प्रिसतेरर — आर्काविइज ओ कारसपोंन्डेन्से द ल मेसन द ओरेंन्गें नासुए । (लीडन, 1841-1861) ।

चेरुएल — डिक्शनेर देस इंसटीव्यूशंस, मेयर्स एत कोतयूम्स द ला फ्रांस, 8वां संस्करण, 1910 ।

जर्मेनिक डायट — सं. बी. आरबेच ।

ड्यू मट, जे. बेरन द कार्लसक्रोन — कॉर्प्स युनीवर्सेल दिप्लोमेतिके द्यू द्रोइत देस जेन्स, 8 खड (प्रत्येक दो भागों में) ।

डेन्मार्क — सं. ए. गेफरॉय ।

द एवेनेल विकोम्ते — रिशेलू एत ला मोनारकीये एव्सोल्यू, 4 खंड, द्वितीय संस्करण, 1895 ।

पुर्तगाल — सं. केएक्स द सेन्ट–एमोर ।

पोलेन्ड — सं. ए. फर्गेस ।

प्रशा : — सं. ए. वेडिंगटन ।

फ्लोरेन्स, मोडेना एण्ड, जिनोआ	स. जे. ड्रिअल्ट ।
फोंतेस रेरम आस्ट्रियाकेरम	सं. फाडलर, सेकंड सीरीज (1885-1904) 57 खंड ।
बुसचिंग	रिलेजिओनी दे ला क्रोते दी रोमा (1877) । जोगराफे युनिवर्सले, 1757 (मानचित्रों के लिये महत्वपूर्ण) ।
बवेरिया, पेलेटीनेट एण्ड, ज्वीब्रूकेन	सं. ए. लेबोन ।
ब्रचेट अ बेरोजी	रिलेजिओनी देगली एम्बेसिएतोरी वेन्ती, वेनिस, 1860 ।
मिगनेट, एफ. ए. एम.	नेगोसिएशंस रिलेटिव्ज ए ल सक्सेशन द'एस्पेग्ने सोस लुइस XIV, 4 खंड, 1835–1842 ।
मेरियम, एम	डिक्शनरे देस इंसटीट्यूशन द ला फांस यू XVII एत XVIII सीकेल्स ।
रूस	सं. ए. रैंबोड (2 खंड) ।
रोम	स. जी. हेनोटोक्स एण्ड जे. हेनोतयो (२ खंड) ।
लग्रेल, ए.	ल दिप्लोमेतिक फ्रेंकेसे एत ला सक्सेशन द'एस्पेग्ने (1895–1900) 6 खड ।
लेविसे	हिस्तोरे द फांस ।
वेस्ट, एच	लेस ग्रांद्स त्रीतेस द्यू रेग्ने द लुइस XIV, 3 खड ।
स्पेन	सं. मोरेल–फेतियो एण्ड एच. लिओंरडन (3 खंड) ।
स्वीडेन	संम्पादित, ए. गेफरोय ।
हालेन्ड	सं. एल. एन्द्रे एण्ड ई. बूरजियोस ।
हेनेरोक्स, जी	रिशेलू, 6 खड (1893–1947) ।

3. इतिहास पर सामान्य पुस्तकें

एच. ए. एल फिशर	हिस्ट्री आफ यूरोप (3 खंड, 1938)।
	केम्ब्रिज माडर्न हिस्ट्री (खंड 3, "दि वार्स आफ रिलिजन", 1904, खंड 4, "दि थर्टी इयर्स वार",

1906, तथा खड 5, "दि ऐज आफ लुई XIV", 1908)।

क्लीश्रो — इन्ट्रोडक्शन अक्स एतुयूद्स हिस्तोरिके।

लेविसे एत रेम्बाद — हिस्तोरे जनरेल, (खड 5, लेस ग्यूरेस द रिलिजन', द्वितीय संस्करण, 1917, तथा खड 6 'लुइस XIV" द्वितीय संस्करण, 1912), प्यूपेल्स एत सिवलिजेशन (स. एल हाल्फन एण्ड पी. सेगनेक), खड 9 (1559-1660), 1934 तथा खंड 10 (1661-1715), 1935।

4. यूरोपीय राष्ट्रों के इतिहास पर मानक ग्रन्थ

इटली

केलगेरी — प्रियोनदरेंज स्त्रेनिएरे इन वेलारडी, हिस्तोरे पोलितिका द इतालिया।

जर्मनी एवं साम्राज्य

ई० डेनिस — ला फिन द इंडिपेंडेंस बोहेमें, 2 खंड (1890) तथा ला बोहेमे देपीज ल मोटेग्ने ब्लेंचे, 2 खंड (1903)। साम्रज्य की सस्थाओं के लिये देखें, बी. आरबेच द्वारा सम्पादित इन्सट्रक्शंस दोनीज एक्स एम्बासडर्स (जर्मेनिक डायट) तथा ल फ्रांस एत ला सेन्ट एम्पायर रोमेन देप्यूज ल त्रेते द वेस्टफेलिये।

ए. ह्यूबर — गेसचीचेत ऑस्टेरीक्स (1896)।

कोक्स — हाउस आव आस्ट्रिया (तृतीय संस्करण, 1847)।

जी. बेरेक्लोफ — दि ओरिजिन्स आव मोडर्न जर्मनी (1946)।

बी. ब्रेथोल्ज — गेसचीचेत बोह्मेस एण्ड मेह्रेंस, खंड 3, (1924)।

डचों के आर्थिक इतिहास पर निम्न ग्रन्थ देखें

ई. बेच — हॉलेन्डिशे रिट्जचेफ्ट्स गेसचीचेट (1927)।

पी. गेयल — रिवोल्ट आव दि नीदरलेन्ड्स् (1559–1609) तथा दि नीदरलेंड्स् डिवाइडेड (1618–1648), 1936।

दि युनाइटेड नीदरलेंड्स

पी. ब्लोक	गेसचीडनिस वान हेत नीदरलेन्ड्शे वॉक (पुटनाम द्वारा अग्रेजी में अनूदित, 1900)।

पुर्तगाल

एच. वी. लिवरमोर,	ए हिस्ट्री आव पुर्तगाल (1947)।
लेग्रंद	हिस्तोरे द्यू पुर्तगाल, 1928।

पोलेन्ड एवं रूस

जी० वरनाडेस्की	हिस्ट्री आव रशिया (1945)। पी० मिलेकोव, सी० सेगनेबोस तथा एल० इसेनमेन द्वारा फ्रांसीसी भाषा में सम्पादित रूस का इतिहास अभी लिखा जा रहा है। ग्रन्थ का प्रथम खंड पी० मिलेकोव द्वारा 1932 में प्रकाशित किया जा चुका है।
जी. वरनाडास्की	हिस्ट्री आव रशिया (1945)।
निसबेंतबेन	स्लावोनिक यूरोप (1908)।
,, ,,	प्यूपिल्स आव पीटर दि ग्रेट।

फ्रांस

जी. हेनोटॉक्स	हिस्तोरे द ल नेशन फ्रेंकाइस (15 खंड, 1920-1927)।
लेविसे	हिस्तोरे द फ्रांस।

बेल्जियम

एच० पिरेन द्वारा बेल्जियम के इतिहास पर मानक ग्रन्थ उपलब्ध है, (7 खंड, 1908-1932)।

यूरोप में तुर्की

जिनकेसन	गेसचीचेत देस ओसमेनीशेन रीक्स (1840-1863) खंड 3, 4, और 5।
ला जानक्यूरे	हिस्तोरे द एम्पायर ऑटोमन, 1897।

स्पेन

अल्तामिरा य क्रीविया	हिस्तोरे द एस्पेने य द ल सिवलीजेकन एसपेनोला (3 खंड)।

स्वीडन

गिएगर	स्वेन्सका फोकेट्स हिस्तोरे (1832–1836), जे. एच० टरनर द्वारा अनुवाद, हिस्ट्री आव दि स्वीड्स 1845।
निसबेतबेन	स्केनडिनेविया, (केम्ब्रिज हिस्टोरिकल सीरीज) 1905।

5. कुछ आधुनिक महत्वपूर्ण इतिहास तथा लेख

अल्तामिरा आर	हिस्ट्री आव स्पेनिश सिविलीजेशन, पी० वालकोव द्वारा अनूदित, 1930।
अंदें, एल	लेस सोरसेस द ल हिस्तोरे द फ्रांस XVII सीक्ले, खंड 6 (1932), खंड 7 (1934)।
क्यूवेलियर, जे. तथा लेफेवरे, जे	कारसपोंडेंस द ल क्योर द एस्पेगने सुर लेस अफेयर्स देस पेज बेस।
क्लेन, जे	दि मेस्ता (1273-1836), 1920।
गेल पी	दि रिवोल्ट इन दि नीदरलेंड्स (1555-1609)।
गेल पी	दि नीदरलेंड्स डिवाइडेड (1618-1848)।
जी. कगान	रिव्यू हिस्तोरिके, खंड 188 (1940) में प्रकाशित 'ला क्राइसे द ला साइन्स हिस्तोरिके रूसे' नामक निबन्ध।
जी. पेजेज	ला ग्योरे द त्रेते एंस, 1939।
ट्रेवेलियन, एम. सी	विलियम III एण्ड दि डिफेन्स आव हालेन्ड (1672-1674)।
डेम्पीयर–वेटहाम, डब्लू. सी. डी.	हिस्ट्री आव साइन्स, 1929।
तेपिए. वी. एल	ला पोलितिके एतरेंगेरे द ला फ्रांस एत ला देबत द ला ग्योरे द त्रेते एंस (1608-1621)।
तेवनेन, आर. एच	रिलीजन एण्ड राइज आव केपीटलिज्म, 1928।
पिकावेत, सी. जे	ला दिप्लोमेतिए फ्रेंकाइसे य. तेम्स द लुइस XIV, 1930।
पी. सी. जी. वाकर	'केपीटलिज्म इन दि रिफार्मेशन' (इकनोमिक हिस्ट्री रिव्यू, नवम्बर, 1937)।

डनाक, पी	दि लाइफ आव एडमिरल द रुहर, जी. जे. रेनियर द्वारा अनूदित (1935)।
मिलिकोव पी	हिस्तोरे द रूसिये, खंड 1।
सेगनोवाम, सी तथा आइजनमेन, एल	
मेक्स वेवर	प्रोटेस्टेन्ट एथिक एण्ड दि स्प्रिट आव केपीटलिज्म।
मेमेन. एम	ल मेतीरियेल द ला मेरीन द ग्योरे सोस लुइस XIV 1936 तथा मेतेलोतुस एत सोलदेतुस देस वेसोक्स द्यू रोय, 1936।
रोबर्टसन, एच. एम	दि राइज आव इकानोमिक इन्डीविज्युलिज्म, 1933।
ल रोनसियरे, सी	हिस्तोरे द ला मेरीन फ्रेंकेसे, खंड 6 (1932)।
वेगवुड, सी. वी	दि थर्टी इयर्स वार, 1938।
स्मिथ, प्रीजर्वड	ए हिस्ट्री आव माडर्न कलचर, खंड 1 (1543-1687), 1930।
सोरेल	ल यूरोप एत ला रिवोल्यूशन फ्रेंकाइसे।
हेमिल्टन, ई. जे	अमरीकन ट्रेजर एण्ड दि प्राइज रिवोल्यूशन इन स्पेन, 1934।
हेमिल्टन, ई. जे	'दि डिक्लाइन आव स्पेन', दि इकोनोमिक हिस्ट्री रिव्यू, 1938 में प्रकाशित।
हेलेड्रोफ, सी एण्ड शक, ए	हिस्ट्री आव स्वीडन, 1929, मिसेज एल. येप द्वारा अनूदित।

6. विविध लेख

ऑरबंच, बी	ल फ्रांस एत ले सेक्से, 1648-1789, (1912)।
एस्कोली, जी	ल ग्रांदे-ब्रितेग्ने देवेन्त ल ओपीनियन फ्रेंकाइसे अयू XVII सीकेल, 2 खंड, 1930।
एण्डरसन, आर. सी	नेवल वार्स इन दि बाल्टिक, 1522-1850, 1910।
एन्द्रे, एल	माइकेल ल तेलियेर एत ल ओर्गेनिजेशन द ल आर्मी मोनार्किये, 1906।

एन्द्रे, एल — माइकेल ल तेलियेर एत लुवोइस, 1942।

ओरस्टीन, एम — दि रोल आव साइन्टिफिक सोसायटीज इन दि सेवन्टीथ सैन्च्युरी, 1928।

ओवरमेन, ए — दाई एब्ट्रासुंग देस एल्साम एम फ्रेंकरीक इन वेस्ट-फेलेशियन फ्रीदेन् 1905।

क्लार्क, जी. एन — दि सेवन्टीन्थ सैन्च्युरी, द्वितीय संस्करण, (1947)।

कॉलेरी, एर — ल साइन्स फ्रेंकाइसे देपुयस ल XVII सीकेल (1933)।

कास्त्रो, एम — विदा देल सोलदेदो एसपेनोल (1593-1611), 1900।

किंग, जे. ई — साइन्स एंड रेशनलिज्म इन दि गवर्नमेंट आव लुई XIV (1661-1683), 1649।

केरेफा, कार्डिनल — रिलेजियोने देलो स्तेतो देल इम्पेरो ए दे ला जर्मेनिया, 1628।

केसेविलास, जे — दि सीज आव वियना इन 1683। एफ० एच० मार्शल द्वारा अनूदित एवं सम्पादित (1925)।

क्रूसे, एन. एम — फ्रेन्च पायोनियर्स इन दि वेस्ट इन्डीज (1665-1713), 1943।

क्रूसे, एन. एम — दि फ्रेंच स्ट्रगल्स फार दि वेस्ट इन्डीज (1665-1713), 1943।

कोल, सी, डब्लू — फ्रेंच मर्केन्टिलिस्ट डोक्ट्रिस बिफोर कॉल्बर्ट (1931)।

कोलेनब्रेंडर, एच. टी — बेसचिएदेन इत ब्रीमदे आर्चीविन ओमत्रेंत द ग्रूते नीदरलेन्ड शे ज़ीवोरलोगेन (1919)।

कोविले, एच — इत्युद्स सुर मेजारिन एत सेस देमिलेस एवेक ल पेपे इन्नोसेन्ट X (1914)।

ग्लेसन, ई — ल पार्लेमेन्ट द पेरिस. सन रोल पोलीतीक, 1901।

ग्रंट, ए. जे — दि फ्रेंच मोनारकी, 1910।

गियके, आर. एण्ड मोंटगुमरी, आई. ए — दि डच बेरियर (1705-1719), 1930।

गोदले, ई. सी — चार्ल्स XII आव स्वीडन, ए स्टेडी इन किंगशिप, 1928।

घोरिंग, एम — दाइ एमतरकॉफीचेत इम एंसियन रिजीम, 1938।

गेलर, जी — ल ऑर्गेनिजेशन डिफेनसिव देस फ्रंटियर्स द्यू नार्ड एन द ल एस्त अXVII सीकेल, 1928।

ड्युबोइस, एल — वेले एत ला टोलेरेन्स, 1901।

डाइके, एच. वान — बोइसग्यूलबर्ट, इकोनोमिस्ट आव दि रेन आव लुई XIV, 1935।

दायब्रोस्की, आर — पोलेन्ड ओल्ड एण्ड न्यू, 1926।

डिक्स, ई. ए — चेम्पलेन, दि फाऊंडर आव न्यू फ्रांस, 1903।

डूलिन, पी. आर — दि फ्रांडे, 1935।

देद्यू, जे — ल रोल पोलितीक देस प्रोटेम्टेन्ट्स फ्रेंकेस (1921)।

देसवलोजेक्स — एतियूद्स क्रीतिक्स सुर लेस इकोनोमीज रोयेलेस द नली (रिव्यू हिस्तोरीक, XXXIII) 1887।

दोजे. जी. एच — दि पोलिटिकल थ्योरी आव दि ह्यूजन आव दि डिसपरशन, 1947।

द्रोएत, जे — ल एबे द सेन्त पियरे, 1912।

ने, ई — लेस थ्योरीज पोलितीक्स एत ल द्रोइत इन्तनेशनाल एन फ्रांस, 1899।

नेफ. जे. यू — इन्डस्ट्री एण्ड गवर्न्मेन्ट इन फ्रांस एण्ड इग्लैंड (1540-1640), 1940।

पॉल, जे — गुस्टवस अडोल्फ, 1932।

पिकावेत, सी. जी — ल डिप्लोमेतिये फ्रेंकाइसे अ तेम्स द लुइस XIV, 1930।

पियरलिंग, पी — ल रूसिये एत ल सेन्ट-सीज, 1901।

पिसीओनी, सी — लेस प्रीमियर्स कोमिस देस अफेयर्स एट्रेन्गेरस, 1928।

प्रीब्राम, ए. एफ — वेनेशे डिपेशनवॉम केजर हॉफ, (1657-1661), 1901।

पुजोल, जे. सी	हिस्तोरे द ल इकोनोमिया एस्पेनोला, 5 खड (1943-7)
प्रूनेल, एल. एन	ल, रिनायसाँ केथोलीक एन फ्रांस अ XVII सीकेल, 1921 ।
पेकेनॉफ	हिस्तोरे सोशेल द ल रूसिये (फ्रांसीसी अनुवाद, पेरिस, 1926) ।
पेनियर. जे	तुरेने, द एप्रेस स कॉरसपोन्डेस, 1907 ।
पेनेला, ए	मेजारिन, 1933 ।
पेरिसोट, आर	हिस्तोरे द लॉरेन, II (1552-1789), 1922 ।
पेलेफांक्स वाई मेनडोजा कुमान द	देरायो देल विएजे ए एलेमेनिया (एरटिएज द्वारा सम्पाद्दित), 1935 ।
फटेली ट्रेबस	कान्फ्रेंजें सुला विता इतेलियना नेल सीसेंतो (सम्पादित, 1919) ।
फडेन. ई	बर्लिन इन XXX जेरीगेन क्रीजे, 1927 ।
फेलाग, जी	बिलडर ऑस देर दुशेन बर्गेनहेत, 1896 ।
फोर्तेरिंगम, जे. सी	डिप्लोमेटिक कॉरसपोन्डेंस आव जीन द मोन्त्रेल एण्ड दि ब्रदर्स द बेलिबरे (मेजारिन एव क्रामवेल के आपसी सम्बन्धो के लिये), 1898-99 ।
ब्युलियु, ई. पी	लेस गेबलेस सोस लुइस XIV, (1903) ।
बारबर, वी	केपिटलिज्म इन एम्सटर्डम इन दि सेवन्टीन्थ सैन्च्यूरी 1951 ।
ब्राउन एच	साइन्टिफिक आर्गेनिजेशस इन सेवन्टीन्थ सैन्च्युरी फ्रांस (1935) ।
ब्राबेच, एम	दाई बेदे तुंग देर सबसीदिएन फार दाइ पोलितीक इम स्पेनिशेन एर्बफोलगेकिरीज, (1923) ।
बूलेनगेर, एम	निकोलॉस फॉकेत (1933) ।
ब्रूनेतियरे	एत्यूद्स क्रिटीक्स, IV तथा V ।
बूर्गोइस. ई	लेस चेम्बरेस द रियूनियन (रिव्यू हिस्तोरीक, XXXIV) ।
बेटीफाल, एल	रिशेलु एत ले रोये लुइ XIII, (1934) ।

बोइसोनेदे, पी — ल सोशलिज्मे द इतात, 1452-1661, (1926)।

बोइसोनेदे, पी — कॉल्बर्ट (1932)।

बोनासेक्स, पी — लेस ग्रांद्स कम्पेनीज द कॉमर्स (1892)।

ब्रोचर, एच — ल रेग एत ल इतिक्वेत सोम ल एनसियन रिजीम (1934)।

मार्टन, जे. बी — सोबीस्की, किंग आव पोलेन्ड, 1932।

मार्टिन, जी — ल ग्रादे इन्डस्ट्रीये सोस ल रेगने द लुइ XIV, 1899।

मॉगेन, जी — एत्यद सुर ल इवोल्यूशन इन्टेलेक्च्यूले द ल इतेले (1657-1750), 1909।

मिम्स, एस. एल — कॉल्बर्ट्स वेस्ट इन्डियन पॉलिसी, 1912।

मेक्लेशान, जीन ओ — ट्रेड एण्ड पीस विद ओल्ड स्पेन (1667-1750), 1940।

मेकफरसन, एच. डी — सेन्सरशिप अन्डर लुई XIV, 1929।

मेकमन, सर जी. एफ — गुस्टवस अडोल्फ, 1930।

मेदेलिन, एल — एन रिवोल्यूशन मेनके, ल फ्रांडे, 1931।

मेरावेल, जी. ए — ल त्योरा एस्पेनोला देल एस्तेदो एन एल सिगलो XVII, 1944।

मोनियर, एल — मेमायर्स द सली, 1, 1942 (सम्पादित)।

मेलेसे, पी — ल थियेटरे एत ल पब्लिका पेरिस सोस लुई XIV, 1934।

मोसमेन — ल फ्रांस एन अल्सेस (रिव्यू हिस्तोरीक, 1893)।

मोमेंटी, पी. जी — ल स्तोरिया द वेनेजिया नेला विता प्राइवेता।

मोसनियर, आर — ल वेनेलिते देस ऑफिसेज सोस हेनरी IV एत लुई XIII, 1945।

मोंटक्रेटियन द वेतेविल — ट्रेक्टे द इकानोमिये पोलितीक, 1615, (फंक-ब्रेतेनो द्वारा सम्पादित, 1889)।

रॉस, आर — ल अल्सेस अ XVII सीकेल, 1897।

रांके, एल — हिस्ट्री आव दि पोपस् (अंग्रेजी अनुवाद, 1907)।

रितर, आर	हेनरी IV, 1944।
रिबिलन, ए	लेस इतात्स द ब्रीटेग्ने द (1661-1789), 1932।
रिबेल्यू, ए	बोसुए, हिस्तोरियेन दयू प्रोटेस्टैन्टिज्मे, 1891।
रिशेलु, कार्डिनल	टेस्टामेन्ट पोलीनीक (एल० अद्रे द्वारा सम्पादित, 1947)।
रूसो, एल	लेस रिलेशंस द ल फास एन द ल तुर्के अ देबूत दयू XVIII सीकेल, 1908।
रेडे, एच. जी. आर	माइड लाइट्स ऑन दि थर्टी इयर्स वार, 3 खंड, 1924।
रोमेन, सी	लुई XIII, 1934।
लफेवरे, ए	लेस मगयार्स पेंदेन्ट ल डोमीनेशन ओतोमेन एन हगरे (1526-1722), 1902।
ल रोनसियरे	हिस्तोरे द ल मेराइन फ्रेंकाइमे (1899-1932) 6 खंड।
ली, एच. सी	दि मॉरिसकोस आव स्पेन, 1901।
लूम्ब्रोस, ए. डी	रिलेशन टोचेन्ट सेस नेगोसियेशंस एत एम्बासेड्स (1646-1666) जी० डी० लोमेल द्वारा सम्पादित, 1911-13।
लेकर-गेयट, जी	ल एज्यूकेशन पोलितीक द लुई XIV, 1898।
लेंग्लोइस, एम	मदाम द मेंतेनन, 1932।
लेंगे, एम	ल ब्रूयरे, 1909।
लेजार्ड, पी	वॉबेन, 1934।
लेमान, ए	आर्बन VIII एत ल रिवेलिते द ल फ्रांस एत द ल मेसन द ओतरिशे (1631-1635), 1920।
लेवेसोर	हिस्तोरे देस क्लासेस ओविरयर्स, (1900-1901)।
लोकेतेली, एस	वोयेज एन फ्रांस (वोतियर द्वारा सम्पादित), 1905।
लोंचे, एच	ल रिवालिते द ल फ्रांस एत द ल एस्पेग्ने अवस पेज–बास (इन मेयायर्य द ल एकेदेमीये रोयेल द बेलगीक, लिव, 1896)।

वाबेन	प्रोजेक्ट द यूने दिम रोयेल (ई० कोरनार्ट द्वारा सम्पादित), 1933 ।
विटरोक, जी	गुस्टाव II अडोल्फ (जर्मन भाषा में अनूदित, 1930) ।
वेगांड, ऐम	तुरेन, 1929 ।
वेट्सन, एफ	वेलेंस्टीन, 1938 ।
वेडिंगटन, ए	ल ग्रांद एलेक्टर (1640–1688), 1905 ।
वेलिजवस्की, के	पियरे ल ग्रांद, 8वां सस्करण, 1914 ।
वेसियरे, पी	हेनरी IV, 1928 ।
वोल्फ, ए	ए हिस्ट्री आव साइन्स, टेक्नालोजी एण्ड फिलासफी इन दि सिक्सटीन्थ एण्ड सेवन्टींथ सेन्च्यूरीज, 1935 ।
शेलवेन, ए. ए. वान	विलियम वान ऑरेन्ज, 1933 ।
शेविलु, एफ	दि ग्रेट एलेक्टर, 1948 ।
स्टेर्लिंग-मिकाड, एस	लेस एवेन्च्योंस द एम द सेन्त–सेफोरिन सुर ल डेन्यूब ।
स्पेनहिम, ई	रिलेशन द ल कोर द फ्रांस एन 1690 (सोसायते, द ल हिस्तोरे द फ्रांस, 1882) ।
सिलबरनर, ई	ल ग्योरे देन्स ल पेन्सी इकोनोमीक दयू XVI अ XVIII सीकेल, 1939 ।
सी, एच	लेस इंडीज पोलितीक्स एन फ्रांस अ XVII सीकेल, 1923 ।
सी, एच	ल इवोल्यूशन कार्मशियले एत इन्डस्ट्रीयले द ल फ्रांस सोस ल एनसिएन रिजीम, 1925 ।
सी. एच	ल एक्तीविते कार्मिशियले द ल हॉलेन्डे ए ल फिन दयू XVII सीकेल (रिव्यू द हिस्तोरे इकोनोमिक, 1926) ।
सीबिक, एच. आर. वॉन	वेलेन्स्टीन एर्दे, 1920 ।
सेगनेक, पी	ल फार्मेशन द ल सोसायते फ्रेंकाइसे मोदर्न (1661-1713), 1950 ।

सेन्ट सायरस, विस्काउन्ट पास्कल ।

ह्यू बर्ट, ई लेस पेज-बेस एस्पेगनोल्स, 1648-1713 (इन मेमायर्स द ल एकेडेमी रोयेल द बेलगीक, सेकिंड सीरीज, 1907, II) ।

हारपर, एल. ए दि इंगलिश नेवीगेशन लॉज, 1939 ।

हालवे, डी वॉब्रेन, 1933 ।

हॉसर, एच लेस देब्यूट्स द केपीटलिज्मे, 1927 ।

हॉसर, एच रिकरचेज एत दोक्यूमेंट्स सुर ल हिस्तोरे देस प्रिक्स एन फ्रांस द (1500-1800), 1938 ।

हितियर, जे ल दोकट्रिने द ल एब्सोल्यूतिजम, 1903 ।

हुदिफा, आई हिस्तोरे देस रिलेशंस दिपलोमेटीक्स एन्त्रे ल फ्रांस एत ला ट्रांसलेवेनियां अ XVII सीकेल, 1927 ।

हेक्शेर, ई. एफ मर्केटलिजम, 2 खंड, 1935 ।

हेबर्गर, ए कोमेनियस, 1928 ।

हेल्र, जे दाइ दुतशे पबिलिस्टक (1668-1674), 1892 ।

पारिभाषिक शब्दावली

(हिन्दी-अंग्रेजी)

अदूरदर्शी स्वभाव	Undiscerning
अधम	Vile
अधिविकर्षों	Over drafts
अन्तर्मुखी ज्ञान-विधि	Intropective Processes
अनादि	Infinct
अनुकम्पा का सिद्धान्त	Theory of grace
अनुचित लाभ	Exploited
अनुमानिक उत्तराधिकारिणी	Heiress Presumption
अनुमोदन	Rectification
अनुमीमन	Moderation
अपमानपूर्ण	Indignity
अपवित्र समर्थक	Impious Advocate
अपूर्व एवं सर्वव्यापक देवता	Unique and omnipresent Diety
अभिभाषक	Lawyer
अभिशाप	Curse
अभेयता	Invulnerability
अमूर्त विचाराधारा	Abstract thought
अवरोध	Resistance
अहिक	Temporal
आकाशगंगा	Milki-way
आकाशवाणी	Oracles
आघात	Shock
आचरण की समस्या	Problem of Conduct
आदाह्यता	Incombuslibility

आध्यात्मिक आस्था	Spiritual beliefs
आध्यात्मिक स्वातन्त्र्य	Spiritual Autonomy
आप्रवास की नीति	Policy of immigration
आस्तिकता	Deism
औरस	Legitimate
अंतिम संस्कार विधि	Solemn Rites
अंधकारमय पृष्भूठमि	Sombre background
ईश्वरीय इच्छा	Will of God
ईश्वरीय कृपा	Theory of grace
उग्रनास्तिकतावादी	Militent Atheism
उच्चतम आदर्शवाद	Highest Idealism
उलका	Meteors
उलकापात	Meteorice Flight
एकीकृत इच्छा	United Will
कठोरता	Rigidity
कपट	Subter fuge
कपट विद्या	Stratagem
कर	Tax, Tariff
कृपा दृष्टि का सिद्धान्त	Doctrine of grace
कृपा पात्र	Protegee
कृत्रिम शौर्य	Plir of Bravado
गृह उपयोगी गुण	Domestic Virtues
गाथाओं	Annals
गुण	Virtue
घास के मैदान	Steppes
घेरा	Siege, Barrier
घोषणा	Edict, Bulls

चंचल	Frivolous
चालबाजी	Finesse
चेतन राग द्वेषों	Conscious Prejudice
छटनी नीति	Reduction Policy
छल कपट	Perfidy
छोटे संस्करण	Miniature
जातीयता विहीन	Cosmopolitan
ठुकरा देना	Dashed
तर्क पद्धति	Syllogism
तर्क विहीन निष्कर्ष	Non-Sequiture
तेजस्विता	Brilliance
दमन	Repression
दास–प्रथा	Serf-dom
दु:खद तत्व	Baleful element
दूरदर्शिता	Foresightedness
देवाधीनता का सिद्धान्त	Doctrine of Predestination
ध्वंस कार्य	Ravages
धड़	Torso
धनुराशि	Sagittarius
धर्म प्रचार	Ramification
धर्म युद्धाधिकारियों	Crusaders
धर्म विश्वास	Cult
धर्म सुधार	Reformation
धार्मिक संस्कार	Sacrament
धूमिल	Faint
धोखा	Delusion

न्यायाधिकरण	Tribunal
नरक	Disaster of the tall
नृशंस विद्या	Ethnography
नृशस शास्त्री	Anatomist
नागरिक सप्रदाय	Burgher Communities
निगमन	Induction
निगमनात्मक	Deductive
नियमन	Generalisation
निरर्थक अलकरण	Superfluous Adornment
निरंकुशवाद का समर्थक	Advocate of Routhless Absolutism
नैतिक शिथिलता	Laxity of morals
नौसिखियेतत्व ज्ञानी	Amateure Metaphysicians
नौसिखियों	Tyro
पतन का सिद्धान्त	Doctrine of fall
पतोन्मुख मानववाद	Degenerate Humanism
पदार्थ विज्ञानी	Physicist
पदार्पण	Entry
परमाणु दर्शन सिद्धान्त	The Atomistic Theory of the Universe
परिपक्व ग्रन्थ	Mature Work
परिश्रय–मान–काल परीक्षाएं	Probationary Tests
पवित्र आदेश	Holy order
पहला व्याख्याता	First exposition
प्रणय गाथाओं	Love Affairs
प्रतिवादन	Remomstration
प्रतिशोध	Revenge
प्रथा	Tradition
प्रबद्ध हठधर्मी	Enlightened bigot

प्रबन्धकों	Intendents
प्रमाणवादी दार्शनिक	Rationalist Philosopher
प्रयास	Syncretism
पाप	Sin
पाप भोगी	Damned
पाश्विक आकर्षण शक्ति	Animal Magnetism
पांडित्य पूर्ण परम्परा	Scholastic Traditions
पांडित्य विधि	Scholastism
प्राथमिकता	Precedence
प्रार्थना पुस्तक	Service Book
प्रायोगिक तत्व	Empiriocal elements
प्रायोगिक विज्ञान	Experimental Science
प्रायोगिक समारंभ	Completed results
पुनर्जीवन	Restoration
पुनः प्रतिवादन	Counter Remonstration
पूर्ण फलों की प्राप्ति	Tentative begining
पूर्व पादरियों	Early Fathers
पूर्वानुदर्शन	Retrospect
पंजीकृत	Registering
बर्फीले थपेड़े	Frost bits
बहिष्कृत	Excluded
ब्रह्माण्ड का भौतिकवादी सिद्धान्त	Materialistic Theory of the Universe
ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति	Raisond Etat
बौद्धिक क्रियाओं	Intellectual activities
बौद्धिक शक्ति	Intellectual Power
भविष्यवाणी	Prophets
भाड़ेत सिपाही	Mercenary Army

भावना	Spirit
भाष्य लेख	Monographs
भेड़पालन	Mesta
मठ	Monastery
मतैक्य	Agreement
मनोनीत	Designate
मलिन्तम प्रयोगवाद	Grossest Empiricism
मानवीय विवेक	Human reason
मानव कामना	Human Passion
मानव चेतनता	Human Consciousness
मिथ्या नाटक	Spurious Plays
मुक्तिदाताओं	Confessors
मुख्य पादरी पद	Diocese
मुग्ध	Infatuate
मूर्खता	Naivete
मौलिकता	Originality
यहूदी सप्ताह	Jewish Sobbath
राजनीतिक मान्यता	Political truism
लहरों संबंधित सिद्धान्त	Theory of tides
लुटेरापन	Repine
लुप्त सभ्यता	Obsolete Civilization
लेख	Writings
व्यावसायिकवाद	Mercantilism
वृत्तियों	Benefices
वृहत् षड़यन्त्र	Extensive Plot
वाणिज्य अध्यादेश	Ordinance of Commerce

वास्तविक विद्यमानता	Real Presence
वासना	Passions
विकृत मष्तिष्क	Insane
विचार-विनिमय मंडली	Colloqucy
विचित्रता	Unique
वित्तीय रहस्य	High Finance
विफल आकांक्षाओं	Foiled Ambitions
विवेक शक्ति	Reason
विश्वकोष	Encyclopaedia
विश्व देवतावाद	Pantheism
विशिष्ट व्यपारियों	Regratteurs
विस्मृति	Oblivion
वेदियों	Alters
शकुन वाणी	Angusies
शास्त्रीय पांडित्य	Classics
शुद्ध तर्क	Relentless Logic
शुष्कता	Coarseness
स्तम्भ पंक्तियों	Colonade
स्पष्ट वक्ता	Straight Forward
सम्पन्नता	Prosperity
समकालीन	Contemporaries
सम–विषम परिस्थिति	Chequered Fortunes
समादेश	Command
समाधियां	Tombs
सरल तार्किक सिद्धान्त	Simple Rationalistic Theory
सर्व शक्तिमान धर्म शासक	Omnipotent Theocracy
सर्वेक्षण	Survey

सहृदयता	Broad mindedness
संघर्ष	Fray
संचार	Radiate
संयोजन	Coaliation
संलेख	Instrument
संस्मरण	Memoires
संहार	Carnage
सामुदायिक	Community
साम्राज्य निषेध	Ban on Empire
सारगर्भित	Pregnant
सारभूत रूप	Substential form
सार्वभौम प्रारूप	Universal genius
सुसंगत तत्व	Consistent Element
सुसंगत सिद्धान्त	Consistent Theory
सूक्ष्म व्यंग	Subtle Irony
षड्यन्त्र	Intrigues
ह्रास	Decline
हठ धर्म	Bigoted
हथ भाग्य	Wretched
हर्षाभिनन्दन	Acclamation
हानि	Blight
हेतुवाद	Rationalist
क्षमताएं	Faculties
क्षीण प्रतिध्वनि	Faint Echo
त्रिमूर्ति	Trinity